



أردوترجمه



پارەتيسواں

تَصْنِيْفِ لَطِيْعِت .

The Contraction of the Contracti

المالية المال

نۇرىيەرضوبيە ينايىكىشىز ادراتانىخىش دۇلامۇ 7313885-042

﴿ جمله حقوق تجن ناشر محفوظ میں ﴾

| تغیی <i>رعزیز</i> ی (تیسوال باره) | نام كتاب |
|---------------------------------------|------------|
| شاه عبدالعزيز محدث د الوي عليه الرحمة | معنف |
| ——— | مترجم |
| ——— | ذبرابتمام |
| — ورقازمیکر | كمپوزنگ |
| ـــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | اشاعت |
| سيّدمحم شجاعت رسول شاه قادري | 건 |
| اشتیاق اے مشتاق پرنٹرز لا ہور | مطبع |
| 1N-131 ——— | كميبوثركوذ |

ملنے کے پتے

| مكتبة المدينه | مكتبه غوثيه بهول سيل | ضياءالقرآن پبلى كيشنز |
|---------------------------------|---------------------------------|--|
| فيضالن حديث كراجى | پرانی بزی منشک کرایی | انغال سنثرأردو بإزار كراجي |
| 021-4126999 | 021-4910584 | 021-2630411 |
| مكتبة البدينه | اسلامک بک کار پوریش | احمر بك كار پوريش |
| اعدون بوبر كيث ملتان | اقبال رود مميني چوك راد لينذى | ا قبال روز محميثی چوک راول پندی |
| | ó51-5 53 6111 | 051-5558320 |
| مكتبه بستان العلوم | شبير برادرز | مكتبه رضوبي |
| كذهالية زادكشمير (براسته مجرات) | زبيده سنشر 40 أردو بإزار لا بود | آرام باغ روؤ كراجي |
| 0344-5084292 | 042-7246006 | 021-2216464 |

نوربیرضوریه بیلی پیشنز داتا تیج بخش رودُ لا بورنون 7070063-7313885 مکنتبه نوربیرضوریه بغدادی جامع سجد گلبرگ اے فیصل آبادنون: 2626046

فهرست مضامين

| صفحه | عنوان | مغ | عنوان |
|------------------|--|-------------|---|
| ۵۹ | حفزت موی علیه السلام کاواقعه | يُّرة النبأ | سورة التسآء ل يا سر |
| ا کے دوسر بے | حضرت موی علیه السلام کے عصا | لي وجه ۱۵ | سورة والمرسلات كے ساتھ رابطے |
| | | | وجرتشمييه |
| ٠٢٢ | عبرت آموز ہونے کی چندوجوہ | | ىزول سورة كاسبب |
| AF | آ سان حرکت کرتا ہے | r | جواب طلب سوال |
| ٠ ٨٢ | آ سان کی بلندی کابیان | یں ۲۵ | ونت قيامت كيلئے چند چيزيں لازم |
| پيدائش پيدائش | زمین اور آسان میں ہے کس کی | ل میں | قیامت کے دن چند گروہ کس سطح |
| ۷۱ | سلے ہے؟ | 12 | ما ضرہوں گے |
| فه ۲۷ | دو بھائيول مصعب اور عامر كإواق | ۳ | هبه کابیان |
| | ایک شبدا در اس کا جواب | PP | ایک شبه اور اس کا جواب |
| | · سورۂ عبس | | جنتیوں کی عمر کا بیان |
| کی وجہ ۸۱ | سورهٔ الناز عات کے ساتھ را <u>ل</u> طے | ۳۸ | كيفيت روح كابيان |
| اور عام لوگوں | ايك مقدمه كي تمهيدا ورمحبوبان خدا | ت ا | سورة والنازعاء |
| Ar | کے درمیان فرق | | ربط کی وجہ |
| هم | مفسرين كااشكال | , LALA | وجه تشمیمه |
| A4 | | 1 | نفس انسانی می بخیل کی منرور بات. |
| ۸۷ | | | مغسرین کے اختلاف کابیان |
| ۹۵ | • 1 | 1 | جارمشہور فرشتوں ہے متعلق ڈیو ٹیوا رینسند |
| 94 | • | | کا فرو ں کا قیامت کے دن اُٹھنے می ر معمد سریک |
| ئى صورت كا | سب سے پہلے قبر میں دمن کرنے کا سب | | بعثت کے منگروں کے شبہ کا جواب |
| · ——— | marta | | <u> </u> |

martat.com

| عنوان صغح | عنوان صفحه | | | |
|--|--|--|--|--|
| کائن کی حقیقت ۔۔۔۔۔۔ | بيان | | | |
| كيانت كے شبه كاازاله | ہندوؤں کامردوں کوجلا نامعیوب ہے نیز | | | |
| ض اورظ کے مخرج کابیان | جلانے کے مقابلہ میں وفن کی خوبیاں ع | | | |
| قسمول كى الن مضامين كيساته مناسبت كابيان ١٣٣٠ | ہندوؤں کے ایک عقل مند کا واقعہ ۹۸ | | | |
| سبورة الانفطار | مزارات سےزائرین کواور تیروں والوں کو | | | |
| سورهٔ تکویر سے رابطے کی وجہ۲۸۱۱ | الصال ثواب ٩٩ | | | |
| اجمال کی تفصیل | قیامت کے دن کے قریبیوں سے بھا محنے کی | | | |
| آ دمی کومر تنبه خلافت کی تکمیل کیلئے یہاں لایا گیا سام | وحيه | | | |
| حارانقلابات كابيان | جواب طلب سوال | | | |
| ا كي جواب طلب سوال | , | | | |
| لفظ بحراور نبر كي معنول كي محقيق اور قطعات | سورهٔ اذ الشمس کورت | | | |
| . حرکابیان | سور و عبس کے ساتھ ربط کی وجہ ۱۱۱ | | | |
| کریم کےمعنوں کابیان | 1 | | | |
| | ایک اُلجھن اور اس کاحل | | | |
| | چندسم کے جانور جنت میں اور چندسم کے جہنم | | | |
| سليمان بن عبدالملك اور معترت ابوحازم | میں ہول کے | | | |
| رحمة الله عليه كاوا تعه | | | | |
| ایک جواب طلب سوال م | | | | |
| بي كاوالدين كالهم شكل مونا منروري نبيس ١٦٢ | _, | | | |
| بِحَوَاهًا كَاتِينِينَ كَاكَارُكُزارى١٦١ | 1 | | | |
| صورة المطففين | · · | | | |
| سورة الانفطار كے ساتھ رابطه كى وجه • كا | ' | | | |
| وجهرشميه الحا | | | | |
| — marfat.com | | | | |

| <u> </u> | | | ،، مز | je ^ |
|-------------|--------------------------------|----------------|-------------------|---------------------------------|
| منحہ | عنوان | - | | |
| r49 | أيك جواب طلب سؤال | rrs | | تکته قرین |
| 1 2• | دوسوالات اوران کے جوابات | ٢٣٦ | ••••••• | دوسرًاعجيب واقعد . |
| rzo | پاکیز گی کی چندا قسام | rr2 | | تىسراواقعە |
| 127 | ا كابرين كيتنبيري اقوال | 777 | | چوتھاواقعہ |
| 124 | ان آيات سے فقہاء كااستدلال. | ۲۳۲ | دال | ایک جواب طلب س |
| 129 | آ سانی کتابول کی تعداد | | وال | ایک جواب طلب س |
| 4 | سورة الفاشي | * * * * | رسلی عبارت کابیان | الوحِ محفوظ اوراس کم |
| r* | وجدريط | | رة الطارق | سو |
| rA1 | وجيشمييه | 75 | •••••• | وجدربط |
| rar | مناه گاروں کےعذاب کی اقسام | 46.4 | | وجبتهميه |
| _ | طلب سوالات | | | آ دمی کی جان ابدی |
| اونث کی | ذات اور بودو ہاش کے اعتبار ہے | rma. | | اجمال کی تفصیل |
| raa | ووز خیوں ہے مشابہت کا بیان | rra. | ••••••• | سبب نزول |
| کی جنتیوں | فوائداورمنافع كحاعتبار يصاونية | roi. | | محافظ فرشتو ل كابيار |
| r/\4 | ہے مشابہت کا بیان | 101 | يل | خلقت انسانی کی تغص |
| r4• | اونٹ کے عجائب اور خواص | 1 | | شخقیق مقام |
| r40 | زمین کی شکل کابیان | | رة الأعلٰي | سو |
| | سورة الفجر | 444 | | را بطے کی وجہ |
| r94 | را بطے کی وجہ | 741. | | |
| r92 | لمحدين كاشبدا وراس كاجواب | ודין | | سبب نزول |
| ارنے کی | جزائے اعمال کو قیامت پرموتو ف | ryr | نے کامفہوم | ذات حق كو پاك جا. |
| ran | حکم ت | 745 | , ,, <i></i> | تضوف كاايك مسئله |
| P44 | وجهرشمييه | ryy | کے بیان کی حکمت | نمرکور ہ ^{تین} صفات کے |
| | <u> </u> | _ | <u></u> | |

marfat.com

| 7 | | | |
|--------------|---------------------------------|------------|--|
| صغحہ | عنوان | نخد | عنوان |
| mm | انسانی مشقتون کا جمانی تذکره | ۳۰۱ | وس متبرك را تون كابيان |
| .کاتذکرہ ۲۳۵ | دوسرول کے حق سے وابستہ تکالیف | ۳۰۳ | بالغ ہونے کی مدت کے عین کا ذکر |
| rrz | دولیوں کے چندفوائد | | شفع اوروتر کے بارے میں مفسرین کے |
| لى حكمت ٢٣٧ | المنکھیں دواورزبان ایک ہونے | ۳۰۳ | مختلف اتوال |
| اوروجه ۳۳۸ | مذكوره تين نعتول كي خصيص كي ايك | ک۳۰ | لفظ ربک لاتے کی وجہ |
| | گردن آزاد کرنے کی چند صور تیر | ۲۰۰ | عاد دوفرقوں کا نام ہے |
| جہ انہما | | 1 | عاداولی کابف ت ر کفایت دافعه |
| mam | ایک فنی سوال اوراس کا جواب | ۳۰۸ | شداد عین کی خودساخته بهشت کاواقعه |
| | • | | نضرت ملک الموت کی رفت کے دووا قعار |
| | | | شداداوراس کی مال کاواقعه |
| _ | - | 1 | تداد كے شهر تك عبد الله بن قلابه طاقعة كى |
| rrz | مبراوررخمت کی خصیص کی وجه | | سائی اوراس کے متعلق اخبار بالغیب |
| _ | ً سورة والشمد | 1 | ركوره تنن واقعات كي خصيص مين نكته |
| | | | بندسوالات اوران کے جوابات |
| rs• | وجيشميه | "" | محبت کیلئے مال کی صد مناب میں |
| مناسبت | آ فناب بنوت کی سورج کے ساتھ | PT | غوب انسانی کی تین صفات |
| ۳۵۱ | كابيان | | سورة البلد |
| | نور نبونت اور نورولايت كي كيفيت | | د جهرتهمید |
| raa | ایک شبه اوراس کاحل | 779 | مکه معظمه کی عظمت کی و جوه چ |
| ۳۵۹ | اجمال کی تفصیل | mra | اقبل کے ساتھ را بطے کی وجہ |
| P41 | ایک شبه اوراس کا جواب | mrq . | سورة كاسببنزول |
| ۳۹۱ | فجور کامعنی | | شهرمكه كے مشقت اور رنج كامقام ہونے |
| ب ۳۹۳ | لفظ طغوى ميں اشكال اور اس كاجوا | ۳۳۱ | کی وجہ ———————— |
| | marfa | t.c | 0m - |

| صفحه | عنوان | صنحہ | عنوان |
|-------------|---|-------------------------|---|
| | | | شمود كا تعارف |
| PAA | | | حضرت صالح عليهالسلام كي اوْمْنَيَ |
| | | | اس معجزه کی تخصیص میں نکته |
| | | | اونمنى كاباقى واقعهاوراس كىخصوصه |
| | | | حضرت صالح عليه السلام كي قوم كم |
| کمته ۳۹۲ | مذكوره تين قسمول كي تخصيص ميں أ | rz• | كاواقعه |
| | مسئلەتقىرىر كى ايك نفيس توجيە | ۳۷۳ | تول رسول قول خدا ہے |
| ۳۹۷ | بدشختی کی اقسام | سے سے سے ا | الله تعالیٰ کی او منی کہنے کی وجہ |
| ٣٩٧ | · | · | خمود کے قند ارا دراس اُمت کے ا |
| ۳۹Ä | | | بدبخت ترین ہونے کی وجہ |
| ' | ' . | | فضائل شاوولا يت حضرت على كرم |
| | | | حضرت على كرم الله وجهه كى شهادت |
| | | | ا کیک شبداوراس کا جواب |
| | کا جواب | | سورة وألليل |
| • | فعنائل ابو بكرصد يق بربان رسال استنسال العرب | | سورة والشمس كے ساتھ را بيلے كى . ب |
| | الصلوّات والتسليمات | • | |
| حی | سور ة والطب ب | PAP | شان نزول |
| ۳ -۵ | وجيد ميير د ده و هو ادر | ان می تکالیف اند مسا | حضرت بلال الثاثثة كے فضائل اور ا |
| | | • | کابیان حصر به الد کم صرر ان روانند کا ده |
| l | | h · | حفرت ابو بکرصدیق طانط کا حفر ر کوخریدنا |
| | | 1 | و تربیرنا فعنائل حصرت ابو بکر میدیق دلانتواه |
| ار ا | کورورد سال میں ایک کوامکرت | PAY | معنان منزت بوبر معدین ری رود. آ زاد کرده غلامون کی تفصیل |
| ,,,,,,,,,, | | | |

martat.com

| صغی | عنوان | منحہ | عنوان | |
|---------------|-----------------------------------|--|------------------------------|-----------------|
| ن | سورة اقرء كے فوائد و نكات كابيا | rai | راس کا جواب | ايك سوال او |
| ر ا | سورة قدر | ror | اهری فوائد | زیتون کے فا |
| ۳۹۳ | سببنزول | ror | طتی فوائد | زیتون کے با |
| ۳۹۵ | وجه تشميه | raa | ن | کو ہطور کا بیاا |
| ۳۹۵ | ليلته القدر كي وجد تسميه | רמ״ | اِنا | كووزيتا كابي |
| ۳۹۲ | شب قدر کی بزرگی کی چندوجوه | የ ልሉ | | شهر کمه کابیان |
| که۳ | ليلة القدر كوفني ر كھنے كى حكمت . | إن ١٥٨ | حرم شریف کی حدود کا بر | مكه معظمه اور |
| ۳۹۸ ر | شب قدراورشب برأت كافرق | ۳۵۹ | رم | خصوصيات يح |
| ،اورستائيسو ي | شب قدر کے قین میں اختلاف | ۳۲۱ | کے حسن وخو کی کابیان | انسانی تخلیق. |
| ۳۹۸ | شب کی ترجیح | | سورة اقر، | • |
| ۵۰۰۰ | ایک شبه اور اس کا جواب | ۳۲۷ | لے زول کی کیفیت | سوزة اقرء |
| ۵+۲ | ہزار کےعدد کی تخصیص کی وجہ | ۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰۰ | يانيان | چندنکات کابر |
| ت ۵۰۳ | نماز بإجماعت كى فعنيلت كى حكم | 化4 | ا قسام کابیان | توجدد ہے کی |
| ۵۰۳ | شبوقدر كےخواص | کاواقعہ کا کام | به باقی بالندر حمته الندعلیه | حضرت خواج |
| نه | سورة البي | r_r | •••• | تىسرانكتە: |
| ۵+۵ | وجه شميه | ۳۷۵ | كا جواب | ایک خدشے |
| ۵۰۲ | اجمال کی تفصیل | ۳ <u>۷</u> ۲ | .کابیان | قلم کی اہمیت |
| ۵۰۷ | | J | ملم كابيان | |
| | أسوره زلزلت | | | |
| | وجدتهميداور قيامت كے زلزله ك |) | | 1 |
| اور | جمادات کی گواہی کے متعلق شبہا | ۳۸۲ | راس کا جواب | ايكسوال او |
| | اس کا جواب | ن ۱۹۰۰ | وں کے اوصاف کا بیال | جہنم کےموکل |
| ۵r• | ایک شبه اور اس کا جواب | وجه ا۹م | یں قرب کی زیادتی کی | حالت تجده ! |
| | -marf a | +· co | 122 | |

المالية المالي

وصدر وازاق وسلاع

مَوْلَاكَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمَا اَبَدًا عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِم عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِم مُحَدَّدُ سَيِّدُ الْكُونِينِ وَالثَّقَلَيْنِ وَالْفَرِيْقِينِ مِن عُرْبٍ وَمِنْ عَجَمِ



تغير مزيزي _______ آها) ______ آها)

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

سورة التسآءل ياسورة النبأ

سورة تساءل جسے سورهٔ نباء بھی کہتے ہیں' کمی ہے۔اس کی جالیس (۴۰) آیات ہیں' ایک سوتہتر (۱۷۳) کلمات اور سات سوستر (۷۷۰) حروف ہیں۔

سورة والمرسلات كے ساتھ رابطے كى وجه

اور اس کے سورہ والمرسلات کے ساتھ مربوط ہونے کی وجہ یہ ہے کہ ان دونوں سورتوں میں جزاد یے کمل کو یوم الفصل آنے کے ساتھ وابسۃ کیا گیا ہے اور یوم الفصل کے پچھا حوال بیان فرمائے اور قیامت کے آنے میں کافروں کا تعجب کرنا ای مقدے کے ساتھ دفع فرمایا گیا کہ جب قیامت کا آنا یوم الفصل کے بغیر نہیں ہوتا اور یوم الفصل اس جہان کی بربادی اور نوع انسانی کے ختم ہوئے بغیر صورت نہیں پکڑتا تو اس سے پہلے جزا جہان کی بربادی اور نوع انسانی کے ختم ہوئے بغیر صورت نہیں پکڑتا تو اس سے پہلے جزا دیے کا مطالبہ کرنا بحز لہ اس کے ہے کہ گرمیوں میں سردیوں کے اور سردیوں میں گرمیوں کے پھل طلب کے جا کیں جو کہ فری برگوئی اور قبیج کی بحثی ہے۔

اوراس كالاوه ان دونول سورتول كالقد مفايين على بورى مثابهت واقع به والله وَإِذَا السَّمَآء فرجت واذا الجبال نسفت واقع به جبكه يهال وفتحت السبآء فكانت ابوابا وسيرت الجبال فكانت سرابا به وبال الم نجعل الارض كفاتاوجعلنا فيها رواسي شامخات واسقيناكم ماء فراتا واقع بجبكه يهال الم نجعل الارض مهادا والجبال اوتادا اوروانزلنا من المعصرات مآء ثجاجا بوبال دوزخ كي جلن اوراس كم چنگارول كاشعله زن بونا ذكور به جبكه يهال دوزخ مين مفاد والبحبال اوتادا كرد به وبال هذا يوم لاينطقون به جبكه ميال دوزخ مين مفتد بانى كا قحط نهايت كرم بإنى بينا فرور به وبال هذا يوم لاينطقون به جبكه ميال مقاد مقاد والمعداد حراس هذا يوم لاينطقون به جبكه ميان كالتحد مين كان كالتحد الله كالتحد الله كالتحد الله كالتحد الله كالتحد المعتاد كالتحد الله ك

یہاں یوم یقوم الروح والملائکة صفا لایتکلمون ہے وہاں ان المتقین فی ظلال وعیون وفواکه ہے جبکہ یہاں حداثق داعنابا کامتقین کے لیے وعدہ کیا گیا ہے اوراس سورة میں ارشاد فر مایا گیا ہے کہ اگر دنیا میں کفارکوکہا جائے کہ فدا تعالیٰ کے لیے ایک مرتبہ پشت خم کردو نہیں کرتے جبکہ یہاں ارشاد ہوا کہ قیامت کے دن آرزوکریں گے کدا ہے کاش ہم مٹی میں فل جائیں اور جہم کے عذاب سے خلاصی یا کی اس تکبر وغرورکواس خواری اور ذلت سے کیا تعلق؟

وجد تشميه

اورا سے سورۃ تساءل کا نام دینے کی وجہ یہ ہے کہ تساءل افت عرب بیل کسی چیز کے متعلق ایک دوسرے سے کثرت کے ساتھ سوال کرنا ہے اوراس سورۃ بیل اس بات کا بیان پیش نظر ہے کہ آخرت کے امور کے حقائق وات و صفات کی بحثوں مسئلہ قضاء وقد رئی بیش نظر ہے کہ آخرت کے امور کے حقائق وات و صفات کی بحثوں کے اختلافات اور جروافتیار تو حید وجودی وتو حید شہودی محابہ کرام رضوان الشعیبم اجمعین کے اختلافات اور احکام شرعیہ کی حکمتوں کے بارے بیل کثر ت سے سوال کرنا جو کہ عوام کی مجمع سے بالاتر ہیں اور ان کی عقل انہیں برداشت نہیں کر عتی بہت فیج اور بُرا ہے اس لیے کہ عالب طور پر ان ور ان کی عقل انہیں برداشت نہیں کر عتی بہت فیج اور بُرا ہے اس لیے کہ عالب طور پر ان حقائق کے انکار تک بات جا بہتی ہے اور کم از کم اکثر ذہنوں میں شکوک وشبہات بیدا ہونے کا سبب ہوتا ہے حالانکہ ان چیز وں پر ایمان لانا اتنی ہوی تفتیش اور ان امور کی کیفیات اور کمیات کی تفصیلات پر آگاہ ہونے پر موقوف نہیں ہے۔

اور یکی ایک سخت مہلک بیاری ہے جو کہ اس اُمت میں عقائد کی خرائی اور مراہ فرقول کے بیدا ہونے کا موجب میوئی اور اس نے ایک جہان کا ایمان ضائع کر دیا۔ حق تعالیٰ نے اس سورۃ میں اس امرکی قباحت بیان فرمائی تا کہ لوگ اس سے پر ہیز کریں اور مراہی کے بعذور میں نہ یزیں۔

اور اے سور ہُ نبا کا نام دینے کی وجہ یہ ہے کہ لغت عرب میں نباء بمعنی خبر ہے اور تیا متعلق قیامت کی خبر ہے دور تیا متعلق قیامت کی خبر اس قدر عظمت رکھتی ہے کہ گویا اس کے سواکوئی خبر ہے بی نبیس جس کے متعلق پوچھا جا سکے اس خبر کو نباعظیم فر مایا گیا ہے کہ اپنی ذات میں بھی عظمت رکھتی ہے اور پوچھا جا سکے اس خبر کو نباعظیم فر مایا گیا ہے کہ اپنی ذات میں بھی عظمت رکھتی ہے اور سے متعلمت رکھتی ہے اور سے متعلم سے متعلم

اس کے واقع ہونے میں بھی عظمت ہے اور اسے بچھنے میں بھی عظمت ہے اور ظاہر ہے کہ خبر
کی عظمت یا باعتبار ذات ہوتی ہے کہ عمدہ آ دمی اسے بیان کرتا ہے یا اس خبر کے مضمون کے
واقع ہونے کے اعتبار ہے ہے کہ کی عظیم حادثے پر دلالت کرتی ہے یا اس خبر کے مفہوم کو
سجھنے اور فہم میں لانے کے اعتبار ہے ہے کہ ہم کی کی سجھ میں نہیں آتا اور مشکل ہے سجھا جاتا
ہے اور جب اس خبر میں تینوں صفات جمع ہوگئی ہیں یعنی خبر بھی موجودات میں عمدہ ترین ہے
کہ تو تعالیٰ نے خبر دی ہے اور اس کے سواکوئی ہے خبر نہیں دے سکتا اور عظیم حادثے کے واقع
ہونے پر دلالت کرتی ہے جو کہ کسی کے فہم اور وہم میں نہیں ساتا اور اسے بھسا نہایت مشکل
اور بار کی ہے کہ انسان کی تو ت عقلیہ نور غیبی کی مدد کے بغیر اسے دریافت نہیں کر کتی اس
وجہ ہے اس خبر میں بہت عظمت بیدا ہوگئی تو الیی خبر کے بارے میں دعویٰ کیا جا سکتا ہے کہ گویا
خبر اسی خبر میں مہت عظمت بیدا ہوگئی تو الیی خبر کے بارے میں دعویٰ کیا جا سکتا ہے کہ گویا
خبر اسی خبر کا نام ہے اور جب بھی ایک دوسرے سے پوچھا کہ خبر کیا ہے گواسی خبر کے متعلق
پوچھاجا تا ہے۔ پن جوسورۃ کہ اس خبر پر مشتمل ہے اس کا نام خبر رکھنا جا ہے۔

نزول سورة كأسبب

اوراس سورة کے زول کا سبب سے ہے کہ جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم مبعوث ہوئے

آپ نے قیامت کا ذکر فرمایا کفار نے سُن کر تجب نمان اورائے ناممکن جانے کے طور پر
ایک دوسرے سے اس خبر کی تفتیش کا آغاذ کر دیا۔ بعض کہتے تھے کہ کیف یہ حیبی المعظام
وھی رمیم بینی پوسیدہ ہڑیاں کیوکرز ندہ ہوں گی اور بعض کہتے تھے کہ متی ھذا الموعد سے
وعدہ کب پوراہوگا اور بعض شک کرتے ہوئے کہتے تھے کہ و ما اظن الساعه قائمة اور پھی
کمتے تھے کہ یہ کام بالکل ہونے والا بی نہیں ان ھی الاحیو تنا المدنیا نموت و نحیا و ما
نحت بمعوثین اوران کی تفتیش کے مقطع کا آخری حصہ بی بات تھی کہ اگر اس تم کے واقعہ
کارونما ہونا ممکن ہے تو ہمارے سامنے ایک دفعہ بی واقع کیوں نہیں ہوتا اور نیکوں اور کہ ول کو
الن کے کروار کے مطابق جزا دیے میں اس دن کا انتظار کیوں ہے؟ و نیا میں جزا کیوں نہیں
دی جاتی تا کہ لوگ عبرت کی کر کر کر رے کام چھوڑ و یں اور نیک کاموں کو عمل میں لا کیں۔ اللہ
تعالی نے ان کی اس گفتگو کا روفہ ما، او جزا دیے کو یوم الفصل کے ظاہر ہونے پر موقون

تغیر عزیزی بسید میران کردای بیان فرمانی به میران باره مونے کی وجہ بیان فرمانی به میران میران

بسسم الله الرّحمن الرّحيم

عَمَّمَ يَنَسَآءَ لُوْنَ کَ پِيزِ کِ مَعْلَق ایک دوسرے ہوال کرتے ہیں اور تفیق کرتے ہیں اور تفیق کرتے ہیں کی کی ایس چیز ہے جو کہ سوال و تفیق کے قابل ہے اور وہ اے سجھنے کی استعداد رکھتے ہیں اور کثرت ہے سوال کرنے کی وجہ ہے ان کے ذہمن میں بات صاف ہو جائے گی یا کوئی ایس چیز ہے جو کہ سوال اور تفیق کے قابل نہیں اور وہ اے سجھنے کی صلاحیت نہیں رکھتے اور وہ اس میں جتنی چھان پیک کریں گئے مقصد ہے دور ہوتے جا کمیں گے اور اس طرح پوچھنے میں کہ کس چیز کے متعلق سوال کرتے ہیں اس بات کو جندا یا گیا ہے کہ عقل مندکو چا ہے کہ تنتیش اور سوال سوچ سجھ کر کرنا چا ہے اور یوں نہ کریں کہ بے موقع سوال واغ دیں اور مقصد کوختم کردیں۔

اور لفظ عم اصل میں عما تھا اور ما کے الف کو تخفیف اور کثر ت استعال کی وجہ ہے حذف
کیا گیا ہے اور عربوں کا قاعدہ ہے کہ ما کے الف کو جرک آٹھ حروف کے بعد حذف کر دیتے
ہیں ۔عن من با کام فی علی الی اور حتی کہ کثر ت استعال کا مقام ہے اور جب کلام کوسوال و
جواب برجن کیا عمیا اور اس سوال کا جواب بالکل ظاہر اور معلوم تھا خود ہی جواب عطافر مایا عمیا
ہے کہ

عَنِ السَّبُ الْعَظِیْمِ آپس مِن ایک بری خبر کے متعلق سوال کررہے ہیں جو کہ اپنی ذات کے اعتبار سے عظمت رکھتی اور اپنے مضمون کے وقوع کے اعتبار سے بھی اور بجھنے اور دریافت کرنے کے اعتبار سے بھی۔پس وہ خبر

ہوتا۔ بعض بالکل انکار کرتے ہیں بعض کہتے ہیں کہ یہ جزادیناعقلی ہوگا، بعض کہتے ہیں خیالی ہوگا اور بعض کہتے ہیں خیالی ہوگا اور بعض عقلی خیالی اور حسی کے علاوہ کسی اور طریقے ہے ہیں ہوگا اور بعض عقلی خیالی اور حسی کے علاوہ کسی اور طریقے ہے ہیں اور اس عالم دنیا کو جزا دیے کہ حکمہ قرار دیتے ہیں اور عالم کبیر کی بربادی کو انبیاء ومرسلین علیم السلام کی زبان سے سفتے ہیں اور اسے موت کے وقت انبانی جسم کے حالات میں خلل پڑنے پرمحول کرتے ہیں۔ بہر الل اس واضح بیان کے باوجود جواختلاف کہ اس مسئلے میں ہے کسی مسئلے میں بھی واقع نہیں گئے اور یہی انکار اور شک ڈالنے کا موجب ہے۔

اورمومن کا راستہ یہ ہے کہ جب اس قتم کے مشکل حقائق جن کی تہ تک بشری عقل نہیں پہنچتی 'یقین کے ساتھ انبیاء علیم السلام کی زبان سے سنے تو اجمالی ایمان کو ہاتھ سے نہ جانے دے جو کہ سعادت ابدی کا سرمایہ ہے اور کیفیات اور خصوصیات کی فالتو تفتیش نہ کرے ورنہ مقصد فوت ہوجائے گا۔

اور جب اس کلام میں بیان ہو چکا محدلوگوں کے درمیان اس مسئلے میں بے حد تفتیش اور بد فائدہ سوال جاری ہیں اور بیسب کھنقصان دہ ہے نفع بخش نہیں اب اس تفتیش اور بے موقع محقیق پر ڈانٹ بلائی جارہی ہے۔

کلا اییانہیں کرنا جا ہے اور ان چیزوں کی فضول تفتیش میں پڑنانہیں جا ہے کہ اجمالی ایمان کو سخت نقصان پہنچا ہے۔

مئی فیل مون انہیں جلد پہ چل جائے گا آخرت میں جزادیے کے بارے میں اس وضاحت کے ساتھ کہ کوئی اختلاف اور اشتہاہ ندرہے گا۔

نم گلاستِفلَمُونَ پرہم کہتے ہیں کہ ایسانہیں کرنا چاہیے انہیں جلد معلوم ہوجائے گا کہ اوراس کلام کا تکرار صرف ڈانٹ ڈبٹ کی تاکید کے لیے ہے۔ کو یا بار باراس کرے کام سے منع فرمایا جارہا ہے اوراسے جانے کا زمانہ قریب میں نشان دیا جارہا ہے کہ جوآنے والی شے ہے قریب ہی ہے۔

اوربعض مفسروں نے پہلے ستے فلکمؤن سے برزخ کا جانامرادلیا ہے کہ وہاں جزادینا

خیالی طور پر واقع ہوگا جبکہ دوسری بار جانتا قیامت میں ہوگا کہ وہاں حقیقی طور پر جزادی جائے گا اس لیے کہ روح کا بدن کے ساتھ تعلق ہو جائے گا اور تعلق کے باوجود مجرد ہونے کا اثر روح پر غالب رہے گا اور غلبہ تجرد کے باوجود تعلق کی کیفیت اس روز واضح ہوگی اس لیے کہ دنیا میں تعلق تجرد کے مغلوب ہونے کا سبب ہے جبکہ برزخ میں تجرد غالب اور تعلق مغلوب یہ قیامت آنے سے پہلے تعلق اور غلبہ تجرد کے جمع ہونے پر آگاہی ممکن نہیں۔

جواب طلب سوال

یہاں ایک جواب طلب سوال باتی رہ گیا اور وہ یہ ہے کہ سورہ تکاثر میں گلاسے ف ت نَعْلَمُونَ ثُمَّ گلا سَوف تعلَمُونَ واقع ہوا جبکہ یہاں سَیَعْلَمُونَ ہے اور سوف تاخیر اور مہلت پر دلالت کرتا ہے جبکہ میں شتا بی اور جلدی پر اور قیامت کا آنا اگر قریب اعتبار کریں تو ہاں سوف کا لفظ کیوں لایا گیا اور وراعتبار کریں تو یہاں حرف میں کیوں ذکر کیا گیا؟

اس کا جواب یہ ہے کہ سورہ تکاثر میں مخاطب کقار ہیں اوران کی نظر میں قیامت بہت و ورمعلوم ہوتی تھی ان کے کمان کے مطابق خطاب فر مایا گیا اور حرف سوف جو کہ وُ وری اور فاصلے پر دلالت کرتا ہے لایا گیا۔ جبکہ یہاں ایمان والے مخاطب ہیں جن کی نظر میں قیامت کا آنا بالکل سامنے اور قریب ہے۔ اِنگھٹم یَوَ وْنَلَهُ بَعِیْدًا وَنَوَاهُ قَوِیدًا گویا ایمان والوں سے ارشاد فر مایا جارہا ہے کہ یہ کفار قیامت کا اپنی تمام ترکیفیات اور حالات کے ساتھ آنا عنقریب حال لیں گے۔ حالت کے ساتھ آنا عنقریب حال لیں گے۔

اور جب ان لا یعنی سوالات کرنے پر ڈانٹنے سے فراغت ہوئی تو استفہام تقریری کے طور پر چند چیزوں کے متعلق پوچھا جارہا ہے اور اقرار کرایا جارہا ہے اور وہ سب کی سب نو چیزیں ہیں کہ د نیوی زندگی کا دار و مدارعوام کے ذہنوں ہیں انہیں چیزوں پر ہے اگر کوئی ان چیزوں ہیں محروم رہے کو یا د نیا ہی میں نہیں ہے۔ پس جو محض د نیا کی زندگی رکھتا ہے کا زی طور پر ان نو چیزوں میں شریک ہونے کے باوجود لوگوں کے طور پر ان نو چیزوں میں شریک ہوگا اور ان چیزوں میں مشترک ہونے کے باوجود لوگوں کے درمیان پورے طور پر فرق اور جدائی حاصل نہیں ہوئے ہیں ان چیزوں میں مشترک رہنے ہوگا درخواست کرنا ایبا ہی ہے کہ ایک گھر کے کمین کمیں کہ ہمارے درمیان اور جدائی کی درخواست کرنا ایبا ہی ہے کہ ایک گھر کے کمین کمیں کہ ہمارے

كرنے كى درخواست كرناہے۔

الله من بنعل الآد طل معادًا كيابم نے زمين كوتمبارا بچونانه بنايا كه اس ميں رہتے ہوكيتی باڑی اور تجارت كرتے ہوا ور زندگی اور موت ميں تمباری جائے قرار اور شوكانا وہی ہے اور اس امر ميں نيك وبد مسلمان اور كافر شريك بيں ايك دوسرے سے جدانہيں بيں جبكہ چاہے كہ يوم الفصل كونيوں كامقام جنت ہواور برون كا شحكانہ جہنم تاكہ پوری جدائی اور امتیاز تحقق ہوجیہا كه دوسرے مقام برفر مايا گيا ہے وَ مَنْ عَدِم لَ صَالِح ا فَلاَنْفُر الله مَا مَنْ مَهَادً

والحب بال ہو جو کہ اپنا ہوں کوئٹ کی طرح نہیں بنایا ہے جو کہ اپنا ہو جو اور سخت بھاری ہونے کی وجہ سے زمین کو تیز ہوا کیں چلنے کے وقت ملئے نہیں ویتے جس طرح کہ خیموں کی میخیں ہوتی ہیں بوراس نفع میں تمام آ دمی شریک ہیں۔ آپس میں کوئی فرق اور جدائی نہیں رکھتے جبکہ یہ و آ الفصل کو جا ہے کہ جنتیوں کے جنت کے ذریں مرضع محلات اور ایوانوں میں رہنے کا سبب ہواور جہنیوں کے جہنم اور آپنی زنجیروں اور طوقوں میں جکڑے جانے کا موجب ہو جو کے گرم ہونے کی وجہ ہے آگ کی طرح جلانے والے ہوں۔

وَخَلَفْنَا کُمْ اَزُوَاجًا اورہم نے تہمیں ہفت بیدافر مایا نراور مادہ تاکہ سل جاری ہو اور تہمارے درمیان نبی اور سرالی تعلقات تقتق ہوں اور اس کی وجہ سے اُلفت اجتماعیت اور بہمی تعاون اور امداد حاصل ہواور دنیا کی زندگی پُر رونق ہو جبکہ یوم الفصل کو چاہیے کہ ان تعلقات میں سے پچھ بھی ندرہ اس لیے کہ اپ قریبیوں میں سے ایک آوی کا دُکھ دوسروں کے دُکھی ہونے کا موجب ہوتا ہے تو اگر دنیا میں نیک لوگوں کے قریبیوں کو سزاویں تو نیکوں کے عذاب کا موجب ہوگا اور اس سزا میں شراکت رونما ہواور اگر بُروں کے قریبیوں کو نعمت میں شریک عطافر مائیں تو وہ قریبی ہونے کے تعلق کی وجہ سے بُروں کو این ساتھ اس نعمت میں شریک عطافر مائیں تو وہ قریبی ہونے کے تعلق کی وجہ سے بُروں کو این ساتھ اس نعمت میں شریک

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ مُسَاتًا اورہم نے و نیا یس تمہاری نیندکوراحت اور عمل سے فراغت کا سبب بنایا تاکہ تھکاوٹ اور مشقت و ور ہواور راحت اور تازگی حاصل ہو جبکہ یوم الفصل کو چاہیے کہ اس میں نیند نہ ہواس لیے کہ اگر آ دی نیک ہے تو اسے راحت اور تازگی کے سوا یکھ نہیں ہوگا۔ چنا نچے جنتیوں کے بارے میں دوسری جگہ ارشاد فر بایا لاَیکسَسُهُمْ فِینَهَا لَعُوْبٍ پس نیندکی ضرورت بھی نہیں ہوگی جبکہ اگر وہاں نیند ہوتو عظیم فوا کہ وکریکسٹهم فینها لَعُوبٍ پس نیندکی ضرورت بھی نہیں ہوگی جبکہ اگر وہاں نیند ہوتو عظیم فوا کہ پورے طور پر حاصل کرنے سے محروی کا سبب ہواور داکی تو اب کے نقصان کا موجب ہواور اگر آ دی کہ اسے تو اسے نوائی و کھ تکلیف اور جی و پکار لازی ہے اسے عذاب کی تکلیف اگر آ دی کہ اس تو جے کہ وہ راحت کے ساتھ وقت گزارے وہاں تو جے و پکار اور اور یا کے سوا پھونیس ہے جیسا کہ دوسرے مقام پر صراحت کے ساتھ یہ معنی بیان فر بایا گیا

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا اور ہم نے اہلِ ونیا کے لیے رات کولہاس اور پردہ بنایا کہ ہر چھپانے کی چیز ای میں کی جاتی ہے جیسے عورتوں کی صحبت نفید مشورے وشمنوں سے فراز چوری خیانت عیش تص و سروڈ تبجد مراقبہ اور دوسرے منافع جو کہ چھپنے سے تعلق رکھتے ہیں اورای لیے کہتے ہیں رات عاشقوں کا پردہ ہے۔اے کاش اس کے اوقات ہمیشہ رہتے۔ نیز کہتے ہیں رات کے اندھروں کے تیرے پاس کتنے احسان ہیں جو خبر دیتے ہیں کہ مانو یہ نے چھوٹ کہا جبکہ یوم الفصل کو چاہے کہ اس کے واقعات خاص و عام ہر کسی پر ظاہر اور روشن ہوں نہ کہ تھی اور چھپے ہوئے ورنہ نیکوں کی عظمت وشوکت اور کروں کی ذلت ورسوائی طابت ہوں نہ کہ تھی اور چھپے ہوئے ورنہ نیکوں کی عظمت وشوکت اور کروں کی ذلت ورسوائی طابت

حضرت این عباس رضی الله عنهما سے ایک محف نے بوجھا کہ عقد نکاح کی مجلس رات میں ہونی چاہیے یا دن میں؟ فر مایا کہ رات میں کیونکہ حق تعالی نے رات کولباس فر مایا ہے اور منکوحہ عورتوں کو بھی لباس فر مایا کہ ھُنَّ لِبَاسٌ تَکُمُ ایک لباس کو دوسرے لباس کے ساتھ یوری مناسبت ہے۔

وَجَعَلْنَا النّهَارَ مَعَاشًا اور ہم نے دنیا والوں کے لیے دن روزی کی تلاش کا وہت بنایا جبکہ یوم الفصل میں بالکل تلاش نہ ہوگی اس لیے کہ نیکوں کو تعتیں خود بخو د تیار موجود ملیں گی اگر وہاں بھی انہیں روزی تلاش کرنے کی ضرورت پڑے تو بیزاعذاب ہے اور بُروں کو روزی تلاش کرنے کی ضرورت پڑے کیے میں طوق جہنم کے فرشتوں کے روزی تلاش کرنے کی طاقت نہیں کیونکہ پاؤں میں زنجیز کلے میں طوق جہنم کے فرشتوں کے ہاتھوں گرفتار میں اور بھوک اور بیاس کے عذاب میں بے چین میں تاکہ دونوں گروہوں کی روزی کے درمیان پورا فرق ظاہر ہواور د نیوی فرندگی کی طرح اس فکر کی سر پھٹول اور گرفت میں نہ رہیں۔

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا اور بم نے تمہارے اوپر سات بخت اور مضبوط طبقات بناے جو کہ صدیاں اور زمانے گزارنے کے باوجود پرانے نہیں ہوتے اور ان میں سات سیارے مختلف حرکات میں مصروف ہیں اور نے اطوار رونما کرتے ہیں اور ہر طور میں ان سے ایک خاص تا شیر ظہور پذیر ہوتی ہا اور اس تا شیر سے نقصان اور نفع پانے میں سب کے سب مومن و کافر نیک بخت اور بد بخت شریک ہوتے ہیں بخلائ یوم الفصل کے کہ وہاں نیکوں کے لیے درجات بنت جھت کی ما ننہ ہیں اور انبیا علیم السلام اور پیشواؤں کی نور انی ارواح درجہ بدرجہ این سے نکے لوگوں کے بارے میں امداد فرماتی ہیں اور پیشواؤں کی نور انی ارواح سے ترتی حاصل کرتے ہیں اور کروں کو دوزخ کے طبقات نیچ سے محیط ہیں اور دجالوں اور کفر کے سرداروں کی خبیث ارواح اپنی ظلمانی کیفیات کے ساتھ اوپر والے لوگوں کے عذاب میں زیادتی کرتی ہیں۔

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَاجًا اور بم نے اہلِ دنیا کے نفع کے لیے ایک تیز شعاعوں والا چکتا ہوا چراغ بنایا جو کہ سورج ہے اور حرارت اور روشنی کو جمع کرنے والا ہے اور نیک و بد میں marfat.com

ے ہرایک اس کی روشنی اور حرارت سے نفع و نقصان پاتا ہے بخلاف ہوم الفصل کے کہ جمالِ اللی کا جلوہ جنت میں نیکوں پر نور افشانی فرما تا ہے جبکہ جلالِ اللی کا جلوہ جسے حدیث پاک میں قدم کے ساتھ جبر کیا میا ہے جہنے ہوں کوشد یہ حرارت کے ساتھ جلاتا ہے۔

وَانْذَنْنَا مِنَ الْمُعُصِدَاتِ اور ہم نے جھلکتے بادلوں سے اُتارا۔ مَاءً تُجَاجًا موسلاد حار پانی بِنْ عُدِ ہِم جَبًا تاکہ ہم اس کی وجہ سے غلہ پیدا کریں جو کہ تہاری خوراک بنتا ہے۔و نَبَاتَا اور سِنَر بیاں جن میں سے بعض سالن بعض مصالح اور بعض تہارے جانوروں کی خوراک اور چارہ بنتی ہیں تاکہ تم ان سے دودھ وہی تھی اور پنیر حاصل کرواور کام میں لاؤ۔

وَجَنَّاتِ ٱلْفَاقَا اور تحض باغات تاكة تباري كيل كهان اورلذت حاصل كرنے کے کام آئیں اور تم ان باغات کے میلوں کومختلف اقسام میں ترتب دے کراجار مربا سرکہ ' جوں اور شربت بنا کراستعال کرواور اس نفع لینے میں تم سب نیک و بدمومن و کا فرشر یک ہوءً کوئی اممیاز نبیس که بارش کس مقام پر ہو کھیتیاں کس مقام پرسر سبز ہوں اور باغ کہاں أكيس اور کس مقام پر بارش نہ ہو اور سبزہ نہ أسے اور پھل نہ کے۔ بخلاف ہوم الفصل کے وہاں نیکوں کے کسب کیے ہوئے اعمال عقائد احوال اور مقامات بادلوں کی طرح وود مرشید خوشکوار شربت اور صاف یانی برسائی اور نهری جاری موں اور جنتی در خت اس یارش کی قوت اور نہروں کے اثر سے لذیذ کھل خود بخو و لائیں اور جب بھی کہیں سے کھل تو رکر ا کھا کیں او نشوونما کے مواد کی اطافت کی وجہ سے اس کھل کی جکہ دوسرا کھل پیدا ہوجائے اور اس سے پھل اور لذت حاصل کرنا مجمی منقطع ندہو جبکہ یُروں کے یُرے اعمال عقائد اور عادات وحوئیں کی طرح اُنھیں اور چنگارے برسائیں اور ان کےجسموں کوجلائیں جیسا کہ فرمايا حمياً هِ وَظِلِّ مَّنْ يَعْمُوم. إنْطَلِقُوا إلى ظِلَّ ذِي تُلَاثِ شَعْبِ اورتموبراور دوسرے خاردار بدز القداور مرووصورت درختوں کے اُسے کا سبب ہوں تا کہ دونوں مروہوں ک گزربسر میں پورے طور پرفرق اور جدائی حاصل ہو۔پس معلوم ہوا کہ یوم الفصل ونیا ہیں۔ رونمانيس موسكاس ليے كه جدائى اتفاق اور شركت كے بالكل منافى ہے تو يوم النسل كا ان

چیزوں کی موجودگی میں کہ ان میں شرکت اور اتفاق واقع ہے' تصور نہیں کیا جا سکتا بلکہ اس جہاں کی بربادی اور یہاں کے اتفا قات کے اصول وارکان کو درہم برہم کرنے کے بعد اس کی توقع کرنا جا ہے اور اس کی آمد کے وقت کو اس جہان کی بربادی کی ابتدا ہے سمجھا جا سکتا ہے۔ چنانچے فرمایا

اِنَّ یَوْمَ الْفَصْلِ شَحْقیق نیکوں کو یُروں سے نیکوں کے درجات کوایک دوسرے سے اور پُروں کے مرتبوں کوایک دوسرے سے اور پُروں کے مرتبوں کوایک دوسرے سے علیجدہ متاز اور جدا کرنے کا دن ا

کان مِیْقَاتًا ایک مقررشدہ وقت ہے جو کہ آگے پیچھے نہیں ہوسکتا اور دنیا میں کفار کا اے جلد طلب کرنا اے پہلے نہیں کرسکتا۔

وفت قیامت کے لیے چند چیزیں لازم ہیں

اس لیے کہ اس وقت کے لیے چند ضروری ہیں۔ پہلی چیز یہ کہ جدائی کے بعدارواح کا جسموں کے ساتھ تعلق بحال ہوای لیے برزخ کے اوقات میں بھی قیامت نہیں ہو گئی اس لیے کہ برزخ میں روح کا بدن کے ساتھ تعلق بالکل نہیں ہواور پہلے جسم کے ساتھ روح کے تعلق کے بغیر اس جسم میں کسب کیے ہوئے اعمال کی جزاد کھنا ممکن نہیں اس لیے کہ جسم کے ساتھ تعلق کے بغیر اس جسم میں کسب کیے ہوئے اعمال کی جزاد کھنا ممکن نہیں اس لیے کہ جسم کے ساتھ تعلق کے بغیر روح کو صرف عالم خیال کی سیر ہے اور بس جیسے لکھنے والا جس کے ہاتھ کو کا خدیا گیا ہوؤہ اپنے خیال میں اپنی انگلیوں کو حرکت دیتا ہے اور اپنے خیال میں لکھتا ہے کہ لکھنا حقیق نہیں ہے۔

دیتے ہیں کہ اگر گزشتہ لوگ اس وقت ہوتے تو اس حالت میں گرفتار ہوتے اور اگر خوشی لی والے میں گرفتار ہوتے اور اگر خوشی لی والے ملک کے لوگ قبط زدہ ملک میں ہوتے تو مجوک بھوک کی معدالگاتے۔ پس لازم ہوا کہ یوم الفصل نوع انسانی کی تمام ارواح کے اپنے جسموں سے جدا ہونے کے بعد واقع ہوتا کہ ایک وقت اور ایک مقام میں ان ارواح کا تعلق جسموں کے ساتھ ایک ساتھ ہو۔

تیسری چیز ہے ہے کہ وہ مشتر کا تعتیں جو کہ فقیر وغیٰ مومن و کافر نیک و بدُ لائق و نالائق اور صحت مند و بیار کے درمیان میسال اور برابر ہیں ان میں سے پچھ بھی باقی نہ رہے ور نہ برابری اور شرکت لازم آئے اور مقصود جو کہ فرق اور التمیاز کرنا ہے حاصل نہ ہو۔

چوتی چیز ہے ہے کہ اس آسان اور زمین کے بدلے دوسری جگہ اور مسکن حاصل ہواور جب اس جہان میں وہ جگہ اور مسکن آسان کے اوپر اور زمین کے بنچے پوشیدہ ہے تو اسے ظاہر کرنے کے لیے آسان اور زمین کو زائل کرنا ضروری ہے تاکہ نیکوں کے لیے جنت آسان کے اوپر سے ظاہر ہواور پُروں کے لیے جبتم زمین کے بنچے سے جوش مارے ای لیے وہ وقت ٹابت نہ ہوگا مگر

یوه مرین نفیخ فی المطور اس دن جبر صور پیونکا جائے۔ اور بدومری مرتبہ پیونکا مراد

ہے کہ تیامت کے دن کا آغاز ای سے ہاور اس پیونکنی وجہ سے افراد انسانی کی تمام
ارواح اپنے جسموں کے ساتھ متعلق ہو کر ہروین اور فد ہب والے جدا جدا اُٹھیں گئ فرشتے
لوگوں کی اس انظام کے ساتھ گروہ بندی کریں گے کہ مثلاً یہود یوں نفرانیوں جموسیوں اور
ہندووک وغیر ہم کی صفیں جدا جدا ہوں گی اور اہلِ اسلام اور تو حید پرستوں کی صفیں علیحہ ہ ۔ پھر نما مہر نبی علیہ السلام کے پیروکاروں میں سے مختلف ہر نبی علیہ السلام کے پیروکار جدا اور ایک نبی علیہ السلام کے پیروکاروں میں سے مختلف نمر اب اور مختلف مشر بوں والے جدا اور ای طرح نبی اور یُر انی کے ہر عمل والے جیسے نماز کر در اور شفقت کرنے والے جسے تعار کرنے والوں شکر کرنے والوں اور رم دل اور شفقت کرنے والوں اور محد کرنے والوں مبر کرنے والوں شکر کرنے والوں اور توکل کرنے والوں میں سے ہر مقام والے جدا جدا کھڑے کر دیئے جا کیں گئی گئی ہو در سالہ دار دلا کر کے درسالہ دار

بھر جعدار۔ پھرانہیں فرشتے میدان حشر کی طرف چلائیں سے۔

فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا لِي تم سب كے سب فوج در فوج اور گروہ در گروہ آؤگے كہ ايك گروہ كے آدمی دوسرے گروہ كے آدميوں ميں ہيں مليس محے اور اس معنی كو بہت ى آيات اور بے شاراحادیث میں کھول كربيان فرمايا گيا ہے۔

ان مِس سے یہ ہے کہ فرمایا گیا ہے وَیَوْمَ یُحْشَرُ اَعْدَاءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُونَ نيزفرمايا وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّنَّنَ يُكَذِّبُ بايَّاتِنَا فَهُمْ یوزعون اس کےعلاوہ اور بھی ہیں جنہیں تغصیل کے ساتھ ذکر کرنے سے بات طویل ہو ً جاتی ہے۔اوربعض اجادیث صحیحہ میں ہرفوج کی علامت اور نشانی بیان فرمائی گئی ہے۔مثلاً دغا بازوں اور عہد فنکنی کرنے والوں کی پشت پر جھنڈا گاڑ کراٹھا کیں گے اور اگر اس نے کسی مقدے میں جان بوجھ کرغداری اور وعدہ خلافی کی تھی تو ایک بڑا حجنڈا اس کی مقعد پراُگے گا۔ اور کسی مقدمہ میں جہالت کی تھی تو ایک جھوٹا حجنڈا مقام مخصوص پر اُگے گا۔ اورجنہوں نے مال غنیمت میں خیانت کی تھی تو وہ چوری کی ہوئی چیز اس کی گردن پر لاد کر لائیں گے۔ اور اگر اونٹ یا بکری یا تھوڑا یا گائے ہے تو وہ آ واز کرے گی اور اگر تھان اور کپڑا ہے تو جےنڈے کے بردے کی طرح ہوا میں لہرائے گا۔ جبکہ شہیدوں کوخون آلود اٹھا کیں گے کہان کے زخموں سے کمتوری کی خوشبو آئے گی۔ اور بین کرنے والی عورت کا کرتہ گندھک کا ہوگا اوراس کاجسم خارش زدہ۔اور مانگنے والے کداؤں کے چبرے جوکہ ضرورت شرعیہ کے بغیر لوگوں سے مانگتے ہیں زخمی اور خراش زدہ ہوں گے۔علی بدا القیاس تلاش کے بعد اس باب مں کشرتعداد میں سیح احادیث یائی جاتی ہیں۔

قیامت کے دن چندگروہ کس کس شکل میں حاضر ہوں گے

ہوں گے دوسرا فرقہ سوروں کی شکل میں اور وہ حرام کھانے اور رشوت لینے والے ہوں گئی تیسرا فرقہ اُلئے ہوئے سرز مین پراور پاؤں او پر کی طرف اور انہیں فرشتے منہ کے بل تھنچ کر لائمیں گے اور وہ سود کھانے والے ہوں گے۔ چوتھا فرقہ اند ھے اور وہ نج اور مفتی ہوں گے جو کہ غلط فیلے اور فتوے ویتے تھے۔ پانچواں فرقہ بہرے اور گونگے اور یہ وہ لوگ ہوں گے جو اپنی عبادات اور نیکیوں پر غرور کرتے تھے اور خود بنی کرتے تھے چھٹا فرقہ اپنی زبانیں جو اپنی عبادات اور نیکوں پر غرور کرتے تھے اور خود بنی کرتے تھے ہوئا فرقہ اپنی زبانیں جبائیں گے اور ان کی زبانیں منہ سے باہر ان کے سینوں پر نگتی ہوں گی اور ان کے منہ سے زرد پانی اور پیپ جاری کہ تمام اہل محشر آئیں و کھے کر نفرت کریں گے اور یہ فرقہ وہ علاء اور مشارکے ہوں گے جو سے خلاف تھے۔

ساتواں فرقہ ہاتھ پاؤں کئے ہوئے اور یہ وہ لوگ ہوں گے جو کہ جانوروں بے زبانوں کو بلاوجہ ایذاء دیتے تھے اور ہمائے کوستاتے تھے اور آ ٹھواں فرقہ آتشیں پھانسیوں پرلٹکائے ہوئے۔ اور یہ وہ ہوں گے جو کہ لوگوں کے جمید ظالم حکام کے سامنے ظاہر کرتے اور انہیں تکلیف پہنچاتے تھے۔ اور نواں فرقہ وہ لوگ ہوں گے جن کی بد بوم وار سے بھی برتر ہوگی اور ان کی بد بو سے اہل محشر نگ ہوں گے۔ اور وہ لوگ اپنی خواہشات اور لذتوں کے تابع تھے اور اپنے اموال سے اہلہ محشر نگ ہوں کے۔ اور وہ لوگ اپنی خواہشات اور لذتوں کے تابع تھے اور اپنے اموال سے اللہ تعالی کاحق اوانہیں کرتے تھے بلکہ اپنی خواہشات میں خرج کرتے تھے۔ اور دسواں فرقہ گندھک کے لیے گرتے ہوئے اور وہ گرتے ان کے جسموں پر چیکے ہوئے ہوں گے اور یہ قرار وہ تھیر اور غرور والے ہوں گے اور یہ تمام فرکورہ حالات اس اُمت کے بہنچتوں اور نافر مانوں کے جیں۔

رہے ایمان والے اور نیک لوگ تو ان میں سے بعض چودہویں رات کے جاند کی طرح چیکیں گے اور بعض نور کے طرح چیکیں گے اور بعض تو سان کے ستاروں کی طرح روشن ہوں سے اور بعض نور کے منبروں پر بیٹھے ہوں سے اور بعض زریں مرصع کرسیوں پر ہوں سے اور بعض مشک اور زعفران کے ٹیلوں پر ہوں سے ۔علی ہذا القیاس

میں پیدا ہوئی ہوں گی طاہر ہوں اور بہشت جس کا خزانہ ساتویں آسان کے اوپر ہے نمودار ہو۔ گویا آسان کواس طرح اُٹھالیا گیا جیسے تھال کے اوپر سے سریوس اُٹھالیا جائے۔

فکائٹ اَبوَابًا پس آسان دروازے بن جائے گا کہ اس راستے ہے جنت میں داخلہ ہو سکے اور جنتی نعمتیں نظر آسکیں۔

وَسُیِرَتِ الْحِبَالُ اور بہاڑ جاری کرویئے جائیں گے جو کہ زمین کی میخوں کی جگہ تھے۔

فکانت سَرَابًا پی وہ جاری ریت کی طرح ہوں گے جو کہ دُور سے پانی معلوم ہوتی ہے اور حقیقت میں ریت ہے۔ ای طرح بہاڑ جاری ہونے کی صورت میں دُور سے بوں معلوم ہوگا کہ پہاڑ جی لیکن حقیقت میں ریزہ ریزہ ہو کر ریت کی طرح ہو چکے ہوں گے جیسا کہ دوسری جگہ فرمایا ہے:

و کائت البحبال کینیبا میلا اورایک اور مقام پر فرمایا و کائٹ هَبَاءً مُنْبَیّا اور بین کی میخوں کی بیرحالت ہوگئ زمین بھی درہم برہم ہوگئ اور دوزخ کا مرکز جو کہ اس جب زمین کی میخوں کی بیرحالت ہوگئ زمین بھی درہم برہم ہوگئ اور زمین کے بجائے جہم کے بینچے تھا' کھل گیا حتی کہ آ سان کی جگہ جنت جائے قرار بن گئ اور زمین کے بجائے جہم اور اطاعت کرنے والوں اور نافر مانوں نیز نیکوں اور بدوں کے مکان کے درمیان جدائی مختق ہوگئ اور زمین و آ سان درمیان سے نکل گئے ۔ سورج' بارش اور دومری مشتر کہ نعتیں جن کا ذکر پہلے گزر چکا ہے' سب فنا ہوگئیں اور نیکوں اور یُروں کے درمیان کی طرح بھی شرکت ندری اس لیے کہ یُروں کے رہنے میک گھہاور نیکوں کا مقام اور ہوگیا۔

اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتُ مِرْصَادًا تَحْقِينَ ووزخُ كُرفآركرنِ كَي جَلَه بِ جَس كَ كنار بِ بِفرشَةِ آتَشِيل كُرزينُ زنجيري اورطوق ليے كمڑے ہیں اورلوگوں كوقيدكر كے ليے جار ہے ہیں۔

اور حفرت نفیل بن عیاض رحمة الله علیہ ہے مروی ہے کہ بل صراط کا فاصلہ بین بزار سال کا ہے بال ہے زیادہ باریک اور تلوار ہے زیادہ تیز بزار سال اوپر آنے کے لیے بزار سال ہموار چلنے اور بزار سال اُرنے کے لیے اور بیسب بچھا بیان والوں کے بارے میں ہے جبکہ کفار دوز خ کے فرشتوں کے ہاتھوں گرفتار ہوکراس کی تہ میں جا گریں گے۔
کابیٹی فیٹھا آخفا با اس دوز خ میں کی صدیاں تعمریں گے

حقبه کا بیان

اور ہلال ہجری ہے منقول ہے جنہوں نے حضرت امیرالمونین مرتضیٰ علی کرم اللہ وجہہ ہے احقاب کے معنی پو چھے تھے۔ آپ نے فرمایا کہ ہر ھنبہ ستر ہزار سال کا ہے اور ہر سال بارہ مہینوں کا اور ہر دن و نیا کے سال بارہ مہینوں کا اور ہر دن کا اور ہر دن و نیا کے سال کے برابر۔

اور بعض ناوان اس آیت کے بارے پی غلط بھی کی وجہ سے کہتے ہیں کہ بیعذاب کے وائی اور ہمیشہ ہونے کے خلاف ہے جو کہ دوسری آیات سے معلوم ہوتا ہے حالانکہ اس آیت میں احقاب کا تعین نہیں فر مایا عمیا تا کہ عذاب کا منقطع ہونا معلوم ہو بلکہ اس سے مدت کی میں احقاب کا تعین نہیں فر مایا عمیا تا کہ عذاب کا منقطع ہونا معلوم ہو بلکہ اس سے مدت کی مرت کی انتہا کے وکہ غیر متابی احقاب مراد ہیں اور ان بے وقو فوں کو ھیہ کی مدت کی انتہا کے ساتھ اشتباہ ہوتا ہے۔ نہیں سمجھتے کہ ایک ھیہ کی انتہا اخقاب کی مدت کی انتہا کے ساتھ اشتباہ ہوتا ہے۔ نہیں سمجھتے کہ ایک ھیہ کی انتہا احقاب کی مدت کی انتہا ہوتا ہے۔ نہیں سمجھتے کہ ایک ھیہ کی انتہا احقاب کے مراح ہیں ہوگئی۔

ساتھ اور جب اس سے بھی گزرجائے تو سالوں کے ساتھ سینتے ہیں اس کے بعد قرنوں کے ساتھ اور جب بے انتہا ہوتو احقاب کے ساتھ جس طرح کہ لیل مال کوروپوں کے ساتھ سینتے ہیں اور جب شار میں نہ آئے تو لاکھوں ہیں اور جب شار میں نہ آئے تو لاکھوں کروڑوں کے ساتھ اور جب شار میں نہ آئے تو لاکھوں کروڑوں کے ساتھ تعیم کرتے ہیں اور فراء نے کہا ہے کہ احقابا اس صفت کے ساتھ موصوف ہے جو کہ آگے آری ہے یعنی

لاَیکُووُوُنَ فِیْهَا بَوْدًا وَلا شَرَابًا اس مت مِی شُندُک اور پینے کی چرنیں چکھیں کے کہ باہر سے شندُی ہوا جُنچنے اور اندر سے شندًا پانی پینے سے جلنے کے عذاب میں کچھ تخفف حاصل کریں جیسا کہ دنیا میں بخار والے کوان چروں کی وجہ سے تخفف ہوتی ہے تو گویا یوں ارشاد ہوا کہ اس مت دراز میں شندُک کا نام تک نہ پائیں گے اور اس کے بعد انہیں زمہریے کے طبقے میں لے جا کیں گے اور سردی کا عذاب دیں گے یہاں تک کہ سردی کی انہیں زمہریے طبقے میں لے جا کیں گے اور سردی کا عذاب دیں گے یہاں تک کہ سردی کی لائمیں نے مدشدت کی وجہ سے ان کے رَگ و پے جم جا کیں اور انہیں پھر دوز خ کی آگ میں لائمیں گے اور جلنے کا عذاب دیں گے اس مدت تک جس طرح کہ پہلے عذاب دیا گیا تھا اور انہیں گے اور جلنے کا عذاب دیں گے اس مدت تک جس طرح کہ پہلے عذاب دیا گیا تھا اور اس کے ساتھ ان کے رابدالآ باد تک عذاب میں دیں گے جس کی کوئی چرنہیں چکھیں اس امرت تک دوز خ میں پینے کی کوئی چرنہیں چکھیں جب یہاں ارشاد ہوا کہ بیا گیا ہے کہ لَھُمۃ شَرَابٌ مِیْنُ حَدِیْمِ (۲–۱۳) یہاں مثناء کے طریقے پر فرمایا جارہا ہے۔

الله حدیثا محرنهایت گرم پانی جو که ان کی انتزیوں کو کاٹ دے گا اور اندر کی گرمی کئی مختابر مادے گا۔ چہ جائیکہ کوئی تخفیف بخشے۔ و خَسّاقا اور میل کچیل اور ان کے اور دوسرے دونے نیوں کے جائیکہ کوئی تخفیف بخشے۔ و خَسّاقا اور میں جمع ہوگی اور وہ پیاس کی سخت دونے نیوں کے جلے ہوئے اعضاء کی پیپ جو کہ گردھوں میں جمع ہوگی اور وہ پیاس کی سخت مجبوری کی وجہ سے اس سے بیس کے اور وہ ان کے اندرونی ماحول کوردی زہر ملی کیفیت کے ساتھ خراب کردے گی۔

اور اگر دوز خیوں کے بے انتہا مت تک آگ میں مفہر نے کاسُن کرکسی کے دل میں شہر کے دل میں شہر نے کاسُن کرکسی کے دل میں شہر کر در نیا میں ان کا کفراور گناہ ایک محدود وقت میں تھے جو کدان کی عمر کی مدت ہے شہر گزرے کہ دنیا میں ان کا کفراور گناہ ایک محدود وقت میں تھے جو کدان کی عمر کی مدت ہے میں معلق میں ان کا کفراور گناہ ایک محدود وقت میں معلق جو کدان کی عمر کی مدت ہے میں معلق میں ان کا کفراور گناہ ایک محدود وقت میں معلق جو کدان کی عمر کی مدت ہے میں معلق جو کدان کی عمر کی مدت ہے میں معلق میں ان کا کفراور گناہ ایک محدود وقت میں معلق جو کہ ان کا کفراور گناہ ایک محدود وقت میں معلق کے دونت میں معلق کے در ان میں کا کفراور گناہ ایک محدود وقت میں معلق کو در ان میں کے در کام میں کا کھی میں کہ میں کا کھی کہ در ان میں کا کھی کا کھی کا کھی کا کھی کے در ان میں کہ کا کھی کے در ان میں کا کھی کے در ان میں کا کھی کے در ان میں کے در ان میں کے در ان میں کا کھی کے در ان میں کے در ان میں کی کھی کے در ان میں کی کھی کے در ان میں کی کھی کے در ان میں کے در ان میں کی کھی کھی کے در ان میں کی کھی کے در ان میں کی کھی کے در ان میں کھی کے در ان میں کے در ان کھی کے در ان کی کھی کے در ان میں کے در ان میں کے در ان کھی کے در ان کھی کے در ان ک

ادراس کے بدلے نہ ختم ہونے والا عذاب دینا صریح ظلم ہے تو ہم کہتے ہیں کہ بیفلانہی ہے بلکہ بین ختم ہونے والا عذاب عین انصاف ہے اوراس عذاب میں جزائیس دی جائے گی گر جَدَات وَفَاقًا الی جزاجو کہ ان کے اعمال کے مطابق ہے اس سے زیادہ نہیں اس لیے کہ خور کرنے اور گہری نظر دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کاعمل بھی دائی ابدی اور نہ ختم ہونے والا ہے اس لیے کہ

انگیر کائوا لاید جُون جسابا تحقیق انیں آپ اعمال کے حساب کی امید نہ تھی اور جب حساب کی امید نہ تھی تو ان ہے اعمال کا منقطع ہونا محض لا چاری اور عمل کے اسباب کے نقدان کی وجہ سے تھا نہ کہ عذاب کے خوف یا تو اب ضائع ہونے کے کھنے کی وجہ سے اس لیے یہ کہ دونوں صور تیں حساب کی توقع کی ہیں۔ پس ان کا نم سے اعمال سے باز رہنا اس قبیلے سے تھا کہ کہتے ہیں معرع پارسائی بی بی از بے چا دری ست اور گناہوں کی محبت ان کی قبیلے سے تھا کہ کہتے ہیں معرع پارسائی بی بی از بے چا دری ست اور گناہوں کی محبت ان کی روح کے جوہر میں رہی بی تھی اور اس نے ملکہ کا تھم پیدا کر رکھا تھا اور دوح ابدی ہے نیر منابی بقاء رکھتی ہے اور اس سے اس میں رہے بسے اوصاف کا جدا ہونا محال ہے۔ پس وہ منابی بقاء رکھتی ہے اور اس سے اس میں رہے بسے اوصاف کا جدا ہونا محال ہے۔ پس وہ اس مسبب کے دائی ہونے کے دوام تک دائی ہیں اور عذاب کا سبب ہیں اور جب سبب دائی ہوتو مسبب کے دائی ہونے سے کیا تعجب کیا جا سکتا ہے۔ نیز وہ بے حساب اعتاد کے ساتھ اعتاء مسبب کے دائی ہونے نے کیا تعجب کیا جا سکتا ہے۔ نیز وہ بے حساب اعتاد کے ساتھ اعتاء کے اعمال پر بی اکتفانیس کرتے ہے بلکہ وہ اعمال جن کا روح کی ذات سے تعلق ہے اور وہ آلات و اعتاء کی ان میں بالکل کوئی شراکت نہیں 'میں ان سے صاور ہوتے ہے اور وہ اعمال دوح کے دوام کے ساتھ دائی ہیں اس لیے کہ وہ کفر کرتے تھے۔

و کند بُوا بایا تنا اور انہوں نے ہماری آیات کا جو کہ جزا اور حماب کے واقع ہونے پر ولالت کرتی تغییں انکار کیا۔ یحسد انہار کہ ان کار کیا۔ یحسد انکار کہ ان آیات کے جا ہونے کا اختال بانکل ان کے خیال میں گزرتا ہی نہیں تھا اور بیا تکار روح کا کام ہے نہ کہ جسم کا۔ پس عالم برزخ میں روح کے بدن کے ساتھ برزخ میں روح کے بدن کے ساتھ متعلق ہونے کے بعد ابدالآباد کی باتی ہے جیسے پختہ مزاح کی خرابی جو کہ ہر وقت تکلیف کا باعث ہوتی ہے ای طرح بیا انکار ہر کھنا عذاب زیادہ ہونے کا موجب ہوگا۔

اوراگر پھرکسی کے ول میں شبہ گزرے کہ گناہوں کی محبت آیات کا انکار اور روح کے دوسرے فتیجا عمال ایسے نہیں ہیں کہ لوگوں پر ظاہر ہوں تو ان کے مقابلے میں عذاب دینا کس ولیل سے درست ہوسکتا ہے جب تک کہ کسی مختص کی خیانت محضر عام میں ظاہر نہ ہوا ہے اس خیانت پر مواخذہ نہیں کیا جاسکتا اور ان کے وہ اعمال جولوگوں پر ظاہر ہوتے تھے کہی جسم کے خیانت پر مواخذہ نہیں کیا جاسکتا اور ان کے وہ اعمال جولوگوں پر ظاہر ہوتے تھے کہی جسم کے اعمال تھے جو کہ جسم سے روح کے جدا ہونے کے بعد ختم ہوگئے۔ ہم کہتے ہیں کہی شخص کی خیانت کا علم حاکم کو حاصل ہونا چاہیے وہ رسے لوگوں کو آگاہی ہویا نہ ہو۔ اور ہم ان کے دوئی اعمال کو جانتے ہیں بلکہ ہمارے خفیہ نویبوں نے بھی لکھ رکھے ہیں اور ان کے اقوال و افعال بھی ان پر دلالت کرتے ہیں۔

وکی شی اور ہر چیز کو جسم اور روح کے اعمال اور وہ افعال جو کہ اس پر دلالت کرتے تھے آخصیناکی ہم نے شار کر رکھا ہے اور صرف اپنی حفاظت پر ہی قباعت نہیں فر مائی بلکہ یکتابًا لکھوا کر۔ تاکہ دارالبقاء کے اہل کاروں کو ہروقت یا در ہے اور غیر متنا ہی عمل کے لیے جزا غیر متنا ہی مائے۔
لیے جزا غیر متنا ہی جا ہے۔

فَنُوقُوا فَكُنْ نَزِيْدَكُمْ إِلَاعَذَابًا لِي چَمُولِي بَمِ تَهِارِ لِي لِي وَهِهِي كري مُحَمَّر عذاب بخلاف مسلمان كناه كاروں كے كهان كاعذاب صرف اعضاء كے اعمال پر ہوگا اورختم ہوجائے كاس ليے كہ مجمح ايمان كى وجہ سے ان كى روح ميں يُرائى نہتى۔

اور تنبیدالغافلین میں فرکور ہے کہ جب دوزخی بہت زیادہ پیاسے ہوں گے تو بارش طلب کریں گئے ایک سیاہ بادل رونما ہوگا اور اس سے سرخ اونٹوں کی گردنوں کی مثل سانپ اور اونٹوں کے برابرجسوں والے بچھو برسیں گے اور انہیں کا ٹیس گے اور ان میں ان سانپوں اور پچھووں کے برابرجسوں والے بچھو برسیں گے اور انہیں کا ٹیس کے اور انہیں کا ٹیس کے اور انہیں کا ٹیس کے دبر کا اثر بزار سال تک رہے گا اس کے متعلق اس آیت کا مفہوم ہے کہ ذکا فَکْ قَدْ اللّٰ اللّٰ

ایک شبه اوراس کا جواب

اور یہاں ایک شبہ اکٹر لوگوں ہے ، بنوں ہیں آتا ہے کہ مزاج کے منافی اثر کرنے والا marfat.com

جب ہمیشہ اور دائی ہوتو اس کے اثر کا احساس نہیں رہتا اور اس کی تکلیف اور دُ کھنہیں ہوتا جیسا کہ دق والے کوگرمی سے تکلیف نہیں ہوتی۔

اس کا جواب ہے ہے کہ کہ بیاحساس کا نہ ہونامتنق مزاج کی خرابی کی صورت جی ہے نہ کہ مختلف مزاج کی خرابی کی صورت جی جہنیوں کوئی تنم کے عذاب دیئے جائیں گے اور انہیں عذاب کی ہرتنم کا احساس زبردست ہوگا جیسا کہ اس آیت ہے معلوم ہوتا ہے۔ نیز آ دی کے بدن جی حس کا آلہ اس کی جلہ ہے جبکہ جلنے کے بعد دوز خیوں کے بدن پر جلد از سرنو تازہ ہو جائے گی اور تازگی کی وجہ ہے اس کا احساس نبتاً زیادہ ہوگا جیسا کہ اس تازہ جلد جی انہائی احساس پائے جانے کا تجربہ اور مشاہدہ ہے جو کہ زخم میں انگور آنے کے بعد پیدا ہوتی ہے اور دوز خیوں کے عذاب جی زیادتی کے اسباب جی سے ایک بات یہ بھی ہوگ کہ اور ور ذخیوں کے عذاب جی زیادتی کے اسباب جی سے ایک بات یہ بھی ہوگ کہ ان کے کالف اور دھمن تنم کی نعتوں سے نواز سے جائیں گے جیسا کہ فرمایا جا رہا ہے۔ ان کہ کان کے کالف اور دھمن تم کی نعتوں سے نواز سے جائیں گے جیسا کہ فرمایا جا در ان کا مقام ہے اور ان کا مقام ہے اور ان کا مقام ہے اور ان کا مقام سے بہہ وجوہ ممتاز اور جدا ہے۔

حَدَآئِقَ بُرُمِوہ باغ ہیں جن کے اردگردد ہوار کی گئی ہے اور لفت عرب میں صدیجتہ ای باغ کو کہتے ہیں جس کے جاروں ملرف دیوار کی گئی ہو۔

وَاَعْنَابًا اور بِشَارِاتُكُور كے درخت بي محنى بيلوں كے ساتھ اور باغ كى روشوں پر برنرلد دوسرى ديوار بوں كے اور چونكہ انگوركى بيل ايك اعتبار سے مكان كائم ركھتى ہے كہاں كے سائے بيں بیٹے بیں اور اسے جہت كی شكل بين درست كرتے بيں اور ایك اعتبار سے درخت كائم ركمتى ہے كہاں سے مقعود پھل لينا ہے اسے خصوصيت كے ساتھ ذكر فر مايا كيا درخت كائم ركمتى ہے كہاں سے مقعود پھل لينا ہے اسے خصوصيت كے ساتھ ذكر فر مايا كيا درخ انكور بھى ان پھلوں بيں ہے جنہيں حد يقہ كالفظ شامل ہے ۔ كويا ارشاد ہوتا ہے كہ ان باغوں بين انكوركى بيلوں كے ساتيان ہوں كے جو كہ بارہ درى اور بنگلے كے قائم مقام ہوں گے۔

و تکواعِبَ اور کنواری عورتنی جن کے سینے اُ بھرے ہوئے اور سخت بلوغ کی حدکو پنجی ہوئی اس کیے کہ باغ اور بوستان کی سیر دککش لباس والے مصاحبوں کے بغیر بے مزو ہے۔

آثر آباً وہ خوا تین متقیوں کی ہم عمر ہوں گاس لیے کہ متقیوں اور ان عور توں کی روحیں لوٹانے کا وقت وہی ایک ہی ہے جس میں دوسری مرتبہ صور پھونکا جائے گا۔ پس ایک ہی ساعت میں ان کی ولادت ہوئی جیسا کہ دوسرے مقام پر فر مایا گیا ہے کہ اِنّا اَنْشَانَا هُنَّ اِنْشَانَا هُنَّ اَنْشَانَا هُنَّ اَنْشَانَا هُنَّ اِنْشَانَا هُنَّ اَنْشَانَا هُنَّ اَنْسَانَا عُورِ ہُم ایک ہوں کی وارد ہے ورتی دنیا کی عورتی ہوں گی تا کہ ان کی صحبت کے ساتھ جنسیت اور انس کی وجہ سے متقین کو پورے طور پر سرور حاصل ہوا ورہم عمری اُلفت وانس کا نسبتاً زیادہ موجب ہوتی ہے اور یہی وجہ ہے کہ بوڑھے جوانوں کی اور جوان بوڑھوں کی صحبت سے نفرت کرتے ہیں۔

جنتيول كي عمر كابيان

اکو تغییروں میں لکھا ہے کہ جنتی مرداور عورتیں تینتیس (۱۳۳) سالہ ہوں گے اور اس
کلام کا یہاں بی معنی ہے کہ ان کی ہر قوت اور فرحت اس عمر کے مشابہ ہوگی ور نہ ان کا پیدا
ہونا دوسری مرتبہ صور چھو تکنے کے وقت ہے اور اس وقت سے جنت میں داخل ہونے تک
ہدت دراز گزر جائے گی اور وہ جو بعض روایات میں جو کہ زاہدی اور واحدی میں نہ کور ہے
وارد ہوا کہ عورتیں سرت واضارہ سالہ ہوں گی جبکہ مرد تینتیس (۱۳۳) سالہ ہوں گے تو اس کا
معنی ہے کہ یہاں عورتوں کے اعضاء کی شکل اس عمر کے اعضاء جیسی ہوگی اس لیے کہ
عورت میں صورت ای عمر میں پورا ہوتا ہے اور اس کے بحد زوال کی طرف مائل ہو جاتا
ہواور بیوں کی ولادت اور انہیں دودھ پلانے کی وجہ سے پتان ڈھلک جاتے ہیں اور
مؤنث ہونے کا مزاج جو کہ کائی مرطوب ہوتا ہے اس وقت عمر کی خشکی کی وجہ سے معتدل ہو
جاتا ہے اور بدن کی ساخت کا تناسب سادگی اور نا تجربہ کاری جو کہ مجو بوں اور معشوقوں میں
مزغوب ہے اس عمر میں کائی صاصل ہوتی ہے۔ بخلاف مردوں کے ان میں کمال عقل و تجربہ
قابل جسین ہے اس میں کی طرح جو کہ پکا ہوا کیج سے بہتر ہوتا ہے جبہ عورتیں اس پھل کی
طرح ہیں جو کہ کیا ذاکتے میں کی مورح کے سے نبتا زیادہ اچھا لگتا ہے۔

کے ۔ اور عربوں کے بیالے ہوں مے ۔ دِهاف میکیتے ہوئے پے در پے لائے کے ۔ اور عربوں کے ۔ اور عربوں کے استعال کے مطابق لفظ دہاتی سے دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا مستعال کے مطابق لفظ دہاتی سے دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا مستعال کے مطابق لفظ دہاتی سے دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا مستعال کے مطابق لفظ دہاتی سے دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا مستعال کے مطابق لفظ دہاتی ہے۔ اور عربوں کے استعال کے مطابق لفظ دہاتی ہے۔ دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا میں کے مطابق لفظ دہاتی ہے۔ اور عربوں کے استعال کے مطابق لفظ دہاتی ہے۔ دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا ہونا ہے۔ دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا ہونوں ہے۔ دونوں چیزیں مجمی جاتی ہیں کہر ہونا ہونے کے دونوں چیزیں میں کے دونوں ہیں کے دونوں ہیں

اور ہے دریے ہونا۔اورمتقیوں کوشراب پلانا زیادہ نعمت ولذت حاصل کرنے کے لیے ہوگا اس کیے کہ شراب بینے سے انہیں جو فرحت وراحت حاصل ہوگی اس کی وجہ ہے وہ عورتوں اور ندکورہ باغات کی دوسری تعتوں ہے پوری لذت حاصل کرنے میں بے باک ہوجائیں کے اور سنجیدگی اور وقار اس بورے طور برمحظوظ ہونے میں مانع نہ ہوگا جس طرح کہ انہوں نے دنیا میں خدانعالی کی محبت کی شراب کی مستی کی وجہ سے احوال ومقامات کے باعات اور تازہ انوار و تجلیات اور وار دات ہے بوری برکتیں اور روحانی لذتیں حاصل کی تھیں کیکن وہاں كى شراب ميں جو كەمحبت والمبيد كے معنول كى صورت ہوكى و نيوى شراب كى خرابيول اور تباحوں سے قطعاً مبرا ہوگی ای لیے حصرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے فر مایا ہے کہ جنت میں چیزوں کے نام دنیوی ناموں کی مانند ہیں جبکہ حقیقتیں جدا ہیں۔ اس لیے کہ دنیوی چیزوں کے خواص صور نوعیہ کے عضری کثیف مادوں میں اثر کرنے سے صورت پکڑتے ہیں جبكه جنتي چيزوں كے خواص اسائے البيدي تخليات اور حقائق قدسيد كي لطيف مثالي مادے ميں تا فيركرنے مصفق ہوں مے اور اگرچہ دنیا و آخرت میں اسائے الہید کی سلطنت اور ان كی تا ثیرات کےظہور کے سواکوئی سبب نہیں لیکن کمال ظہور جوش کی پاکیزگی مواد کی اطافت اور مكدر كرنے والى بُرائيوں سے وُورى كے اعتبار سے دونوں ميں آسان و زمين كا فرق ہے۔ حضرت موی علیدالسلام کی جیل والی آئے کو آنگیشمی کے وحوثیں والی آگ سے جو کہ گائے اور كدھے كے كوبر سے جلائى مئ ہو تولنا جا ہے۔ كيا بى اچھا كہا ميا كہ وجود كے ہرمرتبے كا ایک تھم ہے اگر تو مرتبوں کا فرق نہ کرے تو زندیق ہوگا۔

يس وبال كى شراب كى مجلس قباحتول سے اس درجه باك موكى كه

لَایَسَمَعُوْنَ فِیْهَا لَفُوّا وَ لَا کِذَابًا وہ شراب پینے سے بے ہودہ بات اور ایک دوسرے کی بحد یب و انکار نہیں سنیں سے چہ جائیکہ لڑائی دشنام طرازی بے مقصد مختلواور بات چیت میں گڑ بڑ پیدا ہواور جیسے دنیا میں ان کی مخلیس ان امور سے پاک ہوتی تعیس اور ان کی محبت میں جموث نفنول کوئی نداق اور خرصتی کودخل ندتھا ای طرح جنت میں ہوگا۔ ان کی محبت میں جموث نفنول کوئی نداق اور خرصتی کودخل ندتھا ای طرح جنت میں ہوگا۔ اور یہ متنی اور لذتیں جو کہ اس وافر مقدار میں ان کے ہاتھ آئیں گی ایسی نہیں کہ اس

جہان کی آب وہوا کے نقاضے کی وجہ سے حاصل ہو کمیں جیسا کہ دنیا میں ملکوں کے اختلاف کی وجہ سے حاصل ہو کمیں جیسا کہ دنیا میں ملکوں کے اختلاف کی وجہ سے سرویوں اور گرمیوں محط سالی اور خوشحالی میں حاصل ہوتی ہیں بلکہ یہ چیزیں ان کے ہاتھ آئیں گی۔ ہاتھ آئیں گی۔

جَذَآءً مِنْ رَّبِلُكَ تیرے بروردگار کی طرف سے جزادیے کے طور پر جو کہ کامل ہے اور کامل جو چیز دے وہ بھی کامل ہوتی ہے۔

اوراگر کمی کے دل میں شبہ گزرے کہ جزامیں ان دونوں چیزوں کی رعایت کی جاتی ہے جزا دینے والا ہے جزا دینے والا ہے اگر چہ جزا دینے والا اوراس کام کی مقدار جس کی جزا دینا ہے اگر چہ جزا دینے والا اوج کمال پر فائز ہے لیکن ان سب کے کام اتنے کامل نہ تصفوقہ ہم کہتے ہیں کہ بیٹھتیں اور لذتیں حقیقت میں جزانہیں ہیں بلکہ

عَطَآءً بخش وانعام ہیں کین ابتدائی بخش وانعام نہیں بلکہ جِسَابًا ان کے اعمال کے حساب سے ہے نہ کہ اعمال کی مقدار کے مطابق۔ مثلاً کسی بادشاہ کومنظور ہو کہ اپنی ملازموں کو انعام اور بخشش عطافر مائے وہ تھم دے کہ جو بھی میرے حضور حاضر ہے اسے اس قدر دمیں اور جو فلاں ڈیوٹی پر ہے اسے اتنادیں۔ پس قدر دمیں اور جو فلاں ڈیوٹی پر ہے اسے اتنادیں۔ پس الی صورت میں انعام میں فرق کرنے میں مقدار عمل کے موافق انعام وینا منظور نہیں ہوتا ہے بلکہ اعمال کا حساب صرف نثاثہ ہی کے لیے ہے اور بس اور جب انعام اور بخشش اعمال پرمقرر فرمائے میں تو جزاکے ساتھ پوری مشابہت ہوگئی اس وجہ سے اسے جزاکا نام دیا گیا۔ نیز چوکلہ یہ جزاد سے والی وہ ذات ہے جس کی صفت ہے۔

دَبِّ السَّمَوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا آسانوں زمین اور جو پھوان کے درمیان ہے کا پروردگار ہے اور اس نے آسان زمین اور ان کے بابین جو پھر ہے اس پر ابتدائی بخشش و انعام بے تکلف بغیر کمی گزشتہ وعدے کے اور بغیر مستحق ہونے کے کمال درجے پر فر مایا تو ایخ اس انعام اور بخشش کو ان لوگوں کے بارے میں جو کہ مستحق ہونے کی آمیزش بھی رکھتے اپن انعام اور بخشش کو ان لوگوں کے بارے میں جو کہ مستحق ہونے کی آمیزش بھی رکھتے ہیں ان کے ساتھ وعدہ بھی کیا گیا اور وہ مکلف بھی متھے کس طرح کامل نے فر مائے اور ان کے باوجوداس کا نام ہے۔

اَلدَّ حُمَانِ مطلقاً انجام فرمانے والا اور جس کا نام یہ ہواور وہ وعدہ کیے بغیر ہزاروں احسان فرما تاہے 'تو وعدہ کرکے پورا کیوں نہیں فرمائے گالیکن اس رحمت کے باوجود وہ جو کہ احسان فرما تاہے 'تو وعدہ کرکے پورا کیوں نہیں فرمائے گالیکن اس رحمت کے باوجود وہ جو کہ اسپنے اطاعت شعار بندوں پر مال باپ ہے بھی زیادہ شفیق ہے اس کی عظمت وجلال بھی اس قدر بلندہے کہ

لَا يَدُوكُونَ مِنْهُ اللَّ تَدر رحمت وعنايت كى توجداوراس كى بارگاہ كے اسے قرب و مرتبے كے باوجودان ميں طاقت نہيں ہوگی۔ خطابًا بلاواسط بات كرنے كى اپنے بارے ميں يا اپنے قريبيوں اور دوستوں ميں سے كى كى سفارش كرنے كى اوراس كى يەعظمت وجلال اگر چداس كى ذات كولازم ہے كيكن اس كا پورے طور پرظهور نہيں ہوگا گر يور الدُومُ جس دن كدروح كوري طور يرظهور نہيں ہوگا گر يومُ جس دن كدروح كوري ہو۔

كيفيت بدوح كابيان

اورروح ایک خوب جانے والے بیدارلطیف کا نام ہے جو کہ آسان زمین پہاڑ دریا اللہ درخت اور پھر کوعطا فر مایا گیا ہے اور اسے دوسرے مقام پر ملکوت کل شی کے ساتھ تعییر کیا گیا ہے جیسا کہ سورة یسین کے آخر میں ہے اور ہر مخلوق کے ای جائے والے لطیفے کو اپنے پروردگار کی تبیع وعبادت میسر ہے۔ وَ إِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلّا يُسَبِّحُ بِحَدْدِهِ (۱۵۔۵) کُلُّ قَدْ پُروردگار کی تبیع وعبادت میسر ہے۔ وَ إِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلّا يُسَبِّحُ بِحَدْدِهِ (۱۵۔۵) کُلُّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِیْحَدُد (۱۵۔۵)

درحقیقت و ولطیفہ ایک نورانی جو ہر ہے جو کہ جواہر واعراض میں سے ہرایک کے ساتھ متعلق ہے اور انہیں روحانی جواہر کی بدولت قرآن پاک کی سورتیں نماز روزہ جیسے اعمال مالی اور کعبہ معظمہ تیامت کے دن اور عالم برزخ میں شفاعت کریں سے اور کوائی ویں سے اور آسان وزمین اور دن رات کواہ ہوں ہے۔

میں فرق رہے کہ پہلاتعلق دائی ہے اور سرایت کرنے والے حلول کی طرح کہ تمام طبعی' نباتی اور حیوانی قو توں میں داخل ہو کر انہیں اپنے تھم کا پابند کر لیا جبکہ دوسر اتعلق دائی نہیں ہے اور طاری ہونے والے حلول کی طرح ہے اور اسی لیے بعض اوقات دنیا میں بھی ایک کا تعلق ظاہر ہوتا ہے اور پھر اور درخت انبیاء علیہم السلام کے ساتھ با تیں کرتے ہیں اور ان کے تھم کے مطابق کام سرانجام دیتے ہیں اور انہیں سلام کہتے ہیں اور قیامت کے قریب ہونے کے وقت ، یہ تعلق بھی دائی ہونے اور سرایت کرنے کے قریب ہوجائے گا۔

یمی وجہ ہے کہ قیامت کی اشراط والی احادیث میں ان چیزوں کی خبریں بہت زیادہ نہور ہیں اوراس کارازیہ ہے کہ اس تعلق کا ظہوراس وقت ہوتا ہے جب روحانی احکام غالب ہوجا کمیں۔ پس قرب قیامت میں جو کہ روحی احکام کے غلبے کا وقت ہے کہ زیادہ ظہور کرے گا اور انبیاء علیم السلام اور اولیاء کی ہمت کی وجہ ہے ان کے حضور بھی احکام روحیہ غالب ہو جاتے ہیں۔

اوریہاں دوسرے مفسرین روح کی تغییر میں مختلف اقوال لائے ہیں اور حق یہی ہے جو ندکور ہوا۔

وَالْمُلاَئِكَةُ صَفَّا اور زمین اور ساتوں آسانوں کے فرشتے صف بھف کھڑے ہو جا کیں گئے ایک کا در ہے ہو جا کیں گئے اعمال تولئے اعمال نامے دِکھانے اور بل صراط سے گزارنے کا کام اور اس دن کے ساتھ متعلق دوسرے کام جاری کرنے کے لیے مستعداور تیار ہیں۔

لَایَتَکُلَمُونَ اس مات می بالکل بات نہیں کریں کے اور دم نہ ماریں گے اگر چہ شفاعت اورشہادت کا مقام ہو۔ إلَّا حَنْ آذِنَ لَهُ الرَّحْمانُ مُروہ جے رحمٰن اجازت دے اور علم ہوگا کہ فلال کے بارے میں شفاعت کریا اس کی کوائی دے اور بیکم اس شخص کے حق میں رحمت کے نقاضے کی وجہ سے ہوگا۔

وَقَالَ صَوَابًا اوروہ بالكل درست بات كم كااور خلاف قانون عرض نہيں كرے كا۔
مثلًا كافر اور بدعقيدہ كے متعلق شفاعت نہيں كرے كا اور جو محص ايمان كى وجہ ہے معانى كا
مستحق ہے اس كے مناہوں كى معانى طلب كرے كا اور اسى طرح مواى ميں بھى احتياط

عمام مستحق ہے اس كے مناہوں كى معانى طلب كرے كا اور اسى طرح مواى ميں بھى احتياط

عمام مستحق ہے اس كے مناہوں كى معانى طلب كرے كا اور اسى طرح مواى ميں بھى احتياط

عمام مستحق ہے اس كے مناہوں كى معانى طلب كرے كا اور اسى طرح مواى ميں بھى احتياط

كرے كا اور كم وبيش بات نبيس كرے كا اس ليے كه

ذَالِكَ الْبَوْمُ الْحَقُ وہ ون قل كا دن ہے اس روز باطل اور غلط برگز نہيں چل سكے گا اور كامياب نہيں ہوگا۔ بخلا ف ونیا كے ایام كے كہ وہاں حق و باطل اور غلط وسيح دونوں ملے جلے ہيں كوئى تفريق نہيں كى گئی ہے اور احتمال ہے كہ معنی ہوں ہوكہ وہ دن ايبا ہے كہ نيكوں اور يُر ول كے درميان احتمال جا درميان احتمال اور فرق كرنا اور مومن وكافر كے درميان احتماز كرنا اس دن كاحق ہے اور وہ ك درميان احتمال كرنا اس دن كاحق ہے اور وہ كی درميان احتمال مے لائق ہے نہ كہ دنیا كے ایام كہ جن میں شك وشبہ اور منفعتوں میں نيك اور بدكی مساوات اور مطبع اور نافر مان كی با جی شركمت واقع ہے۔

فَنَنْ شَآءَ اتَّعَفَدُ إلى دَبِّهِ مَا أَبَّا تَوْجُو جِابِ ابِ بِرُوردگار كَى طرف رجوع اختيار كرے تاكداس ون اسے اپنے ہم نشينوں اور مصاحبوں میں بورا امتیاز حاصل ہواور اس فتم فتم كے عذاب سے خلاصى بائے جوكداس دن اللہ تعالى كے حضور مركثى اور لا پروائى كى بناء برتیار ہے اور رجوع الى اللہ تعالى كا فائدہ صرف اسى عذاب سے خلاصى میں مخصر نہیں ہے جو كہ بوم الفصل میں مركثوں كے نصيب ہوگا بلكہ

اِنّا آنگذُوْنَا کُھُ ہم نے تہیں بار ہا قرآن مجید میں اور نی کریم علیہ السلام کی زبان پر درایا ہے کہتم رجوع الی اللہ میں کوتا ہی کررہے ہواوراس کے حکم کی قبیل سے سرکھی کررہے ہو۔
عَدَابًا قَرِیْبًا قریبًا قریبی عذاب سے جو کہ موت کے بعد عالم برزخ ہرفض کو پیش آئے گا اوراس عذاب میں جہان کے اصول وارکان کو برباوکر نے کی ضرورت نہیں بلکہ انسان کے چھوٹے جہان کو برباوکر تا اوراس کی ساخت سے ارکان کو ڈھا دینا ہی کافی ہے اس لیے کہ اس عذاب کی حقیقت بُرے اعمال کی تاریک شکلوں کا جو کہ میت کے نفس پر غالب تھیں خوفناک صورتوں میں اس کی قوت خیالیہ پراس طرح طاہر ہونا ہے کہ وہ قوت ان کے اثر سے مغلوب ہو جائے بغیراس کے کہ اعمال کے صحیفے کھولے جا کیں اور ہر معمولی سے معمولی کام مغلوب ہو جائے بغیراس کے کہ اعمال کے صحیفے کھولے جا کیں اور جرمعمولی سے معمولی کام پرآگاوں بچھلوں کو جھے کیا جائے اور جنت کا حکم نیوں کے اور دوز خ کا فیصلہ بُروں کے لیے اور دوز خ کا فیصلہ بُروں کے لیے جدا جدا مرتب ہواوراس لیے وہ عذاب قریب ہی واقع ہوگا۔
لیے جدا جدا مرتب ہواوراس لیے وہ عذاب قریب ہی واقع ہوگا۔

یوم ینظر الکر یم ماقد می یدا کی جس دن که جرش این اعمال کو دیکھے گا جواس نے دونوں ہاتھوں نے آگے بھیجے ہے جو کدا چھے اعمال کرنے والی قوت اور کرنے کام کرنے والی طاقت سے کنایہ ہاور آگے بھیجنا اس بات کی دلیل ہے کدان اعمال کی نورانی شکلیں اور تاریک صورتیں اس کے نفس میں ظاہر ہو گئیں اس لیے کیمل کو آگے بھیجنا اور ترجیح وینا جو ہرنس میں اس میمل کی مجت رائخ ہوئے بغیر ممکن نہیں اور وہ بیئت عالم مثال میں ایسی صورت رکھتی ہوئے بغیر ممکن نہیں اور وہ بیئت عالم مثال میں ایسی صورت رکھتی ہے جو کہاں کے مناسب ہے۔

جب نفس اس جہان کے احساسات اور تصرفات سے فارغ ہوکر پورے طور پر اس جہان کے احساسات کی طرف متوجہ ہوگا تو ان صورتوں کا مشاہرہ کرے گا اور بیرعذاب اس قشم کا ہے کہ حکماء اور فلاسفہ کی عقل نے بھی اسے دریافت کیا اور عالم خواب پر قیاس کر کے اسے واقع ہونے والا جانا۔ فرق یہ ہے کہ خواب والے عذاب سے نفس کے اس جہان کے احساسات یر بیداری متوجه ہونے کی وجہ سے خلاصی یا ناممکن ہے جبکہ اس عذاب سے اس طرح خلاصی یا ناممکن نہیں ہے کہ اس خواب کے چیچے بیداری نہیں ہے۔ بخلاف یوم الفصل کے اسے میدانِ عقل میں کوئی دریافت نہیں کرسکتا۔ پس بی عذاب وقوع کے زمانے کے اعتبارے بھی قریب ہےاورتصور وتقیدیق کے اعتبار ہے عقل کے بھی قریب ہے کیکن ایمان اور سیج عقیدے کی وجہ ہے اس قریبی عذاب ہے نجات بھی حاصل ہوگی اس لیے کہ اگر چہ نرے اعمال نے اس محض کے نفس میں تاریک شکلیں پیدا کر دی تعین کین اس کا ایمان اور عقیدہ سی جے ہے اس میں عظیم نورانی صورتیں ظاہر کردیں۔ تعینیا تانی کے بعد گنا ہوں کی تاریکی يرغلبه حاصل كريس كے اور وہ تاريجي شكليس تدورت بادل كى طرح سورج كى روشنى كى شدت كى وجہ سے دگر کوں ہو جائیں کی اور کافروں کے پاس تاریک شکلوں کے سوا اور کچھ نہ ہوگا جس کے نور سے ان تاریکیوں کو دُور کریں' ناجار حسرت اُٹھا کیں گے۔

و یَقُولُ الْکَافِرُ اور کافر کے گا اس کے بعد کداپی کفر اور گناہوں کی مکروہ شکل کو و کیمے گا اور اس کے مقالبے میں ایمان کی نورانی صورت نہیں یائے گا۔

یَالَیْتَنِیْ کُنْتُ ثُرَابًا اے کاش کہ میں کمی ہوتا اور انسانی شکل میں پیدا نہ ہوتا تا کہ میں اُنہ ہوتا تا کہ marfat.com

جھے سے بیکروہ شکلیں صادر نہ ہوتیں اور مٹی کو خاص کر کے اس لیے یاد کرے گا کہ جم انبانی
کے مواد کی انتہامٹی ہے اگر نطفہ ہے غذاؤں سے پیدا ہوا غذائیں نباتات ورونات سے اور اگر گوشت پوست خون اور خلط ہے تو بھی غذاؤں دواؤں اور
نباتات اور حیوانات مٹی سے اور اگر گوشت پوست خون اور خلط ہے تو بھی غذاؤں دواؤں اور
کھلوں سے پیدائش ہے پھر مٹی تک بات جا پینچی اور جب خاک کے بعد اور کوئی مادہ اس کے
دل میں نہیں۔ ناچار انسانی صورت سے فرار کے وقت سب سے بعید مواد کی جو کہ خاک ہے
آر دو کرتا ہے جیسا کہ اگر کسی کوکس سنر میں تکلیف پینچی ہے تو کہتا ہے کہ اے کاش میں گھر
سے نہ نکلتا اور یہ نہیں کہتا کہ میں داہ سے پھر جاتا کر استے کے درمیان رہتا کیونکہ ایسا کہنے
سے اس تکلیف سے پورے طور پر ڈور ہونا معلوم نہیں ہوگا۔ نیز اسے معلوم ہو جائے گا کہ
میری یہ سب گرفتاری میری روح کے باقی رہنے کی وجہ سے ہاگر میں صرف بدن ہوتا اور
میری یہ سب گرفتاری میری روح کے باقی رہنے کی وجہ سے ہاگر میں صرف بدن ہوتا اور

اور حضرت ابن عباس اور ابن عمرض الله عنها سے مرفوعاً اور موقوفاً روایت آئی ہے کہ فیطے اور قضا کے دن اس کے بعد کے جانور ایک دوسرے سے بدلہ لے لیس کے انہیں تھم فرمایا جائے گا کہ خاک ہو جاؤ۔ کافر ان جانوروں کے حال پر دشک کرے گا اور کہے گا کہ اے کاش مجھے خاک ہو جائے کا تھم فرمایا جاتا اور اس خاسد انسانیت سے جو کہ اس سزا کا سبب ہے نار ہو جائے گا۔

اور بعض صوفیاء نے فر مایا ہے کہ خاک ہونے سے مراد بیہ ہے کہ میں خاک کی طرح عاجز اورمسکین ہوتا اور بڑائی' تکبیز سرکشی اور نافر مانی نہ کرتا۔

اوربعض واعظوں نے کہا ہے کہ کافر سے مراد ابلیس ہے جو کہ اس کاسب سے کامل فرد ہے۔ جب وہ حضرت آ دم علیہ السلام اور آپ کی اولا و پر انواع واقیام کی نوازشات و کھے گا تو آرز وکر سے گا کہ میں بھی خاکی ہوتا اور خاک سے پیدا ہوتا نہ کہ آگ سے کہ میں اس پر فخر کرتا تھا اور کہتا تھا کہ خَلَقْتَنی مِنْ نَادٍ وَخَلَقْتَنَیْ مِنْ نَادٍ وَخَلَقْتَنِیْ مِنْ فَلَیْنِ

تفیر عزیزی _____ تیسوال پاره

سورة والنازعات

یہ سورۃ کی ہے'اس میں چھیالیس (۴۷) آیات'ایک سونوای (۱۸۹) کلے اور سات سوترین (۷۵۳) حروف ہیں۔

ربط کی وجہ

اور ظاہری نظریں اس سورۃ کا سورۃ مرسلات کے ساتھ توی ربط معلوم ہوتا ہے اس لیے کہ اس سورۃ کا ابتدائیہ اس سورۃ کے ابتدائیے کے ساتھ بوری مشابہت رکھتا ہے بلکہ تمام قرآن پاک میں اس قتم کے ابتدائیے پانچ سورتوں میں واقع ہوئے ہیں۔ صافات فراریات مرسلات نازعات اور عادیات۔ صافات میں تمن صفات فدکور ہیں ذاریات میں چارصفات اور باتی تین سورتوں میں پانچ پانچ صفیں فدکور ہیں لیکن سورۃ عادیات دوطری چارصفات اور باتی تین سورتوں میں پانچ پانچ صفیتی فدکور ہیں لیکن سورۃ عادیات دوطری سے ان دونوں سورتوں کی مشابہ ہے تا صرہے۔ پہلی وجداس کا چھوٹا ہونا اور ان دونوں کا دراز ہونا اور دوسری وجہ یہ کہ دہاں دونوں صورتوں میں ساری پانچ صفات اسم فاعل کے صینے کے ساتھ فدکور ہیں کہ فاکٹر ن بہ کے ساتھ ذکر کی تعلیٰ حکے ساتھ ذکر کی تعلیٰ کے صینے کے ساتھ ذکر کی تعلیٰ کے سینے کے ساتھ ذکر کی تعلیٰ کی سینے کے ساتھ ذکر کی تعلیٰ کی سینے کی ساتھ ذکر کی تعلیٰ کے سینے کی ساتھ ذکر کی تعلیٰ کی سینے کے ساتھ ذکر کی تعلیٰ کی سینے کی ساتھ ذکر کی تعلیٰ کی سینے کی ساتھ ذکر کی تعلیٰ کی سینے کی سین کی سینے ک

پس ان دونوں سورتوں کے ابتدائیہ کی روش میں کمال مناسبت ظاہر ہے لیکن دُور بیں محابہ کرام رضی اللہ عنہم نے مہری نظر دوڑا کرمعلوم کیا کہ سورۃ والمرسلات کا مدار یوم الفصل اور اس کے احکام کے تفصیلی بیان پر ہے اور سورۃ عم بیساء لون بھی یوم الفصل کے واقعات کی کیفیتوں کی شرح ہے تو محویا سورۃ شناء ل سورۃ مرسلات کی شرح اور تمتہ ہے دونوں کو ایک ساتھ لکھ دیاس کے بعد ابتدائی مناسبت کی رعایت سے یہ سورۃ لائے۔

نیز گہری نظر دیکھنے سے پہتہ چاتا ہے کہ اس سورۃ کے مضامین سورۃ تساءل کے مضامین کے مضامین کے مضامین کے ساتھ اس حد تک مناسبت رکھتے ہیں کہ اتحاد تک نوبت پہنچ مٹی اس مناسبت کے ہوتے ہوئے ہوئے ہوئے ابتدائے کی مناسبت کی رعایت اتنی اہم نہیں ہے۔

اس اجمال کی تفصیل میہ ہے کہ اس سورۃ میں قیامت کے حالات کے متعلق کفار کا ایک

دوسرے سے سوال کرنا ندکور ہے جبکہ یہال ان کا حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے سوال کرنا ندکور بك يستُلُونَكَ عَن السَّاعَةِ آيَّانَ مُرْسَاهَا كِم أسورة مِن آلَمْ نَجْعَل الْأَرْضَ مِهَادًا واتَّع بوا جَبُه يهال وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَالِكَ دُحَاهًا اور اس سورة مِن وَأَلِجَباَلَ أَوْتَادًا بِإِدر يَهِالِ وَالْجَبَالَ أَرْسَاهَا اورومِالِ وَجَعَلْنَا الَّلَيْلَ لِبَاسًا وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا جَبُد يهال وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهًا بِهِ اور وبالسَّبْعًا شِدَادًا جَبُد يهال ءَ آنْتُمُ آشَدُ خَلْقًا آمر السَّمَآءُ بَنَاهَا ہے اور وہال بارش کے پائی کا ذکر ہے کہ آسان سے آتا ہے اور سبرہ أكاتا ہے جبكہ يہاں چشموں كے پائى كاذكر ہے كه زمين سے ثكلتا باورسبريال أكاف من مدركرتا بأخرج مِنْهَا مَآءَ هَا وَمَرْعَاهَا اوراس سورة مِن يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ بِ جَبُه يهال تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ اور السورة مِن جَبْم ك بارے میں فرمایا کہ لِلطَّاغِینَ مَاآبًا جَبَہ یہاں فرمایا کہ فَامَّامَن طَغی وَاتَّرَا الْحَيْوةَ الدُّنْيَا فَإِنَّ الْجَوِيمَة هِي الْمَاوى اوراس سورة مِن دوزخيون كے دوزخ مِن عُمر نے كى مدت طويل مونے كابيان اس عبارت كے ساتھ فرمايا۔ لابينين فيها أخفابًا جبك يهال دوزخیوں کا برزخ اور دنیا میں قلیل مدت تک تخبرنا اس عبارت کے ساتھ بیان فرمایا۔ لَمْہ يَلْبَعُو (الْأَعَشِيَّةُ أَوْ ضُعَاهَا اوراس سورة من جنت اوراس كي نعتول كے بارے من فرمايا ے کہ اِنَّ لِلْمُتَّقِیْنَ مَفَازًّا جَبَہ یہاں فرمایا وَاَمَّامَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَاى فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأُواى اوراس كے علاوہ اور يهى مناسبتن بيں جو كه توروفكر کے بعد ظاہر ہوتی ہیں۔

وجه تسميه

اوراس سورۃ کوسورۂ نازعات کا نام دینے کی وجہ یہ ہے کہ نازعات کی صفت ان پانچ صفات میں سے جو کہ اس کے ابتدائیہ میں ندکور پین تمام کمالات کے حاصل کرنے کا دسیلہ ہے اور دوسری صفات اس کی فرع ہے۔ پس بیصفت تمام علوم کے مقابلے میں ابجد کے قواعد کا تھم رکھتی ہے کہ ان کا حاصل کرنا اسے حاصل کے بغیر ممکن نہیں ہے۔

نفس انسانی کی تعمیل کی ضروریات marfat.com

دومرامرتبدیہ ہے کہ اس شغل کی مشق اور اس کے ساتھ مانوس ہونے کی وجہ سے ایک راحت اور سرور بیدا ہو جائے اور اس کام میں اس کا دل رغبت کرے اور اگر کچھ مدت تک اس کام سے باز رہے تو اس کی طرف بے اختیار ہو کر مشاق ہواور اندیشوں اور محرکات کی محین خیا تانی باتی ندر ہے اور کیسوئی اور پیجبتی سے اس کام میں معروف ہو جائے اور اس حالت کون اطلاح کے ساتھ تعبیر کیا گیا ہے جے اُردو میں اُمنگ کہتے ہیں۔ اور اہل سلوک کی اصطلاح میں اس حالت کو جو کہ داو خدا کی طلب میں پیش آتی ہے ارادہ شوق اور ذوق کہتے ہیں۔ اور اس حقیقت کو ماس کی کون کا میں کی مفت کے بغیر اس حقیقت کو حاصل کرنامکن نہیں ہے اس راہ کی اُلم میں جاس لیے کہ میں حالت کانی کھینچا تانی کے بعد حاصل ہوتی ہے۔

تیمرامرتبہ یہ ہے کہ اس شغل میں پوری مہارت پیدا کرے اور کسی تکلیف اور تعکاوٹ کے بغیروہ کام اس سے مرز د ہواور ورزش کی کثرت کی وجہ سے وہ کام ملکہ بن جائے اور اس حالت کوسیاحت سے تعبیر کیا حمیا ہے جس کا معنی تیرنا ہے اس لیے کہ پانی کئیں تیرنے والا آدی بغیر کی مشقت کے میر کرتا ہے اور اہل سلو بک سے عرف میں اس حالت کو میر احوال و مسلم معتمل مسلم کے عرف میں اس حالت کو میر احوال و مسلم مسلم کے میر کرتا ہے اور اہل سلو بک سے عرف میں اس حالت کو میر احوال و مسلم کے میں مسلم کے میر کرتا ہے اور اہل سلو بک سے عرف میں اس حالت کو میر احوال و مسلم کے میں مسلم کے میں مسلم کے میر کرتا ہے اور اہل سلو بک سے عرف میں اس حالت کو میر احوال و مسلم کے میں اس حالت کو میر احوال و

مقامات کہتے ہیں اور کمال کی اونیٰ حدیمی حالت ہے کہ اس سے پہلے ایک طلب اور تلاش کے بغیر پچھنہیں مطلب کا حصول اس حالت سے شروع ہوا۔

چوتھا مرتبہ یہ ہے کہ اس کام میں اپنے مصاحبوں اور ہم نشینوں سے آ محے بڑھ جائے اور اس صفت اور فن میں جو دوسروں سے نہ ہوسکا' اس سے سرز د ہواور یہ حالت اعلیٰ کمال ہے جیے سبقت سے تعبیر کرتے ہیں اور اہلِ سلوک کے عرف میں اس حالت کو طیران اور عروج کہتے ہیں۔

پانچواں مرتبہ یہ ہے کہ کمال کی ساری خدوں کوعبور کر سے پھیل کی حد تک پہنچ جائے اور اس کام میں مقتدا اور مشکل کشابن جائے کہ دوسرے اس سے مشکلات کاحل چاہیں اور اس صنعت میں مشورہ اور تدبیر کے لیے اس کی طرف رجوع کریں اور اس حالت کی تعبیراس عبارت کے ساتھ فرمائی ممٹی ہے فائٹہ تر آت آخر اور اہلِ سلوک کی اصطلاح میں اس مرتبے ورجوع وزول وجوت الخلق الی الحق کا مرتبہ اور تمیل وارشاد کا مرتبہ کہتے ہیں۔

اور بیہ پائج مرتبے نفول انسانی کو ہراہتے کرے مقصد اور ہر قابلِ تعریف اور قابل فرمت کیفیت میں پیش آتے ہیں البتہ بعض نفول صلاحیت کی کی اور رکاوٹول کے حاکل ہونے کی وجہ سے ان سب پانچوں مرتبول کوعبور کرنے سے قامر رہتے ہیں اور ایک یا دویا تمن یا چو تھے مرتبے پر قناعت کرتے ہیں اور بعض تو نیش یا ذالت کی وجہ سے تمام مرتبول کو سلے تمن یا چو تھے مرتبے پر قناعت کرتے ہیں اور بعض تو نیش یا ذالت کی وجہ سے تمام مرتبول کو سلے کر جاتے ہیں اور ہوایت و مراہی میں ایک جہان کے مقد اہو جاتے ہیں۔

اور چونکہ سورۃ عم بیساءلون میں نفوی انسانی کے ان مراتب کی طرف اشارہ واقع ہوا تھا کہ فآتو ن افوا جا اس سورۃ میں ابتداءی سے ان مراتب کی تفصیل منظور ہوئی لیکن بہنصیل ان مرتبول والوں کی قتم کی صورت میں لائی عمی تاکہ ان مراتب پر فائز لوگوں کی عظمت پر دلالت کرے۔ نیز ان مراتب کے اثرات ظاہر ہونے کے لیے قیامت قائم ہونے کے واجب ہونے کا پید دیا جائے کی تکہ دنیا میں ان کے اثرات کا ظاہر ہونا ممکن نہ تھا اس لیے کہ دنیا اس ظہور کی متحمل نہیں ہے۔

پرتم کو تیامت آنے کی طرف زمان کے ساتھ مقید فرمایا ممیا تاکہ پہند چلے کہ ان marfat.com Marfat.com مراتب اوران مراتب والول کی قتم ای وقت ہے اور ای قید کے ساتھ ہے اس لیے کہ وہ اس وقت سے پہلے اور اس قید کے اعتبار کے بغیرتم کے قابل نہیں ہیں۔ پس یَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ظرف ہے جو كُفُل مَ كساتھ متعلق ہے جس پرحرف متم دلالت كرتا ہے اور بير مجموك تركيب وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ وَاللَّيْل إِذَا يَغْضَى وَالنَّهَادِ إِذَا تَجَلَّى اوراس طرح كى تركيبوں كى طرح ہوئى۔ كوياس كلام كامعنى يوں ہوا كە بيس متم فرما تا ہوں ان جماعتوں كى جو کہ ان صفات کے ساتھ موصوف ہیں جس دن کہ قیامت قائم ہوگی اور اس صغت کے اثرات ظاہر ہوں اور جولوگ پہلی صفت کے ساتھ موصوف ہیں ٔ جدا گروہ میں آئیں اور ان کے احکام ایک رنگ میں ظہور کریں اور جولوگ دوسری صفت کے ساتھ موصوف ہیں علیحدہ جماعت ہوں جن کا تھم علیحدہ ہو۔ علی ہزاالقیاس جولوگ دویا تمن یا جاریا یا بی صفات کے مجموعے کے ساتھ موصوف ہیں' مختلف گروہوں' مختلف احکام واطوار کے ساتھ حاضر ہوں اور ہرا کیک کامر تبہاہلِ محشر کے روبر و ہوجائے۔اور امتیاز اور جدائی کا پروگرام صورت پکڑے اس تخف کی طرح جوایک تشکر کی تعریف میں کہے کہ فلاں امیر کے کشکر کی قتم! جب جنگ زوروں یر ہواور نقارے بجیں اور نقیب منادی کریں اور رسالہ دار جدا جدا گروہوں کی شکل میں سوار ہوں یا کمی دفتر کی تعریف میں کہے کہ مجھے فلاں وزیر کے دربار کی فتم جس دن کہ پہری گئے الوك حاضر ہول علم دان كھولے جائيں اور سركارى الل كار اور مخلف فتم كے ملاز مين درجه بدرجه بينه جائي اوركام من لك جائير

اور چونکدان پانچ مراتب کا عبور کرنا یا ان مراتب بی سے ایک مرتبہ اور دوسرے تیسرے اور چونکدان پانچ مراتب بی گفت اور باہم جداجدا ہیں۔ بعض کو تیسرے اور چو تھے مرتبے بی گرفآری نفوس انسانی بیس مختف اور باہم جداجدا ہیں۔ بعض کر راہ خدا کے سلوک یا کمال علمی حاصل کرنے یا تقوی وطہارت کی جھیل یا اللہ تعالیٰ کے دشمنوں کے خلاف جہادادراس می کی صفات و کمالات جیسے امور خیر میں حاصل ہوتے ہیں جبکہ بعض کو فتی و فجو رئی کفر و بدعت مرابی اور غلط سوچ اور اس میم کی کرائیوں میں ملتے ہیں ناچار قیامت کے دن ہر نیک و بداور کا فر و مسلم کو ان مراتب والے لوگوں میں سے کسی ایک گروہ میں جمع اور اس می ردلالت کرتی ہیں۔ ایک جگر فر بایا میں جمع اور اس میں میں جمیں کرنے ہیں کرنے ہوں کو میں کرنے ہوں میں کرنے ہوں کرنے

marfat.com

سی ہے کہ بعثہ اللہ فقیہا اور ایک مقام پر فی ذهرة الشهد آء فر مایا اور ان لوگوں کے بارے میں شہداء اور بستر پر فوت ہونے والوں کی باہمی کمینچا تانی مشہور ومعروف ہے جو کہ طاعون سے فوت ہوئے ہیں اور شراور کمرائی کی طرف مجمی صراحت ہے۔

اور دونوں قسموں میں ہے کی ہے بھی متعلق تمام مراتب والے یوم الفصل والا تمیاز کے ارکان ہیں اوراس اعتبار ہے کہ اللہ تعالیٰ کے عدل اور جزاد ہے کا ظہوران میں ہوگا اس تم کی قتم کے لائق ہو مجئے۔ اگر چہ اپنی حد تک ان اقسام میں سے بعض مردود جہنی اور بد بخت ہوں اس لیے کہ یہاں جزاد ہے کہ کام کے ان سے وابستہ ہونے پر نظر ہے نہ کہ ان کی اپنی ذات وصفات پراس بات کو اچھی طرح سمجھ لینا چاہیے کہ بہت باریک ہواراس کی تقد بی میں تر دو نہیں کرنا چاہے۔ دوسرے مقام پر قرآن باک کے الفاظ وَلَا اُقْسِمُ بالنَّفُسِ الذَّوَ اَمَدُ میں غور کرنا چاہیے تا کہ اسے امکان سے دُور جھنا دفع ہواور جب یہ بالنَّفُسِ الذَّو اَمَدُ میں غور کرنا چاہیے تا کہ اسے امکان سے دُور جھنا دفع ہواور جب یہ مقدمہ بیان ہو گیا تو تفیر شروع ہوتی ہے۔

بستم الله الرّحمٰنِ الرّحِيمِ

وَالنَّاذِعَاتِ غَرْقًا اس جماعت كاتم جوكه خودكوكى كام مِن كَينِي بِن سخت كمينيا اور لفظ غرق كو يهال اغراق كى جكه قائم فر مايا كميا ہے۔ معدر جمرد كومزيد فيد كى معدد كى جكه قائم كرنے كے طريقے سے جيسا كه فَآنْبَعَهُ اللّهُ نَبَاقًا حَسَمًا اور افعت عرب من اغراق سخت كميني كو كہتے بين اسے كمان كميني سے ليا كميا ہے كہ جب اسے كميني بين تو فيركا كھل اس كے خانے ميں غرق ہوجا تا ہے۔

وَالنَّاشِطَاتِ نَفُطًا فَتُم ہے اس جماعت کی جو کدکی کام میں نشاط اور شوق پیدا کرتے ہیں۔وَالسَّابِحَاتِ سَبُعُ اس جماعت کی تم جو کدکی کام میں شاوری کرتے ہیں ' شناوری کرنا اور کسی کلفت کے بغیر معروف ہوتے ہیں۔

فَالسَّابِقَاتِ سَبُقًا ہِی مِی شَمُ اُٹھا تا ہوں کی کام مِی سبقت کرنے والوں کی جو کہ اینے مصاحبوں سے اس کام میں آ مے نکل جاتے ہیں۔

فَانْهُنَدِّرَاتِ اَمْرًا کِی مِی مِنْمَ اَفَاتا ہوں ان کاموں مِی ہے کی کام کی marfat.com

Marfat.com

تدبیرکرنے والوں کی جن کی تدبیر ومشورہ کے لیے ندکورالصدر جماعتیں ان کی طرف رجوع کرتی ہیں اور اس کام کی مشکلات کاحل ان سے ڈھونڈ ٹی ہیں۔

اوران آخری دوقسموں میں فالانے کی وجہ یہ ہے کہ ان دو جماعتوں کا مرتبہ پہلے تین فروں سے بہت زیادہ بلند ہے اس لیے کہ انہوں نے کمال اور پخیل کا رُتبہ پایا ہے جیسا کہ آخری فرقے کا مرتبہ چو تھے فرقے سے بھی زیادہ بلند ہے اور اعلیٰ کے ساتھ قسم اُٹھانے اور ادفیٰ کے ساتھ قسم اُٹھانے اور ادفیٰ کے ساتھ قسم اُٹھانے تا کہ پتہ دفیٰ کے ساتھ قسم اُٹھان اولیٰ کے ساتھ قسم اُٹھان اولیٰ کے ساتھ قسم اُٹھانے کے بعد ہے اور ہم اونی سے اعلیٰ کی طرف ترتی کردہے ہیں۔

یوم ترجیف الرّاجفة اس جماعت کی شم اس دن ہے کہ لرزنے والالرزے لیمن میں ہماغت کی شم اس دن ہے کہ لرزنے والالرزے لیمن میلے بی وجہ سے زمین بہاؤ جنش میں آجائیں اور ارواح جسموں سے جدا ہو جا کیں اور دنیا کا نظام درہم برہم ہوجائے۔

تقبعُها الرّادِفَةُ اوراس كے بيتھے آئے بيتھے آئے والا اوراس سےمراد دوسر انتخہ به جس كى وجہ سے ارواح پر جسوں كى طرف لوئيں اور دنيا ازسرنو دوسر سے رنگ ميں پيدا ہواور اس فتم كا جواب ذكر نہيں فرمايا كيا اس ليے كه خود قتم اس جواب پر دلالت كرتى ہے يعنی مراجب ذكورہ والول كے دل اس دن مختف ہوں كے تو جنہوں نے بيمرا تب رضائے اللي من طے كيے سے اطمينان اور راحت ميں ہوں كے اور خوش وخرم اور تازہ نورانی چرول كے ساتھ أخميں كے اور جنہوں نے بيمر ہے اللہ تعالیٰ كی نارام تی میں طے كيئ سراسيمہ اور حيران ہوں كے اور جنہوں نے ديمر جے اللہ تعالیٰ كی نارام تی میں طے كيئ سراسيمہ اور حيران ہوں كے كہ ہماری كوشش رائيگاں كئي اور كرنے كا كام ہم نے نہ كيا۔ چنا نچہ ارشاد ہوتا

قُلُوبٌ یَّوْمَیْنِ وَاحِفَۃُ اس دن کی دل بے چینی اور بے قراری میں ہوں کے اور ان کی بے چینی اور بے قراری اس حد تک غلبہ کرے گی کہ اسے صبط نہیں کرسکیس سے بلکہ ان کے چہوں میں اس بے چینی کے آثار ظاہر ہوں گے۔

آبِصًارُهَا خَاشِعَةُ ان دِلوں والوں کی آتکھیں خیرہ اور حیران رہ جا کیں گی اور اہلِ

marfat.com

Marfat.com

اطمینان کے دِلوں کا حال یہاں اس لیے ذکر نہیں کیا گیا کہ قیامت کے دن سے ڈرانا منظور ہے اور خوف دِلانا بی اس کی شان ہے اور جب معلوم ہو جائے کہ کی دل اس روز اس بے قراری اور بے جینی کی حالت میں ہوں مے اس سے ڈرنا چا ہے کہ کہیں ہارے دل بھی ان میں سے نہ ہوں اور آرام اور اطمینان پانے والے دِلوں کے حال پر نظر نہ ڈائی جائے کہ ہمارے دِلوں کے حال پر نظر نہ ڈائی جائے کہ ہمارے دِلوں کا ان میں سے ہونا مفکوک ہے اور مفکوک سے امیر نہیں رکھنی چا ہے اس لیے خوف میں شک بھی کائی ہے جبکہ امید میں ظن غالب جا ہے۔

مغسرين كاختلاف كابيان

اور بعض مفسرین نے دَاجِفَة سے مراد زمین اور پہاڑ مراد لیے ہیں جیہا کہ ایک دوسری آبت فدکور ہے۔ یَوْهَر تَدْجُفُ الْأَدْضُ وَالْجِبَالُ اور رادفہ سے آسان اور ستارے مراد لیے ہیں اس لیے کہ زلز لے کے بعد زمین بھٹ جائے گی اور منتشر ہو جائے گی۔ مراد لیے ہیں اس لیے کہ زلز لے کے بعد زمین بھٹ جائے گی اور منتشر ہو جائے گی۔ گی۔

بعض کہتے ہیں کہ دَاجِفَه پہلا زلزلہ ہے جس کی وجہ سے زعن جنبی کرے کی جبکہ رادفہ دوسرازلزلہ ہے جوکہ زعن کے تمام اجزا کوریزہ ریزہ کردے گا۔

اور یہاں جانا چاہیے کہ مغسرین کا اس کی سورت کی ابتدا بن ذکور پانچ صفات کے معداق کے تعین میں بہت سا اختلاف ہے۔ بعض ایک بی چیز پرمجول کرتے ہیں اور بعض دوسرے مغسرین مناسب چیزوں پرمحول کرتے ہیں جو کہ ایک دوسرے کے ساتھ تعلق رکھتی ہے اور ایک کا میں معروف ہیں اور بعض متفرق چیزوں پرمحول کرتے جیبا کہ ہرسورہ میں جس کا ابتدا کیا اختلاف کرتے ہیں۔

حضرات مونیدقد س الله اسراریم کہتے ہیں کہ والناز عات غرقا ہے مراداہلی سلوک کے دل ہیں جو کہ اپنے نفویِ امارہ کو جو کہ خواہشات کی ہیروی میں غرق ہو چکے ہیں زور کے ساتھ کھنچتے ہیں اور ناشطات سے بھی حضرت النی کے وصال کے مشاق قلوب مراد ہیں جن کے نفوی کی رکاوٹیمی اور اُل ہمنیں زائل ہو چکیں اور عبادت سے رو کئے والی چیزیں فتم ہوگئی پوری راحت کے ساتھ عہادات اور نوافل میں اپنے اوقات کومعروف رکھتے ہیں اور سابھات یوری راحت کے ساتھ عہادات اور نوافل میں اپنے اوقات کومعروف رکھتے ہیں اور سابھات کی ساتھ عہادات اور نوافل میں اپنے اوقات کومعروف رکھتے ہیں اور سابھات کے ساتھ عہادات اور نوافل میں اپنے اوقات کومعروف رکھتے ہیں اور سابھات کی ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کے اوقات کومعروف رکھتے ہیں اور سابھات کے ساتھ کی ساتھ کی

ہے بھی دریائے معرفت میں تیرنے والے قلوب مراد ہیں کہاس بحریے کنار میں غوطہ لگانا مجاہدے کا نتیجہ ہے اور احوال و مقامات تک پہنچنا اس غوطہ زنی کا ثمرہ ہے اور سابقات سے واصلیں کے قلوب مراد ہیں جو کہ سلوک کی منزلیں طے کرنے کے بعد قرب و وصال کے انتہائی مرتبوں تک پہنچ کیے ہیں اور وصال کے میدانوں اور قرب کے مقامات میں ایک ` دوسرے سے سبقت کرتے ہیں اور مدبرات امر سے کاملین مکملین کے قلوب مراد ہیں جو کہ واصل ہونے کے بعد مخلوق کوحق کی طرف دعوت دینے کے لیے نزول فرماتے ہیں اور صفات البيه ي متصف موكر رجوع كرت بير (ين چلا كه ابل الله صفات البيد سے موصوف ہوتے ہیں جس کی برکت سے ان سے ایسے افعال کا صدور ہوتا ہے جو کہ انسانی وسعت سے باہر ہے جبیبا کہ مشکل کشائی' حاجت روائی' شفاعت جبیبا کے مفسر علام نے اس سورۃ کے مقدے میں اس کی تصریح فر مائی ہے۔ محمحفوظ الحق غفرلذ) اور اس صورت میں قتم کا جواب يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ سَ بِهِلِمُ مُقدر ہے لیخی لترجعن الی الله مرضیین ان اتصفته بهذا الصفات او مطرو دين ان اتصفته باخدادها لينى اگرتم ان صفات کے ساتھ موصوف ہو جاؤ تو ضرور مضرور اللہ تعالیٰ کی طرف اس کے پیندیدہ بند ہے ہو کرلوثو مے یامردود ہوکرا گرتم نے ان کے ضدوں کو اپنایا۔

اورعلائے ظاہر کہتے ہیں قوت علیہ کی پخیل کے مراتب مراد ہیں اور ناز عات خرقا سے انہذائی طالب علم مراد ہیں جو کہ دقیق معنوں کواپنے فکر کے زور سے متون شروح اورحواثی کی عبارات سے کھینچتے ہیں اور ناشطات سے متوسط طالب علم مراد ہیں جو کہ عقد ہے حلی کرتے ہیں۔ پس نھا نھط البجیر سے لیا گیا ہے بعنی اس نے اور مشکل مقابات کو آسان کرتے ہیں۔ پس نھلا ، فیط البجیر سے لیا گیا ہے بعنی اس نے اون کی زنجیر کو کھول دیا اور سابحات سے فقہی طلباء علم مراد ہیں جنہوں نے ہرعلم کے مسائل کو عبور کرلیا ہے اور وہ علم کے وریاؤں میں شناوری کرتے ہیں اور سابقات سے دقیقہ شناس فضلاء مراد ہیں جن کے ذہن شخفی دقائق کی طرف سبقت کرتے ہیں جبکہ مد برات امر سے مراد کتابوں کے مصنف قاعد سے وضع کرنے والے اصول کی شیراز ہ بندی اور فروع کی تقیر مراد کتابوں کے مصنف قاعد سے وضع کرنے والے اصول کی شیراز ہ بندی اور فروع کی تقیر کرنے والے ہیں اور اس صورت میں بھی قشم کا جواب اس مقام میں مقدر ہے بعنی لتبعثن کرنے والے ہیں اور اس صورت میں بھی قشم کا جواب اس مقام میں مقدر ہے بعنی لتبعثن کرنے والے ہیں اور اس صورت میں بھی قشم کا جواب اس مقام میں مقدر ہے بعنی لتبعثن کرنے والے ہیں اور اس صورت میں بھی قشم کا جواب اس مقام میں مقدر ہے بعنی لتبعثن کرنے والے ہیں اور اس صورت میں بھی قشم کا جواب اس مقام میں مقدر ہے بعنی لتبعثن کرنے والے ہیں اور اس صورت میں بھی قشم کا جواب اس مقام میں مقدر ہے بعنی لتبعثن کرنے والے ہیں اور اس صورت میں بھی قسم کو جواب اس مقام میں مقدر ہے بعنی لتبعثن

یوم ترجف الراجفه فیکشف لکم من حسن الاشیاء و قبحها وتعرفون الحق عن الباطل والهدی عن الضلال کرتم ال دن ضرور أثمائ جاؤ محرس دن کانیخ والا کانچ و قاور باطل نیز کانیخ والا کانچ و تا اور باطل نیز مرای کی پیمان مور

اور جہاداور قال قالے کہتے ہیں کہ ان صفات سے موصوف غازی کہاہدین ان کے محصور سے اور اسلی مراد ہے۔ پس ناز عات غرقا غازیوں کے ہاتھ ہیں جو کہ بخت کمانوں کو کھینچتے ہیں۔ بین خطاعہ وہی ہاتھ میں جو کہ تیر کو کھار کی طرف کھینچتے ہیں۔ بین خط الدلو سے ہین ی آسانی سے ڈول نکال لیا یا غازیوں کی جماعتیں ہیں جو کہ نشاط و ناز کے ساتھ میدان جنگ میں آسے ہیں اور سابحات غازیوں کی جماعتیں ہیں جو کہ دشمنوں کی صفوں میں شناوری میں آسے ہیں اور سابحات غازیوں کے محمور سے ہیں حو کہ دشمنوں کی صفوں میں شناوری کرتے ہیں اور سابحات ہراول دستوں کی صفیں یا ان کے محمور سے اور مدبرات امر سے مراد کو بادشاہ اور سردار ہیں جن کے حسن تدبیر ومشورہ سے جنگ کے پروگرام سرانجام دیئے جاتے ہیں اور کوچ ، قیام ، حرکت کرنا اور کھیرنا ان کے مطابق ہوتا ہے۔

اور اہل بچوم کتے ہیں کہ فدکورہ صفات سے موصوف ان جماعتوں سے مرادگردش کرنے والے ستارے ہیں جو کہ پہلے تو کمان ہیں تیر کھینچنے کی طرح تیزی کے ساتھ فلک افلاک یعنی نویں آسان کے تابع ہو کر حرکت کرتے ہیں پھر ایک برخ سے دوسرے برخ کسا بی مخصوص حرکتوں کے ساتھ نعمل ہوتے ہیں اور اس حالت کو نشاط کے ساتھ تعبیر کیا گیا جیسا کہ کہتے ہیں قورنا شط یعنی ایک شہر دوسرے شہر کی طرف نظنے والا اور سباحت سے مرادان کے مرکز وں کی حرکت ہے جو کہ چھل کی طرح اس حرکت ہیں شناوری کرتے معلوم ہوتے ہیں اور حرکات کے اجتماع اور باہم اختلاف کی وجہ سے ایک دوسرے سے سبقت کرتے ہیں اور ان اطوار کے اختلاف کی وجہ سے ایک دوسرے سے سبقت کرتے ہیں اور ان اطوار کے اختلاف کی وجہ سے جو کہ ان حالات میں انہیں حاصل ہوتے ہیں عالم کی جہ سے جو کہ ان حالات میں انہیں حاصل ہوتے ہیں عالم کی جہ سے جو کہ ان حالات میں انہیں حاصل ہوتے ہیں عالم کی جہ دوس کے طف اور پھرنے کے واقعات مصلوں اور اوقات کی تبدیلیاں سفلی کا نئات اور حور خود کے بی خادر کو بھیانا انہیں سے ہوتا ہے۔

اور حضرت ابوانصر حسن بھری رضی اللہ عنہ ہے بھی ای قتم کا قول منقول ہے اور واعظین اور نفیحت کرنے والے کہتے ہیں کہ فرشتے مراد ہیں جو کہ کفار کی ارواح کو پوری شدت کے ساتھ کھینچتے ہیں۔ پس ناز عات غرقا ان پر صادق آتا ہے جبکہ ایمان والوں کی ارواح کو آسانی کے ساتھ لگائے ہیں تو ناشطات نشطا ہو جاتے ہیں اور ارواج کو تبض کرنے کے بعد انہیں لے کرعالم برزخ ہیں شناوری کرتے ہیں۔ پس سابحات سجا ہوجاتے ہیں اور اس کام میں ایک دوسرے سے سبقت کرتے ہیں اور سوال جواب اور قبر کے عذاب و ثواب کی تدبیر کرتے ہیں اور ان دونوں صورتوں میں جواب قتم وہی محذوف ہے یعنی لتبعثن کی تدبیر کرتے ہیں اور ان دونوں صورتوں میں جواب قتم وہی محذوف ہے یعنی لتبعثن بدلیل انقلاب الحوادث بتدبید الکواکب و شھادة البوت لیمنی تم ستاروں کی بدلیل انقلاب الحوادث بتدبید الکواکب و شھادة البوت لیمنی تم ستاروں کی گوائی کی بنا پر حوادث کے انقلاب کی ولیل سے ضرور ضرور اُٹھائے جاؤ

اوران میں سے بعض کہتے ہیں کہ نازعات اور ناشطات وہ فرشتے ہیں جو کہ کفار اور ایمان والوں کی ارواح قبض کرنے پرمقرر ہیں اور سابحات اور سابقات وہ فرشتے ہیں جو کہ پیغام پہنچانے اور ہمیں سرکرنے پر مامور ہیں جبکہ مد برات امر عظمت والے فرشتے ہیں جیسے حضرت جرئیل امین مطرت میکائیل مصرت اسرافیل اور حضرت عزرائیل اپنے مددگاروں اور تشکروں سمیت کہ ان میں سے ہرا یک کوکائنات کے امور میں سے ایک امرکی تدبیروں کے لیے مقرر فرمایا گیا ہے۔

جارمشہور فرشنوں سے متعلق ڈیوٹیوں کا بیان

حضرت جرئیل علیہ السلام ہواؤل جنگوں اور وحی نازل کرنے پرمقرر ہیں اور حضرت میکا ئیل علیہ السلام ہواؤل جنگوں اور وحی نازل کرنے پرمقرر ہیں اور حضرت اسرافیل علیہ السلام صور پھونکئے حیوانات اور آومیوں میں روح پھونکئے لوح محفوظ رزق اور اجل کا اندازہ مقرر کرنے جوانات اور آومیوں میں روح پھونکئے لوح محفوظ رزق اور اجل کا اندازہ مقرر کرنے پر مامور ہیں جبکہ حضرت عزرائیل علیہ السلام فوت ہونے والوں کی ارواح قبض کرنے امراض اور آفات پر ڈیوٹی دیتے ہیں۔

اور بعض نے کہا ہے کہ نازعات سے مراد غازیوں کی کمانیں ہیں جو کہ تیروں کو اپنی marfat.com

طرف کمینی ہیں اور ناشطات سے مراد وہ اونٹ اور بیل ہیں جو کہ گہرے کنوؤں سے پانی
کمینی ہیں اور سابحات سے مراد کشتیاں ہیں جو کہ دریاؤں میں تیرتی ہیں اور سابقات سے
مراد دوڑنے والے کھوڑے جبکہ مد برات امر سے عقل و حکمت والے لوگ مراد ہیں جو کہ ہر
کام میں عقل کی قوت کے ساتھ کوئی تد ہیر نکالے ہیں اور مشکل کاموں کے لیے کئی حیلے پیدا
کرتے ہیں اور شم کا جواب وہی ہے جو کہ ذکر کیا گیا اور ان قسموں اور جن پریہ شتمیں اُٹھائی
گئی ہیں جو کہ قیامت میں اُٹھنا اور میدان محشر میں آ نا ہے ہیں مناسبت معمولی غور وفکر سے
معلوم کی جاسکتی ہے جیسا کہ یوشیدہ نہیں ہے۔

اور چونکہ اس کلام میں بیان ہوا کہ ایسے یوم قیامت میں دل انہائی ہے چین اور بے قرار ہوں کے اور ان کی آئکسیں خیرہ اور حیران ہوں گی اس بات کا گمان ہوا کہ سننے والے کے دل میں خیال گزرے کہ کفار نے اس خوف تاک اور پُر ہول امر کے متعلق سُن کر کیا کہا ہوگا۔ کیا اس متوقع واقعہ کی دہشت کی وجہ ہے کوئی غور وفکر کرتے ہیں اور کوئی تدبیر سوچتے ہوگا۔ کیا اس متوقع واقعہ کی دہشت کی وجہ ہے کوئی غور وفکر کرتے ہیں اور کوئی تدبیر سوچتے ہیں یا ابھی تک غافل اور بے خبر بی وقت گزار رہے ہیں۔ جواب میں ارشاد ہوا کہ

یکھُولُون آئِنا لَمَو دُودُون فی الْعَافِرَةُ کفار کھے ہیں کہ کیا ہم اپی پہلی حالت میں اوٹائے جاکیں گے؟ اور افت میں حافرہ طبیک اوٹائے جاکیں گے؟ اور افت میں حافرہ طبیک ہوئی راہ کو کہتے ہیں اس لیے کہ حافر اور حافرہ گورڈے کے ہم کا نام ہے اور طبے کے ہوئے راستے میں سم کے نقش رہ جاتے ہیں۔ گویا سم کے نقش کوسم کا نام دے دیا جمیا پھر جس راہ میں سم کانقش ہوتا ہے مجاز درمجاز کے طور پر حافرہ کہددیا۔

كافرول كاقيامت كےدن أعضے ميں شبه

اورغرض یہ ہے کہ کفار آخرت کی زندگی کا انکار اس مطلب کی وجہ ہے کرتے ہیں کہ اگر ہم موت کے بعد پھرزندہ ہوجا کیں تو اپنی چھوڑی ہوئی حالت کی طرف رجوع کریں اور چھوڑی ہوئی حالت کی طرف رجوع کریں اور چھوڑی ہوئی حالت کی طرف رجوع کرنا خلاف واقع ہے ورنہ وہم لازم آئے اور بوڑھے کا جوان ہونا 'جوان کا بچہ ہونا اور مال کے شکم ہیں آنا بچے کے لیے جائز ہواور پھر شبہ کو تقویت دیے کے طریقے پرایک اور استفہام انکاری اور تجب کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ

آ واد کو کہتے ہیں جو کہ کھو کھی ہے ہے اندہ ہوں کے جب کہ ہم کھو کھی ہے مغز ہڈیاں ہو کھی اور بوسیدہ کہ ان ہڈیوں میں ہوا داخل ہو کر آ واز پیدا کرتی ہے اور لفت میں نخیر ہوا کی آ واد کو کہتے ہیں جو کہ کھو کھی ہڈی میں کرتی ہے اور یہ مقدمہ بڑھا کر شبہ کی تقویت کی وجہ یہ ہے کہ جب مرکب کھلنے والا ہوتا ہے اور اس کی ترکیبی صورت ضائع ہوجاتی ہے اگر چاہیں کہ مہلت کے بغیر فی الفورا سے پھرای صورت میں لوٹا کی تو مکن ہاس لیے کہ ابھی اس کے اجزا مادیہ متفرق نہیں ہوا اور ان اجزا میں اس صورت کو قبول کرنے کی استعداد کھئی نہیں اور جب مدت درازگر رجائے اور اس کے اجزا مادیہ متفرق ہوجا کیں باتی اجزا کی طور پر ناقص جب ملک ہوجاتے ہیں اور پھر اس مرکب کو ای صورت میں لوٹا ناممتن اور محال ہوجاتا ہے جب کہ باطل ہوجاتے ہیں اور پھر اس مرکب کو ای صورت میں لوٹا ناممتن اور محال ہوجاتا ہے جب یہ وعدہ کئی قرنوں نر مانوں کے گزرے ہڈیوں کے بوسیدہ ہونے اور رطوبتوں کے جو کہ جب یہ وعدہ کئی قرنوں نر مانوں کے گزرے ہڈیوں کے بوسیدہ ہونے اور رطوبتوں کے جو کہ واسکن کے جب یہ وعدہ کئی قرنوں نر مانوں کے گزرے ہڈیوں کے بوسیدہ ہونے اور رطوبتوں کے جو کہ واسکنا ہے۔

بعثت کے منکروں کے شبہ کا جواب

اگرکفار کے نزدیک واضح دلائل کے ساتھ ٹابت کر دیا جاتا ہے تو اس استفہام کے جواب میں کہا جاتا ہے کہ ہاں حالت متروکہ کی طرف رجوع ہوگا گران معنوں کے ساتھ کہ پہلی حالت کے مشابہدایک حالت حاصل ہوگی اس طریقے سے جیسے کہ ہم شل چیزیں ایک دوسرے کے بعد آتی ہیں نہ کہ بعینہ پہلی حالت لوٹے گی اور ہم شل چیزوں کے آگے ہجھے آنے میں تر ددوانکار کی کوئی مخبائش نہیں ہے کہ نینداور بدواری دن رات تری شکلیں ہشک فصلیں اور ہرروز ہر مہینداور ہرسال میں موسموں کا آگے ہجھے آنا دیکھا اور محسوس کیا جاتا ہے اور ترکیب اور اس کے لوٹانے کے باطل ہونے میں مت کی درازی اس وقت وشواری کا موجب ہوتی ہے جب فاعل کی قدرت کا مل نہ ہو ورنہ اس کے نزدیک فی الفور لوٹانا اور صدیوں ادر استعداد باطل ہونے بعدلوٹانا کیساں ہے۔

قَالُوْ ا وہ پھر خداق اور تبجب کے طور پر کہتے ہیں تلک اِڈا گر ۃ خاسرۃ ایسی نیز ندگی جو کہ اجزا کے بھر نے اور رطوب توں کے فا ہونے کے بعد ہوگی اس صورت میں لوفنا سراسر نقصان ہاس لیے کہ ہم اپنے بعض اجزا کوئیس پائیں گے اور ہم سے بہت کی چزیں گھٹ جائیں گی اور ہمارا مال اور کمائی ہوئی چزیں ہم سے جدا ہو جائیں گی۔ پس ہماراس جہان میں لوٹنا اس مسافر کے لوٹنے کی مائند ہے جو کہ اپنے گھر سے مال دولت صحت اور سلامتی میں لوٹنا اس مسافر کے لوٹنے کی مائند ہے جو کہ اپنے گھر سے مال دولت صحت اور سلامتی طفاء کے ساتھ ذکلا تھا اور سفر میں سب چھ برباد ہوگیا اکیلا سربرہن زخی جم اور اعضاء کو ضائع کے واپس آ جائے کہ اس کا بیآ تا سراسر نقصان ہے۔ اللہ تعالیٰ اس غماق ربا تا جواب فضل اور تا شیر کو اپنی آ جائے کہ اس کا بیآ تا سراسر نقصان ہے۔ اللہ تعالیٰ کے فضل اور تا شیر کو آب ہو اور اسے اپنی طرف اسباب جمع کرنے کی قید اور آ لات سے مدد لینے کی پابندی میں بچھتے ہو حالانکہ ایسا نہیں ہے اس کا فعل اور تا شیر اسباب اور آ لات پی موقوف نہیں بلکہ اسباب و آ لات بھی اس کے فعل اور تا شیر کی وجہ سے جمع ہوتے ہیں اور ملتے موقوف نہیں بلکہ اسباب و آ لات بھی اس کے فعل اور تا شیر کی وجہ سے جمع ہوتے ہیں اور ملتے موقوف نہیں بلکہ اسباب و آ لات بھی اس کے فعل اور تا شیر کی وجہ سے جمع ہوتے ہیں اور ملتے

فَانَّمَا هِي ذَجْوَةً وَاحِدَةً بِل وہ ذِي قَ اليك تذويز آ واز كا اثر ہے اور وہ صور بھو كئے ہے كنايہ ہے كہ صرف اى كى وجہ ہے ارواح جسول كے ساتھ متعلى ہوجائيں كى اور دوح كا جسمول كے ساتھ متعلى ہوجائيں كى اور دوح كا جسمول كے ساتھ متعلى ہوجائيں ہوتا زير كى تمام شرائط اور اسباب كوج كر ليتا ہے اور اس تعلق كى وجہ ہے بورى زير كى حاصل ہوجائے كى نہ كہ مال كے بيد والے بچ يا نوز ائد و اس تيخ كى طرح جوكہ كرورس وكم ہے اور دشوارى ہے حركت كرتا ہے اس ليے كہ وہ اس تيخ كى طرح جوكہ كرورس وكم ہے اور دشوارى ہے حركت كرتا ہے اس ليے كہ وہ اس تيخ آ واز كوسنتے بى سراج اور قوى حركت كريں مے اور ذبن كے اندر ہے جنبش كريں مے۔

فَاذَا هُد بالسَّاهِرَةِ لَهِ وه اجا عك زمن كے اوپر مول كے اور افت من ساہر وسفيد ممان اور مند من ساہر وسفيد محموار زمن كو كَبَّتِ بين اور مير آخرت كى زمين كا نام ہے كداس ون زمين كى يمي حالت موكى۔

اور احمال ہے کہ یہال ساہرہ بے داری کے معنوں میں ہو جے سہرے لیا حمیاجس کا معنی بے خواتی نے جیسے کا ذیداور خاطرئة

اوران آیات کی تقریراس احمال پرہے کہ جب کفار نے مسلمانوں کے الزام کے لیے کہا کہ موت سے قیامت قائم ہونے تک جو کہ زندگی کے وعدے کا وقت ہے کافی رمانے کا فاصلہ ہے اوراس دوران ہڈیاں بوسیدہ جسمانی رطوبتیں ختم اوراس کے اجز امنتشر اور لاشکی ہو بچے ہوں گے پھر ترکیبی صورت کا لوٹانا جس کے ساتھ زندگی کا فیضان مشروط ہے کسے ہوگا اور مسلمانوں نے کہا کہ اس سب کچھ کے باوجود ایبا ہوگا اس لیے کہ اصلی اجزا کا باتی رہنا جبکہ اللہ تعالی اصلی اجزا کا باتی رہنا جبکہ اللہ تعالی اصلی اجزا کا جاگے۔

ووسرى وفعه كفار نے كہا يِنْكَ إِذَّاكَرَّةً خَاسِرَةً لِعِنى اس تقدير بركه بورے اجزاباتى ندر ہیں کوٹانا ناقص ہے اس لیے کہ اجز ابورے کے بورے نہلوٹائے محصے تو جوزندگی دوبارہ عطا ہوگی بھی تاقص ہوگی جیسے مال کے پید والے بچے اور نوز ائدہ بچے کی زندگی حالانکہ تم کہتے ہوکہ وہ زندگی اس متر و کہ زندگی ہے زیادہ کامل اور دائم ہوگی۔ پس تہارے ندہب کے ظاف ثابت ہوا۔ الله تعالى نے ان كے جواب من بيار شادفر مايافَانَكَا هي زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ سب کے سب نے خوابی اور بے داری میں آجائیں سے۔ حاصل کلام ریک زندگی کا کمال اور اس كا نقصان اس كے روحانی قوئی كے كمال اور ان كے نقصان كی وجہ ہے به كداجز اجم کی کشرت اور ان کی قلت کی وجہ سے اور پیٹ کے بیجے اور نومولود کی زندگی جو کہ ناتص ہے ان کی روحانی تو توں کے ناقع ہونے کی وجہ سے ہے جو کدا بھی تک اینے کمال کی حد کوہیں مینچی ہیں اور ترقی اور افزائش کے دریے ہیں۔ بخلاف مردوں کی ارواح کے جو کہا ہے کمال کوچنے کراس جہان سے فوت ہوگئیں ہیں اور ان کی ارواح کا ان کے جسموں سے منقطع ہونا جو كموت كے بعدرونما موا روحانی تو تول كے كمال كوختم كرنے كا موجب نبيس مواتاكموه لوٹائے جانے کے وقت ناقص أشميل بلكه اس تعلق كے لوٹانے كونيند كے بعد جا منے كى صورت میں روح کے بدن کے ظاہر کے ساتھ متعلق ہونے پر قیاس کرنا جاہیے کہ نیند میں روح کا بدن کے ظاہرے تعلق منقطع ہوتا ہے اور حس وحرکت باطل ہوجاتی ہے اور پھر ایک سخت آواز

کے ساتھ بی وہ تعلق لوٹ آتا ہے اور روحانی قوتوں میں کوئی نقصان لاحق نہیں ہوتا اور پھر
کامل اور پورا کرنے کامختاج نہیں ہوتا تاکہ پہیٹ والے بچے اور نومولود کی طرح بالغ ہونے کا
مختاج ہواور درجہ بدرجہ حد کمال کو پہنچے۔

نیزاخال ہے کہ لفظ ساہرہ اسم فاعل ہو جو کہ سہر سے مشتق ہے جس کامعتی ہے خوابی کا ہے لیعنی فاذا ھے متلبسون بالابدان الساھرة اچا تک ان کی روش ان کے بے دار جسموں ہیں آ جا کیں جو کہ لنخ صور سے پہلے توی ادراک والے نفوس ساویہ کا تعلق حاصل ہونے اور ان کی قو توں کے سرایت کرنے کی وجہ سے اس حد تک انتہائی کال زندگی کے مستعدر ہے ہیں کہ خواب کے قابل بھی نہیں رہے ہیں اور اس طور پر وہاں کی زندگی دنیا کی زندگی سے زیادہ کامل ہے کہ دنیا کی زندگی میں پھر بھی پھے موت کی آ میزش ہے کیونکہ نیند موت کا بھائی ہے اور وہاں کی زندگی میں نیند بھی نہیں ہے اس حد تک موت اور موت کی موت کی موت اور موت کی مشابہہ چیزوں سے دور ہے اس کے دور نیوں اور جنتیوں کے لیے نیند نہیں ہوگی جیسا کہ مشتوں اور نفوس ساویہ کے لیے نیند نہیں ہوگی جیسا کہ فرشتوں اور نفوس ساویہ کے لیے نیند نہیں ہوگی جیسا کہ فرشتوں اور نفوس ساویہ کے لیے نیند نہیں ہوگی جیسا کہ فرشتوں اور نفوس ساویہ کے لیے نیند نہیں ہوگی جیسا کہ فرشتوں اور نفوس ساویہ کے لیے نہیں ہے۔

اور جب کفار اس وضاحت مورت کی اور مثالیس بیان کرنے کے باوجود اخروی زندگی کا یقین نہیں کرتے اور اپنے تاممکن جانے پرمعراور قائم رہتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ان دلیوں اور مثالوں سے ہمارے دل ہیں ہے بات جاگزیں نہیں ہوتی کہ دختک ہڈیاں اس کے باوجود کہ زندگی کی صلاحیت بالکل نہیں رکھتیں ایک دن ہیں زندہ ہوجا کی اور ایک بی جسم پر مدت دراز گزرنے کے بعد زندگی کا آ کے بیچے آ نا ہمیں بجھٹیں آ تا جب تک کہ اس کا گواہ ہم اپنی آئھوں سے ندو کھے لیس اور مردے نے زندہ ہونے کا ہم ایک بار مشاہدہ نہ کرلیں۔ نگ دل ہوکر مسلمانوں کے دل میں ہے بات آتی ہے کہ اے کاش حق تعالی ایک مردے کو معدیاں اور زبانے گزرنے کے بعد ان کے سامنے زندہ فربا دے کہ ان کا انکار ٹوٹ جائے اور بہ طرم بن جا کی اس بنیاد پر اللہ تعالی ہر ایک مسلمان کو خطاب فرباتے ہوئے استفہام اور بہ فربات ہوئے دات کا میں اس بنیاد پر اللہ تعالی ہر ایک مسلمان کو خطاب فرباتے ہوئے استفہام کے طور پر فرباتا ہے

هَلْ أَتَاكَ حَدِينَتُ مُوسَى كياتيرے پاس مضرت موى (عليدالسلام) كاواقعه بہنجا

ہے جو کہ مرکش باوشاہ فرعون کے سامنے جس کے دربار میں ہزاروں آ دی حاضر ہوتے ہے اس کے جو کہ مرکش باوشاہ فرعون کے سامنے جس کے دربار میں ہزاا ڈربا ہو جاتا اور وہ دوڑتا اور منہ کو کا عصا زمین پر چھینے بی زندہ کر دیتے ہے اور وہ بہت بڑا اڈر ہا ہو جاتا اور وہ دوڑتا اور منہ کول کر مجھنکارتا۔ پس ایک جسم میں جو کہ لکڑی تھی اس طرح کی زندگی کا تعاقب کئی بار واقع ہونے کے بعد حالانکہ وہ حیوائی زندگی تبول کرنے سے پورے طور پر دُور ہے اور اس میں رطوبت بالکل نہیں ہے شک اور تر دوکی کوئی مخوائش ہے اور مرف زمین پر چھینئے سے بی اس کامل زندگی کے حصول کو دیکھنے کے بعد فرعون روز جزا کا معتقد اور جن تعالی کی قدرت کے عموم کا قائل نہ ہوا اور یہ کفار بھی ایک مردے کے زندہ ہونے کو دیکھ کر سیدھی راہ پر نہیں آئی کے محموم کا قائل نہ ہوا اور یہ کفار بھی ایک مردے کے زندہ ہونے کو دیکھ کر سیدھی راہ پر نہیں اور آگر نیو واقع تفصیل کے ساتھ ہر مسلمان اور آپول کرنا عادت الجبید میں اس کا سب ہوتا ہے اور آگر نیو واقع تفصیل کے ساتھ ہر مسلمان کا دیے ہیں۔

اِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ جُلولی لیخی اس واقعہ کی ابتدا اس وفت تھی جب اے اس کے پروردگار نے طوی کے متبرک مقام پر ندادی۔

حضرت موئ عليدالسلام كاواقعه

اورسورہ طہ سورہ محص اور دوسری سورتوں کے مطابق اس واقعہ کی کیفیت ہے کہ حضرت موکی علیہ السلام اپنے جائے ولا دت اور مسکن شہر معرب ایک قبطی ظالم کے خون کی وجہ سے جو کہ آپ کے ہاتھوں ہوا تھا اور فرعون آپ کوئل کرنے کے دریے ہوگیا تھا' بھاگ کرمدین کی طرف تشریف لے گئے اور حضرت شعیب علیہ السلام جو کہ اس شہر میں پغیبر سے اور اان کا واقعہ بھی قرآن مجید میں تحرار کے ساتھ بیان فرمایا گیا ہے' کے گھر سکونت پذیر ہوگئے اور حضرت شعیب علیہ السلام نے اور حضرت شعیب علیہ السلام نے اپنی دختر نیک اختر کا تکاری آپ کے ساتھ کردیا۔

جب وہاں دو روایات کے اختلاف کے مطابق دس سال یا آٹھ سال تشریف فرما استے اجازت طلب کی کداگر آ ب اجازت دیں تو میں اپنے مطاب طلب کی کداگر آ ب اجازت دیں تو میں اپنے وطن والیں چلا جاؤں اور اپنے اہلِ خانہ کو بھی ساتھ لے جاؤں اور اپنی والدہ محتر مہ کی زیارت میں استان کے جاؤں اور اپنی والدہ محتر مہ کی زیارت میں معتل میں میں معتل میں میں معتل میں معتل میں معتل میں معتل میں میں معتل میں معتل میں میں معتل معتل میں میں معتل میں معتل میں معتل میں معتل میں معتل میں معتل م

* کروں اور اپنے بڑے بھائی حضرت ہارون علیہ السلام ہے بھی ملاقات کروں اس لیے کہ اس مدت تک فرعون اور فرعونی خون قبطی کا واقعہ بھول بیکے ہوں گے۔

حضرت شعیب علیہ السلام نے آپ کورضامندی کے ساتھ رخصت فر مایا اور آپ آ
اہل خانہ کو بھی ساتھ روانہ کر دیا اور اپنے دوغلام بھی ہمراہ کر دینے تاکہ معر تک بہنچا کر واپس آ
جا کیں ۔ حضرت مولی علیہ السلام اپنے اہل خانہ کو لے کر روانہ ہوئے اور حضرت مولیٰ علیہ السلام بہت غیور سے اپنے اہل خانہ کو قافے کے ہمراہ لے جاتا گوارا نہ فر مایا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ سوار ہوتے یا سواری ہے اُٹر تے وقت کی تامرہ کی نگاہ ان پر پڑے اسکیے روانہ ہوئے اور شام کا راستہ چھوڑ دیا کہ کہیں شام کے حکام جو کہ فرعون کے پیروکار سے اس خون کی وجہ سے راستے ہیں مزاتم نہ ہوں سمندر کے ساحل کا راستہ افتیار فر مایا اور آپ کے ہمراہ ایک اونٹ تھا جس پر آپ نے اپنے سامان کی بوریاں لاور کمی تھیں اور ایک غلام کو اس پر مقرر فر مادیا اور خود زنانہ سواری کے ہمراہ چلتے یہاں تک کہ ایک دن راستہ گم کر کے کو وطور کی طرف جا نکلے جتنا راستہ بھی طے کیا' کوئی منزل نظر نہ آئی اور شام کا وقت ہوگیا اور وہ ذوالقعدہ کی افعارہ اور جمعہ کی رات تھی' مردی کا موسم اور اس دوران آپ کی بھیڑ بگریاں وحشت کی وجہ سے منتشر ہوگئیں اور آپ رات کے سفر کی وجہ سے تھک گئے۔

غلام بھیڑ بریوں کوجع کرنے میں معروف ہوگے اور حفرت موی علیہ السلام اپنی اہلیہ کے ہمراہ تھہر کے کہ اچا تک آپ کے اہلی خانہ کو سواری کی تھکا ہے اور سنر کی کوفت کی وجہ سے ولا دت کی تکلیف شروع ہوگئی اور ان کی مدت حمل پوری ہو پچی تھی آپ کے اہلی خانہ نے اس بات کا حفرت موی علیہ السلام کے سامنے اظہار کیا اور کہا کہ اگر کہیں ہے آگ ل جائے تو بہت ضروری ہے کہ دوشتی کے کام بھی آئے اور اس سردی میں اس ہے گری حاصل جائے تو بہت ضروری ہے کہ دوشتی کے کام بھی آئے اور اس سردی میں اس ہے گری حاصل کریں ۔ حضرت موی علیہ دلاسلام نے غلاموں کو تھم دیا کہ اس جھل میں دیکھو کہیں آگ کا اس میں مناز کے اور آگ کی اسراغ نہ ملا حضرت موی علیہ السلام نے خود اُٹھ کر تلاش شروع فر مائی ۔ آپ کواپئی وائی جانب پہاڑ کے او پر آگ

کی روشی معلوم ہوئی' آپ نے اپنے اہلِ خانہ اور غلاموں سے فرمایا کہتم لوگ یہیں تھہر وہ مجھے کچھ آگ معلوم ہوئی ہے۔ میں جاتا ہوں تا کہاس سے پچھ آگ لاؤں اور جوکوئی آگ کے تجھے کچھ آگ معلوم ہوئی ہے۔ میں جاتا ہوں تا کہاس سے پچھ آگ لاؤں اور جوکوئی آگ کے قریب ہوگا' اس سے راستے کا پنۃ یو چھلوں گاتا کہ ہم منزل تک پہنچ جائیں۔

جب حضرت موی علیہ السلام اس آگ کے قریب پہنچے تو دیکھا کہ بی آگ نہیں ہے قدرت اللی سے ایک عجیب شے ہے کہ دھوئیں کے بغیر آگ کے رنگ میں ایک عظیم نور نے عوسج کے درخت کو جو کہ عناب کے ذرخت کے مشابہ ہوتا ہے اور شام کے پہاڑوں میں بہت . اُگنا ہے گھیرر کھا ہے اور وہ درخت نیچے ہے لے کر اوپر تک سرسبز وشاداب ہے اور آگ ک روشی اس قدر چیک دار ہے کہ آنکھول کو خیرہ کرتی ہے اور اس آگ کے اردگر دیے فرشتوں کی تنبیج کی آواز سنائی دیتی ہے۔حضرت مویٰ علیہ السلام نے اس سب سیجھ کے باوجود اس میدان سے شکے اکٹھے کر کے دیتے کی طرح باندھ کرجا ہا کہ اسے اس آگ ہے روش کریں جب زیادہ نزدیک ہوئے تو وہ آگ آپ کی طرف لیکی۔ کویا آپ تک پہنچیا جا ہتی ہے یہ حالت دیکھ کرآپ ہیبت زوہ ہوکر پیچھے ہٹ گئے آگ بھی درخت کے او پر پہنچ گئی۔ دوسری مرتبہ آپ چرآگ کے نزدیک ہوئے اگ پھر آپ کی طرف لیکی آپ پھر پیچیے ہے محے ای طرح چند مرتبہ اتفاق ہوا۔ دریں اثناء حضرت موی علیہ السلام حیران کھڑے اس عجيب وغريب شے كانماشا كرر ہے تنے كدا جانك اس آگ سے ايك عظيم نور أنها اور اس سے زمین وآسان کی فضامعمور ہوگئی اور اس نور کی روشی اس حد تک غالب ہوگئی کہ حضرت موی علیہ السلام کی آمکھیں چندھیا تنی اور دیکھنے سے رہ تنی اور آ ب نے اسنے ہاتھ اپن المحول برر كه لياور فرشتول كا تبيع كى آواز نهايت بلند بوكى حضرت موى عليه السلام ن ال وقت آگ سے ایک آ وازشنی که

یامُوسی اِنّی آنارَبُک فَاخْلَعُ نَعُلَیْكَ اے مویٰ! میں تیرایردورگار ہوں کہ میں نے آگ کی صورت میں جُل فرمائی ہے اپنے دونوں جوتوں کواپنے پاؤں سے اُتاردیں اس لیے کہ بیجکہ جُل الٰہی اور فرشتوں کی حاضری کی وجہ سے جو کہ اس جُل کے خادم میں کعبداور مسجد حرام کے حکم میں ہو چکی ہے۔

پر مختکوشروع ہوگی اور آپ ہے پوچھا گیا کہ آپ کے سیدھے ہاتھ میں کیا ہے؟
مرض کی میری ہاتھ کی چیزی ہے۔ تھم ہوا کہ اسے زمین پر پھینک دیں آپ نے پھینک دی۔
ایک بھا کا ہوا اڑ دہا بن گیا۔ حضرت مولیٰ علیہ السلام اس اڑ دہا ہے ڈر کر بھاگ کھڑے
ہوئے۔ ارشاد ہوا کہ مت ڈریں اور اس اڑ دہے کو اپنے ہاتھ سے پکڑ لیس کہ پھر وہی ہاتھ کی چیزی بن جائے گی۔ پھر تھم ہوا کہ اپنے ہاتھ اپنی بغل کے نیچے رکھیں پھر نکالیس۔ پس آپ خیری بن جائے گی۔ پھر تھم ہوا کہ اپنے ہاتھ اپنی بغل کے نیچے رکھیں پھر نکالیس۔ پس آپ نے ایسانی کیا' آپ کا ہاتھ سورج کی طرح چک وار ہوگیا کہ آنکھوں کو اپنی روشن سے خیرہ کر رہا تھا۔ حضرت مولی علیہ السلام نے فر مایا کہ میں نے بیہ آ واز سنتے ہی جان لیا کہ بیضو اتعالٰی کی آ واز ہے اس لیے میں اسے چھستوں سے ہی سن رہا تھا اور جسم کے سارے اعضاء کے ساتھ سن رہا تھا یہاں تک کہ میرے جسم کا ہر ہر عضو کان تھا۔ بہر حال یہ کرشہ دکھانے تھا کن تو حید اور آ واب عبادت تلقین کرنے قیامت کی آ مہ اور دوسری ضروریات رسالت بیان کرنے کے بعد تھم ہوا کہ

افظ اللی فرعون کی طرف جاتا کہ تواس کی تدبیر و اصلاح کرے اور سابقین اور مقربین کے حاصل شدہ مقام سے ترقی کر کے مدبرات امر کے مقام تک پہنچ جائے اور میں بچنے فرعون کی تدبیرواصلاح کے لیے اس لیے بیجے رہا ہوں کہ

اِنّهٔ طَعٰی شختین ووفرون فساد کرنے میں صدین نکل ممیاہے یہاں تک کدر بوبیت کا دعویٰ کرتا ہے اور جب تو فرمون کے پاس ہنچے

فَقُلْ او پہلے اے ای قدر کہنا کہ مقل لگت الی آن قرَیْ کیا تھے اس بات کی طرف کوئی رغبت اور میلان ہے کہ تو لئس کی روی صفات سے پاک ہوجائے جو کہ تیرے سرش ہونے کی بنیاد ہے اور میں تیری خرابی کی اصلاح میں صرف یہیں تک قنا صت نہیں کروں گا اس لیے کہ اتنا کام تو عام صلحاء اور وانایان تکہت بھی کر سکتے ہیں بلکہ میں تھے عظیم ترتی ووں گا اور تھے اولیائے کا ملین اور صلحاء واصلین میں سے کردوں گا۔

وَاَهْدِیَكَ اِلٰی دَبِکَ اور تجمع تیرے پروردگاری طرف رہنمائی کروں تا کہ تجمع اللہ تعالیٰ کی ذات مفات اورافعال کی معرفت میں القین کے ساتھ حاصل ہوجائے۔ تعالیٰ کی ذات مفات اورافعال کی معرفت میں القین کے ساتھ حاصل ہوجائے۔ marfat.com

فَتَعُصنی پی تو ہیبت پائے اور تیرانفس پاش باش ہوجائے اور بچھے کلی فنا نعیب ہو اور اس کے بعد خوف نہ کرنا کہ بچھے سرکشی کی بیاری کیے کیونکہ فانی لوٹمانہیں۔

اور یہاں اس واقعہ کا بقیہ محذوف ہے یعنی حضرت موی علیہ السلام فرعون کی طرف تشریف لے گئے اورائے فرمانِ الہی پہنچایا اور فرعون نے پہلے تو ان کے جواب میں یوں کہا کہ کہ کہا تو وہی شخص نہیں ہے کہ ہم نے بچپنے کی حالت میں تجھے پالا تھا اور تو نے ہمارے درمیان کافی وقت گزارا بجر تو وہ کام کر کے چلا گیا جو تجھے معلوم ہے اور تو ہماری نعمتوں کا ناشکر ہوگیا' تجھے یہ منصب کہاں سے ل گیا کہ خود کو میرا ہادی اور مرشد قرار دے کر آگیا۔ حضرت موکی علیہ السلام نے اس کے جواب میں فرمایا کہ ہاں میں وہی شخص ہوں اور میں نے جو کام کیا تھا اس وقت مجھے معلوم نہ تھا کہ ایسا ہوجائے گا اور جب میں تم سے ڈر کر چلا گیا تو خدا تعالیٰ نے جھے علم وحکمت سے نواز ااور ہدایت اور ارشاد کا منصب عطا فرمایا اور مجھے بیغام دے کرتمہارے پاس ہجیج دیا۔ دوسری مرتبہ فرعون نے کہا کہ اب تو یہ دعویٰ کرتا ہے کہ بیغام دے کرتمہارے پاس ہوں اگر تو سچا ہے تو اس دعوے پرکوئی دلیل پیش کر۔

عصاء ہوگانہ کہ پد بیضاء

معجزات از بہر قہر وشمن است بوئے جنسیت ہے دل بردن ست نیزعما میں اور معجزات بھی تھے۔

حضرت موی علیدالسلام کے عصاکے دوسرے معجزات

پانی کھینچنے کے وقت کو کس کی گہرائی کے مطابق لمباہوجاتا تھا اور ری کی طرح اس کی شاخیں ڈول کے ساتھ چپک جائی تھیں اور تاریکی کے وقت اس کی دونوں شاخیں شع کی طرح چکی تھیں جب حضرت مولی علیہ السلام آ رام فرماتے تو کھڑے ہو کر چوکیداری کرتا اور اگر آپ اسے بھیڑ بکریوں کے پاس چھوڑ کر کہیں تشریف لے جاتے تو بھیڑ کے اور جورکو روکنا تھا یہاں تک کہ کہتے ہیں کہ آپ کے عصابی ایک شار جزات تھے جن میں سے دو بردے مجزات تر آن پاک میں بھی ذکور ہیں اسے مارکر دریا کو بھاڑتا و دومرا اسے مارکر چھر سے بانی کے چھے جاری کرنا۔ پس آیت کرئی وہی ہوگانہ کہ ید بیضاء۔

اوربعض نے کہا ہے کہ ید بیناء اس لیے زیادہ بڑا ہوا کہ وہ حفرت موی علیہ السلام کے کمال دلایت کی صورت تھی۔ ولایۃ النبی افضل من نبوت نیز فرعون کے جادوگر ید بیناء کی نقش نہ کر سکے جبکہ انہوں نے عصا کی قل کی۔

اور حق بیہ ہے کہ دونوں مجزات آیے کبری میں داخل ہیں اور بید دونوں ایک بی نشان کا تھم رکھتے ہیں۔ حضرت موی علیہ السلام کوعطا فرماتے محتے دوسرے مجزات کی نسبت زیادہ برے ہیں۔

ہے کہ آپ کے ہاتھوں راہِ خدا کے سالکوں کو انوار وتجلیات تک پہنچا نا رونما ہو سکے گا۔ بالکل مطبع نہ ہوا بلکہ اس نے نفرت کی۔

فَکَنَّبَ وَعَصٰی پس اس منے حضرت موی علیہ السلام کی رسالت کا انکار کیا اور خداتعالیٰ کے بیغام کی نافر مانی کی جو کہ آپ کی زبان کے ذریعے اس تک پہنچا تھا اس نے اس کے زریعے اس تک پہنچا تھا اس نے اس کے ان کیا بلکہ

ا المالات کو باطل کرنے میں کوشش شروع کی جب اس نے جان لیا کہ ان دومجزات کو دیکھنے رسالات کو باطل کرنے میں کوشش شروع کی جب اس نے جان لیا کہ ان دومجزات کو دیکھنے کی وجہ سے حاضرین کے دِلوں میں حضرت موی علیہ السلام کی صدافت گھر کر جائے گی۔

الکی علیہ السلام کے مقابلہ اورمخلوق خدا کو یہ میں سے میں سے

مقابلہ دیکھنے کے لیے جمع کیا تا کہ وہ جان لیں کہ بیکام حیلے اور بتر بیر کے ساتھ بھی ہوسکتا ہے ۔ خدا تعالیٰ کا کام نہیں ہے۔

فَنَادَى پس اس نے مقابے سے پہلے لوگوں کو آواز دی تاکہ بالفرض اگر جادوگر مغلوب ہو جا کیں تو حضرت موی علیہ السلام کا مقصد ثابت نہ ہو کہ ابھی اس پروردگار کی ربوبیت جس کی طرف سے حضرت موی علیہ السلام پیغام رسانی کا دعویٰ کرتے ہیں میری ربوبیت کے بعد ہے اوراعلی کے ہوتے ہوئے ادنیٰ کی پیروی کرنا رعایا کے لائق نہیں۔

مویٰ علیہ السلام ہیں میرے المجیوں کی طرح رعب نہیں رکھتا نہ اس کے ہاتھ میں زریں دستانہ ہے اور نہ ہی اس کے ہمراہ فوج اور تشکر اور المجی کے حال سے اس بادشاہ کی باوشاہ کی کی دستانہ ہے اور نہ ہی اس کے ہمراہ فوج اور تشکر اور المجی کے حال سے اس بادشاہ کی باوشاہ کی کمروری مجی جاسکتی ہے جس کی طرف سے وہ المجی آیا ہے۔

ببرحال فرعون بھی ان تدبیروں اور حیلوں سے پہلے گمراہی میں سبقت کرنے والوں سے تھا اور اس کے بعد مدبرات امر میں داخل ہوگیا۔ پس دونوں مقابلے کے حریف جو کہ حفرت موی علیه السلام بیں اور فرعون ہدایت اور گمراہ کرنے کی جہت میں برابر ہو محے لیکن عنایت اللی نے حضرت موی علیه السلام کی تدبیر کی امداد فرمائی اور اس ملعون کی تدبیر کو برباد کردیا۔

فَاخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاَخِرَةَ وَالْاُولِي لِي اس الله الله تعالى نے اس جہان اور اس جہان اور اس جہان کے عذاب میں پر لیا اس جہان میں اسے پانی کے عذاب کے ساتھ خرق فرما ویا اور اس جہان میں آگ کے عذاب میں گرفآر فرمایا جیسا کہ دوسرے مقام پر فرعون اور اس کی فوجوں کے متعلق فرمایا گیا ہے اُغرِقُوا فَادْخِلُوا فَادْ اور اگر چہ دندی سزا آخرت کے عذاب سے پہلے ہایا گیا ہے کہ مقصود کی عذاب سے پہلے لایا گیا ہے کہ مقصود کی عذاب میں عذاب ہمیشہ کے لیے ہاور دندی سزا اس کا وسیلہ۔ نیز وہ عذاب ہمیشہ کے لیے ہاور دندی سزا اس ہراوں مرتبہ زیادہ خت ہے۔ اس وہ پہلے ذکر کیے جانے کے لائق ہے اگر چہ دنیا دار الجزائیں ہے لیکن اس طرح کے فرعونوں کو دنیا میں بھی الزام جمت کے بعد دوسروں کی عبرت کے لیے ان کے کردار کی سزاد ہے ہیں۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے کہ

اِنَّ فِی ذَالِكَ لَعِبْرَةً لِمَن يَعُنى سِهِ شَك اس رُفارى مِن چندوجوه سے اس کے لیک اس کرفناری میں چندوجوہ سے اس کے لیے ایک عبرت ہے جو کہ خداتعالی سے ڈرسکتا ہے۔

عبرت آموز ہونے کی چندوجوہ

کہلی وجہ رہے کہ مرائی کی افتداء کرنے والوں کی تدبیر کامیاب نہیں ہوتی اور مسی وقت بھی برباد ہوجاتی ہے جیسے کے فرعون کی تدبیر برباد ہوئی۔

دوسری وجہ یہ کہ اللہ تعالیٰ اگر چہ کمراہوں کو مبلت دیتا ہے مگر انہیں فضول نہیں مجبوز تا۔ marfat.com

تیسری وجہ یہ ہے کہ مجزات و کیمنے سے وہی سیدهی راہ پر آتا ہے جس کے دل میں کفر نے گھر نہ کیا ہواور اس کے جراثیم تھیلے نہ ہول ور نہ وہ ہر معجز سے کو حیلے اور مکر سے رد کر دیتا ہے اور ہر دلیل اور بر ہان کا مغالطوں کے ساتھ مقابلہ کرتا ہے۔

چوتی وجہ یہ ہے کہ حضرت مولیٰ علیہ السلام نے اس طرح کے سرکش کافر کے ساتھ کہ جس نے ربوبیت کا دعویٰ کررکھا تھا' پوری نرمی اور حوصلے سے با تیں کیس اور انجام کارکامیا بی حاصل کی ۔ پس پیغبروں علیم السلام اور ان کے پیروکاروں کو چاہیے کہ تفرید کلمات اور بے ادبی کی با تیس سُن کرآ ہے سے باہر نہ ہوں غم ناک نہ ہوں تا کہ انجام کے طور پر کامیاب ہوں۔

اور جب حضرت مولیٰ علیہ السلام کے واقعہ میں ٹابت ہوگیا کہ غیبی حیات کا فیضان جسم کی استعداد پر شروط نہیں ۔ نیز غیبی حیات بار بار آتی ہے اور جاتی ہے جیسا کہ عصاکے اثر دہا ہونے میں واقع ہوا کفار کے اس دلیل میں بات کرنے کی گنجائش تھی کہ حیوانی زندگی ناقص ہوا گفار کے اس دلیل میں بات کرنے کی گنجائش تھی کہ حیوانی زندگی کا بار بار آنا ہیں ہا آگرائی ہے ہم یا گفری اسے قبول کرے تو کر سمتی ہے اور اسی طرح اس زبار گنگی کا بار بار آنا بعید نہیں ہے اس لیے کہ بہار اور برسات کے دنوں میں ہم ویصح بیں کہ اس قسم کے جانور بعید سانپ کچھواور مینڈک دستور تو الد و تاسل کے بغیر پیدا ہوتے ہیں اور زمین اور ترمئی ان حیوانات کی شکل قبول کر لیتی ہے پھر جب وہ موسم گزر جاتا ہے وہ حیات چلی جاتی ہے وہ مان ہونے میں مان بازا مادیہ جو کہ اس اختیار کر لیتے ہیں لیکن آ دمی کی بیدائش اس انداز کہ اس عبرت و در ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں ارشاد ہوتا ہے عبرت و در ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں ارشاد ہوتا ہے عبرت دُور ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں ارشاد ہوتا ہے عبرت دُور ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں ارشاد ہوتا ہے عبرت دُور ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں ارشاد ہوتا ہے عبرت دُور ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں ارشاد ہوتا ہے عبرت دُور ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں ارشاد ہوتا ہے عبرت دُور ہے اس کا کوئی گواہ بیان کرنا چاہے۔ جواب میں اور تمہاری پیدائش زیادہ دشوار

آمرِ السّبَاءُ یا ازروئے خلقت آسان زیادہ سخت ہاوراس کی پیدائش تمہاری نظر میں زیادہ دشوار ہے اوراس سوال کا جواب بالکل ظاہر ہے کہ آسان مقدار میں بھی آ دمی ہے اس صد تک بڑا ہے کہ است کے ساتھ کوئی مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مست کے ساتھ کوئی مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مست کے ساتھ کوئی مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مست کے ساتھ کوئی مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے اور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مختلف مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں جو کہ مناسبت نہیں ہے دور برجول ستاروں ہے دور ہے دور

' اثرات ادراحکام رکھتے ہیں اور جدا جدا حدود کے اجزاکی تفصیل کے اعتبار سے بھی آدمی ہے زیادہ ہے ادراس کی جسمانی قوت بھی آدمی کی جسمانی قوت سے بڑھی ہوئی ہے اس لیے کہ حق تعالیٰ نے بَدَا ھا اسے بنایا ہے۔

آ سان حرکت کرتا ہے

یہ توی عمارت طویل زمانہ گزرنے اور ہمیشہ متحرک رہنے کے باوجود پرانی ہے نہ ٹوٹتی ہے اور اس کی روحانی قوت بھی آ ومی ہے زیادہ غالب ہے اس لیے کہ حق تعالیٰ نے

رَفَعَ سَبَعُهَا اس کی اونچائی کوستونوں اور دیواروں پراعقاد کے بغیر بلندفر مایا ہے۔
افت میں مک درازی کو کہتے ہیں کہ اس درازی کوطول وعرض پرقائم اعتبار کرتے ہیں اگرینچ
سے او پرکو دیکھیں تو اس درازی کو سمک کہتے ہیں اور ارتفاع بھی کہتے ہیں جیسا کہ عرف میں
مشہور ہے کہ اس دیوار کا ارتفاع اس قدر ہے اور اگر او پرسے نیچے کی طرف دیکھیں تو اس
درازی کوعمق یعنی مجرائی کہتے ہیں جیسا کہ کہتے ہیں کہ دریا اور کوئیں کی عمق یعنی مجرائی اس

آسان کی بلندی کابیان

اورمیلوں کے ساتھ کیا ہے اور اس صورت میں اختال ہے کہ روایات شرعیہ اور برابین ہندسیہ دونوں مطابق ہو جا کیں لیکن علم بیئت والوں کے نزدیک افلاک کی سطیس آپس میں چپکی ہوئی ہیں اور ان کے درمیان خالی جگہ نہیں ہے جبکہ شرعی روایات کے مطابق خالی جگہ بھی ثابت ہوتی ہے لیکن افلاک کی سطحوں کا ملی ہوئی ہونا علم بیئت کے نزدیک اس قاعدہ کی بناء پر ہے کہ لافصل فی الفلکیات کہ فلکیات میں کوئی فاصلنہیں ہے اور وہ قاعدہ فلنی ہے قطعی دلیل نہیں رکھتا اور اس کے باوجود اہلی بیئت کی نظر میں وہ آسانوں کے درمیان خلاکی ضرورت ثابت نہیں ہوئی اس وجہ سے انہوں نے خلا ثابت نہیں کیا جبکہ شریعت والوں کو ہر دو آسانوں کے درمیان ملاکہ کی سیر اور گردش معلوم ہے انہوں نے خلا ثابت کیا۔

پس بی مجموعی خالفت باتی رہ گئی وہ جوفلکیات کے فاصلوں کے بیان میں ہندی دلائل سے ثابت ہوتا ہے کہ انہوں نے خلا کے بغیر دریافت کیا ہے یا وہ جوشری روایات کے ساتھ ابت ہے گرید خالفت لفظی ہے اس لیے کہ جس مقدار کو اہلی ہیئت نے آسان کے جم میں واخل رکھا ہے شایداس کے بعد حصے کو ارباب شرع کی نظر میں خلاسمجما گیا ہواور باتی کو جم پس اس طرح نزاع ختم ہوتا ہے۔

بہرحال آسان کی جسمانی اور روحانی قوت کا آدمی کی جسمانی اور روحانی قوت سے زیادہ ہونا اظہر من افتس ہے اور اگر آدمی کو اس بات سے فخر حاصل ہوا کہ میرا مزاج کمال اعتدال میں واقع ہوا کہ فس ناطقہ مجردہ کے تعلق کے قابل ہوا ہوں تو اس کا جواب یہ ہے کہ آسان بھی اعتدال و لطافت کے کمال میں واقع ہے۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے۔

فَسَوَّاهَا پِس اس آسان کومعتدل المرزاج بنایا ہے اور نغوی کالمدکواس کے اجرام کے ساتھ متعلق فرمایا جو کہ لطیف اور مجرد ہونے میں نغوس انسانیہ سے زیادہ با کمال ہے اس کے باوجود آسانوں کو قوی تا ٹیر بخش ہے کہ آفاب اور ستاروں کی شعاعوں کے ظہور کی وجہ ہے جہاں میں خوب جہان میں قوی گرمی نمودار کرتے ہیں اور ان شعاعوں کو چمپانے کی وجہ سے جہاں میں خوب شمندک پیدا کرتے ہیں اور بیتا ٹیردن رات کی آمد کے ہردورے میں محسوس ہوتی ہے۔ منشک پیدا کرتے ہیں اور اس آسان کی رات کو تاریک کردیا تا کہ سورج کی گرمی پیدا در اس آسان کی رات کو تاریک کردیا تا کہ سورج کی گرمی بیدا

کے گاؤ دم کی شکل والے سائے کا نام ہے لیکن جب وہ سابیۃ قاب کی شعاعی کی وجہ سے پیدا

ہوتا ہے اورا کی اُنٹی میں آ قاب کا غروب ہونا اس اُفق والوں پراس مخر وط سائے کے طلوع

ہوتا ہے اورا کی اُنٹی میں آ قاب کا غروب ہونا اس اُفق والوں پراس مخر وط سائے کے طلوع

ہونے کا موجب ہوتا ہے اور آ قاب کا طلوع ہونا اس مخر وط سائے کے غروب ہونے کا سبب

ہوتا ہے اور سورج کی حرکت آ سان کی حرکت کے تابع ہے ناچار رات کی نبعت آ سان کی

طرف کی گئی ہے اور بعض ارباب ہیئت نے آ سان کے تسویۃ کواس کے گیند نما ہونے پرمحول

کیا ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ گیند نما شکل آ فات آبول کرنے سے زیادہ وُ ور ہوتی ہے۔ بخلانی

ودسری شکلوں کے پس اس وجہ سے بھی آ سان کی خلقت آ دمی کی خلقت سے زیادہ مضبوط

ہوتی ہے اور بعض نے تسویہ کو آ سان میں درزیں اور شگاف نہ ہوجاتی ہے خول کیا ہے۔ بخلاف

آ دمی کے کہ اس میں بہت سے صام اور شگاف ہیں اور اس جہت سے آ فات کی زد میں

ہوتی ہے اور بعض نے تسویہ کو آ سان میں درزیں اور شگاف ہوجاتی ہے غذا کیں مشروبات

ز ہریں 'خوشبو کیں اور موذی جانور اس کے جم میں واخل ہوجاتی ہے غذا کیں مشروبات نربری' خوشبو کیں اور موذی جانور اس کے جم میں واخل ہوجاتی ہے نا غذا کیں مشروبات نہیں۔ نہیں۔ ایک مخوط ہیں۔

بخلاف آ سان کے کہ ان آ فات سے بالکل محفوظ ہیں۔

وَأَخُوبَ مَ ضُعْهَا اوراً سان كى روشى نكالى جس سے كدا فالب مراد ہاور چاشت كے وقت كا ذكراس ليے فرمايا كہ وہ وقت دن كے اجزا ميں سے نور اور روشى ميں سب سے زيادہ كالى ہاور آ فاب كى شعاع ميں جہان كوكرم كرنے كے ليے انتهائى محسوس ہونے والى تاثير ہوتى ہاور تمام عناصر اس كى شعاع سے گرم ہوتے ہيں۔ خصوصاً زمين جوكہ كافت تاثير ہوتى ہاور جب شب وروز ميں اور خشكى كى وجہ سے تادير اس قبول كى كئى كيفيت كو محفوظ ركمتى ہاور جب شب وروز ميں اور خشكى كى وجہ سے تادير اس قبول كى كئى كيفيت كو محفوظ ركمتى ہاور جب شب وروز مين آسان كومردى اور گرى پنجى اور آسان ان كيفيتوں كے قابل نہ تھا، ناچاران ووٹوں كوز مين نے قبول كرليا اور وہ مستحد ہوگئى اور آسان ان كيفيتوں كے قابل نہ تھا، ناچاران ووٹوں كوز مين نے قبول كرليا اور وہ مستحد ہوگئى اور آسان ان كيفيتوں كے قابل نہ تھا، ناچار ان ووٹوں كوز مين

تول کرنے کے لائق ہو چکے تھے آ فاب کی شعاع کی گرمی پہنچانے کی وجہ سے بہاؤ اختیار کر کے زمین سے باہر آئیں اور جب پانی اور مٹی ایک دوسرے سے ل مجے اور موسم بہار اور موسم گر ماکی حرارت نے ان میں اثر کیا پس سبزہ باہر نکل آیا جبیبا کے فرمایا

وَهَدُعْهَا اوراس زمین کا چراگاہ نکالا کو یااس تدبیر سے پہلے زمین خرابہ پڑی تھی اب اسے ایک باغ کی شکل میں ترتیب دی گئی کہ جہاں پانی بھی جاری ہوا اور شم شم کا سبزہ بھی نمودار ہوا اور اس لیے کہ پانی کا مادہ زمین میں محفوظ ہوتا ہے۔ایک اور تدبیر فرمائی گئی کہ

والجبال آرساها اور بہاڑوں کی زمین پر بطور انگر رکھا' تا کہ جو بخارات زمین کے اعرام کے بھوئے ہونے کی وجہ سے باہر آیا چاہتے ہیں' بہاڑ کی جسمانی کثافت کی وجہ سے باہر تہ آیا جاہر نہ آ سکیں' ناچار وہ منعکس ہو کر پائی ہو جاتے ہیں اور ان سوراخوں میں سے جو کہ ان بہاڑوں میں ہوتے ہیں' چشے اور نہرکی شکل میں جاری ہوتے ہیں۔ نیز وہ پائی جو کہ آسان کی طرف سے نازل ہوتا ہے' بہاڑک تختی کی وجہ سے زمین اسے جذب نہ کرے اور بہاڑک قلعوں میں جمع رہاور آ ہتہ آ ہتہ نشیمی علاقوں کی طرف جاری ہوای لیے نہریں اور چشے بہاڑوں سے جاری ہوت ہیں اور قرآن مجد میں جگہ جگہ جشتے اور نہر کے ذکر کے ساتھ بہاڑ کا بھی ذکر آیا ہے اور یہ ساری تدابیراس لیے فرما کیں کہ

مَتَاعًالَكُمْ وَلِانْعَامِكُمْ تَاكُمْ بِينَ اور تبهارے چار پایوں کو فائدہ ہو۔ پس تبہاری بناء اور موری کی فائدہ ہو۔ پس تبہاری بناء اور موزی سب کی سب آسان کے ساتھ مربوط ہے اور تبہاری حیات سے وابستہ ہے تم خود کو ضلقت میں اس سے زیادہ کیے گمان کر سکتے ہو۔

زمن اورآ سان میں ہے کس کی پیدائش پہلے ہے؟

یہاں جانا چاہیے کہ دوسری روایات میں جو کہ سورۃ بقرہ اور سورۃ فصلت میں واقع مولی جی زمین کی خلقت کو آسان کی خلقت سے پہلے بیان فر مایا گیا ہے بلکہ زمین کے اوپر پہاڑوں کا کھڑا کرنا اور زمین میں رزق اُگا کر برکت ڈالنا بھی سورہ فصلت میں آسان کی خلقت پرمقدم ہے اور وہ جوصا حب کشاف اور دوسرے مفسرین نے کہا ہے کہ زمین کے جسم کی خلقت آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے اسلام کے خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے میں کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسیج کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسید کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسید کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسید کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسید کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے اور زمین کو پھیلانا اور وسید کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے دور زمین کو پھیلانا اور وسید کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے دور زمین کو پھیلانا کرنا آسان کی خلقت سے پہلے ہے دور نمین کرنا آسان کی خلاقت سے پھیلانا کرنا ہے دور نمین کرنا آسان کرنا آسان کی خلاقت سے پھیلانا کرنا آسان کرنا ہے دور نمین کرنا آسان کی خلاقت سے پھیلانا کرنا ہے دور نمین کرنا آسان کی کرنا آسان کی کرنا آسان کرنا ہے دور کرنا ہے

کے بعد ہے تو یہ درست نہیں ہے اس لیے کہ سورہ فصلت میں زمین اور اس میں جو کھے ہے سب کی خلقت کو آسان کی خلقت سے پہلے رکھا گیا ہے اور سورہ بقرہ میں بھی خَلَق اکْکُم مَانی الْدُرْضِ جَویدُها تُمَّ اسْتَوٰی اِلَی السّبَاءِ کے الفاظ زمین کی ساری مخلوقات کے آسان کو درست کرنے سے پہلے ہونے پر دلالت کرتے ہیں اس لیے علماء کی ایک جماعت اس طرف می ہے کہ آسان کی خلقت زمین پر مقدم ہے لیکن آسان کو درست کرنا زمین کے بعد ہے لیکن اس جماعت سے اس سورہ میں غفلت واقع ہوئی ہے اس لیے کہ یہاں فَسَوْهَا وَاَخْدَ جَ ضُعْها فرمایا گیا ہے اس کے بعد ارشاد ہوا کہ وَالْاَدْضَ بَعْدَ وَالْكَ دُحَاها

پی تحقیق یہ ہے کہ زیمن کے دحوے مراد جو کہ آسان درست کرنے کے بعد ہے انی الارض کی تفاء وا بجاد ہے اور زیمن کو باغ کی صورت میں ترتیب دیا گیا جبہ زیمن کے اعر کی چیز وں پہاڑ سبز یوں اور رزق کی خلقت سے مراد جو کہ سورہ فصلت اور سورہ بقرہ میں آسان کو درست کرنے سے پہلے ہے ان کی تقدیر اور انداز سے کا مرتبہ ہے نہ کہ بالفعل ایجاد ورنہ بالکل فلا ہر ہے کہ معد نیات اور نباتات بلکہ فضا کی ساری کا نئات کا ہونا آسانی شعاعوں اور ان بالک فلا ہر ہے کہ معد نیات اور نباتات بلکہ فضا کی ساری کا نئات کا ہونا آسانی شعاعوں اور ان شعاعوں کے مختلف اطوار پر موقوف ہے جو کہ آسان کی حرکت کے ساتھ مر بوط ہے۔ اور ابعض مفرین نے کہا ہے کہ ان آیات میں ٹھ بعد کہ ذولا تی ترتیب کے لیے نہیں اور بعض مفرین نے کہا ہے کہ ان آیات میں ٹھ بعد کہ ذولا تو رہے کہ بے پناہ عزایت کی بناء پر ذکر میں پہلی کی رعایت نہیں کرتے اس شخص کی طرح جو اپنے قلام سے کہ کیا میں نے تجھے یہ یہ یہ یہ بیا مالک کے ہاتھ سے تجا ہے لا ولئی جو کہ میں نے تجھے پہلے مالک کے ہاتھ سے تجا ہے لا ولئی جو کہ میں نے تجھے پہلے مالک کے ہاتھ سے تجا ہے لا ولئی جو کہ تھے برطلم کرتا تھا؟

بلکدان میں سے بعض مفسرین نے کہا ہے کہ لفظ بعد یہاں مرتبے میں بعد کے لیے ہے فقہ کان میں الّذیدن المنو الله کردن چیٹرانے اور دوسری مالی عبادات کے بعد فرمایا گیا ہے اور زمین کا پھیلانا آ ومیوں کے حق میں تمام آسانی نعتوں سے بالاتر ہے اور حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما ہے منقول ہے کہ بعدد الک یہاں مع ذالک کے معنوں میں حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما ہے منقول ہے کہ بعدد الک یہاں مع ذالک کے معنوں میں

ہے جیسا کہ آیدہ عُتُلِ بَعْدَ ذَالِكَ ذَنِیْدِ مِن ہے۔اور حضرت حسن بھری رضی اللہ عنہ سے منقول ہے کہ پہلے پہل حق تعالی نے زمین کو بہت چھوٹا سا پیدا فر مایا اوراس میں پہاڑوں کی رکیس پیدا فر مایا اوران رگوں میں ایسی برکت وی جس کی وجہ سے وہ پانی کو اپنی طرف کھینچی جی اور چھے جاری ہوتے جی اور روزیوں کا اندازہ مقرد کر کے پھر آسان کی طرف توجہ فر مائی اور آسان دھوئیں کی مائند تھا اور اسے سات آسان بنایا پھر زمین کو پھیلایا اور جس مقدار میں کہ ہے بنایا اور زمین کی خلقت کی ابتدا کعبہ معظمہ میں تھی وہیں سے فراخ ہوئی اور ابی لیاس معزز مقام کے لیے دوسری جگدار شاو فرمایا ہے کہ إِنَّ اَوَّلَ بَیْتِ وَہُوٰ عَالَیْ اَمْلُ اِللّٰ اِللّٰ اِللّٰ اِللّٰہ اللّٰ اللّٰ اِللّٰ اللّٰ اِللّٰہ اللّٰ اللّٰہ کے کہ إِنَّ اَوَّلَ بَیْتِ وَہُوٰ عَ لِلنّاسِ اور شہر کہ کوائی وجہ سے ام القری کہتے ہیں۔واللہ تعالی اعلم

نیز جانا چاہیے کہ ان تعتوں کے شار میں بعض مقامات پر حرف عطف لایا گیا ہے اور
بعض مقامات پر حذف کیا گیا ہے اور اس کے نکتے کو دریافت کرنے کا قاعدہ یہ ہے کہ جہال
گزشتہ نعت اجمالی طور پر بیان کی گئی ہے اور اس کی تفصیل بیان کرنا مقصود ہے تو وہاں سے
حرف عطف کو حذف کر دیا گیا ہے اس لیے کہ مجمل اور مفصل دونوں باہم متحد ہیں' ان کے
درمیان حرف عطف کی مخبائش ممکن نہیں ہے جسے والڈرخس بعد ذالِك دَحَاها آخر بَح
مِنْهَا مَاءً هَا وَمَرْعَاها اور جسے دَفَعَ مَنْدُها فَسَوْها اور جہال گزشتہ نعت کے بیان
سے فارغ ہوکر دوسری نعت کا بیان مقصود ہو حرف عطف لایا جمیا کہ باتی آیات
میں خکورے۔

اور جب کفار کے ان شبہات کو دُور کرنے سے فراغت ہوئی جو کہ وہ اخروی زندگی کے بارے میں بیان کرتے تھے اور جو بات کہ نیکوں اور ٹروں کے حالات کی وضاحت اور دونوں گروہوں کے امتیاز کے متعلق مقصود تھی اس کا بیان بجائے خود ادھورا رہ گیا تھا پھراس مقصد کو پورا کرنے کی طرف رجوع فرمایا جارہا ہے کہ اس روز کی دل جو کہ دو بارہ زندگی اور نخر صور سننے کی وجہ سے بے چین اور بے قرار ہو جا کیں مین ان کی بے چین کا بتیجہ بھی ظاہر ہوگا اور جس مصیبت سے وہ ڈرتے تھے واقع ہونے کی صورت اختیار کرے گی۔

فَاذَا جَآءَ ت الطَّآمَةِ الْكُبُراى تورادفه ك آن كى وجهت لوگ ب قرار اور ب

چین ہوجا کیں مے اور ہر کسی پراپ حال کا اندیشہ غالب ہوگا کہ آیا ہمارے ساتھ آج کے دن یہاں اور اس زندگی میں کس طرح پیش آئیں مے اور کیا سلوک کیا جائے گا تو جب دو سرا حادث آئے جو کہ ہر حادث ہے سے بڑا اور غالب ہے اور وہ جزا دیے' اعمال ناموں' گواہوں' ارواح اور فرشتوں کے حاضر ہونے' اس مؤقف کے قریب دوزخ کو لانے اور مجرموں کی بوچھ جھاور ڈانٹ ڈبٹ کے لیے قہرالی کی جنل سے کنا ہے۔

اور لفظ طامہ طم سے لیا گیا ہے جس کا معنی غلبہ اور بلندی ہے۔ مثال بیان کرتے ہوئے کہا جاتا ہے کہ جدی الوادی فطعہ علی القدی یعنی جب ندی جاری ہوتی ہے پس چھوٹے پانی پر غالب آ جاتی ہے اور کبریٰ اس حادثے کے غلبہ اور بلندی کی تاکید درتاکید ہے اور اس شرط کی جزاجو کہ حرف اذاکا مدول ہے فَاهَاهَنْ طَعْی کے الفاظ اپنے معطوف ہوگا اور سمیت ہیں اور چونکہ اصل میں یہ حادثہ نوع انسان کو جزا دینے کے لیے واقع ہوگا اور آسانوں کو بچاڑ نا' زمین کا بلنا اور دوسرے حادثے تو صرف اس کی تمہید وآ غاز کے طور پر آسانوں کو بچاڑ نا' زمین کا بلنا اور دوسرے حادثے تو صرف اس کی تمہید وآ غاز کے طور پر آسانوں کو بچاڑ نا' در مین کا بلنا اور دوسرے حادثے تو صرف اس کی تمہید وآ غاز کے طور پر آنا چاراس حادث کا دور کے مادہ کے مادہ کے ساتھ کی تا ہا کہ کا میں موگا گر

یو مرکز یک کو الانسان ماسعی اس دن کدآ دی وہ سب کھے یاد کرے گا جواس نے دنیا میں کوشش اور تلاش کے ساتھ کیا ہوگا۔ گویا اس نے وہ کام کر کے بھلا دیا تھا جس کی جزا نہ دیکھی اور اس کا بھل نہ چکھا اب جبکہ اس کی جزا کا مشاہدہ کرے گا تو ان تمام کاموں کو یاو نہ دیکھی اور جو بھھا اب جبکہ اس کی جزا کا مشاہدہ کرے گا تو ان تمام کاموں کو یاو کرے گا ۔ نیز اپنے اعمال کو اعمال ناموں میں جمع کیا ہوا اور لکھا ہوا دیکھے گا اور جو بھھاس کی توجہ سے نکل گیا تھا بھر اس کے احساس و خیال میں فلکی توجہ سے نکل گیا تھا بھر اس کے احساس میں موجود ہوگا اور اس کے احساس و خیال میں فلکی تو تول کے سرایت کرنے کی وجہ سے ان اعمال کوشکلوں میں دیکھے گا اور آسان کے زائل اور زمین کے برابر ہونے کی وجہ سے او بر نیچے کے عالم مثال کودیکھے گا۔

وَبُوّذَتِ الْبَحَوِحِيْدِ اورجَهُمُ آشكارااور ظاہر كردى جائے گی۔ فِسَمَنْ يَسُوسى ہرو يكھنے كے ليے يَعْنَ جَهُم كود يكھنے مِس اس وقت سب لوگ برابر ہوں كے اور جيسا كردنيا مِس انبياء ولياء اور عارفين دوزخ كود يكھنے مِن اورعوام نہيں د كھنے اس جہان مِن يہ فرق نہيں ہوگا۔ اولياء اور عارفين دوزخ كود يكھنے مِن اورعوام نہيں د كھنے اس جہان مِن يہ فرق نہيں ہوگا۔ پس لمن يرئ كے الفاظ زيادہ لانا ظہور كے عام ہونے كو بيان كرنے كے ليے ہے جس طرح

کہ کہا جاتا ہے قد بین الصبح لذی عینین لین صبح ہراس مخص کے لیے آشکارا ہوگئ جودو آنکھیں رکھتا ہے۔

اورا گرچہ بیرحادثہ تمام الملِ محشر کو بے حواس کر دے گا اور قبر اللی کے آثار دیکھنے کی وجہ ہے کہ دورزخ کی صورت میں ظاہر ہوگا' سب شریک ہوں سے کیکن اس غضب کا اثر ہر کسی کونیں ہوگا بلکہ اس وقت لوگوں کے دوگروہ ہوجا کیں گے۔

فَاَمَّامَنَ طَغَی توجس نے دنیا ہیں سرکٹی کی تھی اور خدا تعالی کی مقرر کردہ حد کوتو ڈا تھا اور اس سرکٹی اور حد ہے گزرنے کی زیادہ تر وجہ دنیا کی محبت ہے اور اس لیے حدیث شریف میں وار دہوا حب الدنیا راس کل خطیشہ اور بیسرکش دنیا کی محبت کے مرتبے ہے بھی آگےنگل گیا تھا۔

وَاتَّكَ الْحَيْوةَ الدُّنْيَا اوراس نے دنیوی زندگی اوراس کی لذت کورضائے خداوندی اور ثواب پرتر جے دے رکھی تھی۔

فَانَ الْبَحِومِيْمَ هِي الْمَاوِى لِي جَهِم وَى السكالَ جَلَمَ الله كَالُق جُله إلى لَي كه وه قهرالهى كامظهر إوراس كے دربارے وُورى اور بِتعلق ہونے كى شكل إوراس شخص نے چونكه غير خداكو جوكه دنياتمى خدا تعالى پرترج دى۔ خدا تعالى كے دربارے بہت وُور ہوگيا اور اس كاجہم كود يكمنا ايبا جيسے چوركا جلاويا مجانى كود يكمنا۔

وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ اور دنیا میں جس نے خداتعالی کے دربار میں کھڑے ہوئے سے خوف محسوس کیا اور جان کیا کہ جھے اس کے دربار میں کھڑے ہونا ہے اس کی مقرر کردہ حدول سے آ کے نیس گزرنا چاہیے اور سرکشی اختیار نہیں کرنا چاہیے ورنہ وہاں روسیا ہی نصیب ہوگی اور دندی زندگی کو جو کہ ایک سنر سے زیادہ نہیں ہے اللہ تعالیٰ کی بندیدہ اداؤں اور آخرت کے ثواب پرتر جے نہیں وینا چاہیے کہ آخر واسطدای سے پڑے گا۔

وَنَهَى النَّفُسَ عَنِ الْهَوى اورائينِ فَسَ كُونَا جَائِز خُوامِشَات سے باز ركھا كه دنيا كو ترجي وينے كازيادہ ترباعث يمي خوامشات ہوتی ہيں۔

> فَانَ الْجَنَّهُ هِيَ الْمَأْوَى توبِ ثَلَكَ جنت بَى اس كَالاَكُلَ مَعَام بِهِـ marfat.com

اور شیخ ابو بکر وراق رحمة الله علیه نے فرمایا ہے کہ الله تعالیٰ نے دنیاو آخرت میں ناجائز خواہش سے زیادہ نقصان دہ کوئی چیز پیدائبیں فرمائی اور اس لیے اہلِ طریقت کے زدیک آ دمی اس وقت بالغ ہوتا ہے جب نفس کی خواہش سے چھٹکارا پائے جیسا کہ عرف عام میں اس وقت بالغ ہوتا ہے جب کھیل کود سے خلاصی پائے۔ بیت

الله تعالیٰ کے متوالے کے بغیر لوگ بیج ہیں

خواہش سے خلاصی یانے والے کے بغیر کوئی بالغ نہیں ہے۔

پس اس کا جہنم کو دیکھنا ایسے ہے جیسے تماشائی جلاد اور پھانسی کو دیکھتے ہیں کہ فرحت و مسرت کا یاعث ہوگا۔

دوبهائيول مصعب اورعامر كاواقعه

اور اگرچہ یہاں قیامت میں آ دمیوں کے دوگر وہوں کا حال بیان کرنامقصود ہے کہ ان میں سے ہرایک کا انجام علیحدہ اور جدا ہے لیکن مغسرین نے کہاہے کہ ان دونوں اوصاف میں قریش کے دو حقیق بھائیوں ہے حال کی طرف اشارہ کیا حمیا ہے کہ دونوں نے اپنے باپ کی طرف سے بہت سامال پایا تھا اور ان کی ماں ان سے بہت محبت کرتی تھی اور انہیں اچھا کھلانے اور اچھا پہنانے میں بہت کوشش کرتی تھی ان میں ایک جس کا نام مصعب بن عمیر تفا حضور ملی الله علیه وسلم کی محبت میں حاضر ہوتا تھا اور خوف خدا کی وجہ سے و نیوی لذتوں سے پر ہیز کرتا تھا اور راتوں کو تبجد میں بے دار رہتا اور دن کوروز ہ رکھتا اور مرغن کھانا نہ کھاتا تا كم جوت غلبه ندكر __ آخر كار حضرت مصعب رضى الله عند في حضور ملى الله عليه وسلم ك فرمان برسب مال اسباب وولت وثروت چھوڑ کرایئے تھریارے جدائی اختیار کر کے غربت و تکلیف کے ساتھ مدینہ منورہ کو پہرت کی اور مدینہ عالیہ کے لوگوں کو تعلیم قر آن وسینے میں مصروف مومحة اور جنك احديج ون حضور ملى الله عليه وسلم كالمجعند انفاسه يورى ثابت قدى اور يامروى كے ساتھ ونيا سے رخصت ہوئے اور شہادت يائى يبال تك كدان كے كفن کے لیے ایک لنگی کے سوا کچھ میسر ند آیا ایف ہمی ان کے قدے چھوٹی تھی اگر آپ کا سر وْ هَا نِيعَ يَصْحَانُو سَرَكُولُ جَاتًا اور اگر سركو چيلياتے تو ياؤں نظيم ،وجائے ۔حضور صلی القد عليه وَ ملم

نے فرمایا کہ اس کیڑے کے ساتھ ان کا سر ڈھانپ دو اور پاؤں پرخوشبو دار ازخر نامی بوٹی ڈال دوای طرح کیا گیا۔

دوسراجس کا نام عامر بن عمیرتھا' عیش پرتی کرتا تھا' وہ تمام حرام چیزوں کا ارتکاب کرتا تھا اور ترک و نیا کے متعلق اپنے بھائی کے ساتھ ہمیشہ جھڑا کرتا تھا اور محبت دنیا کی وجہ سے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے دربار میں بھی نہیں جاتا تھا اور ایمان اور ایمان کے احکام کو بھی نہیں مانتا تھا یہاں تک کہ غزوہ بررکے دن کا فرول کے ہمراہ مارا گیا اور جہنم کا ایندھن بنا' اللہ تعالیٰ ہمیں کہ سے بچائے۔ آمین!

اور جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے کافروں کے سامنے قیامت کے حالات بیان فرمائے اور فرمایا کہ جہنم نافر مانوں سرکشوں اور دنیا طلب کرنے والوں کا ٹھکانہ ہے اور جنت خوف خدار کھنے والوں اور پر بیزگاروں کا مقام کفار نے پوچھنا شروع کر دیا کہ بیسب کچھ قیامت کے بعد ہوگا۔ آپ ہمیں بتا کی کہ قیامت کب ہوگی؟ اس کے آنے کا وقت کون سا ہے؟ اللہ تعالی نے انہیں اس بے مقعد سوال پر ڈانٹ پلائی اور ارشاد فرمایا کہ

یسٹنگونک عن السّاعة آب ہے قیامت آنے کے وفت کے متعلق سوال کرتے بس کہ

آیگان مُرْسُهَا اس کے برپاکرنے کا وقت کب ہوگا اور کب تحقق ہوگی حالانکہ ان کا بیسوال بالکل بے جا ہے اس لیے کہ آپ کا کام آنے والے حوادث کے اوقات بیان کرنا مہیں تاکہ وہ آپ سے اس قتم کے سوالات کریں۔ بیام نجومیوں کر مالوں جفر یوں فال و کھنے والوں اور کا ہنوں کا ہے آپ کا کام تو احکام اللی کی تبلیخ اور وقت مقرر کے بغیر اللہ تعالیٰ کے عذاب سے ڈرانا ہے۔

فِیْمَ آنْتَ مِنْ ذِکْرَاهَا آپ کواس کا وقت بیان کرنے سے کیا کام؟ اس لیے کہ انبیاء کیم السلام اور اولیاء اللہ بھی مستقبل کے واقعات کے اوقات بیان کرتے ہیں وہ صرف السائل اور اولیاء اللہ بھی مستقبل کے واقعات کے مطابق واقع ہوں تو لوگوں کو ان کی بیان کرتے ہیں کہ جب وہ واقعات ان اوقات کے مطابق واقع ہوں تو لوگوں کو ان کی نبوت اور ولایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور وہ ان سے راہ خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور ولایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور وہ ان سے راہ خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور دلایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور وہ ان سے راہ خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور دلایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور وہ ان سے داہ و خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور دلایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور دہ ان سے داہو خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور دلایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور دہ ان سے داہو خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور دلایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور دہ ان سے داہو خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور دلایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور دہ ان سے داہو خدا سیکھیں اور ہدایت کی نبوت اور دلایت کا اعتقاد نعیب ہو جائے اور دہ ان سے داہو خدا سیکھیں اور دہ ان سے دائو خدا سیکھیں اور دہ ان سے دبور دہ ان سے دائو خدا سیکھیں اور دہ ان سے دیت کی دور ان سے دیت کی دور ان سے در ان سیکھیں اور دہ ان سے در ان سیکھیں اور دہ ان سیکھیں ان سیکھیں ان دور دہ ان سیکھیں کی سیکھیں ان سیکھیں کی دور ان سیکھیں ان سیکھیں ان سیکھیں کی دور ان سیکھیں کی دور ان سیکھیں کی دور ان سیکھیں کی دور ان سیکھیں ان سیکھیں کی دور ان سیکھیں

، پائیں۔جیسا کہ ظاہر کے طبیب حضرات کہ بعض اوقات شخیص کے مقدے کے طور پر مستقبل میں مریض کے مزاج کی تبدیلی کا پہتہ دیتے ہیں اس لیے پہتہ دیتے ہیں کہ واقع ہونے والی چیز کے وقوع کے بعدان کی طب کے بارے لوگوں کا عقیدہ پختہ ہوجائے اور لوگ ان کے علاج سے فائدہ حاصل کریں ورنہ مستقبل کے واقعات کے اوقات کو بیان کرنا نبوت اور دلایت کی شرطوں میں سے نہیں ہے جسیا کہ معرفت احوال مریض کو پیشکی بیان کرنا طب کا کام کرنے کی شرائط میں سے نہیں۔

اور قیامت کے وقت کو بیان کرنے کا فاکدہ بھی نہیں ہے اس لیے کہ قیامت واقع ہونے کے بعد اگر کسی کو انبیا علیم السلام کی نبوت کا اعتقاد حاصل ہو جائے تو کیا فاکدہ؟ کہ ایمان لانے کا وقت تو صائع ہو گیا اور قیامت واقع ہونے سے پہلے اس بیان کردہ وقت کی مطابقت کومعلوم نہیں کیا جاسکتا۔ پس قیامت کے وقت کا ذکر نبوت کی ذمہ داری سے بالکل مناسبت نبیں رکھتا۔

اوراس کے باوجود پیلم خصوصیت کے ساتھ ایا نہیں کہ انسانی حساس کا احاطہ کر سکے

اس لیے کہ تمام حوادث جو کہ دنیا میں واقع ہوتے ہیں ان کے اسباب بھی دنیا میں موجود

ہیں۔ پس کی وقت ان حوادث کے اسباب کے جمع ہونے اور ان حوادث کی رکاوٹیں دُور

ہونے ہے دلیل لے کران کے اوقات کو معین کیا جا سکتا ہے۔ بخلاف اس عام حادثے کے

جو کہ اس جہان کے تمام ارکان پر اثر ڈالے گا اور مسببات کی طرح اسباب درہم ہو

جا کیں گے۔ پس اس کا ایک ایسا سب ہے جو کہ اس جہان کے اسباب سے جو اگانہ ہے۔

انسان کی سوچ کی حدو ہاں تک نہیں ای لیے اس جہان کے متعلق جس سے بھی سوال کیا جاتا

ہے اسے بالواسط یا بلاواسط ما الی کے حوالے کر دیتا ہے ای لیے فرمایا گیا

وقت جب کہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے بیعلم عنایت ہواور وہ واقع نہیں ہے۔ (حضرت مفسر علام نے بیعض کا قول ذکر فر مایا ہے جبکہ اکابر اہل سنت اس طرف مجے ہیں کہ حضور علیہ السلام کو قیامت کے وقت کاعلم عطا فر مایا گیا۔ و کیھے تغییر صاوی بہی آیت۔ اور اس کی بہترین تحقیق کے لیے دیکھیں الدولة المکیة از شیخ العرب مرشد العجم اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بہترین تحقیق کے لیے دیکھیں الدولة المکیة از شیخ العرب مرشد العجم اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بریلوی رحمة الله علیہ اور جاء الحق حصہ اوّل از حکیم الامت مولا نامفتی احمد یار خاں صاحب سمجراتی رحمة الله علیہ)

اِنَّهَا آنَتَ مُنْذِرٌ مَّنَ يَنْحُشَاهَا آبِتُو قيامت سے ڈرنے والے کو ڈرانے والے یا۔

ایک شبه اوراس کا جواب

اور یہاں ایک شبہ ذکر کرتے ہیں کہ ڈرنے والے کو ڈرانے کا کیا معنی؟ اس کا جواب سے کہ علم اجمالی کی وجہ سے جو کہ ہر ذی عقل کو جزا دینے کے متعلق حاصل ہے وہ جانتا ہے کہ دنیا میں جزا دینا واقع نہیں ہوتا تو اس کے لیے کوئی اور جہان چاہیے۔ پس قیا مت سے خوف پیدا ہوجاتا ہے جبکہ انبیاء ومرسلین علیہم السلام کا ڈرانا اس جہان میں جزا دینے اور وہاں نقصان اور نقع دینے والی چیزوں کا تفصیلی بیان ہے تو جو جزا دینے کا اجمالی علم نہیں رکھتا' اسے انبیاء ومرسلین علیہم السلام کے ڈرانے سے کوئی فائدہ نہیں۔

اوربعض مغرین نے کہا ہے کہ مئن یک خطی سے مراد وہ خض ہے جس میں خوف
آخرت کی استعداد کی قوت موجود ہے نہ یہ کہ وہ بالفعل ڈرتا ہے اور جب انبیاء علیم السلام
کے ڈرانے سے خوف کی استعداد رکھنے والوں کے سواکوئی فاکدہ حاصل نہیں کرتا تو گو یا انبیاء علیم السلام کے لیے دوسروں کو ڈرانے کا منصب ہے ہی نہیں۔ بہرحال ڈرنے والے کو اور خرانے والے کو اور ڈرانے والے کو اور ڈرانے والے کو اس چیز کا وقت خرانے والے کو اس چیز کا وقت کے متعلق سوال کرنا جس سے ڈرنا چاہیے یا اس چیز کا وقت بیان کرنا بالکل درکارنہیں۔ جیسا کہ کی مسافر کو ڈاکوؤں کا خطرہ ہوتا ہے یا کوئی دوسرا اسے ڈاکوؤل سے ڈرائے اور وہ پوچھے کہ وہ جھے پر کب تملہ کریں گے جب تک تو وہ وقت بیان نہ کرے ہیں یقین نہیں کروں گا۔

اور ظاہر ہے کہ اگر قیامت کے وقت کے متعلق کا فروں کا سوال اس بناء پر تھا کہ وقت بیان کردیں گے تو ہم ایمان لے آئیں گے تو صریحاً ہے جا ہے اس لیے کہ وقت کا بیان اس صورت میں ایمان کا موجب ہوتا ہے کہ وہ واقعہ ایس وقت کے مطابق رونما ہواور اس سے پہلے وقت کو بیان کرنا اور نہ کرنا برابر ہے اور قیامت کے وقوع کے بعد ایمان لانے کا کوئی اعتبار نہیں ہے۔

اوراگراس بناہ پر ہے کہ اس کے دُور اور قریب ہونے کو معلوم کریں اور دُور ہونے کی صورت میں مطمئن رہیں اور قریب ہونے کی صورت میں اس کی فکر کریں تو بہت ہے ہے فائدہ ہے اس لیے کہ قیامت کے وقت انہیں بیطویل گزری ہوئی مدت بہت تھوڑی معلوم ہوگ۔

ایکا تھٹھ یو ہر یکر دُنھا کویا کہ وہ جس دن قیامت کے آثار دیکھیں گے تو جان لیں کے کہ دنیا میں ان کے ظہرنے کی مدت بہت کم تھی اور پورا ایک دن بھی نہیں ہوا تھا بلکہ یوں گان کریں کے کہ وہ

لَدْ يَلْبَغُوا ونيااور برزخ مِن نيس عُبرے بيں۔ إِلَّا عَدِيدَةٌ مُر بَيْطِ پِبر كَى مقدار جوكہ سورج كے ذھلنے سے لے كراس كے غروب تك ہوتا ہے۔

آؤٹ ہے اور آگر اور کی جاشت کے وقت تک جو کے طلوع آ قاب سے لے کر زوال کے قریب تک ہوتا ہے اور کی جاست کے وقت میں انہیں تر دواس دجہ سے ہوگا کہ ان کی عرمشقت اور تکلیف میں گزری تھی اور برزخ میں بھی عذاب میں رہاس لیے اپنے باتی رہنے کی مدت کو وقیعلے پہر کی مقدار تک سمجھیں کے کہ وہ وقت تعکاوث اور شکتی کا وقت ہے اور اگر ان کی عرراحت میں گزری تھی اور برزخ میں بھی انہیں اتنا عذاب نہ ہوا تو اپنے باتی رہنے کا انداز و جاشت تک سمجھیں گے۔

اور بعض علاء نے کہا ہے کہ دن اور رات کی گردش اکثر لوگوں جیسے ہنود اور ہوناغوں وغیرہم کے زو کیک دو پہر سے ہے اور شریعت میں نجر کی ابتدا سے ہے اور جب المل محشر کو منظور ہوگا کہ اپنے باتی رہنے کی مدت کوآ و معے دن سے کم بیان کریں تو کہیں گے کہ اگر دن کی ابتدا دو پہر سے ہے تو ہم نہیں تفہرے کر ویسلے پہر کی مقدار اور اگر اس کی ابتدا نجر کے استان میں ابتدا نجر کے استان کر سے ہے تو ہم نہیں تفہرے کر ویسلے پہر کی مقدار اور اگر اس کی ابتدا نجر کے استان کو استان کی ابتدا نجر کے استان کی ابتدا نو پہر سے ہے تو ہم نہیں تفہرے کر ویسلے پہر کی مقدار اور اگر اس کی ابتدا نجر کے استان کی ابتدا نے کہ استان کی ابتدا نو پہر سے ہے تو ہم نہیں تفہرے کر ویسلے پہر کی مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے سے تو ہم نہیں تھیں مقدار کی ابتدا نو پر سے سے تو ہم نہیں تھیں تھیں ہوگی کے دور سے میں مقدار اور اگر اس کی ابتدا نو پر سے سے تو ہم نہیں تھی تو ہم نو پر سے سے تو ہم نوبیر سے تو

شروع ہے ہے تو ہم نہیں عظمرے مرایک چاشت کے وقت تک اور پچھلے پہر کو چاشت سے
پہلے ذکر کرنے کا راز بہی ہے لیکن چاشت کو پچھلے پہر کی طرف منسوب کرنا اس لیے ہے کہ
پہ چلے کہ دنیا کی مجموعی مت ان کے کمان میں ایک دن کے مشل ہوگی جیسا کہ دوسرے مقام
پران کی زبان میں ارشاو فر مایا ہے کہ اِن آبفتُم اِلّا یَوْ مّا اور وہ دنیا میں اپنی نوع کے باتی
رہنے کا زبانہ ای دن کی ایک ساعت کی طرح سمجھیں ۔ گے نہ یہ کہ پچھلا پہر ایک دن کا ہواور
چاشت دوسرے دن کی اور اگر عشیة وضی فر مایا جاتا اور نجی کی اضافت عشیہ کی طرف نہ کی
جاتی تو ایک دن کا متحد ہونا سمجھ نہیں آتا۔ احتمال ہے کہ آیت کے معنی ایوں ہو اِللَا عَشِیةً
اَوْضُحَهَا اَیْضًا مع العشیمة عاصل معنی ہے کہ وہ دنیا میں اپنے تھمرنے کی مت میں تر ود
کریں گے کہ کیا آ دھا دن تھا یا پورا دن جیسا کہ ان کی زبان سے دوسرے مقام پرنقل فر مایا
گیا ہے کہ آبشنا یو ما او بُقض یوم فاسٹیل الْقادِیْنَ واللّٰدِتعالیٰ اعلم

ُسورۂ عبس

کی ہے اس کی بیالیس (۴۲) آیات ہیں ایک سوتمیں (۱۳۰) کلمات اور پانسو پینیتیس (۵۳۵)حروف ہیں۔

سورة النازعات كے ساتھ رابطے كى وجه .

وہال حضرت موی علیہ السلام آرزو کے طریقے سے فرماتے تھے کہ ھَلْ اَلَٰہُ اِلٰی اَنْ تَذَکّی جبکہ یہاں اللہ تعالی امید عطا فرما تا ہے کہ لعلہ یزکی اس بادشاہ کو سرکشی کی وصف کے ساتھ ذکر کیا جبکہ اس گدا کو خوف و خشیت کے ساتھ سوصوف فرمایا۔ وہ ظالم بادشاہ اپ مقام پر بیشا رہا اور رسول علیہ السلام کو دہاں جانے کا تھم ہوا کہ اِذْھَبْ اِلٰی فِرْ عَوْنَ جبکہ یہاں وہ گدا خودووڑا آتا ہے کہ اُھا ھَن جَاءَ کَ یَسْعٰی تاکہ معلوم ہوکہ انبیاء کیم السلام کا کاروبار سب کا سب تھم وقضائے خداوندی کے تحت جاری ہونے بیشی ہوتا ہے علی کرتے ہیں اگر اغنیاء اور سرکشوں کے پاس جانے اور اان کی چاہوی کرنے کا تھم ملک ہوتا ہے جال ہو جبر وجر جبر اور اگر گداؤں اور عاجزوں کی تعظیم و تو قیر کا تھم ملک ہوتے ہیں نہ قبول کرتے ہیں اور اگر گداؤں اور عاجزوں کی تعظیم و تو قیر کا تھم ملک ہوتے ہیں نہ خوال ہوں کے خبر اور سرکشی کی وجہ سے دل تھی ہوتے ہیں۔ فرعون کی حالت دیکھیں کہ اس کی مصنت سے موصوف کیا گیا کہ اُنگہ آذبکہ یسٹی ہوتے ہیں۔ فرعون کی حالت دیکھیں کہ اس کے اور اس نابینا گدا کو دیکھیں کہ گیے آرہا ہے کہ جَاءَ کئے یہ نے قوق کی طرف منہ کے دوڑا اور اس نابینا گدا کو دیکھیں کہ کیے آرہا ہے کہ جَاءَ کئے یہ نے قیال کو کیکھیں کہ کیے آرہا ہے کہ جَاءَ کئے یہ نی کی خوق کی طرف منہ کے دوڑا ا

تيسرى وجه يه به كدان دونول سورتول من قيامت كى بولنا كيال اور يختيال ايك بى المداز من فركور موسم وبال فَاذَا جَآءَ تِ الطَّامَةُ الْكُبُرى يَوْمَ يَعَذَكُو الْإِنْسَانُ مَا الْمُدَّا مِنْ الْمُدَّا مِنْ الْمُدَّا مِنْ الْمُدَّا مِنْ الْمُدَّا مِنْ الْمُدِيهِ اللهُ فَرْ مَا يَا مُنْ الْمَدَّةُ مِنْ الْمُدِيهِ اللهُ فَرْ مَا يَا مُنْ اللهُ فَرْ مَا اللهُ فَرْ مَا اللهُ فَرْ مَا الْمَا مَا مِن اللهُ فَرْ مَا اللهُ فَرْ مَا اللهُ فَرْ مَا اللهُ اللهُ فَرْ مَا اللهُ اللهُ فَرْ مَا اللهُ اللهُ فَرْ مَا اللهُ اللهُ اللهُ فَرْ مَا اللهُ اللهُ

چوتی وجہ یہ ہے کہ معاش کی اصلاح 'آ دمی کی خلقت اور اس کے اصول میں اللہ تعالیٰ کی تغیر کا تعدید ہے کہ معاش کی اللہ تعالیٰ کی تغیر کی مناسبت رکھتی ہے اس سورة میں آخر بج مناقبا مناقبا مناقبا اللہ مناقبا کی خلقت کو بیان فرمایا گیا۔

ایک مقدمه کی تمهیداور محبوبان خدااور عام لوگوں کے درمیان فرق

اس سے پہلے کہ اس سورہ کا سبب نزول ذکر کیا جائے ایک مقدے کی تمہید ضروری مسلم است کے کہ تمہید ضروری مسلم است کے ا

ہے۔ پہلے تو یہ جانا چا ہے کہ مجوبانِ خدا کہ جنہیں ارشاد ہدایت کے کام کے لیے چنا گیا ہے اور عام لوگوں کے درمیان اوصاف بشریت اور صفات نفس میں بظاہر فرق نہیں ہوتا بلکہ فرق اس جہت ہے ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے مجوبوں کی تربیت خود فر ما تا ہے اور جہاں بھی جبلت نوگی کے نقاضے کی وجہ نفس کی صفات میں ہے کوئی صفت ظاہر ہوتی ہے اور کوئی حرکت سرز د ہوتی ہے جو کہ فور حق کے لیے جاب کا موجب ہوتو جلد تادیب و عماب کے ساتھ آگاہ کر دیا جاتا ہے جیسا کہ حضور صلی اللہ علیہ و ساتھ آگاہ کر دیا جاتا ہے اور اس کا تدارک کر دیا جاتا ہے جیسا کہ حضور صلی اللہ علیہ و سلم نے اس معنی کی طرف جاتا ہے کہ ادبنی دبی فاحسن تعلیمی تا کہ پہلے اشارہ فر مایا ہے کہ ادبنی دبی فاحسن تعلیمی تا کہ پہلے کو لازم ہے۔ اس کے بعد ان اخلاق کے ساتھ تحقق میسر ہوجو کہ مرتبہ بقاء کے تائع ہواور کولازم ہے۔ اس کے بعد ان اخلاق کے ساتھ تحقق میسر ہوجو کہ مرتبہ بقاء کے تائع ہواور اس تقامت اور تم کی عالت کہتے ہیں۔ پس اس قتم کے اعمال کا حضور صلی اللہ علیہ و سالہ بیا اللہ علیہ و سالہ ہوتا آپ کے منصب اور مرتبے کی عین دلیل ہے۔ صادر ہونا آپ کے منصب اور مرتبے کی عین دلیل ہے۔

جب یہ مقدمہ بیان ہوگیا تو جانا چاہیے کہ ایک دن حضور صلی اللہ علیہ وسلم مجدحرام میں تشریف فرما تھے آپ کے نزدیک قریش کے سردار اور رئیس جیے شیبہ کے بیٹے عتبداور ربعہ ابوجہل بن بشام حضرت عباس بن عبدالمطلب اور دوسرے عمائد بن بیٹے تھے اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم آئیس دین اسلام کی خوبیاں اور بت پرتی کی بُرائیاں سمجما رہے تھے اور بوری توجہ اور اہتمام کے ساتھ ان سے خطاب اور ہم کلامی میں معروف تے ای اثناء میں ایک نابیا جو کہ عبداللہ بن شریح بن مالک بن ربیعہ زہری تھے اور آئیس ابن اُم کمتوم بھی کہتے تھے اس بناء پر کہ کمتوم نابیغ کو کہتے ہیں ان کی ماں کو اُم کمتوم کا لقب دیا گیا تھا، حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے۔آپ ان کی ماں کو اُم کمتوم کا لقب دیا گیا تھا، حضور صلی اللہ اور معلوم کیا کہ یہ فحض نابینا ہے محفل کا رنگ معلوم نیس کرے گا ور دو ت اور بے موقع باتھ ہور ای باتھ ہور ای اور ہماری گفتگو جو کہ ان سرداروں کے ساتھ ہور ای باتھ ہور ای سے اور آئیس اسلام کی دعوت دی جارتی ہوئے تمام رہ جائے گی۔ یہاں تک کہ وہ نا بینا محفل کا مدر معلوم کیا کہ دو ت دی جارتی ہوگا اور نین کوت دی جارتی ہوگا اور ماری گفتگو جو کہ ان سرداروں کے ساتھ ہور ای سے اور آئیس اسلام کی دعوت دی جارتی ہوگا اور نین گوت دی جارتی ہوئے گی۔ یہاں تک کہ وہ نا بینا محفل کا سرد معلوم کیا کہ دو ت دی جارتی ہوئے گی۔ یہاں تک کہ وہ نا بینا محفل کا سرد معلوم کیا کہ میاں تھا کہ کہ وہ نا بینا محفل کا سرد کی کوت دی جارتی ہوگا کے دور آئیس اسلام کی دعوت دی جارتی ہوئی ایک کہ وہ نا بینا محفل کی دور آئیس اسلام کی دعوت دی جارتی ہوئی دور آئیس کی دور تا بینا محفول کی دور آئیس کی دور تا دور نا بینا محفول کی دور تا دیں کی دور تا بینا محفول کی دور تا بین

کے پس و پیش کو دیکھے بغیر حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے قریب آ کر بیٹھ میں اور عرض کی کہ مجھے قرآن پاک کی فلال سورة سکھا و بحیئے اور میرے حال پر توجہ فرما کیں کہ میں کسی ہاتھ کر آن پاک کی فلال سورة سکھا و بحیئے اور میرے حال پر توجہ فرما کیں کہ میں کسی ہاتھ کیڑنے والے کے بغیر بوچھ پوچھ کر آپ کی محفل تک پہنچا ہوں۔

حضور علیہ الصلوٰة والسلام نے ان سرداروں کی وجہ سے قدر مسکوت فر مایا اور ارشاد فرمایا که ظهرؤ وه نابینا صحابی ایک دو **گھڑی رُک کرایئے مقصد کی پھر ت**کرار کرنے لگے اور وہ جلدی کررے مخطے ان کی ان ناموافق حرکات کی وجہ سے جو کہ ان سرداروں کے نفرت کرنے اور تنگ دل ہونے کا موجب تعیں چیرہ مبارک پر کراہت کے آثار ظاہر ہوئے۔ آپ اس کی طرف سے توجہ پھیر کران سرداروں کی طرف متوجہ ہوئے ای ووران بیسورۃ نازل ہوئی اور اس معاملہ پرعماب نازل ہوا۔ مروی ہے کہ جب حضور صلی الله علیہ وسلم جرئیل علیہ السلام کی زبان سے بیآ یات سُن رہے منے چیرہ مبارک کا رنگ متغیر مور ہا تھا اور کافی خوف محسوں فرما ربے تھے۔ یہاں تک کہ کلاانہا تذکرہ کے الفاظ جرئیل علیہ السلام کی زبان سے سے خوش ہوئے اور چہرہ مبارک کا رنگ بحال ہوگیا۔معلوم ہوا کہ تعیمت کی بناء پر بیسب کچھالک عماب سے زیادہ جیس اور بیلطف ومبر بانی کے آثار سے ہے نہ کہ قبر اور ناراضگی ہے اس کے بعد حضور عليه الصلوة والسلام ان تابينا محاني رضى الله عنه كم محرجوكه مايوس موكر جا يج يخ تشریف کے گئے اور معذرت فرمائی اور انہیں پھراسینے دولت خانہ پر لائے اور ان کے لیے چا درمبارک بچهانی اورانبیس اس پر بشهایا اور جب بھی وہ آپ کی محفل میں حاضر ہوتے آپ ان كى تعظيم اور قدر افزائى فرمات اور ارشاد فرمات مرحبا بين عاتبنى فيد دبى مي اسے خوش آمدید کہتا ہوں جس کے بارے میں رب کریم نے جھے عماب فرمایا اور جہاں بھی اس نابینا محالی کو دیکھتے ور ماتے کہ اگر تنہیں کوئی ضرورت یا کام ہوتو کہواور دوسغروں کے موقع پرآپ اے اپی جکہ مدینہ عالیہ میں امام نماز کے طور پر چھوڑ کرتشریف لے محتے۔ اور حفرت انس بن ما لک رضی الله عندنے اس نابینا محابی رضی الله عندکے بارے میں ایک عجیب خبر روایت کی ہے کہ جنگ قادسیہ کے دن میں نے انہیں ویکھا کہ زرہ بہنے عربی محور مے پرسوار میں ان کے آئے سیاہ جھنڈا اپنی اس نابینائی کے باوجود کافروں کی marfat.com

مف پرحملہ کر رہے تھے۔ نیز مروی ہے کہ اس واقعہ کے بعد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کسی فقیر کو د کچھ کر منقبض نہ ہوتے اور نہ ہی کسی دولت مند کی دل جوئی فرماتے۔

مفسرين كااشكال

یہاں اس عمّاب کی وجہ میں مفسرین کوسخت اشکال ہے اس لیے کہ اس معالم میں حضور صلی الله علیہ وسلم نے کوئی ایسا کام نہیں کیا جو کہ قواعد شرعیہ کے خلاف ہو۔ آپ پر اس قدر عماب کیوں فرمایا گیا اس لیے کہ قاعدہ شرعی ہد ہے کہ عام تفع ' خاص تفع سے پہلے ہے تو حضور علیدالسلام نے سرداروں اور رئیسوں کواسلام کی طرف دعوت دینے کواس نا بینے صحابی کی تعلیم قرآن پراس وجہ سے مقدم فر مایا کہ ان لوگوں کے اسلام قبول کرنے میں پورے شہر مكه كے مسلمان ہونے كى تو تع تھى كيونكه الناس على دين ملوكھم جبكه ايك ناجينے كو قرآن پاک کی چندسورتوں کی تعلیم دینے سے خاص ای ناہیے کو فائدہ ہوتا اور بس۔ نیز اسلام کی دعوت تعلیم قرآن سے مقدم اور زیادہ اہم ہے اس لیے کدوہ اصل ہے اور بیفرع اور فقهاء كے نزد يك مطے شده بات ہے كدا كرايك مخص ايك موقع برآئے اور كے كد مجھے اسلام كى تلقين كيجيے اور دومرا آ دمى اس وقت تعليم قرآن كى طلب كرے يا وعظ ونفيحت جا ہے تو اسلام كى تلقين كويملے ركعا جائے كيونكهاس كى تاخير بيس دوسرے امور بيس تاخير كى نسبت زياده برُا نقصان ہے۔ کافر کی حالت اپی روحانی مرض میں جو کہ کغر ہے جتلا ہونے میں سرسام كے مریض كى حالت كى طرح ہے كہ تمورى سے يوجى اور تاخيركى وجهے اس كے علاج كا مئله ہاتھ سے نکل جاتا ہے۔ جبکہ مسائل شرعیہ سے ناواقف یا وہ مخص جوقر آن نہیں پڑھ سکتا' کی حالت اس مریض کی طرح ہے جس کا مرض اتنا خطرناک نہیں ہے سہولت اور آ ہستگی کے ساتھ اس کا تدارک کیا جا سکتا ہے اور حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے چبرہ یاک کا اس تابینے کی ناموافق حرکات کی وجہ سے متغیر مونا ووجبتوں سے قابل عماب نبیں ہے۔ بہلی جہت تو یہ ہے کہ رہ جلی تغیر ہے جو کہ وسعت سے باہر ہے اس متم کے کاموں کی تعمیل کی ذمہ واری سونیا تکلیف مالابطاق ہے۔ دوسری جہت یہ ہے کہ تابینے کے سامنے ترش روئی ا روگردانی اور بنس تکھی اور بوری توجه برابر ہے کہ وہ میجم بمین سر کھتا تا کہ اے کوئی اذبیت اور

marfat.com

تغیر غزیزی هستندست (۸۲) هستندست تیموال ماره

دُکھ پہنچ۔ نیز ابھی اس فعل کا ناپسندیدہ ہونا واضح بھی نہیں تھا کیونکہ ابھی اس فعل سے نہی واردنہیں ہوئی تھی تو نہی کی ابتدا میں اس قدر عمّاب کی مخبائش کیونکر ہوسکتی ہے۔ ادراس اشکال کا جواب ہیہ ہے کہ

> کاریاکال را تیاس از خودگیر گرچه باشد در نوشتن شیروشیر

اگرچہوہ نابینا چہرہ مبارک کا بدلنا دیکے نہیں رہا تھالیکن دوسرے لوگ تو دیکے رہے تھے اور انہوں نے اسے اغنیاء کی دل جوئی اور فقراء کی طرف توجہ نہ کرنے پرمحمول کیا۔ حق تعالی نے اپنے محبوب علیہ السلام کے بارے میں بیگان بھی پند نہ فر مایا اور چاہا کہ میرے محبوب علیہ السلام کا ظاہر و باطن اخلاص اور رضا جوئی حق میں معروف ہواور میرے محبوب علیہ السلام کی طرف ریا کا گمان بھی بالکل نہ رہے۔ نیز نفوسِ قدسیہ کو چاہیے کہ مستر شدین کی استعداد کے مطابق فیض اور فائدہ دینا پیش نظر رکھیں۔ اور کام کے انجام میں نظر رکھیں۔ کی فقیر عاجز الیہ ہوتے ہیں۔ ایسے ہوتے ہیں کہ ایک بلنداستعداد کے باعث ایک کا نئات کی شع اور چاغ ہوتے ہیں۔ ایسے ہوتے ہیں کہ اپنی بلنداستعداد کے باعث ایک کا نئات کی شع اور چاغ ہوتے ہیں۔ پس عام نفع کی تو قع مستر شدگی قوت استعداد سے کرنی چا ہے۔ اغنیاء کے پیچھے چلنے والوں کی کثرت سے متاثر ہوتا ظاہر بینوں اور نفوس کی استعداد سے ناوا تفوں کا کام ہے۔

نیز حضور صلی الله علیہ وسلم کے فیض محبت سے اس نابینا کا نفع حاصل کرنا ایک بقینی امر تفا جبکہ دعوت اسلام سے ان قر داروں کا نفع پانا مجران کی پیروی سے شہر والوں کا نفع پانا ایک امر موہوم تھا موہوم کومعلوم برتر جبح و بنا مناسب نہیں۔

حقيقت واقعهمتعلقه

اوراس بات کی حقیقت ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے اس کام میں آگر چہ ناجائز اور نادرست ہونے کا شائبہ تک نہ تھالیکن مجوبوں سے صرف محناہ سے معصوم رہنے پر بی اکتفا وہیں کرتے بلکہ ان سے تخلق باخلاق الٰہی چاہتے ہیں جس طرح کہ مشفق باپ جس چیز میں اپنے بیٹوں سے ایک انداز اور آئین کے خلاف دیکھا ہے آگر چہ جائز اور می جو وہ عماب فرماتا ہے۔ بادشاہ اپنے بیٹوں سے بیہ پہندنہیں کرتے کہ مشائخ اور صلحاء کی طرح مجدوں میں اسے بیٹوں سے بیہ پہندنہیں کرتے کہ مشائخ اور صلحاء کی طرح مجدوں میں اسے میں اسے بیٹوں سے بیہ پہندنہیں کرتے کہ مشائخ اور صلحاء کی طرح مجدوں میں اسے میں

میں معتلف اور خلوتوں سے مانوس ہول اور مشائخ اور مسلحاء اپنے بیٹوں کے لیے پہند نہیں کرتے کہ سپاہیوں اور نوکری پیٹیہ لوگوں کی طرح روزی کی تلاش میں اگر چہ حلال طریقے سے ہو مشغول ہوں ۔علی ہذاالقیاس سے ہو مشغول ہوں ۔علی ہذاالقیاس

پس بیعتاب و خطاب نافر مانی سے ڈانٹ ڈیٹ کے طور پرنہیں تا کہ ہے گناہی کی صورت میں اس کی تو جیہ مشکل ہو بلکہ باپوں کے اپنی اولا دوں کی تربیت کرنے کے طریقے ہے۔ جس کی وجہ ظاہر ہے۔

وجدتنميه

اس سورہ عبس کی وج تسمید یہ ہے کہ اس عظیم الثان رسول علیہ السلام پر اللہ تعالیٰ کا علیہ اس بات پر کہ آپ نے طالبان رشد و ہدایت میں سے ایک فادم سے بہ تو جمی فرمائی اور قوم کے سرداروں کی طرف توجہ فرمائی قرآن مجید کی سورتوں میں سے ایک سورة کے نام کے ساتھ ہوتا کہ طالبان رشد و ہدایت اور طلبعلم کے حال پر اللہ تعالیٰ کی عنایت ہمیشہ کے لیے ہرمسلمان خصوصاً مرشدوں اور معلموں کے سامنے رہے کہ اس سورة کا نام سنتے ہی انہیں وہ واقعہ یاد آ جائے اور وہ عبرت حاصل کریں۔ نیز اس رسولی کریم صلی اللہ علیہ دسلم کی مجبوبیت کا در بار فداوندی میں کمال ثابت ہو کہ ان کے چیرة پاک کا اتنا ساتغیر شاق جانا کہ قاریوں اور تلاوت کرنے والوں کی ذبان پر بار باریا دفر ما تا ہے اور اس سے خبر دیتا ہے اور جس کلام میں یہ واقعہ نہ کور ہے اسے اس عنوان کے ساتھ مخصوص کر دیا گیا ہے دیتا ہے اور جس کلام میں یہ واقعہ نہ کور ہے اسے اس عنوان کے ساتھ مخصوص کر دیا گیا ہے جس طرح کرائی عاشق شیفتہ اپ مجبوب کے کی غیر مانوس معالمہ کوشان سمجھ کراس معالمے جس کے وقت اور مکان کے لیے اس معالمے کو بیجیان بنادیتا ہے۔

بسسم الله الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ رسول عليه السلام في ترش روكى فرماكى اور مرف اى قدر نبيس بلكه وَ تَوَكِّى چِرهُ بارك مجيرليا-

أَنْ جَاءً و اللغلي السك كرآب ك باس تابيا آيا-

مغرین کاس بات میں اختلاف ہے کہ یہاں نابینے کی آمدکو کیوں ذکر فرمایا حمیا۔ marfat.com

بعض کہتے ہیں صرف بیان واقع ہے اور بعض کہتے ہیں کہ عمّاب کے لیے ہے کہ اس رسول علیہ السلام کوہم نے رحمۃ للعالمین بنایا ہے اور جہان والوں کو ہدایت دینے کے لیے بھیجا اور رحمت کے زیادہ مستحق ضعیف محدا اور نابینے ہیں اور نابینے طالبان رشد و ہدایت رہنمائی کے زیادہ عمّان ہیں۔ پس اس قسم کے لوگوں سے بے تو جمی مقام رسالت کے شایاں نہیں۔

اور محققین نے کہا ہے کہ بیرواقعد لانا حضور صلی اللہ علیہ وکلم کی طرف ہے اس معالیے بیں جو کہ اس نا بینے کے بارے بیں رونما ہوا عذر کی تمہید کے لیے ہے اور بیر رحمت و محبت کے کمال کا نقاضا ہے کہ عین عمّاب کے دوران آپ کا عذر بھی بیان فر مایا جا رہا ہے 'مشفق باپ کی طرح جو کہ اپنے بیٹے کی شکایت لوگوں کے سامنے کرتا ہے اور عین شکایت کے دوران اس بیٹے کا عذر بھی بیان کرتا جا تا ہے تا کہ لوگ جان لیں کہ یہ بیٹا عمّاب کا مستق نہیں دوران اس بیٹے کا عذر بھی بیان کرتا جا تا ہے تا کہ لوگ جان لیں کہ یہ بیٹا عمّاب کا مستق نہیں ہے اور ان اعمال میں وہ معذور ہے لیکن شفقت پدری کا کمال ہے کہ اس کے حق میں اتی ی جب ہا اس بیٹ کہ لیا میں اور عذر کی وجہ یہ بات بھی پہنچا ویں اور عذر کی وجہ یہ کہ گویا ارشاد ہور ہا ہے کہ اس رسول علیہ الصافی ق والسلام کا حسن خلق اس بات کا بالکل تقاضا نہیں کرتا تھا کہ گداؤں اور بیٹواؤں کے ساتھ جو کہ حق کی طلب اور دین کی راہ تلاش کرنے بیں آپ بین اس طرح پیش آپ کی لیکن اس رسول علیہ الصافی ق والسلام نے معلوم فر مایا کہ بی شخص نا بینا بین اس طرح پیش آپ کی لیکن اس رسول علیہ الصافی ق والسلام نے معلوم فر مایا کہ بی شخص نا بینا بین اس طرح پیش آپ کی تک اس روئی اور خندہ پیشائی میں امیاز نہیں کر ساتا ہی کرکات کو غیر معیاری سمجھتے ہوئے ترش روئی فر مائی اور اپنے آپ کو تکلف کے اس کرکات کو غیر معیاری سمجھتے ہوئے ترش روئی فر مائی اور اپنے آپ کو تکلف کے اس سے نا میں ا

اور رحمت وعنایت کے کمال کے پیش نظریبال حضور صلی الله علیہ وسلم کا ذکر حذف کر کے فعل عائب کو فاعل سے خالی لایا گیا تا کہ اس فعل کی صرح نبست اس مجوب صلی الله علیہ وسلم کے ساتھ نہ کی جائے۔ گویا یوں ارشاد ہور ہا ہے کہ کسی اعراض کرنے والے اور ترش روئی کی اگر صیغہ خطاب فر مایا جاتا تو اس فعل کی روئی کرنے والے سے اعراض اور ترش روئی کی اگر صیغہ خطاب فر مایا جاتا تو اس فعل کی نبست اس مجوب علیہ الصلوقة والسلام کے ساتھ صراحان سمجھ میں آتی اور کمال رحمت وشفقت کے مرتبوں کے تقاضے کے خلاف ہے۔ اس عین شکایت وعماب کے دوران مہر یائی اور محبت کے مرتبوں

کی رعایت کی جارتی ہے۔

اوربعض نے کہا ہے کہ تابینے کو تعلیم دینا دشوار ہے اس لیے کہ وہ صرف حفظ کرنے پر
اکتفاء کرتا ہے اس کے لیے لکھے ہوئے کی طرف لوٹنا ممکن نہیں ہے۔ پس حضور صلی اللہ علیہ
وسلم کا عذر یوں بیان ہوا کہ آپ نے اس نا بینے کو قاصر الاستعداد جان کراس کی تعلیم سے بے
تو جہی فر مائی حالا تکہ نابیتا ہو تا اس بے تو جہی کا موجب نہیں بلکہ دل کا اندھا اس بے تو جہی کا
موجب ہے اور وہ رئیس اور سردار سب کے سب اندھے دِلوں والے تھے آپ کو ان سے
بے تو جہی کرنا چاہیے تھی نہ کہ اس ناجینے سے اس لیے کہ یہ نابیتا دل کا بینا ہے۔

وَمَا يُدُرِيْكَ لَعَلَّهُ يَزَّتَى اور تمهيں كيا معلوم كه شايد وہ پاك ہو جائے اوراس كا آئيندول يہاں تك ميقل ہوجائے كه ظاہرى بينائى والے جن امور غيبيہ كشفيه كودريافت نه كرسكيں بيدريافت كرلے اوراكي جہان كا مقتدا بن جائے اور وہ ايك نابينا ہزاروں بينائى والوں سے بہتر ہے اوركيا بى اجھا كہا ہے كہنے والے نے

فدائے کوری خفاش چٹم بینائی کہ ہے خبر زرخ آفاب بیم شی ست

لینی چگادڑ کے اند نفے پن پر وہ بینائی والی آکھ قربان جو کد آ دمی رات کے آفاب کے چرے نے بے خریعنی جے شب بیداری نعیب نہیں۔

آؤید کی یاوہ نابینا تھیجت تیول کرے اور اگر چددل کے مینٹل ہونے کے مرتبے کو نہ پہنچ کیکن قرآن پاک کامفہوم اور اس کے امر اور نہی اس کے ذہن میں اس حد تک پختہ ہو جا کمیں کہان میں وہم و خیال کی آمیزش نہ ہو۔

فَتَنْفَعَهُ الدِّنْ كُورى بِس اسے بیفیحت مان لیما نفع دے كداس كی وجہ سے دین كی عمره منفعتیں حاصل كرے اور دین كی عظیم نقصان دہ چیز دل كو دُوركرے اور اس كالطبغة على روشن موجائے ۔ اور وہ روشن آئكموں والے ہزاروں سے بہتر ہو جائے اور عالم زبانی بن جائے جیسا كہ بہلی شق میں اس كالطبغة دل مینظل ہوكر اسے صاف كشف وعرفان ولى كا مرتبہ حاصل ہوجاتا ہے اور چونكدا كي شق كا حاصل ہونا خصوصاً اس ناہينے كے بارے ميں اس كے

marfat.com

حالات و کھنے والوں کو یقین کے ساتھ معلوم نہ تھا اس لیے اس مضمون کوکلہ او کے ساتھ لایا گیا جو کہ تنک اور منع خلو پر ولالت کرتا ہے یعنی دونوں صورتوں میں ہے ایک ہے خالی نہیں ہوسکتا ہاں اس نا بینے کے شوق کی شدت 'رسول کریم علیہ الصلوٰ قا والسلام کی صحبت کی وجہ ہے حاصل ہونے والے فیوض خداوندی پر اس کی حرص کی کھڑت 'قر آن پاک کی تلاوت ہے حاصل ہونے والے فیوض خداوندی پر اس کی حرص کی کھڑت 'قر آن پاک کی تلاوت ہے اس کے انس اور اس کے معنوں میں اس کے خور وخوض سے اس قدر تو بات یقین تھی کہ آخر کوئی چیز تو حاصل ہوگی اور وہ ان دونوں مرتبوں سے بالکل محروم نہیں رہے گا۔

صاحب کشاف نے بھی کلمہ او پر متنبہ ہو کر اپنی تغییر میں بطورِ سوال ذکر کیا ہے کہ
پاک ہونے کے بعد نصیحت کا اور کون سا نفع ہے جس کی تو قع ہے اور جواب بید کھا کہ پاک
ہونا گناہ سے نیخے اور پر ہیز گاری افقیار کرنے سے کتابیہ ہے اور نقیحت کا نفع وینا نیک اعمال
کرنے سے عبارت ہے جس کی وجہ سے حصول ٹو اب کی تو قع ہے اور ٹو اب دائی نفع ہے
لیکن اس کی اس بات پر اعتراض وارد کیا گیا ہے کہ علم حاصل ہونے سے دونوں چیزیں
حاصل ہو جاتی ہیں 'گناہ سے پر ہیز بھی اور نیک عمل کرتا بھی۔ پس بید مقام واؤ کا ہے نہ کہ
حرف اوکا۔اس اعتراض کے جواب میں کہا گیا ہے کہ طالب علم کو یقین کے ساتھ معلوم نہیں
کہ کیا سے گا اگر نہی سے 'گناہ سے باز رہے اور اگر امر سے تو نیکیوں میں زیادتی کرے اور
اگر دونوں سے تو دونوں کام کرے۔ پس حرف او کے استعال کی جو کہ مع خلو کے لیے ہے نہ
کمنع جمع کے لیے 'موٹر وجہ پیدا ہوگی اور تی وہی ہے جو نہ کور ہوا۔

اَمَّامَنِ اسْتَغْنَی کیکن جوآب کے ارشاد بلکہ آپ کی راہ سے لاپروائی کرتا ہے اور اینے مال اور مرتبے کے ساتھ خوش ہے۔

فَانْتَ لَدُ تَصَنَّى تَو آپ اس كى ہدايت كور يے ہوتے ہيں اور شوق ركھے والے طالبان ہدايت سے بوت ہيں اور شوق ركھے والے طالبان ہدايت سے بوجي فرماتے ہيں۔ اس خيال سے كدلا پرواى كرنے والے كاس راوكا طالب اور شوقين بنانا جا ہے اور اس كے حال پر توجد كرنا جا ہے جبكہ طالب اور شوقين كے ليے اس راوكا شوق بى كانى ہے آخر مطلب تك پہنے جائے گا۔

وَمَاعَنَيْكِ آنْ لَايَزَّ خِي اور آپ پراس كاكوئي ضررتيس كدوه الاپرواه آوي پاك ندمو marfat.com

اس لیے کہ آپ کا کام فرمانِ اللی کی تبلیغ اور ذی استعداد شوقینوں کی تربیت ہے اور وہ آپ کومستعدین کے قبول کرنے کے وقت حاصل ہے۔

وَاهَا مَنْ جَآءً كَ يَسْعَى لَيَن جُوآ بِ كَى خدمت مِن دورُتا ہوا اور تكليفيں برداشت كرتا ہوا آتا ہے جیسے ایک نامیا جس كا ہاتھ پکڑنے والا بھی كوئى ندتھا اور وہ مجكد جگدار كھڑا تا ہوا حضرت كى محفل ميں پہنچا۔

و اورور کرائیوں کے قریب نہ ہو جائے اور یہ خوف اسے ملم کی طلب اور آپ کی صحبت میں در اور کرائیوں کے قریب نہ ہو جائے اور یہ خوف اسے ملم کی طلب اور آپ کی صحبت میں حاضری کے شوق کا باعث ہوتا ہے اور پھر راستے میں کفار کے تکلیف دینے ہے بھی ڈرتا ہے کہ کہیں ایبا نہ ہو کہ انہیں اس کے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ میں حاضر ہونے کا پہتہ چل جائے اور وہ ستانے لگیں پھر گرنے اور ٹھوکریں کھانے سے ڈرتا ہے پھر جب آپ کے در بار میں پنچا ہے تو اپنسی کا وقت ضائع ہونے سے ڈرتا ہے کہیں حضور علیہ الصالو ق والسلام میں پنچا ہے تو اپنسیق کا وقت ضائع ہونے سے ڈرتا ہے کہ ہیں حضور علیہ الصالو ق والسلام کو مصروفیت ہوجائے اور میں محروم رہ جاؤل۔

فَانْتَ عَنْهُ تَلَهٰی پی آپ اس سے روگردانی کر کے دوسرول میں توجفر ماتے ہیں اور اس کی طرف التفات نہیں فر ماتے ہیں اور اس کی طرف التفات نہیں فر ماتے ہویا آپ بورا فائدہ ای صورت میں ویکھتے ہیں کہ لاپروائی کرنے والوں اور بھا کے ہوؤں کورام کریں اور داستہ پرلائیں اور سچا شوق اور طلب رکھنے والوں کو تاخیر اور دو کے رکھنے سے کمال شوق میں بے چین رکھیں۔

کلاً ابیانہ کریں اس لیے کہ إِنّهَا تَذْ کِرَةٌ تَحْقیق بیآ یاتِ قرآنی تھرا تعالیٰ اس کے اساء اس کی صفات اس کے افعال اور اس کے احکام کو یاد کرنے کے لیے ہیں تا کہ لوگوں کے لیے معرفت عبادت محبت خوف اور رجاکی راہ کشادہ ہو جائے اور وہ اللہ تعالیٰ کی راہ کا سلوک افقیار کریں اور اس مقصد کے لیے جا بلوی اور دلجوئی مفیر نیس بلکہ ولی افتیار اور طبعی رغبت درکارہے۔

فَيَنْ شَآءً ذَكِرَةً توجو كِي خوا بهش ركلے وہ اس قرآن پاک کو یاد کرے کہ یہ در حقیقت اللہ تعالیٰ کا ذکر میں اور ذکرِ اللی دِلی رغبت اور سی کے ارادے کے بغیر مفید نہیں ہے۔ marfat.com

اورانہا بیس خمیر کومؤنٹ لانے اور ذکرہ میں فہ کرلانے کی وجہ باوجود یکہ دونوں کا مرجع ایک ہے نیپی قرآن پاک ۔ یہ ہے کہ قرآن پاک کا تذکرہ ہونا اس کی آیات اور سورتوں کے اعتبار سے ہے کہ جرایک کامضمون علیحدہ ہے۔ بعض میں اسماء وصفات کا بیان ' بعض میں اختام و شرائع کا ذکر اور بعض میں تو اب وعذاب کے وعدوں کا تذکرہ ہے جبکہ قرآن پاک کا ذکر ہونا اس کی مجموعی صورت کے اعتبار سے ہے۔ کہ تمام قرآن پاک اس میں برابر ہے اور مضمون بھی ہون مضامین کے اختلاف کا اس کے ذکر ہونے میں کوئی اثر نہیں اس لیے کہ جو مضمون بھی ہوئی مضامین کے اختلاف کا اس کے ذکر ہونے میں کوئی اثر نہیں اس لیے کہ جو مضمون بھی ہوئی مضامین کے اور کلام کا متعلم کے ساتھ انصال نام کے نام والے کے ساتھ متصل ہونے سے زیادہ قوی اور شدید ہے اور جو توجہ کی مختص کا نام لینے کے وقت اسے عاصل ہوتی ہے دیادہ قوی اور شدید ہے اور جو توجہ کی مختص کا نام لینے کے وقت اسے عاصل ہوتی ہے اس توجہ سے کہ ہوئیں۔

نیز کی فض کا کلام اس کی ذات کے شیون میں سے ایک عمرہ شان ہے کہ اس کلام کا م حلاوت کے وقت تلاوت کرنے والے کے دل پر جلوہ گر ہوتی ہے اس لیے بزرگوں کا کلام دل میں ان کے نام سے زیادہ اثر کرتا ہے اس لیے حدیث شریف میں وارد ہے کہ قر آن پاک کے بارے میں فرمایا گیا ہے کہ ھو حبل اللّٰہ المعتین اور حضرت امام جعفر العماد ق رضی اللہ عنہ نے فرمایا ہے کہ تجلی اللّٰہ لعبادہ فی کلامہ ولکنھم لایبصرون اللہ تعالیٰ این بندوں کے لیے اپنے کلام میں جلوہ کرے مگروہ دیکھے نہیں۔

اوراگرکی کے ول میں میں کھنے کہ اگر سربر آوردہ اغنیاہ اور دولت مندکی کتاب یا کلام
یاشعرکا شوق کریں تو اس کتاب اوراس کلام کی قد راور عزت بڑھ جاتی ہے اور وہ اسے زریں
ر خوش نویسوں کے ہاتھ سے ریشی طلائی کاغذوں پر تکھواتے ہیں اور اس پر سونے کا پانی
پڑھاتے ہیں اور چا عمری کے کام والے غلافوں میں رکھتے ہیں اور تعش و نگار اور زیب و
زینت والی رحلوں پر رکھتے ہیں اور پر تکلف صندوقوں میں محفوظ کرتے ہیں اور اس وجہ
کلام کی عزت اور مرتبہ بڑھ جاتا ہے اور لوگوں کے ذہنوں میں اس کی عظمت و جلال کا رنگ میں
گلام کی عزت اور مرتبہ بڑھ جاتا ہے اور لوگوں کے ذہنوں میں اس کی عظمت و جلال کا رنگ میں علام کی عزت اور مرتبہ بڑھ جاتا ہے اور لوگوں کے ذہنوں میں اس کی عظمت و جلال کا رنگ میں جم جاتا ہے جس طرح کہ کوئی وکٹس شعراحی آ واز کے ساتھ پڑھا جائے کہ اس کا اثر اس شعر

ے زیادہ ہوتا ہے جو سرسری طور پر پڑھا جائے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے رئیسوں اور سرداروں کی دعوت میں مصروف ہوکر اور اس وقت فقراء اور گداؤں سے بے توجی کرنے میں ای مقصد کا لحاظ کیا ہوگا۔ ہم کہتے ہیں کہ بیقر آن پاک ایسانہیں کہ ان چیز وں سے اس کی عزت اور قدر ہڑھے بلکہ اس کی قدر اور عزت اس جہان میں کہ جہاں سے زمین والوں برائر تا ہے دیکھنی جائے۔

فی صُحُفِ مُکَدَّمَةً آیاتِ قرآنی عظیم المرتبت محائف میں لکھی گئی ہیں جنہیں اللہ تعالی نے خودعظمت دی ہے۔ مَدِّ فُوْعَةِ وہ سحائف ہیت العزت میں او نچے رکھے محے ہیں جو کہ آسان دنیا میں ایک عمرہ مقام ہے اور قرآن مجید کو پہلے لوح محفوظ سے منتقل کر کے اس مقام پر پہنچایا گیا اور وہاں سے تعوز اتعوز اتازل ہوتارہا۔

مُطَهَّدَةِ وه صحائف تمام نجاستوں اور بلیدیوں سے باک (کھے گئے ہیں اور اگر دنیا کے رئیس اور سردار اس قرآن باک کی آیات کوریشی طلائی کاغذوں میں لکھوا کیں تب بھی اس کرامت اور بزرگی تک نہیں پہنچ گا اور اگر رحلوں اور صندوتوں میں رکھیں تب بھی ان بلند یوں تک نہیں پہنچ گا اور اگر خوشبولگا کر اور نجاستوں سے احتیاط کے ساتھ وُور رکھ کر ان بلند یوں تک نہیں پہنچ گا اور اگر خوشبولگا کر اور نجاستوں سے احتیاط کے ساتھ وُور رکھ کر ان آیات کو باک رکھیں تو بھی اس تقدی تک نہیں پہنچ بلکہ وصحا کف

بائیدی سَفَرَۃِ ایے لکھے والوں کے ہاتھوں میں دیے گئے ہیں جو کہ کِرَ ام ہُرَدَۃِ عظیم المرتبت اور نیکوکار ہیں بررگی اور نیکی کے بغیران سے بھی کوئی کام صادر نہیں ہوتا جبکہ دنیا میں لکھنے والے گناہوں سے ملوث اور طبعی خباشوں میں آلودہ ہیں اس سے کیا کشائش ہوگی کہ آپ فاہر کو جا کیں۔ پس قرآن پاک کے بارے میں دنیا داروں اور دولت مندوں سے عزت افزائی کی تو تع رکھنا بالکل بے جا ہے۔ بلکہ آگر اہل دنیا اس نعمت کی قدر کو بہچان لیس تو غنیمت ہے۔ اس لیے کہ آ دمی جبلی طور پر نعمت کی ناشکری کرتا ہے۔

قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَا آكُفَرَة انبان بلاك مونعتوں كى كتنى ناشكرى كرتا ہے اور جس فَتُولَ الْإِنْسَانُ مَا آكُفَرَة انبان بلاك مونعتوں كى كتنى ناشكرى كرتا ہے اور جس فرات نے اسے ظیم القدر كلام سے نوازا ہے اور اس میں تتم سے رشد و مدایت كا ذكر imartat.com

فر مایا ہے نہیں پہچانتا اور اس کے حقوق ادانہیں کرتا اور اپنے مال اور مرتبے کی وجہ سے لا پروائی اور غیر ذمہ داری کا ارتکاب کرتا ہے بلکہ وہ اپنی اصل کی خبر نہیں رکھتا کہ کیا ذلیل چیز۔ تفا۔

مِنْ أَيِّ شَیْء خَلَقَهٔ اے کون ی تقیر چیز سے پیدا کیا عمیا ہے۔ اور اگر انسان شرم کی وجہ سے اس سوال کا جواب نہ دے تو ہم کہتے ہیں

مِن نُطْفَةٍ خَلَقَدُ نطفے کے پانی سے اسے پیدا کیا ہے پیثاب کی راہ سے نکلا اور بیٹاب کی راہ میں داخل موا اور خون اور آلائشوں سے ل کر کوشت کا ایک کلزاینا۔

فَقَدَّدَهُ پس اس کا اندازہ کیا مناسب اعضاء کان آگھ ہاتھ پاؤل زبان اورلب کا بھی۔اوراس کے قد کا بھی کہ م اور زیادہ ہونے میں معین فرمایا۔اس کے رزق اجل اور عمل کوبھی مقرر فرمایا۔اس کے رزق اجل اور عمل کوبھی مقرر فرمایا۔اور مال کے پیٹ میں اس کے تعمیر نے کی مدت بھی نو ماہ یا اس سے کم وہیش مقرر فرمائی۔

ٹکہ السّبیل یَسّر ہ ہراس کے لیے باہرا نے کی راہ آسان قربائی اس لیے مال کے فرہ سنے کا سر مال کے سر کی طرف ہوتے ہیں اور جب ولادت کا وقت آتا ہے تو الہام ہوتا ہے تو وہ پی خود بخو دبل کرسر نیچ کی طرف اور باوں اوپر کی طرف کر لیتا ہے تا کہ اس کا باہرا آتا آسان ہو جائے اور جب شکم ہے باہرا آبات کا روزی کی طرف کر لیتا ہے تا کہ اس کا باہرا آتا آسان ہو جائے اور جب شکم ہے باہرا جائے تو اس کی روزی کی تلاش کی راہ آسان فرماتا ہے۔ اگر بعوک کے وقت پستان اس کے باتھوں لگ جائے تو ایک ہاتھ ہوک کا اظہار کرتا ہے۔ علی بذا القیاس سال بسال اس کے لیے مختف راہیں آسان فرماتا ہے جی کہ کہ کا فیار کرتا ہے۔ علی ہذا القیاس سال بسال اس کے لیے انہیا ہ علیم اس فرماتا ہے تا ہوں خور وہ راور حق و باطل کی راہ انہیا ہ علیم کرام کی شاگر دی کی وجہ ہے آسان ہو جاتی ہے۔ پھر بعض کے لیے جنت اور نجات کی مال سے سال ہو جاتی ہے اور وہ اس راہ پر چلنے کی تو یق پالیتے ہیں۔ اور بعض کی نظر میں ہلاکت راہ آسان ہو جاتی ہے اور وہ اس راہ پر چلنے کی تو یق پالیتے ہیں۔ اور بعض کی نظر میں ہلاکت اور جہنم کی راہ آسان معلوم ہوتی ہے اور وہ اس میں گر پڑتے ہیں۔ ہر حال عمر کے آخر تک اس میں اس میں سے میں۔ ہر حال عمر کے آخر تک اس کے مالے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک اس کے مالے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک اس کے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک اس کی مورٹ کی میں کر تھیں۔ ہم حال عمر کے آخر تک اس کی مورٹ کے ایک میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک سے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک سے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک تھیں۔ ہم حال عمر کے آخر تک سے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک سے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک سے میں۔ ہم حال عمر کے آخر تک سے میں کے تک میں کو تھوں کے تک تو تک کے تک میں کو تھوں کے آخر تک کے آخر تک کے تک کے تک کو تک کے تو تک کے تک کی کو تک کے تک کو تک کے تک کے تک کو تک کے تک

كماني حاصل كرنے كى راه آسان ہوتى جلى جاتى ہے۔

موت ایک عظیم نعمت ہے

اینا کمال حاصل کرنے کے لیے دنیا میں اُٹھائی تھی۔ اور عالم برزخ میں اپنا الل کے آٹار کا اپنا کمال حاصل کرنے کے لیے دنیا میں اُٹھائی تھی۔ اور عالم برزخ میں اپنا الل کے آٹار دیکھے۔ پس موت بھی ایک عظیم المرتبت نعمت ہے کہ تجارت کے نفع کی وصولی اسی سفر میں حاصل ہوتی ہے اگر موت نہ ہوتی 'آوی ہمیشہ مشقت طلب، اعمال کی کھینچا تانی میں وقت گزارتا اور ان سب مشقتوں کا کھیل ہرگزنہ یا تا اور یہی وجہ ہے کہ موت دینے کو بھی نعمتوں کے شاد کے مقام پر ذکر فرمایا گیا ہے اور بزرگوں سے منقول ہے، کہ الموت جسر یوصل کے شاد کے مقام پر ذکر فرمایا گیا ہے اور بزرگوں سے منقول ہے، کہ الموت جسر یوصل العجبیب الی العجبیب موت ایک بل ہے جو محت کو محبوب سے ما تا ہے۔

اور بعض ظاہر بین مفسرین موت کے نعمت ہونے سے بے خبر ہوکریہاں بطورِ سوال بہا بات لائے کہ موت کو نعمت ہونے سے بے خبر ہوکریہاں بطورِ سوال بہات لائے کہ موت کو نعمتوں میں کیوں شار کیا گیا ہے اور اس سوال کا جواب اس انداز سے دیا ہے کہ مباد کی منزل اس کے آخر پر ہوتی ہے۔

قبر بھی ایک عظیم نعمت ہے

اورموت کے بعد جو قبر میں فن کرنے کا تھم دیا گیا ہے ہے ہی ایک عالم نمت ہے جس کے ساتھ آ دمی کو عزت دی گئی ہے کو صرف موت نعت نہ ہو حس طرح کہ شفیق باپ بیٹے پر اپنی تعتیں شار کرتے ہوئے کہے کہ میں نے تیرے لیے یوں یوں کیا پھر جب، تو بیار ہوا تو میں نے تیرے لیے یوں یوں کیا پھر جب، تو بیار ہوا تو میں نے تیراعلاج کیا تو حقیقت میں نعت مقصودہ تو علاج ہے لیکن چونکہ علاج کا نعمت ہونا مرض لاحق ہونے پر موقوف ہے تو گفتگو کے دوران مرض کا ذکر بھی ضروری ہے اوراس مقصد کا اشارہ کرنے کے درمیان لفظ شم نہیں لایا گیا گلہ حرف فالایا گیا۔

فَاقَبَدَهُ بِس است قبر میں دنن کرنے کا تھم دیا تو تو یا ارشاد فرمایا جارہا ہے کہ موت دینا اور قبر میں داخل کرنے کا تھم دینا مجموعی طور پرنعمتوں میں داخل ہیں نہ کہ جدا جدا۔

اور یہاں جانتا چاہیے کہ قبر میں فن کرنے کا تھم دھنے کو اقبار کہتے ہیں اور قبر میں دنن Malfat.com

کرنے کو قبر۔اقبر الرجل عبدہ اس وقت کہا جاتا ہے جب اس نے غلام کو فن کرنے کا تھم دیا ، اور قبرالرجل عبدہ اس وقت جب اسے خود قبر ہیں داخل کیا ہو۔

سب سے بہلے قبر میں دن کرنے کی سورت کا بیان

اورمرنے والول کوقبر میں فن کرنے کے تقم خداوندی کی سب سے پہلے تو یوں صورت موئی کہ جب قابیل نے ہابیل کوئل کیا اور آ دم زاد کے مرنے کا پہلا واقعہ یہی تھا۔ قابیل کو میجه مجھ نہ آئی کہ اس میت کو کمیا کیا جائے۔ ناچار ہا بیل کی لاش کو ایک بڑی سی جا در میں لپیٹ کرایئے ہمراہ لیے پھرتا چونکہ اس نقل وحمل میں بہت مشقت ہوئی اور وہ تھک گیا۔ ایک ون ایک جنگل میں حیران ہو کرمغموم بیٹا تھا کہ اجا تک!ایک کوا ظاہر ہوا اور اس نے دوسرے کوے سے لڑائی کر کے اسے مار دیا۔ پھرائی چونچ اور پنجوں سے زمین کو کھود کرمر دہ کوے کو ایک گڑھے میں ڈال دیا اور اس کے اوپر اپنی چونچ کے ساتھ بہت می مٹی ڈال کر ٹیلہ بنا دیا۔ قابیل نے کوے کی اس حرکت سے سراغ لگایا کہ مردے کو یوں وفن کرنا جا ہے۔اپنے بھائی كى لاش كوبمى ونن كركة قبر درست كروى بجر جب حضرت آ دم على نبينا وعليه الصلوة والسلام كا وصال ہوا تو فرشتوں نے آسان سے اُٹر کرآپ کی اولاد کے سامنے سل کفن جمیز اور قبر تحود نے کا کام کیااس کے بعد بہی معمول ہو کیا اور بیعلیم الی جو پہلے تو استعداد کی کمی کی وجہ ے قابیل کوکوے کے ذریعے واقع ہوئی اور دوسری دفعہ حضرت آ دم علیہ السلام کی اولاد کو فرشتول کے ذریعے تعلیم دی می ایک عظیم نعت اور قابل تحسین اعزاز ہے اگر آ دمی کی لاش کو دوسرے حیوانات کی طرح سطح زمین بر بی چیوڑ ویتے تومتعفن ہوکر بدیو پھیلاتی اور لوگوں کے مشام کو پریشان کرتی اور اس میت سے لوگ متنز ہوتے اور بدکوئیاں کرتے۔ نیز دوندے اور پرندے اس کے اعضاء کو کلاے کلاے کر کے لے جاتے اور نایاک مروارخوو جانورات اپنالقمہ بنالیتے اور اسے بہت بڑی حقارت لاحق ہوتی اور اس کے عیب بے بردہ ہو کر عام خاص میں مشہور ہو جاتے اور اس کی قدر لوگوں کی نظر میں کم ہو جاتی۔ ناجار اے عزت دینے کے لیے اس طریقہ کی غیب سے تعلیم دی حی

ہندوؤں کامردوں کوجلانا معیوب نے نیز جلانے کے مقابلہ میں فن کی خوبیاں

ہم یہاں پنچے کہ ہندوا پنے مردوں کوجلاتے ہیں قبر میں دفن ہیں کرتے اور کہتے ہیں کہ آگ ہر میں دفن ہیں کرتے اور کہتے ہیں کہ آگ ہر نا پاک کو پاک کرنے والی اور ہر بدیو کو وُ ور کرنے والی ہے اور جسے نعفن اور بدیووار کرنامنظور ہوؤز مین میں دفن کرتے ہیں۔ پس آگ سے جلانا زیادہ بہتر ہوگا۔

اس کا جواب ہے ہے کہ آگ خائن ہے اسے جو پچھودیں کھا جاتی ہے اور زمین امانت دار ہے اس میں جو دفن کرتے ہیں رہ جاتا ہے اور مردے کو زمین کے پاس چھوڑ نا اس سے بہتر ہے کہ خائن کے حوالے کریں۔ ای لیے آ دمی بلکہ دوسرے حیوانات کی بھی جبلت ہے کہ جب اموال اور خزانوں میں ہے کسی چیز کو محفوظ رکھنا چا ہیں نرمین میں دفن کرتے ہیں اور جب چاہیں کہ اسے نیست و نابود کر دیں تو آگ میں جلاتے ہیں۔ اور آ دمی کو قیامت میں اُسے اور ارواح کا حز و کہ جسموں کے ساتھ متعلق ہونے کا انتظار ہے اور مردے کو جلاتا اس انتظار کے خلاف ہے۔ نیز مردے کی بہت بے قدری ہے کہ اسے آگ میں جلا کر ہوا میں اُڑادیں اس لیے کہ بیمعاملہ تو ردی اور تا پاک چیز وں کے ساتھ کیا جاتا ہے اور قیمتی چیز وں کو جنہیں باتی رکھنا مطلوب ہے زمین ہیں دفن کرنے کے بغیر کو کی معمول نہیں۔ کہ جنہیں باتی رکھنا مطلوب ہے زمین ہیں دفن کرنے کے بغیر کو کی معمول نہیں۔

اور یہ جو انہوں نے کہا ہے کہ آگ بد ہو کو دُور کرتی ہے جبکہ اس کے برعکس زمین متعفن اور بد ہودار کرتی ہے تو یہ اس وقت ہے جب اس چیز کو زمین سے نکالنا منظور ہو جب اس خیز کو زمین سے نکالنا منظور ہو جب اس خیز کو زمین والوں کو اس کا کوئی اثر محسوں نہیں ہوتا اور اس کے باوجود وفن کرنے کی صورت میں بدن کی گی رطوبتیں متعفن ہو کر خنگ ہو جاتی ہیں اورجم کے اعضاء واجز اسب کے سب اپنی شکل اور مقدار پر رہتے ہیں۔ کو یا ایک مختی جس طرح زندگی کی حالت میں سوتا ہے۔ بخلا ف مختی جس طرح زندگی کی حالت میں سوتا ہے۔ بخلا ف آگ کے ساتھ جیلانے کے کہ اعضاء کو جلا کرشکل مقدار رکھ اورصورت کا کوئی اثر باتی نہیں آگ کے ساتھ جیلانے کے کہ اعضاء کو جلا کرشکل مقدار رکھ اورصورت کا کوئی اثر باتی نہیں چیوڑتی۔ نیز آ دمی کی خلاقت اے سے اورکل شکی برجع الی اصلہ کے تھم کے مطابق اے چیوڑتی۔ نیز آ دمی کی خلاقت کے کہ شیطانوں اور جنوں کا مادہ تخلیق ہے۔ بخر ف آگ کے کہ شیطانوں اور جنوں کا مادہ تخلیق ہے۔ بنی جس موت کے بعد آ دمی ہے۔ اور کل شکے کہ شیطانوں اور جنوں کا مادہ تخلیق کے کہ شیطانوں اور جنوں کا مادہ تخلیق کے کہ شیطانوں اور جنوں کا مادہ تخلیق گے کہ اس موت کے بعد آ دمی ہے۔ اس محل کے کہ موت کے بعد آ دمی کے اس محل کے اس محل کی اس محل کے اس محل

دھوئیں کے ساتھ الکرشیطانوں اور جنوں کے ساتھ پوری مشابہت پیدا کر لیتی ہیں اور یہی وجہ ہے کہ آگ کے ساتھ جلائے جانے والوں کی اکثر روحیں موت کے بعد شیطانوں کا تھم حاصل کر لیتی ہیں اور آ دمیوں کو چہٹ جاتی ہیں اور انہیں تکلیف دیتی ہیں۔ پس ون کرنے میں چیز کو اپنی حقیقت کی طرف لوٹانا ہے جبکہ جلانے میں حقیقت کو بدلنا ہے۔

ہندوؤں کے ایک عقل مند کا واقعہ

کہتے ہیں کہاسلام کے ابتدائی دور میں ایک اسلامی تشکر سیستان کی حدود میں وارد ہوا۔ مندو داناؤل میں سے ایک دانامسلمانوں کے لئکر کاطور طریقد جو کداس وفت ایک نیاندہب تما و يكف كے ليے وہاں پہنچ ميا۔ الل اسلام كے حالات كى تفتيش اور ان كے طور طريقوں پر مطلع ہونے کے بعداس نے اعتراض کیا کہ تمہاری تمام چیزیں خوب بین مربد کم آپ مرنے والے کوتبر میں وفن کرتے ہواور آئے میں میں جلاتے ہو حالا نکہ قبر میں وفن کرنا نایا ک اور بدبوكا موجب موتا ہے جبكہ جلانا يا كيزكى اور زوال تعنن كا باعث موتا ہے۔ وہاں فقہائے اسلام میں سے ایک فقیدموجود منے انہوں نے فرمایا کہ کھواگر ایک مخص سی ملک میں وارد ہو اور ایک عورت کے ساتھ نکاح کرلے اور دوسری عورت کھانا بکانے کے لیے رکھ لے اور اس منکوحہ عورت سے اس کا بیٹا پیدا ہو پھر اس مخف کوسنر کی ضرورت پیش آئے اور وہ جاہے کہ اسے بینے کو چھوڑ جاؤں تا کہ جب واپس آؤں تو اس بے کو یالوں مس عورت کے یاس جموزے؟ اس عورت کے ماس جواس کی مال ہے مااس کے ماس جو ماور چی ہے۔ مندو نے كباكه ظاہر ہے كه مال كے موتے موئے بجه بادر في كرونيس كرنا ماہے اس ليے كه بينا مال كاب باور في كانبيل - فقد نے فرمايا اب اسينے اعتراض كا جواب سنو - روح آساني جب زمين من آئى توزمين سے ايك جم يداكر كا سے عطاكيا كيا اور بيشداسے غذا دوا لباس سکونت اور دوسرے منفعتیں زمین سے بی پہنچائی تنیں جبکہ آگ آ وی کے جن میں باور جی مری کے سواکوئی کام نبیس رکھتی اور آگ کا انتہائی فائدہ یمی ہے کندوہ کی چیزیں جوزمین سے اُم تی بین انہیں یکائے۔ ہیں آ دمی کی مال زمین ہے اور اس کا باور چی آگ۔ جب روح نے جوکہم کے لیے بمزلد باپ ہے جاہا کہ عالم برزخ کو جائے ناجاراہے ہے کو جوکہ martat.com

بدن ہے اس کی ماں سے سپر دکرے گانہ کہ دوسری عورت کے جو کہ باور چی ہے۔ بیگفتگوسُن کر ہندو نے دادانصاف دی اور قائل ہو گیا۔

مزارات سےزائرین کواور قبروں والوں کوالصال ثواب

نیز آگ میں جلانے ہے میت کے جم کے اجزا کو بھیرنا ہے کہ اس کی وجہ ہے روح
کا بدن ہے تعلق بالکل منقطع ہوجاتا ہے اور اس جہال کے آثاراس روح کو کمتر پہنچتے ہیں اور
اس روح کی کیفیات اس جہان میں کم سرایت کرتی ہے جبکہ دفن کرنے میں چونکہ سارے جسم
کے اجزا کیجا ہوتے ہیں روح کا جسم سے تعلق جمہبانی کے طور پر بحال رہتا ہے اور انس وفا کہ و
لینے والے زائرین پر روح کی توجہ آسانی ہے ہوتی ہے کہ بدن کے مکان کے معین ہونے ک
وجہ ہے گویاروح کا مکان بھی معین ہے۔ پس اس جہان کے اثر ات جیسے صدقات فاتح خوانی
اور تلاوت قرآن مجید جب اس جسم کے مرفن پر واقع ہوتے ہیں تو آسانی سے نفع دیتے
ہیں۔ پس جلانا گویاروح کو بے گھر کرنا ہے جبکہ دفن کرنا روح کے لیے مسکن بنانا ہے ای بنیاد
پر دفن شدہ اولیا واللہ اور دوسرے نیک مسلمانوں سے نفع اور فاکدہ لینے کا سلسلہ جاری ہے اور
ان کی طرف سے فاکہ و دینے اور مدود سے کا تصور قائم ہے۔ بخلاف جلائے گئے مردول کے
کہ یہ چیزیں ان کے لیے ان کے خہ ہب والوں میں واقع نہیں ہیں۔

بہر حال قبر اور ذن کا طریقہ آ دی کے بارے میں ایک عظیم قمت ہے تو اگر ان کے بعض افراداس تعمین کی اور دفن کا طریقہ آ دی کے بارے میں ایک عظیم قمت ہے تو اگر ان کے بعض افراداس تعمین کرتے ہیں تو کوئی گلہ ہیں کہ آدی کی جبلت میں کفرانِ تعمین داخل ہے اور اس کے حق میں ای تعمین پراکتفائیس بلکہ علی میں دی جبلت میں کفرانِ تعمین داخل ہے اور اس کے حق میں ای تعمین کی جبلت میں کوئی تعمین کے دی دی دیکا ہے تا ہے جبال میں اس کے حق میں دی دیکا ہے تا ہے دور اس کے حق میں دی دیکا ہے دور اس کے حق میں دیکا ہے دور اس کے دیکا ہے دور اس کے دور اس کے دور اس کے دیکا ہے دور اس کے د

نے اِذَا شَآءَ آنَشَرَهٔ محرجب چاہا استقرات ندہ نکالے گاتا کہ وہ اپنے کسب
کے ہوئے اعمال کی جزادار آخرت میں ابدالآ بادتک چھے اور ہمیشہ کی زندگی پائے اور اگر چہ
یہ ہوئے اعمال کی جزادار آخرت میں ابدالآ بادتک چھے اور ہمیشہ کی زندگی پائے اور اگر چہ
یہ نہیں علی مندکو معمولی غور وفکر ہے معلوم ہوجاتا ہے کہ جب ان حالات میں اللہ تعالی
کی مشیت ہے کوئی چز چھے نہیں رہی تو اس حالت میں مجمی زندہ کر کے اُفھانا اس کی مشیت
کی مشیت ہے کوئی چز جھے نہیں رہی تو اس حالت میں مجمی زندہ کر کے اُفھانا اس کی مشیت
سے چھے نہیں رہے گا۔ اس لیے اس نعت کو مشیت کے وقت کے ساتھ متعلق فر مایا گیا ہے اور
سے معلی میں رہے گا۔ اس لیے اس نعت کو مشیت کے وقت کے ساتھ متعلق فر مایا گیا ہے اور
سے معلی میں رہے گا۔ اس لیے اس نعت کو مشیت کے وقت کے ساتھ متعلق فر مایا گیا ہے اور
سے معلی میں رہے گا۔ اس لیے اس نعت کو مشیت کے وقت کے ساتھ متعلق فر مایا گیا ہے اور
سے معلی میں رہے گا۔ اس لیے اس نعت کو مشیت کے وقت کے ساتھ متعلق فر مایا گیا ہے اور

آ دمی کے شروع کی خلقت اس کی لوٹائی گئی خلقت پرمضبوط اور واضح دلیل ہے اور اگر وہ اس نعمت کا بھی نا دانی اور جہالت کی وجہ ہے انکار کریے تو اس کی کوئی پرواہ نہیں۔

اور جب یہاں ایک شبہ کا گمان تھا کہ ہیں آ دی کے دل میں یہ خیال گزرے کہ چونکہ ہمیں ابتدائے خلقت سے ہی بزرگی اور عزت کے ساتھ نوازا گیا ہے اور زندگی اور موت میں مجمعے دوسری مخلوق پر معزز ومحترم کیا گیا ہے تو آخرت میں یہی میرے ساتھ ای اجھے معالے کے ساتھ پیش آئیں گے کہ جے نوازا گیا ہوا سے گرانا نہیں چا ہے اور اپنی طرف ہے عزت دیئے گئے کو ذلیل نہیں کرنا چا ہے۔ نیز میں جسم میں روح لوثانے کے بعد بھی انسان ہی ہوں کا جبکہ انسان ہی کو کے گا جبکہ انسان ہی وار کے لیے گئے کو ذلیل نہیں کرنا چا ہے۔ نیز میں جسم میں روح لوثانے کے بعد بھی انسان ہی ہوں کا جبکہ انسان بی دار کی موجب ہے اس بناء پر اس گمان کو دُور کرنے کے لیے فر مایا گراہے ۔

کہ ابھی وہ کسی معصیت کے صادر ہونے کا مقام نہیں بنا تھالیکن معصیت کے بعد اگر چہ کہ ابھی وہ کسی معصیت کے بعد اگر چہ لوٹانے کے وقت اسے انسان بی لوٹایا جائے گالیکن نافر مان انسان جس سے گناہ صادر ہوئے کے دفت اسے انسان بی لوٹایا جائے گالیکن نافر مان انسان جس سے گناہ صادر ہوئے۔ پس لوٹانے کی حالت کو ابتدا کی حالت پر قیاس نہیں کرنا چاہیے اور سابقہ کرم پانے کی وجہ سے لائل ہونے والے کرم کا امید وارنہیں ہونا چاہیے۔ اور آ وی کرم لائل کی امید کے ساتھ اپنا ول کیسے وابستہ کرے اور کرم سابق سے دھوکا کھائے حالانکہ

لکا یقض مآ آهکو اس نے ابھی تک وہ کام پورے طور پر سرانجام نیس دیا جس کا اس کے پیدا کرنے والے اور عزت دینے والے نے تھم دیا ہے۔ اگر اس کے تھم کو پورا کہ اور بندگی کی ذمہ واری پوری کرتا۔ البت عزت واکرام کی توقع بجاتھی اور اب تو کوتابی اور نافر مانی کی صورت میں خاکف اور ہراساں ہونا چاہیے اور ذلیل وحقیر کیے جانے کی توقع کرنی چاہیے اور وہ جو کہتا ہے کہ نوازے ہوئے گرانانیس چاہیے اور معزز کو ڈلیل نہیں کرنا چاہیے اور وہ جو کہتا ہے کہ نوازے ہوئے گرانانیس چاہیے اور معزز کو ڈلیل نہیں کرنا جائے کی حانے کی صوحت کو کہتا ہے کہ نوازے ہوئے گرانانیس چاہیے اور معزز کو ڈلیل نہیں کرنا مستق ہو جاتے ہیں اور اس مستلے میں کوئی شک ہو۔

فَلْمَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلَى طَعَامِهِ تَوْجِائِ کَهُ آدَى ابْنِ فُوراک کُود کِمِے کَهُ مَنْ طُرِحُ marfat.com Marfat.com ناپاک فضلہ ہو جاتی ہے اس کے بعد کہ اسے پورے طور پر پاکیزگی اور احتیاط سے پالا جاتا ہے اور اس کی پیدائش کے بارے میں حق سجانہ و تعالیٰ کی عنایات معروف ہوتی ہیں جس طرح کہ آ دی کی پیدائش کے متعلق مصروف ہوئی تعین۔ چنانچہ اس مسئلے کو پورے طور پر سوچے کہ

آنًا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا تَحْقِيقَ ہم نے آسان سے پانی اس طرح گرایا کہ انسان کے نظفہ گرانے سے کہیں فزوں تر اور زیادہ ہے۔

ٹیڈ شققنا الاڑف شقا بھرہم نے زمین کواس طرح بھاڑا کہ آ دمی کے پیدا ہونے کے لیے رحم کے لیے ہے۔ کہیں زیادہ ہے اور بیسب عنایات ایک کمزور گھاس کے بارے میں تھیں جو کہ ذمین سے باہر نکلنے کی طاقت نہیں رکھتی تھی۔ جو کہ ذمین سے باہر نکلنے کی طاقت نہیں رکھتی تھی۔

فَانْبَتْنَا فِیْھَا حَبًّا پس ہم نے اس زمین میں دانداُ گایا جو کہ خوراک کے قابل ہے جسے گندم اور چنے

وَعِنَبًا اور دان اتُور جو كه خوراك بمى ہاور ميوه بھى دوا بھى اور شربت بھى۔ وَقَضْبًا اور كھانے كے قابل جزيں جيے شائح كاج چندر اور شكر كندى كه خوراك كاكام دىتى بيں اور جب انہيں كيا كھا كيں تو حرارت اور بياس وُوركرتى بيں اوراگر ديا كر كھا كيں تو معقول تتم كا ، سالن بنتا ہاوراگر مربايا اچار بنا كيں تو ميوے كا تھم حاصل كرتى بيں۔

وَزَيْتُونًا اورزينون جوكم تبل كى جكه كام آتا ہے اورسالن بمى بن سكتا ہے۔

و کُنٹولا اور مجوری جو کہ خوراک بھی ہو نکتی ہیں اور میوہ اور سالن بھی اور اس سے شربت اور رس بنا کرشراب کی جکہ کام میں لاتے ہیں۔ نیز سر کہ بناتے ہیں۔

وَ حَدَائِقَ اور دیواروں والے باغات جن میں مجلوں اور دواؤں کے نتم قتم کے درخت نگاتے ہیں اور اور کا کے نتم قتم کے درخت نگاتے ہیں اور اُسکتے ہیں۔

غُلْبًا کھے درختوں والے جن کی شاخیں پھیلی ہوئی ہوتی ہیں اور لغت عرب ہیں اس افٹنی کوجس کی گردن پر بال بہت زیادہ ہول غلب کہتے ہیں اور وہ شیر جس کی گردن پر اون بہت زیادہ ہؤا ہے بھی اسدغلب کہتے ہیں یہاں اس باغ کوجس میں بہت زیادہ درخت ہیں

marfat.com

اوران درختوں کی شاخیں پھیلی ہوئی ہوں استعارے کےطور پرغلبًا فر مایا گیا ہے۔ وَفَاکِھَةً اور دوسرے میوے جو کہ باغات میں نہیں ہوتے بلکہ صحراوُں اور بیابانوں میں ہوتے ہیں۔

دَابًا اورتم مم كى كماس جوكه خودرو موتى باورايكوئى كاشت نبيس كرتا

مناعًا آگھ وَلِانْعَامِ کُو تا کہ تہمیں اور تہارے چار پایوں کوان خوردنی اجناس سے بہرہ دو فرمائے۔ اس لیے ان خدکورہ اقسام میں سے بعض خاص طور پر جانوروں کے لیے ہیں جسے کھاس کی اقسام اور بعض آ دمی اور جانوروں میں مشترک ہیں جسے غلے اور بعض وہ اقسام ہیں جن کا نچوڑ آ دمی استعال کرتا ہے اور ان کے چھکے نئے ' مخطیاں اور پتے جانور کھاتے ہیں۔ اور اس کے باوجود کھانے کے بعد مید چیزیں کس قدر ذکیل اور حقیر ہو جاتی ہیں اور فضلہ اور گو ہر بن جاتی ہیں اور اسے گھروں سے دُور پھینکا جاتا ہے ان کی بد ہو سے خت نفرت کرتے ہیں اس سابقہ عزت عطاکر نے کو اس لاحق شدہ ذلت پر قیاس کرتا چا ہے اور دھوکا نہیں کھانا چاہیے۔ بہت فرق ہے کہ آ دمی کی خوراک عزت دینے کے بعد عنقریب ذکیل کر نیا جاتا ہے اور آ دمی اس پر مطلع ہوتا ہے اور آ دمی کا اعزاز ایک مدت کے بعد ذلت میں بدل ویا جاتا ہے اور آ دمی اس پر مطلع ہوتا ہے اور آ دمی کا اعزاز ایک مدت کے بعد ذلت میں بدل ویا جاتا ہے اور آ دمی اس مدت کے بعد ذلت میں بدل ویا جاتا ہے اور آ دمی اس مدت کے بعد ذلت میں بدل ویا جاتا ہے اور آ دمی اس مدت کے اور اس مدت کے بعد ذلت میں بدل ویا جاتا ہے اور آ دمی اس مدت کے اور تم مین ہے ۔

فَاذًا جَآءً تِ الصَّاخَةُ تَوجب الي سخت آ واز آئے جو كہ جہان والوں كے كان بہرے كردے اور و صور بچو نكنے سے عبارت ہے۔

یَوْم یَفِدُ الْعَدُ عُنِ آخِیْهِ جَل دن آدمی این بھائی سے بھائے ہاوجود یکداسے
تمام اجنبیول سے زیادہ درست رکھتا ہے اور عمر کی ابتدائی سے اس کے ساتھ مانوس تقااوران بھی ہدردی تعاون اور مشورہ کا سلسلہ قائم تھا۔ واُقِیّه اور اپنی مال سے کہ اس سے
ممائی سے بھی زیادہ محبت کرتا ہے اور اس کے بہت سے حقوق اس کے ذمہ جیں۔ واَبِیْهِ اور
این باپ سے بھی زیادہ میں کی تعظیم مال سے بھی زیادہ ہے اور اس کا حق بھی بڑا ہے بلکہ کو یا بیٹا اس
کی ملک ہے۔

وصَاحِبَةِ اورا پی بیوی سے کہ آدمی کا اس کے ساتھ ماں باپ سے زیادہ تعلق ہے

اس لیے کہ مرتے ؤم تک اس کے ساتھ رہنا منظور کرتا ہے اور مال باپ کے حق کو سمجھتا ہے کہ ایک خواب تھا اور ختم ہو گیا اور ان کے سات^ہ کوئی کام ندر ہا۔

وَبَنِیْهِ اورا بِ بِیوْں ہے جوکہ من کوزدیک بیوی ہے بھی زیادہ پسندیدہ ہیں اس جہت ہے کہ انہیں اپ مرنے۔ کہ بعد اپنا قائم مقام بھتا ہے اور ان رشتہ دار یوں کے ذکر میں ادنی ہے اعلیٰ کی طرف ترتی ہے جیسا کہ پوشیدہ نہیں ہے اور جب ان قرابتوں کے باوجود آدمی اپنے قریبوں ہے بھا مے گاتو اجنبیوں سے تو بطریق اولی نفرت کرے گا۔

کتے ہیں کہ سب سے پہلے جوائے بھائی سے بھائے گا قابیل ہوگا جو کہ ہابیل سے بھائے گا تا کہ خون کے بارے اس کے پیچے نہ پڑ جائے۔اور سب سے پہلے جوائی بیوی سے تنظر اور بے زار ہوگا مضرت نوح اور حضرت لوط علی نہیا وعلیما السلام والحقیۃ ہوں گئا ان وونوں کی عورتیں منافق تعیں اور منافقین کے بارے میں شفاعت قبول نہیں ہے اور سب سے پہلے جوائے بیٹے سے بے زار ہوگا معزت نوح علیہ السلام ہوں مے کہ آپ کا بیٹا کنعان کافر مرا

قیامت کے دن کے قریبوں سے بھا گئے کی وجہ

اور علائے کرام نے قربیوں سے دوڑنے کی وجہ میں اختلاف کیا ہے کہ کیا ہوگی؟

بعض کہتے ہیں کہ حقوق کے مطالب کے ڈر سے بھا مے گاتا کہ اس کا جوحق ضائع کیا تھا اس
وقت اسے دیکھ کراور پہپان کرمطالبہ نہ کرد سے جیسا کہ مفلس ہومی قرض دار سے بھا گتا ہے۔
مدیث پاک میں وارد ہے کہ قیامت کے دن آ دمی اجنبوں کی نسبت اکپ آشاؤں
اوردوستوں سے زیادہ کتارہ کئی کرے گاس لیے کہ دنیا میں اجنبوں کے ساتھ کوئی معاملہ ہی
نہ تھا جس کے مطالبے کا خوف ہو۔

اور بعض کہتے ہیں کہ امراد اور شفاعت کے ڈر سے بھامے گا کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ ان قریبوں کو دوزخ میں لے جائیں اور مجھے انہیں چیٹرانے کے لیے اپنی پچھ نیکیاں دینالازم آئیں یاان کے بچھ گناہ اُٹھاٹا پڑیں جیسا کہ قط کے زمانے میں ای شم کے خوف کی وجہ ہے اپنے قریبوں سے کم ملاہے۔ marfat.com

تغیر عزیزی مسید میسید میسید (۱۰۴۰) میسوال یاره

اوربعض کہتے ہیں کہا**ں وجہ سے بھائے گانان** کی تکلیف اور عذاب دیکھنااس پر دشوار ہوگا اور اپنے اندر شفاعت اور نیکیاں دینے کی ہمت نہیں پائے گا' ناچاران کی نظروں سے حجیب جائے گا۔

، اور سیح بیہ ہے کہ ان تمام وجوہات کی بناء پر بھا مے گا۔ بعض ایک وجہ ہے ' بعض دو وجہ سے اور بعض ناور سے اور بعض ناء پر بلکہ اس دن ہر خص اینے حالات میں گرفتار ہو گا اور کسی اور سے اور بعض متوجہ نیں ہوگا جیسا کہ فرمایا جارہا ہے۔ کی طرف متوجہ نیں ہوگا جیسا کہ فرمایا جارہا ہے۔

ایک المرو مینه میر مین مین مین مین مین مین مین مین میں سے کہ جن کا ذکر مواہر کی الی حالت ہوگی اور وہ یہ فرصت ہی کی الی حالت ہوگی کہ اسے نم اور تشویش اُٹھانے کے لیے بی کافی ہوگی اور وہ یہ فرصت ہی خریس بائے گا کہ اپنے علاوہ کی اور کی طرف متوجہ ہواور اس کی خبر گیری کرے اور جب حادث ایسا ہوگا تو لوگ عزت و ذلت میں مختلف ہوں گے۔ ،

و جُوہ یُومَیْنی چند چبرے اس روز مُسْفِد کاروثن اور چک دار ہوں گے اس وجہ ہے کہ نور ایک کار ہوں گے اس وجہ ہے کہ نورای ان کے باطن سے ان کے ظاہر پرجلوہ گر ہوا اور ان کے چبروں کوروشن کر دیا۔ ضاحہ گئے ہنتے ہوں مگے انعام و اکرام کی تو قع کی بدولت جس کے آثار اپنے او پر ضاحہ گئے ہنتے ہوں سے انعام و اکرام کی تو قع کی بدولت جس کے آثار اپنے او پر

و کھورہے ہیں۔

مُستَبَشِرَةً شادال اورخوش ہول مے اس وجہ سے کہ ذم بدم انعام واکرام میں ترقی پا رہے ہیں اورخوش کی تازگی کے اسباب روز بروز بڑھ رہے ہیں۔

وَوُجُوهٌ يَّوْمَئِذِ اوراس روز کی چہروں عَلَيْهَا غَبَرَةٌ بِرسابی اور غبار ہوگا، گنا ہوں کی تاریکی ظاہر ہونے کی وجہ سے جوان کے باطن میں پیوست تھی اوراب وہ باہرآ گئی۔

تَرْهَقُهَا قَتَرَةُ اس تاریکی کے اوپر سیابی ہوگی اور بیسیابی اگر چہ کفر کا اثر ہے اور کفہ عنہ ول میں جگہ رکھتا ہے کیونکہ گنا ہوں کی تاریکی سے بھی زیادہ مخفی ہے لیکن کفر کے غلبے کی وجہ سے غالب ہو کر ظاہر ہونے میں گنا ہوں کی تاریکی سے بالاتر آئے گی جیسے سیاہ تیل کہ اسے جتنا بھی یانی کے نیچے رکھیں اوپر آتا ہے۔

اُولِیَّكَ هُمُّ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ یہ تاریک اور سیاہ چبروں والے لوگ وہی ہیں کافر بدکار کہ کفر بھی کرتے تھے اور گناہ بھی اور انتہائی ذلت و حقارت کے مستحق ہوئے اور ان کی انسانیت کی طور موجب اکرام نہ ہوئی۔ باوجود یکہ دنیا ہیں ابتدائے پیدائش ہیں وہ بھی مکرم و معظم تھے اور عنایات خداوندی آئیس پرورش کرنے میں معروف رہیں اور ایسے دورگوں کو جمع کرنا ان لوگوں کا خاصہ ہے جنہوں نے کفر بھی کیا اور فجو رہی اور جو صرف کفر یا محض فجو رہی جنہوں کے خربھی کیا اور فجو رکھی تاریک اور گدلا ہے جبکہ کفر کا منگ خالص سیاہ۔

جواب طلب سوال

یہاں ایک سوال باتی رہ گیا اور وہ بہ ہے کہ اس سورۃ کی ابتدا میں دربارِ خداوندی سے
اسے رسولِ عظیم سلی اللہ علیہ وسلم پر عماب نہ کور ہے تو اس واقعہ کو آن مجید میں اُتار نے ک
کیا حکمت ہے ظاہری عقل میں یوں مناسب معلوم ہوتا ہے کہ اس عماب و خطاب کو زبان
جر کیل علیہ السلام کے ذریعے خفیہ طور پر ارشا دفر مایا جاتا جو کہ رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم
سے کہد سے حالا نکہ یے تر آن پاک میں نازل ہوا اور صدیوں سے قاریوں اور تلاوت کرنے
والوں کی زبان پر اس کا ذکر ہور ہا ہے اور یہ واقعہ بار بارلوگوں کی یاد میں آتا ہے۔

علام عدا تعلیہ کے در میں اس کا دکر ہور ہا ہے اور یہ واقعہ بار بارلوگوں کی یاد میں آتا ہے۔

علام عدا تعلیہ کی دبان پر اس کا ذکر ہور ہا ہے اور یہ واقعہ بار بارلوگوں کی یاد میں آتا ہے۔

علام عدا تعلیہ کی دبان پر اس کا دکر ہور ہا ہے اور یہ واقعہ بار بارلوگوں کی یاد میں آتا ہے۔

اس کا جواب میہ کہ یہ واقعہ اور میر عماب بے شارفوائد پر مشمل ہے جیسے آ ماب تعلیم اس کا جواب میں اخلاق تو جا ہا کہ اس واقعہ کواس کے تمام فوائد سمیت قرآن ہاک کا جزو بیان تو ایک کا جزو بنادیا جائے تا کہ لوگ ہر لیجہ اس سے بہرہ ور ہوں اور محروم ندر جیں۔

اس واقعہ کے فوائد

اس واقعہ کے فوائد میں سے چندا کیے کا ہم یہاں ذکر کرتے ہیں اور باقی سننے والے کی روشن فراست اور میچے سمجھ کے حوالے کرتے ہیں۔

پہلا فائدہ یہ ہے کہ انبیاء علیهم السلام بھی جمعی اجتہاد کرتے ہیں اور اپنی قوت عقلی کے ساتھ تواعد شریعت ہے کوئی تھم نکالے ہیں اور اس تھم میں انہیں عنایت خداوندی ہے منشا قدرت کی طرف رہنمائی کی جاتی ہے جیبا کہ اس واقعہ میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے یوں مستجما كهنع عام كونفع خاص يرمقدم ركمنا جابي اور دعوت اسلام كوتعليم قرآن ياك يرترجيح دي جانی جاہے اور اس راہ سے بعظے ہوئے لوگول کو مائل کرنا جاہے اور بدکہ جوخود بخو د طالب اور شوقین ہے اس کے حال پر فی الغور اتی توجہ کی ضرورت نہیں کہ اس کی طلب آخر اے منزل آشنا كردے كى اور يهال يوں رہنمائى فرمائى كى كداس صورت ميں تفع عام كا كمان بتما جبكة تفع خاص معلوم تھا۔ نئے عام اس وقت نفع خاص پر مقدم ہے جب وونوں معلوم ہوں یا وونوں موہوم۔موہوم کومعلوم پرتر جے نہیں ہے اور دعوت اسلام کو بھی تعلیم قر آن پر اس وقت ترجیح دى جائے۔ دعوت كى قبوليت مختل مواور جب قبوليت كالكمان ندموتو جمت أيك مرتبدى قائم كرنا كافى بــــــــ مبالغة اصرار اور دوسر مصفرورى امور معصفول بوية كى ضرورت نبيس ہے اور اس طرح بھلے ہوؤں کورام کرنا اس وقت ضروری ہے کہ ان کے رام ہونے کی توقع ہواور تو تع نہ ہونے کی صورت میں کوئی ضرورت نہیں اور اس کے علاوہ جب ایجا مقصد بظاہر مقصد فاسد کے ساتھ مشتبہ ہو جائے تو وہ اجما مقصد بھی تھم شرع کے ساتھ جموڑ دیتا جاہیے۔ يهال اغنياء كے دلوں كو ماكل كرنا اور كمزوروں بينواؤں اور نابينا كداؤں سے بيتو جي ريا اور دنیا دارول کی پاس خاطر کی تهمنت کا مقام ہوتا۔ اس وقت الجھے مقصد کو بھی نظرانداز کر دیتا چاہے۔اتقوا مواضع التهد لین تہبت کے مقام سے بچور martat.com

دوسرا فائدہ یہ ہے کہ جس کی تعظیم ضروری ہواس کی تعظیم کی رعابت لاز آگی جائے اگر چہدہ اس تعظیم پر مطلع نہ ہو۔ اس لیے کہ وہ نابینا صحابی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے چہرہ انور کی کیفیت سے کہ نقبض ہے یا خنداں۔ میری طرف متوجہ ہیں یا غیرمتوجہ مطلع نہیں تھے کہ انہیں تکلیف ہوتی لیکن چونکہ صاحب ایمان اور طالب راہ خدا تھے ان کا احر ام ضروری ہوا۔ ای لیے حدیث شریف میں وارد ہے کہ تدک السلام علی الضریر خیانة یعنی نابین ہوا ، خوداسلام کاحق تلف ہوا۔

چوتھا فائدہ بیہ ہے کہ کفار کی طرف مائل ہونے کی اگر چدا جھے مقصد کے اعتبار سے شرعی طور پر رخصت ہے کیکن نقصان سے خالی نہیں۔

یا نچوال فائدہ:مسلمان سے بنوجہی اگر چہ بلاقصد ہو درست نہیں۔

چھٹافائدہ: دوستوں پر عماب اور ان کی کوتا ہوں پر تنیبہ ضرور کرنا جا ہے کہ دوس کے باقی باقی رہنے کی علامت ہے۔ ویبقی الودھا بقی العتاب لینی جب تک عماب وشکایت باقی ہے دوسی بھی ہاتی ہے عماب اس وقت ترک کیا جاتا ہے جب دوسی ختم کرنامقصود ہو۔

ساتواں فائدہ اگر کسی کو کسی عہدہ پر مقرر کریں اگر چہ مقرب در باراور عالی مقام ہوائی مقام ہوائی کے احوال کی باز پرس اور اعمال کے تبحس سے خفلت نہ کی جائے کہ بی خبر گیری بادشاہی کی شرط اور جہانبانی کے لیے لازم ہے۔عہدہ داروں اور کارکنوں کو مطلق العنان کرنے سے مملکت کے کام میں دخنہ پڑتا ہے۔

والمن فائده كوئي فقير بمي مواسع حقير ندسمجما جائے كيا پية اس كا خدا تعالى كے حضور

کیامرتبہہے۔

خاکساران جہاں رابحقارت متحر توچہ دانی کہ دریں گرد سوارے باشد

نواں فائدہ: طالب علم کورکاوٹوں کے باوجود طلب علم سے باز نہیں رہنا جا ہے۔اس لیے کہوہ نابینا ، فقیر بھی تھا اس کا ہاتھ پکڑنے والا بھی کوئی نہ تھا بھر بھی طلب علم کی خاطر در بار

تغير عزيزي مستعب المعال بإره

سیدعالم ملی الله علیہ وسلم میں آتا تھا اور اگر لوگ علم کی طلب اور خدا تعالیٰ کی راہ کی تلاش میں رکاوٹوں کا بہانہ کریں تو بیکام ہرگز میسر نہ ہوگا۔ اس لیے کہ اپنی آمدنی کے انداز ہے پر کوئی شخص بھی رکاوٹوں سے خالی نہیں ہوتا۔

دسوال فائدہ: یہ ہے کہ استاد اور مرشد کو جا ہے کہ طالب علم اور راوِ حق کے طالب پر جبیبا بھی ہوٴ شفقت اور توجہ فر مائے اور جو جا نہتا ہے' اسے فائدہ پہنچا ہے۔

سیارہواں فائدہ: یہ ہے کہ تعلم اور مرشد کو جا ہے کہ طالب علموں اور رشد و ہدایت حاصل کرنے کے لیے آنے والول میں و نیوی بڑائی کال اور مرتبہ کا فرق نہ کرے بلکہ شوق اور حرص کی کثرت اور قوت استعداد کی بناء برا تمیاز عطا کرے۔

بارہوال فاکدہ یہ ہے کہ اگر کی ضعیف کو کسی بزرگ کی طرف سے کسی وجہ سے کوئی رنج پہنچ تو اس بزرگ کو چا ہے کہ فورا اس کا تدارک کرے اور بیاس بزرگ کے مرتبے کے منانی نہیں بلکہ اس مرتبے کی بلندی میں زیادتی کا باعث ہاں لیے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم ان آیات کے نازل ہوتے ہی اس ناجیے کے پیچھے خود جلدی جلدی تشریف لے مجے اور ان رئیسوں اور سرداروں کی کوئی پرواہ نہ فرمائی جو کہ آپ کی محفل میں بیٹھے تھے اور کیا ہی اچھا کہا میں اور سرداروں کی کوئی پرواہ نہ فرمائی جو کہ آپ کی محفل میں بیٹھے تھے اور کیا ہی اچھا کہا گیا ہے

۔ تواضع ز گردن فرازاں کوست محدا گر تواضع کند خوے اوست

یعن بلندمرینے والے تواضع کریں تو بہت ہی اچھا کام ہے اگر منگیا تو اضع کرے تو یہ تو س کی عادت ہے نہ

تیرہوال فائدہ یہ ہے کہ جب رنجیدہ کوراضی کریں تو چاہیے کہ اس کی اس قدرافزائی
کی جائے اور گزشتہ معمول سے زیادہ اس کا اعزاز واکرام کیا جائے تا کہ اس کے زخم کی مرہم
ہو سکے۔ اس لیے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس ناجیے کو واپس لاکرائی چادر مبارک پر
بھایا اور فر مایا انت فی عیال صحمد بابقیت بعنی جب تک تو زندہ ہے میرے کئے کے
تکم میں ہے تیرے اخراجات میں برداشت کروں گا۔

چودھواں فائدہ یہ ہے کہ قرآن مجید میں ان آیات کے باتی رہے کا پہتہ چلا کہ وہی الہی پہنچانے میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم انتہائی امانت دار سے ورنہ بیر عمّاب و شکایت جو کہ آپ کی ذات پاک پر بہت گراں تھی کو گوں تک نہ پہنچاتے جس طرح کہ حضرت اُم المونین عائشہ مدیقہ رضی اللہ عنہا ہے مروی ہے کہ آپ نے ایسے مقام کے متعلق فر مایا ہے کہ اگر حضور صلی اللہ علیہ وسلم وی میں سے بچھ چھیاتے تو حضرت زینب رضی اللہ عنہا کا داقعہ چھیاتے کہ کمال دائعہ حسے تھا۔

پندرہواں فائدہ یہ ہے کہ طالب علم کو چاہیے کہ خدا کا خوف دکھنے والا ہواس لیے کہ اللہ تعالیٰ نے اس طالب علم کے بارے میں بطورِ تعریف فرمایا ہے کہ اَمَّامَنَ جَآءَ كَ يَسْعَى وَهُوَيَغُشَى

سولہوال فاکدہ یہ ہے کہ اس محفل میں حضور غلیہ العلوۃ والحلام کے پچا عباس بن عبدالمطلب اور دوسرے رشتے دار حاضر سے ان کے ساتھ ال بیٹے پرعماب ہوا۔ معلوم ہوا کہ اگر کمی شخص کے رشتے دار خداتعالی سے روگردانی کریں تو ان کے ساتھ نشست و برخاست نہیں ہونی چاہیے اور جواجنی طالب حق ہواس کے ساتھ ال بیٹھنا اور مصاحبت کرنا چاہیے کہ دوست کے دشنوں کو دوست بناناصح نہیں اور دوست کے دوستوں سے روگردانی محل عماب ہے ای لیے قرآن مجید میں دوسرے مقام پر فرمایا گیا ہے کہ لاَتَجِدُ قَوْمًا اَبْاءَ هُمُ اَوْ اِخْوَانَهُمُ اَوْ خَوْمَدُونَ هُنْ حَادَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ کَانُوا اَبَاءَ هُمُ اَوْ اِخْوَانَهُمُ اَوْ خَوْمَدُونَ هُمُنْ حَادَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ کَانُوا اَبَاءَ هُمُ اَوْ اِخْوَانَهُمُ اَوْ عَوْمَدُونَ هُمُنْ حَادَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ کَانُوا اَبَاءَ هُمُ

اوریہاں سےمعلوم ہوا کہ تعلیم وارشاد کے دوران بھی ذی استعداد اورشوق والوں کو رشتے داروں پرمقدم رکھا جائے۔

ستارہواں فائدہ یہ ہے کہ جس شخص کی وجہ سے ایک عمرہ مقصد جو کہ ادب ہے حاصل ہوا سے برانہ بھیں جیسا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اس نابینا سے محبت فرمائی کہ اس کا احترام فرماتے اور مرحبا فرماتے اور اس کی ضروریات کا خیال رکھتے۔اللہ تعالی تو فیق دینے والا اور مدد کرنے والا ہے اور ہم اس سے مدد جا ہے ہیں۔

marfat.com

سورة اذا الشمس كورت

کی ہے اس میں انتیس (۲۹) آیات ایک مو چار (۱۰۴) کلمات اور پانسوتینسیس (۵۳۳) روف ہیں اور سے حدیث پاک میں حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہا کی روایت کے ساتھ وارد ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا ہے کہ جو چاہے کہ قیامت کے دن کو و نیا میں سرکی آنکھوں ہے و کچھے اسے چاہیے کہ سور ہ اواالشمس کورت پڑھے۔ نیز حدیث پاک میں ہے کہ ایک دن حضرت امیر المونین ابو بمرصد بق رضی اللہ عنہ نے بارگا ہے سیدعالم سلی اللہ علیہ وسلم میں عرض کی کہ یارسول اللہ! آپ کو بر حما پا جلد آگیا لیتی آپ کے مزاج شریف کی قوت ہے جمعے بیتو قبع تھی کہ اس عمر میں جو کہ ساٹھ (۱۰) سال کے لگ بھگ ہے آپ پر بر حما ہے کہ اس تو قع کے خلاف ہوا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے برحما ہے فرایا کہ جمعے ان پانچ سورتوں نے بوڑ حاکر دیا ہے۔ سورۃ ہو و سورۃ واقع سورۃ والمرسلات مورۃ عمر بیساءلون اور سورۃ اوالقس کورت ۔ پس ان سورتوں میں اللہ تعالیٰ کے وہ عذاب نہور جبی ہو کہ دنیا و آخرت میں انہیاء کیم میں اللہ تعالیٰ کے وہ عذاب نہور ہوں کو دنیا و آخرت میں انہیاء کیم میں اللہ می مخالف کی وجہ سے اُمتوں پر گزرے یا گزیں گے۔ بجھے ان عذابوں کا سنتے ہی میرا اُمت کا غم غلبہ کرتا ہے اور خم کا خاصہ میہ ہو کہ ور حاکر دیا ہے۔ چیے ان عذابوں کا سنتے ہی میرا اُمت کا غم غلبہ کرتا ہے اور خم کا خاصہ میہ ہو کہ ور حاکر دیتا ہے۔ چنانچے کہتے ہیں کہ آدی کو بوڑ حاکر دیتا ہے۔ چنانچے کہتے ہیں کہ آدی کو بوڑ حاکر دیتا ہے۔ چنانچے کہتے ہیں کہ آدی کو بوڑ حاکر دیتا ہے۔ چنانچے کہتے ہیں کہ

سألت الاطباء ذات يوم اخبرنى مساشيب نسى قسال بسلسغسم فسقسلت لسه عملى غيراختتام لقد اخطات فيما مّكت بل غم

یعنی میں نے طبیبوں سے پوچھا کہ جھے کس چیز نے بوڑھا کر دیا؟ اس نے کہا بلغم! میں نے بات کا منتے ہوئے کہا کہ تو نے غلط کہا بلکٹم نے۔

نیکن حضور ملی اللہ علیہ وسلم کے بڑھا ہے سے مراوجہم کی ظاہری کمزوری ہے نہ کہ بالوں کی سفیدی اللہ علیہ وسلم اللہ العلوٰۃ والسلام کے بال مبارک استے سفید نہیں ہوئے سفید نہیں ہوئے سفید کرنے والے کر ظاہر ہوں۔ جنانجہ حضریت انس بن مالک رمنی اللہ عنہ جو کہ IM atrade. Coin

حضور علیہ الصلوٰ ق والسلام کے خادم خاص ہیں فرماتے بھے کہ آپ کے وصال پاک کے وقت سرمبارک اور ریش مبارک میں سفید بالوں کی تعداد ہیں (۲۰) تک نہیں پینجی تھی اور ظاہر ہے کہ بیر مقدار صرف و کیھنے والے کو معلوم نہیں ہوسکتی اور نہ بی استے بالوں کو عرف میں بڑھا پا کہ بیر مقدار صرف و کیھنے والے کو معلوم نہیں ہوسکتی اور نہ بی استے بالوں کو عرف میں بڑھا پا

سور وعبس کے ساتھ ربط کی وجہ

اوراس سورة كے سورة عبس كے ساتھ ربطى وجہ يہ ہے كماسى كى ابتدا بيس قرآن مجيد كے اوساف كااس انداز بيس ذكر فرمايا كيا ہے كہ كُلّا إِنّهَا تَذْكِدَةٌ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهُ فِي كَاوساف كااس انداز بيس ذكر فرمايا كيا ہے كہ كُلّا إِنّهَا تَذْكِدَةٌ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهُ فِي صُحْفٍ مُكَدّمَةٍ مَرُوعَةٍ مُطَهَرًةٍ بِآيْدِي سَفَرَةٍ كِدَامٍ بَرَدَة جَبَداس سورة كَ مَرْ مِن مِي مضمون معكوس ترب كے ساتھ ذكور ہے كمان القول رسول كريم ان موالاذكر للعالمين نيز وہاں آخر ميں قيامت اس كے اوساف اور مختبول اور مولنا كيول كا ذكر ہے كہ للعالمين نيز وہاں آخر مِن قيامت اس كے اوساف اور مختبول اور مولنا كيول كا ذكر ہے كہ يوم يوم واقية وأينية وصاحبيته وبَنينية جبكہ يهال وبى مضمون شرح وسط كے ساتھ ييان موا ہے۔

وجيشميه

اس سورة كوسورة تكويركانام دين كى وجديه كاس سورة كى ابتداهى يكى حادثة ذكر كيا ميا به كه الله بوجائ كى اور قيامت كے حادثوں ميں سے كه ان ميں الله بوجائے كى اور قيامت كے حادثوں ميں سے كه ان ميں الله باره (١٢) حادثے ذكر فرمائے محتے ہيں بيحاد شهسب سے خت اور مشكل ہے۔ اس اجمال كى تفصيل بيہ كه جب حادثه كى مقعود بالذات پر رونما ہوتا ہے تو وہ اس حادثے سے زيادہ سخت ہوتا جو كه غير مقعود بالذات پر رونما ہومثلاً جان كا ضائع ہوتا جو كه مير مقعود بالذات بير رونما ہومثلاً جان كا ضائع ہوتا جو كه ترمقعود بالذات ہے مال كے ضائع ہوئے سے زيادہ تخت ہے اس ليے كه مال جان كو تفعی بنجانے كے ليے مطلوب مين الذات۔

نیز جب اس مادئے کے کوئی دوسرا مادشہ مقابل نہ ہوتو وہ اس مادئے سے زیادہ بخت بیز جب اس مادئے کے کوئی دوسرا مادشہ مقابلہ کی صورت میں مادشہ کی شدت ہلک ہوجاتا ہے جس کے کوئی مادشہ مقابل آجائے کیونکہ مقابلہ کی صورت میں مادشہ کی شدت ہلک ہوجاتی ہے۔ مثلاً ایک طرف سے ایک فخص کو جان کا خطرہ لائق ہوا در دوسری طرف سے Marfat.com

اسے مرتب اور مال کی زیادتی کی تو تع دامن گیر ہوتو اس صورت بیں جان دالے عاد ثے کو شدید شار نہیں کرتا اور پہلوتی نہیں کرتا اور قیامت کے بارہ (۱۲) عادثوں بیں ہے کہ جنہیں اس صورة بیں ذکر کیا گیا ہے 'ہر حاد ثے نے یا غیر مقصود بالذات کو نقصان پہنچایا ہے۔ مثلًا کھا آسان لینی آسان کو اپنی جگہ ہے تھنے لینا' آسان کو خراب کر دے گا جبکہ دنیا والوں کی نسبت ہے آسان مطلوب بالذات نہیں ہے اس لیے کہ ان کا نقع یاب ہوتا صرف ستاروں نسبت ہے آسان ایک صندوق سے زیادہ نہیں ہے کہ جس میں جواہر نفسیہ اور بلند قیمت سامان رکھا گیا ہے آسان ایک صندوق سے زیادہ نہیں ہے کہ جس میں جواہر نفسیہ اور بلند قیمت سامان رکھا گیا ہے آگر صندوق ٹوٹ گیا اور جواہرات اور ساز دسامان باقی رہا تو اتنا گراں نہیں ہے۔ کہ کو کم سرت اور فرحت کا موجب ہے مثلاً جہنم کو بخرکانا کہ اس کے مقابلے میں جنت کو قریب کرنا بھی ہوگا۔ سواتے اس عاد شرک (لیمن مورج کی کا نا کہ اس کے مقابلے میں جنت کو قریب کرنا بھی ہوگا۔ سواتے اس عاد شرک (لیمن صورح کی روشی ضائع ہونا) کہ مطلوب بالذات پر جو کہ سورج کی شعاعیں ہیں' صدمہ بھی ہورے کی روشی ضائع ہونا) کہ مطلوب بالذات پر جو کہ سورج کی شعاعیں ہیں' صدمہ بھی ہوگا۔ گا اور اس کے مقابلے میں کوئی سرت افر الور حاد شبھی موجود نہیں ہوگا۔

نیز سورج کو بے نور کرنا حالات کے انکشاف اور نفس انسانی کی جدائی کے اسباب میں سب سے عمدہ ہے کہ سورج کی شعاعوں کی چمک کی وجہ سے بھری محسوسات منکشف ہو جاتی ہیں اور محقولات اور وجدانیات کے ادراک سے زکاوٹ بن جاتی ہیں اور بہی وجہ ہے کہ محقولات میں غوروفکر کا وقت رات کو مقرر کیا جمیا ہو رخواب دیکھنے کا بھی بہی وقت ہو اور نفسانی کیفیات کی زیادتی کا وقت جو کہ عاشقوں اور فریفت لوگوں کو یا بیماروں اور وردمندوں کو افسانی کیفیات کی زیادتی کا وقت جو کہ عاشقوں اور فریفت لوگوں کو یا بیماروں اور وردمندوں کو یا مصیبت زوہ اور تکلیف میں جتلا لوگوں کو پیش آتی ہیں 'بھی وہی ہے اور المل مراقب و توجہ بھی ای مصیبت زوہ اور تکلیف میں جتلا لوگوں کو پیش آتی ہیں 'بھی وہی ہے اور المل مراقب والے بھی ای وقت مصروف کار ہوتے ہیں اور سمندر کو بھڑکانے اور بہاڑوں کے متحرک ہونے سے ستاروں کا تاریک ہونا جی اس حاوثے کے پہلو میں کوئی مرتبہ نہیں رکھتا کہ ستارے اکثر ستاروں کا تاریک ہونا جی اور سمندر بنی آ دم کی ضرورتوں میں اتنا نفع بخش نہیں ہے کہ تاریک اور جو جاتے ہیں اور سمندر بنی آ دم کی ضرورتوں میں اتنا نفع بخش نہیں ہے کہ اسے مطلوب بالذات تارکیا جاسے علی فراالقیاس پہاڑ اور دوسرے حوادث کی مختی خود ظاہر اسے مطلوب بالذات تارکیا جاسے علی فراالقیاس پہاڑ اور دوسرے حوادث کی مختی خود ظاہر

ہم میاں مینیے کہ ان بارہ (۱۲) حادثوں کو بہال خصوصیت کے ساتھ کیوں بیان فرمایا مي ہے اس كى وجديہ ہے كہ يہاں تفس انسانى كالسنديدہ اور نقصان وہ چيزوں يرتوجه كرنے ہے منقطع ہونے اور اس کے شعور وہم کے آسانی ارواح کی مدد سے کشادہ ہونے واعمال کی مثالی صورتوں کے ظاہر ہونے اور اجھے مُرے کاموں میں سے ہرایک کی جزا کی مقدار کے تعلتے چوکہ علیت نفس ما احضرت کامضمون ہے کا بیان کرنا منظور ہے اور ان بارہ (۱۲) حادثوں میں سے ہرایک اس کام میں مجھ دخل رکھتا ہے۔ پس سورج کو لیٹنے اور ستاروں کے تاریک ہونے کی وجہ سے نفس انسانی کا تعلق آسان کے ساتھ جو کہ اپنی ضروریات میں تھا'منقطع ہوجائے گااس لیے کہاس کا دیکھنے کی حس نصلوں اور موسمول کے اختلاف مہیوں اور جاندوں کے بدلنے اور ستفتل کے حادثوں کوبل وقت پہچانے میں تفع لینا مرف انبی جرموں کی شعاعوں اور حرکات کی وجہ سے تھا اور اس کے مانوس جہان کی حبیت اس انتلاب سے خراب ہوجائے کی اور پہاڑوں کے چلانے اور زمین کے ملنے کی وجہ ے زمن میں رہے معدنیات تکالے کھیتیاں اور پھل اُ کانے چشمے جاری کرنے اور نہریں جاری کرنے سے اس کی امید ٹوٹ جائے گی اور اس کے کھر کامنحن بربادی کی طرف جلا جائے گا اور اونٹیوں کو بے کار چوڑنے کی وجہ سے اس کی توجہ کھریلوحیوانات حاصل کرنے ودور محمی بینم اون نسل اور اولاد حاصل کرنے کی طرف سے ست ہو جائے گی اور اس انتلاب سے کویا اس کا باور کی خانداور اس کے کمر کا خزاند خراب ہو جائے گا اور وحشی جانوروں کے جمع ہونے کی وجہ سے خطی کے جانوروں کا شکار کرنے اور انہیں مسخر کرنے اور ان نعنوں سے جو کہ کھال کیٹم مثل نافہ اور ان کے دوسرے اجزا سے لیتا تھا سے اس کی ہمت منقطع موجائے کی اور دریاؤں کے بعراک اُٹھنے کی دجہ سے مشتی محصفر بحری تجارتوں اُ حیوانات کے شکار اور موتی مونکا عزر اور عقیل نکالنے ہے مابوی ہو جائے گی اور یہ جھ (۲) حادثے عالم دنیااورجم انسانی کے امور کے ساتھ وابستہ ہیں۔

اوراس کے بعد اجھے نفوس کے اپنے ہم جنسوں اور شریر نفوس کے اپنے ہم جنسوں کے ساتھ ملنے اور ایک کی مجنسوں کے ساتھ ملنے اور ایک کی کیفیات نفسانیہ کے دوسرے کے دل پرمنعکس ہونے کی وجہ سے اپنی

وجدانیات ہرکی کے سامنے زیادہ واضح طور پرجلوہ گر ہوں گی اور دہ اپ آپ کو اجمالی طور پر اللی خیراور اللی غربر اور اللی خیراور اللی خیراور اللی غربر اور اللی خیراور اللی غربر اور اللی خیراور اللی خیراور اللی شعور وقبم میں جان اس جہان انسانی شعور وقبم میں بہت کشادگی آگئ ہے کہ اس طرح کی بے نقش تختیوں پر بھی سوال و جواب کے نقوش ظاہر ہوگئے ہیں۔ نیز وہ دریافت کر لے گا کہ یہاں اگر چہ حقوق ضائع کرنے کے لیے پیری مورک شدید تعلقات درمیان میں ہوں ہر چھوٹے براے کے حقوق کو پورے طور پر حاصل مادری شدید تعلقات درمیان میں ہوں ہر چھوٹے براے کے اور اعمال ناموں کے کھلنے کی وجہ سے کرنے کا معاملہ ہے کار اور فعول نہیں چھوڑا جائے گا اور اعمال ناموں کے کھلنے کی وجہ سے این افعال واقوال کی تفصیل دریافت کر لے گا۔

اور آسان کو مینیخے کی وجہ سے جو کہ عالم مثال کی بخل سے کنامہ ہے کہ اس قوت خیالیہ کا خزانہ اور اسان کو مینیخے کی وجہ سے جو کہ عالم مثال کی مثانی صور تیں دیکھے گا اور اسے حقیقت حال کا سراغ طل جائے گا کہ میں نے ائیر جری رات میں کیا گل کھلائے۔

اور دوزخ کی آگ بھڑ کانے اور جنت کو آرائش و زیبائش کے ساتھ قریب لانے ک
وجہ سے ان اعمال کی جڑا کی مقدار جو کدان کی مثالی صورتوں کا تقاضا ہے پورے طور پر روش
ہوجائے گی اور اس وقت علمت نفس ما احتضوت کا مضمون جلوہ گر ہوجائے گا اور ان
چھ(۲) انقلابات کا تعلق عالم آخرت اور انسان کی عقلی اور خیالی قوتوں کے ساتھ ہے اور اس
تقریرے اس ترتیب کی رعایت کی وجبھی واضح ہوگئ۔ نیز ثابت ہوگیا کہ عالم برزخ میں
نفسِ انسانی کوجم سے جدا ہونے کے باوجود اپنے اعمال کے طالات کی اطلاع ممکن نہیں
ہوا انسانی کوجم سے جدا ہونے کے باوجود اپنے اعمال کے طالات کی اطلاع ممکن نہیں
تعلق اپنے اقارب اور بنی نوع کے طالات سے قوجہ اور اپنے گرشتہ طالات کو یاد کرنا منتظم
نہیں ہوا اور اسے خلوص و کمال کے ساتھ جہان غیب کے ساتھ ملتا عاصل نہیں ہوا ای لیے
اسے عالم برزخ کہتے ہیں کہ ایک وجہ سے دنیا کے احکام رکھتا ہے اور ایک وجہ سے آخرت
کے احکام جیسا کہ ایک فیض کی شہر یا ملک میں ایک مدت تک سکونت اختیار کر کے کی
دوسرے شہریا ملک کی طرف شقتی ہوگیا اور ابھی اس کا گھر پہلے شہر میں موجود ہے اور اس کے

عزیزوا قارب وہاں رہتے ہیں اور دہاں خط و کتابت اور آمدورفت رکھتا ہے اس حالت میں اس کی اس شہرے پورے طور پرمنقطع ہونے کی صورت نہیں بنتی۔ اس کی اس شہرے پورے طور پرمنقطع ہونے کی صورت نہیں بنتی۔ پیٹے اللّٰیہ اللّٰہ عملٰ اللّٰہ علیٰ اللّٰہ علیٰ اللّٰہ علیٰ اللّٰہ علیٰ اللّٰہ اللّٰ

اِذًا الشَّهُ سُ كُوِدَتُ جَب كَه سورج لِين دیا جائے اور لغت عرب میں تکویر کا معنی کی چیز کے اروگر و لینینا ہے جیسے و گھتاریاری کہ اسے گول وائرہ کی صورت میں لینیتے ہیں اور کور العمامہ جمعنی وستار کا بی ای لفظ سے ہاور چونکہ سورج کی شعاعیں وسیع ہیں اور انہیں ورکرنے کو ذہن میں وستار لینینے ہے کہ ساتھ تشبیہ دی گئی ہے اور اس لفظ کو بطورِ استعارہ استعال فر مایا گیا ہے۔ گویا جب تک اس کی شعاعیں وسیع تھیں' کیڑے کے تھان کی طرح تھیں کہا ہے۔ گویا جب تک اس کی شعاعیں وسیع تھیں' کیڑے کے تھان کی طرح تھیں کہا ہے کھول کر ڈال دیا گیا ہے اور جب اس کی شعاعیں زائل ہوگئیں اور اس کا جسم پیرکی چکی کی طرح بے نوررہ گیا گویا کہ اس تھان کو لیبیٹ دیا گیا۔

ستارے نور کی ذنجیروں کے ساتھ لٹکنے والی قدیلوں میں ہیں اور ان قدیلوں کی زنجیریں فرشتوں کے ہاتھوں سے فرشتے فوت ہوں گے تو وہ قدیلیں ان کے ہاتھوں سے مجھوٹ جائیں گی اور ستارے بھر کر گر پڑیں مے اور ان کا نور زائل ہو جائے گا۔ پس اس سورة میں اس انقلاب کی انتہا بیان کی گئی ہے جو کہ ستاروں پر رونما ہوگا جبکہ اگلی سورة میں انقلاب کی ابتدا کا بیان ہے اور لفظ نجوم اور کوا کب کا اختلاف اسلوب کلام کے تعین کے لیے انقلاب کی ابتدا کا بیان ہے اور لفظ نجوم اور کوا کب کا اختلاف اسلوب کلام کے تعین کے لیے ہواور اس لیے بھی کہ لفظ جم میں چمک طاہر ہونے کا پت بھی میں آتا ہے۔ پس اس کے اور اس لیے بھی کہ لفظ جم میں چمک طاہر ہونے کا پت بھی میں آتا ہے۔ پس اس کے مناسب انکد اربیخی تاریک ہونا ہے۔ جبکہ کو کب کے لفظ میں قائم اور رائخ رہنے کا پت لگا ہے مناسب انکد اربیخی تاریک ہونا ہے۔

وَإِذَالْحِبَالُ سُيِدَتَ اور جب پہاڑ چلا دیئے جائیں اور وہ بادلوں کی طرح ہوا میں اُڑا دیئے جائیں جبکہ پہاڑ فرش کے پھراور زمین کے کنگر کی طرح تھے جب ان کی حالت میں ہوگئ تو قیاس کرلیا جائے کہ زمین کی حالت کیا ہوگی۔

وَإِذَا الْعِشَارُ عُظِلَتُ اور جب وس بابا باردار او محفوں کو بے کار چوڑ دیا جائے اور ان کے مالک ان پر توجہ نہ کریں اور الی او بخی کا خصوصیت سے ذکر کرنے کی وجہ یہ ہے کہ نفسِ انسانی کے تعلق کا اپنے اموال سے منقطع ہونے کا بیان مقصود ہے اور جن اموال کی محبد اشت اور خبر گیری کی زیادہ تر ضرورت ہے وہ جانور ہیں اس لیے کہ نفذی جواہرات اور مامان کی ہروقت بھمبائی اور خبر گیری کی ضرورت نہیں ہوتی اور کیبی باڑی درخت عمارات اور محمروں کی ہوقت اور کیبی باری کی خرورت نہیں ہوتی اور کیبی باڑی درخت عمارات اور محمروں کی حفاظت بھی چاہیے محر ہر کھلا اور ہر گھڑی نہیں۔ بخلاف جانور کہ ہروقت باعد ہے کہ محروں کی حفاظت بھی چاہیے محر ہر کھلا اور ہر گھڑی نہیں۔ بخلاف جانور کہ ہروقت باعد ہے کہ مخبوں کو سے سے دیا دو سے دیوں کے خرد کے سب سے زیادہ میں جاتو کہ کری خرید لے اور جانوروں میں سے ایسی اور دور ہی تو تع ہوتی ہے۔ جھ برا ہونے کی وجہ ہی کہ دورہ ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی ہوتے کی وجہ اس کا دورہ دور مرے جانوروں کے دورہ سے کہیں زیادہ ہو جاتا ہے اور جب اس بنی ہر اس کا دورہ دورم رے جانوروں کے دورہ سے کہیں زیادہ ہو جاتا ہے اور جب اس بنی ہر اس کا دورہ دور کی ہوئی جو گھ ان کے ہوئی ہوئی جو گھ ان کے ہمارایت کلام کے پہلے خاطب عرب ہیں ناچاراس چیز کی رعایت ضروری ہوئی جو گھ ان کے ہرایت کلام کے پہلے خاطب عرب ہیں ناچاراس چیز کی رعایت ضروری ہوئی جو گھ ان کے ہرایت کلام کے پہلے خاطب عرب ہیں ناچاراس چیز کی رعایت ضروری ہوئی جو گھ ان کے ہرایت کلام کے پہلے خاطب عرب ہیں ناچاراس چیز کی رعایت ضروری ہوئی جو گھ کہ ان کے ہرایت کلام کے پہلے خاطب عرب ہیں ناچاراس چیز کی رعایت ضروری ہوئی جو گھ کہ ان کے ہرایت کا درہ کی دورہ کی دورہ کیا جو باتا ہے اور جوانوں کے دورہ کی دورہ کی کیا کہ کو کی خوان کے کہ کیا کہ کی دورہ کی دورہ کی کیا کہ کی دورہ کی دورہ کی کی دورہ کی دورہ کی کیا کہ کیا کہ کی دورہ کی دورہ کی کی دورہ کی دورہ کی دورہ کی کی دورہ کیا کی دورہ کی دورہ کی دورہ کے کہ کی دورہ کیا کی دورہ کی دورہ

ز ہنوں میں جاگزیں ہے اوران کے خیال کے خزانے میں غالب طور پراس کی صورت حاضر رہتی ہے کیونکہ بلاغت کا تقاضا بہی ہے۔ سے وقعہ میں مرجعا

ايك أنجهن اوراس كاحل

یہاں ایک اُبھن ہے جے بعض ذبین لوگ مشکل اور بخت جانے ہیں اس کا خلاصہ یہ ہے کہ اس کے بعد کہ حضرت اسرافیل علیہ السلام صور پھوٹیس جانور مرجا کیں گے تو اونٹیاں کہاں ہوں گی کہ بے کارچیوڑی جا کیں اور صور پھو تکنے سے پہلے تیا مت کا دن نہیں ہے کہ اونٹیاں بے کارچیوڑی جا کیں۔ پس یہ کس وقت کی حکایت ہے اکثر وانش وروں نے کہا ہے کہ یہ کلام فرض اور خیال کے طور پر ہے بعنی اگر بالفرض اس وقت ایسی اونٹیاں موجود ہوں تو اس دن کی ہولناک صورت کے چیش نظر ان کے حال پر کوئی توجہ نہ کرے جیسا کہ یو مر کی بولناک صورت کے چیش نظر ان کے حال پر کوئی توجہ نہ کرے جیسا کہ یو مر کی بیٹ ان افر لندان شینیا ہیں ای طرح کہا گیا ہے کین خور وفکر کے بعد معلوم ہوتا ہے کہ یہاں اس نکلف کی ضرورت نہیں ہے اس لیے کہ جب حضرت اسرافیل علیہ السلام پہلاصور پھوٹیس گے اس نکلف کی ضرورت نہیں ہے اس لیے کہ جب حضرت اسرافیل علیہ السلام پہلاصور پھوٹیس گے آ دی باردار اونٹیوں سمیت ایک جو اونٹیاں کہ دی ماہ سے باردار ہوں گی وہ بھی ای صورت میں مرتبہ پھوٹیس گے میں زندہ ہو جا کیں گے جو اونٹیاں کہ دی ماہ سے باردار ہوں گی وہ بھی ای صورت میں میں خور کی توجہ نہیں دیں گے اور جب کا مدیث می حکم یہ گھٹٹر اللماس یو مراس کی وہ بھی ای صورت میں گے اور جب کار میں گے اور بین میں میں کے دور بیا میں میں کے اور جب کو کہ کی توجہ نہیں دیں گے اور بیا میں میں گے اور بیا میں میں گے اور بیا میں میں گے اور بیا میں گے اور بیا کی توجہ نہیں دیں گے اور بیا کی وہ کی توجہ نہیں دیں گے اور بیا کو کی توجہ نہیں دیں گے اور بیا کوئی توجہ نہیں دیں گے اور بیا کہ کی تھوڑ وہ کی گھوڑ وہ کی گھور کی کھوڑ وہ کی گھوڑ وہ کی گھوڑ وہ کی گھوڑ وہ کی کھور کی کھور کی کھوڑ وہ کی کھور کی کھور کی کھور کی کھور کی کھور کی کھور کی کھور

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ اور جب پہاڑی اور جنگل وحی جانور جمع کے جائیں اور انہیں جمع کرنے کی وجہ یہ ہے کہ ان کا ٹھکانہ پہاڑ اور جنگل تھے وہ برباد ہوجائیں گاور ہر طرف ہے آگ اور دُھوال ان کا تعاقب کرےگا۔ ناچارلوگوں کے مجمع میں امن کی جگہ سمجھ کر بھاگ آئے کیں گے جس طرح کہ سرد ملکول میں بارش اور برف باری کے موقعوں پر اس فتم کے جانورا پی طبع اصلی کو جو کہ نفرت اور وحشت ہے چھوڑ کر آبادیوں کا زُخ کرتے ہیں اور اس واقعہ سے صرت کے دلیل ملتی ہے کہ اس دن کا خوف اس قدر ہوگا کہ وحی جانوروں کو انسان سے نفرت نہیں رہے گی اور بعض کو بعض کے ساتھ جو طبعی عداوت تھی وہ بھی پر ہیز اور ضرر دیے کا باعث نہ ہوگی۔

تادہ اور دوسرے مغسرین نے کہا ہے کہ وحتی جانوروں کو جمع کرنے ہے مراد مرنے کے بعد انہیں زندہ کرنا ہے کہ قصاص کے لیے انہیں زندہ کیا جائے گا اور حدیث شریف میں ہے کہ جانوروں کے درمیان بھی قصاص جاری ہوگا یہاں تک کہ بے سینگ بری کوسینگ والی بکری سے قصاص دلایا جائے گا لیکن قصاص جاری کرنے کے بعد سب کو خاک کر دیا جائے گا ایکن قصاص جاری کرنے کے بعد سب کو خاک کر دیا جائے گا اور وہ جو خدا تعالی کے نام پر ذرج ہوئے ہیں جنت کی خاک بنیں گے۔

چندشم کے جانور جنت میں اور چندشم کے جہنم میں ہوں گے

مرجو جانور جنتیول کے مرور اور لذت کا باعث ہوں گئے جنت میں باتی رہیں گے بیسے مور کھوڑا اور دوسرے بھلے معلوم ہونے والے اور انھی آ واز والے جانور یاوہ جانور جن کا گوشت جنتیول کو مرغوب ہوگا' ان کی غذا کے لیے جنت میں رکھے جا کیں گے۔ چنانچہ قرآن مجید کی سورہ واقعہ میں فہ کور ہے وکٹھ حظیر قربہا یَشْتَهُون اور جو جانور جہنیول کے غذاب میں زیادتی کا باعث ہوں گے جہنم میں جا کیں سے جسے سانپ بچواور کھی جو کہ جلے مواب میں زیادتی کا باعث ہوں می جہنم میں جا کیں سے جسے سانپ بچواور کھی جو کہ جلے تو اعضاء پر جیشے گی اور تکلیف دے گی۔ جبکہ ان جانوروں کو جہنم کی آگ سے کوئی تو کلیف نہیں ہوگی آئی سے کوئی دارد ہے کہ الذباب کلد فی الفَرِقُ سب کی سب کھیاں جہنم میں ہیں۔ نیز حدیث شریف میں وارد ہے کہ الذباب کلد فی الفَرِقُ سب کی المجنة طیر انا عدة واکلها انعم منها جنت میں نرم و نازک جانور ہوں گے اور ان کا ذا نقد ان سے بھی زیادہ فرحت

وَإِذَالْبِحَارُ سُجِّدَتَ اور جَبَه دریا بحر کائے جائیں گے اور ان کا پانی ' دھوال اور آگری اور حرارت پیدا آگ ہو جائے گی اور اس آگ اور دھوئیں کے ملنے کی وجہ سے ہوا 'گرمی اور حرارت پیدا کرے گی اور اہل محشر کی تکلیف کا باعث ہوگالیکن ایمان والے اس دھوئیں کے شرسے محفوظ رہیں جیسا کہ مجمع حدیث میں وارد ہے کہ ایمان والوں کو وہ دھوال اس قدر پہنچ گا جو کہ بیان ہوگا۔

وَإِذَالنَّفُوسُ ذُوّجَتُ اور جَبَه نفوس انسانی آسانی اور زمین نفوس کے ساتھ باہم ملائے جا کیں تاکہ خیروشر کے ادراک کی قوت میں اضافہ ہواوروہ ہمل کی پوری ہز اکھل طور پر چکھیں اور بعض نے کہا ہے کہ نفوس کو ملائے سے مراد روحوں کا جسموں کے ساتھ ملنا ہے اور بعض نے کہا ہے کہ مرادیہ ہے کہ لوگوں کو تین قسموں میں تقسیم کیا جائے جس کی تفصیل سورہ واقعہ کی آیت گنتہ آڈوا ہی لگل تک میں فہور ہے اور بعض نے کہا ہے کہ ہرکسی کو اپنے ہم مشرب اور ہم فہ ہب لوگوں کے ساتھ جع کر کے جداجدا گروہ بنا دیا جائے گا اور اس ترتیب میں ایجھے کہ سے گا اور اس ترتیب میں ایجھے کہ سے گا اور اس ترتیب میں ایجھے کہ سے گا اور اس ترتیب

اور بعض نے کہا ہے کہ ایک جنف کو نیکوں اور یُروں میں سے جس کے ساتھ دنیا میں زیادہ میل جول ہوگا، جمع کیا جائے گا جیسے پیرُ استاذ بادشاہ اور امیر - حضرت عبدالله بن عباس رضی اللہ عنہ نے فر مایا ہے کہ ایمان والوں کو حور عین کے ساتھ اکٹھا کریں گے جبکہ کفار کو شیطانوں مکے ساتھ ملائیں گے اور زجاج نے کہا ہے کہ برنفس کو اس کے اجھے یُرے اعمال کی مثالی صورتوں کے ساتھ ملائیں گے۔

خوف اوران کی جھا کی برداشت گرال بچھنے کی وجہ سے بیکام کرتے ہے۔ اوراس وقت اُن علاقوں میں بیخ بیٹ کام بہاں تک رائی ہو چکا تھا کہ اسے نخر اور غیرت شار کرتے ہے اور اس برعذاب کا بالکل خوف نہیں رکھتے ہے اس گمان سے کہ ہماری اولا د بمزلہ ملکیت مال ہے بھیے ہم چاہیں ان میں تصرف کریں۔ حق تعالی نے قرآن مجید میں جگہ جگہ اس انتہائی ہُر کام کی فدمت فر مائی کہ اس نعل کے حمن کام کی فدمت فر مائی کہ اس نعل کے حمن میں سب سے قریبی رشتے دار جو کہ اولاد ہے کی قطع رحی کے علاوہ بے شار قباحتی موجود ہیں ان میں سب سے قریبی رشتے دار جو کہ اولاد ہے کی قطع رحی کے علاوہ بے شار قباحتی موجود ہیں ان میں سے بیدا کرنے کو بلاوجہ پُر انجمنا ہے اور ان میں سے اللہ تعالی کے فیطے سے ناراضی ہے اور اس بیدا کرنے کو بلاوجہ پُر انجمنا ہے اور ان میں سے اللہ تعالی کے دیا ہے اور ان میں سے شدید بگل جہا اس ضد کے ساتھ مقابلہ ہے کہ اس نو ماہ کی مدت میں اس کی تربیت فرمائی جبکہ اس فیص نے اس پر قابو پاتے ہی اس کی جان ضائع کرنے کا ارادہ کرلیا ہے اور ان میں سے شدید بگل ہے کہ اپ اللہ تعالی کی رزاتی اور کارسازی پر ہے اعتمادی ہے اور ان میں سے شدید بگل ہے کہ اپ اللہ تعالی کی رزاتی اور کارسازی پر ہے اعتمادی ہے اور ان میں سے شدید بگل ہے کہ اپ خاتھ کہ ایک خاتھ کو اللہ تو جو کرنے کو روائیس رکھتا ہو غیر ذالک

ای لیے عرب کے بچودارلوگ بھی اس قباحت پر مطلع ہوکراس کام سے ہاتھ کھنے لیے سے لیکن قوم کے روان کی وجہ سے مجود اقبول کرتے تھے یہاں تک کہ حضرت امیر الموشین عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ کے بچازاد زید بن عمرو بن نفیل مکہ شریف میں پیدا ہوئے آپ جہال بھی سنتے کہ لاکی پیدا ہوئی ہے اورلوگ اسے زعرو درگور کرنا چاہج ہیں وہاں دوڑتے ہوئے اور جاتے کہتے کہ میں اس لاکی کو اپنی کفالت میں لیتا ہوں اس کی پرورش شادی اور جہیز میں جو بچونرج ہوگا میرے ذھے رہا اور آپ نے اس طریقے سے بے شار بچوں کو جہیز میں جو بچونرج ہوگا میرے ذھے رہا اور آپ نے اس طریقے سے بے شار بچوں کو جہیز میں جو بچونرایا ای لیے لوگ انہیں کی الاموات یعنی مردول کو زعرہ کرنے واللہ کہتے تھے اور ان کی اس جھی رسم کی عرب اور آپ جانچ فرزدق شاعرکا دادہ جس کا نام صحصحہ تھا 'بھی جی کام کرتا تھا اس بناء پر فرزدق کے شعروں میں اپنے دادا کے اس عمل پر ہو

اور ہماری اُمت میں بیاپاک عمل ایک اور صورت میں نمودار ہوا ہے اور شیطان کا marfat.com

طریقہ یہی ہے کہ لوگ جب کسی کر ہے کام کوشری ڈانٹ ڈپٹ اور عقلی دلائل کی وجہ سے ترک
کر دیے ہیں ، وہ ملعون اس معنی کو دوسرے رنگ میں ان کی نظر میں اچھا کر دِکھا تا ہے تا کہ
اس کا اصل مطلب فوت نہ ہواور وہ صورت جو کہ اس اُمت میں رواج یا چکی ہے ہیہ ہے کہ
لوٹڈ یوں اور کم اصلوں کے حمل کولڑ کی بلکہ لڑکا بھی پیدا ہونے سے عار لاحق ہونے کے لیے
روح ڈالے جانے کے بعد جس کی مدت عالبًا چار ماہ گزرنے کے بعد ہے گرا دیتے ہیں اور
اس نہایت ہی کر ے عمل کوشرافت اور غیرت کے تقاضے کا نام دیتے ہیں اور اسے نخر کے
مقام پر بیان کرتے ہیں حالانکہ ناحق خون کرتے ہیں اور اس کر ہے عمل میں جو دوسری
خرابیاں واقع ہوتی ہیں سرموفرق نہیں ہے۔

لیکن روح ڈالے جانے سے پہلے جائز عذر کی وجہ سے جیسے ولا دت کی بیگی یا عیال کی کثر ت اور مال کی قلت یا سفر میں ہونا یا کنیز سے خدمت کا نفع فوت ہونا۔اسقاط کے جواز میں صحابہ کرام رضی اللہ عنہم میں اختلاف پڑ گیا تھا اور حضرت امیر المونین عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ میں کافی گفتگو ہوئی جہاں تک کہ حضرت امیر المونین مرتضی علی سامنے اس بحث میں کافی گفتگو ہوئی جہاں تک کہ حضرت امیر المونین مرتضی علی

عیاش اقوام کے برتھ کنٹرول کا اس سے کوئی تعلق نہیں کیونکہ وہاں بیکام صرف عیاشی کے لیے ہوتا ہے جس معاشرہ میں کھلے بندوں ہرمقام پر مردوں اور عورتوں کا بے تکلف میل جول ہو و ہاں اس عمل کے رواج پانے کے مقاصد اور مفاسد کو معلوم کرنا مشکل نہیں۔ یہ بہرطور ناجا کر اور بے حیائی اور بے شرمی کو عام کرنے کا باعث ہے۔ محمد محفوظ الحق غفرل ا

ایک شبه اوراس کا جواب

یہاں ایک شید ہے جو گدا کثر دل میں گزرتا ہے اور وہ یہ ہے کہ موء ودۃ بے چاری مظلوم ماری گئی ہے اس سے پوچھنے کی کوئی وجہ ہیں کا جے تھا کہ سوال اس کے قاتل سے ہوتا تاکہ اس کی علامت ہوتی اور اس شبہ کا جواب رہے کہ موء ودۃ سے سوال اس طرح نہیں ہوگا کہ کچھے کیوں مارا گیا تاکہ بعیداز حقیقت ہو بلکہ یوں سوال ہوگا کہ

بائی ذنی فیلت اسے کی جرم کی پاداش میں مارا کیا ہے اور بیسوال مظلوم کے لائق ہے نہ کہ فالم کے دائن اسے کی جرم کی باداش میں مارا کیا ہے اور بیسوال مظلوم کے لائق ہے نہ کہ فالم کے داس سے کہ اس سوال کا مقصد دعویٰ کی تلقین اورظلم کی وجہ فالم کرنے کی طلب ہوتی ہے تا کہ مظلوم کیے کہ فلال نے جمع پر بے وجہ یوں ظلم کیا ہے۔

و تیرہ ہے اور فقہاء نے بھی لکھا ہے کہ الی صورت میں قاضی کے لیے مدعی اور کواہ کوتلقین کرنا ہورست ہے کہ اس کے بغیر مظلوم کاحق پورے طور پرنہیں لیا جاسکتا۔

اوراس کے علاوہ اس سوال میں والدین کے ساتھ اس کے ادب سے پیش آنے کی حدد دجہ رعایت کی گئی ہے اس لیے کہ پہلے اس کے قاتل کا ذکر نہیں فر مایا۔ گویا یہاں قاتل سے سوال کرنا پیش نظر نہیں تا کہ رسوائی نہ ہوائی لیے جہول صیغے کے ساتھ ذکر کیا گیا۔ یا اس گناہ کے متعلق سوال فر مایا گیا جو کہ اس کے قبل کا موجب ہوا۔ گویا اشارہ فر مایا جارہا ہے کہ والدین کو اولاد کے حال پر اس قدر شفقت ہے کہ بہت بڑے جرم کے بغیر انہوں نے تیرے ساتھ یہ سلوک نہیں کیا ہوگا۔ میں سوال کرتا ہوں کہ وہ گناہ کیا ہے؟ لیکن موء ووق کی نسبت ساتھ یہ سلوک نہیں کیا ہوگا۔ میں سوال کرتا ہوں کہ وہ گناہ کیا ہے؟ لیکن موء ووق کی نسبت سے والدین کے حق میں ادب کی بیرعایت والدین کی انتہائی ذلت اور رسوائی کا باعث ہوگ خصوصاً موء ودق سے گناہ کے متعلق پوچھے میں کہ وہ تو گناہ صادر ہونے کی جگہ بالکل ہو ہی نہیں سکتی نیے انہیں صریح الزام کی تعریف ہوگی اور اگر شروعے سے بی والدین سے پوچھا جاتا نہیں سکتی نیے بلاوجہ اپنی لڑکی کو کیوں قبل کیا توسی ذات رسوائی اور خوف و وہشت کا غلبہ حاصل نہ کہتم نے بلاوجہ اپنی لڑکی کو کیوں قبل کیا توسی ذات رسوائی اور خوف و وہشت کا غلبہ حاصل نہ

نیزان سے نہ پوچھے اور سوال وخطاب کا رُخ مَوْءُ وُدَةً کی طرف پھرنے میں ان کی انہائی شقاوت اور بربختی کا پتہ وینا ہے کہ ان کی اس بے ہودہ حرکت پر سخت نارائمنگی کی وجہ سے ان سے جعر کی آمیز سوال اور عماب بھی نہیں فرمایا جا رہا کہ کہیں عذاب اور عماب کی تکلیف کو کلام اور خطاب کی لذت کی وجہ سے ہلا محسوس کریں۔ إِنَّا لِللَّهِ وَإِنَّا اِللَّهِ وَإِنَّا اِللَّهِ وَإِنَّا اِللَّهِ وَإِنَّا اِللَّهِ وَإِنَّا اِللَّهِ وَإِنَّا اِللَّهِ وَالْمَا اور کیا ای اور کیا ای اور ہیت)

اگر بیار پُری نبیس ہے تو تالائق ہی کہددو کہ تمہارے مندے جھے ایک بات سننے کی تمنا

یہاں جانتا چاہیے کہ صدیت سیحے میں وارد ہے کہ الوائدة والموء ودة فی الناریعن این لڑکی کوزندہ ررگورکرنے والی عورت اور وہ لڑکی دونوں دوزخ میں جا کیں گی اس حدیث کو سنتے ہی معتزلہ ہاتھ پاؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیحے کے مقابلے میں اس آیت کے ساتھ پاؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیحے کے مقابلے میں اس آیت کے ساتھ باؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیحے کے مقابلے میں اس آیت کے ساتھ باؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیحے کے مقابلے میں اس آیت کے ساتھ باؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیحے کے مقابلے میں اس آیت کے ساتھ باؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیحے کے مقابلے میں اس آیت کے ساتھ باؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیحے کے مقابلے میں اس آیت کے ساتھ باؤں مارتے ہیں اور اس حدیث سیح

ساتھ دلیل لیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ جب اللہ تعالیٰ موء ودۃ کی وجہ سے کافروں کو ذکیل اور شرم سار فرمائے گا۔ موء ودۃ کو عذاب دینے کا کیا مقصد؟ اور اس استدلال میں انتہائی جہالت اور بے وقونی کا ارتکاب ہے اس لیے کہ والدین کو عذاب دینا اس وجہ سے ہے کہ انہوں نے ناحق خون کیا ہے جبکہ موء ودۃ کو عذاب دینا اس وجہ سے ہوگا کہ وہ کفر میں والدین کے تابع ہے جسے ایک طالم اور مظلوم جو دونوں کافر مرے ہوں ایک کو دوسرے کے والدین کے تابع ہے جسے ایک طالم اور مظلوم جو دونوں کافر مرے ہوں ایک کو دوسرے کے کے عذاب دیں مے اور اصل میں دونوں عذاب پانے میں اپنے کفر کی بناء پر ایک دوسرے کے شریک ہوں گے۔

كفار كے اطفال كے عذاب كى وجه

ای لیے اہلِ سنت کے نزدیک کفار کے اطفال کو عذاب دینا قواعد شریعت کے تقاضوں پرنظر کرتے ہوئے جائز ہے اس لیے کہ طفل کی جان خصوصاً وہ طفل جواتی ہی جھوٹی عمر میں اس جہان سے گیا' کو یا والدین کے نفس کا ایک شعبہ ہے جوابھی مستقل اور پورانہیں ہوا جب نفس والدین کو دکھ ہوگا' وہ ساوہ نفس بھی ان کے تابع ہونے کے ناسطے تکلیف پائے کا جیسے دو جڑوال بچ کہ ایک وقت میں انہیں مجوک بیاں گئی ہے جب تک کہ پنگھوڑ ہے میں رہیں اور ان کا نفسانی انصال مستقل ہونے کی جدائی میں نہیں کہ جوائی میں نہیں انہیں کی جدائی میں نہیں کہ جب تک کہ پنگھوڑ ہے میں رہیں اور ان کا نفسانی انصال مستقل ہونے کی جدائی میں نہ بدلے۔ واللہ تعالی اعلم

ایک قابل بیان نکته

یبال ایک نکتہ ہے جو کہ بیان کرنا ضروری ہے اور وہ یہ ہے کہ قتلت کو صیغہ غائب کے ساتھ کول لایا گیا۔ خطاب کا تقاضا یہ تھا کہ قتلت کو نخاطب مؤنث مجبول کے صیغہ کے ساتھ لایا جاتا اس کا جواب یہ ہے کہ یبال قیامت سے واقعات بیان کرنا مقصود ہے اور موء ووق کی حالت کوغیب کے صیغ کے ساتھ بیان فر مایا جار ہا ہے۔ پس مقصد موء ووق کے پوجھے جانے حالت کوغیب کے صیغ کے ساتھ بیان فر مایا جار ہا ہے۔ پس مقصد موء ووق کے پوجھے جانے کی خبر دینا ہے جو کہ واقع ہوگانہ کہ خطاب کی حکایت جو کہ اس کے ساتھ در میان میں آئے گی ہے۔ گ

مسئلفقهي

وَإِذَا الصَّحُفُ نُشِرَتَ اور جَبَدا عَمالَ نام كَمُولِ جَاكِين جوكه لِيب كر تجين اور علين كر تجين اور علين كر تجين اور علين كر تحين اور علين كر وفتر مين ركھے ہوئے تھے اور ہر مخص اپنے اعمال نامے كا مطالعه كرے اور قماد و سے مروى ہے كہ ہر مخص كے مرنے كے بعد اس كے اعمال نامے كو لپيٹ كر دفتر ميں محفوظ ركھتے ہيں۔

اوربعض مفسرین نے نشر کامعنی منتشر کرنا لیا ہے لینی اعمال ناموں کومنتشر کردیں اور اس وفتر سے جہال جمع سے نکال کرتقتیم کردیں اور بعض کو بشت کی طرف سے بائیں ہاتھ میں اور بعض کو بشت کی طرف سے بائیں ہاتھ میں اور بعض کو سامنے سے دائیں ہاتھ میں سپر دکریں مے اور مرجد بن وواعہ سے مروی ہے کہ قیامت کے دن اعمال ناموں کوعرش کے نیچ سے اُڑائیں مے تو صاحب ایمان کے ہاتھوں میں جواعمال نامد آئے اس میں بیافظ لکھا ہوگا کہ فی جنة عالیہ جبکہ کافر کے ہاتھ میں آئے میں جواعمال نامد آئے اس میں بیافظ لکھا ہوگا کہ فی جنة عالیہ جبکہ کافر کے ہاتھ میں آئے دالے صحیفے پر لکھا ہوگا فی سموم وجمیم اور بیاصحیفے فال کے قرعوں کے طور پر ہوں سے نہ کہ صحائف اعمال کشاف میں ایسا ہی ذکر کیا۔

وَإِذَا السَّمَاءِ تُحْشِطَتُ اور جَبَدا سان کی کھال اُدھیر دی جائے جیہا کہ ذرج کے ہوئے وائد کے اندان کی کھال اُدھیر نے کے بعداس کے اجزااور اوران کہ کھال اُدھیر نے کے بعداس کے اجزااور اوران کہ کھال اُدھیر نے کے بعداس کے اجزااور اوران کہ کھال اُدھیر نے ہیں اور اس میں کے اجزا اور ایک میں اور اس می

کے رگ وریشے ظاہر ہوجاتے ہیں اور افلاک کے چھپے ہوئے حالات جو کہ چیزوں کی مثالی صورتیں ہیں روشن اور ظاہر ہول گی۔اعمال نا مے اُٹھانے والے ملائکہ اور ملائکہ کی دوسری قشمیں نازل ہوں۔

وَإِذَا الْجَوِمِيْمُ سُوِّرَتُ اور جَبَدِجَبُم كُومِمُرُكاما جائے اور اس كى جلن كى شدّت ميں اضافہ ہوجائے۔

وَإِذَا الْبَحَنَّةُ أُذْلِفَتُ اور جَبَكہ جنت كوميدانِ حشر كے قريب لايا جائے۔ پس ايمان والوں كى خوشيوں پرخوشياں بروهيس جبكہ كافروں كوحسرت پرحسرت نصيب ہواور جب يہ بارہ (۱۲) عادثے عابت ہوجا كيں جن ميں سے چو(۲) عادثے صور پھو تكنے سے پہلے دنيا ميں ہيں اوران ميں سے چو(۲) عدا خرت ميں ہوں گے۔ بہلے دنيا ميں ہيں اوران ميں سے چو(۲) صور پھو تكنے كے بعد آخرت ميں ہوں گے۔

عَلِمَتُ نَفْسٌ مَا آحُضَرَتُ برنفس اس چيزكوجان في جونيكي اور بدى سے اس في حاضر کی ہے اور بعض تاویل کرنے والوں نے کہا ہے کہان بارہ (۱۲) حالات کومرتے وقت جو کہ قیامت کا نمونہ ہیں یالیں مے ای لیے اے قیامت مغری کہتے ہیں اور حدیث یاک میں بھی وارد ہے کہ من مات فقد قامت قیامتداس کا اعتبار کیا جاسکتا ہے۔ پس سورج آ ومی کی روح کی طرح ہے جس کی شعاع سے جسم زندہ ہوتا ہے اور جب اس کا تعلق بدن کی تربیر ے منقطع ہوتا ہے کو یاجسم انسانی کے جہان کا سورج مکدر اور بے نور ہو گیا۔ اورستاروں کا تاریک ہونا انسانی حواس اور قوتوں کے بے کار ہونے کا نمونہ ہے جو کہ موت کے وقت ردنما ہوتا ہے۔ اور بہاڑوں کی حرکت اس کے جسم کے اعصاء رئیسہ اور بڑیوں کے افعال کا باطل ہونا ہے کہ اپنے کا موں سے معزول ہو کر ضائع ہو جاتے ہیں۔ اور تعطیل عشار دودھ اور چر بی کے خٹک ہونے اور طبعی افعال کے باطل ہونے کا نمونہ ہے جو کہ جگر اور غذا کے دوسرے آلات سے معادر ہوتے ہیں۔ اور وحشیوں کا جمع کرنا افعال بہیمیہ اور سبعیہ کے نتائج كاظاہر ہونا ہے۔ اور دریاؤں كا بحركاناجىم كےخون اور دوسرى رطوبتوں كاختك ہونايا اوہام خیالات امیدوں اور آرز ووک کا باطل ہونا ہے کہان میں ہرایک بحرنا پیدا کنار ہے اور اختیاری یا اضطراری موت کے بغیران کے منقطع ہونے کا تصور بی نہیں ہے۔ اور نفوس کا martat.com

جوڑنا کسب کی ہوئی ملاحیتوں کا باہم اجتاع ہے ظلمانی صلاحیتوں کا ظلمانی اور نورانی صلاحیتوں کا ظلمانی اور نورانی صلاحیتوں کا نورانی کے لیے مقرر کیے مطاحیتوں کا نورانی کے لیے مقرر کیے ہوئے مصرف کے بغیر کہیں اور صرف کر کے ضائع کر دیا۔

اور بعض دانش مندول سے منقول ہے کہ ہرنفیس نکتہ جو کہ علمی مقدمات میں ذبین لوگوں کے ذبین میں آئے اور اسے لکھ کر قابو نہ کریں یہاں تک حافظے سے نکل جائے ،
موء ودۃ ہے اور کشط آسان احکام روح کے ظہور سے کنایہ ہے اور تسعیر جہنم ان نختیوں اور بولنا کیوں کو دیکھنا ہے جو کہ موت کے بعدرونما ہوں گی اور جنت کو قریب لانا اس تازگی اور راحت سے عبارت ہے جو کہ اس وقت نیکوں کی ارواح کو پہچانے ہیں جبکہ کروں کوان سے محروم رکھتے ہیں جبکہ کروں کوان سے محروم رکھتے ہیں۔

اور بعض ابلِ تصوف نے ان سب حالات کو فنا کی حد تک سلوک کے مدارج طے کرنے پرمنطبق کیا ہے جو کہ ان سب حالات کو فنا کی جدی کی پہلی منزل ہے اور اس مطابقت و سے کی تفصیل ایسی طوالت جا ہتی ہے جو کہ اس تفییر کے انداز سے باہر ہے۔

بہرحال نفسِ انسانی پر خیروشر کی حقیقت کھلنے کے اسباب بیان کیے جا بچے اور ان اسباب کی تحقیق مخبر دینے سے اسباب کی تحقیق مخبر صادق جو کہ سب سے بڑا سچا ہے یعنی ذات حق تعالی کے خبر دینے سے بیٹی ہوئی توقتم اُنھانے کی ضرورت ندری ای لیے یوں فر مایا ممیا کہ:

فَلَا اُقْدِیدُ پی میں شم نہیں اُٹھا تا اس لیے کہ میرے خبر دینے کے بعد شم کی ضرورت نہیں ہے اور اگر اس سب کی کے باوجو دتم شم کے تاج ہوتو میری شم!

ایک جگہ کھڑے دہتے ہیں پھر پچھلے پاؤں لو منے ہیں۔ اور مشرق سے مغرب کوآتے ہیں۔ علم ہیئت کی اصطلاح میں پہلی حالت کو استقامت کہتے ہیں اور دوسری حالت کو وقوف اور اقامت کہتے ہیں اور دوسری حالت کو وقوف اور اقامت کہتے ہیں جبکہ تیسری حالت کو رجعت اور رجوع کا نام دیتے ہیں۔ یہ تین حالات ستاروں میں سے ہر ایک کے لیے نہیں ہیں ، چاند میں وقوف ہے ، رجعت نہیں ہے اور دوسرے ستاروں میں وقوف ہے ندر جعت۔ پس ان سب پانچ ستاروں کی جیرت اس بات دوسرے دیں وقوف ہے کہ اس بات کی مرت کو لیا ہے کہ آسانی چیزوں کا ایک حالت سے دوسری حالت میں بدلنا ممکن اور واقع کی صرت کو لیا ہے کہ آسانی چیزوں کا ایک حالت سے دوسری حالت میں بدلنا ممکن اور واقع ہے۔ پس آسان کے تمام اجزا کے انقلاب اور ستاروں کا نور زائل ہونے کے جواز میں کوئی امریحال ندر ہا۔

اوران پانچوں ستاروں کورجعت استقامت اور وقوف کے ساتھ فاص کرنے کا اگر چہ آ سانی میٹوں کی تغییش کرنے والوں کے زویک ایک سبب ہے کہ وہ ان کے حال کی حرکت اور تداویر کی حرکت کا اختلاف ہے اس لیے کہ انہیں اُٹھانے والے مغرب ہے مشرق کو جاتے ہیں اور ان کے تداویر چونکہ زہن میں شامل نہیں ہیں ان کے اوپر کی سطح کے مغرب عاشر آ کو جاتے ہیں اور نجلے مشرق سے مغرب کو اور جب بیستارے تداویر ہیں گڑے ہوئے مشرق کو جاتے ہیں اور نجلے مشرق سے مغرب کو اور جب بیستارے تداویر ہیں گڑے ہوئے ہیں اور وہ تداویر حال کے جم میں مرکوز ہیں ناچار ان ستاروں کو ان کی مطابقت میں دونوں حرکتیں ہوتی ہیں جب تک کہ حال کی حرکت اور تداویر کی حرکت موافق ہوتی ہے استقامت کے ساتھ جلدی چلنے والے معلوم پاتے ہیں اور جب دونوں حرکتوں کا اختلاف ہو جاتا ہے تو آ ہت چلئے تیں اور جب دونوں حرکتیں مقابلے کی حد تک مختلف ہو جاتی ہیں جاتا ہے تو آ ہت چلئے گئے ہیں اور جب دونوں حرکتیں مقابلے کی حد تک مختلف ہو جاتی ہیں کہ متارہ ایک حرکت کے ساتھ جنا آ کے گیا ای قدر دوسری حرکت سے پیچے کر پڑا 'واقف کے متارہ ایک حرکت کے بی اور جب دوسری حرکت نظیم ہوتا ہے۔ گویا بالکل حرکت نہیں کرتا اور جب دوسری حرکت غلبہ کرتی ہوتا ہے اور ساکن معلوم ہوتا ہے۔ گویا بالکل حرکت نہیں کرتا اور جب دوسری حرکت غلبہ کرتی ہوتا ہے۔

اوراس سبب کو جانے کی صورت میں مدعا زیادہ تر واضح اور روش ہو جاتا ہے اس لیے کہ جب آسانی ستارے تغیر و انقلاب کامل ہو سے اور ان کی حرکت اور اطوار کے اسباب مختلف اور متعادم اور ان میں طبائع کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم اللہ کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم اللہ کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم اللہ کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم کا باہم کمینچا اور اراوہ کرنامختن ہوگیا تو صدے تبول مسلم کا باہم کمینچا ہوگئا ہوگئا

کرنے پرآ مادہ ہو محے جو چیز اختلاف اور تغیر سے بچی ہوئی ہواس میں صدمہ تبول کرنے کو بعید سمجھا جاسکتا ہے۔

آ سانی ستاروں کی دواقسام

اور میاں ان بانچ ستاروں کا ذکر لانا اس کیے ہے کہ آسانی ستاروں کی دوقتمیں ہیں۔سیار بعنی سیر کرنے والے اور ٹابت یعنی وہ ستارے جوحر کت نہیں کرتے۔سیاروں کی حرکت افلاک کے متعدد ہونے سے مختلف ہوتی ہے جبکہ توابت کی حرکات مختلف نہیں ہیں بلکہ ان کے فلک کی حرکت بھی نہایت کمزور اور کم معلوم ہوتی ہے اور ثوابت کو رجوع استفامت وقوف اورسرعت ہے آئی کی طرف منتقل ہونا اور اس کاعکس لاحق نہیں ہوتا جبکہ سارات كوسب يحدلان موتاب اورسارون من سيمس وقمركوبار باقرآن مجيد ميل مغيرو انقلاب کے مقام میں ذکر فرمایا گیا ہے اور ان دونوں کے میرزیادہ تر تغیرات عوام وخواص کے نزدیک مشہور ومعروف ہیں۔خصوصاً قمر کے کہ ہرمہینے میں اس کے تھٹنے اور بڑھنے کا مثام وكرتے بي اور دونوں كا كربن و يكھتے بي تو يهال اجرام آساني كے تغير پذرير بونے كا بیان مقصود تھا' ان بانچ ستاروں کا ذکر جو کہ تغیرات اور اختلافات رکھتے ہیں' ضروری ہوا۔ غوروفكركرنے يريوں معلوم ہوتا ہے كہ وابت كا آئيں ميں امتزاج نبيس ہے اى ليے ہراك کی ایک بی حالت ہو کی جبکہ ان پانچ ستاروں کے مس وقمر کے ساتھ اور آپس میں مختلف اور متعدد احتزاج بیں اور مختلف قوتوں کے صادر ہونے کا مقام بنتے ہیں اور سورج کے ساتھ ان كے بجيب رابطے بي اور ہررابطے كى تا غيرجدا كاند ہے۔ لي ميد يا نج سيارے عالم آساني ميں بمزل عضری مرکبات بعنی معدنیات نباتات حیوانات انسان اوران کے برخ کے ہیں جبکہ ستمس وقمرمركبات ناقصه كے مشابهه بعنى بخار عبار اور دھوال اور ثوابت بمزله عضرى بسائط کے اور ان یا پچ ستاروں کی تا ثیرات اور افعال ارادہ اور اختیار والی چیزوں کے افعال کے ساتھ زیادہ مثابہہ ہیں اور ان کی حرکات کویا چڑھنے اُٹرنے جائے آئے ہما سکنے اور طلب كرنے سے مركب حركت اختيارى ہے۔ پس ان بانچ ساروں كے انتظاب اور تغير كا ذكر مقصد کے زیادہ قریب ہے کے نامہ انہا ہا ارادی ہے طبعی ہیں۔

marfat.com

بہرحال ان پائج ستاروں کے حالات اجرام آسانی کے حالات کے اختلاف پر بہت
بڑی دلیل ہیں۔ اور جب اجرام آسانی تغیرات اور انقلاب کے قابل ہوئے تو زمنی اجہام
کے انقلاب میں کیا دشواری ہے کہ ان کا انقلاب و تغیر تو ہر دفت مشاہدے میں رہتا ہے اور
اس شم کے انقلاب میں جو کہ بڑے تغیر کا موجب ہو کسی کوکوئی شک ہوتو دوسری قتم اُٹھائی
جاتی ہے۔

و النّیل اِذَا کَسْعَسَ اور رات کی شم جب کرآتی ہاور جہان کوتاریک کروتی ہے اور انتلاب عظیم رونما ہوتا ہے بازار ہے رونق ہو جاتے ہیں' گروں کے دروازے بنر پوروں اور در مُدوں کا خطرہ عالب ہو جاتا ہے راستے ذک جاتے ہیں' تلاشِ معاش ایک خمن کو گروں اور در مُدوں کا خطرہ عالب ہو جاتا ہے راستے ذک جاتے ہیں' تلاشِ معاش ایک خمن لوگ مردوں کی طرح ہو جاتے ہیں کران کی حس و حرکت باطل مردوں کی طرح پرنے ہیں اور جن اور شیاطین تھیلے ہوئے ہیں اور سالیا انقلاب ہے جو کردن رات کی ہرگروش ہیں ایک مرتبہ زمین اور ذہن والوں کو درہم برہم کر دیتا ہے اگر بالغرض کوئی دن کے وقت ہوش میں آئے اور اس نے رات نہ ویکھی ہواور اس کے پاس اس انقلاب کا ذکر کیا جائے تو وہ اسے اس تدریحال جائے گو وہ اسے اس تدریحال جائے گار قیامت کے حالات سننے ہاں کا درواں حصر بھی نہیں جائے اور رات کے جائزات ہیں ہے ہے کہ جو چیز دور ہے جیسے آسانی ستارے اور چانک وہ اس میں ظاہر ہو جاتے ہیں اور جو چیز نزد یک ہے جیسے فضا اور کے ذین کی چیز ہیں وہ تخی اور اس کے طام ہو جاتے ہیں اور جو چیز نزد یک ہے جیسے فضا اور کے ذین کی چیز ہیں وہ تخی اور اس کی طاہر ہونے اور فل ہر چیز وں کے تنی مشاہدہ ہوتا ہے اور دنیا اور آخرے کا جاتا ہے ای کی جاس بات کو یورا کرنے کے طور یرفر مایا گیا ہے۔

وَالصَّبُعِ إِذَا تَنفَسَ مِحِصِع كُوسَم ہے جس وقت كرمانس لے كراس وقت مى الك عظيم انقلاب رونما ہوتا ہے اور لوگ خواب سے بدوار ہوتے ہيں محفليس اور بازار آباد ہو جاتے ہيں مسافر راستوں میں چلے لگتے ہیں اور روزی كی تلاش ہر مخلوق كامقصود ہو جاتی ہے اور حیوانی قو توں میں ایک عظیم چستی پیدا ہو جاتی ہے ہر چیز روش اور ظاہر ہو جاتی ہے چاور حیوانی قو توں میں ایک عظیم چستی پیدا ہو جاتی ہے ہر چیز روش اور ظاہر ہو جاتی ہے جی اور حیوانی قر توں میں ایک عظیم جستی پیدا ہو جاتی ہے ہیں ورکھر اور قالم اور کھی ہونے ہیں اور کھی اور کھی کھی ہونے ہیں اور کھی کھی ہونے ہیں۔

mårfat.com

صبح کا دَم لینااس کے ظاہر ہونے سے کنایہ ہے۔ سورج کو کہ جس کی علامت صبح ہے دریا میں تیرنے والی مجھلی سے تشیبہ دی گئی ہے اور طلوع سے پہلے اس کے نور کے پھیلنے کو مجھلی کے ساتھ منسوب کیا گیا ہے جس طرح کہ مجھلی دریا میں نگاہ سے اوجھل گزرتی ہے اور اس کے سانس لینے سے بانی اُبلتا اور منتشر ہوتا ہے بہی طلوع سے اور روشنی سے بینے سے بانی اُبلتا اور منتشر ہوتا ہے بہی طلوع سے اور روشنی سے بینے سے بہلے سورج کی حالت ہے۔

اوربعض نے کہا ہے کہ ق مسیح اس بازیم سے کنارہ ہے جو کہ بہار کے دِنوں میں مسیح کے طلوع کے ساتھ شہبہہ دی گئی ہے کہ جہان والوں کی طلوع کے ساتھ شہبہہ دی گئی ہے کہ جہان والوں کی راحت اور فرحت کا موجب ہوتی ہے۔ گویا صبح بمزلہ ایک ڈکھیا یا مریض کے تھی کہ جس نے ابھی سانس لینے کی فرصت پائی اور پچھ راحت حاصل کی بہر حال مبیح کے لئے سانس ثابت کرنا فاری اور عربی دونوں کے شعروں میں رائج اور مشہور ہے۔

اور صحص کا لفظ دو ضدول میں مشترک ہے آمدور فت دونوں کو کہتے ہیں اگر مقابلے اور صحح کے قرم لینے کی رعابت کی جائے تو اسے آنے پرمحول کرنا چاہے اور اگر اس کی مناسبت اور باہم لازم ہونا مقصود ہوتو جانے پرمحول کرنا چاہے اور بیا عجاز قرآنی کا کمال ہے کہ یہاں دو وجوں والے مقام پر دو ضدول میں مشترک لفظ ارشاد فرمایا گیا لیکن دوسری تقدیر پرصرف ایک انتقاب نم کور ہوگا اس لیے کہ رات کا جانا اس انقلاب کی ابتدا ہے اور صحح کا ساتھ پوسک کا سانس لینا اس کی انتہا ہے اور جب بیا انقلاب آخرت کے انقلاب کے ساتھ پوسک مشاہبت رکھتا ہے کہ حیات بعد الموت کا نمونہ ہے اور اس میں مخفی چیزوں کا ظہور زیادہ ہوتا ہے اور اس میں مخفی چیزوں کا ظہور زیادہ ہوتا ہے اور اس بی افراس پر اکتفاء کرنا نہایت موزول ہے۔

بہرمال یہاں مقصدیہ ہے کہ بارہ (۱۲) انقلابات کے بعد کہ جن کی ماند دنیا ہیں بھی انقلابات واقع ہوتے ہیں نفسِ انسانی پر خیراور شرک حقیقت واضح ہونے میں شم اُنھانے اور کلام کو پکا کرنے کی ضرورت نہیں رہی اس لیے کہ ان انقلابات کاممکن ہوناعقل کی دلیل سے عادران انقلابات کاممکن ہوناعقل کی دلیل سے عادران انقلابات کا منسب ہونا بھی خارت ہونے کا سبب ہونا بھی خور کرنے کے بعد عقل کی نظر میں ظاہر ہے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے مسلم کے معتلے کی اسلم کے است میں ملا ہر ہے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے مسلم کے اسلام کے اسلام کے اسلام کی نظر میں ظاہر ہے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے مسلم کی نظر میں ظاہر ہے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے مسلم کا مسلم کی نظر میں نظام کے اسلام کی نظر میں نظام کی نظر میں نظام کے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے مسلم کی نظر میں نظام کے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے کے اسلام کی نظر میں نظام کے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے کے اسلام کی نظر میں نظام کے اور جب مخرصادت کسی مکنہ چیز کے واقع ہونے کے اس مقال کی نظر میں نظام کی نظر میں نظام کی نظر میں نظام کے اس میں نظر میں نظام کی نظر میں نظام کی نظر میں نظام کی نظر میں نظام کے اس میں نظر میں ن

ک خرد بوکہ ایک خبر کی دجہ سے ہوتو اس کے داقع ہونے کا یقین عاصل ہوجاتا ہے اور

یکی دجہ ہے کنفی کے لیے تم کی ضرورت نہیں علت بیان کرنے کے طور پر فر مایا جارہا ہے۔

اِنَّهُ شَخِیْقَ بِهِ قرآن جو کہ قیامت کی خبروں کو ضمن میں لیے ہوئے ہے۔ لَقَوْلُ دَسُولِ البتہ الله تعالیٰ کے قاصد کی لائی ہوئی مفتگو ہے جو کہ خدا تعالیٰ کی طرف نے پہنچائی دَسُولِ البتہ الله تعالیٰ کے قاصد کی لائی ہوئی مفتگو ہے جو کہ خدا تعالیٰ کی طرف ہے کہ کلام من ہے تو اس میں جھوٹ اور من گھڑت کے احتمال کی کوئی مخبائش نہیں ہے اس لیے کہ کلام اللی کا سیا ہونا قطعی ہے۔

اورا گرکسی کے دل میں کھنے کہ یہ کلام حضرت حق سجانہ و تعالی نے ہم سے بلاواسط نہیں کی ہے تا کہ ہمیں اس کے مضمون کا یقین حاصل ہو بلکہ ہمارے اور اللہ تعالی کے درمیان واسطے واقع ہیں اور سند مختق ہے۔ ہم کہتے ہیں کہتم جواپنے پینجبر سے بے واسطہ یہ کلام سنتے ہوئتم ارب درمیان دو واسطوں سے زیادہ نہیں ہے۔ ایک وہ شخصیت جو پیغام رسانی کے طور پر خدا تعالی کی طرف سے پیجبر علیہ السلام کے پاس یہ کلام لاتی ہے۔ دوسرا واسطوں علیہ پر خدا تعالی کی طرف سے پیجبر علیہ السلام کے پاس یہ کلام لاتی ہے۔ دوسرا واسطہ جو کہ قاصد ہے السلام ۔ اب ان دونوں واسطوں کی چھان پینک میں خود خور کرد۔ پہلا واسطہ جو کہ قاصد ہے ان صفات سے موصوف ہے۔

کریم بزرگ اور عالی مقام ہے جس کا عدالت اور تقوی اعلیٰ در ہے کا ہے اس لیے کہ اس کے مرتبے کی بزرگ تقوے کے بغیر صورت نہیں پکڑتی۔ چنانچہ حدیث شریف میں وارد ہے کہ الکو حرالت قوی دالمحسب المال یعنی کرم تقوی ہے اور حسب مال ہے اور قرآن مجید میں بھی اس مضمون کی خبر دی گئی ہے۔ اِنَّ اکْرَمَ عُمْدُ عِنْدَاللّٰهِ اَنْقَاکُمْ لِی اس مال کے مافظی قوت کی تحقیق کرنا جا ہے اس داوی میں عدالت اور تقوی ثابت ہوگیا اب اس کے حافظ کی قوت کی تحقیق کرنا جا ہے اس کی دوسری صفت ہے کہ

ذی قُوق عظیم قوت والا ہے کہ اس کے حافظے میں بالکل کوئی خلل نہیں پڑتا جو کچھ سنتا ہے اسے کی بیٹی گئی قوت والا ہے کہ اس کی ہرقوت کے کمال کی وجہ ہے اس یاد کی ہوئی ہوئی بات کوئی بیٹی کے بغیر یادر کمتا ہے اور اگر چہ یہاں اس قاصد کے حافظہ کی قوت اور تعبیر بات کوئی بیٹی کے بغیر پہنچا دیتا ہے اور اگر چہ یہاں اس قاصد کے حافظہ کی قوت اور تعبیر کرنے کی قوت کو بیان کرنا مقصود ہے لیکن ان دونوں قوتوں کا کمال علی الاطلاق حاصل نہیں کرنے کی قوت کو بیان کرنا مقصود ہے لیکن ان دونوں قوتوں کا کمال علی الاطلاق حاصل نہیں

آتاس بناء پراے مطلق قوت کے ساتھ موصوف فر مایا تمیا ہے۔

اور حدیث پاک میں وارد ہے کہ ایک دن حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت جرئیل علیہ اللہ علیہ وسلم سے خرمایا کہ ان صفات سے موصوف انہیں کی ذات عالی صفات ہے کہ حق تعالی علیہ السلام سے فرمایا کہ ان صفات سے موصوف فرمایا ہے اور تمہاری تعریف فرمائی ہے جمارے نے جمارے ساتھ موصوف فرمایا ہے اور تمہاری تعریف فرمائی ہے جمارے سامنے اپنی قوت اور امانت کی کوئی حکایت بیان کریں۔

حضرت جرئيل عليه السلام كى قوت وامانت كابيان

آپ نے کہا کہ میری قوت یہاں تک ہے کہ جھے حضرت لوط علیہ السلام کی قوم کے شہروں کو جو کہ چار تھے ہرباد کرنے کے لیے بھیجا گیا' ان شہروں میں سے ایک شہرسدوم میں چار لاکھ سلح مرد تھے عور توں اور بچوں کے علاوہ۔ میں نے ان تمام شہروں کو ساتویں زمین کے نیچے سے اپنے ایک پر سے اُٹھا کرا تنا بلند اُٹھا یا کہ آسان کے دہنے والے ان شہروں کے مرغوں اور کتوں کی آ وازیں من رہے تھے پھران تمام شہروں کو میں نے اُلٹ کر پھینک دیا اور جھے کوئی تعکن اور مشقت محسوس نہ ہوئی اور رہی امانت تو وہ اس مرتبہ کی ہے کہ جھے بھی کی چیے کوئی تعکن اور مشقت محسوس نہ ہوئی اور رہی امانت تو وہ اس مرتبہ کی ہے کہ جھے بھی کی راز نہیں کھولا گیا گر میں نے کی بیشی اور کہی تغیر و تبدل کے بغیر سرانجام دیا اور جھے پر کوئی راز نہیں کھولا گیا گر میں نے اس راز کواپنے سینے میں وہن رکھا اور کسی غیر کے سامنے بیان نہ

اور ان دونوں صفات کے ذکر کرنے سے روایت کی دوشرطیں عدالت اور توت حفظ ابت ہوگئیں اب ان کے علاوہ چنداور صفات کا ذکر بھی فر مایا جارہا ہے کہ سند وروایت کے علم کے ناقدین ترجیح اور کمال تھیج کے مقام میں ان صفات کا اعتبار کرتے ہیں' ان میں سے ایک بیہے کہ:

عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَکِیْنِ وہ قاصد صاحب عرش کے نزدیک معزز اور عالی مرتبت ہے اور ظاہر ہے کہ جب درباری واتفیت رکھنے والوں کو جو کہ جمیشہ دربار میں حاضر ہوں اسے پیغام رسانی کے لیے بھجیں تو ہر چیز کا اعتاد بہنست اس پیغام کے زیادہ ہوتا ہے جسے ہرکارے بیغام رسانی کے لیے بھجیں تو ہر چیز کا اعتاد بہنست اس پیغام کے زیادہ ہوتا ہے جسے ہرکارے باکسی غلام کی زبان سے بھیجیں۔ پہلی وجہ بیہ ہے کہ وہ معزز آ دی بادشاہ کے کلام کو بلاواسط سنتا مسلم معزز آ دی بادشاہ کے کلام کو بلاواسط سنتا مسلم کے دربان سے بھیجیں۔ پہلی وجہ بیہ ہے کہ وہ معزز آ دی بادشاہ کے کلام کو بلاواسط سنتا مسلم کے دربان سے بھیجیں۔ پہلی وجہ بیہ ہے کہ وہ معزز آ دی بادشاہ کے کلام کو بلاواسط سنتا مسلم کے دربان سے بھیجیں۔ پہلی وجہ بیہ ہے کہ وہ معزز آ دی بادشاہ کے کلام کو بلاواسط سنتا

ہاور بیاختال کہ کی کے درمیان اس کلام کو کم وہیش کر دیا ہو نہیں رہتا اور دوسری دجہ بیہ ہے کہ وہ عالی مقام معزز آ دمی اپنے منصب اور مرتبے کی حفاظت کی خاطر درباری پیغام کونقل کرنے بیں پوری احتیاط کرتا ہے ای لیے امام بخاری اور مسلم حضرت امام مالک اور دوسر کے امکہ حدیث کے شاگر دول میں سے ان لوگوں کو روایت میں ترجیح دیتے ہیں اور مقدم رکھتے ہیں جو کہ اپنے استاد کے زیادہ قریب بیضتے تنے اور اس استاد کی وائی صحبت کی وجہ سے مشہور و ہیں جو کہ اپنے استاد کے زیادہ قریب بیضتے تنے اور اس استاد کی وائی صحبت کی وجہ سے مشہور و معروف ہوگئے تنے اور اس استاد کے ذیادہ قریب بیضتے سے ادر اس استاد کی دائی صحبت کی وجہ سے مشہور و اسلام اور اختلاف کے وقت ان کی مرویات سے دلیل دیتے ہیں۔

اور دنیادارول کے عرف میں بھی وہ پیغام جو کہ شاہی دربار سے کسی سرداریا وزیر کے واسطے سے پہنچے اس مقام کی نسبت زیادہ معتبر ہوتا ہے جو کسی خدمت گار دربان اور ملازم کے واسطے سے پہنچے اور ان میں سے بیہ ہے کہ:

مُطَاعٍ تُمَّ آهِیْنِ اس قاصد کی اس جہان میں فرماں برداری کی جاتی ہے کہ مُلکتِ
الٰبی کے دربار کی کموٹی ہے اور اس دربار کے ارکان میں امین جانا گیا ہے کہ کمی غور اور تفقیش کے بغیر صرف اس کے کہنے پڑ عمل کرتے ہیں اور اس دربار کے لوگوں اور اس سرکار کے متوسلین کے ذہنوں میں اس کا پیغام اس قدر درائخ اور پختہ ہوگیا ہے کہ ای کے عکم کو تفقیش اور تحقیق کے بغیر علم اللی سجھتے ہوئے اس کی تغییل میں جلدی کرتے ہیں۔ چنا نچے جب جرکنل علیہ السلام حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو شب معراج ہمراہ لے محق تو آسانوں کے دربانوں اور جنت وجہنم کے خاذنوں نے ان کے عکم سے دروازے کھول دیے اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم حضور میں اللہ علیہ وسلم کو شب معراج میں تفصیل سے ذکور ہے۔

(یہال سے یوں مترقی ہوتا ہے کہ شب معراج کارکنان قدرت حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے لیے معروف عمل تنے حالاتکہ بہتمام انظامات تو مسلم کے لیے معروف عمل شخے حالاتکہ بہتمام انظامات تو شب اسریٰ کے دولہا سیدالکو بین صلی اللہ علیہ وسلم کے لیے تنے۔ جرئیل ایمن علیہ السلام تو بطور خادم ہمراہ تنے۔ چنانچہ علامہ بدرالدین محمود عنی حنی رحمت اللہ علیہ شرح بخاری میں فرماتے ہیں والحکمة فیم ان السماء لم تفتح الا لاجله بعلاف مالووجمدہ فرماتے ہیں والحکمة فیم ان السماء لم تفتح الا لاجله بعلاف مالووجمدہ

مفتوحا (عرة القارى ٢٥ م٠٠) نيزتيم الرياض شرح شفاء از علامه شهاب الدين فاتى رحمة الله عليه و ٢٠٠٠) نيزتيم الرياض شرح شفاء از علامه شهاب الدين ابوابها مفلقة ولا منفت الله عليه وسلم تنويها بقدوه لين آسان كورواز على ورواز عرض الله عليه وسلم عليه وسلم تنويها بقدوه لين آسان كورواز تاج صرف حضور صلى الله عليه وسلم علي محلي الرياح كلي موت تويه متله مجل منه موسكا اور السرخ من جرئيل عليه السلام كي حثيت كي لي بهى تعرق كافى جوكه علامه ابوافعنل شهاب الدين سيرمحود آلوى بغدادى في روح المعانى حاص المي مواسك المن موالا خد بركابه وميكائيل الآخذ بزمام دابته الى ان وصل الى ماوصل ثم تولى امرة سبحانه بهاشاء شب معراج براق كي ركاب خفرت جرئيل عليه السلام كي باته من تحريك التي تعرف عن المالي عليه السلام كي توري كربي و بال تك رسائي نيس علائي رباني اور نضلا ي تحرف الي خوب ترجم اني فرمائي الكي حرائي اور نضلا ي تحرف الي خوب ترجماني فرمائي الكي حرباني اور نضلا ي تحافى فرمائي الله عليه السلام كي توسوج كي مجي و بال تك رسائي نيس علائي رباني اور نضلا ي تحافى فرمائي الله عليه السلام كي توسوج كي مجي و بال تك رسائي نيس علائي رباني اور نضلا ي تحافى فرمائي الله عليه السلام كي توسوج كي مجي و بال تك رسائي نيس علائي رباني اور نضلا ي تحافى فرمائي الله المناه الله عليه عليه المناه الله عنام بركيا خوب ترجماني فرمائي الله عليه المناه الله عنام بركيا خوب ترجماني فرمائي الله عليه عليه الله عليه عليه الكي خوال تك رسائي فرمائي الله المناه المناه الله عليه الكي تحال عليه المناه المناه المناه الله عناه الكيال خوب ترجماني فرمائي الله المناه الله عليه الكيال المناه المناه المناه المناه المناه المناه الكيال المناه المنا

غنچ ما ادمی کے جو چنگے دنی کے باغ میں بلبل سدرہ تو اس کی ہو سے بھی محرم نہیں

ایک مقام پر فرمایا

شان خدانه ساتھ دے ان کے خرام کا وہ باز سعدہ سے تازیس جسے زم می ایک اُڑان ہے۔ از امام اہل سنت اعلیٰ حضرت بریلوی رحمۃ اللہ علیہ) حکیم الامت حضرت مولا نامفتی احمہ یار خال صاحب مجراتی فرماتے ہیں۔

> معراج کی شب ہمراہ ہیں سب سدرہ آیا کوئی نہ رہا سدرہ سے برھے جرئیل رُکے تنہا ہیں جوعرش خدا پایا نیز شخ سعدی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں

چنال گرم در تبید قربت براند که در سدره جبرئیل از و باز ماند

(محر محنوظ الحق غفرله)

اورسانوں آسانوں کے رہنے والوں تک احکامِ الہیکا پہنچانا انہیں کا کام ہے۔ گویا تمام فرشتوں سے حضرت جرئیل علیہ السلام اس صفت میں کہ آپ خدائی احکام پہنچانے والے ہیں ممتاز گردانے محتے ہیں۔ فرشتوں کی تمام اقسام میں آپ کا آنا اللہ تعالیٰ کی طرف سے کوئی پیغام لانے کی علامت ہے اور جب راوی اس درجے کا معتد ہوکہ تمام عمائد مین اس کے پیغامات کو تبول کریں اور اس کی سند نہ پوچیس تو پھر بھی اس کی خبر میں جموث اور بہتان کے پیغامات کو تبول کریں اور اس کی سند نہ پوچیس تو پھر بھی اس کی خبر میں جموث اور بہتان کے احتمال کو جگہ دینا مالیخولیا سے زیادہ نہیں ہے۔

اور دومرا واسطہ جو کہ تمہارے رسول علیہ السلام بین ایک ایی شخصیت بیں جو چالیس (۴۰) سال سے زیادہ تمہارے پاس جلوہ گر بیں اور خلوت وجلوت اور مقصد اور بے مقصد کسی طور پر تمہیں ان کے جھوٹ ہولئے کی اطلاع نہیں ہے اور الی معتمد شخصیت کو خبر دیئے میں معتبر نہ بھمنا معقول نہیں ہے۔ گر خیال میں کوئی خلل ہو کہ اندرونی حواس کے دگر گوں میں معتبر نہ بھمنا معقول نہیں ہے۔ گر خیال میں کوئی خلل ہو کہ اندرونی حواس کے دگر گوں ہونے کی وجہ ہے ہوئے ہیں اس کے خیال میں آئیں اور بجیب وغریب آوازیں سے اور اس کے خیال میں جو بھر بھی آئے اسے واقعی خیال کرے۔

ومّا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونِ اورتمهارے پاس موجوداس شخصیت میں سودایا خیال نہیں کہ ان کی خبر کے بارے میں اس احمال کوراہ دو۔اس لیے کہ اس طویل صحبت میں ہر لحدان کی عقل اور دانائی کے کمال کائم نے تجربہ کیا ہے۔اوران کے خیال اورقوت ویٹی کی درتی کوئم نے دریافت کیا ہے کہ تمام عقل مندوں سے بالاتر ہے۔ اور اس سب کچھ کے باوجود تمہارے دل میں شبرگر رے کہ یہ پیغیبر علیہ السلام جس صورت کو دیکھتے ہیں اوراس کی زبان سے کلام اللی کو سنتے ہیں ہمیں کہاں سے پند چلے کہ دہ جرئیل کی صورت ہے کہیں ایسانہ ہو کہی جن یا شیطان نے اس صورت میں تمثل ہو کر فریب دیا ہوادر آ واز دی ہو کہ جے تیغیبر کہی جن یا شیطان نے اس صورت میں تمثل ہو کر فریب دیا ہوادر آ واز دی ہو کہ جے تیغیبر علیہ السلام نے آ وازِ جرئیل مجھ لیا ہو۔ ہم کہتے ہیں کہ تہارے یہ سب شبہات اس وقت علیہ السلام نے آ وازِ جرئیل مجھ لیا ہو۔ ہم کہتے ہیں کہ تہارے یہ سب شبہات اس وقت کامیاب ہوتے ہیں کہاں تیغیبر علیہ السلام نے جرئیل علیہ السلام کو بھی بھی ان کی اصلی شکل کامیاب ہوتے ہیں کہ اس تیغیبر علیہ السلام نے جرئیل علیہ السلام کو بھی بھی ان کی اصلی شکل میں ند دیکھا ہو۔

و کفف دَاهُ بالْافَق الْمُبِینُ تحقیق اس پیمبرعلیدالسلام نے اس قاصد کواس کی شکل میں آسان کے روش کنارے میں دیکھا ہے یعنی مشرقی اُفق میں کہ اس ست میں سوری کی وجہ ہے کی شبہ کا گان تک ندر ہا تھا۔ اور جب ایک مرتبہ چیز کی حقیقت کو دیکھ لیا گیا تو ہر صورت اور ہرلباس میں اس حقیقت کی شناخت سہل اور آسان ہوگئی۔ مثلاً جب بچہ دریا میں پانی کو دیکھ لے۔ اگر وہ پانی کوزے یا لوٹے میں اس کے نزدیک لائمیں تو بلاتو قف بہپان لے گا کہ یہ وہی پانی ہے۔ علی ہذا القیاس اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا حضرت جرئیل علیہ السلام کوان کی اصلی صورت پردیکھ لیما حقیقت جرئیلی منکشف ہونے کا موجب ہوگیا تھا کہ السلام کوان کی اصلی صورت اور ہرلباس میں بہپان لیتے تھے۔ بیت

. تو خوای جامه و خوای قبا پوش

من انداز قدت رامی شناسم ,

مرایک دفعہ کہ چند مسائل دیدہ کی بابت سوال کرنے کے لیے آئے تھے اوراس ایک بار میں نہ بیچانے میں رازیہ ہے کہ اس وقت جبر تیل علیہ السلام اپنی حقیقت سے جو کہ رسالت خدا کے لیے لازم ہے تیزل کر کے سائلوں کی شکل میں آئے تھے اور وہی یا احکامِ الی کا بروگرام نیس تھا تا کہ جبر تیل علیہ السلام کو بیچاننا ضروری ہو۔

ادر مدیث پاک میں دارد ہے کہ میں نے جر کیل کوان کی اصلی شکل میں ہمی نہیں دیکھا موائے دوبار کے۔ایک دفعہ تو دی کے منقطع ہونے کے زمانے میں جبکہ انتہائی ہے تالی ک ۔ وجہ ہی شک نے بالی کی اور اس اداد ہے ہے محتقمہ کے مقام جیاد ہے میراگزر ہوا اس وقت میں نے جر کیل علیہ السلام کو دیکھا کہ مشرق کی سمت زمین و آسان کے درمیان ایک چک دار زرین کری پر بیٹے ہیں اور ان کے جسم نے آسان کے درمیان ایک چک دار زرین کری پر بیٹے ہیں اور ان کے جسم نے آسان کے مورے کتاروں کو گھر رکھا ہے ان کے چوسو پر ہیں۔ جن میں یا قوت اور مروار یہ جڑے ہوئے میں دوسری دفعہ معراق کی رات مورے ہیں۔ میں نے ایک عجیب نورانی شکل کا مشاہدہ کیا۔ دوسری دفعہ معراق کی رات مدر آنتی کے پاس میں نے ایک عجیب نورانی شکل کا مشاہدہ کیا۔ دوسری دفعہ معراق کی رات مدر آن جید میں سورہ والی میں ای صورت میں دیکھا اور قرآن مجید میں سورہ والی باراقل کے اوائل میں ان دونوں مرتبہ دیکھنے کا ذکر فر بایا گیا ہے محراتنا فرق ہے کہ وہاں باراقل کے اوائل میں ان دونوں مرتبہ دیکھنے کا ذکر فر بایا گیا ہے محراتنا فرق ہے کہ وہاں باراقل کے اوائل میں ان دونوں مرتبہ دیکھنے کا ذکر فر بایا گیا ہے محراتنا فرق ہے کہ وہاں باراقل کے اوائل میں ان دونوں مرتبہ دیکھنے کا ذکر فر بایا گیا ہے محراتنا فرق ہے کہ وہاں باراقل کے اور کی میں ان دونوں مرتبہ دیکھنے کا ذکر فر بایا گیا ہے محراتنا فرق ہے کہ وہاں باراقل کے اور کیل

marfat.com

نیز آپ کے استواء (جو کہ ڈومکر ق فاستوای و کھو بالافق الاغلی میں ندکور ہے) کی ابتدا جو کہ حقیقت جبر کیلی کی جل ہے کنایہ ہے ایک صورت میں ہے کہ اس حقیقت کا مقتصیٰ اُفق اعلیٰ میں تھا اور اس صورت کی نزد کی اور قرب کی انتہا اُفق مبین میں تھی۔

(اتول وبالثدالتوفيق يهال مغسر علام نے ايك قول كے مطابق تغير فرمائى ہے جبكه يهال دوسرا تول بمى ہے۔ چنانچے عليم الامت حضرت مولانامفتی احمدیار خاں صاحب حجراتی شان حبیب الرحمٰن من آیات القرآن میں فرماتے ہیں کہ''اس آیت کے مقصد میں مفسرین کا برااختلاف ہے ولقدراہ میں ہے کیا مراد ہے لین محبوب نے اس کودیکھا۔ بعض نے کہا كه جبرئيل كود يكها يعنى تمي پيغبر نے حصرت جبرئيل عليه السلام كوان كى اصلى شكل ميں نه دیکھا صرف ہارے حضور علیہ السلام نے دوبار ان کواصلی شکل میں دیکھا اس کے سوا انسانی شكل ميں آئے تھے اس كا يہال ذكر ہے۔ بعض نے فرمايا كداسينے رب كود يكھا جنہوں نے رب کو دیکھنے کا قول کیا ہے وہ دو جماعتیں ہیں۔ بعض تو کہتے ہیں کہ دل سے دیکھا۔ بیہ حضرت ابن عباس ماسنتے ہیں (مسلم) اور سرکی آئکھ سے دیکھا بیحضرت انس بن مالک حسن اورعکرمہ ماننے ہیں (تخمیرخزائن العرفان) صاحبِ روح البیان نے فرمایا کہ حضور عليه السلام فرمات بين رب تعالى نے موئ عليه السلام كواسين كلام سے اور جميں اسينے ويدار سے مشرف فرمایا ' غرب اہل سنت رہ ہے کہ حضور علیہ السلام نے دب کو پچشم سرو یکھا۔حسن بقری فتم کھا کرفر ماتے ہیں کہ معراج میں حضور علید السلام نے رب کو و یکھا۔ امام احمد بن حنبل فرماتے ہیں کہ حضور علیہ السلام نے رب کو دیکھا 'رب کو دیکھا' رب کو دیکھا یہاں تک فرمایا که آپ کی سانس بند ہوئی۔ محمحفوظ الحق غفرلہ)

اورارباب شہود میں سے بعض نے کہا ہے کہ عالم مثال کے دواُفق ہیں اس کا اوپر کا افتی عالم تجرد و تقدس کے مصل ہے۔ جبکہ اس کا نچلا اُفق عالم شہادت سے ملا ہوا ہے جب حقیقت جر سکلی نے چاہا کہ خود کو اس حقیقت کے کمال کے مناسب شکل میں جلوہ گرکرے تو پہلے اُفق اعلیٰ میں مثال کی شکل اور جسم کا پردہ پہنا اور آ ہستہ آ ہستہ نزد کیک ہوئی یہاں تک کہ حضورصلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ کمل اتعمال ہوا اور اُفق مبین سے مراد جو کہ اس حقیقت اور معنی کو ظاہر کرنے والا تھا' وہی عالم مثال کی مجلی سمت ہے نہ کہ اُفق آ سان تشہیبہ کی بناء پر اسے اُفق سے تعہیر کیا گیا ہے اس لیے کہ غیبی جہان غالب طور پراہل کشف وشہود کی نظر میں دائر والی کی صورت میں نمودار ہوتے ہیں اور سورہ نجم میں قرآنی عبارت بھی ای تقریر کی تائید

اور جب نزول قرآن پاک میں اشتباہ کی وجوہ کلی طور پرزائل ہوگئیں تو اس کی خبروں کی تخروں کی تخروں کی تخروں کی تخروں کی تخروں کی تخذیب کا احتمال ندر ہا سوائے اس کے کہ بعض کفار شبہ کے طور پر اس کلام کو کا ہنوں کی مقعیٰ کلام کی تتم سے جانتے تھے اور حضور علیہ العملوٰ ہی والسلام کوکا ہن کہتے۔

كابن كي حقيقت

اور کائن کی حقیقت ہے ہے کہ بعض انانی نفوس کو بعض شیطانی نفوس کے ساتھ مناسبت عاصل ہو جاتی ہے اور دہ شیطانی نفوس فرشتوں کی محفلوں ہے جن جس آ کندہ کے واقعات کی تداہیر کا ذکر ہوتا ہے چوری چھے کوئی چیز سن کر اپنے اس دوست کے پاس پنچا دیے ہیں اور دہ فخص لوگوں کے پاس کہد دیتا ہے اور بھی واقع کے مطابق بھی ہوجاتا ہے اور افراد انسانی کے ساتھ یہ شیطانی معاملہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی بعثت شریفہ ہے پہلے بہت مردی اور مشہور تھا اس سلسلے جی چندمشہور لوگ ہوگر درسے ہیں جھے شق اور ملمے اور غیب کی خبریں ورج خریب واقعات مشہور و فدکور ہیں اور دیگر دوادر آیات بی اس شیری و نیک بی اور دیگر دوادر آیات بی

كہانت كے شبد كاازاله

ادراس ٹبہ کے ازالہ کا بیان بیہے کہ کسی کا بمن کاعلم ُ غیب کی اقسام کو پورے طور پر marfat.com

تعمیرنے والانہیں ہوتا یہاں تک کداگر اس سے باری تعالیٰ کے اساء ومفات یا احکام شرعید كمتعلق جوكه عالم غيب مين مقرر بين يا غدا ب يحتن و باطل بونے كے متعلق يا جنت اور دوزخ کے حالات کے متعلق یا موت کے بعد ارواح کے ساتھ جوسلوک ہوتا ہے اس کے متعلق ادر اس متم کے علوم کی بات پوچیس تو تو تلے اور لا جواب رہ جائیں گے۔ بلکہ گزشتہ باوشاہوں اور اُمتوں کی تاریخ کو بھی بیان نہیں کر سکتے۔اس لیے کہاس کے علم کا ماخذ ملائکہ کے کلام کوچوری جیمیے سننا ہے جو کہ آئندہ کے واقعات کی تدبیریں کرتے ہیں اور بس تو اس کا علم تو آئنده عنقریب واقع ہونے والے واقعات تک محدود ہے کہ جن ہر ملائکہ کوآگاہ کیا گیا ہے اور انہیں ان کی تدبیر کرنے اور جاری کرنے کا تھم دیا حمیا ہے اور جب اس علم کا حاصل كرنا چورى كرنے كے ساتھ وابستہ ہے تو ان واقعات كى تمام سمتوں كا احاط كرنے والا بھى تہیں ہوتا بلکہ رمز واشارہ کے طور پر ایک دو تکلے جو کہ ان واقعات کی اصل پر اجمالی طور پر ولالت كرين ان كے ہاتھ كلتے ہيں اور وہ الى طرف سے اس واقعہ كے حواشی اور تنتے عقلی تیاس اور تجربوں کے طریقے برد ما دیتے ہیں۔ وہ واقعہ می تو ظاہر میں اس قیاس کے مطابق ہوتا ہے اور بھی دوسرے رتک میں ظاہر ہوتا ہے۔ اس امور غیبیہ کے بارے میں کا بن کاعلم رمز واشارہ سے زیادہ کچھیس ہے اور وہ بھی جہان کی جزئیات کے حالات کے ساتھ مخصوص ہے جو کہ عنقریب واقع بھونے والے ہوتے ہیں جبکہ بیقر آن علم غیب کی تمام اقسام کو تھیرنے والا ہے اور اس کا بیان بھی وسیع ہے جو کہ ہدایت وارشاد کے لیے کافی ہے۔

(اقول وبالله التوفق حضرت مفسرعلام كى وضاحت كے مطابق قرآن تمام اقبام غيب پرحادى ہے۔ الرحل علم القرآن كے مطابق حضرت رحلن جل شاند نے پورا قرآن پاك حضور عليه السلام كوخود برخمايا تو معلوم ہوا كہ مشمولات قرآن كاعلم حضور عليه السلام كوحاصل ہے۔ يادر ہے ماكان وما يكون بھى غيب كى اقسام ميں سے ہاس ليے غيب كا بيعلم بھى حضور عليه السلام كوحاصل ہے۔ واس ليے غيب كا بيعلم بھى حضور عليه السلام كوحاصل ہے۔ واس ليے غيب كا بيعلم بھى حضور عليه السلام كوحاصل ہے۔ واس الله كوحاصل ہے واس الله كوحاصل ہے۔ واس الله كوحاصل ہے واس الله كوحاصل ہے۔ واس الله كوحاصل ہے واس الله كوحاصل

وَمَاهُوَ عَلَى الْفَيْبِ بِصَنِيْنِ اور بِهِ آن علم غيب كے بيان مِن بُل كرنے والا اور كوتائى كوتائى كرنے والا اور كوتائى كرنے والا نہيں ہے آ دى كو دنيا و آخرت مِن جوعلم وعمل جا ہے اس مِن كوئى كوتائى استان كوتائى مىس كوئى كوتائى استان مىس كوئى كوتائى استان كوتائى كوت

نہیں رکھتا۔ پس اس مکمل ہدایت والے کلام کے بارے میں کہانت کا گمان کرنا وہی زریفت بنانے والے اور بوریا بنانے والی کی حکایت ہے۔ نیز کا بمن کی زبان پر جو پھی آتا ہے شیطان کی بات ہوتی ہے جو کہ وہ فرشتوں کی محافل سے چرا کر لایا ہے۔

وَمَاهُوَ بِقُولِ شَيْطَانِ رَجيعِ اور بيقرآن وحتكارے موئے شيطان كى بات نبيل ے اس کیے کہ جب شیطان حضرت آ دم علیہ السلام کی تعظیم نہ کرنے کی وجہ سے رندہ درگاہ ہوا' اسے حضرت آ دم علیہ السلام کے ساتھ انتہائی وحمنی ہوئی اور بارگاہِ خداوندی کے ساتھ مجمی سخت بغض وعداوت پیدا ہوگئی۔ پس اس کی ہر بات میں آ دمیوں کی بدخواہی پھیلی ہوتی ب اسے البیں ہدایت دینے اور ان کے امرونی سے کیا واسط؟ اس کا کام مراہ کرنا اور صلالت میں ڈالنا ہے۔ نیز اسے توحید'اللہ تعالیٰ کے اساء وسفات کے ذکر' جنت اور جہنم کے ذكر عالم آخرت كے اثبات بنول اور كفار كى ندمت شہوت اور غضب كے افعال كى يُرائى بيان كرن رياضت ومشقت كاعمال كحسن كوبيان كرف انبياء يبهم السلام اوراولياء ك شان کی خوبیاں بیان کرنے اور فرعونوں اور بدکاروں کے مال کی خباشت بیان کرنے سے کیا غرض؟ كه بيامورتو اس ملعون كے جگر كا كا ثااور آنكھ كا تنكا ہیں اور اس كی ماركیٹ كو ایک دَ م برباد كردية بي خصوصاً شيطان كے كريے وحوكا كھانے سے ڈرانا آ دميوں كے ساتھاس کی دسمنی کو بیان کرنا 'اس کی بیروی کی ندمت کرنا اوران کاموں کی خباشت کو بیان کرنا جو کہ اسے پندیں کیا امکان ہے کہ اس کی زبان سے نکلے بلکہ شیطان توبیکام سنتے ہی ہماگ جاتا ہے اور کان میں الکلیاں ڈال لیتا ہے کہ سے نہیں۔

ع ديو بكريز دازان قوم كرقر آن خوانند

یعنی شیطان تو اس قوم سے بھا گتا ہے جو قرآن پڑھے۔اس ہدایت بجرے کلام کو شیطان کی بات بجھنا انتہائی حماقت اور بے وقونی ہے۔ چنانچہ کفار کوان کے اس گمان فاسد میں ڈانٹنے کے انداز میں فرمایا جارہا ہے۔

فَایْنَ تَذْهَبُوْنَ پستم کوهرجارہے ہواور کن خیالوں میں سرگرداں ہو امر واقع کو چھوڑ کرصرتے طور پرمحال اور ممنوع احتالات کے ساتھ کہ جن پرتمیز والے بچے بھی ہنسی کرتے مساتھ کے ماتھ کے استفاد کے ساتھ کے استفاد کے ساتھ کے ساتھ کے استفاد کے بھی ہنسی کرتے مساتھ کے ساتھ کے استفاد کے بھی ہنسی کرتے مساتھ کے ساتھ کے ساتھ کے بھی ہنسی کرتے ہوئی کی مساتھ کے بھی ہنسی کرتے ہوئی کی مساتھ کے بھی ہنسی کرتے ہوئی کے بھی ہنسی کے بھی ہنسی کرتے ہی ہوئی کے بھی ہنسی کرتے ہوئی کے بھی ہنسی کے بھی ہنسی کرتے ہوئی کے بھی ہنسی کی کے بھی ہنسی کے بھی ہنسی کی بھی ہنسی کی بھی ہنسی کے بھی ہنسی کرنے کے بھی ہنسی کے بھی ہنسی کی بھی کے بھی ہنسی کی بھی ہن کے بھی ہنسی کے بھی ہن کے بھی ہنسی کے بھی کے بھی کے بھی ہنسی کے بھی کے بھی کے بھی کے بھی ہنسی کے بھی کے بھی ہنسی کے بھی ہنسی کے بھی ک

میں وحوکہ کھارہے ہو۔ کویا کمر کاراستہ کم کرکے کویں میں جارہے ہو۔

. ص اورظ کے مخرج کا بیان

بس من کا مخرج زبان کے کنارے کی جڑان وانوں کی مدد کے ساتھ ہے جنہیں امنراس کہتے ہیں خواہ واکی طرف سے اور اس حرف کو باکیں اماراس کہتے ہیں خواہ واکی طرف سے اور اس حرف کو باکیں طرف سے نکالنا اکثر لوگوں پر آسان ہوتا ہے لہذا زیادہ تر اس طرف سے نکالنا اکثر لوگوں پر آسان ہوتا ہے لہذا زیادہ تر اس طرف سے نکالے ہیں۔

ادر ظ کا مخرج زبان کا کنارہ اوپر کے دائنوں جنہیں تایا علیا کہتے ہیں کی جڑکی مدد

ہے جیے دال اور تاریخ جانا چاہے کہ اکرمغسرین نے ان قسموں کو اندلقول رسول کریم

کے مغمون پر وارد کیا ہے اورمقسم علیہ ای مغمون کو قرار دیا ہے لین ان قسموں کو اس کے مسمون پر وارد کیا ہے اور مقسم علیہ ای مغمون کو قرار دیا ہے لین ان قسموں کو اس کے ماسبق کے عقب میں جو کہ فلا انتم میں حرف فا کا مدلول ہے لانے میں ایک خفیہ کلتہ ہا اور کہا جا سکتا ہے کہ جب قیامت کے دن اعمال کی جزاء کا منطقف ہونا بارہ (۱۲) تم کے اسباب برمطق کر دیا گیا تو معلوم ہوا کہ واقعہ رونما ہونے سے پہلے اس کی تہ برکرنا چاہے اور بیتہ بیر برمطق کر دیا گیا تو معلوم ہوا کہ واقعہ رونما ہونے سے پہلے اس کی تہ برکرنا چاہے اور بیتہ بیر معلوم ہوا کہ واقعہ رونما ہونے سے پہلے اس کی تہ برکرنا چاہے اور بیتہ بیر معلوم ہوا کہ واقعہ رونما ہونے سے پہلے اس کی تہ برکرنا چاہے اور بیتہ بیر معلوم ہوا کہ واقعہ رونما ہونے سے ایک اسال کا بیانا وی اور اللہ تعالی کا بیانا وی اور سے دھزے حق سے انہ و انہ اللہ کا بیانا وی اور اللہ تعالی کا بیانا وی اور اللہ کی تعالی کا بیانا وی اور اللہ کا بیانا وی اور اللہ کی تعالی کا بیانا وی اور اللہ کی تعالی کا بیانا وی اور اللہ کی تعالی کی کی تعالی کی تع

قرآن پاک بھیجنے کے بغیر ممکن نہیں۔ پس قرآن کے مضامین کے سے ہونے پرفتم اُٹھانا ضروری ہے تاکہ مکلفین اس کے مطابق عمل کریں اور قیامت کے دن ندامت اور حسرت نہ اُٹھا کیں۔

قسمول کی ان مضامین کے ساتھ مناسبت کابیان

ہم یہاں پنچ کدان قسموں کی اس مضمون سے کیا مناسبت اور کوئی دلالت ہے؟ اس کی وجہ یہ ہم یہاں پنچ کہ بانچوں ستاروں کا رجوع 'استقامت اور اقامت گزشتہ انبیاء علیہم السلام پر بارباروی آئ ان کے اُمتوں میں مدت دراز تک اس وی کے اثرات باتی رہنے اس مدت کے بعد ان اثرات کے ختم ہونے اور اس علم کے گوشہ نفا میں لوٹے کا نمونہ ہے اور رات کا آناس زمانۂ فتر ت کانمونہ ہے جو کہ وجود باجود خاتم الرسلین علیہ الصلاق والسلام سے پہلے دنیا میں تھا کہ کی کوئی و باطل کی تمیز نہ رہی تھی اور وی کے اثرات بالکل زائل ہو چکے تھے اور صبح کا سائس لینا قرآن پاک کے نزول اور اس رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی بعث کی مثال کا سائس لینا قرآن پاک کے نزول اور اس رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی بعث کی مثال ہو تھا کہ کہ ہم چیز کو دن کی طرح یوں روٹن کر دیا کہ کوئی شبہ نہ رہا۔ گویا گزشتہ انبیاء علیہم السلام کا فرستاروں کے نور کی مانند تھا جبکہ یہ نور چمکنا ہوا آ قاب اور کیا ہی اچھا کہا گیا ۔

فَإِنَّهُ شَلْسُ فَضُلٍ هُمْ كُواكِبُهَا يظهرن انوارها للناس في الظلم حتى اذا طلعت في الكون عمر هدى هدى هدى الكالمين واحيت سائرالامم

یعنی حضور ملی اللہ علیہ وسلم فضیلت کا آ فقاب ہیں اور باقی انبیاء عیبم السلام اس کے ستارے ہیں جن کے انوار تاریکیوں میں لوگوں کے لیے ظاہر ہوتے ہیں جی کہ جب کا سنات میں طلوع ہوا تو جہان والوں کے لیے ہدایت عام ہوگئی اور سب اُمتوں کو زندہ کر دیا۔ میں طلوع ہوا تو جہان والوں کے لیے ہدایت عام ہوگئی اور سب اُمتوں کو زندہ کر دیا۔ جب اس صاحب اعجاز کلام کی صدافت کو بیان کرنے اور اس کی مخالف باتوں کو باطل حسن اس ماری مورکے طریقے سے اس کلام کی کھے صفات بیان فرمائی جا

ری بین کداس کے فق میں اس تنم سے اختالات کی کوئی مخواکش نہیں۔ mariat.com

اِن هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ قُر آن بَيْن مُرايك عظيم نفيحت جوكدالله تعالى كاساء اور صفات كو شامل مونى كا ورصفات كو شامل مونى كا وجد المحتم من واخل م جوكدالله تعالى كے حضور قرب اور واصل مونى كا وسيله موسكتا ہے۔

لِلْعَالَوِیْنَ جہان والوں کے لیے اور اس سے مراد انسان جن اور فرشے ہیں اس لیے کہ نصبحت اور ذکر کو ان تین گروہوں کے سواکوئی نہیں پہچانا۔ آدی اور جن اس کلام سے نصبحت بھی حفوظ رہتے ہیں اور نیکیوں کی طرف رغبت کرتے ہیں اور اس کی حلاوت سے خداوند حقیق کے حضور قرب معنوی بھی حاصل کرتے ہیں جبکہ فرشتے اس کی خلاوت سے خداوند حقیق کے حضور قرب معنوی بھی حاصل کرتے ہیں جبکہ فرشتے اس کی خلاوت کے ساتھ انس رکھتے ہیں اور دُور در سے اسے سننے کے لیے آتے ہیں اور اس کے حروف اور کلمات کی خدمت کرتے ہیں اور آسان پر لے جاتے ہیں اور تولیات کے مقام تک بہنچاتے ہیں اور بیسب پھھان کے لیے عنداللہ قرب حاصل کرنے کا قبولیت کے مقام تک بہنچاتے ہیں اور بیسب پھھان کے لیے عنداللہ قرب حاصل کرنے کا ذریعہ ہوتا ہے لیکن قرآن پاک کے ان منافع سے بہرہ ور ہونا خاص ہے۔

یکن شآء مِنگُد آن یقسَقِیْدِ اس کے لیے جو کہتم میں سے سیدها چانا چاہے۔اس
لیے کہ قرآن پاک کے معنوں کو بجھنے میں نج روی زیادہ تر سنگ دلی تھیجت سے دُوری اور
دربادِ خداد نی سے بعداور تجاب کا موجب ہوتی ہے۔ پس قرآن پاک کی مثال اچھی غذا کی
طرح ہے کہ صحت مندجہ میں قوت کی زیادتی اور صحت کے کمال کا موجب ہوتی ہے جبکہ
فاسد اخلاط والے جہم میں مرض کی زیادتی اور کروری بڑھانے کا سبب ہوتی ہے جبیبا کہ
دوسرے مقام پر فرمایا گیا ہے فی قُلُو بھیڈ مَدّ خَن فَزَ ادَهُدُ اللّٰهُ مَدَ خَنا (۱۔۲) نیز فرمایا
گیا ہے دامًا الّٰذِیْن فی قُلُو بھیڈ مَدَ خَن فَزَ ادَهُدُ دِجْسًا اللّٰی دِجُوبھیڈ. (۱۱۔۵)
اور ای لیے حققین نے فرمایا ہے کہ قرآن مجید رسول کریم علیہ السلام کا نور صحبت
اور ای لیے حققین نے فرمایا ہے کہ قرآن مجید رسول کریم علیہ السلام کا نور صحبت
اولیاء۔ اور علمائے کرام کی وعظ و تھیجت۔ سب کا سب خابب کی تفاظت اور ان کی تحیل
کے لیے غذا کی ما نند ہے اور جو چیز جہالت اور گرائی کی بیاری کا علاج ہے وہ ان چیزوں
کے علاوہ اور چیز ہے۔ اور اگر یہ چیزیں ایک دوا کی طرح ہوتی تو جہان میں کوئی تعنی مجی

تغير مريزي مستعمل (١٣٥) ميلوال پاره

فرمایا جار ہاہے کہوہ چیز خداتعالی کے قبضے میں ہے اس میں کسی کا وال اول

وَمَا اَشَاءُ وَنَ اورَمَ عَلَم وَمُل مِن راست روی نہیں چاہتے ہو۔ إِلَّا اَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ مُر جب کہ خدا تعالیٰ چاہے۔ اس لیے کہتم اس کے افتدار کے قبضے میں مجبور ہواور تہارا ارادہ اس کے ارادے کے تابع ہے جیسا کہ پتلیاں نچانے والے کے ہاتھ میں پتلیاں۔ فرق یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے ارادے ہے تم میں ارادہ اور افتیار پیدا کرتا ہے اور تم اس ارادہ اور افتیار کے مطابق اجھے کہ کام کرتے ہواور تو اب اور عذاب کے متحق بنتے ہواور پتیوں والے کے لیے پتیوں میں ارادہ اور افتیار پیدا کرنے کی قدرت کا تصور نہیں ہے وہ صرف والے کے لیے پتیوں میں ارادہ اور افتیار پیدا کرنے کی قدرت کا تصور نہیں ہے وہ صرف حرکت دیتا ہے اس لیے پتیوں کا فعل پتیوں والے کی طرف منسوب ہو جاتا ہے اور حرکتوں کی اچھائی کہ انکی پتیوں کی طرف نہیں لوثی بلکہ حرکت دینے والے کی طرف بخواف آ دمیوں کی اچھائی کہ انکی پتیوں کی طرف آنہ و کی میں اور ثواب کے کہ جب وہ اپنے ارادے اور افتیار کے ساتھ کام کرتے ہیں تو تعریف و فدمت اور ثواب وعذاب کا مورد بنتے ہیں۔

سورة االانفطار

کی ہے'اس کی انیس (۱۹) آیات اور تین سوانتیس (۳۲۹) حروف ہیں۔ سور و تکویر سے را لیطے کی وجہ

اوراس سورة کا سورهٔ اِذَا الشّبُسُ کُوِدَتَ کساتھ دابطاس قدر ظاہراورواضح ہے کہ بیان کی ضرورت نہیں۔ بلاتشیبہ اس سورة کواس سورة کا دوسرامصر کہا جاسکا ہے بلکہ اگر بیان کی ضرورت ہے تو یہ کہان دونوں سورتوں کو جدا جدا کیوں نازل فرمایا گیا اور فرق ک وجہ یہ بیان کی ضرورت ہے تو یہ کہان دونوں سورتوں کو جدا جدا کیوں نازل فرمایا گیا اور فرق ک وجہ یہ ہے کہ یہاں اس سورة میں قیامت کی ابتدا کے حادثوں کو بیان کرنا منظور ہے کہ یہ جہان کی بنیاد پائے گا۔اور اس جہان میں انسان کی علی توت جہان کی طاقت اور مواد اور تو توت اپنے اورج کمال کو بینی جائے گی اور اس کی قوت عمل قوت خیالیہ کی طاقت اور مواد اور اسباب پانے کی وجہ سے رب العالمین جل جلالہ کی قدرت کا بھم پالے گی اور کن فیکون کے اسباب پانے کی وجہ سے رب العالمین جل جلالہ کی قدرت کا بھم کمل طور پر ظاہر ہو کر طریقے سے مرادیں حاصل ہوں گی اور اس دن انسانی خلافت کا معنی ممل طور پر ظاہر ہو کر جلوہ گر ہوگا کیکن اس مورة میں جہان کے اصول کی خرابی کی کیفیت پراکھا مفر مایا گیا ہے جبکہ جلوہ گر ہوگا کیکن اس مورة میں جہان کے اصول کی خرابی کی کیفیت پراکھا مفر مایا گیا ہے جبکہ وہاں اس جہان کے اصولی و فروع کی خرابی کی کیفیت اور اس جہان کے دونوں مقامات جنت اور جہنم کو آباد کرنے کی کیفیت کو تفصیل کے ساتھ بیان فرمایا گیا ہے۔

اوراس سورۃ میں انسانی علم کے ان تمام چیزوں پرمجیط ہونے کے بیان پر اکتفاء فر مایا کیا ہے جو دنیا میں کرنے یا نہ کرنے کی صورت میں اس سے صاور ہوئیں جبکہ وہاں اس کے علم کا اس چیز پرمجیط ہونا بیان کرنا مقصود ہے جو کہ فعل اور ترک فعل کی کڑت سے ملنے والی وجد انی زندگی سے جو کہ اس کے جو ہرنفس کو لازم ہوگی نقد حاصل ہوگی۔

نیز اِس سورة میں اِس بیان سے جزاد سینے کے اثبات اور اس کے منکروں کے عقیدہ کی تردید کی طرف انقال فر مایا گیا ہے جبکہ اس سورۃ میں ای بیان سے اثبات رسالت 'نزول قر آن اور اس کے منکروں کی تردید کی طرف انقال فر مایا گیا' ان اختلافات کی بناء پر ان

دونوں سورتوں کو جدا جدا نازل فر مایا گیا ہے۔

اجمال كي تفصيل

اس اجمال کی تفصیل ہے ہے کہ جب چاہتے ہیں کہ ایک جہان کو خراب کر دیں اور اس مواد اور انہیں صورتوں ہے دوسرا جہان ترتیب دیں تو ناچار پہلے اس جہان کے اصول اور ارکان کو ڈھانے پر توجہ کرتے ہیں اور اس کے مواد میں کم وہیش تبدیلی کو کام میں لاتے ہیں اور صورتوں میں بھی تصرف کرتے ہیں تا کہ مواد کا پچھ حصہ جو کہ کسی صورت میں مصورتھا، کسی دوسرے جھے کے ساتھ جمع ہوکر جہانِ نو کے مناسب کی کوئی اور صورت اختیار کرے اور جو کام اس جہان میں مقصود ہیں اس صورت سے سرانجام پائیں۔ چنانچہ جس وقت کسی حویلی کو باغ یا باغ یا باغ کو قبرستان یا ہے کار پڑی ہوئی زمین کوحویلی یا خراب زمینوں کو قابلی کا شت بناتے ہیں تو اس طرح کرتے ہیں۔

آ دمی کومر تبه خلافت کی تکمیل کے لیے یہاں لایا گیا

خواص اور احکام والی عجیب صورتوں کو گھڑنے میں اصول و فروع کے خالق کے ساتھ مشابہت پیدا کرتا ہے اور ای طرح آسانی مخلوق میں سے ثوابت اور سیارگان اور عالی مرتبت مظائمہ میں سے ثوابت اور اس جہان کو مخرکرنے کا ملائکہ میں سے بہت ی مخلوق کو اپنی ضرورتوں میں کام میں لیتا ہے اور اس جہان کو مخرکرنے کا طریقہ این جمعتا ہے۔

کیکن بعض کواس کام میں زبردست نقصان لاحق ہوتا ہے کہ بے جاتصرفات کی وجہ ے زُتبہُ خلافت کیامرتبہُ بندگی ہے دُور جاگرتے ہیں اور جو پچھکرنا جا ہے تھا'نہیں کرتے اور جو پچھ بیں کرنا چاہیے تھا' کرتے ہیں اور وبال اور عذاب کے مستحق ہو جاتے ہیں۔اس لیے دارآ خرت کو دونول گروہول کے درمیان امتیاز قائم کرنے کے لیےمقرر فرمایا گیا ہے تا کہ خلافت کبریٰ کی ملاحیت جو کہ نیکوں کے ہاتھ آئی ہے وہاں وسعت اور بیشکی کے ساتھ ظہور فرمائے اور اینے مالک کی پہندیدہ اداؤں سے بغاوت عداوت اور وُوری کی خصلت جو كه يُرول كونصيب بهوني وه بمى اس جهان ميں اوج كمال كو پہنچ كرفتيج دائى نتائج كا كيل دے اوراس كام كے ليے اس جہان ميس تمام جسموں اور روحوں كواس مخلوق كا خادم بنانا ضرورى ہوا اس کیے کہ نہ تو اس ضعیف مخلوق کا جسم ہمیشہ رہنے کی طاقت رکھتا ہے اور نہ ہی اس کی روح عظیم دائمی کام کرے پر قادر ہے البذا ہوں طے پایا کہ سب آسانی روصیں اس کی روح کی مدد كرنے والى موں اور ان كى عقلى اور خيالى قوتنى اس مخلوق كى عقلى اور خيالى قوتوں ميں لپيث وى جائيس اورزمين كےسب مادے اس مخلوق اور اس مخلوق كے متعلقات جوكداس كى صنعتوں كاموضوع بي جيسے لباس كمانے كى چيزي رہائش كابي اور تفريحات بلكه زنجيري طوق سانپ بچھو آگ اور جلانے والے شعلے سے جسم میں مدوکریں اور اس کے کام میں لگ جائیں تا که نیکول کے خلافت اور بُرول کی سرکشی اور بغاوت کامعنی اچھی صورت میں جلوہ گر ہو۔

<u> جارا نقلا بات کا بیان</u>

پس اس صورت میں جارا نقلا بات کا ذکر فر مایا گیا ہے جو کہ اس جہان کے اصول سے متعلق ہیں۔ پہلا انقلاب آسان کا پھٹنا جس کی وجہ آسانی عقول ونفوس کا رابطہ ان اجرام سے باطل ہوجائے گا اور ان عقول ونفوس کا تعلق نفوس انسانیہ کے ساتھ قائم ہوجائے گا اور

شرع میں اس مقصد کی تعبیر یوں فر مائی گئی ہے کہ اس روز ساتوں آسانوں کے فرشتے اُتریں گے اور لوگوں کے اردگر د ہو جائیں گے اور بنی آ دم کی ارواح کے ساتھ ہمراہی اختیار کریں گے اور جب وہ نفوس انسانی نفوس کے ساتھ متعلق ہو گئے تو افرادِ انسانی کے ادراک اور تخیل میں عظیم کشادگی پیدا ہو جائے گی اور ان کے اجھے کرے اعمال جو کو دنیا میں ان سے سرز د ہوئے تھے کے معنوں کی کلیات اور جزئیات پورے طور پر روشن اور واضح ہو جائیں گی۔

دور انقلاب آسانی ستارے بے نور ہوکر گر پڑیں گے اور نورانی ارواح جو کہ ان
ستاروں کے ساتھ تعلق رکھتی تھیں انسان کے جسم کے ساتھ متعلق ہوجا کیں گی تو ان حالات
کی مناسبت کے مطابق جو کہ ارواح انسانی نے ونیا میں کمائے یا عطا ہو ہے پارواح کو کہیہ
کے مل جانے کی وجہ سے عظیم قوت پالیں گے اور اس مطلب کوقر آن مجید میں اس جہان میں
مزول روح اور قیام روح کے ساتھ تعبیر فرمایا گیا ہے اور بیدو آسانی انتقلاب ہیں جو کہ انسان
کے روحانی جہان کی کشادگی کا موجب ہوں گے۔

تیراانقلاب دریائے شورائی تمام شاخوں سمیت و موال اور بخارات ہوکراس کا کچھ حصہ زمین میں جذب اور ختک ہوجائے گا تا کہ زمین میں پجھنی اور نری پیدا کرے اور اس پرصورتوں اور شکلوں کا نقش ہونا آسان ہواور اس کا پجھ حصہ شتعل ہوکر جلانے والی آگ بن جائے گا تا کہ جنم بجڑکانے کا مادہ ہوجائے اور اس انقلاب سے بھی دریا جاری کرنے اور دریا بجڑکانے کے ساتھ تعبیر فرمائی گئی ہے اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم دریائے شور کے بارے میں فرماتے سے کہ ان تحت ناز الیمن اس کے بیج آگ ہے اور مروی ہے کہ جب حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ دریائے شور لیمن سمندر کو دیکھتے تو فرمایا کرتے سے کہ جب حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ دریائے شور لیمن سمندر کو دیکھتے تو فرمایا کرتے سے کہ یاب حد متی تعود فار ااے دریا تو کب آگ ہوگا۔

ان میں سے پہاڑوں کا چلانا ہے۔ اور ان میں سے بوجھ نکالنا ہے۔ اور ان میں سے زمین کا ہموار ہونا اس میں کسی علامت اور عمارت کا باقی نہ رہنا۔ اور اس کی نشو ونما کی قوت کا ختم ہونا ہے۔ اور ان میں سے وہ ہے جو کہ مجمع حدیث شریف میں وارد ہے کہ زمین سفید میدے کی روٹی کی طرح ہوجائے گی جو کہ اس میدان میں اہلِ محشر کی غذا ہوگی اور اس کے علاوہ اور بھی علامات ہیں جنہیں تنصیلا بیان کرنے سے بات طویل ہوجائے گی۔

اور یہ دوانقلاب زمنی انقلاب ہیں جن کی وجہ سے انسان کے جسمانی مواد کی وسعت حاصل ہوگی تا کہ اس نفس وسیعہ اور روح کا ملہ کا موضوع الصناعہ ہو سکے۔ ان چار انقلابات کے بعد جہانِ نوجس کا نام آخرت ہے کی بنیاد رکھی جائے گی اور اس بنیاد کی اصل الاصول التھے کہ ہائی کی حقیقت کا منکشف ہوتا ہے جو کہ نفسِ انسانی پر کھولیس گے۔ ای لیے اس سورة میں ان چار انقلابات کے ذکر کے بعد ای مقصد کا ذکر کیا گیا ہے۔ اور انہیں چار انقلابات کے ذکر کے بعد ای مقصد کا ذکر کیا گیا ہے۔ اور انہیں چار انقلابات پر اکتفاء کرنے کی وجہ یہ ہے کہ تحقیق کے مطابق جہان کی اصول کی چار

چیزیں ہیں: آسان ستارہ پانی اور زمین اور دومری سب چیزیں ان چاروں چیزوں
کا تاراور اجزا کے جمع ہونے سے بی ہیں: معدنیات نبا تات ، جمادات و بوانات اور فضا
کی کا نتات خود تمام عقلاء کے نزدیک انہیں چیزوں سے پیدا ہوتی ہیں البتہ کار خانہ عقل کے فلا بر بینوں نے ہوا اور آگ کو مستقل ارکان گمان کیا ہے لیکن تحقیق یہ ہے کہ ہوا ایک جم ہے خود اس کا کوئی خزانہ جو کہ پانی کی لطافت یا بعض ستاروں کی تا شیر کی وجہ سے کم وہیش ہوتا ہے خود اس کا کوئی خزانہ اور جائے قرار نہیں ہے اور اس کی کوئی صورت نہیں ہے اس کا کام سیر اور گردش ہے اور اس کی کوئی صورت نہیں ہے اس کا کام سیر اور گردش ہے اور گوت تک اور آواز کو سننے کی قوت تک وبہانا۔ علی ہذا اس کی کوئی شون نے کی قوت تک وبہانا۔ علی ہذا استفال کو سننے کی قوت تک وبہانا۔ علی ہذا القال سے

• اورآگ وی ہوا ہے جس نے انتہائی تیز حرکت یا آفاب کے اثر کرنے ہے بھڑک کر بیصورت اختیار کرلی ہے اور اس کا کام کی چیزوں کو پکانا اور اس چیز کو جلانا ہے جو بے کار ہو چکی ہے نندا کی اصلاح کرنے والی چیز کے مرتبے میں ہے کہ فی نفیہ در کارنہیں ہے۔

ای لیے جداخزانہ نہیں رکھتی۔ چنانچہ فیلسوف خیال کرتے ہیں کہ کرہ ہوا اور کرہ نار پانی اور زمین کے دونوں کروں کے اوپر محیط ہے۔ یہ ایک بے دلیل بات ہے جیسا کہ آسان اور ستاروں پر پھٹنا اورمل جانے کاممنوع ہونا بھی اس وادی سے ہے۔

ادراس سورۃ کا نام سورۃ الانفطاراس لیے رکھا گیا ہے کہ آسان کا پھٹنا آسانی عقول و نفوس کے نفس انسانی عقول و نفوس کے نفس انسانی کے ساتھ متعلق ہونے کا سب سے عمدہ سبب ہے اور بیتعلق ورحقیقت وہی ہے جو کہ ماقدمت واخرت کے علم کے حصول کا سبب ہے کہ جسے یہاں بیان کرنامقصود

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

اذا السّباء انفطرت جبداً سان بعث جائے اوراس کے بھٹنے کی کیفیت کو دوسرے مقام پر یوں ذکر فرمایا گیا ہے کہ بادل سے مشابہہ ایک جسم عرش البی کے نیچ سے نزول کے اوراس کے صدمے سے آسانوں کے جسم پاش ہوجا کیں۔ درحقیقت وہ بادل اللہ تعالیٰ کی بخل قبری کی صورت ہے جو کہ اس جہان کو برباد کرنے کے لیے متوجہ ہوگ۔

<u>ایک جواب طلب سوال</u>

یہاں بعض ذبین لوگ ایک جواب طلب سوال کرتے ہیں گہاس کہاس جہان کی ایک جہان کی ایک جہان کی ایٹ میں کہ اس جہان کی ایتدا میں زمین سے آغاز فرمایا گیا ہے کہ خَلَقَ لَکُمْ مَا فِی الْاَدْضِ جَویْدَعًا ثُمَّ اسْتَوٰی اِلْدَا مِیں آغاز آسان سے کیوں فرمایا گیا ہے۔ اِلَی السَّمَاءِ اوراس کی خرابی میں آغاز آسان سے کیوں فرمایا گیا ہے۔

اس کا جواب میہ کہ جب کی عمارت کی تغیر منظور ہوتو پہلے بنیادر کھتے ہیں اور جب کسی عمارت کی تغیر منظور ہوتو پہلے بنیادر کھتے ہیں اور جب کسی عمارت کو گرانامقصود ہوتا ہے تو پہلے اسے اوپر سے شروع کیا جاتا ہے۔

وَإِذَا الْكُوَاكِبُ الْتَتَكَرَتُ اور جَبَهُ ستارے بَعُم كرگر پڑیں اور ان ندكورہ دوانقلابوں كى وجہ سے نفوس ساویہ كاتعلق ان ستاروں اور ان آسانوں سے ختم ہوجائے اور اس كے شمن میں نفوس ساویہ کے ساتھ عقول كا تعلق بھی ختم ہوجائے اور نفوس كے تابع ہوكر افلاك كى خيالى قو تيم بھی ان كے اجرام سے جدا ہوجا ئيں اور وہ نفوس انسانی نفوس كے ساتھ امتزاح اور اشحاد بيدا كريں اور فلك كی عقول كا نيضان اور خيال كى كاركشائی سب انسانی نفس كے اجرام ملے عقول كا نيضان اور خيال كى كاركشائی سب انسانی نفس كے احتاج احتاج اللّٰ اللّٰ كاركشائی سب انسانی نفس كے اللہ كاركشائی سب انسانی نفس كے اللہ ملا اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ كاركشائی سب انسانی نفس كے اللّٰ اللّٰ

ساتھ تعلق قائم کرے ادرا سے عظیم وسعت نصیب ہواور اسے ماقدمت واخرت کے معنوں پر کلی جزوی عقلی اور مناسب شکلوں کے ساتھ خیالی طور پراطلاع حاصل ہو۔

دَاِذَا الْبِعَادُ فُجِدَتُ اور جَبَه سمندر جاری کے جائیں اور رُکنے اور تھہرنے کی موجودہ حالت بدل جائے۔ اور شخ ابومنعور ماتریدی رحمۃ اللہ علیہ سے فرمایا ہے کہ پہلے سمندرول کوایک جگہ جمع کیا جائے گائی کے بعدا کے لئے کی وجہ سے بھڑک اُٹھیں سے اور انہیں جلا کرایک حصے کو دُھوال بنا دیں سے جو کہ میدانِ قیامت کی فضا کو پُرکر دے اور اس سے ایک حصہ جہنم کی آگ بن جائے۔

پی ای سورة می سمندرول کے انقلاب کی ابتداکا ذکر ہے کہ وہ رُکنے اور مخبر نے
سے بدل کر جاری ہوجا کیں اور تمام سمندرل کرایک سمندرین جا کیں جبکہ سورة کور میں اس
انقلاب کا آخری حصہ ذکر کیا گیا ہے جو کہ جلانا اور بحر کانا ہے اور اس سورة میں بحر ۃ القور کی
مناسبت کے لیے تجمر یعنی جاری کرنے کو افتیار فر مایا گیا ہے اس لیے کہ پانی بنیادول کے
ینج آنے کی وجہ سے ممارتوں کو زیروز برکرنے کا موجب ہوتا ہے اور اس سورۃ میں جہنم کو
بحرکانے کی مناسبت سے تبحیر اور بحرکانے کو افتیار فر مایا گیا۔

لفظ بحراورنهر كے معنول كى تحقيق اور قطعات بحركابيان

اور لخت عرب میں برخاص دریائے شور کا نام ہے اور شخصے پانی کی نہریں اگر چہ وہ وسیع اور شخصے پانی کی نہریں اگر چہ وہ وسیع اور گہری ہوں انہیں انہار کہتے ہیں۔ پس جمع کا افتظ بخار لا تا باوجود کے دریائے شور ایک چیز ہے اس کی شاخوں کے متعدد ہونے کے چیش نظر ہے۔ چتا نچے داستوں اور ملکوں والوں نے لکھا ہے کہ بح محیط کے ایک حصے کا نام بح چین ہے اور ایک حصے کا نام بح جین ہے اور ایک حصے کا نام بح وائد مے سے کا نام بح قارم ہے۔ علیٰ ہذا القیاس

اور بحارے جاری کرنے سے انسانی اجمام کا مادہ اور ان اجمام کوعذاب اور مزادیے کے اسباب زیادہ ہوجا کی اور نفوس سادید کا ان جسموں سے تعلق بھی ہوجائے گا۔

وَإِذَا الْقُبُودُ بُعْثِرَتْ اور جَبَد قبری زیروز برکر دی جا کیں گی اور جو پچھ زین کے بینے تیا ہے نام کی اور جو پچھ زین کے بینے تیا ہے نمون پر آجائے۔ اور جسمول کی اجز اایک دوسرے کے ساتھ ال جا کیں۔ اس سے تیا ہے تیا ہے تا ہے اور جسمول کی جا ترا ایک دوسرے کے ساتھ ال جا کیں۔ اس سے تعلق جا کی جا تھ جا کیں۔ اس سے تعلق جا کی جا تھ جا کیں۔ اس سے تعلق جا کیں۔ اس سے تعلق جا کی جا تھ جا کی جسموں کے اس سے تعلق جا کی جا تھ جا کی جا تھ جا کی جا تھ جا کی جا تھ ج

کے بعد وہ بارش جے زندگی کی قوت سپردکی گئی ہے عرش کے بنچ سے ٹرے اور اس بارش کا پانی مرد کے ماد ہ تولید کا حکم رکھتا ہے۔ اور اس کے بعد حصرت اسرافیل علیہ السلام کے صور پھو نکنے کی وجہ سے انسانی روحیں اپنے جسموں کے ساتھ متعلق ہوجا کیں اور آسانی روحیں ان روحوں کی خدمت گزار اور مدد کرنے والی ہوجا کیں اور حشر قائم ہوجائے اس وقت

عَلِمَتُ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتُ نَسَ كَ الكِتْم جُوكُنْسِ انسانی ہے اس چیز کو جان لے جواس نے اچھائی بُرائی سے اللہ تعالی کی طرف آ مے بھیجی ہے اور آ مے بھیجنے سے مراد کوئی کام کرنا ہے اس لیے کہ جو کام کیا گیا اعمال کے دفتر میں نقش ہو گیا اور وہ دفتر اعمال لکھنے والوں کے ذریعے دربارِ معلیٰ میں پہنچ میا۔

واَخْدَتُ اور جواس نے نیکی بدی سے پیچے کیا ہے اور پیچے کرنے کامعنی ترک کرنا ہے اس لیے کہ جو کام منی ترک کرنا ہے اس لیے کہ جو کام نہیں کیا گیا اعمال کے دفتر میں ننہ موا اور دربار خداوندی میں نہ پہنا۔

اوربی مغرین نے تقدیم سے ال اور صدقات آ کے بھیجام اولیا ہے کہ یہ سب پکھ
آ خرت کا ذخیرہ بن جاتا ہے۔ اور تاخیر سے وارٹوں کے لیے ال چوڑ تا مراولیا ہے اور بعض
نے ماقدمت سے آ کے چنچ ہوئے بیٹے مراو لیے جی اور ما اخرت سے بیچے رہے
والے۔ اوربیش نے تقدیم سے اوائل عرض نیکی بدی کے اعمال کو مقدم کرتا اور تاخیر سے
والے۔ اوربیش نے تقدیم سے اوائل عرض نیکی بدی کے اعمال کو مقدم کرتا اور تاخیر سے
انیک آخری عرض مؤخرک تا مراولیا ہے۔ اور بیش نے کہا ہے کہ اچھا اور کہ اکام خواہ فعل ہویا
ترک سب اقدمت عی واقل ہیں اور اچھی اور کری رسم ند جب اور طریقہ جو کی فیض کے
بعدمعمول بنا ہے مااخرت عی واقل ہیں۔ اور حضرت عبدالله بن مسعود رضی اللہ عند کی دوا ت سے صدیث شریف علی ہے کہ ماقدمت من خید اوشر و ما اخرت من سنة
روایت سے صدیث شریف علی ہے کہ ماقدمت من خید اوشر و ما اخرت من سنة
حسنة اسن بھا بعدہ فلم اجرہ واجر عن اتبعہ من غیر ان ینقص من
اجو دھم شیء اوسنة سیئة عمل بھا بعدہ فعلیہ و ذرہ و و ذر من عبل بھا بعدہ
لاینقص من اوز ارھم شیء لین جو اچھائی کُرائی آ کے بیکی اور جو اچھا طریقہ بیچے چوڑ ا
جس پراس کے بعد کمل کیا جاتا رہا تو اے اس کا اجر باور اس کی پروی کرنے والے کا بمی
اسم کا تراث کے احد کمل کیا جاتا رہا تو اسے اس کا اجر بے اور اس کی پروی کرنے والے کا بمی
اسم کا تراث کے بعد کمل کیا جاتا رہا تو اے اس کا اجر بے اور اس کی پروی کرنے والے کا بمی
اسم کا تراث کے بعد کمل کیا جاتا رہا تو اے اس کا اجر بے اور اس کی پروی کرنے والے کا بمی

اجرہے جبکہ پیروی کرنے والوں کا اجربھی کم نہیں کیا جائے گا۔ یا ٹراطریقہ چھوڑا جس پر بعد میں عمل ہوتا رہا تو اس پر اس کا اور اس پڑ عمل کرنے والوں کا بوجھ ہے جبکہ عمل کرنے والوں کا بوجھ بھی کم نہیں ہوگا۔

نیز صدیث پاک میں ہے کہ ایک سائل نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ میں آ کر سوال کیا' حاضرین خاموش رہے' پوری محفل میں سے ایک صاحب اُشے اور اسے کوئی چیز دے دی۔ دوسروں نے بھی ان کی پیروی کرتے ہوئے اسے دینا شروع کردیا۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جوشخص نیک رسم شروع کرے اور لوگ اس رسم پڑل کریں اس کے لیے اپنا اجر بھی ہے اور دوسرے ممل کرنے والوں کا اجر بھی۔ جبکہ ان کے اجر بھی بھی کوئی کی نہیں ہوگی۔ اور ای طرح جس نے نری رسم شروع کی اور دوسروں نے اس پڑلل کیا تو اس پراپنا وبال بھی ہے اور دوسرے ممل کرنے والوں کا بھی جبکہ ان کے وبال میں بھی کوئی کی نہیں پراپنا وبال بھی ہے اور دوسرے ممل کرنے والوں کا بھی جبکہ ان کے وبال میں بھی کوئی کی نہیں ہوگی۔ راوی فرماتے جی کہ اس واقعہ کوئی کی نہیں موگی۔ راوی فرماتے جیں کہ اس واقعہ کوئی گرنے کے بعد حضرت حذیفہ بن ایمان رضی اللہ عنہ نے بی کہ اس واقعہ کوئی تھٹ نگھٹ و مَمَا آخہ دَتْ

(معلوم ہوا کہ اگر چہ ذکر حبیب پاک صلی اللہ علیہ وسلم اور نفس ایسال تواب کتاب و سنت سے ثابت ہے گر شری حدود و آ داب کا لحاظ کرتے ہوئے ہئیت کذائیہ کے ساتھ عید میلا دالنبی صلی اللہ علیہ وسلم تجا' ساتوال' چہلم اور عرس شریف بیسب اچھی رسیس ہیں کیونکہ ان کالب لباب کتاب وسنت سے ثابت ہے بلکہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے مندرجہ بالا ارشادِ عالی کی روشنی میں بیسب امور مستخب اور مستحسن ہیں' ان پمل کرنے والے اجر و تواب کے مستحق ہیں' ان پمل کرنے والے اجر و تواب کے مستحق ہیں' ان سے روکنار کار خیرسے روکنا ہے۔ محم محفوظ الحق غفرلہ)

بہر حال مرادیہ ہے کہ نفسِ انسانی کواپی نیکیوں اور کرائیوں پراطلاع تفصیل کے ساتھ میسر آئے گی اور جب وود کھے گا کہ میں نے جو بچھ آگے بھیجا تھا' سب کرا تھا اور جو پچھ ترک کر آیا ہوں' سب اچھا تھا اور بیہاں نیکی کا بھل یہ ہے اور کرائی کا نتیجہ یہ تو اسے اپی غلط بی پر عظیم ندامت اور سوزشِ جگر حاصل ہوگی اس وقت اسے کہا جائے گا۔

یا آیکھا الائسان ایک تیرانونام ہی انس ہے شتن ہے تونے یاو می کے marfat.com

Marfat.com

ساتھ انس کیوں پیدا نہ کیا اور نیکیاں نہ کیس اور تو یادِ حق کے غیر کے ساتھ جو کہ موتیوں اور زریں نگینوں کی صورت میں ظاہر ہونے والے سب سانپ اور بچھو تھے کیوں مانوس ہوا۔

كريم كے معنوں كابيان

اور کریم کے معنوں میں بہت سے اقوال ہیں۔بعض کہتے ہیں کہ کریم وہ ہے جس کا ہر فعل انعام اوراحسان ہواوراس کی حرکت اور سکون میں کوئی خیرینہاں ہو۔

بعض کہتے ہیں کہ جس نے انعام اوراحسان کرنے میں اپنی ذات کونفع پہنچانے یا اپنی ذات کونفع پہنچانے یا اپنی ذات سے نقصان دُور کرنے کو پیش نظر نہ رکھا ہو وہ کریم ہاور بعض کہتے ہیں کہ کریم وہ ہے کہ اس کے ذمے جو پچھ واجب ہو یا نہ ہو دوسروں کو دے دے اور اپنا جو پچھ دوسروں کے ذمے واجب ہے طلب نہ کرے اور بعض کہتے ہیں کہ کریم وہ ہے کہ ہرتھوڑی ہی چیز کو قبول کرے اور ایس پر بے طلب نہ کرے اور بعض کہتے ہیں کہ کریم وہ ہے کہ ہرتھوڑی ہی چیز کو قبول کرے اور اس پر بے شارمز دوری عطافر مائے۔

اور الله تعالیٰ کے کرم کا نقاضا ہے کہ جرائم سے صرف معانی دینے پر ہی اکتفاء نہیں فرماتا بلکہ ان سب گناموں اور خطاؤں کے باوجود گناہ گاروں پراحسان تربیت اور پردہ بوشی کے دروازے ہروقت کھلے رکھتا ہے۔

<u>ایک جواب طلب سوال</u>

يره (۱۵۲) ميسوال پاره ایک دن نوشیروال کی مجلس میں خدمت گار اور خواص ہننے ملکے۔ ایک دانش مند حاضر تھا اس نے عرض کی کہ بیر خدمت گار آپ ہے نہیں ڈرتے کہ آپ کے ہوتے ہوئے اس طرح ہنتے ہیں' نوشیرواں نے کہا کہ ممیں جاہیے کہ ہم اُنے دشمنوں کو ڈرائیں نہ کہ خدمت گاروں کو۔ نیز حضرت امیرالمومنین مرتضی علی کرم الله وجهه ہے مروی ہے کہ ایک دن آپ نے ایک کام کے لیے اینے غلام کو تین بار آواز دی وہ نہ بولا۔ آپ حجرے سے باہرتشریف لائے کہ شاید غلام کہیں گیا ہوا ہو ویکھا کہ جرے کے دروازے پر کھڑا ہے۔ فرمایا تجھے کیا ہوگیا کہ تونے مجھے جواب نہیں دیا؟ غلام نے کہا کہ مجھے آپ کے کرم پراعماد تھا اور آپ کی طرف سے کسی سزاملنے سے بےخوف تھا۔امیرالمونین نے اس کا جواب بیندفر مایا اور اسے آ زادفر مادیا۔ پس اس چیز کا ذکر غرور کا باعث ہوا نکار غرور کے مقام پر مناسب نہیں ہے۔ اس كا جواب يه ہے كه يهال صغت كرم كا ذكر غرور كى وجد كے ليے ہے يعنى تخفي غرور اس وجہ سے پیدا ہوا کہ وہ کریم ہے۔ چنانچہ حضرت امیر المومنین عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے منقول ہےکہآ پ کہتے تھےکہ الٰھی غرنی حلمك لواخذتنی بالاولی مااجرء تك على الثأنية الى مجھے تيرے طم نے مغرور كرديا اگرتو مجھے بيكے كناه كى وجه سے پكر ليتا ميں

دوسرے گناہ پر جرائت بی نہ کرتا۔
اور حضرت فعنیل بن عیاض رضی اللہ عند سے منقول ہے کہ ان سے پوچھا گیا کہ اگر قیامت کے دن اللہ تعالیٰ آپ کو اپ دربار میں کھڑا کر کے پوچھے کہ حاغو ك بربك الكريم تو آپ كيا كہيں گے؟ آپ نے فر مایا کہ میں کہوں گا کہ غرنی ستورک الرخاۃ جھے الكريم تو آپ كيا كہيں گے؟ آپ نے فر مایا کہ میں کہوں گا کہ غرنی ستورک الرخاۃ جھے تيرے لئكائے ہوئے پردول نے فریب دیا کہ میں نے جتنے گناہ کے تو نے رسوانہ كیا' میں سمجھا کہ تو تھے ہوئے ہوں انہ دوجہ سمجھا کہ تو تھی مرسوانہیں فرمائے گا۔ يہی بات حضرت امير المونين مرتضی علی کرم اللہ وجہ سمجھا کہ تو تھے من مستدرج بالاحسان سے بھی منقول ہے کہ كھ من حدود بالستر عليه و كھ من حستدرج بالاحسان اليه پردو پوشی سے كتے درجہ بدرجہ گراہ ہوگئے۔

اور جب استفہام انکاری مجموعی کلام پر وار دہوا تو اس کا مقصد اس غرور پر ڈانٹ ڈپٹ کرنا ہوا جو کہ کرم کریم دیکھنے سے پیدا ہوتا ہے۔اور جب کرم پر جو کہ غرور کا عمدہ سکب ہے' سسمت سے پیدا ہوتا ہے۔اور جب کرم پر جو کہ غرور کا عمدہ سکب ہے' سسمت استفہام انکاری مجموعی کلام پر وار دہوا تو اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کے اس کا میں اس کے اس کے اس ک

انکارمتوجہ ہوا تو غرور کی نفی میں زیادہ مؤٹر ہوا۔ اس لیے کہ جب کرم کا ملاحظہ کرتے ہوئے غرور نہیں چا ہے تو اس کے قہر کو دیکھ کر کیسے چا ہے اور اللہ تعالیٰ جسے کریم ہاں طرح قہار ہوادای طرح نہتا تم لینی انقام لینے والا ہا اور اس کے باد جود تھیم ہاور جب حکمت قہر اور انقام کے آٹار کی متقاضی ہوتو آٹار کم ظاہر نہیں ہول گے اس لیے کہ بدکاروں کے حق میں کرم اور احسان تقاضائے حکمت کے خلاف ہے۔ یہی وجہ ہے کہ جب حضور علیہ الصلوٰ ق والسلام اس آپت کی تلاوت فرماتے تو ارشاد فرماتے کہ غرہ با لللہ جھلد لیعنی آ دی کو اس کی نادانی نے دھوکہ دیا ہے کہ اس نے اپنے پروردگار کی ایک صفت کو جو کہ کرم ہے ملاحظہ کیا اور دوسری صفت کو جو کہ حکمت وعدالت ہے نظر میں نہ دکھا۔

دوسرا جواب- کی کام پر ڈانٹ وہاں پلائی جاتی ہے جہاں انکار واقع ہونے کا گمان ہوتا ہے جبکہ کریم کے کرم کی وجہ سے غرور کا تعل واقع ہونے کا گمان لازی ہے۔ کئی دفعہ ایسا ہوتا ہے جبکہ قہر اور انتقام پر مغرور ہونا ہرگز واقع ہونے والانہیں ہے اس پر انکار اور ڈانٹ پلانا کیا مناسبت رکھتا ہے۔ مثلاً عرف میں کہتے کہ بیں کہ فلاں کے حلم پر اعتماد نہ کرنا اس لیے کہ حلم کی اعتماد ہوسکتا ہے اور یوں ہرگز نہیں کہتے کہ فلاں کے غصے پر مغرور نہ ہونا اور اعتماد نہ کرنا اس لیے کہ خضب اور غصہ کی اعتماد اور مقام غرور نہیں کہتے کہ فیس ہے بلکہ پر ہیز کا مقام اور نیجنے کی جگہ ہے۔

اوربعض بزرگول نے کہا ہے کہ اس صفت کو لا ناتلقین جواب کے لیے ہے تا کہ بندہ کہددے کہ غد نی کو مل جھے تیرے کرم نے مغرور کر دیالیکن بیہ جواب درست قر ارنہیں پاتا اس لیے کہ اللہ تعالی کا کرم حکمت کے تقاضے کے مطابق صادر ہوتا ہے اور اس کی حکمت اس بات کا تقاضہ ہرگز نہیں کرتی کہ بندوں کی جز اکو بے کار چھوڑ و بے یا مظلوم کا بدلہ ظالم سے نہ لے اور تخلوق کے حقوق ضائع کر و باور نیک کو بد سے اور پر بیزگار کو فاجر سے متاز نہ کرے ۔ پس اس جواب میں فورا بیا ان کہ ہوتے نے کرم ثابت کر کے میر کی حکمت کا انکار کر دیا۔ نیز اللہ تعالی کا کرم آ دمی کی خواہش سے پہلے ہے' اسے کسی عوض اور غرض ۔ بغیر انکار کر دیا۔ نیز اللہ تعالیٰ کا کرم آ دمی کی خواہش سے پہلے ہے' اسے کسی عوض اور غرض ۔ بغیر بیدا فرما کرتم قتم کی نعتوں سے اس کی تربیت فرمائی۔ اور کرم سابق 'کرم لاحق کا موجب نہیں پیدا فرما کرتم قتم کی نعتوں سے اس کی تربیت فرمائی۔ اور کرم سابق 'کرم لاحق کا موجب نہیں

تغیر وزری سست بالکل درگزر کریں اور نرائیوں پر اسے تنبیبہ نہ کی جائے بلکہ اس کا کرم سابق خوف و ہراس کا زیادہ موجب ہاس لیے کہ اگر کسی کا کسی پرخق نعمت نہ ہوتو وہ کا کرم سابق خوف و ہراس کا زیادہ موجب ہاس لیے کہ اگر کسی کا کسی پرخق نعمت نہ ہوتو وہ اس کے اوامر اور نوابی کی مخالفت کر بے تو اس کی تمخائش ہے لیکن اپنے منعم کی نافر مانی اور ولی نعمت کی ناشکری انتہائی خطر ناک اور ئری ہے۔ اور اس منعم کا کرم سابق ان ناشکر ہوں سے صرف نظر کرنے کا تقاضا نہیں کرتا بلکہ عرف میں اس قتم کی چٹم پوٹی کو ذات ' کمزوری اور رسوائی سجھتے ہیں خصوصاً جب منعم کو پہچا نئے میں کوتا ہی کرے اور اس کی نعمتوں کو اس کے غیر

كى طرف منسوب كرے يااس كى مرضى كے خلاف مقام ميں صرف كرے الله تعالى جميں اس

غرور منااور رجاكے درمیان فرق كابیان

جانتا چاہے کہ امید یہ ہے کہ آ دمی مرغوب چیز کے انظار میں خوش رہے اور ہر مرغوب چیز کو حاصل کرنے کا کوئی سبب در کار ہے ورندا تظار نہیں پائی جاتی ۔ پس اگر اس چیز کے اکثر اسباب جمع ہو بچے ہوں تو اس کا انظار کریں اور خوشی میں وقت گزاریں۔ بیر جا اور امید کی حالت ہے اس کا شت کار کی طرح جس نے اچھی زمین میں اچھانے ہویا ہے اور وو وقت پر پانی دیتا ہے اور فار گار کرتا ہے۔

اوراگراس چیز کے اکثر اسباب منائع ہوجا ئیں اور اس چیز کا انظار کیا جائے ہے مالت marfat.com

غروراور حماقت ہے اس کسان کی طرح جوغیر معیاری زمین میں بیج ڈال کر پانی لگانے سے پہلوتھی کرتے ہوئے فال کر پانی لگانے سے پہلوتھی کرتے ہوئے فلد کی پیداوار اُٹھانے کے انتظار میں جیٹھار ہا۔

اوراگراکٹر اسباب حاصل کرنے میں شک واقع ہواوراس چیز کا انظار دل میں ہوتو یہ حالت تمنا اور آرزو کی حالت ہے اس کھیتی باڑی کرنے والے کی طرح کہ جس نے اچھی زمین میں نیج ڈال کراور پانی دینے میں مشغول زمین میں نیج ڈال کراور پانی دینے میں مشغول رہ کرغلہ کی بیداواراً مُعانے کا آرزومند ہے۔

پس بندے کو چاہیے کہ نجات اور کامیابی کے اسباب کو مقد ور بھر اپنے اندر جمع کرے اور اس کے بعد رحمت الی کے انتظار میں خوشی اور شادا بی میں وقت گزارے اور جو فلاح و نجات کے اکثر اسباب کو ضائع کر دیتا ہے اور فلاح و نجات کے حاصل ہونے کا منتظر ہے وہ مغرور ہے اور حصول اسباب کے مشکوک ہونے کی صورت ایک آرز و کے سوا کچھ نہیں اور یہ دونوں مرتبے اللہ تعالیٰ کے حضور تابل ندمت اور قتیج ہیں۔

سليمان بن عبد الملك اور حضرت ابوحازم رحمة التدعليه كاواقعه

حکایت بیان کرتے ہیں کہ سلیمان بن عبدالملک شام سے جج بیت اللہ شریف کے لیے جارہا تھا مدینہ عالیہ کو راستے ہیں اس کی طاقات حضرت ابدهازم کے ساتھ ہوگئی اس نے ابدهازم سے بوچھا کہ کل قیامت ہیں بندوں کی اپنے پروردگار کے ساتھ طاقات کس طرح ہوگا ؟ ابدهازم نے فرمایا کہ اگر بنده دنیا ہیں نیک عمل کر کے گیا ہے تو اس شخص کی طرح ہوگا ہوگئی وار گردوردراز کے سفر سے بناہ مال و دولت کما کر اپنے گھر لوٹے و کہ کھولو کہ اس کے گھر والے اس کے ساتھ کس سلوک سے پیش آئیں گے اوراگر بنده بدکار ہے تو اس غلام کی طرح ہوگا جو کہ اپنی کے اوراگر بنده بدکار ہے تو اس غلام کی طرح ہوگا جو کہ اپنی اور طوق ہوگا جو کہ ایک نے اس کے بیچھے تحت اور تیز مزاج نو کر دوڑائے اور وہ ان کے ہاتھوں گرفتار ہوکر بیڑیاں اور طوق کے بیچھے تحت اور تیز مزاج نو کر دوڑائے اور وہ ان کے ہاتھوں گرفتار ہوکر بیڑیاں اور طوق پہنے اور لھنت ونفرت کا مستحق ہوکر اپنے مالک کے دربار میں پنچے ۔ یہ کلام سنتے بی سلیمان پر کے بیٹے اور لو اس کے بیٹے اور دو اس کے ہا کہ اس کے دربار میں پنچے ۔ یہ کلام سنتے بی سلیمان پر کریہ طاری ہوگئی اس نے کہا کہ اے کاش! ہمیں معلوم ہوکہ ان دونوں طریقوں میں سے گریہ طاری ہوگئی اس نے کہا کہ اے کاش! ہمیں معلوم ہوکہ ان دونوں طریقوں میں ہمیں کی طریقے کے ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیجھا کی ہو کہ ان دونوں طریقے کے ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیجھا کی ہو کہ ان دونوں طریقے کے ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیجھا کی ہو کہ ان دونوں طریقے کے ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیجھا کی گراہ کو کہ کر ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیجھا کی ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیجھا کی سے ابو حازم ہو کہ کر بار میں کی می کا کہ کر کا کی ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیجھا کی ساتھ اپنے مالک کے دربار میں لیکھا کے دربار میں لیکھا کہ کر کا کہ کر کا کہ کر بار میں لیکھا کو کر اپنے کو مالک کے دربار میں لیکھا کر کیا گراہ کے دربار میں لیکھا کو کر کیا کہ کر کا کر کا کر کو کر کیا گراہ کو کر کیا کہ کر کا کر کو کر کیا گراہ کو کر کیا گراہ کی کر کا کر کیا گراہ کی کر کا کی کر کیا کی کر کا کر کا کی کر کا کر کیا گراہ کی کر کا کر کیا کر کیا گراہ کی کر کا کر کیا گراہ کی کر کا کر کی کر کا کر کی کر کو کر کی کر کا کر کی کر کا کر کی کر ک

پیچاناتو بہت آسان ہے اور قرآن پاک میں واضح فرمادیا گیاہے۔

سلیمان نے کہا کہ س آیت میں؟ ابوحازم نے فرمایا کہ إِنَّ الْاَبُو اَدَ لَغِیْ نَعِیْمِ وَإِنَّ الْفُجَّادَ لَفِیْ بَعِیْمِ اب اپ موجودہ اعمال کود کھے لوکہ تم ابرار میں ہو یا فجار میں ۔سلیمان نے کہا کہ اگر نجات کا کام ہمارے عمل پر ہے تو رحمتِ اللی کدھرگی؟ ابوحازم نے فرمایا کہ رحمتِ اللی کدھرگی؟ ابوحازم نے فرمایا کہ رحمتِ اللی کے مقام کا پہت بھی قرآن مجید میں دیا گیا ہے۔سلیمان نے کہا کہ کوئی آیت میں؟ ابوحازم نے فرمایا اِنَّ دَحْمَةَ اللّٰهِ قَدِیْبٌ مِنَ الله تحسونی وق اور گریہ کی وجہ سلیمان کی حالت فرمایا اِنَّ دَحْمَةَ اللّٰهِ قَدِیْبٌ مِنَ الله تحسونی کی حالت فرمایا اِنَّ دَحْمَةَ اللّٰهِ قَدِیْبٌ مِنَ الله تحسونی کی حالت فرمایا اور کو گفتگو سنے کی اور وہ وہاں سے چلا گیا اور کہنے لگا کہ میں آپ کی گفتگو سنے کی تاب نہیں رکھی کہ میرا چگر پھٹا ہے۔

اور جب اس آیت میں آوی کو ڈانٹ ڈیٹ کی گی کہ اللہ تعالیٰ کے کرم پر مغرور نہیں ہوتا چاہیے تو اب چند ایک اور نعمتوں کا شار ہور ہا ہے کہ وہ نعمتیں غرور وفریب کورو کنے والی تقیس - ان میں سے یہ ہے کہ فر مایا جارہا ہے الّذِی خَلَقَكَ وہ کریم جس نے اپنے کرم کے تقاضے سے تجھے پیدا فر مایا اور اس حالت میں تجھ سے سوال اور دعا کی خواہش کا تقور بھی نہ تھا اور تجھ سے کی کوئی تو تع نہ تھی۔

فَتَوَّاكَ لِي بَحْ وَرست اعضاء والا بنایا اور تیرے اعضاء مقدار میں برابر بنائے ہاتھ کو ہاتھ کے ساتھ اور آگھ کو آگھ کے ساتھ اور آگھ کو آگھ کے ساتھ مثلاً اگر ایک پاؤں جیوٹا ہوتا اور دوسرا بڑا تو بختے تکلیف بھی ہوتی اور تو معیوب اور ناقص بھی ہوتا اس کا کرم ہے کہ اس نے بختے کندے قطرے سے اس پندیدہ اور متناسب صورت میں پیدا فر مایا۔

ترکیب دی اور تو اس وقت حاضر نہ تھا کہ عرض کرتا کہ فلاں صورت اچھی ہے اور فلال کرئ جمھے یہ شے دی جائے اور وہ نہ دی جائے۔ اس کا محض کرم ہے کہ اس نے تحقے بہترین صورت میں مرکب فر مایا۔ اور وہ ہاتھ عطا فر مایا جو کہ تجبیر کے وقت اُٹھانے قر آن پاک آلاتِ جہاداور دوسری نیکیوں میں جو کہ جم کے متعلق میں 'پڑنے کے لائق ہے اور وہ زبان دی جو کہ ثناء تنبیع 'ذکر خلاوت 'امر بالمعروف 'نہی عن المنکر اور ذات وصفات کے تھائق بیان دی جو کہ ثناء تنبیع 'ذکر خلاوت 'امر بالمعروف 'نہی عن المنکر اور ذات وصفات کے تھائق بیان ول کرنے کے قابل ہے اور وہ پاؤں دیا جو کہ نماز میں کھڑے ہوئے جہاد طواف کعب 'بیاروں کی عیادت' اولیائے اللہ کی زیارت اور دوسری نیکیوں میں جو کہ پاؤں سے متعلق میں دوڑ نے ان کی عیادت' اولیائے اللہ کی زیارت اور دوسری نیکیوں میں جو کہ پاؤں سے متعلق میں دوڑ نے ان نعتوں کو نافر مانی کا آلہ اور مخالفت کرنے کا ہتھیار بنالیا ہے ایسا محف صفت کر بی کے لائق نہیں ہوتا' اسے اللہ تعالیٰ کے کرم سے غرور اور فریب کھاٹا زیب نہیں دیتا۔

اورآ دمی کی تخلیق کواس مقام پر کہ جہال کریم کی تعتوں کا شار کرنا مقصود ہے ای لیے فاص فر مایا گیا ہے کہ اس نعمت میں کوئی سوال یا خواہش بندے کی طرف سے بالکل نہ تھی اور نفع اور دفع ضرر کی تو تعریک تصور القد تعالی کی طرف بالکل نہ تھا۔ بخلاف دوسری نعمتوں کے جو کہ پیدائش اور مان آیا تھا ہے کہ بعد عطا ہوتی ہیں کہ وہ اس قدر کرم پر دلالت نہیں کرتیں۔

نیز تخلیق انسانی کی نعت کے طبیعت کے اعتدال اور اعضاء کے مناسبت کے کمال کے ساتھ واقع ہوئی اس بات پر صرح دلیل ہے کہ اس شم کی مخلوق کو بہم تعمد بیدانہیں فر مایا گیا ہے بلکہ اعتقاد وعمل میں غیر معتدل راستہ سے معتدل راستے کو پہچانے کے لیے بیدا فر مایا اس لیے کہ غیر معتدل کو معتدل کے بغیر کوئی نہیں پہچان سکتا ای لیے طب کی کتابوں میں طے شدہ بات ہے کہ غیر معتدل حداعتدال سے نکلی ہوئی کیفیت سے جو کہ اس غیر معتدل کی جنس سے شدہ بات ہے کہ غیر معتدل حداعتدال سے نکلی ہوئی کیفیت سے جو کہ اس غیر معتدل کی جنس سے نہوا تنا متاثر نہیں ہوتا اور ہم جنس سے زیادہ اور جلدی متاثر ہوتا ہے اور تھوڑ ہے کو زیادہ سے معتا ہے تو جب انہوں نے اس کام میں کوتا ہی اختیار کی تو عتاب اور غضب کا زیادہ مقام ہوا۔ سابقہ کرم سے فریب کھانے کا کیا معنی؟

تغیر عزیزی مسلم است میسوال یاره

أيك جواب طلب سوال

اس کا جواب یہ ہے کہ تخلیق اعضاء کو ہرابر برابر بنانا اور معتدل بنانا تین تر تیب وارفعل بین ان افعال میں کاممہ فا کے مدلول کی جو کہ تعقیب ہے مخوائش ہے اور ان تین افعال کے بعد صورت کی ترکیب لازم ہے۔ بالکل یہی کہ تسویہ اور تعدیل سے فراغت ہوئی تصویر عاصل ہوگی بلکہ تسویہ اور تعدیل بی تصویر ہے۔ بین حق فا کی مخوائش نہتی اور چونکہ یہ نمست تسویہ اور تعدیل کے مجموعے سے رونما ہوئی اس لیے اس نمت کو نمت آنے کا بیان کرنے کے طور پروارد فرما دیا گیا۔ ا

بيح كا والدين كالهم شكل مونا ضروري نبيس

اورمفسرین کے ایک گروہ نے بی آئی صور وقا منا شاء رسخبان کی تفییر جی فرمایا ہے کہ کمی بچہ باپ کی صورت پر بھی مال کی شکل پر بھی بچا کی شکل پر بھی ماموں کی شکل پر اور کہ بھی اپنے تابید وصور سلی اللہ علیہ وسلم سے منقول ہے کہ آ ب نے ایک شخص سے پوچھا تیری کیا اولاد ہے؟ اس نے عرض کی یارسول اللہ! صلی اللہ علیہ وسلم شاید میرے ہال لڑکا پیدا ہو یا لڑکی پھر آ پ نے پوچھا کہ کس کے اللہ! صلی اللہ علیہ وسلم شاید میرے ہال لڑکا پیدا ہو یا لڑکی پھر آ پ نے بوچھا کہ کس کے مشابہہ یا اپنے باپ کے حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ایسا مت کہو ہے تک جب رحم میں نظفہ قرار پاتا ہے اللہ تعالی اس کے اور آ دم علیہ السلام کے درمیان سارانسب اس کے پاس حاضر فرما دیتا ہے کیا تو نے یہ آ بہت نہیں پر بھی؟ السلام کے درمیان سارانسب اس کے پاس حاضر فرما دیتا ہے کیا تو نے یہ آ بہت نہیں پر بھی؟

ترتیب کی حفاظت اور صورت کے ہم شکل اور مخلوط ہونے میں مشترک ہونے کے باوجود ہر فخص دوسرے مخص سے جدا ہے اور میبی سے خزائن الہید کی وسعت کو دریافت کیا جا سکتا ہے کہ اس میں کتنے غیر متنابی نقشے ہیں۔ ہے کہ اس میں کتنے غیر متنابی نقشے ہیں۔

اوربعض نے کہا ہے کہ زاور مادہ کی صورت کا اختلاف مراد ہے اور اس تفییر کے مطابق ماتھ اس آیت کا رابط یہ ہے کہ نرکا تسویہ اور تعدیل مادہ کے تسویہ و تعدیل سے مخلف ہے لیکن یہ اختلاف صنف کا ہے اس لیے طب والے مؤنث کا مزاج زیادہ تر سمجھتے ہیں جبکہ ذکر کا مزاج زیادہ خشک جانح ہیں اور ذکر کی جسمانی صحت مؤنث کی جسمانی صحت سے جدا جانے ہیں لیکن اصل تسویہ اور تعدیل میں جو کہ نوع انسانی کا تقاضا ہے باہم شرک ہیں۔

اور بعض نے انسان کے مختلف رگوں پر محمول فرمایا ہے اور کہتے ہیں کہ پہلی اور دوسری
اقلیم میں رہنے والوں کا رنگ سیاہ ہوتا ہے اس لیے کہ سورج ہمیشہ ان کے سمت الراس میں
ہوتا ہے (افق کے اوپر کرہ ساویہ کے ایک نقطے کا نام ہے) یا اس کے قریب اور سون کا ہمیشہ
گری دینا رنگ سیاہ کرنے کا موجب ہوتا ہے۔ چنا نچہ دھو بیوں اور دوسرے کسانوں کے
رکھوں میں جو کہ ہمیشہ دھوپ میں کھلے جسم رہتے ہیں دیکھا اور محسوس کیا جاتا ہے اور تیسری
اقلیم کے رہنے والے اکثر گندی رنگ والے چھی اقلیم کے رہنے والے سرخی مائل سفیدرنگ
والے پانچ یں اقلیم کے باس سرخ رنگ اور چھٹی اور ساتویں اقلیم کے رہنے والے ملکے زرد

اور حفرت حن بھری رحمۃ الله علیہ ہے منقول ہے کہ بعض کو ایک صورت پر پیدا کیا عمل ہے کہ انہیں اپنی پندیدہ اداؤل کے لیے بُن لیں۔ چنانچہ حضرت موی علی نینا وعلیہ الصلاۃ والسلام کے بارے میں فرمایا حمیا ہے کہ وصطنعتك لنفسی. نیز آپ کے اور دوسرے انبیاء علیم السلام کے حق میں فرمایا ہے کہ اِنّه گان مُسْحَلَصًا. وَاللّهُ مِنْ عِبَادِنَا اللّه عَلَى الله م کے حق میں فرمایا ہے کہ اِنّه گان مُسْحَلَصًا. وَاللّهُ مِنْ عِبَادِنَا اللّه عَلَى الله م کے حق میں فرمایا ہے کہ اِنّه گان مُسْحَلَصًا. وَاللّه مِن عِبَادِنَا اللّه عَلَى الله عَلَى اللّه مِن عِبَادِنَا اللّه عَلَى اللّه اللّه عَلَى الل

فیر میں مشغول ہوں۔ بعض اموال کی تجارت بعض کا شت کاری اور بعض کاری گری میں لگ جا کیں تاکہ جہان کے کاروبار منظم ہوں اور جب اس بات کا گمان تھا کہ صفت کرم کائن کر جو کہ اس ڈائٹ اور سوال میں فہ کور ہے کفار کہنے لگیں کہ ہمارا غرور اور اعتماد سب اس کے کرم پر ہے ایک اور تنویہ اور زیادہ سخت جمڑی فریائی۔

تکلّا ہات ہوں نیس ہے کہتم اللہ تعالیٰ کے کرم پراعتاد کرتے ہوئے گناہ کرتے ہواں لیے کہ بیاعتاد جزااور آخرت کے عقیدےاور اقرار پرموقوف ہے جبکہ روزِ جزا پرتمہارااقرار اوراعقادی نیس۔

بَلْ تُكُلِّبُونَ بِالدِّيْنِ بِلَكُمْ جَرَاكا نكاركرتے ہو۔ طالانكہ جزاكا وعدہ بھى كرم بى كا تقاضا ہے تاكہ انچى جزاكى اميد پرتم نيكى اور بندگى بجالاؤ اور تمبارے دارين كے كام اصلاح پائيں اور سزاكے ڈرے نافر مانى سے بچو تاكہ تمبارے دارين كے امور خراب نہ ہوں اور تم سے انكار ہوكيے سكتا ہے۔

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ طَالَاتُكُمْ يِ خداتنالَى كَالمرف سے لَحَافِظِيْنَ كَمْبان مقرر بِن تاكدوه تبارے اِنْحَافِظِیْنَ كَمْبان مقرر بِن تاكدوه تبارے اِنْحَامُ مُنائع نه بواوركوئى يُراكام مائع نه بواوركوئى يُراكام رائعاں نہ جائے۔

یحرکھا مینی وہ بھیان بھی خلق المی سے محکق ہوکرتہادے ساتھ کرم کا معالمہ کرتے ہیں۔

<u> کِرَامًا کَاتِبینَ</u> کیکارگزاری

ان کے رائے کرم سے ایک بات یہ ہے کہ وہ خود کو تھاری نظر میں فاہر نیس کرتے تا کہ تم ان کے رائے از دولتی زعر کی اول و برازی حاجت پیری کرنے میر لذتوں میر خوابش نے کے صول می رکاوٹ محمول نے کرو ۔ اور یہ ہی ہے کہ تمہد ہے وہ ان کی کے مصول میں رکوا تھی کے وہ دور یہ ہی ہے کہ تمہد فاہر نیس کرتے مور فوکوں کے رہے تہد فاہر نیس کرتے مور نوگوں کے رہے تہد فاہر نیس کرتے مور ہوتی ہے اس نکی کو دیں گاتے ہیں۔ مخفی ارتم نے ایک ہور ہوتی ہے اس نکی کو دیں گاتے ہیں۔ مخفی آرتم نے ایک رہے ہیں۔ میں مارو نے کہ مارو رہے کے میں مور بوتی ہے اس نکی کو دیں گاتے ہیں۔ مور اگر تھے تی مور اگر تھے تھے تی مور اگر تھے تی مور اگر تھے تی مور اگر تھے تی مور اگر تھے تی مور تھے تیں۔ مور تھے تی مور تھے تیں۔ مور تو تھے تیں۔ مور تھے تیں تھے تیں۔ مور تھے تیں تھے تیں تھے تیں تھے تیں۔ مور تھے تیں تھے تی

قصد کیا اور کسی رکاوٹ کی وجہ ہے وہ نیکی تم ہے واقع نہیں ہوئی اسے بھی وہ نیکی کے حساب
میں رکھتے ہیں۔ اور ایک نیکی لکھتے ہیں۔ اور اگر تم نے گناہ کا قصد کیا اور اس گناہ کو چھوڑ دیا
اس ترک کرنے کو بھی نیکی کے حساب میں لیتے ہیں اور ایک نیکی لکھتے ہیں۔ اور اگر تم ہے کوئی
گناہ سرز دہو جائے تو چھ گھڑی تک مہلت ویتے ہیں اور اس گناہ کو نہیں لکھتے کہ شاید اس
دوران تم سے استغفار یا تو بہ یا کوئی ندامت یا ایک نیکی جو کہ اس گناہ کا اثر زائل کر سے صاور
ہو۔ اور اگر آئی مدت تک بھی تم نے اس گناہ کا تدارک نہ کیا تو ایک گناہ لکھے لیتے ہیں۔ اور چھر
جب تم تو بداور استغفار کرویا دوسری نیکیاں بجالا وُ تو اس لکھے ہوئے کومٹا دیتے ہیں۔ اور وہ
بہب تم تو بداور استغفار کرویا دوسری نیکیاں بجالا وُ تو اس لکھے ہوئے کومٹا دیتے ہیں۔ اور وہ
کہ بان تہارے اعمال کو یا در کھنے میں کمال کی احتیاط کرتے ہیں کہ فرشتہ ہونے کے باوجود
کہ بولئے اور فراموش کرنے ہے مانع ہے اپنے حافظے پراعماؤییں کرتے۔

گاتین کھنے والے ہیں جو کہ اس کام کے لیے ترتیب دیئے گئے دفتر رکھتے ہیں اور دو گئے دوایات کے مطابق یہ لکھنے والے ہر شخص کے لیے چار ہیں۔ دورات کوآتے ہیں اور دو دن کے وقت دن اور رات کے دونوں دفتر وں کوجدا جداسنجالتے ہیں اور بعض روایات کے مطابق ان کی نشست گاہ آدی کے کدھوں پر ہے اور بعض نے کہا ہے کہ آدی کے منہ کے اوپر والے دو بڑے دانت ان کی نشست گاہ ہیں اور آدی کی زبان ان کی قلم ہے ادر آدی کا اوپر والے دو بڑے دانت ان کی نشست گاہ ہیں اور آدی کی زبان ان کی قلم ہے ادر آدی کا حاب دئین ان کی سابقی کے قائم مقام ہے اور جب وہ دن رات کے دفتر کوتی تعالیٰ کے دربار ہیں چین کرتے ہیں۔ باوجود کے اللہ تعالیٰ اپنے بندے سے دیگ جان سے بھی زیادہ قریب ہے۔ احتیاط کے طور پر فرما تا ہے کہ اس دفتر کا لوچ مخفوظ کے ساتھ مقابلہ کرواور اس میں بندہ جو کچھ کے منا کہ ویش سب کچھ لکھا ہوا ہے۔ مقابلے کے بعد حکم ہوتا ہے کہ نیک اور گناہ کے سواجو کچھ ہے مٹا دو اور جو نیکی اور گناہ ہو اسے رہنے دو تا کہ اس پر ثو اب اور عذاب مرتب ہواور ان بھہانوں کے لیے کوئی پردہ اور ججا بہمارے حالات پر مطلع ہونے سے رکاوٹ نہیں بنآ۔ یہ گمان مجی نہ کرنا کہ جس طرح ہم دنیا ہیں خفیہ نویوں اور ر پورٹروں سے رکاوٹ نہیں بنا۔ یہ گمان میں خیلے بہانے سے ان سے بھی چھپالیں گے اس لیے کہ دہ عہان

يَعْلَمُونَ مَاتَفْعَلُونَ جُو يَحْمَمُ كُرت بوجائ بي الرحِيم بزار بايردول مي بو_ یہاں جاننا جا ہیے کداعمال لکھنے والوں کے لیے آدمی کے افعال پر اطلاع اس آیت سے ثابت ہوتی ہے جبکداس کے اتوال پرمطلع ہونا سورہ تی ایک اور آیت سے واضح ہوتا إلى الله تعالى كابيار شاد ب- مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلِ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ اور توك کی صورت والے اعمال پر جیسے روز ہ اعتکاف اور احرام کی ممنوعہ چیز وں سے پر ہیز کرنا اور اس کی مانند دوسرے اعمال پراطلاع عقلی دلیل کے ساتھ ظاہر ہے اس لیے کہ جب کوئی شخص تحمی کام کی منرورت کے دفت بھی رکاوٹ اور عذر کے بغیر وہ کام نبیں کرتا تو صریحا پیۃ چل جاتا ہے کہ اس کام کا تارک ہے البتہ ولی نیوں اور ول میں جمعے ہوئے ارادوں پرمطلع ہونے کے مسئلے میں اختلاف ہے۔ اکثر علماء نے اس کا انکار کیا ہے اور وہ جوسیح حدیث میں وارد ہے کہ یہ لکھنے والے نیکی کے تصد کو نیکی لکھتے ہیں اور بدی کے تصد کو جوزک کرنے سے وابسة ہوجائے بھی نیکی میں لکھتے ہیں ان کے احوال قلب پرمطلع ہونے پر ولالت کرتا ہے جبكه الكاركرن والے كہتے بي كريه اطلاع حق تعالى كى طرف سے بطور الهام موئى ہےكہ فلال مخض نے اس وقت قلال نیکی کامقصد کیا ہے یا قلال نے نرائی کا ارادہ کر کے اسے جیوڑ ریا ہے اور میں ظاہر ہے اور جب بات جزا ٹابت کرنے تک پہنچ می تویہاں نیکوں اور یُروں کی جزا کی تفصیل میں سے پچھ بیان کرتا ضروری ہوااس بناء پرارشاد ہوتا ہے:

اِنَّ الْاَبُوَادَ لَفِی نَعِیم تحقیق نیک لوگ عظیم نعت می ہوں مے۔ وَإِنَّ الْفُحَّادَ لِفَیْ جَدِدِیمِ اور بِ شک بدکارجِہُم میں ہوں ہے۔

يَصْلَوْنَهَا يَوُمَ إلدِيْنِ السِجِهُم مِن جزاكدن واخل مول كيـ

مقام۔

اور بعض مغسرین نے غائب ہونے کوجہنم سے باہر آ نے پرمحمول کیا ہے اوراس صورت
میں فجار کو کفار کے بہاتھ خاص کرنے کی ضرورت ہوگی اس لیے کہ ایمان والے فاس جہنم
سے لاز آباہر آ جا کیں گے اور بہشت میں داخل ہوں گے۔ اور علم بدیع کے علماء نے کہا ہے
کہ اس کلام میں جع اور تقسیم کی صنعت ہے کہ پہلے اِنَّ عَلَیْکُم لَحَافِظِیْنَ مِیں انہیں
اچھوں اور یُروں کو ایک تھم میں جع کیا گیا ہے اور اس کے بعد جزا کے بیان میں دونوں کو جدا
جدالایا گیا۔ نیز اس کلام میں صنعت ترصع ہے اور علم بدیع کی اصطلاح میں اس کلام کومرصع
جدالایا گیا۔ نیز اس کلام میں صنعت ترصع ہے اور علم بدیع کی اصطلاح میں اس کلام کومرصع
جیا کہ کی شاعر نے کہا

ا_منور تبونجوم جلال وى مقرر بتورسوم كمال

منورمقرد کے ساتھ نجوم رسوم کے ساتھ اور جلال کمال کے ساتھ وزن اور حرف آخر میں برابر ہیں اور یہاں بھی ابرار فجار کے ساتھ اور تعیم جھیم کے برابر ہے۔ نیز اس کلام میں صنعت تعناد بھی ہے کہ اے اطباق اور تطبیق بھی کہتے ہیں اس کا خلاصہ یہ ہے کہ ضدوں کو ایک کلام میں جمع کردیں۔ چنا نچہ شہور معمر عمیں ہے

ع بشیار درول رفت برول آید مست

یہاں تعم جم کی اور ابرار فجار کی ضد ہے

جب بدکاروں کی سزا کے بیان میں روز جزا کا ذکر ہوا اور ابھی اس دن کی ہولنا کیوں اور ختیوں کو خاطر خواہ بیان نہیں کیا تو سننے والواس دس دن کی تختی سے خبر دار کرنے کی بناء پر استفہام تہویلی کے طور پراس کا کچھاجمالی بیان فر مایا جار ماہے کہ:

وَمَا آدُدُكَ مَا يَوْمُ الدِّينُ اورتو كياجانا ہے كدروز جزاكيا ہے۔ خلاصہ يہ ك آ دى اپنى عقل كے ساتھ اس دن كى شدت اور خوف كو دريافت نہيں كرسكتا اس ليے كدونيا في عقل كے ساتھ اس دن كى شدت اور خوف كو دريافت نہيں كرسكتا اس دن كى شدتوں وريختياں جو اپنے اوپر ديكھيں يا لوگوں ہے سنيں وہ اس دن كى شدتوں اور ختيوں كے ساتھ كوئى نبدت نہيں ركھتيں تاكہ انہيں ان پر قياس كرے اور عقل كا مدتوں اور ختيوں كے ساتھ كوئى نبدت نہيں ركھتيں تاكہ انہيں ان پر قياس كرے اور عقل كا مدتوں اور ختيوں كے ساتھ كوئى نبدت نہيں ركھتيں تاكہ انہيں ان پر قياس كرے اور عقل كا مدتوں اور ختيوں كے ساتھ كوئى نبدت نہيں ركھتيں تاكہ انہيں ان پر قياس كرے اور عقل كا

تغیر مزیزی مسلم میران کارده میران کارده

کام ای قدر ہے کہان دیمی چیز کودیمی ہوئی بڑان سنی کوشنی ہوئی پر قیاس کرتی ہے۔

المرائ الكاتاب المرائ المرائل ا

يَوْمَ لَا تَسُلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسِ شَيْقًا اليادن ہے كہ كوئى نفس كے ليكسى چيز كا ما لك تبيل موكا۔ اور يبيل سے اس دن كى شدت دريانت كى جاسكتى ہے۔ اس ليے كه دنيا میں جب کوئی محض کمی مصیبت میں گرفتار ہوتا ہے پہلے تو وہ اس تکلیف کو عام لوگوں کے سامنے رکھتا ہے اور جارہ کار الاش کرتا ہے۔ اور جب عوام سے اس کا کام نہیں ہو یاتا تو خاص لوگوں کے پاس التجا کرتا ہے جو کہ اس تکلیف کو دُور کرنے کے ساتھ تعلق رکھتے ہیں جیسے ماہرطبیب بیاریاں وُورکرنے میں ہٹیار جراح زخوں اور پھنیوں کے بارے میں تیز نظر ماہرین امراض چیٹم آنکھ کی بیاریوں میں انصاف کرنے والے حکام ظلم وستم کے مقدمات میں اور تجربہ کارلوگ دوسرے امور میں کام آتے ہیں اور جب بیلوگ اس کے حال پر توجہ بیس کرتے تو ناچاران کے ہم نشینوں اور دوستوں کی سفارش سے مدوطلب کرتا ہاوراس کی گرہ کشائی کرتا ہے اور اس دن تمام تعلقات ختم ہوجا کیں مے مسی کے کسی تعلق کا پاس تبیں ہوگا۔ اور وہاں کے واقعات میں سے کسی چیز میں کسی کا وظل نہیں ہوگا۔ وہاں خواص عوام کی طرح حیران اورسردار رعایا کی طرح پریشان ہوں ہے۔ مالک مطلق کے تھم کے بغیروہاں شفاعت محال ہوگی رونے وحونے سے پھینیں ہوگا اور اس آیت میں تین عموم بيان كيي محت بين: پهلاعموم تغن ما لكه مين ووسراتفس فيلوكه مين اور تيسراشي مملوك مين اور ان تینوں میموں سے اس دن کی جارہ جوئی سے کمل بنا امیدی معلوم ہوتی ہے جیسا کہ پوشیدہ

نہیں ہے۔

(اقول وبالله التو بنق كوئى كافركسى كى شفاعت نه كر سكے گا۔ (حازن) يا كوئى موك كى كافر كى حاجت روائى نه كر سكے گا لہذا اس آيت سے شفاعت كى نفى نہيں ہوتى۔ شفاعت باذن الله ہوگى۔ يہ بھى كہا جا سكتا ہے كہ قيامت ميں مالك احكام يعنی حاكم صرف الله تعالى باذن الله ہوگى۔ يہ بھى كہا جا سكتا ہے كہ قيامت ميں مالك احكام يعنی حاكم صرف الله تعالى ہے انہياء مرسلين عليهم السلام حاكم نہيں حاكم كى بارگاہ ميں شفيع ہيں وكيل وگواہ فيصله كے مالك نہيں ہوتے اس آيت ميں ملك كى نفى ہے۔ (تفسير نور العرفان ازمفتی احمد يار خال صاحب سمجراتی)

حضرت مفسر علام نے ایک قول کے مطابق تفسیر کی ہے جبکہ یہاں دوسرا قول بھی جیسا کہ تفسیر نورالعرفان میں بحوالہ کازن منقول ہے کہ نفس میں عموم ہیں بلکہ بیٹھم نفس کافرہ کے متعلق ہے۔ مجم محفوظ الحق غفرلہ

سورة المطففين

اس سورہ میں اختلاف ہے کی ہے یا مرفی۔ اکثر معتبر تفاسیر میں مروی ہے کہ جب حضور صلی مذکل میں بہت حضور صلی مذکل میں بہت خیاب کرتے تھے بیسورہ نازل ہوئی اور مدینہ عالیہ میں سب سے پہلے جوسورہ نازل ہوئی اور مدینہ عالیہ میں سب سے پہلے جوسورہ نازل ہوئی کی ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے مدینہ عالیہ کے لوگوں کو اس سورہ کی تعلیم دی اور وہ لوگ تر آن پاک اور رسول کریم علیہ العسلوۃ والسلام کی ہدایت سے درست ہوگئے۔ چنا بچہ اس وقت سے لے کرآج تک ونیا میں ماپ اور قول کے معالمے میں اہل مدینہ سے زیم وافعار علیم صحیح نہیں۔ (بیان لوگوں کے متعلق فرمایا جوآج بھی مدینہ عالیہ میں ان مہاج مین وافعار علیم الرضوان کی اولاد میں سے موجود جین اور کاروبار کرتے ہیں۔ نجد یوں یا غیر کھی تاجروں کے متعلق نہیں جیسا کہ ذائرین مدینہ عالیہ یوخفی نہیں ہے)

اور جنہوں نے اس سورۃ کوکی کہا ہے ، وہ کہتے ہیں کہ دراصل اس سورۃ کا نزول تو مکہ معظمہ میں ہوا جب آپ مدینہ عالیہ تشریف فرما ہوئے اور وہاں کے لوگوں کو اس مرض میں مبتلا دیکھا تو اس سورۃ کی ان کے سامنے تلاوت فرمائی ۔ لوگ سمجھے کہ اس سورۃ کا نزول اس وقت ہوا تھا۔ اور عطاء کی نے کہا ہے کہ اس سورۃ کا نزول سفر ہجرت میں مکہ مکرمہ اور مدینہ منورہ کے درمیان ہوا ہے۔

سورة الانفطار كے ساتھ رابطه كى وجه

اورسورۃ انفطار کے ساتھ اس سورۃ کے رابطے کی وجہ یہ ہے کہ اس سورۃ بیں بُر وں اور نیکوں کے اعمال ناموں کی ابتداکا ذکر ہے کہ دینا بیں لکھے جاتے ہیں جبکہ اس سورۃ بیں ان اعمال ناموں کے درمیانی حاصل کا بیان ہے کہ یُروں اور نیکوں بیں سے ہر ایک کو ان دو دفتر وں جن کا نام جین اور علیین ہے کے اہل کاروں کے حوالے کر دیا جائے گا جس طرق کہ افورۃ انشقت میں ان اعمال ناموں کی انتہا کا بیان ہے کہ حشر کے دن ہر کسی کے ہاتھ میں ان اعمال ناموں کی انتہا کا بیان ہے کہ حشر کے دن ہر کسی کے ہاتھ میں ان عمال ناموں کی انتہا کا بیان ہے کہ حشر کے دن ہر کسی کے ہاتھ میں ان عمال ناموں کی انتہا کا بیان ہے کہ حشر کے دن ہر کسی کے ہاتھ میں سے میں گئے۔

وجدشميه

اوراس سورة كوسورة المطففين كا نام اس ليه ديا كيا ہے كداس كى ابتدا ميں مطففين كي ئرے انجام كا ذكر ہے اوروہ اس بات پر دلالت ہے كہ جو تلوق كات ہے تعور حق كو ضائع كر دے اس كا انجام اتنا كر ا ہے تو جو تن تعالى كے بہت برے حق كو جو كداس كى وضائع كر دے اس كا انجام النام پر ايمان لا نا ہے ضائع كر دے اس كا انجام كيا ہوگا اور ان دونوں سورتوں ميں عبارت اور انداز كلام كے اعتبار سے مناسبت بھى بالكل ظاہر ہے اس سورة ميں مورتوں ميں عبارت اور انداز كلام كے اعتبار سے مناسبت بھى بالكل ظاہر ہے اس سورة ميں مَدُلاً بَدُونَ بِاللّٰهِ يُنِي وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَعَافِظِيْنَ مَدُور ہے جبکہ اس سورة ميں وَيُلْ يَوْمَ الدِّيْنِ وَمَا اُدُسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِيْنَ الْدُيْنِ وَمَا اُدُسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِيْنَ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ مَا اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ بَكِداس سورة ميں إِنَّ الْلَائِمُ مَعِيْمِ يَصْفُولَهَا يَوْمِ الدِّيْنِ ہے جبکہ يہاں بعينہ يكى الفاظ مَدُور ہے اور اس سورة ميں إِنَّ الْدُبُورَة كُلُور كُلُور كَا اختام اس كلّے برے كه وَالْاَهُ وُ يَوْمَئِنِ اللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ اللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ وَمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِ الْمَالَومِينَ مَدُور ہے۔

قِلْلُه جِكِداس سورة كَا وَاكُل مِن يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِ الْمَالَومِينَ مَدُور ہے۔

قِلْلُه جِكِداس سورة كا وَاكُل مِن يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِ الْمَالَومِينَ مَدُور ہے۔

قِلْلُه جِكِداس سورة كا وَاكُل مِن يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِ الْمَالَومِينَ مَدُور ہے۔

بِسُمِ اللهِ الرَّحِمٰنِ الرَّحِمْنِ الرَّمِنَ اللهِ الرَّامُونِ ہے۔ وَيُلُ لِلْمُطَفِّفِهُ مِنَ مَا لِهِ اللهِ اللهِ اللهِ الرَّحْمَ اللهِ الرَّحْمَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ المُلْمُ اللهِ المُلاءِ اللهِ اللهِ المُلاءِ اللهِ اللهِ اللهِ المُلاءِ اللهِ المُلاءِ اللهِ المُلاءِ اللهِ المُلاءِ المُلاءِ المُلاءِ اللهِ المُلاءِ المُلاءِ اللهِ المُلاءِ المُلاءِ اللهِ المُلاءِ المُلاءِ الل

اگر چرافت عرب مل افظ تطفیف ما پ اور تول میں خیات کرنے کو کہتے ہیں لیکن شخ ابوالقائم تشری قدس مرہ العزیز اور دیگر بزرگوں نے فرمایا ہے کہ لوگوں کے عیب ظاہر کرنا اور اپنے میں ان عیبوں کو چھپانا کوگوں سے انساف چاہا اور خود انساف پر راضی نہ ہونا کوگوں کے عیب و گھوں کے عیب و گھوں کے عیب دیم اور کی اور کوگوں سے اپنی تعظیم طلب کرنا اور مستق لوگوں کی تعظیم میں کونای کرنا اپنے لیے جو کچھ پند کرنے ہیں دومروں کے لیے ناپند کرنا مزووروں اور نوکروں سے کام پورا چاہتا اور مزدوریاں اور شخواہی دیے وقت ان کا پند کرنا من کی کرنا اور تقدیر شدہ رزق اللہ تعالی کے دربار سے پورا چاہتا اور اس کی اطاعتوں میں کی کرنا سب تطفیف میں واقل ہے۔ چنا نچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں واقل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں واقل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں واقل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں واقل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں واقل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں واقل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں داخل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں داخل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں داخل ہے۔ چنانچے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الصلوة میں کی کرنا سب تطفیف میں داخل ہے۔

مكيال فين دفى دفى له ومن طفف فقد علمتم فيه ما قال الله تعالى لين تماز پيانه به جس نے پورا مایا اسے پورا اجر ملے كا اور جس نے كى كى تواس كے بارے ميں الله تعالى نے جو يكوفر مايا بے تم جانے ہو۔

نیز صدیث قدی میں ہے اوف یا بن آدم کما تحب ان یوفی لك واعدل كما تحب ان ليعدل لك اے ابن آدم پوراحق اداكر جيماكرتو اپناحق پورا چاہتا ہے اور عدل كرجيماكرتو اينے ليے عدل جاہتا ہے۔

یانج چیزوں کے عوض پانچ چیزیں ملتی ہیں

نیز صدیث شریف میں ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے مدینہ منورہ کے لوگوں کے سامنے بیسورۃ تلاوت کرنے کے بعد ارشاد فر مایا کہ ٹس بخس بعنی پانچ چیزیں پانچ چیزوں کے عوض ہوتی ہیں کوئی فرقہ اجماعی طور پرعبد شکنی ہیں کرتا گران پران کے دشمنوں کو مسلط کر دیا جاتا ہے اور کوئی فرقہ خلاف شریعت فیصلہ نہیں کرتا اور رشوت کے ساتھ تھی شرعی کوئیس بدان گران میں غربت و افلاس سرایت کر جاتے ہیں اور کسی فرقے میں اعلانیہ بدکاری اور لواطت رائج نہیں ہوتی مگران کی ذات پر موت کو مسلط کر دیا جاتا ہے اور کوئی فرقہ ما پ اور لواطت رائج نہیں ہوتی مگران کی ذات پر موت کو مسلط کر دیا جاتا ہے اور کوئی فرقہ ما پ اور لواطت رائج نہیں ہوتی مگران کی ذات پر موت کو مسلط کر دیا جاتا ہے اور کوئی فرقہ ما پ اور کوئی فرقہ دیا جاتا ہو جاتے ہیں اور کوئی فرقہ دیا جاتا ہو جاتے ہیں اور کوئی فرقہ ذکو ہ کوئیس روکنا مگران سے بارش رحمت روک کی جاتی ہے۔

بہرحال ماپ تول کا مقدمہ بہت معتبر ہے۔اس لیے کہ حضرت شعیب علیہ السلام کی تو م پر جوعذاب آیا ای گناہ کی خوست کی وجہ سے تعاادراس کے گناہ کیبرہ ہونے میں علاء کا اختلاف ہے۔ بعض نے مبالغہ کرتے ہوئے کہا ہے کہ اس فعل شنیع کا قصد کرنا بھی کمیرہ مناہول سے ہادربعض نے تعویٰ اور بہت میں فرق کیا ہے۔

چوری کے نصاب کی حد

وہ کہتے ہیں کداگر ماپ اور تول کا نقصان چوری کے نصاب کی حدکو پہنے جو کہ ان علاقوں میں رائج تین رویے ہیں تو کمیرہ ہوجاتا ہے ور نہ صغیرہ ہے۔ اور اکثر ظاہر بین یہاں تر دو کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ لوگوں کے جق ہے معمولی شے کا غصب کرنا اتنا وہال نہیں معمولی شے کا غصب کرنا اتنا وہال نہیں معمولی شے کا غصب کرنا اتنا وہال نہیں معمولی شے کا عصب کرنا اتنا وہال نہیں معمولی شے کا عصب کرنا اتنا وہال نہیں معمولی شے کا عصب کرنا اتنا وہال نہیں کہ اس کے حق ہے معمولی شے کا عصب کرنا اتنا وہال نہیں معمولی شے کا عصب کرنا اتنا وہال نہیں کہ معمولی ہے کہ معمولی ہے کہ معمولی ہے کہ معمولی ہے کہ اتنا وہال نہیں کے حق ہے معمولی ہے کہ معمولی ہے کہ استحاد کرنے ہیں کہ کو کہ استحاد کی کا عصب کرنا اتنا وہال نہیں کہ کو کے حق ہے معمولی ہے کہ کا عصب کرنا اتنا وہال نہیں کہ کو کہ کہ کو کہ کے حق ہے معمولی ہے کہ کو کہ کو کہ کو کہ کے حق ہے معمولی ہے کہ کو کہ کی کو کہ کے کہ کو کے کا عصب کرنا اتنا وہا کہ کو کہ کو کہ کو کو کہ ک

ر کھتا کی اجماعی طور پر صغیرہ مناہ ہے تو تطفیف کو کہائر میں سے کیوں شار کیا میا ہے اور اس پر شدید دعید کیوں مرتب کرتے ہیں؟

اس کا جواب یہ ہے کہ غصب ایک ایسا گناہ ہے جس کے ختمن میں موضوع شریعت کو برلنالازم نہیں آتا جبکہ یہ تطفیف عدل کی شکل میں ایک ظلم ہے۔ ماپ تول میں کمی کے ظلم ہونے کی تفصیل

اس کی تفصیل یہ ہے کہ ماپ اور تول کے پیانوں کورب العزت نے انصاف اور عدل قائم کرنے کے لیے نصب فر مایا ہے۔ اور مخلوق کے معاملات کا دارو مداران دونوں چیزوں پر چیوڑا ہے تو ان دونوں چیزوں کوظلم کا وسیلہ بناتا ایسا ہے کہ کی نیکی کو گناہ کا وسیلہ بنالیں۔ نیز ماپ تول میں کمی کرنے میں خیانت وجو کہ اور فریب ہے۔ جو کہ نفس کے خائن ہونے پر دلالت ہے۔ بخلاف فصب کے۔ نیز وہال طبعی کمینہ پن ہے کہ ایک مٹی بحر جو کی خاطرا پنے دلالت ہے۔ بخلاف فصب کے۔ نیز وہال طبعی کمینہ پن ہے کہ ایک مٹی بحر جو کی خاطرا پنے دین کوفرو خت کرد ہا ہے اور عدل اللی کوظلم کی صورت میں نمود ارکرتا ہے ان وجوہ اور ان جیسی اور وجوہ کی بنا پر یہ گناہ ا تنا ہوا ہے کہ دوسرے مغیرہ گناہوں میں یہ صورت نہیں یائی جاتی۔ اور وجوہ کی بنا پر یہ گناہ ا تنا ہوا ہے کہ دوسرے مغیرہ گناہوں میں یہ صورت نہیں یائی جاتی۔

اگرچہ بعض بزرگوں سے منقول ہے کہ انہوں نے بادشاہ وقت کو وعظ ونقیحت کے مقام میں فرمایا ہے: کہ تو اس عذاب کو جانتا ہے جو مطفعت کے حق میں وارد ہے اور تو مسلمانوں کے اموال ماپ اور تول کے بغیر لے رہا ہے تیرا حال کیا ہوگالیکن ان بزرگوں کی مسلمانوں کے اموال ماپ اور تول کے بغیر لے رہا ہے تیرا حال کیا ہوگالیکن ان بزرگوں کی مراد یہ ہے کہ بادشاہ کاظلم بھی تطفیف کی طرح شریعت کے موضوع کو بدلنا ہے اس لیے کہ اس سلطنت کی قدرت اس لیے دی گئی ہے کہ عدل قائم کرنے اور ظلم وُ ورکرنے کی صورت سلطنت کی قدرت اس لیے دی گئی ہے کہ عدل قائم کرنے کے لیے خرچ کریں تو قلب موضوع کا لازم آئے گئے۔

د نیا کی غرض سے کرنا اور اپنے آپ کو نیکول کے روپ میں ظاہر کرکے واد ابلیسی وینا' صریح طور پر د نیا طلب کرنے اور بے پر دہ بدکاری کرنے سے کہیں زیادہ سخت اور ٹر اہے۔

اور چونکہ تعلقیت یعنی ماپ اور تول میں کی کرنا مجھی لا پر وائی کے طریقے ہے بھی ہوتا ہے کہ ایک فیص بنیا دی طور پر اپنی طبیعت میں معتدل مزاح واقع ہوا ہے۔ اور حقو تی پورے طور پر دینے اور لینے میں اتنی غور واکر نہیں کرتا اور یہ تعلقیت اپنا حق لینے میں تو کوئی مضا نقہ نہیں رکھتی۔ دوسرے کا حق دینے میں حرام اور ممنوع ہے لیکن انجام میں اتنی شدت اور سزا نہیں رکھتی کہ اس کے مرحکب کے حال پر وائے کہا جائے اس تعلقیت سے بہتے کے لیے مطفقین کی ایک صفت اور علامت بیان فر مائی گئی ہے تا کہ اس بات کا پہتے چلے کہ ماپ اور قول میں ان کی کی لا پر وائی کی بناء پر نہیں بلکہ پوری ذیا نت اور برشیاری کے ساتھ قصد آ اور عمر آ

الگذین إذا انحکاکوا علی الناس و ولوگ که جب لوگوں سے ابناحق ماپ کرلیں۔
یستو فون تو پورا لینے کا قصد کرتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ ہمارے حق میں سے ایک دانہ بھی کم نہ ہو بلکہ پورا لینے کے بہانے اپنے حق سے بھی زیادہ لیتے ہیں اور یوں بات کرتے ہیں کہ ہم ابناحق پورالینا بینی طور پر معلوم نہیں کر سکتے مگر جبکہ پھے زاہد لے لیں اور جب وہ ماپ میں یہ حیلہ کرتے ہیں اور اپنے حق سے زیادہ چاہتے ہیں تو تول میں پورالین کے بہانے سے وہ اطریق اولی زیادہ کی طلب کرتے ہیں اس لیے کہ ماپ میں چھم پوشی کرنا داری ہے جبکہ تول میں بی اور این اور ستی کرنا رائے ہے جبکہ تول میں بی اور کئی۔

الیت زیادہ ہوگئ وزن رائے ہے۔ پس جو چیزیں پیائش آتی ہیں فالبًاان چیزوں کی نسبت کم قبت ہوتی ہیں جو کہ وزن میں آتی ہیں اور وزن کی جانے والی چیزیں ان سے زیادہ قیمتی ہوتی ہیں گر نادر طور پر کم قبت چیزوں میں وزن اور قیمتی چیزوں میں پیائش کا رواج ہوگیا جیے شاخم اور کدو کی انہیں تولا جاتا ہے اور کناری اور کم خواب جو کہ ماپ جائے ہیں بہر حال بہاں اس بات میں کہ پیائش کے ذکر پر اکتفاء فر مایا گیا اور وزن کا ذکر نہیں کیا گیا' بھی نکتہ کیا فر ا

اور بعض ذہین اوگوں نے کہا ہے کہ تولی جانے دالی چیزوں میں سے اپنا حق لینے کے وقت تراز وینچنے والے کے ہاتھ میں ہوتی ہے خریدار کے لیے کوئی زیادہ قابلِ اعتبار تصرف ممکن نہیں ہے اس لیے کہ تراز و کا پلہ معمولی سے بوجھ کی وجہ سے جمک جاتا ہے اور زیادتی فلا ہر ہو جاتی ہوئی چیز میں حق لینے میں چھونہ پھے خریدار کے لیے تصرف ممکن ہے کہ میں جھونہ پھے خریدار کے لیے تصرف ممکن ہے کسی حیلے سے بیانے اور گز کو ہلا دے یا ماپ می کی ٹرے کو طاقت کے ساتھ تھے کے اور زیادہ حاصل کر لے بخلاف اس وقت کے جب حق دیا جائے کہ پیانہ بھی اس کے ہاتھ میں لہذا وہاں بیائش اور وزن دونوں کو ذکر فرمایا گیا ہے جیسا کے اور شاہ الشرائع رہے آئے گا۔

اور یہاں نفظ علیٰ اس لیے لایا گیا ہے کہ ان کا لوگوں سے ماپ کر لیما ان لوگوں کو نفصان دینے کے ارادے سے ورنہ اصل نفصان دینے کے ارادے سے ورنہ اصل لفت میں اکتیال من سے متعدی ہوتا ہے۔ کہتے ہیں اکتلت منك لیمیٰ میں نے تجھ سے ماپ کرلیا۔

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوَ وَذَنُوهُمْ اور جب اوكول كوان كاحل ما پ كردي يا تول كراوكل اوركيل اور وزن كالفاظ لغت عرب من جس طرح ما بن اورتو لئے كمعنول ميں آتے ہيں اى طرح ما پ كردين اورتول كردين كے معنول ميں ہمى آتے ہيں اى طرح ما پ كردين اورتول كردين كے معنول ميں ہمى آتے ہيں۔ پس يہال لام كو جميا ہوا مان كى ضرورت نہيں ہے جبيا كه اكثر مفسرين نے كہا ہے كه مراد كالمو الهداور وذنو الهد ہا اس ليے كه مانى اورتولى مى جيزيں لوكوں كے اموال ہيں نہ كدان كى ذوات البت يہال

لام کولفظ سے حذف کر دیا گیا ہے اس لیے کہ زیادہ لام نفع کے لیے آتا ہے جبکہ یہاں نفع کا گمان کلام میں تناقض کے گمان کا موجب ہوجاتا ہے اس لیے کہ مقصد سے کہ وہ حق دینے کے وفت بھی لوگوں کو نقصان کہنچانے کا قصد کرتے ہیں اور پیائش اور وزن دونوں امور میں یہ فیصد دوئری چیز نکال کران کا گیا ہے۔

می محدد وئی کو گول کو نقصان کہنچاتے ہیں اور ایک چیز کے بعد دوئری چیز نکال کران کا حق کم کرتے ہیں۔

حق دينے اور لينے كى جارصورتيں

یہال جانا چاہیے کہت دیے اور لینے میں پوراکرنے اور کم کرنے کے اعتبارے چار
صور تیں ذہن میں آتی ہیں۔ پہلی صورت سے کہ دونوں صورتوں میں پوراکر یں ، دوسری صورت
سے کہ دونوں صورتوں میں کم کریں تیسری صورت سے کہ دینے میں کم کریں اور لینے میں پورا
لیس اور یکی صورت اس آیت میں فہ کور ہے چوتی صورت سے کہ دینے میں پورا دیں اور لینے
میں نقصان قبول کریں میدائل مرتبہ ہے اور جواں مردوں اور عالی ہمت والوں کا کام ہے اور
پہلی دوصورتوں کو یہاں ذکر نہیں فر مایا کیا کہ ان دونوں صورتوں میں بھی اگر چہ قباحت اور
حرمت موجود ہے لیکن آئی کھل خباشت نہیں کہ ان کے مرتکب کے حال پر افسوس کیا جائے
اس لیے کہ نقصان دینا نقصان لینے کو کھینچنے والا ہے اور اس طرح پورا دینا پورا لینے کا معاوضہ
ہوجاتا ہے۔ پس من وجہ نیکی اور من وجہ نے ائی ہوتی ہے۔

قرض کے معاملے میں لوگوں کی جارقسموں کابیان

ادر بیال قیاس پر ہے کہ صدیت پاک میں وارد ہوا کہ قرض کے مسئلے میں لوگوں کی چارفتہیں ہیں۔ پہلی قتم وہ فضی جو دوسروں کا قرض بخوبی ادا کرے اور دوسرے ہے اپنے قرض کا نقاضا بھی اجھے طریقے ہے کرے اور بیٹخنس سب سے بہتر ہے۔ دوسرا وہ جو دوسروں کا قرض بھی انہائی تکلیف ادر ذکھ کے ساتھ ادا کرے اور اپنا قرض بھی نہایت تنی اور بیسب سے کمی قتم ہے۔ تیسرا وہ جو دوسروں کا قرض بخوبی ہے مروتی سے طلب کزے اور بیسب سے کمی قتم ہے۔ تیسرا وہ جو دوسروں کا قرض بخوبی ادا کرے اور دوسروں کا قرض بخوبی ادا کرے اور دوسروں سے اپنے قرض کے نقاضے کے وقت شدت اور بے مروتی کرے۔ چوتھا وہ قرض خرابی کے ساتھ ادا کرے اور دوسروں سے قرض کے نقاضے میں اچھا سلوک اور محت شدت اور سے مروتی کے ماتھ کے اور دوسروں سے قرض کے نقاضے میں اچھا سلوک اور محت شدت اور سے مروتی کے ماتھ کے دوسروں سے قرض کے نقاضے میں اچھا سلوک اور محت شدت کر سے محت کے دوست شدت کرنے کے ماتھ کے دوسروں سے قرض کے نقاضے میں اچھا سلوک اور محت کے دوست شدت کرنے کے ماتھ کے دوسروں سے قرض کے نقاضے میں اچھا سلوک اور محت کے دوسروں کے ماتھ کے دوسروں سے قرض کے نقاضے میں اچھا سلوک اور محت کے دوسروں سے قرض کے نقاضے میں اچھا سلوک اور محت کی دوسروں کے تقاضے میں اچھا سلوک اور محت کے دوسروں کے تقاضے میں اچھا سلوک اور محت کے دوست شدہ کے دوسروں کے تقاضے میں اچھا سلوک اور محت کے دوسروں کے تقاضے میں اچھا سلوک اور محت کی تقاضے میں اچھا سلوک اور دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کے دوست شدہ کے دوسروں کے د

زمی عمل میں لائے اور بید دونوں متمیں درمیانی ہیں کہ ایک طرف کی خوبی دوسری طرف کی م اُرائی کے مقابل ہوکرنری بدی سے صورت بہتر کردیتی ہے۔

غصے کے معاملے میں لوگوں کی جارفتمیں ہیں

اور ای طرح غصے کے معافظے میں بھی لوگوں کی چارفشمیں ہیں: ایک وہ جوجلد غصے میں آ جائے اور جلد راضی ہو جائے ووسرا وہ جو دیر سے غصے میں آ ئے اور دیر سے راضی ہو اور یہ دونوں شمیں ، رمیانی ہیں تیسرا وہ جوجلد غصے میں آ ئے اور دیر سے راضی ہواور بیسب اور یہ دونوں شمیں ، رمیانی ہیں تیسرا وہ جوجلد غصے میں آ ئے اور دیر سے راضی ہوا ہے اور یہ سب سے یہ کی تی وہ جو دیر سے غصے میں آ ئے اور جلد راضی ہو جائے اور یہ سب سے بہتر ہے۔

اور جب مطفقین کوان کے حال پر افسوں کہہ کر جھڑکا گیا اب ارشاد ہور ہا ہے کہ یہ لوگ اس کام کے ارتکاب کی وجہ ہے گویا قیامت کے منکر ہیں اس لیے کہ جواس دن کا اعتقاد رکھے وہ کلوق کے حقوق کو خصوصاً مکروفریب اور دھوکہ دی کے ساتھ ضائع کرنے میں اس قدر جرائت ہیں کرتا اس لیے استفہام انکاری کے طریقے ہے فر مایا گیا۔

آلائظی اُولِیْک کیا یے علی وشعورے وورافقادہ لوگ گمان نہیں کرتے اور عن کے اغظ میں جو کہ گمان کے معنوں میں ہاس بات کا پند دیا گیا ہے کہ اس عقیدے وعمل مند آ دی تو پختہ یعین کے ساتھ جانتا ہے بلکہ اسے برلحہ اپنی نگاہوں کے سامنے رکھتا ہے جبد یہ لوک اس کا گمان بھی نہیں کرتے اعتقاد کی کیا مخبائش۔ نیز ایک بیا بھی اشارہ ہے کہ اگر کسی اوالی ون کے متعلق پختہ عقیدہ نہ ہوتو نرا گمان بی اس معمی کی اُرائیوں سے بہتے کے لئا ہے کہا کہ وہ سے بی اور کوئی محافظ طلب کرتے ہیں اور یہ ہے وقوف اس مضمون کا بھی دانہ بانی ہمراہ رکھتے ہیں اور کوئی محافظ طلب کرتے ہیں اور یہ ہے وقوف اس مضمون کا بھی گمان نہیں در کھتے ہیں اور کوئی محافظ طلب کرتے ہیں اور یہ ہے وقوف اس مضمون کا بھی گمان نہیں در کھتے

اِنَّهُمْ مَنْعُوْتُوْنَ لِيَوْمِ عَظِيْمِ كَتَحْقِلَ وه الك بهت بنت دن من زنده كي بائهم مَنْعُوْتُوْنَ لِيَوْم جائي كاوراس دن كى بزرگى اس وجه ب كه وه دن عدل قائم كرنے كا دن باور اس روزلوكوں سے حقوق القداور حقوق العباد كا مطالبه كيا جائے كا اور حقوق كوضائع كر شخ سام معتقوق القداور حقوق العباد كا مطالبه كيا جائے كا اور حقوق كوضائع كر شخ سام معتقوق القداور حقوق العباد كا مطالبه كيا جائے كا اور حقوق كو ضائع كر شخ

یَوُهُ یَقُوهُ النّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِینَ که جس دن اگلے پچھلے سب نوگ رب العالمین کے در بار میں کھڑے ہوں اور یہاں لفظ رب العالمین اسم ذات کی جگہ لایا گیا ہے تاکہ اس بات کا اشارہ ہوکہ اللہ تعالیٰ کی ربو بیت کاعموم اپنے زیر تر بیت لوگوں کے حقوق کو بوراکرنے کا تقاضا کرتا ہے۔ پس مخلوق کے حقوق ضا کع کرنے والوں کے لیے اس کے حضور کھڑ اہونا انتہائی ذلت اور رسوائی ہوگی۔

اوراس اُشخے کو بعض مفسرین نے مردوں کو زندہ ہونے پرمحول کیا ہے جیسا کہ کہتے ہیں کہ فلاں خواب سے اُٹھا یعنی بے دار ہوا اور زیادہ سیح یہ ہے کہ حقیق اُٹھنا مراد ہے۔ چنا نچ ابن عباس رضی اللّه عنہما نے فر مایا ہے کہ حضور صلی اللّه علیہ وسلم نے فر مایا ہے کہ قیامت کے دن لوگ د نیا کے تمن سوسال کی مدت تک کھڑ ہے دہیں گے اور ان کے بارے میں کوئی فیصلہ اور سحم نہیں ہوگا گیکن میساری مدت دراز ایمان دالوں کونظر میں اتن قلیل معلوم ہوگی کہ کویا نماز سے فارغ ہوئے۔

اور سیح مسلم میں حضرت مقداد بن الاسودرضی اللہ عنہ کی روایت کے ساتھ حضور صلی اللہ علیہ وسلم ہے اس آیت کی تغییر میں وارد ہے کہ یقوم الناس فی دشعہ الی انصاف اذا نہم ہے اس آیت کی تغییر میں وارد ہے کہ یقوم الناس فی دشعہ الی انصاف اذا نہم یعنی لوگ پینے میں کھڑے رہیں گے اور ان کا پینہ ان کے کا نوں کی لو تک پینے جائے گا۔ نیز صحح مسلم اور دوسری صحاح میں مروی ہے کہ قیامت کے دن سورج کولوگوں کے قریب لا میں کے یہاں تک کہ سورج ایک میل یا دس میل کے انداز ہے پر کھڑا رہے گا اور انہیں سورج کی گری پھھلا دے گی اور ان کا پینہ بہم گا البت ان کے نم ہا تا کال کی مقدار کے مطابق بعض کا پینہ گرون تک بینچ گا اور بعض کے کا نوں کی نو تک پینچ کر نگام کی طرح ان کے منہ میں واضل ہوگا، بعض کی گردن کی ابتدا تک مید تک کر تک زانو تک اور کنوں کی نیز تک مید میں واضل ہوگا، بعض کی گردن کی ابتدا تک مید تک کر تک زانو تک اور کنوں تک بینے میں داخل ہوگا، بعض کی گردن کی ابتدا تک مید تک کر تک زانو تک اور کنوں تک بینے بیا بندالقیاس

منقول ہے کہ ایک ون حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ نے بیسورۃ نماز میں شروع marfat.com Marfat.com کر دی جب اس آیت تک پنچے آپ پرخوف اور گرید کا غلبہ ہو گیا اور تاب نہ لاتے ہوئے زمین پرگر پڑے اور اس وقت کی نماز اوانہ کر سکے۔

کلّا بیائش اور وزن کم کرنے والوں کو چاہیے کہ بیکام نہ کریں اور قیامت کے دن اور عدل کرنے والے تو ی کے حضور کھڑا ہونے سے بے خبر اور غافل نہ ہوں۔ اس لیے کہ ان کا ہراچھائر اکام اعمال ناموں میں نقش ہوکراس کے دربار کے الل کاروں کے سپر وہو چکا ہے۔ انہوں نے مخلوق کے جوحقوق بھی ضائع کیے جیں اس دفتر کے مطابق اس روز ان سے باز برس ہوگی اور اگر وہ پوچھیں کہ ہمارے اعمال نامے موت کے بعد کس نشانی سے معلوم ہوں گے اور کہاں محفوظ رہیں گے تو انہیں جواب و بینا چاہیے کہ:

اِنَّ كِتَابَ الْفُجَّادِ لَفِی سِّجِیْنِ تَحْقیق بدكاروں كا عمال ناشاوران كے ناموں كے اندراجات تحین كے دفتر میں ہے۔ تحین بحن سے جس كامعنی قیدخانہ ہے مبالغے كاصیغہ ہے اور چونكہ وہ جگہ كہ اس دفتر والے وہاں ہوتے ہیں الی تنگ و تاريك اور جہنميوں كی ارواح كے جمع ہونے كی جگہ ہے اس بناء پراس دفتر كا نام بھی ركھ دیا گیا۔ چنانچہ اسے بیال فرمایا جارہا ہے:

نگلاً ہے اور الجیس اور دوسرے شیطان جب راہِ فرار اختیار کرتے ہیں تو وہیں جاتھہرتے ہیں۔ بدکار کی روح کو پہلے تو قبض کرنے کے بعد آسان پر لے جاتے ہیں' آسان کے دربان اس کے لیے ورواز و نہیں کھولتے اور داخل ہونے نہیں دیے پھر زمین پر لاتے ہیں اور اسے کوئی جگر تھول نہیں کرتی جہاں اسے رکھا جائے۔ آخر ساتویں زمین کے نیچاں پھر کے نیچ لے جاتے ہیں اور جوفر شے اس دفتر کے اہل کار ہیں اس کے نام کواپ و دفتر میں لکھ لیتے ہیں کہ فلال اس تاریخ کو دنیا سے برزخ میں پہنچا اور یکس لایا اور اس کے نام کی رونی ہی کے اٹھال کے روزنا می کی فرویں کرانا کا تین سے لے کر اس دفتر میں محفوظ کر لیتے ہیں تاکہ قیامت کے دن اس سب کواس کے بائیں ہاتھ میں تھا ویں اور بدکاروں کی رومیں بھی تاکہ قیامت کے دن اس سب کواس کے بائیں ہاتھ میں تھا ویں اور بدکاروں کی رومیں بھی ای مقام پر تھمری رہتی ہیں اور آئیں فتم تم کا عذا ہو دیا جاتا ہے۔

علم معانی کے مطابق دوجواب طلب سوالات

اور يهال علم معانى كے مطابق دوسوال وارد كيے گئے ہيں جوكہ جواب طلب ہيں۔ پبلا سوال يہ ب كہ فيار كے دفتر كا ذكر ايك الى ابتدائى خبر ب كہ سننے والے اس خبر كے مفہوم سے فالى الذ بن تقے اور اسے بھی نبیس من تقا حال كا علم معانى كا قاعدہ يہ ب كہ ابتدائى كلام ميں كہ جس سے سامع بے خبر ہوا تا كيد بيں كيوں لائى تكئيں ايك ان ميں كہ جس سے سامع بے خبر ہوا تا كيد بين المات يهال دوتا كيد بين كيوں لائى تكئيں ايك ان اور دوسرى لام؟

ال کا جواب ہے کہ اگر ہے نے واکے فجار کے اعمال کے وفتر کے جین میں ہونے سے متعلق بے فبر تھے لیکن اسے ٹابت ر نے سے اعمال کے اصلی وفتر کو ٹابت کرنا لازم آتا ہے اور کفار جو کہ قیامت اور جڑا ویے ئے متکر ہیں اس وفتر کے متعلق بخت انکار کرتے ہیں اس لیے ان کے انکار کے اعماز سے مطابق قوی تاکید لائی گئی جیسا کہ زید کے وجود کے اس لیے ان کے انکار کے اعماز سے کے مطابق قوی تاکید لائی گئی جیسا کہ زید کے وجود کے متحر کے سامنے یوں کہیں کہ ان زید افنی وارفلاں اگر چہ سامع اس فلاں کا گھر نہ جانی ہواور اس نے اس کانام نہ سنا ہو۔

دوسراسوال بیہ ہے کہ جب تجین کا ذکر پہلے ہو چکا تو مقام عبد ہو گیا۔ پس چاہے تھا کہ یوں کہاجاتا ہے کہ وَمَا اَقْدَاكَ مَاالْسِّتِجِیْنَ جیما کہ تکااَدْسَدُنَا اِنی فِرْعَوْنَ رَسُولًا سُولًا جاتا ہے کہ وَمَا اَقْدَاكَ مَاالْسِتِجِیْنَ جیما کہ تکااَدْسَدُنَا اِنی فِرْعَوْنَ رَسُولًا marfat.com

نعطى فرعون الرسول لجمرة ماياحميا سب

ال کا جواب یہ ہے کہ جب سننے والے تھین کے معنوں سے بے خبر سے تو اس کا ذکر کو یا ہوا تی نہیں۔ پس لوٹانے کے مقام بھی اسے تکرہ لا تا تی مناسب ہوا۔ کو یا ہوں فر مایا گیا ہے کہ وہ مجبول تجین کیا ہے جس کے معنوں کا انہیں ابھی تک پیتن ہیں چلا۔ بخلاف لفظ رسول کے لفت عرب سے واقف لوگوں پر اسے سنتے تی معنی واضح ہوجا تا ہے۔ پس لوٹانے کے وقت اسے معرف لا تا مناسب ہوا۔

ایک اور شبه اور اس کا جواب

نیز اللِ نظریہاں ایک شبہ وارد کرتے ہیں کہ ہرمقام پر نیکوں کا ذکر کروں کے ذکر سے بہت نیز اللِ نظریہاں ایک شبہ وارد کرتے ہیں کہ ہرمقام پر نیکوں کا ذکر کیلے لایا سے پہلے ہوں کی شرافت اور بزرگی کے مناسب بھی بھی ہے کہ ان کا ذکر جہلے لایا جائے جبکہ یہاں نُروں کے دفتر کا ذکر پہلے فرمایا حمیاہے؟

اس کا جواب یہ ہے کہ مورۃ کی ابتدا سے کلام کی روانی مطفقین کے حال کے لیے ہے جوکہ بدکاروں کی ایک تم ہے۔ پس مناسب بی ہے کہ کسی فاصلے کے بغیر انہیں ڈرانے کے لیے پہلے بدکاروں کی ایک تم ہو۔ اور یہاں لیے پہلے بدکاروں کے وفتر کا ذکر کیا جائے ورنہ یہ مقعد بخوبی حاصل نہ ہو۔ اور یہاں غیراجنی کلام کے ساتھ جدائی لازم آئے اور مقام کے تقاضے کی رعایت شرافت کی رعایت سے ذیادہ مروری اور زیادہ موزوں ہے۔

اور جب اس آیت می بدکاروں کے نرے انجام پرمنی حال کو مطلقا بیان کیا گیا اور پہلے گرر چکا ہے کہ مخلوق کے حقوق کو کم کرنے والے قیامت کے دن کا گمان نہیں رکھتے اب بصور ترقی ان لوگوں کے حال کا ذکر ہور ہا ہے جو کہ آخرت کے عقیدے میں کوتا تی کرتے ہیں اور اس سے بالکل افکار کرتے ہیں تا کہ مطفقین کے اس گروہ کی خصوصیت کے ساتھ ملامت ہو۔

ویُل یَوْمَیْن اس دن افسوں کہ جس دن وہ دفتر کھول کر ہرکسی کواس سے مُرے اعمال برمطقع کیا جائے۔

نِلْمُكَذِّبِيْنَ مَعْرُول كِے حال پرجوكه اس دن كاعقيده برگزنبيس ركھتے اور گمان كرتے marfat.com

تغیر مزیزی مستقب می است می است می تا می از در این می از د

میں کہ مخلوق کے حقوق ان سے واپس نہیں لیے جائیں گے اس لیے کہ ان کی عالمت یہ ہے:

اللّٰذِیْنَ یُکڈِبُوْنَ بِیَوْمِ اللّٰذِیْنِ جو کہ روزِ جزا کا انکار کرتے ہیں۔ خلاصۃ المرام یہ
ہے کہ وہ اپنی طرف سے مخلوق کے حقوق لوٹانے کے ہی منکر نہیں ہیں بلکہ جزا کے سارے
پروگرام کے ہی منکر ہیں اور روزِ جزا کا انکار بے شارقباحوں کی علامت ہے اس لیے کہ روزِ
جزا کا عقیدہ ایمان کے تمام امور عبادات اور معاملات میں دخل رکھتا ہے۔

وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ اوراس دن كاانكار نبيس كرتا۔ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيْمٍ مَّرود جو كفر مِس حدے كزرگيا ہواور فسق مِس حدے بڑھ گيا ہو۔

كفريس حدي كزرنے كى صورت

رہا کفر میں حدے گزرتا تو وہ اس طرح ہے کہ جواس دن کا محر ہے گویا وہ رہو بیت اللی اور اپ اللہ تعالیٰ کی قدرت کے دائی ہونے کا محکر ہے اور وہ گمان کرتا ہے کہ دنیا کے مالکوں کی طرح صرف مرنے سے ہی میں اس کی بندگی سے باہر آ جاتا ہوں اور وہ میرا مالک ہونے سے معزول ہو جاتا ہے۔ نیز وہ مرنے کے بعد اُٹھانے پر رب تعالیٰ کے قاور ہونے کا محکر ہے۔ نیز اللہ تعالیٰ کے قادر ہونے کا محکر ہے۔ نیز اللہ تعالیٰ کے نعدل کا محکر ہے اس لیے کہ وہ دنیا میں تو ظالم سے مظلوم کا حق نہیں لیتا اگر اس روز بھی نہ لے تو ظلم پر رامنی ہوتو اس عقیدے کی وجہ سے کفر کے در ہے تہ بہ نذہوجاتے ہیں اور بات کفر کی حدے بھی آ میے مکل جاتی ہے۔

فت میں صدیے گزرنے کی صورت

اور فتق میں حدے گزرتا اس طرح ہے کہ جب اس دن کا خوف نہ ہوا تو عمناہ پر جرائت حاصل ہو گئی اور اس نے سمجھا کہ حاضر لذتوں اور خواہشات کو جزائے موہوم کے خطرے سے چھوڑ ڈیٹا کمال بے وقونی ہے۔ پس ووننس امارہ کے تقاضے کے مطابق فسق و فجور خوب کرےگا۔ چنانچہ لفظ اثیم جو کہ آئم کا مبالغہ ہے اس کی خبر دیتا ہے۔

اورمنسرین کے ایک گروہ نے معتذ کو ظالم عاصب اور مخلوق خدا کے حقوق ضائع کرنے والے پڑھول کیا ہے جبکہ اٹیم سے فائق اور ان محابوں کے مرتکب مراو لیے بیں جن کا تعلق افران میں ہوت کے مرتکب مراو لیے بیں جن کا تعلق افران کی ایک کی بہلی اندے ساتھ ہے جیسے زنا کو اطت ٹیر اب نوشی نماز اور روز ورزک کرنا اس لیے کہ بہلی مسلم معتال میں معتقد کے دیا تھا کہ مسلم میں معتال معتال معتال میں معتال معتال معتال معتال میں معتال مع

قتم کا شرمتعدی ہے جبکہ دوسری قتم کے گناہ صرف اس کی جان کا وبال ہیں۔ بہر حال مقصد

یہ ہے کہ جزا کی تکذیب اورا نکارا لیے شخص کا کام ہے جو کہ کسی فد بب اور مشرب کا پابند نہیں

ہوتا۔ اور وہ کرنے نہ کرنے کے بارے میں کسی ملت اور دین کا حساب نہیں رکھتا اور اس
مقصد پر جوعظی دلائل قائم ہیں انہیں گناہوں کی محبت میں حددرجہ مصروف ہونے اور آزادی و
لادینیت کو پسند کرنے کی وجہ سے نگاہ میں نہیں لاتا بلکہ آیات قرآنی اور انہیائے علیم السلام ک

خروں سے بھی جن کی مجزات قطعہ سے تائید اور پختگی ہوتی ہے اس کے ذہن میں کوئی ب

ذروں سے بھی جن کی مجزات قطعہ سے تائید اور پختگی ہوتی ہے اس کے ذہن میں کوئی ب

داری اور عبرت بیدانہیں ہوتی اس لیے کہ

اِذَا تُتُلَى عَلَيْهِ اليَاتُنَا جب اس كے سامنے ہماری آیات تلاوت کی جاتی ہیں جو کہ اس دن جزاواقع ہونے اور ہندوں کے حقوق کی باز پرس ہونے پر دلالت کرتی ہیں ٔ عناد کے طور سر

قَالَ اَسَاطِیْرُ الْاَدَیْنَ کہتا ہے کہ بیسب پہلے لوگوں کے فسانے ہیں جو کہ لوگوں کو خوف و گار اُساطِیْرُ الْاَدَیْنَ کہتا ہے کہ بیسب پہلے لوگوں کے فسانے ہیں تا کہ ایک دوسرے خوف دِلانے اور اُنہیں نرے کاموں سے ڈرانے کے لیے دہ گھڑ گئے ہیں تا کہ ایک دوسرے کی چیزیں خصب کرنے کی وجہ سے ملک خراب نہ ہواور فننہ و فساد کیا جا سے۔ فاہر نہ ہوان کی کوئی بنیا ذہیں ہے کہ اس پراعتماد کیا جا سکے۔

کلّا ایسانہیں مجمنا جا ہے اور یوں نہیں کہنا جا ہے اس لیے کہ جزا کا وقوع اور مخلوق کے حقوق کو لوٹا نا روشن عظی دارا کی اور ہے متواتر نعتی شوا ہدسے ٹابت ہے اور اگروہ دلائل وشوا ہد مشکرول کے دل کی تسلی نہیں کرتے اور ان کے دِلوں پر اثر نہیں کرتے تو یہ ان دلائل اور شوا ہد کا تصور نہیں۔ کا قصور نہیں۔

توبہ کر لی تو اس سے بار ہے تنظیم اور روش ہوگیا ور نہ وہ سیاہ تل اس میں موجود رہتا ہے چر جب اور گناہ کی ایک اور تل بیدا ہو گیا اور اس بستور کے مطابق ہر گناہ سیای پیدا ہونے کا سب ہوتا ہے یہاں تک کہ دل کی سطح پوری کی پوری تاریک اور شیاہ ہوجاتی ہے اور بمزر لہ کا سب ہوتا ہے یہاں تک کہ دل کی سطح پوری کی پوری تاریک اور شیاہ وہ جاتی ہوئی آلود آ مکینہ کے سے اس کی صفائی کے مطابق اس میں صور تی نقش ہوتی ہیں اور جب بیزنگ آلود بوجائے تو کوئی صورت اس میں نقش پذیر نہیں ہوتی ۔ پس اس زنگ کا دل پر پیدا ہوتا دلیل اور کشف کے ساتھ دی کو بھے کی صلاحیت کے باطل ہونے کا موجب ہوتا ہے اور دلائل کا اور کشف کے ساتھ دی کو بھے کی صلاحیت کے باطل ہونے کا موجب ہوتا ہے اور دلائل کا این کرنا اور انہیائے علیم السلام کی صحبت اس میں اثر نہیں کرتی اور وہ جی کو باطل اور باطل کو حت بھی خیال کرتا ہے۔

اور صدیت پاک میں وارد سیاہ آل کے بیدا ہونے کامنی بیہ ہے کہ ہر ہُرا کام لطیفہ قلب میں ایک تاریک کیفیت بیدا کردیتا ہے نہ یہ کداس سوبری کلاے پرکوئی محسوس ہونے والا زنگ نمودار ہوجاتہ ہے اس لیے کہ بیسنوبری کلزا قلب حقیقی نہیں ہے کہ اس میں اجھے کہ کہ کامول کا کوئی اثر ہو۔ قلب حقیقی ایک اور لطیفہ ہے جو کہ اس گوشت کے کلاے سے تعلق رکھتا ہے جس طرح کہ بیمائی اور سننے کی قوت ایک اور جیز ہے جو کہ فاہری آ کھ اور کان سے تعلق رکھتی ہے۔

میال جانا چاہے کہ امام حفص اور دوسرے معتبر قاری حفرات بل کے لام پر سکتہ
کرتے بین اور لام کا برطون کے قاعدے کے مطابق حرف راجی صاف طور پر اوعا منیں
کرتے اور ظاہر ہے کہ بیطر یقد حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سے مردی اور منقول ہوگا اور وقی اور منقول ہوگا اور وقی اور وہ گئتہ بہت باریک ہے۔ وہی کا نزول ای کے مطابق ہوا۔ پس بیامر ایک تکتہ چاہتا ہے اور وہ گئتہ بہت باریک ہے۔ ایک مقدے کی تمبید کے بغیر ذہن میں بیشتا۔

پہلے تو یہ جانا چاہیے کہ ہر لغت کے بلغا و کا قاعدہ ہے کہ بل یا بلکہ یا اختلاف لغات کے مطابق دوسرے اضراب کے کلمات کے بعد اگر کسی ایک چیز کا ذکر کریں جس کا ڈکر کرنا منظور ہے تو وقفہ یا سکتے نہیں کرتے بلکہ اس کے مابعد کوساتھ بی لے آتے ہیں اور اگر کراہت یا حقارت یا کسی اور مصلحت کی بناء پر جومنظور تھا اذکر ہیں نہ لا کمیں اور کوئی دوسری چیز جو کہ اس

ے کتر ہو گر مدعا کا پہتہ وینے جمل کفایت کرے اس کے فوض لا کمیں تو بل اور اس کے مابعد کے درمیان قلیل سا وقفہ ضروری مجمعے ہیں اور اس وقفہ کی رعایت انتہائی بلاغت ہے جیسا کہ اپی لفت میں سے جرکسی پرتجر بداور قیاس کے بعد بید مسئلہ روش ہو جاتا ۔

ابی لفت میں المی بلاغت میں سے ہر کسی پرتجر بداور قیاس کے بعد بید مسئلہ روش ہو جاتا ۔
۔

جب بیمقدمہ بیان ہو چاتو جانا چاہیے کہ جب بہاں بل کے کلمہ پرمعمولی سائھرنا
ہوا جو کہ سکتہ سے عبارت ہے تو اس بات کا انکشاف ہوا کہ ان کا فروں کے دِلوں کی حالت
جو کہ آیات الہیے کے بارے میں پہلوں کے افسانوں کا گمان کریں اس قدر خراب ہے کہ
ماحقہ اس حالت کا ذکر بندوں کی سمجھ میں نہیں آئے گا جو اپنے دِلوں کی خبر نہیں رکھتے ،
دوسروں کے دِلوں تک کیا پہنچیں لیکن یہاں ذکھ پیدا ہونے کا ذکر جو کہ نظر سمجے اور کشف
مرت کورو کے والا ہے کی کافی ہے اور خاطبین کی سمجھ کے بھی قریب ہے اس لیے کہ ظاہری
آئے نے میں ذکھ پیدا ہونا و کھتے ہیں اور اس ذکھ کے آئینے میں صورتوں کے نقش ہونے کو
دو کے کامشاہدہ کرتے ہیں۔

النرض اس آیت بی اس خفی کوائنها کی خوف دلایا گیا ہے جو گناہ پر گناہ کرتا چلا جاتا ہواوہ تو با خدامت اور استغفار کے ساتھ جلدی تدادک نہیں کرتا۔ جس طرح کے مریش ریت کی تعودی کی فرائی کو فاطر میں شلائے اور غذا ہیں ملاوٹ کرے۔ اور علاج پر متوجہ نہ ہو یہاں تک کہ طبیعت کی فرائی ہز گیڑ جائے اور قابل علاج نہ دہے۔ ہاں یہ بیار ایک ایساؤ کھ ہے کہ اسے دو حاتی طبیعوں جو کہ انجیائے علیج السلام اور اولیائے اللہ جی کے سر کو کہ انجیائے علیج السلام اور اولیائے اللہ جی کے سر کو کی ایسا کہ کہ اس ور حاتی کو فرائی کی مسلم اور اولیائے اللہ جی کہ مید ہماری جس طرح روح کے حراج کی خرائی کا موجب اور نظر و کھنف کے لیے رکاوٹ بن جاتی ہماری جس طرح انجیاء علیجم السلام اور اولیائے اللہ سے دُور کر دیتی ہے اور روحانی طبیعوں کی شاخت سے دو کے والا ایک کثیف پردا پیدا کردیتی ہے اور جب اس نے طبیب کو نہ بیجیاتا اور د جال کو سے خیال کیا تو علاج کال ہو کیا اور تو بت تا امیدی اور محروی تک جا بیجی الند تعالی ہمیں اس سے خیال کیا تو علاج کال ہو کیا اور تو بت تا امیدی اور محروی تک جا بیجی الند تعالی ہمیں اس سے خیال کیا تو علاج کال ہو کیا اور تو بت تا امیدی اور محروی تک جا بیجی الند تعالی ہمیں اس سے خیال کیا تو علاج کال ہو کیا اور تو بت تا امیدی اور محروی تک جا بیجی الند تعالی ہمیں اس سے خیال کیا تو علاج کال ہو کیا اور تو بت تا امیدی اور محروی تک جا بیجی اللہ تعالی ہمیں اس سے خاور ہوں۔

اوراگرزنگ آلود دِلوں والے کہیں کہ جمیں دنیا میں کثرت ذکر اور گناہ جِھوڑنے کے ساتھ دِلوں کوصاف اور میقل کرنے کی کیا ضرورت ہے کیونکہ قیامت کے دن نور ججل کے جیئے سے بیزنگ خود بخو د دُور ہو جائے گا اور چہرہ پورے طور پرصاف ہو جائے گا جیہا کہ ایک دن کا عقیدہ رکھنے والوں کا گمان ہے ان کے جواب میں کہنا جاہے:

کلّا ایبا گمان مت کرو کدان کے دِلوں کے زنگ نے صرف دنیا میں اثر کر کے انہیں حق میں اثر کر کے انہیں حق میں اثر کر کے انہیں حق میں انہیے کو پہچانے اور روز جزا کا عقیدہ رکھنے سے باز رکھا بلکہ اس زنگ کا اثر قیامت کے دن زیادہ قوی ہوگا اس لیے کہ:

اِنَّهُمْ عَنْ دَبِّهِمْ يَوْمَئِوْ لَمُحْجُوْبُوْنَ تَحْيَقَ وہ لوگ اس دن اپنے پروردگارے جاب میں ہوں گے نورجل کے جیکنے سے نفع نہیں پائیں گے اور اس کے دیدار سے مشرف نہیں ہوں گے اس لیے کہ عقلی قانون ہے کہ نورکونور کے بغیر دیکھانہیں جا سکتا جس طرح ان کی بھیرت کی آ کھ دنیا میں تہ در تذریک چڑھنے کی وجہ سے اللہ تعالیٰ کی روش اور تلاوت کی گی بھیرت کی آ کھ دنیا میں تہ در تذریک چڑھنے کی وجہ سے اللہ تعالیٰ کی روش اور تلاوت کی گئی آ یات کود کھنے سے اندمی ہوئی تھی اس طرح ان کی بھیرت کی آ کھ آخرت میں ذاتی اور عارضی ظلمتوں کے اجتماع کی وجہ سے اللہ تعالیٰ کے دیدار اور اس کی تجل کے مشاہدہ ہے اندمی ہول گے۔ بیت

ہر کہ امروز نہ بیند اثر قدرت دوست عالب آنست کہ فرداش نہ بید دیدار عالب آنست کہ فرداش نہ بید دیدار این جسے آج دوست کی قدرت کا اثر نظر نیس آیا کل کودہ محردم زیارت ہوگا۔

قیامت کے دن دیدار الی کا شوت

اور جب قیامت کے دن کفار اور منکروں کی بدیختی کے مقام پر دیدار خداوندی سے مجوب ومحروم رہنے کا ذکر فر مایا عمیا ہے تو بیاس امر کی صرح دلیل ہوئی کہ ایمان والے اس روز اپنے پر دردگار کی زیارت سے مجوب نیس ہوں کے اور اس کی لذت سے تر وتازہ اور مسرور ومخلوظ ہوں کے اور اگر ایمان والوں کو بھی بید دولت نصیب نہ ہوتو کفار اور ان کے درمیان اس امر میں کوئی فرق نہ ہواور اس بات کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت مسرور کا تمان اس امر میں کوئی فرق نہ ہواور اس بات کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت مسرور کی اس اس امر میں کوئی فرق نہ ہواور اس بات کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت مسرور کی اس اس امر میں کوئی فرق نہ ہواور اس بات کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت کا کافروں کے اسے میں بیان کرنا نہایت کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت کا کافروں کے بارے میں کوئی فرق نہ ہواور اس بات کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت کا کافروں کے بارے میں کوئی فرق نہ ہواور اس بات کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت کا کافروں کے بارے میں کرنا نہایت کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت کا کافروں کے بارے میں بیان کرنا نہایت کا کافروں کے بارے میں کوئی فرق نے کوئی فرق نے کہ کوئی کرنا نہایا کوئی کوئی کے کیں کیان کرنا نہایت کا کافروں کے کرنا نہایت کوئی کرنا نہایت کیا کیا کیا کافروں کے کا کافروں کے کرنا نہایت کیا کرنا نہایت کیا کیا کرنا نہایت کیا کافروں کے کیا کافروں کے کیا کے کیا کرنا نہایت کیا کافروں کے کرنا نہایت کیا کرنا نہایت کرنا نہایت کیا کرنا نہایت کیا کرنا نہایت کیا کرنا نہایت کرنا نہایت کیا کرنا نہایت کیا کرنا نہ کرنا نہایت کیا کرنا نہ کرنا نہایت کرنا نہایت کرنا نہایت کیا کرنا نہایت کرنا نہایت کرنا نہایت

نامناسب اور آئین بلاغت سے دُور ہے۔ اللہ تعالیٰ کی بناہ کہ کلامِ النی کوکوئی اس طرر آ سمھے۔

اور حضرت متوی علیہ السلام کو کہ جنہوں نے زیارت کی درخواست کی تھی جواب میں ان ترانی ارشاد ہوا تو مقصد یہ تھا کہ آپ دنیا میں ان جسمانی آلات کے ساتھ زیارت کی قابلیت نہیں رکھتے نہ یہ کہ قیامت میں بھی نہیں دیکھیں گے اس لیے کہ کلام کا اگلا حصہ یعنی فان استَقَدَّ مَکَّانَهُ فَسَوْفَ تَوَانِی زیارت کو استقراریعنی قائم رہنے پر معلق کرتا ہواور سورہ فرقان میں جنت کے بارے میں وارد ہے کہ حَسْنَتْ مُسْتَقَدًّا وَمُفَامًا اور شرط حاصل ہونے پر مشروط کا حصول وا جب ہے۔

اورمتواتر المعنی احادیث میں ثابت ہوا ہے کہ تمام ایمان والوں کو یہ دولت نصیب ہوگ کین اپنے اعمال کے اندازے کے مطابق اس نعمت میں بھی ان کے درجات مختلف ہوں گے۔ عام ایمان والوں کو جمعۃ المبارک کے دن جے آخرت میں یوم المزید کہیں گے اس دولت سے نوازا جائے گا جبکہ خاصان بارگاہ خداوندی کو جرروز دوبار یعنی مبح کے وقت اور عصر کے وقت زیارت ہوگی اور اخص الخواص کو جو کہ جنت عدن کے رہائٹی جین اللہ تعالی کا قرب اور تجلیات کا اعماف وائی ہوگا۔ چٹا نچے صدیت میں وارد ہے کہ مابین القوم و بین ان ینظروا الی دبھے الا دداء الکبریاء علی وجھے فی جنة عدن لیمن جن جنت عدن کی جنت عدن گئی ہوگا۔

كيفيت رؤيت كي تحقيق

اور تحقیق میہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی زیارت کے وقت ما سواللہ نظر سے محوم و جائے گا جبکہ ہم marfat.com

دنیا جس کوئی چیز دیمے ہیں تو اس کے ہمراہ اور چیزیں بھی دیمے ہیں اس وجہ ہے آئے سامنے ہونا جب اللہ تعالیٰ کے سامنے ہونا جب اور دوسری خصوصیت مقل جس کھونا نظر ہوتی ہیں اور جب اللہ تعالیٰ کے ساتھ کوئی اور چیز قطعا نظر جس نہ ہوگی تو ست آئے سامنے ہونے اور دوسری خصوصیات کا لحاظ بقل کی نظر ہے گر جائے گا بلکہ جب بھی ہم نظر جس آنے وائی دغوی چیزوں کود کیمتے ہیں تو دیکھنے کا آلے دیکھنے کے کام میں معروف ہوجاتا ہے اور دوسرے آلات اور تو تیں اپنے کام میں اگلہ جاتی ہے اس طرح صورت شکل کا موں میں مشخول رہتے ہیں اور مقل اپنے کام میں لگہ جاتی ہے اس طرح صورت شکل کا موں میں مصرف دیکھنے اور جہاں تمام آلات اور اعضاء کے ساتھ کی طور پرزیارت میں معروف ہوں اور بہر ہو جوہ استغراق عاصل ہوائان امور کی تشخیص بالکل ممکن نہ ہوگی جیسا کہ دنیا میں ہوں اور بہر ہوجوہ استغراق عاصل ہوائان امور کی تشخیص بالکل ممکن نہ ہوگی جیسا کہ دنیا میں کمی بعض محبوب چیزوں کو دیکھنے میں دوسرے حواس کی شرکت عاصل ہوتو اس عالت کا مور نظام ہوتا ہی میں استغراق اور اس مالت کا میں دفار ہوتا ہے صالا تکہ ایمی میں دور تا ہونے اور وقا و تی میں دوسرے حواس کی شرکت عاصل ہوتو اس عالت کا مور نظام ہوتا ہی دیا ہون اور تھا ہونہ تا ہونہ وقال و تھا میں استغراق اور اس استغراق میں بہت زیادہ فرق اور تفاوت

اور قیامت کے دن ول کے زنگ کی تا ٹیم کو بیان فر مایا گیا کرسب سے عظیم لذت یعنی دولت و بدار سے محروم کروے گا اس بات کا گمان ہوا کہ زنگ آلود دلول والے اس محروی اور بندیں سے کوئی عبرت حاصل نہ کریں اور عذاب کی اس متم کو آسان سمجھیں کیونکہ جسمانی لذتوں کے حرص کے گرفتار ہیں اس بناء پرفر مایا جا رہا ہے جسمانی لذتوں کی حرص کے گرفتار ہیں اس بناء پرفر مایا جا رہا ہے کہ ان مردودوں کے بارے ای محروی اور بندیں پری اکتفاء نہ ہوگا یک کہ

تَمَّرِ إِنَّهُمْ لَصَائُوا الْجَوجِيْمِ الل كے بعد تحقق وہ جائے والی آگ من داخل ہون كے اوران كااس آگ من جانالذت ويدار معروى كى وجہ دوم والركر كااس ليے كوار الرك لذت بات توجهم كى تكالف كاعوض وہ لذت ہوجاتى اور وہ تختياں آسان معلوم ہوتی جبکہ ان كی مزاكوشديد كرنامقصود بي البذا ان كے بار سے من جبم من واخل ہونے يرجى اكتفاء ند وكا بلك

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِهِ الْكَلِيمُ عَيْبَتُهُ تُكَذِّبُونَ جُرَبُا جائكًا كُرْآنَ وَى ون ہِ جَس

کاتم انکارکرتے تے اور اسے جموث خیال کرتے تھے تا کہ عقلی اور حسی دونوں عذاب جمع ہو جائیں اور جس طرع کدان کا جم جہنم کی آگ سے جاتا ہے ان کی جان بھی اس ملامت اور شرمندگی دِلانے سے کہاب ہوتی ہے۔

اور جب فاجرون کے یُرے انجام کے بیان سے فراغت ہوئی اس بات کا گمان تھا کہ شاید آخرت کی جزائے واقع ہونے کے لیے بھی کقار کا ایک وفتر کافی ہوگا اور بدکاروں اور نیکوں کے درمیان صرف ہی قدرا تمیاز ہوگا کہ بدکاروں کے اعمال اس بر ظاہر کر کے ان سے گلوق کے حقوق طلب کیے جا مُن اور نیکوں کے بارے میں کوئی ذکر تک نہ ہواور انہوں نے جو دنیا میں گلوق اور خالق کے حقق کو پورا کرنے کا شرف حاصل کیا وہ ظاہر ہی نہ ہواس لیے کے مستحق کو گلوق اور خالق کے نقوق کو پورا کرنے کا شرف حاصل کیا وہ ظاہر ہی نہ ہواس لیے کے مستحق کو اس کاخت پہنچانے میں کوئی احسان ہیں ہوتا جس کے وض کی جزائی تو قع کریں اس کی جزائی کی اس کی جزائی ہو تھا کو بیان کی جزائی قاسد کو سوال و کافی ہے کہ طریعے سے ڈورکیا جارہا ہے اور حقیقت عالی کو بیان کیا جارہا ہے۔

کُلّا ایانیس بھتا چاہے کہ اس دن صرف برکاروں کو جزا اور بدلہ دیے پر بی کفایت ہوگی اور ان کے کافین یعنی نیکوکاروں کو برکاروں کے جلانے کے لیے قتم قتم کی نعتیں اور دائی سرخروئی سے نواز انہیں جائے گا بلکہ ان کے کافین کو ان کے سامنے انواع واقدام کی عنایات سے نواز اجائے گا اور انہیں ان کی نظر میں انموکہ بتایا جائے گا تا کہ اس شخراور نداق کا بدلہ ہو جو کہ وو دنیا میں ان کے ساتھ کرتے تھے اس لے کہ:

اِنَّ كِتَابَ الْأَبُو الِهِ لَفِي عِلْمِينَ تَحْقِقَ نَيُوكاروں كے الحال تا اور ان كے الموں كا اعراج عليين كورن برعلو علموں كا اعراج عليين كورن برعلو كا اعراج عليين كورن برعلو سے مثنق كيا كيا ہے اور كين كا ہم وزن ہے اور اس جمع كے صيغے كو نيوں كى ارواح كے مقام كا نام قرارويا كيا ہے تا كه اس مقام كى وسعت اور كشاد كى پردلائت كر لے نيكن اس كا اعراب جمع كى طرح ہاں ليے كہ جمع كى صورت برہاكر چاس كامعنى مفرد كا ہے۔

سجین کے مفرداور علین کے بصیغة جمع لانے میں تکتہ

اور تجین کومفرد اور علیین کوجمع لانے میں میں کتاہے کو جہد سجین کے معنوں میں تنگی Marfat. Com

اور جوم واقع ہے اس کے لفظ میں بھی مفرد کو اختیار فرمایا گیا اس لیے کہ اس ایک مکان کشراجماع کی وجہ نہایت نگ ہوجاتا ہے جبکہ علیمین کے معنوں میں فراخی اور وسعت واقع ہے اس کے لفظ میں بھی جمع کو اختیار کیا گیا۔ گویا اشارہ ہور ہا ہے کہ نیکوں کی ارواح میں سے ہرروح کی جائے قرارایک بلندی کوفراخی ہرروح کی جائے قرارایک بلنداور وسیع مکان ہے اور اس وجہ سے کہ مکان کی بلندی کوفراخی اور وسعت بھی لازم ہے کنوی معنوں کے اعتبار سے بھی علیمین کا تجین کے ساتھ مقابلہ سے ہوا اس لیے کہ دونوں میں تقابل بالعرض متحقق ہوگیا۔

مقام علیین کابیان

اور مقام علین ساتوں آ سانوں کے اوپر ہے اور اس کا نچلا حصہ سدرۃ المنتیٰ ہے متصل ہے جبکہ اس کا اوپر کا حصہ عرش مجید کے وائیں پائے کے ساتھ ملا ہوا ہے اور قبض ہونے کے بعد نیکوں کی ارواح وہاں پہنچی ہیں اور مقربین یعنی انبیاء علیم السلام اور اولیائے اللہ وہاں تفہرتے ہیں اور عام نیک لوگوں کو نام تکھوانے اور اعمال نامے پہنچانے کے بعد سرتبوں کے مطابق آ سان ونیا میں یا آ سان وزیمن کے درمیان یا زمزم شریف کے کویں مرتبول کے مطابق آ سان ونیا میں یا آ سان وزیمن کے درمیان یا زمزم شریف کے کویں میں بخصراتے ہیں۔

ارواح كا قبرول معدرابطه اورزائرين كمتعلق آگاه مونا

اوران ارواح کوقبر کے ساتھ بھی ایک تعنق ہوتا ہے کے قبر پرزائرین رشتے واروں اور دستوں کے حاضر ہونے پرمطلع ہوتی ہیں اور اُنس محسوس کرتی ہیں اس لیے کہ روت کے سکان کا قریب یا دور ہوتا اس اطلاع میں رکاوٹ نہیں بنآ اور اس کی مثال انسانی وجود میں روت بھری ہے جو کہ ساتوں آ سانوں کے ستاروں کو کنویں کے اعر بھی و کھے سکتی ہود میں روت بھری ہے وکہ ساتوں آ سانوں کے ستاروں کو کنویں کے اعر بھی و کھے سکتی ہود جب وہ مقام بھی انسان معلوم نہیں کرسکا محر جبکہ در بار خداو تھی سے اسے اطلاع دی جائے ہوں اُن وجواب کے طریقے سے علیمان کے تقسیر میں ارشاد فر مایا جار ہا ہے:

عرش کے دائیں پایہ کے ساتھ اٹھایا ہوا ہے اور اس کا نجلا حصہ سدرۃ المنتہیٰ تک پہنچا ہوا ہے اور وہ دفتر خدا تعالیٰ کے خاص بندوں کے حوالے کیا گیا ہے جیسا کہ فرمایا جارہا ہے:

یشُهَدُهُ الْمُقَدِّبُوْنَ اس دفتر پرالله تعالی کے مقرب فرشتے حاضر ہوتے ہیں اور گواہ ننج ہیں جو کہ عرش کے حامل اور کری کے خازن ہیں۔

وراخمال ہے کہ یوں مراد ہو کہ اس عالی شان مقام میں کامل قرب رکھنے والوں کی ارواح جو کہ انبیاء علیم السلام اور اولیاء کمبار ہیں طاخر ہوتی ہیں اور ابرار کے حق میں بہی نخر کافی ہے کہ ان کا نام اس مقام میں لکھا جائے اور ان کے انتہے اعمال اس دفتر والوں کو قبول میں سند ہوں ،

ابرار ومقربين اور اصحاب يميين اورسا بقين كابيان

ہور س سے بہا ہے کہ ہر میں میں میت ی چی اور احلال الم انجا اور اور تاقعی ہونے ۔۔ حفاظت شرا نظ کی رعایات اور اس عمل کے نتیج کواج کے باطل ضائع اور اور تاقعی ہونے ۔۔ حفاظت کے کمال کے اعتبار ہے ایک خلی حد ہے اور ایک اوپر کی حد ہے۔ نہیں جو شخص نیک عمل میں اوپر کی حد ہے۔ نہیں جو شخص نیک عمل میں اوپر کی حد تک پہنچ عمیا وہ مقرب ہے اور جو اس سے کم رہے وہ ابرار کا درجہ ہے اور اس تقریر سے ایک شخص میں بعض اعمال کے اعتبار ہے ابرار اور مقبر بین کا اجتماع ہو سکتا ہے۔

marfat.com

ادر جو پچھ اہراز مقربین اصحاب میں اور سابقین کے الفاظ سے اور کلام الی کی روش سے جس میں ان دونوں گروہوں کے اوصاف بیان ہوئے معلوم ہوتا ہو وہ ہے کہ اہرارا اور اصحاب میں ان دونوں گروہ ہون جنہوں نے کلوق اور خالق کے حقوق کی اوا کیگی لوگوں کے ساتھ احسان کرنے اور نیک اور بیندیدہ اعمال میں کوشش کر کے اپنی قوت ملک کو بیمیہ اور سبعیہ قوت پر غالب کردیا ہے اور مقربین اور سابقین وہ گروہ ہوں جن کے ان صفات اور اعمال کے ساتھ جذب الی کے طریقے سے تمام اندرونی حجاب انچھ کے اور شہوداتم نصیب ہوا اور ان کا سلوک جذب تک جا بہنچا اور انہیں اپنی جوب کا قرب حقیق نصیب ہوا۔ والفداعلم سلوک جذب تک جا بہنچا اور انہیں اپنی عوب کا قرب حقیق نصیب ہوا۔ والفداعلم بعض عارفین کے مطابق مقام سجین اور علیین کی حقیقت

اورجس طرح کہ بعض عرفاء نے مقام تجین وعلیین کی تحقیق کی ہے ہے ہے کہ معرفت کی وسعت اور تنگی کے اعتبار سے اور لطائف کو سنوار نے انوارِ ملکیہ حاصل کرنے اور لطائف کو سنوار نے انوارِ ملکیہ حاصل کرنے اور لطائف کے مکدر ہونے اور بیمیہ اور سبعیہ ظلمتوں کے لاحق ہونے کے اعتبار سے نوع انبانی کے مکال کا میدان اتناوسی ہے کہ کی نوع میں آئی وسعت فلا ہر نہیں ہے۔

پی انسانی کمال کی شکل ایک وسیع دائرے کی طرح خیال میں لائی جاہے۔جسکا اسلام درجات میں سب ہے کم درجہ ہادران کا سب ہادیہ کا مرجہ عرش محیط کی وسعت کے برابرادر جب غیب کے عالم میں اس خیال شکل نے حقیقی مثال عاصل کی تو اس اخرے شکل نے حقیقی مثال عاصل کی تو اس اخرے کے محیط کا نام علیمین ہوا اور حجین اس کے مرکز کا نام اور یہ بات مطے شدہ ہے کہ مرکز کے قربی دائر سے ان دائر دل کی نبست زیادہ تھک اور چھوٹے ہوتے ہیں جو کہ محیط کے قرب ہیں۔ فاجروں کی انسانیت کے درجات درجہ بدرجہ قریب ہیں اور شکی اور مجھوٹ ہوتے میں ترتی پذیر جبکہ ابرار کی انسانیت کے درجات درجہ بدرجہ محیط کے قریب ہیں ادر وسعت اور فرائی میں کہیں بڑھے ہوئے حتی کی اعلی علیمین تک فوبت جا پہنچ جو کہ مقربین اور سابھین کا مقام ہے اور مقربین کی چروں میں ابرار کو بھی اس مقام میں روحانی عبور جسم سے مقربین کا مقام ہے اور مقربین کی حیوں میں ابرار کو بھی اس مقام میں روحانی عبور جسم سے عبور میسر آ جاتا ہے لیکن وہ مقام ان کی حاض کا مقام نہیں ہے۔ یہ دوحانی عبور جسم سے عبور میسر آ جاتا ہے لیکن وہ مقام ان کی حاض کی کا مقام نہیں ہے۔ یہ دوحانی عبور جسم سے اس کی حاض کی کا مقام نہیں ہے۔ یہ دوحانی عبور جسم سے اس کے جدا ہونے کے ابعد کھو آٹر کرے گا کہ ان کی ادوال کو دہاں لے جا تیں گے اور اس سے جسم سے اس مقام میں دول کے جدا ہونے کے ابعد کھو آٹر کرے گا کہ ان کی ادوال کو دہاں لے جا تیں گے اور اس سے سے مور میس ایک کے درجات کے درجات کی دول کے بعد کھو آٹر کرے گا کہ ان کی ادوال کو دہاں لے جا تیں گے اور اس

مقام والوں کے پیروکاروں میں سے تکھیں سے اللہ تعالی جنہیں کی نیک بخت کے تالع کر وے تو وہ بھی نیک بخت کے تالع کر وے وہ بھی نیک بخت ہیں اور جب ابرار کی ارواح کا حال بیان کرنے سے کہ قبض کرنے کے بعد کیا ہوگا فراغت ہوئی اب قیامت کے دن ان کے انجام کو بیان فرمایا جارہا ہے۔

اِنَّ الْأَبُوَارَ لَفِیْ نَعِیْمِ تَحْیَقَ نَکُوکارِ نَعْتُوں مِیں ہوں مے اور تعیم کا لفظ ان سب لذتوں کو شامل ہے جن کا جنت میں وعدہ کیا گیا ہے جیسے حور وقصور کھانا پینا 'لباس' سواری ' خوش وضع خدام' اچھی رہائش گاہیں اور وہ سب مجمد جو وہاں مہیا ہے اور ان نعتوں کے علاوہ یہ ہے کہ انہیں بادشا ہوں کی طرح مروار بداور یا توت جڑے ہوئے زریں تختوں پر بنھایا جائے گا اور ان تختوں پر مروار بدکے گنبد کھڑے جا کی ہے جا کی ہے جن کے اندر سے وہ سب چیزوں کو دیکھیں اور انہیں کوئی نہ و کھے جیسا کہ فرمایا جارہا ہے:

عَلَى الْاَرَآئِكَ يَنْظُرُونَ نَيك لُوگ سايد دارختول پر بينے ديھے ہوں كے اور حديث شريف ميں دارد ہے كہ موس كو جنت ميں دہاں كى تمام نعمتوں سے بہرہ وركيا جائے گا۔ بخلاف دنیا كے كہ اللہ تعالى يہاں لوگوں كو نعتيں عطافر ما تا ہے جبكہ ال نعتوں سے بہرہ ور ہونا فير نور ہون نور ہو كہ نفيس كھانوں كى لذت يا نفيب نبيس ہوتا جيے بيار بادشاہ يا جس كى مردى قوت كمزور ہوكہ نفيس كھانوں كى لذت يا دوشيز و متكود سے مقاربت كى لذت نبيس لے سكا۔ نيز سمج صدیث پاک ميں وارد ہے كہ اللہ جنت ميں سب سے كم در ہے والا وہ ہوگا جس كے سامنے بورى دنیاكى وسعت كے برابراس كى مملوك نعتيں بيش كى جا كميں كے مامنے بورى دنیاكى وسعت كے برابراس كى مملوك نعتيں بيش كى جا كميں كے۔

اور یکنظر ون کامغول تعیم کارادے سے حذف فرمایا گیا ہے تا کدا بی مملوکہ نعموں حور وقصور نبروں اور دختوں کو دوسرے جنتیوں کی نعمتوں کو اور دوز خیوں کے عذاب اور سزا کو دیمے کو شامل ہو۔ مقعمد یہ ہے کہ ان کے ساید دار تخت انہیں جنت اور جبنم کی کا نئات کا تماشا کرنے سے رکاوٹ اور مانع نہیں ہوں مے۔ بخلاف دیموی تختوں کے کہ ان میں جیمن نظر اور تماشا کے لیے رکاوٹ جنرا ہے۔

افت میں ادریکہ ای تخت کو کہتے ہیں جس کے اوپر گنبد کی طرح ایک سائبان بنایا میں ہوں ہوں اور پُرتکلف ابریشم زریں سے سجایا ممیا ہو۔ بندی زبان میں اسے بواور اسے منقش پردوں اور پُرتکلف ابریشم زریں سے سجایا ممیا ہو۔ بندی زبان میں اسے Marfat.com

چھرکھٹ سے تعبیر کرتے ہیں اور عارفین فرماتے ہیں کہ جنتی تخت جو کہ نیکوں کونفیب ہوں کے اور قرآن مجید میں جگہ جگہ پوری تعریف کے ساتھ ان کا ذکر ہوتا ہے اسمائے الہیہ سے نیکوں کے مقامات میں ہونا دنیا میں لوگوں کی آنکھ نیکوں کا ان مقامات میں ہونا دنیا میں لوگوں کی آنکھ اور عقل سے نوشیدہ تھا اور وہ اس مقام میں مشمکن ہوکر وجود کے تمام مرتبے دہاں سے سرکرتے ہیں۔

تغیرف فی و جُوهِ مِعِمْ نَضَدَ ةَ النّویْمِ اے دیکھنے والے! تو ان کے چروں میں نعمت کی تروتازگی و کھتا ہے۔ حاصل میہ کہ جہنیوں کا حال و کھنے کی وجہ سے انہیں کوئی ملال غبار خاطر اور چرے کے رتک کی تبدیلی رونما نہیں ہوگ۔ اس لیے کہ اپنے وشمنوں کو اپنے سامنے سزا دینا بھی فرحت اور مسرت برد حانے کا موجب ہے ای لیے ان کے چروں میں سامنے سزا دینا بھی فرحت اور مسرت برد حانے کا موجب ہے ای لیے ان کے چروں میں تازگی اور خوشی کے آثار ہمیشہ دیکھے اور محسوس کیے جائیں گے۔

یسفون مین دیمین انہیں خالص شراب پلائی جائے گی جو کہ اس محبت البی کا نمونہ ہے جسے انہوں نے دنیا میں اپنے باطن میں جگہ دی تھی اور وہ شراب کی طرح ان کے تو ی اور ارداح میں سرایت کے ہوئے تھی اور وہ محبت خالص محبت تھی جس میں گنا ہوں اور خواہشات کی محبت کی جاشی قطعاً نہتی۔

اور چونکہ زیادہ تیز جنتی شراب ای طرح نہروں اور چشموں میں جاری ہوگی جیہا کہ دوسری سورتوں میں جاری ہوگی جیہا کہ دوسری سورتوں میں اس کا ذکر ہے اس عام شراب سے احتراز کے لیے جو کہ جنت کے عام لوگوں کی دسترس میں ہوگی ایک اور قید بڑھا کرفر مایا جارہا ہے:

مَنْ خُنُوْ مِ یعنی وہ شراب خالص مہر کے ینچے رکمی کی ہے اور عام شراب ہے علیحدہ اور جدا ہے اور اس شراب خالص کے جو کہ مجت الی کانمونہ ہے مہرزدہ ہونے کا رازیہ ہے کہ وہ محبت کمال غلواور جوش کے باوجود کہ مرجبہ عشق ہے بھی کئی منزلیں دُورنگل گئی تھی، شریعت کی ممبر کی پابند تھی اور احکام الہید کی مہر کے ینچے محفوظ تھی اس میں وہمی مرام محبتوں ناجائز نفسانی خواہشات اور شیطانی نیاستوں کی آمیزش قطعانہ تھی۔

اوراس مہرز دہ شراب کی عجیب کیفیتوں میں سے یہ ہے کہ شراب دنیا کے شیشوں کو بھی

جبدان کی احتیاط پیش نظر ہوء مہر لگاتے ہیں لیکن جس چیز پر مہر لگاتے ہیں' مٹی' موم یا اس قسم کی کوئی چیز ہوتی ہے جبکہ جنت میں نیکوں کی مہرز دہ شراب کی صفت سے ہے کہ:

خطام کے میں جزیر ہر انگائی گئی ہے کستوری ہے تا کہ اس شراب سے اُنھنے والی سنوری کی اچھی مہک نیکوں کے مشام کوفر حت بخشنے والی ہواور وہ کستوری جس پر مہر لگائی مہر لگائی جس کے مشام کوفر حت بخشنے والی ہواور وہ کستوری جس پر مہر لگائی جائے گئ ان جائز چیز وں کے متعلق شریعت کے حکم کانمونہ ہے جو کہ دنیا میں نیکوں کے دِلوں کو تقویب دینے والا شرح صدر کا باعث اور ان کے ذوق وشوق کے جوش کا مددگار تھا۔

وَفِیْ ذَالِكَ فَلْیَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ اوراس طرح کی خالص شراب میں جو کہ اس شم کی نفیس چیز کا نمونہ اور مثال ہے جا ہے کہ رغبت کرنے والے رغبت کریں نہ کہ تھی بھر جواور گندم میں جے وہ لوگوں کے حق ہے پیاکش اور وزن میں کمی کرکے حاصل کریں کہ اسے اس کے ساتھ کوئی نسبت نہیں ہے۔

اوربعض مفسرین نے ختام کوختم اور انتہاء کے معنوں میں لیا ہے اور ابودرداء رضی اللہ عنہ سے مرفوعاً ثابت ہونے والی حدیث شریف اس کے مطابق وارد ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ جنتیوں کی آخری شراب مشک یعنی کستوری ہے اور مشک جاندی کی طرح سفید ایک شراب کا نام ہے کہ اگر دنیا والوں میں سے کوئی شخص اپنا ہاتھ اس میں ڈال کر مفید ایک شراب کا نام ہے کہ اگر دنیا والوں میں سے کوئی شخص اپنا ہاتھ اس میں ڈال کر مفید ایک نزی روح ایبان درہے جو کہ اس کی اچھی میک سے مست نہ ہو۔

ظاہری طور پراس خالص شراب کو جو کہ الل جنت کا آخری پیالہ ہوگا اس وجہ ہے مشک
کا نام دیا گیا ہے کہ مشک گرم دواؤں میں سے ہے جو کہ شراب اور غذا کوہضم کرنے میں مدد
کرتا ہے منہ کی بوکوا چھا کرتا ہے اور دوبارہ اشتہاء جلد پیدا کرتا ہے اور وہ شراب بھی جس پر
شراب کی مجلس ختم ہوگی کہی کام کرے گی۔ اور جب بعض اوقات اہل طرب وسرور کواس شم
کی شراب بھی منظور ہوتی ہے بنا براں فر مایا جا رہا ہے کہ اس شراب خالص کو جب بھی جا ہیں
کہی دوسری چیز کے ساتھ ملاکر پیش تو یہ بھی ان کے لیے مکن ہوگا۔

وُمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيْمِ اوراس شراب میں تنیم کی آمیزش ہوگی اور لغت میں تنیم اس چیز کو کہتے ہیں جو خوشبو اور ذا گفتہ امچھا کرنے کے لیے شربت کے اوپر ڈالتے ہیں جیسے گلاب marfat.com

اور بیدمثک وغیرہ ۔ سنام سے لیا گیا ہے جو کہ اونٹ کی کو ہان کے معنوں میں ہے اس لیے کہ
ان چیز وں کو شراب کے برتن میں ڈالنے سے بلبلے اُٹھتے ہیں جو کہ اونٹ کی کو ہان کی طرح
نمودار ہوتے ہیں یہال تسنیم سے مراد جنت کا ایک چشمہ ہے جو کہ جنس شراب میں سب سے
زیادہ نغیس اور لذین ہے اور مقربین و سابقین کو اس خالص چشمے سے پلائیں کے جبکہ ابرار اور
اصحاب یمین کو گلاب اور بید مشک کی طرح ملا کر دیں ہے۔

اور بعض روایات بیس مروی ہے کہ دوسرے چشموں کے برخلاف سنیم ہوا بیں جاری ہوگا : جنت کی زبین پرنہیں اور اس بیس رازیہ ہے کہ وہ چشمہ ذات الی کی محبت کا نمونہ ہے کہ جس نے کل وصورت کے تعین کے بغیر بلکہ حال اور صفت کی شخیص کے بغیر مقربین کی ارواح کوفریفتہ کیا ہے۔ کہتے ہیں کہ وہ چشمہ عرش کے بنچ سے اُبلنا ہے اور مقربین کی رہائش گاہوں کی فضاؤں پر سے گز زرتا ہے۔ چنا نچان کے حال کے بارے میں ارشاد ہوتا ہے کہ عین اُن قضاؤں پر سے گز زرتا ہے۔ چنا نچان کے حال کے بارے میں ارشاد ہوتا ہے کہ عین اُن یَشْرَبُ بھا الْمُقَدِّبُونَ سنیم سے مراد ایک چشمہ ہے جس سے مقربین پیتے ہیں۔ حاصل یہ کہ اس کے مشربین پیتے ہیں جبکہ ابراد کو دوسری شراب کے ہیں۔ حاصل یہ کہ اس کے کہ مقربین ماسوی اللہ میں مشغول نہیں ہوئے ہیں اور انہوں ساتھ طاکر دیتے ہیں اس لیے کہ مقربین ماسوی اللہ میں مشغول نہیں ہوئے ہیں اور انہوں نے عبت حق کو عبت غیر میں نہیں طایا ہے۔ بخلاف ابراد کے کہ ان کی محبت افعال اور صفات نے محبت حق کو عبت افعال اور صفات

اور چونکہ ابرار کے نفتوں سے مستفید ہونے کے خمن میں ان کی شراب نوشی کا ذکر ہوا تو اس کے نکتے کو بھی بیان فر مایا جا رہا ہے اور اس نکتے کی تفعیل یہ ہے کہ اس ون بندگان خاص کو شخراور مذاق کرنے کی وجہ سے کفار کو مزاد ینا ذات حق کو منظور ہوگا جبکہ اللہ تعالیٰ کے خاص کو شخراور مذاق کرنے وجہ سے کھار کو مزاد ینا ذات میں تو قف کریں ہے۔ ناچار انہیں خاص بند سے کمال تمکین اور وقار کی وجہ سے یہ انتقام لینے میں تو قف کریں ہے۔ ناچار انہیں ایک شراب سے بھر پور جام بلا کر چستی عطا کی جائے گی تا کہ اس جوش کی وجہ سے ان کی تمکین ووقار میں بھر میں واقع ہواور تسنح و فداق کا انتقام لیں۔ چنا نجی فر مایا جار ہا ہے:

اِنَّ الَّذِیْنَ اَجْدَمُوا تَحْقیق وہ لوگ جو کہ دنیا میں آیات والی کا انکار اور پیائش اور وزن میں گلوق کے حقوق میں کی کرنے جسے مناہ کرتے تھے۔ گانُوا مِنَ الَّذِیْنَ الْمَنْوُا

یف یخون ان لوگوں سے بنی اور فداق کرتے تھے جو کہ ایمان لائے ہیں اور کہتے کہ ان لوگوں کوئس فاسد خیال نے جکڑ لیا ہے کہ حسی لذتوں کو ایک موہوم اور خیالی امر کی توقع کی بناء برجیوڑے ہوئے ہیں اور اس بنی پر ہی اکتفاء نہیں کرتے بلکہ

وَإِذَا مَدَّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ اور جب وہ ايمان والوں كے پاس سے كزرتے تو آكھ ابرو اور ليے اس سے كزرتے تو آكھ ابرو اور ليے سے اشارہ كرتے كہ بيوى بے عقل اور سادہ لوح لوگ بيں جنہوں نے خودكو موہوم جنت كے گمان برنفتر لذتوں سے محروم كرد كھا ہے۔

دَافَا انْقَلَبُوْآ اِلَى اَهْلِهِمُ اور جب به کفاراتِ کمروالوں کی طرف مڑتے اور وہاں خوب صورت عورتوں بندیدہ بیٹوں بیٹیوں نفیس بستروں پُر تکلف برتوں لذیر کھانوں اور شندے اور خوش ذاکفتہ مشروبات جیسی دندی لذیر چیزوں کا اجتاع و یکھتے اور سجعتے کہ بیسب چیزی جمیں ای عقیدے کی بناء پر حاصل ہیں کہ ہم روز جزا کے معتقد اور اس دن سے خاکف اور ڈرنے والے بیس ہیں جبکہ نیک کام کرنے والے مسلمان ان لذتوں سے ای وجہ سے محروم ہیں کہ وہ موہوم جنت کی نعتوں کی توقع اور خیالی جہم کے عذاب کے خوف کی وجہ سے ان فیند لذتوں کو ہاتھ نیس لگاتے اس پاگل کی طرح جو کہ خیال فاسد کی وجہ سے نظم بخش لذین فاون سے ڈرتا اور پر بین کرتا ہے۔

إنْقَلَبُوا فَكِهِينَ لَوْلِطِيْ كُتِ اورخوش طبى كرت بوسة لوستة

وَإِذَا رَءَ وَهُوَ اور جب وه مسلمانوں كود كيمنے كدائي آپكوطاعت اور عبادت كى مشقت هى كيفا مراء اور عبادت كى مشقت هى كيمنا كيمات مونالباس مينتے بين ختك اور برم مراه كھاتے بين اور كرم دنوں ميں روزے ركھتے بيں۔

قَالُوًا إِنْ هُولاًءِ لَضَالُونَ تو كَتِمَ كَتَحْقِقَ بِدِلوك راسته م كيه موئ بي كهانبول غيموجوم لذتوں كوما ضرلذتوں برتر جي ونے كربے فائده مشقتوں كوهيقى كمالات كانام دے ركھا ہے۔

وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِيْنَ حالانكه بِهِ كفار مسلمانوں پرجمبان بنا كرنبيں بھيجے محتے بيں تا كه انبيں جادة حق سے بجسلنے نه ديں اور ہر محفل ميں اور مجمع ميں ان كا تعاقب كريں اور

طعن وشنیع کریں اور اس کام میں اس حد تک اہتمام کریں کہ پہلے بنی کے ساتھ اس کے بعد آنکھ اور ابرو کے اشارے سے اور اس کے بعد ان کے بارے میں غائبانہ لطیفہ بازی کریں اس کے بعد انہیں آ منے سامنے ہو کر محمراہ کریں۔

اوران چارحالتوں کواس ترتیب کے ساتھ شار کرنے کی وجہ یہ ہے کہ جب کی شخص

می شخص کی حرکت سے نفرت کرتا ہے تو پہلے حقیر جانے ہوئے بنی کرتا ہے اور جب نفرت
اور بن ھے تو اپنے ہم مشر بول کو بھی اس حرکت پر آ کھ اور ابرو کے اشارے سے اطلاع ویتا
ہے تا کہ وہ اس حرکت والے کو حقیر و ذکیل کرنے میں شریک ہوں اور جب نفرت او نچ در ہے تک جا پہنچ تو عائبانہ طور پر بھی اس حرکت والے کے بارے میں لطیفے کہتا ہے اور خوش طبعیال کرتا ہے تا کہ حقیر اور رسوا کرنے کا حق پورا کر دے اور جب بات نفرت کی حد سے اور نجی نکل می تو روبرو بے وقوف اور جائل کہنا اور عمرائی کی طرف منسوب کرنا شروع کر دیتا اونجی نکل می تو روبرو بے وقوف اور جائل کہنا اور عمرائی کی طرف منسوب کرنا شروع کر دیتا ہے اس لیے ان آیات میں ای ترتیب کی رعایت کی گئی ہے۔

اورمسلمانوں پر کفار کے اس ظلم کو بیان کرنے کے بعد ارشاد ہوتا ہے کہ ان کا بیظم بھی رائیگال نہیں جائے گا بلکہ جزاکے دن اس تتم کے قلم کا بدلہ بھی لیا جائے گا۔

فَالْیَوْمَ الَّذِیْنَ الْمَنُوْ الَّوْآجِ کے دن جوکہ جزاکا دن ہے جوایمان لائے اور انہوں فے ایمان لائے اور انہوں نے ایمانی قوت کی وجہ سے حقیقی کمالات کونفسانی لذتوں پرترجے دے کر اختیار کیا۔ مِنَ الْکُفّادِ کافروں سے جو کہ کمالات کے محر تنے اور کمال کوحی فانی لذتوں کو پورے طور پر حاصل کرنے میں مخصر کرتے ہے۔

یضحکون بنی کرتے ہیں کہ بہلوگ کس قدر ناعاقبت اندیش اور بے وقوف تھے کہ انہوں نے کس مندر ناعاقبت اندیش اور بوقوف تھے کہ انہوں نے کس ردی فانی چیز کوکس نفیس باتی چیز پرتر جے دی ہے اور جہنم میں کس مندم کے عذاب اور ذبحیروں اور طوقوں میں کس طرح جکڑے ہوئے ہیں۔

اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ کفار کے سامنے جہنم کے اندر جنت کی طرف دروازہ کھولا جائے گا اور جہنم کے دربان کہیں سے کہ ہاں جنت میں جلدی آؤ۔ وہ گرتے اُٹھتے زیجیروں اور طوقوں میں جکڑے ہوئے اس دروازے کی طرف چلیں سے جب قریب پہنچیں

مے تو دربان وہ دروازہ بند کردیں مے اور دوسری طرف ایک اور دروازہ کھول دیں مے اور آئٹیں کہیں گے کہاں دروازے میں سے چلے جاؤ اس دروازے کا قصد کریں مے اور آئٹیں پہاڑوں پر سے نہایت زبوں حالی سے گرتے اُٹھتے گزریں مے اور جب اس دروازے کے قریب پنچیں گے تو اسے بھی بند کر دیا جائے گا۔ کلی فہ االقیاس آئیس دوزخ میں اس حیلے کے ساتھ سرگرداں کیا جائے گا ایمان والے جنت میں ای حالت کا مشاہرہ کریں مے اور اس پر ہنسیں کے لیکن فداق کے اس قدر سبب کے باوجود آئیس تھکین اور وقار مانع ہوگا اور وہ ہننے کی ہنسیں کے لیکن فداق کے اس قدر سبب کے باوجود آئیس تھکین اور وقار مانع ہوگا اور وہ ہننے کی صدے آئے نہیں گزریں کے اور کا فروں کا دستور کہ دنیا میں آ کھا ور ابرو کے اشارے کرتے سے اور غائبانہ لطفے کہتے تھے اور سامنے گراہ کہتے تھے ان سے ظاہر نہیں ہوگا بلکہ اس حالت کے مشاہرے کے باوجود جو کہ حرکت کرنے کا بہت موجب ہوتی ہے اور لوگ اس تشم کے مشاہرے کے باوجود جو کہ حرکت کرنے کا بہت موجب ہوتی ہے اور لوگ اس تشم کے مشاہرے کے لیے دوڑتے ہیں اور دُور دُور تک جاتے ہیں وہ اپنے مکانات سے جنش نہیں کریں گے بلکہ ا

عَلَى الْاَدَ آئِكِ يَنْظُرُونَ وواپِ سايددار تختول پر بيشے ديھے ہيں اور پورے تمكين و وقار كے ساتھ ايك دوسرے سے پوچھتے ہيں كہ:

هَلُ ثُوْبَ الْكُفّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ كِياان كفار في النه كَي كَم مطابق سزا بالى جوكدوه ونيا بس بنى الثارے لطيفه كوئى اور كمراه كينے كاعمل كرتے تھے۔

سورهٔ انشقت

سورۃ انشقت کی ہے اس کی بچیس (۲۵) آیات ایک سونو (۱۰۹) کلمات اور جارسو تمیں (۲۳۰)حروف ہیں۔

سورة مطفقين كے ساتھ ربط كى وجه

اوراس سورة كا سورة مطفقين كم ماته رابط شروع سے لے كرة خرىك بالكل فا بر عدادر دونوں سورتوں كے معانی اور مضاعن ایک دوسرے سے متحداور ملتے جلتے ہیں۔ اس سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كَلِيْنِينَ واقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَاقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَاقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَاقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَاقع ہے جبکہ اس سورة عمل سورة عمل وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْ يَلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْمُ يَسْدِينَ وَيُلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْمُ كُلُونِينَ وَيْلُونُ يُلْمُ كُلُونِينَ وَيُلْمُ كُلُونِينَ وَيْمُ كُلُونُ كُلُونُ كُلُونِينَ وَيْمُ كُلُونُ وَيُونِينَ وَيُلْمُ كُلُونُ وَيْمُ كُلُونُ وَيُلْمُ كُلُونُ وَيُونُ وَيُلْمُ كُلُونُ وَيْمُ كُلُونُ وَيْمُ كُلُونُ وَيُلْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيْعُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعُونُونُ وَيُعْمُ كُلُونُ وَيُعْمُ كُو

يدعو ثبورا هجوہال الايظن اولئك إنهم مبعوثون هجبكه يهال انه ظن ان لن يحود ٢٠٤١ يَوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ٢٠٠٠ يهال فملاقيه ٢٠٠١ نیکول اور یُرول کے اعمال نامول کا ذکر ہے کہ ان کی موت کے بعد وہلین اور جین کے دفتر میں داخل ہوں سے جبکہ یہاں نیکوں اور نروں کے اعمال ناموں کا ذکر ہے کہ حشر کے بعد سید ھے اور اُلٹے ہاتھوں میں دیئے جائیں مے وہاں قرآن پاک کی تکذیب جو کہ کفار كرت من ال عبارت ك ماته مذكور ب- وَإِذَا تُتلَى عَلَيْهِ الْيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْكَوْلِينَ جَبَه يهال اس عبارت كماته بكر إذًا قُرى عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَايَسْجُنُونَ وبال إنَّهُمْ لَصَالُوا الْبَحَوميم واقع موا جبكه يهال يَصْلَى سَعِيْرًا ب وبال الل نجات ك بارك من تَعْرف في وُجُوهِهمْ نَصْرَةً النَّويْمِ واقع بـ نيز فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ المَنُوا مِنَ الْكُفَّادِ يَصْحُكُونَ بَجَبَهِ يَهِال وَيَنْقَلِبُ إِلَى اَهْلِهِ مَسْرُورًا بِولِا مسلمانوں کی نبست کفار کے بارے میں ندکور ہے کہ کانوا مِنَ الّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَى آهُلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ جَبَه يَهِالِ إِنَّهُ كَانَ فِي آهْلِهِ مسرودا ہے۔ علی بداالقیاس فورو کرے بعد یوری مناسبت ظاہر ہوتی ہے۔

اوراس سورة كوسورة انشقت اورائشان كانام ال وجهد ویا گیا ہے كه ال كة عاز من قیارت كور بدواقعة وى من قیامت كور الله تعالى كے هم سے آسان پھاڑے جانے كاذكر ہاور بدواقعة وى كرايك عظيم جمت ہال ليے كہ جب آسان اپنى بزرگى اور بلندى كے باوجودا بنے پروردگار كرايك عظيم جمت ہال اوركى عذاب كوف كے بغير يدمشكل كام بجالا يا تو آدى جو كرائيات وال كو تو اوركى عذاب كوف كے بغير يدمشكل كام بجالا يا تو آدى جو كرنہايت ذات اور پستى ميں واقع ہے الله تعالى كة سان امركوجوكه اتنا سخت اور دشوار تبيل كرنہايت ذات اور بجانہ لائے ۔ باوجود كوں قبول ندكر كاور بجانہ لائے ۔ باوجود كوں قبول ندكر كاور بجانہ لائے وستم الله الورك عن المركوبين

إذا السّباء انشقت جب آسان محد جائے اور حفرت امیر المونین مرتفی کرم الله وجهد سے مروی ہے کہ آسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس روز اس کے محصے کی وجہ سے مروی ہے کہ آسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس روز اس کے محصے کی وجہ سے مروی ہے کہ آسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس روز اس کے محصے کی وجہ سے مروی ہے کہ آسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس روز اس کے محصے کی وجہ سے مروی ہے کہ آسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس روز اس کے محصے کی وجہ سے مروی ہے کہ آسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس کے مقام سے محصے کہا اور اس کے محصے کے اسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس کے محصے کہ آسان کہکٹال کے مقام سے محصے کا اور اس روز اس کے محصے کی اور اس کے محصے کہا ہوں کہ اس کے مقام سے کہتے کہ اس کے محصے کہا ہوں کے محصے کہ اس کے محصے کہ اس کہ کہا ہوں کہ اس کے محصے کے

یہ ہے کہ آسان کے دروازوں پر متعین فرشتے جو کہ بندوں کا رزق ینچے لانے اور ان کے اعمال کواوپر لے جانے پر مقرر جین اپنے کام سے فارغ ہو کر نازل ہوں گے اور دوسرے فرشتے بھی جو کہ آسانوں میں سکونت پذیر جین محشر کے اردگر دمفیں باندھے کھڑے ہوں اور اللہ تعالیٰ کی جی قہری عرش پر غلبہ کر کے اسے نیچ کی سمت میں حرکت دے اور اس جی کے صدے اور عرش کے قلیم مجم کی وجہ ہے آسان کے اجزا پاش پاش ہو جا کیں۔ نیز اس وقت صدے اور عرش کے قلیم مجم کی وجہ ہے آسان کے اجزا پاش پاش ہو جا کیں۔ نیز اس وقت اس جہان کی بر بادی اور ایک دوسرے جہان کی آبادی منظور ہے اور نیا مکان پر انے مکان کی تو رہ ہو گئی۔

یہاں جانا چاہے کہ آدی روح اورجہم دو چیزوں سے مرکب ہاس کی روحانیت کا
مثا آسان ہاس لیے کہ اس کانفس ناطقہ نفوس ساوی سے لیا گیا ہے اور ان سے پوری
مثا بہت رکھتا ہے جبکہ روح ہوائی جو کہ نفس کا مرکب ہے اور گوشت والے جسم میں جاری و ،
مثا بہت رکھتا ہے جبکہ روح ہوائی جو کہ نفس کا مرکب ہے اور گوشت والے جسم میں جاری و ،
مداری ہے کا جو ہر بھی آسان کے جواہر کے ساتھ پوری مشابہت رکھتا ہے کہ خرق والسیام اور
تو رہوڑ کے قابل نہیں اور اگر چاہے بیار بول کی وجہ سے برے صدے اُٹھانے پڑتے ہیں
لیکن اس میں کھل خلل واقع نہیں ہوتا اس کی فتا کی صدیہ ہے کہ بدن سے جدا ہوجائے۔
ازاں بعد بھی ارواح کے موکلوں کے ہاتھوں میں محفوظ ومصون ہے۔

اور روح کی سعادت اور شقاوت جے عرف جی بخت کہتے ہیں اور طالع کی طرف منسوب کرتے ہیں' کا سبب ہی آ سان اور اس کے ستاروں کی حرکات کے اطوار سے لیا گیا ہواور وح کی غذا اور اس کی بیار ہوں کی دوا جو کہ شریعت اور طریقت ہے' بھی آ سان سے نازل ہونے والی ہے۔ پس آ سان کا پھٹا اس بات کی قوی دلیل اور واضح ہر ہان ہے کہ آ دی کی روحانیت کے لیے بھی این پروردگار کے تھم کی اطاعت کے بغیر چارہ نہیں کیونکہ اس کا معدن اور خزانہ جو کہ آ سان ہے ہی تھے۔ اس جھٹے اور بلندی کے باوجود اللہ تعالی کے تھم کے تالی ہے اور اس دن آ سان کا پھٹنا اپنی بنیادوں کی صنعت کی بناء پرنیس ہوگا جیسا کہ دنیدی عمارات کا ٹوٹنا اور اس جہان کی مصنوعات کا پھوٹنا ہوتا ہے بلکہ اسے اس کی کمال قوت' مضبوطی اور عظمت کے باوجود کی پہنچا۔

و آذِنَتْ لِرَبِّهَا اور آسان نے کان رکھا اور اپنے پروردگار کے علم کے لیے جھک گیا اور اس تھم کو اگر چہ بہت دشوار تھا' تبول کرنے سے سرنہیں پھیرا اور بیفر ماں برواری جواس سے صادر ہوئی الی نہیں کہ اس کی عظمت اور بلندی کے منافی ہو بلکہ یہ عاجزی اس کی عظمت کے لائق تھی۔ کے لائق تھی۔

اور جب زمین جسم انسانی کا منشا ہے اور اس کا غالب جزو ہے اور اسے غذا اور دوسرے نفع بھی زمین سے حاصل ہوتے ہیں۔ پس اس کا تھم خداوندی کی فقیل کرنا اس بات کی قوی ولی میں ہے کہ آدمی اسے نمام اعضاء آلات جسمانی کے ساتھ تھم الہی کا مطبع اور فرماں بردار موگا۔

وَالْقَتْ مَا فِیْهَا اور وہ اسے تھینی کی وجہ سے سب پھرڈال دے جو پھراس میں مرنے والوں کے اجزا 'خزانوں وفینوں اور کا نول میں سے ہتا کہ لوگوں کا اپنے تمام اجزا مست حشر مخقق ہواور زمین کی منفعتیں جس پر کہ انہوں نے لڑائی فساد کیے ہیں اور ایک دوسرے کے حقوق ضائع کیے ہیں کمال بے قدری کے ساتھ ان کے سامنے ظاہر ہو جا کمیں۔

رَتَعَعَلَتْ ادر تكلفًا فالى موجائے ان تمام چیزوں سے جو کہ لوگوں کے آثار میں marfat.com

Marfat.com

ے اس متعلق ہیں تا کہ اس پر جزادینا متفق ہواور زمین کو اس مینیخے اور خالی کرنے میں کوئی بدلہ یا کسی کوئی نقصان یا نفع پہنچا نامقصود نہیں بلکہ اس کے پاس اس کام کے لیے تھم خداوندی پہنچا۔

وَاَذِنَتُ لِرَبِهَا وَحُقَّتُ اور زمین نے اپنے پروردگار کے تھم پرکان رکھا اور وہ مطبح ہوئی اور وہ اس اطاعت کے لائق تھی۔ یہاں جانتا جا ہے کہ اکثر عوام گمان کرتے ہیں کہ یہ آیت مرر ہے حالا نکہ ایسا نہیں ہے۔ پہلی آیت آسان کے حق میں اور دوسری زمین کے بارے میں ہے۔ پہلی آیت آسان کے حق میں اور دوسری زمین کے بارے میں ہے۔ پس تحرار اصلا نہیں ہے۔

اور شرط کی جزا محذوف ہے لینی جب آسان ہوں ہو جائے اور زمین ہول کرے تو اے انسان! تجھ پر صرح الزام لائق ہواور تجھ پر ججت قائم ہو کہ تو نے اپنے پروردگار کے فرمان کوروح اورجم کے ساتھ کیول قبول نہ کیا اور اس کے اوامر ونوائی کی مخالفت میں اپنی عرکز اردی جیسا کہ الزام ججت کو بیان کرنے کے لیے واشکاف لفظوں میں فرمایا جارہا ہے۔

یکا تیما الزنسان اے انسان! تو آسان سے بڑا اور اس سے اونچانہیں ہے اور نہ بی زمین سے زیادہ سخت ہے تا کہ تو اپنے پروردگار کا فرمان قبول نہ کرے اور اس کے تھم کی اطاعت نہ کرے والا تکہ تیم کے بارے میں تھم الی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے اطاعت نہ کرے والا تکہ تیم کے بارے میں تھم الی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے اطاعت نہ کرے والا تکہ تیم کے بارے میں تھم الی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے اطاعت نہ کرے والا تکہ تیم کے بارے میں تھم الی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے اطاعت نہ کرے والا تکہ تیم کے بارے میں تھم الی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے اطاعت نہ کرے والا تکہ تیم کے بارے میں تھم الی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے الاسان اور فرم ہے جبکہ ان کے الاسان اور فرم ہے جبکہ ان کے تعمل کی کھر کیا تھی کی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے تعمل کی کھر کے اور کی کھر کے کہ کان کو کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کھر کی کھر کی کھر کے کہا کہ کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کے کہا کہ کی کھر کے کھر کی کھر کھر کی کھر کی کھر کے کہا کہ کھر کی کھر کی کھر کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کھر کھر کی کھر کے کہ کھر کی کھر کے کہا کہ کھر کے کہ کھر کے کھر کھر کی کھر کی کھر کی کھر کی کے کہ کھر کے کہ کر کے کہ کھر کی کھر کے کہ کھر کے کھر کے کہ کے کہ کھر کے کہ کے کہ کھر کے کہ کہ کھر کے کہ کھر کے کہ کھر کے کہ کہ کھر کے کہ کھر کے کہ ک

زین سے زیادہ سخت ہے تا کہ تو اپنے پروردگار کا فرمان فیول نہ کرے اور اس کے سم کی اطاعت نہ کرے طالا کہ تیرے بارے میں تھم الی بہت آسان اور فرم ہے جبکہ ان کے بارے میں تابید میں تابید کی اور مرشی بارے میں نہایت دشوار اور بھاری۔ انہوں نے گرانی اور تخق کے باوجودا طاعت کی اور مرشی نہ کی اور اس کے بیچے کوئی ثو اب اور عذاب نہیں جبکہ جو تھم تیرے بارے میں آیا ہے اس کے بیچے ٹو اب اور عذاب ہے بلکہ تجے ثو اب اور عذاب ہے بلکہ تجے ثو اب اور عذاب ہے بلکہ تجے ثو اب اور عذاب ہے بلکہ تحق ثو اب اور عذاب سے بالاتر ایک اسی منعنت کی تو تع ہے جس کی آسان اور زمین کو قطعاً تو تع نہیں اور عذاب سے بالاتر ایک اسی منعنت کی تو تع ہے جس کی آسان اور زمین کو قطعاً تو تع نہیں

اِنَّكَ كَادِحْ إِلَى رَبِّكَ تَحْقَقَ تَوْ كُوشْشُ كَرِنْ والا ہے كدائي پروردگاركا وصال عاصل كرے۔ كَذْمَةً بورى مشقت كے ساتھ اس ليے كہ تجميع وصال كى استعداد دى تن عاصل كرے۔ كَذْمَةً بورى مشقت كے ساتھ اس ليے كہ تجميع وصال كى استعداد دى تن عب ہے اور اس كا خيال تيرے سر من ركھا حميا ہے۔ بخلاف آسان اور زمين كے كہ نہ ان من وصال خداوندى كى استعداد ہے نداہے حاصل كرنے كا خيال اور يدوعد وشد و وصال اور ب

تغیر مزیزی مسید میسید تیموال باره

پردہ مشاہدہ جسے تو حاصل کرنے کی فکر میں ہے صرف ایک خیال نہیں کہ تو دنیا میں اس پرخوش تھا بلکہ واقع میں محقق ہے۔ چتانجے فر مایا جار ہاہے:

فَمُلَاقِیْهِ پی تواپ پروردگار سے ملاقات کرنے والا ہے خیال وادراک کے پردے کے بغیر اور نمونہ ومثال کے جاب کے بغیر۔ پس تجھے اللہ تعالیٰ کے حکم کی اطاعت اس قدر ضروری ہے کہ کی خلوق کو آئی ضروری نہیں تا کہ اس روز عین مشاہدہ اور ملاقات کے وقت تو شروری ہے کہ کی خلوق کو آئی ضروری نہیں تا کہ اس روز عین مشاہدہ اور ملاقات کے وقت تو شرم سار اور نادم نہ ہو کیونکہ اس دن وصال کی کوشش میں تیری قوت اور ضعف فلا ہر ہو جائے گا اس طرح کہ

فَاهَا مَنْ أُوْتِی کِتَابَهُ تو جے اس کا نامہ اعمال اپنے پروردگار کی ملاقات کے وقت ویا جائے گا جس میں اس کی اچھی کاوشیں اور اللہ تعالیٰ کے احکام کی اطاعت اور فرماں برداری کھی ہوئی ہے تاکہ وہ اس شوق میں جو پچھ بجالایا تھا وہ سب کا سب اس کے سروراور لذت کا موجب ہواورا سے پیتے چل جائے کہ میری کوشش ٹھکانے گئی اور قبول ہوئی۔

بعد منظم ال کے سید سے ہاتھ میں جو کہ نجات اور رضامندی کی علامت ہے اس لیے کہ دایاں ہاتھ غالب طور پر بائی ہاتھ کی نسبت زیادہ قوی ہوتا ہے اور یہ فخص جس نے فرمان البی کی اطاعت کی اسپے نفس کی خواہش پر غالب آیا اور اسے عظیم قوت نعیب ہوئی اور اس کی نیکیاں اس کی ٹرائیوں پر غالب ہوئیں۔

فَسَوْفَ يُعَامَبُ تَوْدا كُيلِ مِا تَعْرِيمَلَ نَيك اعمال نامددينے كے بعد يُرے كاموں كا صاب كيا جائے گا جوكہ مغلوب اور فليل رو مے تھے۔ حِسَابًا يَسِيْدًا آسان صاب۔

اور حدیث شریف می ہے کہ حضرت أم الموشین عائشہ صدیقة رضی الله عنها نے پوچھا کہ یارسول الله صلی الله علیہ وسلم حساب بیر کیا ہے؟ حضور علیہ الصلاۃ والسلام نے فرمایا کہ حساب بیر میاب بیر کیا ہے؟ حضور علیہ الصلاۃ والسلام نے گی کہ اے بندہ حساب بیر ہیر ہے کہ بندے کا نامہ اعمال اسے وکھا کیں گے اور ندا آئے گی کہ اے بندہ مون او نے جونیکیاں کیں ہم نے قول فرما کیں اور جو خطا کیں کیں ہم نے معاف فرما ویں ۔کی چیز کے متعلق نہیں کہا جائے۔گا کہ کرنے کی تھی تو نے کیوں ندی اور ند کرنے کی تھی تو نے کیوں کے حساب میں بحث اور تو نے کیوں کے حساب میں بحث اور خوا کیوں کے حساب میں بحث اور

تجس ہوا عذاب میں ضرور گرفتار ہوگا کیونکہ اس ونت مناہ کا کوئی عذر ہاتھ نہیں گھے گا اور وہ مناہ سے خالی نہیں ہے۔

نیز حدیث سے میں دارد ہے کہ ایک دن حضور صلی اللہ علیہ وسلم فر مارہے سے کہ قیامت کے دن جس کا حساب ہوا' عذا ب بھی ہوگا۔ حضرت اُم الموسین رضی اللہ عنہا نے عرض کی کہ خدا تعالیٰ فرما تا ہے فَسَوُ فَ یُعَاسَبُ جِسَابًا یَّسِیْدٌ اوراس آیت سے بول معلوم ہوتا ہے کہ بعض لوگ حساب کے بعد نجات پالیں مے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے فرما یا کہ بیہ حساب نہیں ہے صرف عمل و کھانا ہے کہ تو نے یوں کیا اور ہم نے معاف فرما دیا اور تو نے یوں نہ کیا اور ہم نے درگز رفر مایا کیکن میری مرادیہ ہے کہ جس کے حساب علی جھان پیک کی گئی البت ملک ہوگا۔

وَيَنْقَلِبُ إِنِي اَهْلِهِ مَسْرُورًا اوروه النِ مُروالوں کی طرف خوش ہوتا ہوالوئے کا نداے کی عذاب کا خوف باتی رہانداے طامت اور عماب سے شرمندہ ہوتا پڑا بلکداس کی نوات کی مرت سے لی رخوشی کی الی کیفیت پیدا نجات کی مرت سے لی کرخوشی کی الی کیفیت پیدا کرے گی کہ کوئی کیفیت بحد اس کی برابری نہیں کرعتی اور گھر والوں سے مراد جنتی حوریں اس کی منکوحہ مورشی جو کہ بن آ دم میں سے جنت میں پہنچتی ہیں اور اس کے دومرے عزیز و اقارب ہیں جو کہ جن آ دم میں سے جنت میں پہنچتی ہیں اور اس کے دومرے عزیز و اقارب ہیں جو کہ حشر میں اس کے حماب کی صورت مال کی اطلاع کے ختھر کھڑے ہیں۔

یبال سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالی بندے پردوعم جمع نہیں فرماتا جس نے دنیا جس دین کا غم کھایا اس روز شاد مال اورخش باش ہوگا اور سوف کا لفظ جو کہ دیر اور تاخیر پر دلالت کرتا ہے اس بات کے اشارے کے لیے ہے کہ پہلے اسے نامہ اعمال دکھا کرنیکیوں کے ساتھ خوش کریں سے اور مہلت دراز کے بعد اسے معاف شدہ نرائیوں پر اطلاع دی جائے گ تا کہ پہلی دفعہ بی نرائیوں پر مطلع ہونے کی وجہ سے شرم ساراور تادم نہ ہو۔

وَأَهَا مَن أُونِيَ كِتَابَهُ اور جےاس كا نامهُ اعمال بائي باتھ من ديا جائے كا اور بيد باكت اور علامت ہے۔ اس ليے كه بايال باتحد دائي باتحد ہے كرور ہے اور اس مخص نے اپنى كزور سے اور اس مقدم مخص نے اپنى كزور سمت كو جو كرنفس كى خوابش تحى توى سمت پر جو كه فرمان الى ب مقدم marfat.com

رکھااس نے قوی کوضعیف اورضعیف کوقوی کر دیا تھا اورصورت معاملہ کو اُلٹ دیا تھا ای لیے اس کا اعمال نامہ اس کے بائیں ہاتھ میں اگلی طرف سے نہیں دیں گے بلکہ اس کے بائیں ہاتھ میں اگلی طرف سے نہیں دیں گے بلکہ اس کے بائیں ہاتھ کو اس کی پیشت پر باندھ دیں سے اور اس کا اعمال نامہ اس ہاتھ میں رکھیں سے کہ

وَدَآءَ ظَهْرَهُ لِعِنَ اس كَى پِشت كَى طرف سے فَسَوْفَ يَدْعُو تُبُورًا لِي آخركارا بِي للكت كو پكارے كالينى آرزوكرے كاكہ كاش موت آجائے اور مجھے ہلاك كروے تاكہ اپنى اس يُرى كوشش كے انجام سے جلد خلاصى پاؤل۔ اور سوف كالفظ جوكہ تاخير پرولائت كرتا ہے يہال اس وجہ سے وارو فر مايا كيا كہ اپنى ہلاكت اپنى عمر اور اعمال كے جمع اور خرج كے بہال اس وجہ سے وارو فر مايا كيا كہ اپنى ہلاكت اپنى عمر اور اعمال كو ديكھ كروه گمان كر بورے مطالعہ كے بعد واضح ہوگی۔ پہلى بارائے الیحھ اور يُرے اعمال كو ديكھ كروه گمان كر بورے مطالعہ اور ميں نجات پاؤل اور بيد مطالعہ اور حساب برابركرنا كچھ وقت جا ہتا ہے۔

اور وہ جو سورہ الحاقۃ اور دوسری سورتوں میں ندکور ہے کہ بعض کو اعمال نا ہے دائیں ہاتھ میں اور بعض کو یا کمیں ہاتھ میں دینے جاکمیں گے یہاں ندکور صورت کہ پچیلی ست دینے جاکمیں گئے یہاں ندکور صورت کہ پچیلی ست دینے جاکمیں گئے میں اعمال نامدای طرح دیا جائے گا کہ پس پشت ہے دیں گئے اور وہ جو بعض علماء نے تغییر میں ذکر کیا ہے کہ اس روز لوگوں کی تین فتسیں ہوں گئ انلی نجات کے اعمال نامے داکمیں ہاتھ میں دیئے جاکمیں گے اور ابدی ملاکت والوں کو باکمیں ہوں گئ انلی نجات کے اعمال نامے والوں کو جو کہ عذاب کے بعد پھر نجات یا کمیں گئے سمت ہوں گئی ہاتھ میں بچھلی سمت ہوں گئی ہاتھ میں پچھلی سمت ہوں گئی ہاتھ میں آگلی سمت سے دیں گے قالوں کو باکمیں ہاتھ میں آگلی سمت سے دیں گے تو یہ قرآن و حدیث کے بیان کے مطابق نہیں۔ نرااحتمال ہے اس لیے کہ باکمیں ہاتھ والوں اور تجھیلی سمت والوں دونوں کے بارے میں جو وعید آئی ہے ایک دوسرے کے قریب ہے۔ نگل میں اور نجات پر دلالت نہیں رکھتی اور اس کے باوجود بعض احادیث میں ای روش پر اعمال خلاصی اور نجات پر دلالت نہیں رکھتی اور اس کے باوجود بعض احادیث میں ای روش پر اعمال خلاصی اور نجات پر تھر ت کے جو کہ ذکر گئی۔ واللہ تعالی اعلم

اور جب اس مخض کا حال بیان فرما دیا عمیا جو کداپنااعمال نامہ پچپلی سمت ہے دیئے marfat.com

جانے کی وجہ سے جہنمی ہونے کی علامت پاکر چیخ و پکارکرتے ہوئے موت اور ہلاکت کو پکارٹائروع کردے گا۔اب ارشاد ہوتا ہے کہ اس قدر گھبراہث بیقراری اور بے جینی اسے کافی نہیں ہوگی بلکہ جس چیز سے وہ ڈرتا ہے واقع ہوکررہے گی۔

وَيَصْلَى سَعِيْدًا اور بَهِرُكَى آگ مِن واظل ہوگا اس ليے كد إِنّه كَانَ فِي آهَلِهِ مَسُرُورًا تَحْقِق وہ ونيا مِن اپنا فاند مِن خوش اور بِغُم تھا اسے دين اور آخرت كاغم نہيں تھا اور وہ كفر اور گناہوں ہے نہيں ڈرتا تھا اور اللہ تعالی کی خوشنودی کی ست كا احر ام بالكل نہيں كرتا تھا اور يہال ہے بھی معلوم ہوا كدونيا كی خوشی اپنے بیچے آخرت كاغم ركھتى ہے جيسا كدوسری جگد فرمايا گيا ہے كہ فليضحكو اقليد وكيند وكين كؤوش ونيا ميں آخرت كغم اور فكر ميں زندگی بركرے اس كا حال آخرت ميں اس كے برعس ہے۔ ونيا ميں اور غم كی تفصيل

لیکن بہال جانا چاہیے کہ دنیوی سرور وہی بڑا ہے جو کہ غفلت کے بات ہواں اور عیش پری سے پیدا ہواور جو سرور قضائے الہی پرراضی ہونے کی وجہ نے یا وین اعتبار سے قرب اور بلند مرتبوں کے حصول کی بدولت لذت اور فرحت پانے کی وجہ سے ہو بالکل قابلِ شخسین اور سراسر نفع بخش ہے۔ چنا نچہ سورہ یونس میں فرمایا گیا ہے کہ قُل بِفَضُلِ اللّٰهِ وَبِدَ خُمَتِه فَبِذَالِكَ فَلْمَفْدَ خُول اور یہاں ای سرور اور نازونعت کا ذکر ہے جو کہ غلت کی زیادتی کی وجہ سے دنیا میں حاصل تھا۔ چنانچ صراحنا فرمایا جارہا ہے۔

اِنَّهُ ظَنَّ اَنْ لَنْ يَنْحُوْرَ اوراس كافركوبيسب خوش اس ليے تقی كدوه گمان كرتا تھا كه وه عالم ارواح كو ہر گزنبيس لوٹے گا اورا عمال كا حساب نہيں و كيھے گا اس ليے كدو نيوى خوشى جب آخرت كے فم عالم ارواح كو اپنے لوٹے كے اعتقاد اور اس جہان ميں اعمال كى جزا بانے كے ساتھ لمتی ہے تو كا لعدم ہو جاتی ہے اور كيا ہی اچھا كہا گيا ہے۔

بيت

مرا در منزل جانان چه امن و عیش چوں ہر دم جرس فریاد بردارد که بر بندید محملها marfat.com

تغیر عزیزی مسید میران پاره

یعنی مجھےمحبوب کے گھر میں کیا امن اور چین حاصل ہو جبکہ ہروفت تھنٹی آ واز دیتی ہے کہسامان باندھ لو۔ نیز ریے کہ

عشرت امروز بے اندیشهٔ فردا خوش ست فکر شنبہ تلخ وارد جمعهٔ اطفال را

لینی آج کی عیش وعشرت کل کی فکر سے بغیرخوش کن ہے کیونکہ ہفتے کے دن کی فکر بچوں کے جمعہ کی چھٹی کے ذوق کو تلخ کر دیتی ہے لہٰذا مشرونشر اور جزا وحساب کو ثابت کرنے اور اس کا فرکے ممان کوردکرنے کے لیے فرمایا جارہا ہے۔

بکلی لینی بول نہیں جیسا کہ اس نے ممان کیا ہے بلکہ اس کا عالم ارواح پھر عالم حشر ونشر پھر حساب اور وزنِ اعمال کے مقام اور پھر جزا دینے کی جگہ جو کہ جنت اور دوزخ ہے میں لوٹنا ایک مطے شدہ حقیقت ہے اور اس کی دلیل یہ ہے کہ

اِنَّ دَبَّهُ کَانَ بِهِ بَوسِدٌ الشخیل اس کا پروردگاراس کے حال کو پیدائش کی ابتدا ۔
موت کی انتہا تک دیکھنے والا تھا کہ اس کی روح کہاں ہے آئی اور اس کا جہم کن کن چیزوں سے بیدا ہوا پھر اس نے کیا عقیدہ اور کیا عمل اختیار کیا اور اس کے دل میں کون می چیز جاگزیں ہوئی اور اس کی زبان سے کیا لگا اور اس کے ہاتھ سے کیا صاور ہوا اور موت کے بعد اس کی روح کہاں گئی اور اس کا جم کس کس جگہ بھر ااور جو ذات کی شخص کے حالات کی بعد اس کی روح کہاں گئی اور اس کا جم کس کس جگہ بھر ااور اسے اس کے اعمال کے بدلے تک اس قدر تگہبان ہو اس کے جم کے اجز اکے ساتھ جم کیا جا سکتا ہے تو اس کا بیگان کہ بینچایا جاتا ہے اور روح کو اس کے جم کے اجز اکے ساتھ جم کیا جا سکتا ہے تو اس کا بیگان بالکل بے جا ہے اسے باطل کرنے میں قتم اُٹھانے کی ضرورت ہی نہیں اور اگر کسی کوموت بالکل بے جا ہے اسے باطل کرنے میں قتم اُٹھانے کی ضرورت ہی نہیں اور اگر کسی کوموت کے بعد رونما ہونے والے ان عجیب حالات کے پیش آنے کے بارے میں اور بدن سے روح کے جدا ہونے کے بارے میں کوئی تر ددیا شک

فَلَا أَقْسِمُ بِالشَّفَقِ تَوْ مِن شَغْقَ كَا تَمْ أَنْهَا تَا ہوں اور شَغْقَ اس سرخی كا نام ہے جوك غرب كا فرب كا تاب كے بعد مغرب كے أفق پر نمودار رہتی ہے اور اس وقت تك نمازِ مغرب كا معرب كا معرب

وقت باتی ہے جیسا کہ امام شافعی اور صاحبین کا غد جب ہے اور اسی پر فتو کی ہے۔ (محقق علی الاطلاق ابن الہام نے فتح القدیر میں اس کا رد کیا ہے۔ شامی جام الاسام میں اختیار سے فتل کرتے ہوئے لکھا ہے کہ شفق سے مراد سفیدی ہے اور بید حضرت ابو بکر الصدیق معاذ بن جبل اور اُم المونین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہ مکا غد جب جبکہ امام بیہ بی نے شفق جمعنی مرخی صرف حضرت عائشہ من عرضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے۔ محمد محفوظ الحق غفرلہ)

اور حضرت امام اعظم رضی الله عنه بیابعض روایات میں منقول ہے کہ شفق اس سفیدی کا تام ہے جو کہ سرخی ختم ہونے کے بعد بیدا ہوتی ہے اور دیر تک رہتی ہے لیکن زیادہ تھے ہیہ ہے کہ حضرت امام اعظم رضی اللہ عنہ ہے اس مذہب سے رجوع فر مالیا ہے۔

(محقق ابن الہام كے شاگردرشيد علامہ قاسم نے تصحیح القدوري ميں فرمايا كه آپ كا رجوع ثابت نہيں ہے كونكه ائمه ثلاثه سے لے كرآج كل تمام اكابرين نے دونوں اقوال كى حكايت كى ہے۔ د كھے شامى جاس الاسا۔ محموظ الحق غفرله)

اور عربوں کا شفق کوایے شعروں میں سرخ رنگوں کے ساتھ تشبیہ دنے کے مقام میں استعال کرنا اس بات کی صرح دلیل ہے کشفق سے مراد سرخی ہے نہ کے سفیدی۔

اور وہ جوبعض علاء نے فر ہایا ہے کہ دن کی ابتدا علی مشرقی آفتی کی سرخی روزہ اور نماز
علی سے کی باب میں معتبر نہیں ہے بلکہ معتبر سفیدی ہے جے بی صادق کہتے ہیں تو چاہیے کہ
نمازِ مغرب کا وقت نماز صبح کے وقت کے برعس ہو کہ اس کی ابتدا غروب آفاب اور اس کی
انتہا مغرب کی سفیدی کے زائل ہونے سے ہوتی ہے۔ جیسا کہ نماز فجر کے وقت کی ابتدا
سفیدی کے طلوع سے ہاور اس کی انتہا طلوع آفاب سے ہے۔ اس کا جواب یہ ہے کہ
فجر کا وقت تارکی میں نور کے ظہور کا وقت ہے اور نور کے ظہور کی ابتدا صبح صادق کے طلوع
سے ہو کہ سفیدی ہے ہر عام خاص کو صوت ہوتی ہے کو تکہ پہلے رات کی تارکی میں تھے
جبکہ مغرب کا وقت اس نور میں جس میں پہلے تھے تارکی لاحق ہونے کا وقت ہے اور سرخ
شفتی کے جانے کے بعد عام خاص کی نظر میں تارکی میں کوئی اختیاز نہیں رہتا اور سرخ
شفتی کے جانے کے بعد عام خاص کی نظر میں تارکی میں کوئی اختیاز نہیں رہتا اور سرج ک

ہادراس دفت کوسفیدی آنے پرمقرر کرنا موزوں ہے اور دونوں وقتوں میں فرق نور پر تار کی کو پہلے لانے اور اس کے عکس کے ساتھ ہے اس لیے کہ حکمت کا قاعدہ ہے کہ دو ضدوں میں سے ایک کے ساتھ سے کا متاثر ہونا دوسری صند کے احساس کی سرعت اور قوت کا موجب ہوتا ہے اور اس صند کے اثر کی کمزوری محسوس ہوتی ہے۔ واللہ اعلم

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ رات كَلْتُم ہے اور اس كى جے رات جمع كرے انبانوں اور جانبوروں ہے اس ليے كہ جانداركى بميشدكى عاوت ہے كہ دن جس روزى كى تلاش كے ليے اپنر نكلتا ہے اور بركوئى كى طرف جاتا ہے۔ اور يوں سب بجيل جاتے بيں اور حب رات آتى ہے اس كے تمام بہ شتے داراور تعلق والے ايك گھر ميں جمع ہو جاتے بيں اور جب رات آتى ہے اس كے تمام بہ شتے داراور تعلق والے ايك گھر ميں جمع ہو جاتے بيں اور ل كر رات كر ارت بيں تو كويا رات متفرق افراوكو جمع كرنے والى ہيں جمع ہو جاتے بيں اور ل كر رات كر ارت بيں تو كويا رات متفرق افراوكو جمع كرنے والى ہے اس كے علقے ، تر اور كى عمامت اور رقص اور شراب خورى كى محفليں سب كى سب رات كو منعقد ہوتى بيں اور ان كے ليے اجتماع محقق ہوتا ہے۔

وَالْقَمَرِ إِذَا تُسَقَ اور جائد كل تم جب اس كانور بورا ہو جائے اور شام سے مبح تك رات كى تار كى كو در كر اور اجنبيت كے يردے كو أشائد

موت کے بعد آ دمی کی تین حالتیں

اور یہ بینوں چیزیں یعنی شغق اعمری رات اور چیکیا چا عمان بین حالتوں کا نمونہ ہیں جو کہ مرنے کے بعد جو کہ کو یا زعدگی کے آفاب کے غروب کا نمونہ ہے آدی پر طاری ہوں کی ۔ بہلی وہ حالت جو کہ صرف روح کے بدن سے جدا ہونے کی وجہ نظام ہوگی کہ گزشتہ زعدگی کا بچھاٹر اور بدن اور ابنائے جنس میں سے شناساؤں کے ساتھ تعلق کی اُلفت باتی ہے اور وہ وقت کو یا دغوی زعم گی اور قبر کی دنیا میں بھہ وجوہ منہک ہونے کے درمیان برزخ ہے کہ اس میں بچھ یہاں کی اور بچھوہاں کی چیزیں جیں اور بعینہ شغق باتی رہنے کے وقت کی طرح ہے کہ اس میں بچھ یہاں کی اور بچھوہاں کی چیزیں جیں اور بعینہ شغق باتی رہنے کے وقت کی طرح ہے کہ ابھی مخلوفات کے کام کائ اور ان کی آ مہورفت منقطع نہیں ہوئی اور سب جان طرح ہے کہ ابھی محلوفات سے کام کائی اور ان کی آ مہورفت منقطع نہیں ہوئی اور سب جان دار جو دار حساس اور متحرک ہیں اور دن کے باتی ماعروف میں مصروف۔

میت کے لیے خیرات ٔ فاتحہ اور ایصالِ تو اب

اور یہ کچھ نیکیوں اور بُرائیوں کی جزا کے ظاہر ہونے کی حالت ہے اور مرنے والوں

کے لیے زیموں میں مدواس حالت میں نبتاً جلد پہنچی ہے اور مرنے والے اس طرف سے
امداد ملنے کے منتظر ہوتے ہیں اور وہ یوں گمان کرتے ہیں کہ ابھی ہم زندہ ہیں اس لیے
حدیث شریف میں قبر کے حالات کے بارے میں واقع ہے کہ وہاں مسلمان کہتا ہے کہ دعونی
اصلی مجھے چھوڑ دو تا کہ میں نماز پڑھلوں۔ نیز وارد ہے کہ مرنے والا اس حالت میں اس
ورخ والے کی طرح ہوتا ہے جو کہ فریادری کا انظار کرتا ہے اور اس وقت صدقات و ما کیں
اور فاتح شریف بہت کارآ مد ہوتی ہے اور یہی وجہ ہے کہ لوگ ایک سال تک خصوصاً چہلم تک
موت کے بعد اس متم کی امداد میں بہت کوشش کرتے ہیں اور مرنے والے کی روح بھی موت
کے تریب خواب میں اور عالم مثال میں زندوں سے ملاقات کرتی ہے اور اپنا مائی الفیمیر بیان

حضرت بریلوی رحمة الله علیه کے رسالہ الحجة الفائحہ اور اتیان الارواح کا مطالعہ کریں۔ نیز جاء الحق جلدا وّل از حکیم الامت مولا نامفتی احمہ بارخان صاحب گجراتی ہے استفادہ کریں)

دوسری حالت وہ ہے جو کہ دنیوی زندگی سے بالکل منقطع ہونے کے بعد رونما ہوتی ہے ادراسے نیکی اور بدی نے اپنی کمائی ہوئی کیفیات میں بہت زیادہ استغراق حاصل ہوتا ہے اوراس کی ادراک وتصرف کرنے والی تو تیں اس جہان سے ٹوٹ کراس جہان کی طرف متوجہ ہو جاتی ہیں اس کی معنوی حس و حرکت اس جہان سے بالکل ختم ہو جاتی ہے اور یہ حالت رات کی تاریکی کی مثل ہے جو کہ شفق کے زائل ہونے کے بعد بچوم کرتی ہے اور لوگوں کو نینداور حواس و حرکات معطل ہونے کی کیفیت لاحق ہوتی ہے اور وہ دن کی معروفیات سے بالکل غافل ہو جاتے ہیں۔ ہاں وہ معروفیات بدن کے ظاہر سے نتقل ہوکر باطن میں جمع ہو جاتی ہیں اور روح رنگار تگ شکلوں میں ان کا مطالعہ کرتی ہے اور لذت و تکلیف حاصل کرتی ہے اور یہ حالت مرنے والے عام لوگوں کی ہے۔

اوليائے اللہ سے بعداز وصال حاجت روائی اور

مشكل كشائى كے ليے استمد اداورنسبت اولىي كابيان

اور اولیائے اللہ میں سے بعض خاص اولیاء کو جو کہ انسانوں کی پھیل اور انہیں رشد وہدایت دینے کا آلہ بن محے جیں اس حالت میں بھی و نیا میں تصرف کرنے کی طاقت دی گئی ہے اور ان کی قوتوں میں کمال وسعت کے پیش نظر ان کا استغراق انہیں اس طرف متوجہ ہونے سے نہیں روکتا اور اولیی مشرب والے حضرات ان سے باطنی کمالات حاصل کرتے جیں اور حاجات اور مقاصد والے ان سے اپنی مشکلات کاحل ما تکتے اور پاتے جیں اور حاجات اور مقاصد والے ان سے اپنی مشکلات کاحل ما تکتے اور پاتے جیں اور اس وقت ان کی زبان حال ان نغمات سے معمور ہوتی ہے۔

من آیم بجا گرتو آئی به تن

(اقول وبالله التوفيق حضور غوث الثقلين محبوب سبحاني حضرت شيخ ابومحر محى الدين سيد عبدالقادر جيلاني قدس سره اور خواجه خواجهان عطائے رسول حضرت خواجه معين الدين چشتی اجميری رحمة الله عليه مرف ان اکابرين من ہے ہی نہيں بلکه اس ملح کے مقربین کے سرتاج اسلام کے مقربین کے سرتاج مسلم کے مقربین کے سرتاج مسلم کے مقربین کے سرتاج اسلام کے مقربین کے سرتاج مسلم کے مقربین کے سرتاج مقربین کے سرتاج مسلم کے مقربین کے سرتاج میں ہے۔ ہی نہیں بلکہ اس ملم کے مقربین کے سرتاج مقربین کے سرتاج میں ہے۔ ہی نہیں بلکہ اس ملم کے مقربین کے سرتاج میں ہے۔ ہی نہیں بلکہ اس ملم کے مقربین کے سرتاج میں ہے۔ ہی نہیں بلکہ اس ملم کے مقربین کے سرتاج میں ہے۔ ہی نہیں بلکہ اس ملم کے مقربین کے سرتاج میں ہے۔ ہی نہیں بلکہ اس ملم کے مقربین کے سرتاج میں ہوئے کے مقربین کے سرتاج میں ہوئے کے مقربین کے سرتاج میں ہوئے کے سرتاج میں ہوئے کے سرتاج کو سرتاج کے سرتا

اور مقدّا بی لہذا ان سے استمد او یا حضرت شیخ عبدالقاور جیلائی هیئا الله مدو باذن الله اور مقدّا بی البندا ان کشی الله یا چشتی کہنا اور ورد کرنا درست ہے کہ مفسر علام کے مطابق ایسے اکابرین سے المی حاجات اپی مشکلات کاحل ما تکتے بھی بیں اور پاتے بھی بیں۔ فللله الحمد وهو ولی الهدایة والتوفیق محموظ الحق غفوله)

تیری وہ حاجت جو کہ ایام بیش کے چاند کی طرح حشر ونشر کے بعد ظاہر ہوگ کہ

تاریکی کے پردے کو دُور کر کے ان کے اجھے یُرے اعمال کو کی طریقوں سے ظاہر کرے گ

اور ہر خض نفع بخش اور نقصان دہ وصت وشمن اور زہر و تریاق میں امتیاز کرے گا اور ای

حالت میں اعمال ناموں کا دیا جانا اجھے یُرے اعمال کا مختلف صورتوں میں ظاہر ہوتا اعمال کا

وزن نیکی بدی کا حماب اور دوسرے بہت سے واقعات رونما ہون گے اور اس حالت کی انتہا

ایک اور زندگی ہے جو کہ اس جہان کی زندگی سے زیادہ کا لی ہے لیکن چونکہ وہ زندگی بدی نہیں ایک اور زندگی ہے جو کہ اس جہان کی زندگی سے زیادہ کا لی ہے کی مقام پر لایا جائے بلکہ وہ

زندگی نے بدلتے ہوئے حالات کے قبلے سے بھی نہیں کہ اسے اس حالات کے بیان کے

مقام میں لایا جائے اس بناء پر انہیں تمن قسموں پر اکتفاء فر مایا گیا جس مضمون کو ثابت کرنا

متعام میں لایا جائے اس بناء پر انہیں تمن قسموں پر اکتفاء فر مایا گیا جس مضمون کو ثابت کرنا

آئٹر کئٹن طَبَقًا عَنْ طَبَقِ تم ضرور ایک حال سے گزر کر دوسرے حال پر پہنچو کے
بعن اس دنیا کے بعدتم پہلے ایک حال پر رہو کے جسے تم رجوع الی اللہ بمجھو کے۔ اس کے بعد

اس حالت ہے گزر کر ایک اور حالت میں پہنچو کے اور جان لو کے کہ رجوع کی حالت ہی
ہے۔ اور پہلی حالت تو اس حالت کی تمہید تھی۔ علی فرا القیاس یہاں تک کہ جنت اور دوز خ
میں جگہ یاؤ اور سفرختم ہو جائے اور اس کے بعد ہمیشہ کے لیے قیام کرو۔

تغیر عزیزی بیست مشہور ہیں اور عرف کی زبان میں طبقات عمارات کا لفظ رائج جیسا کہ آسان کے سات طبق مشہور ہیں اور عرف کی زبان میں طبقات عمارات کا لفظ رائج

اور چونکہ ہردن رات اور ہرسال ومہینہ میں ان انقلابات کے دلائل ہرخاص و عام کی نظر میں موجود ہیں' موت کے بعدان حالات کے پیدا ہونے پر کافروں کے ایمان نہلانے اور یقین نہ کرنے کوغیر معقول قرار دیتے ہوئے ارشاد فرمایا جارہا ہے کہ

فکا کھٹ لا یو میٹون ان کفارکو کیا ہے کہ اس واضح بیان اور روش مثالوں کے باوجود ایمان نہیں لاتے اور یقین نہیں کرتے کہ ہمیں موت کے بعد ایک لوٹنا اور ایک سفر در پیش ہے ایمان نہیں کرتے اس کے لیے سفر خرج تیار نہیں کرتے اور اس جہان کے نفع و اور اس سفر کاغم نہیں کرتے اس کے لیے سفر خرج تیار نہیں کرتے بور اس جہان کے نفع و نقصان کے ہوش نہیں کرتے جو کہ اس سفر کی انتہا ہے۔

اوربعض مفسرین نے تقو گئین طبقاً عن طبق کوایک اور معنی پرمحول کیا ہے جس کی اس مقام کے ساتھ اتنی مناسبت نہیں ہے اور اگر چدوہ امر واقعی ہے اور وہ یہ ہے کہ یہ خطاب ہمارے رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی اُمت کو ہے اور مراد جمز کنا ہے بعنی تم بھی گنا ہوں کے ایک طبقے کے بعد دو سرے طبقے کے مرتکب ہو مے بعنی پہلی اُمتوں کی طرح کہ انہوں نے جو مغیرے اور کہیرے گناہ اور الحاد و بدعت کی جو شمیں اپنائی تھیں 'تم بھی وہی کرو گے۔ بنا نہ اور الحاد و بدعت کی جو شمیں اپنائی تھیں 'تم بھی وہی کرو گے۔ بنا نچہ صدیث صبح میں وارد ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی اُمت سے فزمایا کہ تم بھی پہلے لوگوں کے تنبع میں بعینہ وہی کرو مے جو انہوں نے کیا بالشت کے برابر بالشت اور گز کے بہلے لوگوں کے تنبی اگر پہلوں نے راہے حق تو تم میں بھی بعض لوگ کہ بالشت بھر دُور کہ اور گا کہاں سے بھی بعض لوگ سے ایک گروہ ای قدر دُور ہوگا یہاں تک کہ اگر پہلوں میں سے کمی بد بخت نے اپنی ماں سے ایک گروہ ای قدر دُور ہوگا یہاں تک کہ اگر پہلوں میں سے کمی بد بخت نے اپنی ماں سے تھا کھا کہ اُن کا ارتکاب کیا ہوگا ہوا ہو تم میں سے بھی بعض لوگ ایبا کریں میں واض ہوا ہو تم میں سے بھی کوئی ایس سوراخ میں واضل ہوا ہے 'تم میں سے بھی کوئی ایس سوراخ میں واضل ہوا ہو 'تم میں سے بھی کوئی ایس سوراخ میں واضل ہوا ہو ۔ م

نیز سے سے کے معتون اللہ اور حقوق العباد کو توڑنے 'رسول علیہ السلام marfat.com Marfat.com اور قیامت کو جھٹلانے اور دوسرے گناہوں کے مرتکب ہونے بھی تمہارا حال بعینہ پہلی اُمتوں کے مطابق اور موافق ہے جس طرح کہ ایک جوتا دوسرے جوتے کے مطابق ہوتا ہے کہ دونوں کے درمیان ایک جو کے برابر بھی فرق نہیں ہوتا البتہ تم چند چیزیں زیادہ کرو مے جو کہ پہلی اُمتوں میں نتھیں۔

وه گناه جو که بهلی اُمتوں میں ن<u>ہ تصاس اُمت میں ہیں</u>

جیے آزادلوگوں کو بیچنا ہے بینی جو مخص آزاد ہواور وہ کسی کا غلام یا کنیز نہیں اے مراور حلے سے ساتھ بیچنا اور اس کی قیمت ہضم کرنا سخر بازی یعنی دو عورتوں کی باہم شہوت رائی۔ رسول علیہ السلام پر ایمان لانے کا دعویٰ کرنے کے باوجودان کی اولاد کوئل کرنا کہ بیکام کس امت میں نہیں ہوا دوسرے کفارنے اگر چہ اپنے رسولوں علیہم السلام کوشہید کیا ہے اور انہیں ستایا ہے کین ایمان کا دعویٰ کے بغیر کفر کی حالت میں۔

اور بعض قاریوں نے آئٹ کین کو باکی زیر سے پڑھا ہے اور مفسرین نے اس کے معنوں میں یوں کہا ہے کہ یہ حضرت رسول کریم صلی اللہ علیہ وہلم سے خطاب ہے اور اس سے معراج کا وعدہ مراد ہے کہ آپ براق پرسوار ہوکر کیے تعدد گرے آسان کے ساتوں طبقات سے ضرور گزریں مے اور یہ معنی بھی آیات کے سیاق وسیاق کے ساتھ بالکل مناسبت نہیں رکھتا بلکہ باکی زیرکی صورت میں تی آ دم میں سے برکسی سے خطاب ہے جیسا کہ ضمہ کی صورت میں تی آ دم میں سے برکسی سے خطاب ہے جیسا کہ ضمہ کی صورت میں تی آ دم میں سے برکسی سے خطاب ہے جیسا

ببرحال ظاہر معنی وی ہے جو کہ ذکر کیا جا چکا ہے اور مقعد کفار کو ڈائمنا ہے جو کہ سنر
آخرت کے نمونوں کو دیکھنے کے باوجود اس سنر کا انکار کرتے ہیں اور وہاں کے حادثے کے حالات پر ایمان نہیں لاتے اور اگر ان کی عقل خود بخو دان حالات کی دریافت تک نہیں پہنچی مقی تو جا ہے تھا کہ قرآن پاک کے بیان سے فاکدہ حاصل کرتے لیکن ہے آخرت پر ایمان لانے سے اتنے دُور ہیں کہ ان مفاین کوقرآن پاک ہیں شن کر بھی نہیں مائے۔

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرُانُ اور جب ان بِرقر آن بِرُ ما جاتا ہے اور اس کی عاجز کر ویے والی عبارت من کر حیرت میں ڈوب جاتے ہیں لیکن عاجزی اختیار نہیں کرتے اور e الی عبارت من کر حیرت میں ڈوب جاتے ہیں لیکن عاجزی اختیار نہیں کرتے اور marfat.com

تغیر مزیزی مست میست (۲۱۲) میست تیموال یاره

جب مسلمان اپی عاجزی کے اظہار کے لیے بحدہ کرتے ہیں وہ

لایک بین میرہ نہیں کرتے حالانکہ حضرت حق جل شانہ جو کہ اعجاز پر بمنی قرآن نازل فرمانے والا ہے کے لیے بحدہ کسی آئین اور مذہب میں ممنوع نہیں ہے اور وہ صرف نہ ماننے اور بحدہ نہ کرنے یر ہی اکتفائیس کرتے۔

بَلِ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا یُگذِبُوْنَ بلکہ جولوگ کافر ہیں قرآن پاک کا انکار کرتے ہیں اگر چدزبان سے نہیں کہتے لیکن حق تعالی ان کے دِلوں میں موجود انکار کو جانتا ہے۔

وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ اورالله تعالى است خوب جانبا ہے جو پچھوہ (باطن) کے ظرف میں رکھتے ہیں لیمی تکذیب و انکار کے علاوہ احکامِ خداوندی کی مخالفت اس کی نافر مانی و ندگی کی مسرت اور خوشی ہے گمان کہ ہمیں آخرت کا سفر در پیش نہیں ہے تافر مانی و ندگی کی مسرت اور خوشی ہے گمان کہ ہمیں آخرت کا سفر در پیش نہیں ہے گناہوں اور شہوتوں کی محبت اور اپنے رسل علیم السلام کے ساتھ مروفریب سے جو پچھان کے باطن کے ظرف میں بحرایز اے اللہ تعالی سے یوشیدہ نہیں ہے۔

اور یُوعُونَ کے لفظ میں اس طرف اشارہ ہے کہ یہ ناعاقبت اندیش لوگ ان فتیج چیزوں کو پوری احتیاط کے ساتھ اپنے باطن کے ظرف میں سنجالے ہوئے ہیں حالانکہ ضرورت کے وقت جب یہ موذی چیزیں اس برتن سے باہر آئیں گی تو انہیں معلوم ہوگا کہ ہم نے کیا غلطی کی اور رات کی تاریکی میں پھولوں کا ہار بچھ کرسیاہ سانپ کو گردن میں ڈال لیا اور کیا ہی اور رات کی میں پھولوں کا ہار بچھ کرسیاہ سانپ کو گردن میں ڈال لیا اور کیا ہی ایمانی ایمانی کی اور رات کی تاریکی میں پھولوں کا ہار بچھ کرسیاہ سانپ کو گردن میں ڈال لیا اور کیا ہی ایمانی ایمانی ایمانی ایمانی کی اور رات کی میں پھولوں کا ہار بچھ کر سیاہ سانپ کو گردن میں ڈال لیا اور کیا ہی ایمانی ایمانی کی اور رات کی میں کی اور رات کی میں پھولوں کا ہار بچھ کر سیاہ سانپ کو گردن میں ڈال لیا اور کیا تھا کہا گیا ہے۔

بوفت مبح شود بچو روز معلومت که باکه بانعهٔ عشق در شب دیجور

یعیٰ مبح کے وقت بھتے روز روش کی طرح پنتہ چل جائے گا کہ اندھیری رات میں تو نے کس سے عشق کیا۔

نیکن جب بیہ جاہل لوگ ان بُرائیوں کو اچھائیاں خیال کرتے ہیں اور آئندہ نفع کے لیے جمع کیے ہوئے خزانے کی طرح پانی اور مٹی کے برتنوں میں نہیں بلکہ جان و ول کے برتنوں میں نہیں بلکہ جان و ول کے برتنوں میں ان کی حفاظت کرتے ہیں تو آپ کو بھی چاہیے کہ ان کے باطل اعتقاد کے مطابق برتنوں میں ان کی حفاظت کرتے ہیں تو آپ کو بھی چاہیے کہ ان کے باطل اعتقاد کے مطابق

تحكم واستهزاء كے طریقے ہے گفت وشنید كریں۔

فَبَشِرُهُمْ بِعَذَابِ آلِيْمِ تو آپ انہیں ان کے دنیوی سرور اور خوش وقتی کے بدلے وردتاک عذاب کی بشارت دیں اور یہاں بشارت کا لفظ ڈرانے دھمکانے کے لیے استعارہ تہکم ہے یعنی ان سے استہزاء کرنے کے لیے عاربیۂ لیا گیا ہے۔

سجدة تلاوت كے وجوب كابيان

سجدہ کیا ہے۔ چٹانچ دھزت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ بھی اس جماعت میں داخل تھے اور ظاہر ہے کہ جب اس آیت میں ان کفار کی فدمت فر مائی گئی جو کہ بحدہ نہیں کرتے تو ایمان والے کے لیے لازمی چاہیے کہ کفار کی مخالفت کے طور پر بجدہ کرے اور قرآن پاک میں جتنی بھی آیات بحدہ جس یا تو ان میں بحدہ ترک کرنے پر کفار کی فدمت ہے یا بجدہ کرنے کی وجہ ہے ایمان والوں اور فرشتوں کی تعریف لیکن بید لازم بھا اس طرف سے ہے یعنی قرآن پاک میں جو کورہ بھی ہے اس می کی آیات میں ہے نہ کہ اس کے برعش اس لیے کہ قرآن پاک میں کئی محدہ بھی ہے اس می کی آیات میں ہے نہ کہ اس کے برعش اس لیے کہ قرآن پاک میں کئی مقام جیں جہاں اس فتم کی آیات میں ہے نہ کہ اس مجدہ نہیں ہے اور ای لیے کہا گیا ہے کہ مقام جیں جہاں اس فتم کی آیات آئی ہیں اور وہاں بحدہ نہیں ہے اور ای لیے کہا گیا ہے کہ آیات بعدہ تو قیفی جین قبل تیا ترتیس ہیں۔

سورة البروج

سورۃ البروخ کی ہے اس کی بائیس (۲۲) آیات ایک سونو (۱۰۹) کلمات اور جارسو تمیں (۲۳۰) حروف ہیں۔

سورة الانشقاق يدرابطي وجه

اوراس سورۃ کے سورۃ الانشقاق کے ساتھ رابطے کی دجہ یہ ہے کہ اس کی ابتدا میں آسان کا پھٹنا بیان کیا جو کہ قیامت کے دن ہوگا جبکہ اس سورۃ میں آسان کا دنیا میں بارہ (۱۲) مسادی قسموں میں منتشم ہونا بیان کیا گیا ہے جس میں سے ہرا یک کا تھم جدا ہے اور اس سورۃ کی انتہا میں بکل الّذِیْن کَفَدُوا یُکَیْبُونَ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا یُوعُونَ واقع ہے جبکہ اس سورۃ کی انتہا میں بکل الّذِیْن کَفَدُوا فی تکیٰدیْب وَاللّٰهُ مِن وَدَائِعِهم مُومِعُط ہے اس سورۃ کے آخر میں بلل الّذِیْن کَفَدُوا فی تکیٰدیْب وَاللّٰهُ مِن وَدَائِعِهم مُومِعُط ہے اور اس سورۃ کے آخر میں بلل الّذِیْن کَفَدُوا فی تکیٰدیْب وَاللّٰه مِن وَدَائِعِهم مُومِعُط ہے اور اس سورۃ کے ساتھ اتحادر کھتے ہیں جیسا کہ پوشیدہ کمیں ہے اور اس سورۃ کے وسط سورۃ کے وسط میں جنتوں اور جہنیوں کے حال کا ذکر ہے جس طرح کہ اس سورۃ کے وسط میں جنتوں اور جہنیوں کے حال کا ذکر ہے جس طرح کہ اس سورۃ کے وسط میں جنتوں اور جہنیوں میں پوری مناسبت حاصل ہوگئی۔

<u>سبب نزول</u>

اور اس سورة کے نزول کی وجہ بیتھی کہ کفارِ مکہ مسلمانوں کو اسلام کی وجہ ہے قتم قتم کی marfat.com

تكاليف اورؤ كه پہنچاتے تھے اور مسلمان بيشكايت حضور سلى الله عليه وسلم كى باركاء بيكس پناه میں عرض کرتے اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے کہ ایک وفت آئے گا کہ اللہ تعالیٰ تنہیں ان لوگوں ہے بدلہ لینے کی طاقت بخشے گا اور جوسلوک وہ تمہارے ساتھ کرتے ہیں'تم ان کے ساتھ کرو گے۔ کفار نے جب بیہ ماجرا سنا تو طنز اور نداق کرنے لگے اور کہنے لگے کہ ان کمزور' ذلیل اور بے مایہ لوگوں کے لیے کیا امکان ہے کہ ہم سے بدلہ لینے کی طافت حاصل کریں اگر الله تعالیٰ کے نزویک ہاری عزت اور ان کی ذلت ٹابت نہ ہوتی تو ہمیں ان پرغلبہ کیوں دیا جاتا ۔ تو معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کا انعام ہروفت اور ہرآن میں ہمارے نصیب ہے جبکہ ذلت عاجزی اور رسوائی ان کے نصیب ہے۔اللہ تعالیٰ نے کفار کی اس گفتگو کے جواب میں یہ سورۃ نازل فرمائی اور اس سورۃ کی ابتدا میں آسان کی قتم اُٹھائی جس کے بارہ (۱۲) برج ہیں اور ہر برج جہان اور جہان والوں کے انقلاب کا موجب ہوتا ہے کئی چیزیں جو کہ ایک يرج كي تحكم كے مطابق بہت عزيز تھيں دوسرے برج ميں خوار وليل اور بے وقعت ہوجاتی میں جنیها که گرمیوں میں پشینه کی جا در اور کوٹ اور سردیوں میں محندا یانی کذیر شربت اور برف يهال سے جاہيے كدوه حالات كے بدل جانے كا سراغ لگائيں اور اپنى عزت ترمغرور نه بوں اورمسلمانوں کی کمزوری برطعن اور نداق نہ کریں کیونکہ وہ ہرسال مختلف موسموں میں اس مم کے انقلاب کا مشاہدہ کرتے ہیں۔

تغیر مزیزی بیست (۲۲۰) بیستوال ماره

برجول کے احکام کے انقلاب کی وجہ سے خود بھی انقلاب پذیر ہوجاتے ہیں۔ بیسم اللّٰہ الرَّحْمانِ الرَّحِیْمِ

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُورِةِ جِ برجول والے آسان کی قتم! اور ہربن نیک بدی اور سعادت و نوست میں جدا تھم رکھتا ہے اور احکام کے مختلف ہونے کے باوجود چکر کے ساتھ ایک دوسرے کے پیچھے آتے ہیں۔ ایک مدت تک اس کا تھم دنیا میں جاری ہوتا ہے چرزائل ہو جاتا ہے پھرلوٹنا ہے۔ پس ایک شخص کے حق میں ایک حالت کے ہونے اور دوسرے کے حق میں ایک حالت کے ہونے اور دوسرے کے حق میں ایک حالت کے ہونے اور دوسرے کے حق میں ایک حالت کے بدموجودہ حالت معدوم ہو میں ایک اور وہ معدوم حالت معدوم ہو جائے اور وہ معدوم حالت مجرآ جائے۔

برجول كى حقيقت

اور برجول کی حقیقت ہے ہے کہ سورج کے گھو بینے کی وجہ ہے آسان میں دائرہ بیدا ہو
جاتا ہے جے دائرۃ البروج کہتے ہیں اور سورج اس دائرے کو ایک سال کی مدت میں پورا کرتا
ہے جب اس دارے کو بارہ (۱۲) برابر قسموں میں تقسیم کریں ہوشم کا نام برخ رکس تو بارہ
(۱۲) برخ پیدا ہوں اور کی بیشی کے بغیراس دائرے کو بارہ (۱۲) قسموں میں تقسیم کرنے کی
وجہ کہ دربار خذاوندی سے تمام بنی آدم کے ذہنوں میں بہی ڈالا گیا اور ہندووں فارسوں
بونانیوں عربیوں فرنگیوں اور دیگر اقوام کے تمام گروہ اس پر شخق ہیں۔ یہ ہے کہ جب فلک
کی منزلوں میں سے ہرمنزل میں سورج کے تغیر نے کی مدت کے لیے ایک موسم مقرر کیا گیا
ہے کہ ان موسموں کی ہوا اور خاصیت ایک دوسرے سے مختلف ہے جسے موسم رئیج اور خریف
اور گری اور سردی اور ہرموسم کی ایک ابتدا ورمیان اور ایک انتها ہے کہ ان حالات میں اس
اور گری اور سردی اور ہرموسم کی ایک ابتدا ورمیان اور ایک انتها ہے کہ ان حالات میں اس
موسم کا حکم قوت اور ضعف میں مختلف ہو جاتا ہے ناچار اس بناء پر فلک کو بارہ (۱۲) قسموں
میں تقسیم کردیا گیا اور ہردھم کا نام برخ رکھا گیا ہے۔

میااور ہرفتم کے لیے ایک برج مقرر کیا گیا ہے اور اس برج میں ستاروں کے جمع ہونے کی وجہ سے جوثکل پیدا ہوئی اس کے مطابق اس برج کا نام رکھا گیا جیے حمل ٹور'جوزا' سرطان' اسد' سنبلہ' میزان' عقرب' توس' جدی' دلواور حوت یعنی مینڈھا' بیل' بکرا' کیکڑا' شیر' گیہوں کا خوشہ' تراز و' کمان' بزغالہ' ڈول اور مجھلی خوشہ' تراز و' کمان' بزغالہ' ڈول اور مجھلی

اوران برجوں میں سے ہرایک کے لیے حرکت آفاب کے دنوں کی مقدار کو تمیں
(۳۰) قیموں میں تقسیم کیا گیا ہے اوراس برج کی ہر شم کو درجہ کا نام دیا گیا ہے اور ہر درج کو ساٹھ (۲۰) قیموں میں تقسیم کیا گیا ہے اور اس درج کی ہر شم کو دقیقہ کہتے ہیں کہ ہندی زبان میں اس مقدار کے گزرنے کی مدت کو گھڑی کہتے ہیں اور ہر دقیقے کو ساٹھ (۲۰) قیموں میں تقسیم کرکے ٹانیہ کہتے ہیں جے ہندی زبان میں بل کہتے ہیں اور ہر ثانے کو ساٹھ (۲۰) قیموں میں تقسیم کرکے ٹالشہ کہتے ہیں جے ہندی زبان میں چین کہتے ہیں۔ علی ساٹھ (۲۰) قیموں میں تقسیم کرکے ٹالشہ کہتے ہیں جے ہندی زبان میں چین کہتے ہیں۔ علی ساٹھ (۲۰) قیموں میں تقسیم کرکے ٹالشہ کہتے ہیں جے ہندی زبان میں چین کہتے ہیں۔ علی ساٹھ (۲۰)

۔ اور یہ بارہ (۱۲) برج شکل اور احکام میں آپس میں بالکل مختلف ہیں۔ پس حمل ایک مینڈ ھے کی شکل میں ہے جس کا سرمغرب کی طرف ہے اور دُم مشرق کی طرف اور منہ پیچھے کی طرف کر کے کسی چیز کو دیکھتا ہے اور جو ستارے اس کی شکل میں واقع ہیں' تیس طرف کر کے کسی چیز کو دیکھتا ہے اور جو ستارے ہی اس کی شکل میں اور پانچ دوسرے ستارے بھی اس کی شکل کے ساتھ ایک تعلق رکھتے ہیں اگر چیشکل سے باہرواقع ہوئے ہیں۔

تورایک بیلی شکل میں ہے جس کا سرشرق کی طرف اور دُم مغرب کی طرف ہواور اور کی طرف ہے اور اس کی شکل بتیں (۳۲) ستاروں سے مرکب ہے اور دوسرے ستارے جیسے عین الثوراور ثریا جو کہ آگور کے خوشے کی شل ہے اور پھاور ستارے بھی اس کی شکل سے تعلق رکھتے ہیں اگر چہ شکل سے تعلق رکھتے ہیں اگر چہ شکل سے باہر ہیں۔

اور جوزا دو آ دمیوں کی شکل میں ہے جو کہ ایک دوسرے سے ملے ہوئے اور چینے اور چینے ہوئے اور چینے ہوئے ہوئے اور چینے ہوئے ہیں اور ہوئے ہیں اور ہوئے ہیں اور ہوئے ہیں اور ہیں جن کے سرشال اور مشرق کی جانب اور پاؤں جنوب اور مغرب کی طرف بیں اور سات ستارے باہر بین ذراع اور اس برج کی شکل میں اٹھارہ (۱۸) ستارے داخل بیں اور سات ستارے باہر بین ذراع اور

تغیر عزیزی میسی تیسوال پاره مقعه وغیر جمار

اورسرطان ایک معروف جانور کی شکل پر ہے جسے فاری میں خرچنگ اور ہندی میں کیکڑا کہتے ہیں اور اس کی شکل نوستاروں سے مرکب ہوئی ہے۔

اور اسد شیر کی شکل میں ہے جو کہ ستائیں (۲۷) ستازوں ہے مرکب ہے اور پچھ دوسرے ستارے جیسے قلب الاسداور زہرہ بھی اس ہے تعلق رکھتے ہیں۔

اورسنبله ایک عورت کی شکل میں ہے جس کے ہاتھ میں ایک خوشہ ہے اس عورت کا سر اسد کی دُم کی طرف اور اس کے یاوک میزان کی طرف ہیں اور چیبیں (۲۷) ستاروں سے مرکب ہے اور پچھ دوسر سستار ہے بھی اس کے ساتھ تعلق رکھتے ہیں اور اس کے خوشہ والے ہاتھ کے متعمل ایک سیارہ ہے جے ساک اغرل کہتے ہیں۔

اورمیزان تراز و کی صورت میں آٹھ ستاروں سے مرکب ہے۔

اور عقرب بچھو کی مورت میں ہے اکیس (۲۱) ستاروں سے مرکب ہے اور قلب العقر ب اکلیل اور چند دوسر سے ستار ہے بھی اس سے تعلق رکھتے ہیں۔

ا اور توس ایک مرد کی شکل میں ہے جس کے ہاتھ میں کمان اور تیر ہے اور اکیس (۲۱)ستاروں سے مرکب ہے۔

اور جدی ایک برغالہ بینی بکری کے بیچے کی شکل میں ہے اٹھائیس (۱۸۹) ستاروں ہے مرکب ہے۔سور ذائح بھی اس کے متعلق ہے۔

اور دلوبھی ایک ایسے آ دمی کی صورت میں ہے جو ڈول کو کنویں سے نکال کر ہاتھ میں کی گڑ کر اس ڈول کو اُلٹا کیے ہوئے پانی زمین پر گرا رہا ہے اور اس کی شکل بیالیس (۲۲) ستاروں سے مرکب ہے۔

اورحوت دو مجھلیوں کی شکل میں ہے جو کہ آپس میں پشت اور پیٹ چمٹائے ہوئے

'' این ان میں سے ایک کوسمک مقدم کہتے ہیں جو جنوب کی طرف ہے اور بیدونوں مجھلیاں

'' سناروں سے مرکب ہیں ہیہ برجوں کی شکلوں کے مختلف ہونے کا بیان ہے۔

'' احکام کے مختلف ہونے کا بیان تو حمل مرت کا محمر زہروکا وہال اور

آ فآب کا شرف ہے۔ انیسویں (۱۹) درجے میں ہے ادر زحل کا ہبوط ہے۔ ہبوط کس ستارے کا ایسے برج میں آنا ہے جس کا اثر نحوست ہواور حمل کو برج ندکر نہاری لیعنی دن والا گرم خشک صفراوی برج منقلب ربیعی اور شالی کہتے ہیں۔

اور تورز ہرا کا گھر' مریخ کا وبال' قمر کا شرف ہے۔ تبسرے درجے میں ہے اور اسے مؤنث' کیل لعنی رات والا سرد' خشک سوداوی اور ثابت شار کرتے ہیں۔

اور جوزا عطارد کا کھے' مشتری کا وہال راس کا شرف اور ذہب کا ہبوط ہے' اسے مذکر' نہاری' گرم وتر' دموی اور دوجسموں والا خیال کرتے ہیں۔

اور سرطان قمر کا گھر' زحل کا و بال مشتری کا شرف مرتخ کا ہبوط مؤنث کیلی اور برج منقلب یعنی بدلنے والا ہے۔

اور اسد شمس کا کھر زحل کا وبال ہے اور اس میں شرف اور ہیوط نہیں ہے اور ثابت لینی قائم رہنے والا ندکر نہاری گرم وختک اور صفر اوی ہے۔

اورسنبلہ عطار دیکا گھر عطار دکا شرف مشتری کا وبال زہرہ کا ہبوط اور دوجسموں والا ہے اور مؤنث لیکی سرداور خشک اور سوداوی ہے۔

اور میزان زہرہ کا کم مرت کا وبال زحل کا شرف آ فآب کا ہیوط برج منقلب ندکر کم نماری محرم ور اور دموی ہے۔ نماری محرم ور اور دموی ہے۔

اور عقرب مرت كالمكمر زبره كا وبال قمر كابيوط برج ثابت مؤنث سردتر اور بلغى

ادر توس مشتری کا محمر عطار د کا و بال ذنب کا شرف راس کا ہبوط دوجسموں والا ندکر کا مرائ کا ہبوط دوجسموں والا ندکر نہاری مختک اور صفراوی ہے۔

اورجدی زطل کا گھر مقر کا و بال مریخ کا شرف مشتری کا ہیوط برج اور مؤنث ہے۔ اور دلؤ زطل کا گھر آ فاب کا و بال ہے اور اس سے کسی ستارے کوشرف اور ہیوط نہیں ہے اور برج ثابت ہے اس کی ہواگرم اور تز نذکر اور نہاری ہے۔

اور حوت مشتری کا خانهٔ عطار د کا و بال اور اس کا بیوط زهره کانشرف مؤنث کیلی '

بہرحال ان برجوں کے ظاہر خواص اور احکام سے جو کہ عوام کے ذہنوں میں بہت روش اور داضح ہیں موسموں کا اختلاف ہے جس کے خمن میں تمام جہان میں عزت و ذلت کا آگے چھے آنا اور باہم بدلنا رونما ہوتا ہے اور ہرسال میں بیا انقلاب برپا ہوتا ہے اور پھر دوسرے سال میں انہیں گزشتہ اطوار کے مطابق کم شدہ عزت اور معدوم ذلت پرلوٹی ہے۔ پس بیحالات کے بدلنے اور عزت کے ذلت اور ذلت کے عزت میں منقلب ہونے پرصری کی دلیل ہوگی اور جب اس قتم کے ساتھ اس انقلاب کو ثابت فرمایا گیا جو کہ توام و خواص کی نظر دیل ہوگی اور جب اس قتم کے ساتھ اس انقلاب کو ثابت فرمایا گیا جو کہ توام و خواص کی نظر میں ہمیشہ مشہور اور محسوس ہے اب ایک عظیم انقلاب جو کہ واقع ہونے والا ہے اور عوام و خواص کی نظر سے پوشیدہ ہے اور نور نبوت علی صاحبہا الصلوات والتے ات کی امداد کے بغیر کی عقل مند کی عقل خود بخو داسے دریا فت نہیں کر عتی کو بیان کرنے کے لیے ایک اور قتم یاد فرمائی جارہی ہے۔

وَالْیَوْهِ الْمُوعُودِ اور جھے اس دن کی شم ہے جس کا جزائے لیے وعدہ کیا جاچکا ہے اور اس روز ایک زیر دست انقلاب رونما ہوگا کہ آسان آسانی برج اور زمین سب کے سب اس دن اس انقلاب سے متاثر ہوں کے اور ایک نئے جہان کی از سرنو بنیا در کھی جائے گی اور اس جہان کی فاہری عزت والوں کو اس روز انتہائی ذلت اور اس جہان کے کمزوروں کو اس جہان میں کمال عزت واصل ہوگی۔

جزاکے لیے تنمن چیزیں ضروری ہیں

اور چونکہ اس دن جزاکے لیے وعدہ کیا جی ہے جزا پہنچانے کے لیے تین چیزوں کے بغیر چارہ نہیں۔ پہلی چیز جزاکاحق دار دوسری چیز وہ حاکم جو کہ ہرکسی کواس کےحق کے مطابق جزاد سے اور تیسری چیز نیکی اور بدی کے وہ کام جن کے مطابق جزادی جائے اور ان تینوں جیزوں کے دواور تشمیس بیان فرمائی گئی ہیں۔ چیزوں کے بیان کے لیے کہ جس دن جھیہوں کے دواور تشمیس بیان فرمائی گئی ہیں۔ وَشَا وَهِ وَ اللّٰ کَا اللّٰ جُن اور فرشتوں کی جنس سے ہر حاضر ہونے والے کو تشم وُسُن ہوں کے اور انتا ہوا جمع تر تیب پائے گا کہ اس کی مثال اس کا مثال کے اس کے مثال کے اس کے مثال کے اس کے مثال کے

خیال میں نہیں ساسکتی اور اس اجتماع کی وجہ سے جزا کا مقدمہ پورا ہوجائے گا کیونکہ مدعی علیہ اور سب تحکموں کے کواہ موجود ہوں مے۔

وَمَشْهُوْدِ اور بین اس کی تنم اُنھا تا ہوں جس کے پاس حاضری ہوگی اور اس چیز کی بھی چند صورتیں ہیں۔ پہلی صورت اجھے کرے مل جو کہ محض قبر سے اُنھے اور زندہ ہوتے ہی خدمور اور موسے ہیں مودار ہوں کے۔

دوسری صورت مختلف اچی اور ڈراؤنی شکلوں میں انعام دینے اور عذاب دینے کے لیے فرشنے ظاہر ہوں گے اور ساتوں آسانوں والے عرب اُمال لکھنے والے اور اعمال لکھنے والے تمام فرشنے آدی کی نظر میں بے جاب ظاہر ہوں سے .

تیسری صورت: ہرکی کواعمال ناہے دیئے جائیں گے تا کہ مطالعہ کریں۔ چوتھی صورت: تراز و حاضر کرنے کے وقت اعمال کا وزن صاف کھل جائے گا۔ پانچویں صورت: جمل اللی جو کہ اس دن کی حاکم ہے بے پردہ ظاہر ہوگی۔ چھٹی صورت: جنت اور دوز خ جو کہ اس جہان میں پوشیدہ جین زینت و آرائش اور ہولنا کیوں اور شدتوں کے ساتھ ظاہر ہوں گے۔

اوران چدامور کے کھل جانے کی وجہ ہے آ دمی کے جسم و جان میں بلکہ تمام عالم میں ایک عمل عالم میں ایک عمل عالم میں ایک عمدہ انقلاب ردنما ہوگا۔

شابداورمشهود كي تغيير ميں اختلاف

اور شاہد و مشہود کی تغییر میں بہت اختلاف ہے جو پجھ ذکر ہوا معتبر صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے منقول ہے جیسے حضرت عبداللہ بن عباس معنرت امام حسن ضحاک عبابہ اور ابن المسیب رضی اللہ تعالی عنہم کی معالم النز بل اور حدیث پاک کی دوسری معتبر کتابول میں حضرت ابو ہر یوہ رضی اللہ عنہ کی روایت کے ساتھ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے مروی ہے کہ شراور ہراس مجد میں کہ جہاں جعد شریف مروی ہے کہ شراور ہراس مجد میں کہ جہاں جعد شریف پر حما جاتا ہے اس دن کی برکتیں حاضر ہوتی ہیں جبکہ مشہود سے مراور وزعرف ہے کہ جج کرنے والے اس دن کی برکتیں حاضر ہوتی ہیں جبکہ مشہود سے مراور وزعرف ہے کہ جج کرنے والے اس دن اطراف واکناف عالم سے جے کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص مرادر و اس مالے اس دن کا محت کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص مرادر و اس دن کا محت کے اس مالے میں کہ محت کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص مرادر کا محت کے ایک خاص مرادر کی محت کے ایک خاص مرادر کی محت کے ایک خاص مرادر کی محت کے ایک خاص محت کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص محت کے اس محت کی محت کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص محت کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص محت کی کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص محت کی محت کے انوام حاصل کی کے ایک خاص محت کے کے انوام حاصل کرنے کے لیے ایک خاص محت کی کے انوام حاصل کی کھوں کی کھوں کے انوام حاصل کی کے انوام حاصل کی کھوں کے کہ کھوں کی کھوں کے کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کی کھوں کے کھوں کے کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کے کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھ

مکان میں اکٹھے ہوتے ہیں تو تو یا وہ دن ای مکان میں سکونت پذیر ہے کہ لوگ اس کے مشاق ہوکراس کے یاس پہنچتے ہیں۔

اور سابقہ معرف بلام قسموں کے برخلاف شاہدادر مشہود کو تکرہ لانے کی وجہ یہی ہے کہ روز جعہ اور روز عرفہ ایک فرد میں منحصر نہیں ہیں کی تکرار سے وارد ہوتے ہیں۔ بخلاف روز قیامت کا سان اور آسانی برجول کے کہان میں تکرار نہیں۔

روز جمعهاورروز عرفه كى فضيلت

اور حدیث پاک میں وارد ہے کہ وہ بہتر دن جس میں سورج طلوع ہوتا ہے جمعہ کا دن ہے اس میں آدم علیہ السلام کو پیدا کیا گیا۔ اس دن میں انہیں جنت میں وافل کیا گیا۔ اس دن میں انہیں جنت میں وافل کیا گیا۔ اس دن میں انہیں زمین پر اُتارا گیا اور اس دن میں قیامت قائم ہوگی اور اس دن میں اللہ تعالیٰ فی حضرت آدم علیہ السلام کی تو بہ کوشرف تبولیت بخشا۔

نیز دارد ہے کہ جمعہ کے دن ایک الی ساعت ہے کہ اگر کوئی مسلمان اس ساعت کو ایجھے مقصد کے حصول کے لیے بارگاہ خداوندی میں دعا والتجامیں بسر کرے تو اس کا مقصد پر اہو جائے۔ نیز دارد ہے کہ اکٹو وا الصلوة علی یومر الجمعة یعنی مجھ پر جمعہ کے دن درودشریف کی کثرت کروکہ وہ متبرک دن ہے۔

نیز حدیث پاک میں ہے کہ اللہ تعالیٰ عرفہ کے دن فرشتوں سے فرما تا ہے کہ میر ہے بندوں کو دیکھو کہ خاک آلود اور پریثان بالوں کے ساتھ وُ وروُ ور سے میر ہے گھر کا جج کرنے آئے ہیں ہم گواہ رہو کہ میں نے انہیں بخش دیا اور اس دن بخشش الٰہی کو عام دیکھ کرشیطان جیخ و پکار کرتا ہے اور اپ سر پرمٹی وُ النّا ہے اور اس دن کا روزہ گزشتہ اور آئندہ دوسال کے گنا ہوں کا کفارہ ہے۔

نیز حدیث شریف میں ہے کہ ایک ہفتے کے دِنوں میں بہترین جعہ کا دن ہے جبکہ سال
کے دِنوں میں بہترین عرفے کا دن ہے بعنی ذوالجۃ کی نو (۹) تاریخ اور اگر دونوں جع ہو
جا کیں تو نورعلی نور ہو جائے اور ان دونوں دِنوں میں بھی ایک قتم کا انقلاب ہے اس لیے کہ
جعہ کا دن ہاری شریعت میں ہفتے کی ابتدا ہے جبکہ عرفہ کا دن عبادت کبریٰ جو کہ خانہ کعبہ کا
سام اللہ علیہ کا استام میں ہفتے کی ابتدا ہے جبکہ عرفہ کا دن عبادت کبریٰ جو کہ خانہ کعبہ کا
سام عبد کا دن ہاری شریعت میں ہفتے کی ابتدا ہے جبکہ عرفہ کا دن عبادت کبریٰ جو کہ خانہ کعبہ کا

جے ہے کے ساتھ سال کی عبادات کی انتہا ہے۔

اوربعض مفسرین نے کہا ہے کہ ہروہ دن جس میں عظیم اجتماع واقع ہواورلوگ کانی تعداد میں کوئی مہم سرانجام دینے یا کوئی برکت حاصل کرنے کے لیے استھے ہوں مشہود ہے اور اس دن کے حاضرین شاہد اور اس تفییر پرمشہود روز جمعہ روزِعرف دونوں عیدوں ہوم ترویدی تھویں ذوالجہ اور اجتماعات کے دوسرے دِنوں کوشامل ہے۔

ادراربابِ تفیر کے ایک گروہ نے شاہد ومشہود کومشہود بمعنی حضور سے نہیں لیا ہے بلکہ شہادت سے قرار دیا ہے جو کہ گوائی کے معنول میں ہے اور اس صورت میں شاہدادرمشہود چند چیزیں ہیں۔ اوّل ذات حضرت حق جل شانہ چنانچہ حضرت سالم بن عبداللدرضی اللہ عنها نے فرمایا ہے کہ شاہد خدا ہے اورمشہود مخلوق و کھنی باللّٰهِ شَهِیدًا اورسعید بن جبیر رضی الله نے فرمایا ہے کہ شاہد خدا ہے اورمشہود به تو حید، شهدا لله الد الله الا الله

دور ی چیز به که شامد انبیاء علیهم السلام میں اور مشہود علیه اُمتیں۔ قال الله تعالیٰ فَکَیْفَ إِذَا جِنْنَامِنْ کُلَ اُمَّةِ بِشَهِیمٍ لِد

تیسری چیزید کمشام اعمال ککھنے والے فرشتے ہیں اور مشھود علید مکلفین۔ اللہ تعالی نے فرمایا: وجاء ت کل نفس معا سائق وشھید

چوتی چیز مید کمشاہر آ دمی کے اعضاء ہیں اور مشہود علیہ آ دمی ۔ اللہ تعالی نے فرمایا:

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمُ ٱلْسِنَتَهُمْ وَآيْدِيهُمْ وَ أَرْجُلهم

یانچویں چیز ہے کہ شاہر دن اور رات ہے اور مشہود بہ بنی آ دم کے اعمال۔ چنانچہ امام حسن بھری رحمۃ اللہ علیہ سے منقول ہے کہ مامن یوم الا و ینادی انی یوم جدید وانی علی مایعمل فی شھید لین مرروز ندادیا ہے کہ میں نیادن ہوں اور مجھ میں جو عمل کیا جائے گااس پر گواہ ہوں۔
کیا جائے گااس پر گواہ ہوں۔

کے نیچ اور زمین کے اوپر واقع ہوتے ہیں۔

ساتوی چیزید که شام حضور ملی الله علیه وسلم کی ذات پاک ہے اور آپ کی اُمت جبکه مشہود علیه دوسری اُمتیں ۔ الله تعالی نے فرمایا و تحکّ الله جَعَلْنَا کُهُ اُمَّةٌ وَسَطًا آیَتُکُونُوْ اللهُ مُشَهّ وَسَطًا آیَتُکُونُوْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مِنْ اللهُ مَنْ اللهُ مِنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مَنْ اللهُ مُنْ اللهُ

آتھویں چیز ہید کہ امام رازی رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا ہے کہ شاہر تمام ممکنات ہیں اور مشہود لہ واجب الوجود کی ذات پاکہ، کہ ذرات عالم میں سے ہر ذرہ اللہ تعالیٰ کی وات اور صفات کے وجود پر واہ ہے اور ای تفییر کے مطابق الل کلام کی اصطلاح ہے کہ غائب کا شاہر پر قیاس درست نہیں ہے جبکہ شاہر سے غائب پر دلیل کی جاسکتی ہے۔

نویں چزیہ کہ شاہر جراسود ہاور مشہود لہ ج کرنے والے اس لیے کہ حدیث شریف میں وارد ہے کہ المحجر الاسود بین الله فی الادض یجیئی یومر القیامة له عینان یبصر بھا ولسان ینطق به ویشهد علی من استلمه بحق نیخ جراسوز من میں اللہ سجانہ وتعالیٰ کا دست قدرت ہے قیامت کے دن آئے گا'اس کی دوآ تکمیں ہوں گی جن اللہ سجانہ وتعالیٰ کا دست قدرت ہے قیامت کے دن آئے گا'اس کی دوآ تکمیں ہوں گی جن سے دیکھے گا اور زبان ہوگی جس سے ہولے گا اور ہراس فنص کے متعلق گوائی دے گا جس نے اسے دیکھے گا اور خراس فنص کے متعلق گوائی دے گا جس نے اسے حق کے ساتھ جو ما۔

دسویں چیز ہے کہ حضرات صوفیہ قدس اسرارہم نے فرمایا ہے کہ اجلاء لیمی جلوہ گر ہونے کے مقام میں شاہرخت ہے اور مشہود خت ہے مقام میں شاہرخت ہے اور مشہود خت ہے مقام میں شاہرخت اور مشہود خت ہے مقام میں شاہرخت اور مشہود خت ہے اس تابل ہیں کہ ان بہر حال ہے چیزیں جن کا ذکر ہوا' اپنی عظمت وشرافت کی وجہ ہے اس قابل ہیں کہ ان کی فتم اُٹھا کی جائے اور حاصل کلام ہے ہے کہ انقلاب احوال پر بھی دلالت کرتی ہیں اور بعض معنوں کے اعتبار سے انہیں بحرہ لانا اور مبھر کھنا بھی ان سے مناسبت رکھتا ہے۔

<u> جواب تتم میں اختلاف</u>

اوران قسموں کے جواب کے تعین میں مفسرین کا بہت اختلاف ہے۔ بعض کہتے ہیں کہ ان قسمول کا جواب لام اور قد کے مقدر مانے کے ساتھ قتل اصحاب الاخدود ہا اور بعض کہتے ہیں کہ کلام تقدیم و تاخیر پر بنی ہے یعنی قتل اصحاب الاخدود والسماء اور بعض کہتے ہیں کہ کلام تقدیم و تاخیر پر بنی ہے یعنی قتل اصحاب الاخدود والسماء اسمال کے جو اسمال ساتھ میں کہ کلام تقدیم و تاخیر پر بنی ہے یعنی قتل اصحاب الاخدود والسماء اسمال کے جو اسمال کے جو اسمال کا معتاب الاخدود والسماء معتاب الاخدود والسماء معتاب الاخدود والسماد معتاب الاخدود والسماد معتاب الاخدود والسماد کے جو اسمال کے جو اسمال کے جو اسمال کے جو اسمال کا معتاب الاخدود والسماد کی معتاب ک

ذات البروج اور حضرت ابن مسعود اور قادة رضى الله عنها منقول ہے كه ال فتم كا جواب إن بَطْنَى رَبِّكَ لَشَوِيْدٌ ہے اور اس كے درميان جو كچھ ذكر فرمايا كيا ہے جملة معترضه كا تكم ركمتا ہے اور صاحب كشاف اور بعض متعقد مين نے يول اختيار فرمايا ہے كہ فتم كا جواب محذوف ہے بعنى لعن من يوذى الموهنين لايمانهم كما لعن اصحاب الاخدود بعنى اس برلعنت ہو جوايمان كى بناء برايمان والول كوستائے جيسا كه اصحاب اخدود برلعنت مو بوايمان كى بناء برايمان والول كوستائے جيسا كه اصحاب اخدود برلعنت مو بي ألى

قُتِلَ اَصْعَابُ الْاَخْدُودِ خندت والوں كاتن عام كيا تميا جس كاطول جاليس جاليس (۱۲٬۲۰) گز اور عرض بارہ بارہ (۱۲٬۱۲) گزتھا تا كەمسلمانوں كوان خندتوں ميں ڈاليس اور عذاب ديں اوروہ خندتيں اس حد تک گرم تميں كە

النّار ذات الْوَقُودُ وه ساری خندق ایک زبردست شعلوں کی آگ تھی یا ہے پناه ایدصن والی آگ جے اس میں ڈال کر بہت زیادہ مجڑ کایا حمیا تھا اور صدیث شریف میں ہے کہ جب حضور صلی الله علیہ وسلم اس سورة کی تلاوت میں اس آ بت پر بینجیتے تو فرماتے آعُودُ والله مِن جهد البلاء اور خندق والوں کا بیتل عام جو واقع ہوا ایک فوری اور جلدی

انقام تھا جو کہ مسلمانوں کواس میں ڈالنے کے بعد آگ کے بھڑ کئے اور اس کے چنگاروں کے منتشر ہونے کی وجہ سے فی الفور ہلاک ہو محئے اور انہیں اپنے گھروں کولوٹے کی مہلت بھی نظی اس لیے کھروں کولوٹے کی مہلت بھی نظی اس لیے کہ بیانقام اس وقت رونما ہوا کہ

افقه علیها قعود جبدوہ خندتوں والے اس آگ کے کنارے بیٹے تھاس سے پہلے کہ کرسیوں سے اٹھیں اور گھروں کو جا کیں جل گئے اور انہوں نے تھوڑی ی مہلت بھی نہ پائی اور اس قتم کا فوری انتقام زیادہ ترعوام کی نظر میں عبرت کا باعث ہوتا ہے اور فی الواقع اس گروہ نے ظلم کرنے میں انتہائی بے دردی کا مظاہرہ کیا اور اس فوری انتقام میں گرفتار ہوئے اس لیے کہ اور ظالم اپنے سامنے کی کیائی نہیں کراتے بلکہ پیادوں اور جبل کے نوکروں کو عموں کو مزادیں تاکہ خلاف مروت اور جنسیت کے نقاضے کی خالفت نہ ہو۔

وَهُدُ عَلَى مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُوْمِنِيْنَ شُهُودٌ اور بِهِ ظَالَم جُوكَه خندتوں والے سے المان والول كے ساتھ جوسلوك كرد ہے شخ بذات خودوبال حاضر سے۔

اصحاب خندق کے واقعات کابیان

یبال جانا چاہیے کہ اصحابِ خندت کا واقعہ کہ جنہوں نے دین اور ایمان کی وجہ ہے لوگوں کو آگ سے بجری ہوئی اس خندق میں ڈالا تھا اور خود بھی کسی فرصہ، کے بغیر فوری انتقام میں گرفتار ہوکر جہنم کا ایندھن بن مجے جاز کے علاقے کے قریب چارستوں پر واقع ہوا ہے۔ احتال ہے کہ اس آیت سے چاروں ہی مراوہوں اور اہلی مکہ کو ڈرانا چیش نظر ہے تا کہ خود کومعلوم ان واقعات سے عبرت پکڑیں اور مسلمانوں کوستانے میں بے وروی نہ کریں۔ بہلا واقعہ

جو کہ شام کے ملک میں رونما ہوا اس کی کیفیت سیجے حدیث شریف میں جو کہ مسلم اور دوسری صحاح میں حضرت صبیب روی رضی اللہ عنہ کی روایت سے وار دہوئی کوں ہے کہ اس ملک میں ایک طاقت ور بادشاہ تفااس کے پاس ایک جادوگر تفاجو کہ جادو کے فن میں پوری مہارت رکھتا تفا۔ اور اس بادشاہ کی بادشاہ کی بادشاہ کی بادشاہ کی بادشاہ کی جادو پرتھی جب مہارت رکھتا تفا۔ اور اس بادشاہ کی بادشاہ کی احتا تا کہ کام کی بنیاد اس جادوگر کے جادو پرتھی جب مہارت رکھتا تھا۔ اور اس بادشاہ کی بادشاہ کی احتا تا کہ کام کی بنیاد اس جادوگر کے جادو پرتھی جب

بھی اس کے ملک میں کوئی مخالف پیدا ہوتا وہ جادوگراہے جادو کے ساتھ ہلاک کر دیتا اور بھی اس کے ملک میں ورت نہ پڑتی اور مملکت کے امراء اور انسران جب بھی بادشاہ اور اس کی حرکات سے بدول ہوتے وہ جادوگر جادو کے زور سے ان کے دِلوں کو رام کر لیتا۔ علیٰ ہذا القیاس تمام مہمات میں اس کا جادو کارگر ہوتا۔ یہاں تک کہ جادوگر بوڑھا ہوگیا اور زندگی سے مایوں ہوگیا۔ اس نے بادشاہ سے کہا کہ میں بوڑھا ہوگیا ہوں اور قریب ہے کہ میں اس جہان سے جادوگر وہ شیاراؤر ہوشیاراؤکا میرے بروکر دیجے جہان سے چلا جاؤں اپنے غلاموں میں سے ایک ہونہار اور ہوشیاراؤکا میرے بروکر دیجے تاکہ میں اسے جادوگی تعلیم دوں تاکہ میرے بعد آپ کی مملکت کا کام کاح وہ والز کا سرانجام تاکہ میں اسے جادوگر تعلیم دوں تاکہ میرے بعد آپ کی مملکت کا کام کاح وہ والز کا سرانجام

بادشاہ نے اپنے غلاموں میں سے ایک عقل مندلز کا مفرد کر دیا کہ منع سے شام تک جادوگر کے پاس حاضر رہے اور جادو کا فن سیکھے۔ اس لڑکے نے ہر روز جادوگر کے ہاں آ مدور فت شروع كر دى اور جادو كافن سيكمنا شروع كر ديا۔ اتفاقاً ايك دن اس نے راستے میں دیکھا کہ بہت سے لوگ انگے کھرسے نکل رہے ہیں ہوچھا کہ اس کھر میں کیا ہے؟ لوگوں نے بتایا کداس کمر میں ایک راہب ہے بین عبادت گزار جو کد دنیا جھوڑ کر خدا تعالیٰ کی عبادت میں مشغول ہے۔ وہ لڑکا بھی راہب کے تھر میں آیا اور اس کی خدمت میں بیٹے گیا اور اس کی مفتکوشنی ۔ راہب کے کلام نے اس کے دل میں اثر کیا اور اس مفتکو کی محبت اس کا باعث ہوئی کہ جب بھی بادشاہ کے ل سے جادوگر کے کمرجاتا کرائے میں راہب کے یاس بینے جاتا اور بھی دریک بیٹنے کی وجہ ہے جادوگراہے ڈانٹ ڈیٹ کرتا کہ تو نے در کیوں کی؟ وہ کہتا کہ جھے کمر میں در ہوگئ۔ اور جب جادوگرنے سے ماجرا بادشاہ سے کہددیا تو بادشاہ نے یا بندی لگادی کہاس اڑ کے کوعلی اصبح جادوگر کے ہاں بھیجا جائے۔لوگوں نے عرض کی کہ بیاڑ کا يهال سے توعلی اسم چلا جاتا نے۔اگراسے کوئی تاخیر ہوتی ہے تو راستے میں ہوتی ہے گھر میں ہیں۔ بادشاہ اور جادوگر دونوں ہی ہے بات سُن کراس لڑکے برناراض اور بریشان ہوئے ادرانہیں معلوم ہوا کہ وہ راستے میں بچوں کے کھیل کود میں مشغول رہتا ہے۔

یہاں تک کدایک دن جبکہ بیاڑکا جادوگر کے گھرسے شائی کل کی طرف لوٹ رہا تھا' marfat.com

اس نے دیکھا کہ سرداہ ایک بہت بڑا اڑد ہاگلی روکے بیٹھا ہے اور راستے بند ہونے کی وجہ سے لوگ کھڑے ہیں اس لاکے نے دل ہیں سوچا کہ آج آ زمائش کروں کہ جھے جادوگر کی صحبت بہتر ہے یا گوشنشین راہب کی۔ اس نے ایک پھر اُٹھایا اور کہا اے خدایا! اگر گوشہ نشیں راہب کا دین و فد ہب جادوگری اور جادوگر ہے بہتر ہے تو اس اڑد ہا کو ہلاک فرما تا کہ لوگ خلاصی پائیس اور وہ پھر اس اڑد ہے کی طرف بھینک دیا۔ وہ پھر آگئے ہی اڑ دہا مرگیا اور لوگ خلاصی پائیس اور وہ پھر اس اڑد ہے کی طرف بھینک دیا۔ وہ پھر آگئے ہی اڑ دہا مرگیا اور لوگ خلاصی پائیس اور وہ پھر اس اڑد وہیں کمال کے مرتبے کو پہنچ گیا۔ اور دفتہ رفتہ بی خبر اس کوشہ نشین نے بھی سُن کی اس نے تنہائی ہی لڑے سے کہا کہ اے جیٹے! تھے جن تعالی نے براگ بنا ویا اور تیرا کام وہاں تک پہنچ گا کہ ہیں جانتا ہوں لیکن تو ایک مصیبت میں گرفآر پر رکھ بنا ویا اور تیرا کام وہاں تک پہنچ گا کہ ہیں جانتا ہوں لیکن تو ایک مصیبت میں گرفآر ہوگا۔ خبر دار میرا پیتہ نشان نہ دینا کڑے نے فہ کور گوشہ نشین کے ساتھ پہنے تو ل قرار کیے کہ میں ہوگا۔ خبر دار میرا پیتہ نشان نہ دینا کڑے کہ میں وں گا مطمئن رہیں۔

اللہ تعالیٰ نے لڑکے کواس کوشہ نظین کی مجبت انجیل مقدس کی تلاوت جو کہ ایس نے اس
سے سیکمی تھی اور دینِ عیسوی کی پیروی کہ اس وفت حقیقت اسی وین بیس مخصرتی کی برکت
سے ولا یت عظمیٰ کے مرتبے تک پہنچا دیا۔ یہاں تک کہ بمعلم ہی والے اور ماور زاوا تدھے کو
اس کے ہاتھ کی برکت سے شغا ہو جاتی اور بے شار بیاروں کو جن کے علاج سے طبیب عاجز
آ جاتے اس لڑکے کی دعا سے شخریتی نصیب ہو جاتی ۔

اتفاقاً بادشاہ کے مصاحبوں ہیں سے ایک اندھا ہوگیا اور اندھے ہان کی وجہ سے وہ بادشاہ کی محبت سے محروم ہوگیا۔ اس لاکے کی تعریف و توصیف سن کر اس کے پاس آیا نظر میں اور ہدیے لایا اور بولا کہ جھے پر توجہ کچھے اور شفا دیجے لاکے نے کہا کہ ہی کیا ہوں کہ بختے شفاد سے سکول شفا تو اللہ تعالی کے ہاتھ ہیں ہے۔ اگر تو خدا تعالی پر ایمان سلے آئے اور بحت پری چھوڑ دے اور بادشاہ کو اپنا پروردگار نہ جانے تو ہیں دعا کروں گا تا کہ بختے شفا حاصل ہو۔ نہ محف ای مجلس ہیں مشرف بدایمان ہوگیا اور اس لاکے کی دعا سے فی الفور بیعائی حاصل ہو۔ نہ محف ای مجلس ہیں مشرف بدایمان ہوگیا اور اس لاکے کی دعا سے فی الفور بیعائی درست ہوگئی۔ اور وہ معمول کے مطابق بادشاہ کی مجلس ہیں حاصر ہوا' بادشاہ نے بہت تجب کیا اور کہا کہ سرکاری طبیب اور ہمارے ماہرین تیری آنکھوں کے علاج سے عاجز ہو گئے شے تو

کیے بینا ہوگیا؟ اس نے کہا کہ میرے پروردگار نے اسباب کی وساطت کے بغیر مجھے بینا کر دیا۔ بادشاہ بولا کیا کوئی میرے سواتیرا پروردگار ہے؟ مصاحب نے کہا کہ میرا پروردگار اور تیرا پروردگار حضرت خدا تعالیٰ ہے۔

بادشاہ بہت تھا ہوا اور اس کی پنائی شروع کردی کہ تونے بیعقیدہ کس سے سیما؟ جب خت تکلیف ہوئی تو ناچار اس نے لاکے کا نام لے دیا۔ بادشاہ نے لاک کواپنے سامنے طلب کیا اور بولا کہ تخفے میری پرورش اور میرے جادوگر کے فیض سے بیمقام ملاہ کہ تو ناپی ناچیکو بینا کرتا ہے اور ہرم ض کوشفا دیتا ہے نہ کیا ناشکری ہے کہ تو نے ہماری پرورش کوایک طرف کر کے اپنا پروردگار کوئی اور قرار دے لیا ہے؟ لڑک نے کہا کہ شفا میرے ہاتھ میں ہے نہ تہمارے جادوگر کے ہاتھ میں۔ صرف خدا تعالی کی قدرت ہے۔ بادشاونے تھم دیا کہ لاک کو تخت عذا ب دیا جائے اور کہنے لگا کہ بیلائ کی قدرت ہے۔ بادشاونے تھم دیا کہ بیلائ کو تخت عذا ب دیا جائے اور کہنے لگا کہ بیلائ کی جو کہ جادوگر سے غائب رہا۔ معلوم ہوتا ہے کہ اس نے بی تھیدہ کی اور جگے سے حاصل کیا ہے۔ جادوگر بھی یہ ماجرا سنتے ہی گرتا پڑتا ہا جا کہ اس نے بی تھیدہ کی اور کہنے لگا کہ بیلاگا ایک مدت سے میرے پاس نہیں آتا معلوم ہوتا ہو تکے دربار میں پہنچا اور کہنے لگا کہ بیلاگا ایک مدت سے میرے پاس نہیں آتا معلوم نہیں کہاں جاتا ہے اور درباری نوکروں نے بھی کہا کہ یہ پچھے نکل جاتا ہے اور درباری نوکروں نے بھی کہا کہ یہ پچھے نکل جاتا ہے اور گھر میں نہیں

بادشاہ نے سم دیا کہ اس لڑے کو مختف ہم کی سزائیں دے کر پوچھو کہ اس نے سے عقیدہ کہاں سے سیکھا ہے؟ اس لڑے نے عذاب کی شدت سے بے چین ہو کراس گوش نشین کا نام لے دیا۔ بادشاہ نے اس گوش نشین کو بلوا کر آرہ بھی در بار جس منگوالیا اور کہنے لگا کہ اگر تواپ دین سے پھر نے دین سے نہر نے دین سے نہر نے دالا ہر گرنہیں بادشاہ کی جو سرضی ہو کر ہے۔ بادشاہ نے تھم دیا لوگوں نے اس کے سر پر آرہ دکھا اور اسے دو گلڑے کر کے پہینک دیا پھر اس مصاحب کو بھی را ہب کے دین سے روگر دائی کہ اور اس نے بھر اس لڑے کو لایا کہ تھم دیا۔ اس نے بھی انکار کیا اس کے سر پر بھی آرہ چلا کر چر دیا گیا۔ پھر اس لڑے کو لایا کیا۔ بھر اس لڑے کو لایا گیا۔ بادشاہ نے کہا کہ قو اس دونوں کی سزا دیکھ لی اب اگر اپنی زندگی چاہتا ہے تو اس دین سے دار ہو جا۔ لڑے نے ان دونوں کی سزا دیکھ لی اب اگر اپنی زندگی چاہتا ہے تو اس مصاحب کو سے دار ہو جا۔ لڑے نے ان دونوں کی سزا دیکھ لی اب اگر اپنی زندگی چاہتا ہے تو اس دین سے بے ذار ہو جا۔ لڑے نے ناکار کر دیا بادشاہ نے اپنے چند معتد لوگوں کو تھم دیا سے مصرح کے مسلم کا مصرح کے اس کے مسلم کی سرا دیا ہے تا دیا ہے جند معتد لوگوں کو تھم دیا سے سے ذار ہو جا۔ لڑے نے نی انکار کر دیا بادشاہ نے اپنے چند معتد لوگوں کو تھم دیا سے مصرح کے میں انکار کر دیا بادشاہ نے اپنے چند معتد لوگوں کو تھم دیا سے میں مصرح کے سے دار ہو جا۔ لڑے نے ناک میں انکار کر دیا بادشاہ نے اپنے چند معتد لوگوں کو تھم دیا سے میں میں میں کی میں میں کے دیں سے بیادشاہ نے اپنے دیا ہو کی سے کہ کے دیا ہے کہ کو اس کی میں کی کر دیا گو کھوں کو تھا کہ کر دیا گو کھوں کو تھوں کی سے دور کر دیا گو کھوں کو تھا کہ کر دیا گو کہ کے دیا گو کھوں کو تھا کہ کر دیا گو کھوں کی میں کی کر دیا گو کھوں کی کی کے دیا کی کر دیا گو کھوں کر دیا گو کھوں کے کہ کر دیا گو کھوں کی کر دیا گو کھوں کی کر دیا گو کھوں کی کر دیا گو کھوں کر دیا گو کر دیا گو کر کے کر دیا گو کھوں کر دیا گو کھوں کر دیا گو کو کو کھوں کر دیا گو کو کھوں کر دیا گو کھوں کر کر دیا گو کھوں کر دیا گو کو کو کو کھوں

کداسے فلال بلند پہاڑ پر لے جاؤ اور پہاڑ کی چوٹی پر کھڑا کر دواگر اس دین سے پھر بھائے تو میں اسے اپنی امارت اور مصاحبت کے مرتبے پر فائز کر دوں گا اور اگر اصرار کرے تو اس چوٹی سے بینچے پھینک دوتا کہ اس کے جسم کے اجزا پاش پاش ہوجا کیں۔

جب لڑے کواس پہاڑی چوٹی پر لے گئے تو اس نے دربار خداوندی میں دعاکی کہ بارخدایا! تو جیسے چاہان کے شرسے جھے بچائ پہاڑ میں شدید زلزلہ ببیدا ہوائ بادشاہ کے تمام معتند نیچ گر پڑے ادر سر گئے۔ وہ لڑکا بادشاہ کے دربار میں سیچے وسالم پہنچ گیائ بادشاہ نے پوچھا کہ تیرے ساتھیوں کو کیا ہوا؟ لڑکے نے کہا کہ ای خدا تعالی نے جس کا میں نے دین قبول کیا ہے جھے ان کے شرسے بچالیا۔ بادشاہ زیادہ غضب ناک ہوا اور اس نے اپنے دیگر معتندوں کو تھے ان کے شرسے بچالیا۔ بادشاہ زیادہ غضب ناک ہوا اور اس نے اپنے دیگر معتندوں کو تھم دیا کہ اس لڑکے کو کشتی میں بٹھا کر سمندر میں لے جاؤ اگر اپنے اس دین سے پھر جائے تو درست۔ ورنہ اسے سمندر میں پھینک دینا جب وہ سمندر کے اندر پہنچ تو اسے مرتد ہونے کا تھم دیا لڑکے نے بارگاہ خداوندی میں دعا کی کہ بارخدایا! جھے اس گروہ کے اور مرتد ہونے کا تھم دیا لڑک کے نے بارگاہ خداوندی میں دعا کی کہ بارخدایا! جھے اس گروہ کے اور سے بھی محفوظ فرما۔ اچا تک کشتی اُلٹ گئی اور بادشاہ کے معتدسب کے سب غرق ہوگئے اور کا کا سے بھی محفوظ فرما۔ اچا تک کشتی اُلٹ گئی اور بادشاہ نے معتدسب کے سب غرق ہوگئے اور کا کی جس دیا کہ بارخدایا۔ تو کیا کر آیا؟ لڑک نے سارا واقعہ بیان کردیا' بادشاہ جران رہ گیا۔

لائے نے کہا کہ اگر بادشاہ کا دی ارادہ جھے آل کرنے کا ہے تو ایک حلے کے بغیر مکن نہیں۔ بادشاہ نے کہا کہ بتاؤ الاکے نے کہا کہ اس کا حلہ یہ ہے کہ اس شہر کے تمام لوگوں کو شہر سے باہر ایک میدان میں جع کیا جائے اور جھے چھانی پر لفکا کمی اور اپنے ترکش سے ایک تیر نکال کر اس کا منہ کمان کے چئے پر رکھ کر یہ کلام پڑھیں۔ بسمہ اللّٰہ وب الغلام یعن اس خدا کے نام کے ساتھ جو کہ اس لا کے کا پروردگار ہے پھروہ تیر میری طرف چھوڑ ویں میں اس خدا کے نام کے ساتھ جو کہ اس لا کے کا پروردگار ہے پھروہ تیر میری طرف چھوڑ ویں میں تقل ہو جاؤں گا۔ بادشاہ نے بوئی کیا اور وہ تیر لا کے کی گئی میں لگا اس نے اپنا ہاتھ وہاں رکھا اور بولا کہ میں نے اپنا مطلب پالیا کہ اپ پروردگار کے تام پر ذرئے ہوا ہوں اور لوگوں سے شور اُٹھا کہ آمنا برب الغلام 'آمنا برب الغلام یعن ہم اس لاکے کے رب پر ایمان لائے۔

بادشاہ کواس کے مصاحبوں نے کہا کہ اس مقدے میں بہت خرابی واقع ہوگئی اور ہم جس چیز ہے ڈرتے تھے وہی رونما ہوئی اس لیے کہ شہر کے سب لوگوں نے لڑکے کے رب کو تم سے زیادہ توی اور قدرت والا مان لیا اور تمہاری عاجزی و کھے لی کہ جب تک آب نے اس کے پروردگار کا نام نہیں لیا اس کے لل پر قادر نہیں ہوئے۔ بادشاہ کے عصد اور شرمندگی میں مزیداضافہ ہوااور اس نے حکم دیا کہ شہر کے کوچوں کے شروع میں خندقیں کھودی جائیں اور ان میں آ گ جلائی جائے اور جو بھی اس لڑ کے کے دین سے روگردانی نہ کرے اسے خندق میں ڈال دیں اور باوشاہ اور تمام ارکانِ سلطنت خندق کے پاس کرسیاں ڈالے اس عذاب کا تماشا كررے تھے تی كدا يك عورت كو پكڑ كرلائے جس كی كود میں شیرخوار بچہ تھا' انہوں نے اس عورت کو بھی اس آگ میں پھینکنا جا ہا' وہ عورت آگ میں جانے سے ڈر کئی اور اپنا یاؤں چیچے کیا۔ بادشاہ نے کہا کداس عورت کومہلت وو موسکتا ہے کداسیے دین سے پھرجائے۔ شیرخوار بچہ جو کہ اس کی گود میں تھا' بلند آوازے بولنے لگا جے ہرعام و خاص نے سا کہ اے ہے بچھ ماں! تو کیا کررہی ہے صبر کر کہ تو سیح دین پر ہے بات اتن می ہے کہ ایکھیں بند کر کے آگ میں تھس جا میہ آگ جھے پر کل وگزار بن جائے گی۔ وہ عورت بے دھڑک اپنے یے کے ہمراہ آگ میں چلی می اور آگ ایک قرم اس طرح مجڑی اور اس سے اس طرح چنگارے نکلے کہ بادشاہ اور اس کے ارکانِ سلطنت جو کہ کرسیوں پر بیٹے تماشہ و مکھ رہے تھے أشخف نه يائے اور مجسم موسمے اور ہر خندت كى آئك ميں اى طرح كا زبر دست اشتعال پيدا ہوا اور شہر کے اکثر لوگ جو کہ بادشاہ کی پیروی میں ایمان والوں کوستانے اور انہیں جلانے مِن معروف ينفئ خود جل محية اور بلاك مو محته_

حضرت رہیج بن انس رضی اللہ عنہ نے فر مایا ہے کہ اللہ تعالی ایمان والوں کی جان کو جنہیں آگ میں ڈالا جار ہاتھا' ان کے جسموں کوآ مسکی چیش چینچنے سے پہلے ہی قبض فر مالیتا تھا اور جنت میں داخل کر دیتا تھا۔

ال واقعه من حضرت شيخ اكبررهمة الله عليه كى تكته فريي

اور اس داقعہ میں ایک بار کیک تکتہ ہے جس کا حضرت شیخ اکبراور ان کے پیرد کاروں marfat.com

نے سراغ نگایا ہے اور وہ یہ ہے کہ بادشاہ کے ہاتھوں اڑکے کائل دنیوی انتقام کی بناء پر تھا کہ وہ داہب کے ساتھ قول وقر ارکر کے اس سے پھر گیا تھا ور نہ بادشاہ اس اڑکے پر قابونہ پاتا اور دنیوی انتقام کا ایک پروگرام افروی انتقام سے جدا گانہ ہے اس لیے کہ دنیوی انتقام ہیں اس تم کے واقعات میں در بار خداوندی سے کوئی عمّاب یا نارائمسکی نہیں ہوتی بلکہ یہ ائی کمال کے درجات میں ترتی کے باعث ہوتا ہے بخلاف افروی انتقام کے جنانچہ حضرت سید الشہد او جمزہ رضی اللہ عنہ کو حضرت امیر الموشین مرتفئی علی کرم اللہ وجہد کی اونٹریاں ذرج کرنے کرنے اللہ داو جمز ورضی اللہ عنہ کو حضرت امیر الموشین مرتفئی علی کرم اللہ وجہد کی اونٹریاں ذرج کرنے کرنے اللہ داو جمز ورضی اللہ عنہ کو حضرت امیر الموشین مرتفئی علی کرم اللہ وجہد کی اونٹریاں ذرج کر بیا یا اور کھارنے اور ان کے کہا ہے گارونکال کر چبایا اور پھینک دیا اور اس پر اسرار مقام کی تفصیل فو صات کیہ میں موجود ہے۔

دوسراعجيب واقعه

جو کہ یمن کے ایک شہر نجران کی سرزین میں واقع ہوا' اس کی کیفیت ہوں ہے کہ مسلمانوں میں سے جو کہ اس وقت انجیل کے پیروکار تھے ایک آ دی ایک شخص کے گر آ کر نوگر ہوگیا' وہ اس کے دروازے پر بیٹھارہتا تا کہ صاحب خانہ جس کام کا حکم ویں بجالات اور اس دوران وہ انجیل مقدس کی تلاوت کرتازہتا جس شخص کا بیسلمان نوکر تھا' اس کی اور کہان اور اس معلوم ہوا کہ انجیل مقدس کی تلاوت کے دفت اس کے سینے سے ایک عظیم نور لکاتا ہے اور جہان بیس کھیل جا تا ہے۔ بیٹی نے اپنے باپ کے سامنے اس ججیب امر کاذکر کیا اس کے باپ نے بیس نجیل کا تلاوت کے وقت سوراخ میں سے دیکھا کہ فی الواقع نور عظیم ظاہر ہوا اس نے بھی انجیل کی تلاوت کے وقت سوراخ میں سے دیکھا کہ فی الواقع نور عظیم ظاہر ہوا اس نے اس نوکر سے بوچھا کہ یہ کیا کلام ہے اور کیا اثر ہے جو میں تھے سے سنتا اور دیکھی ہوں؟ وہ سلمان آ دئی وہاں کے بادشاہ اور رئیسوں کی قوت اور دید بر پر نظر کرتے ہوئے اس سلمان آ دئی وہاں کے بادشاہ اور رئیسوں کی قوت اور دید بر پر نظر کرتے ہوئے اس اسلام اور انجیل مقدس کے حالات اس کے سامنے بیان کر دیتے اور و قض اور اس کی لڑکی تی المور سلمان ہوگئے دور آئیل کے کر تلاوت میں مشخول ہوگئے۔ دونہ رفتہ اس شہر میں بیات الفور سلمان ہوگئے اور انجیل کی کر تلاوت میں مشخول ہوگے۔ دونہ رفتہ اس شہر میں بیات مشہور ہوگئی اور دیگرستاس (کھ) مرداور تور تیں مسلمان ہوگے تی کہ بیسف بن ذی نواس

حمیری نے جو کداس شہر کا بادشاہ تھا اور بت پرتی جس خرق تھا ہی اجراسنا ان سب مسلمانوں کوجن کی تعداونو سے (۹۰) تھی اپنے در بار جس بکا یا اور آگ سے پُر خندق تیار کی اور کہنے لگا کہ اگرتم وین عیسوی سے نہ بھر تھا ہیں اس آگ جس ڈال دوں گا۔ان لوگوں جس بھی ایک عورت شیرخوار بچ سمیت موجود تھی اس شیرخوار بچ نے بلند آ واز سے کہا کہ آ و کہم الله اس آگ جس کو د جاؤ کیونکہ اس آگ کا پھل بھیشہ کی جنت ہے۔مسلمانوں کے آگ میں جانے کے بعد بادشاہ اور چند دوسر سے رئیس جو کہ خندق کے کنارے کرسیوں پر براجمان سے آگ کے بخد کاروں سے ہلاک ہو گئے اور میہ واقعہ حضرت عینی علی نبینا علیم الصلاۃ و والسلام کے آسان پر آٹھائے جانے سے بعد کا ہے اس کے بعد نجران کے لوگوں نے دینِ نصرانیت کو چا جان کر قبول کرلیا۔ چنانچ وہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے عہد مبارک تک اس دین پر شے کو چا جان کر قبول کرلیا۔ چنانچ وہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے عہد مبارک تک اس دین پر شے اور ان کے مردارسید اور عاقب نامی مدینہ عالیہ جس حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت کو آگ اور ان کے مردارسید اور عاقب نامی مدینہ عالیہ جس حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت کو آگ اور ان کے مردارسید اور عاقب نامی مدینہ عالیہ جس حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زیارت کو آگ آپ اور ان کے مردارسید اور عاقب نامی مدینہ عالیہ جس حضور صلی اللہ عار ان کے مواب جس اور ان کے حواب جس آپہ مبلہ نازل ہوئی۔

تيسراواقعه

مانے۔ اس نے کہا کہ ان پر ملوار چلا۔ اس نے اس طرح کیا گروہ نہ مانے۔ اس نے پھر کہا کہ تھم دے تا کہ آگ سے بھری ہوئی خندقیں تیار کریں اور جو شخص اس مسئلے کو قبول نہ کرے اس آگ میں ڈالنے کے دوران خود بھی اس آگ میں ڈالنے کے دوران خود بھی جل مرااس کے بعد مجوسیوں کے فیڈ ہب میں بہن کو حلال جانتا رائج ہوا اور آتش پرتی کا بھی ان میں رواج ہوگیا۔

چوتھا واقعہ

امام زاہدی کی تفسیر میں منقول ہے کہ بنی اسرائیل میں مسلمانوں کا ایک شہرتھا' اس شہر میں قبط پڑ کمیااورمسلمان اس شہرے گروہ در گروہ حبشہ کی ظرف بھامنے لگے۔حبشوں نے جو کہ کا فرینے اس شہر کے بادشاہ ہے کہا کہ بیقط زوہ مسلمان اس شہر میں آئیں گے تو ہم پی غلہ تنگ ہو جائے گا اور یہاں بھی قط پڑجائے گا۔ بادشاہ نے تھم دیا تا کہ شہر کے دروازے پر ا کیک خندق بنائی جائے اور اسے آگ سے پُر کر دیا گیا اور بادشاہ خود بھی اس خندق کے قریب اینا تخت رکھ کر بیٹھ گیا اور وہاں ہاتھی کے جسم کے برابر ایک بہت بڑا بت نصب کیا اور منادی کرائی کہ پردیسیوں میں ہے اس شہر میں جو بھی ہوگا اگر اس بت کو بحدہ نہ کرے اے آ گ میں پھینک دیں۔ پردیسیوں میں ہے ایک عورت کو پکڑ کر لایا گیا جس کی گود میں ایک بجه تعا- اس عورت كوكها حميا كه بت كوسجده كرراس نے كها خداكى بناه! بادشاه نے حكم ديا كه اس کے نیچے کو آگ میں بھینک دواس کے بیچے کو آگ میں ڈال دیا حمیا۔ مال بے قرار ہو گئی اور بے نے آگ میں سے آوازوی کداے مال! ڈرنبیں تو بھی آگ میں آجا کہ ہے آگ نبیل ے کل وگزار ہے۔ مورت نے دعا کے لیے ہاتھ اُٹھائے اور عرض کی اے میرے خدا! تو د بکتا اور جانتا ہے' تیرے حضور بیان کرنے کی ضرورت نہیں۔ آگ اس خندق ہے اُچھلی اور جا کیس (۴۰۰) گز ہوا میں او نجی نکل منی اور کفار کے اردگر دیر دوں کی طرف محیط ہوگئی اور سب

ہوگیا جوآ محد مسلمانوں کوجلانے کے لیے جلائی تھی اس نے انہیں بھی بھسم کردیا۔اب مہلت کے بغیراس فوری انقام کی جو کہ عادت کے خلاف ہے وجہ بیان فرمائی جارہی ہے کہ

وَمَا نَقَهُوْا مِنْهُوْ اوران ظالم كفار نے مسلمانوں سے يُران جائا۔ إِلَّا اَنْ يُوفِينُوا بِاللّٰهِ مُراس كروه فداتعالى پرايمان لاتے تعاور مستقبل كا صيفداس وجہ سے لايا كيا ہے كہ كفار كا مقعد يہ تھا كہ كہ ايمان والے زمان مستقبل عن ايمان كوترك كروين ان كے ايمان پر ثابت رہنے اور مبركرنے پر آئيس عذاب وسیح سے نہ كہ ماض عن ايمان ترك كرنے پراؤيس عذاب وسیح سے نہ كہ ماض عن ايمان ترك كرنے پراوراس عبارت سے معلوم ہوا كہ ان ظالموں كوايمان والوں كے ساتھ اوركى بجہ سے عداوت نہ تن مرف ايمان كى وجہ سے تلى۔ پس اس جہت سے ايمان والوں سے دشمنی قرار پائى۔ بخلاف دوسرے كفار كے انہوں نے مسلمانوں كو دُكھ تكليف ايمان سے وقتی مبلت پائى ہے اور پاتے ہیں اس ليے كہ ان كی وشمنی صرف ايمان توك جہت سے گور ہوئى تھى جب ان لوگوں جہت سے گور ہوئى تھى جب ان لوگوں كونائس عداوت ماسل تھى اور جس ايمان سے عداوت كرتے سے بالكل صيح ايمان تھا اس كونائس عداوت ماسل تھى اور جس ايمان سے عداوت كرتے سے بالكل صيح ايمان تھا اس كے وہ ايمان اس ذات سے معصوف ہے۔

الْعَذِیْزِ الْعَییْدِ الَّذِیْ لَهٔ مُلُكُ السَّمُوٰتِ وَالْاَدُضِ لِینی وہ ضداجو کہ غالب ہے محدود ہاور وہ ذات ہے جس کے لیے آ جانوں اور ذیمن کی بادشاہت ہے۔ اور ان شخول مفات میں سے ہر صفت اس پر ایمان لانے کا تقاضا کرتی ہے۔ اس لیے کہ جب وہ اپنی ماسوا پر غالب ہے اور کسی چیز کی عزت اس کی عزت کے نہیں پہنی تو اس پر ایمان لا تا ضرور ماسوا پر غالب ہے اور کسی چیز کی عزت اس کی عزت کے نہیں کہنی تو اس پر ایمان لا تا ضرور عزت وانتخار کا موجب ہوگا اور جب وہ محدود ہے تو اس کا شکر دل زبان اور اعضاء کے ساتھ واجب ہوجاتا ہے اور ایمان کا اظہار فرض اور لازم ہوجاتا ہے اور جب آ سانوں اور زمین کی باوشائی اس کے ہوت سے ڈرتا جائز نہیں اور جس طرح یہ تینوں صفات باوشائی اس کے لیے ہے تو اس کے کافین سے ڈرتا جائز نہیں اور جس طرح یہ تینوں صفات نہ کورو اظہار ایمان کا موجب ہیں اس طرح فرری انقام کا باعث بھی ہیں اس لیے کہ تر ت کا تقاضا بھی دشنوں سے بدلہ لینا ہے ورندا کی حق کوری انتخام کا باعث ہوگی اور محدود یہ کا تقاضا بھی دشنوں سے بدلہ لینا ہے ورندا کی حق کا نوان سے بدلہ نہ لینے والے کی کوئی تعریف دشنوں سے انتخام لینا ہے اس لیے کہ اپنے مخالفوں سے بدلہ نہ لینے والے کی کوئی تعریف دشنوں سے انتخام لینا ہے اس لیے کہ اپنے مخالفوں سے بدلہ نہ لینے والے کی کوئی تعریف

نہیں کرتا مگر معاف کرنے کی صورت بین اور کفر معاف کرنا جائز نہیں اور بادشاہت بھی وشمنوں سے انقام کا موجب ہے درندوشمن دلیر ہوجا کیں اور بادشاہت کا کاروبارظل میں پرد جائے۔ اور اگر ان صفات کے باوجود کوئی انقام چھوڑ دے تو وہ لاز ما اپنی رعایا کے حالات سے بے خبر ہوگا کہ دشمنوں کی دشتوں کی دوتی کو جانیا ہی نہیں۔ یا دشمنوں کی ایز اء رسانی جو دوستوں کو دوتی کی وجہ سے پہنچی ہے اس کی اسے اطلاع نہیں ہوتی یا دوسرے اسانی جو دوستوں کو دوتی کی وجہ سے پہنچی ہے اس کی اسے اطلاع نہیں ہوتی یا دوسرے اسانی جو دوستوں کو دوتی کی وجہ سے پہنچی ہے اس کی اسے اطلاع نہیں ہوتی یا دوسرے اساب پرمحمول کرتا ہے اور اللہ تعالی اس بے خبری سے پاک ہے۔

وَاللّٰهُ عَلَى مُحْلِ شَيْءٍ شَهِيدٌ اور الله تعالى ہر چیز پرمطلع ہے اور جب ہمی کافروں الله علی مُحلِ شَی مُحل الله علی کا در الله تعالی کے انتقام سے ایمان کی وجہ سے ایمان والوں کی عداوت میں کوشش کی اور الله تعالی کے انتقام سے عافل ہوئے۔ گویا وہ اس جناب کی بادشائی خبرداری اور قابل ستائش ہوئے سے انکار کرتے ہیں۔ پس ان اسباب کے جمع ہونے کی صورت میں اللہ تعالی کے حکمتیں فوری انتقام کا تقاضا فر ماتی ہیں جیسا کہ خدوق والوں کے واقعہ میں رونما ہوا اور جب خاص جزئی میں ریل می ہوئی تو اس برقی میں ریل می ہوئی تو اس برقی موقیاس کرنا درست ہوا۔ چنا نچ فر مایا جارہا ہے

ان الله بن فَتَنُوا اللهومِن فَصَل جن لوگول نے ایمان سے عداوت کی وجہ سے ایمان والح فرا تین کو بھی ستایا اگر چان ایمان والح خوا تین کو بھی ستایا اگر چان کا ایمان والح خوا تین کو بھی ستایا اگر چان کا ایمان عمل کے ناتھی ہونے اور خوا بھی کے ناج کی وجہ سے ناتھی ہے لیکن وہ کروری ان کی ایمان عمل ہونے ور کو ان میں موجود ہے مقالے اور دفاع سے متیم ہوجاتی کی ہے کہ اور دفاع سے متیم ہوجاتی

فید کند کند اس اس است اور مہلت کے باوجود انہوں نے اس ظلم سے توبدند کی اور انہوں نے اس ظلم سے توبدند کی اور اس کا کی حضل میں مرکھے کو تکدا گر توبد کر لینے اگر چہ حقوق العباد کی جہت سے ان سے باز پرس ہوتی اور انہیں عذاب ہوتا لیکن ان پر بیشدت نہ ہوتی کو تکہ ایمان کی عدادت اور حقوق اللہ کو ضائع کرنے سے یاک ہوجائے۔

اوراس آ مت سے دلیل لی می ہے کہ جو کی مسلمان کو جان ہو جو کر قل کر دے اور پھر تو ہو کر قل کر دے اور پھر تو ہو کر قل کر دے اور پھر تو ہو کر تال کی تو ہم مقبول ہے لیکن اس استدلال میں بحث ہے اس لیے کے مسلمان کا عمر آ

marfat.com

قمل اگر کفر کی حالت میں واقع ہوتو بالاجماع اس سے تو بہ مقبول ہے۔ اختلاف کی مخبائش نہیں جبکہ اس آیت میں مراد کفار ہیں جو کہ ایمان کی وجہ سے مسلمانوں کوئل کرتے تھے اور ستاتے تھے۔

فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ توان کے لئے دوزخ کاعذاب ہے جس کی بے شارفتمیں اور بے پناہ ختیاں ہیں اور ہرفتم کی تختیاں ان کے متعلق بروئے کارلائی جائیں گی۔

وَلَهُمْ اوران کے لیے دیگر ظالموں کے علاوہ عَذَابَ الْحَدِیْقُ جَلَمِن کا عذاب ہے جس میں ان کی جان اورجسم گرفتار ہوں سے جس طرح کہ انہوں نے دنیا میں ظلم و تعدی کر کے ایمان والوں کے ولوں کو جلایا تھا۔

اوربعض مفہرین نے کہا ہے کہ جلن کا عذاب دوزخ کے عذاب سے پہلے قہر میں ہوگا اور بعض نے خندقوں والوں کے جلنے پرمحمول کیا ہے جو کہ آگ کے چنگاروں کے مشتعل ہونے کی وجہ سے جل گئے تھے اور جب ظالموں کا حال سُن کر جو کہ ایمان والوں کو ایمان کی بناء پرستاتے تھے سنے والے کو ایک انتظار سالاحق ہو جاتا ہے کہ وہ ایمان والے جو کہ ظلم کی آئر ہوئے ہیں اور ان کی جانیں ضائع ہو گئیں اس روز اس کے بدلے میں کیا آزبائش میں گرفتار ہوئے ہیں اور ان کی جانیں ضائع ہو گئیں اس روز اس کے بدلے میں کیا ہمیں گے اس انتظار کو دُور کرنے کے لیے نئے سرے ایمان والوں کے حالات کو بیان کرنا مضروری ہوا اس بناء پر کہ یہ سامع کے انتظار کی تشکین کے لیے ایک سنٹے سرے بیان ہو سے بیان ہے میاں اصلی مقصود نہ تھا و حرف عطف کو ترک فرماتے ہوئے ارشاوفر مایا جارہا ہے

اِنَّ الَّذِيْنَ المَنُوْا تَحْقِلَ وولوگ جوائان لائے ہیں اور ظالموں کے ہاتھوں کرفتار ہونے اوران کی ایذاء برداشت کرنے کے باوجودا بھان بر ٹابت قدم رہے۔

د عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ اور انہوں نے وہ نیک اعمال کے جواس شم کے حالات میں منروری ہوتے ہیں جسے خداوندی کوتر جے منروری ہوتے ہیں منروری ہوتے ہیں جسے تکلیف پرمبر کرنا تفنا پر رامنی رہنا آور ماسوا پر مجت خداوندی کوتر جے دیتا۔

کے مجوب کے سامنے اس محبوب کی محبت پر سزادیں جو کہ عین راحت بن جاتی ہے۔

تَنْجُدِی مِنْ تَخْتِهَا الْاَنْهَارُ بِن کے درخوں کے بنچے دودھ شہداور شراب کی سم فتم کی نہریں جاری ہیں'ان کے اس خون اور پسینہ کے مقالبے میں جو کہ کفار کے ظلم کی وجہ سے بہتا تھا۔

ذَالِكَ الْفَوْدُ الْكَبِیْرُ یہ بہت بڑی کامیابی ہاں لیے کہ دنیائے قانی کے مقاصد میں کامیابی پانا فانی ہے جبکہ بیہ مقاصد باتی ہے ان میں فنا بالکل نہیں۔ نیز دنیوی مطلب حاصل کرنے میں محبوب حقیق کی رضامندی مشکوک اور نامعلوم ہے جبکہ ان اخروی لذتوں میں بینی اور قطعی ہے۔

ايك جواب طلب سوال

یہاں ایک بوال باتی رہ گیا جو کہ جواب طلب ہے اور وہ یہ ہے کہ کفار کے اعمال کی جزابیان کرنے میں فائے جزائیدلائے ہیں اور فکھٹ عَذَابُ جَھنّھ ارثاد فر مایا گیا جبکہ ایمان والوں کی جزائے بیان میں بدحرف ترک کر دیا گیا اور لھے جنات فر مایا گیا۔ اسلوب بیان کی اس تبدیل میں کاتہ کیا ہے؟

اس کا جواب ہے ہے کہ آخرت کا تواب محض فضلِ خداوندی ہے عمل پر موقوف نہیں۔
چنانچہ نابالغ بچہاور وہ جو بلوغ کے وقت سے مجنون ہو گیا یا وہ جو کی پہاڑ پر بالغ ہوا اور اسے
کی مسلمان کے ساتھ مل بیضے کا موقع ہی نہ طا اور اس نے عبادت وطاعت کی تو فیق نہ پائی '
آخرت میں عمل اور اطاعت کے بغیر تواب پائے گا۔ بخلاف دوزخ کے عذاب کے کہ کفریا
فت کے بغیر نہیں ہوگا اس لیے کہ عذاب عدل کا تقاضا ہے اور سبب کے بغیر عدل کا تصور نہیں ہوتا 'ان دونوں چیزوں کے درمیان فرق کرنے کے لیے جو کہ فضل اور عدل ہیں وہاں سبب
ہوتا' ان دونوں چیزوں کے درمیان فرق کرنے کے لیے جو کہ فضل اور عدل ہیں وہاں سبب اور انجام قرار دیے کی تصریح کے چیش نظر حرف فالایا گیا اور یہاں حذف کیا گیا ہے۔

اور جب الله تعالیٰ کا معامله ان فلالموں کے ساتھ جو ایمان کی وجہ ہے مسلمانوں کے در ہے مسلمانوں کے در ہے مسلمانوں کے در ہے ایمان کی وجہ سے مسلمانوں کے در ہے لینے اور ان مظلوموں کے ساتھ جو کہ ایمان کی خاطر ظلم و جفا برواشت کرتے ہیں ویان ہو چکا تو یہ بات ٹابت ہوگئی کہ

اِنَّ بَطُشُ رَبِّكَ لَشَدِیْ تَحْقِق آپ کے پروردگار کی کی بہت خت ہے اس لیے کہ دومروں کی وست برد سے مقابلہ زاری صبراور سفارش کے ساتھ خلاصی پاناممکن ہے جبہاللہ تعالی کے عذاب سے ان کفار کے لیے کسی وجہ سے خلاصی پاناممکن نہیں۔ نیز دومروں کی پکڑ کی انتہا یہ ہے کہ موت اور ہلاکت تک بہنچ اور موت و ہلاکت کے بعد وہ ایذ انہیں دے کے انتہا یہ ہے کہ مود وہ ایذ انہیں دے کتے اس لیے کہ وہ معدوم کو دوبارہ لوٹانے کی طاقت نہیں رکھتے۔ پس وہ بمیشہ کا عذاب نہیں دے بعد جبہ مرنے اور خاک ہونے پر بھی اللہ تعالیٰ کی پکڑ سے خلاصی ممکن نہیں ہے وہ طاقت رکھنا ہے کہ ذرندہ فرمائے پھرابدالآبادتک عذاب وے اس لیے کہ

۔ اِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِينُ تَحْقَيْقُ وَبِي ہے جوآغاز میں پيدا فرماتا ہے اور فنا کے بعد پيدا فرماتا ہے۔

جی را اللہ اور دور اللہ کو کو کہ اور وہ اپی شدید گرفت کے باوجود اپنے ایمان والے بندول کو بخشنے والا اور دوست رکھنے والا ہے۔ کہ اس عظیم دوئی کی وجہ سے اپنے دوستوں کے گناہ چھپاتا ہے اور ان کے عیب پردے میں رکھنا ہے اور دوستوں اور دشمنوں کے اس کا معاملہ ایسا کیوں نہ و حالانکہ وہ

ايك جواب طلب سوال

ایک جواب طلب سوال باقی رہ گیا اور وہ یہ ہے کہ پہلی صفات میں جیسے کہ المغفود '
المو دود اور ذوالعوش المبحید لام تعریف معرف بالام کی اضافت کے ساتھ واقع ہے جبکہ فعال لمارید کی صفت میں تکیریعنی کرہ لانے کواختیار فر مایا گیا ہے اس میں کیا نکتہ ہے؟

اس کا جواب یہ ہے کہ فعال آیکا یُر یُدُ مضاف کے مثابہہ ہے جیسے طالع جبلا اور مضاف کے مثابہہ مضاف کا حکم رکھتا ہے اسے معرفہ لانے کی ضرورت نہیں ہے اور فاعل مضاف کے مثابہہ مضاف کا حکم رکھتا ہے اسے معرفہ لانے کی ضرورت نہیں ہے اور فاعل مارید کے صیغہ پر مبالغہ کے صیغے کواس وجہ سے اختیار فر مایا گیا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے مرادات اور مفعولات کی کثر سے کا اثرارہ ہوجیہا کہ واقع میں ہے۔

حاصل کلام ہے کہ ان متفاد اور باہم جداجدا اثر رکھنے والی صفات کو ای ترتیب سے
لانے کا مقصد ہے کہ اللہ تعالیٰ سے بعید نہیں ہے کہ بھی بندوں کے ساتھ مہر بانی ' بخشش اور
دوتی کا معاملہ فر مائے اور بھی سخت پکر فر مائے بلکہ اللہ تعالیٰ سے یہ بعید نہیں کہ ایک گروہ اور
ایک فرد کے بارے میں مختلف اوقات کے اعتبار سے انعام اور انتقام جمع فر مائے۔ پس اللہ
تعالیٰ کے انعام پر جو کہ اپنے اوپر ہو' غرور نہیں کرنا چاہیے اور دوسرے وقت میں اس کے
انتقام سے بے خوف وخطر نہیں ہونا چاہیے۔ چنانچے فر مایا جارہا ہے

هُلْ آنَاكَ حَدِيْثُ الْجُنُودِ كَياتَهارے پاس ان كُثروں كا واقعہ پنچا ہے كہ جن پر ایک مدت تک انعام كا دروازه كھلا تھا اور ان پر ہرطرف سے تتم تم كی نعتیں پیچی تھیں پر ان سے مدت تک انعام كا دروازه كھلا تھا اور ان كے انقام كا سبب وہى كزور اور قليل سے لوگ ہوئے جنہيں وہ انعام الله كے زور كی وجہ سے انتها كی رسوائی اور ذلت میں رکھتے تھے اور وہ لشكر جنہيں وہ انعام اللی كے زور كی وجہ سے انتهائی رسوائی اور ذلت میں رکھتے تھے اور وہ لشكر

فِدْ عَوْنَ وَ نَهُودَ لِينَ فَرَعُونَ كَ بِيرِوكَار اور شمودكا گروه - پس فرعونيوں كوايك مدت تك مختلف فتم كى نعتول سے معزز ركھ كر بنى اسرائيل پر پورا تسلط ديا گيا تھا كه انبيل فيرمبذب اور حقير كامول ميں بے گار ميں پكڑتے تھے پھر ان كا تمام ملك اور مال بنى اسرائيل كے حوالے كر ديا ميا اور انبيں بنى اسرائيل كے سامنے پورى ذات اور رسوائى كے اتھ بجيرة قلزم ميں فرق كر ديا محما۔

اور شود كوگ بہلے بہت طاقت ركھتے تقے تی كانہوں نے تراشے ہوئے ہے وال كى عارتوں كے ساتھ سات سوشہر آباد كيے اور وہ حضرت صالح علی نبینا وعليہ السلام اور كمزور مسلمانوں كواؤ فنی كے بارے میں كی طرح سے پریشان كرتے تھے ان سب كوا يک تيز آواز كے ساتھ ہلاك فرما و يا گيا اور ان كے شوخ اور شرير لوگوں كو حضرت صالح عليه السلام كى دعا سے اندھا كر ديا گيا۔ پن به واقعات عقل مندول كی عبرت كے ليے كافی جیں تا كہ اللہ تعالی كے انعام پر مغرور نہ ہوں اور اس كے انتقام سے ڈرتے رہیں ليكن كفار ان واقعات سے كوئی سبق نہيں ليتے اور غرور اور بے خوفی میں أنجھے ہوئے ہیں۔

بَلِ اللَّذِيْنَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيْبِ مَلَكَ جُوكَافَر بَيْنُ ان واقعات كا انكارك درب بي اوركت بين كريو اقعات ال سطح كي بين كريو رضن نے لوگوں كو تجب من والنے كي ليك كركو كو تجب من والنے كي ليك كركو كو تجب بين اوروه جانے نہيں كران واقعات سے قطع نظر الله تعالى كى قدرت بركم كركو وقت بي يوده ظاہر باكروه اپنے حال پرغوركرين تو جس سانس كے ساتھ ان كى زندگى وابسة باك كے تبنے بين ہے۔

وَاللّٰهُ مِنْ وَرَآئِمِهُ مُحِيطٌ اور الله تعالى ال كآك يتي محيط ب يعنى ال ك رائد على الله على الله

اورامل افت میں دراء کا افتا اس جیز کے معنوں میں ہے جسے آدمی چمپائے یا وہ چیز کے معنوں میں ہے جسے آدمی چمپائے یا وہ چیز آدمی کو چمپائے اور اس آئت آدمی کو چمپائے اور اس آئت میں اشتراک معنوی یا عموم مجاز کے طور پر دونوں معنوں کو شامل ہے اور اس کے وجود یہ واقعات ایسے نبیل جی جنہیں صرف مؤرجین نے میان کیا ہو۔

بَلْ هُوَ قُوْآنَ مَجِيْدٌ بَلَد يه واقعات قرآن تديم بجوكدان واقعات كودوً سے مِبلِيكُ الله مَر تور

فَىٰ نَوْجٍ مَنْعَفُوْظِ الْ تَحْتَى مِن جَوَا مِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ ال marfat.com Marfat.com محفوظ ہے ٔ وہاں کسی کا تضرف نہیں کہ کی بیشی یا تحریف کرے یا اپی طرف سے پچھے ملا دے۔ پس میں اس میں جھوٹ کا اختال کرناعقل کے تقاضے کے خلاف ہے۔

<u>لویح محفوظ اور اس کی پہلی عبارت کا بیان</u>

اورمعالم میں امام بغوی ابن عباس رضی اللہ عنما ہے سند کے ساتھ لائے ہیں کہ لوح محفوظ سفید مروار ید سے ہاس کا طول آسان اور زمین کے مابین فاصلے کے برابر ہاور عرض مشرق ومغرب کے مابین فاصلے کے برابر ہاوراس کے کناروں پر یا قوت نصب کے عرض مشرق ومغرب کے مابین فاصلے کے برابر ہاوراس کے کناروں پر یا قوت نصب کے بین اس کے دونوں پہلوسرخ یا قوت کے ہیں۔نور کے فلم کے ساتھ اس میں قدیم کلام کئے ہیں اس کے دونوں پہلوسرخ یا قوت کے ہیں۔نور کے فلم کے ساتھ اس میں قدیم کلام کسا گیا اس مختی کی ابتدا میں بی عبارت واقع ہے۔ لااللہ اللہ وحدہ دینه الاسلام ومحمد عبدہ و رسوله فین امن باللہ عزوجل و صدیق بوعدہ واتبع رسوله الحدلة البحدة اللهم اجعلنا منهم یا اللہ میں ہے کروے۔

سورة الطارق

سورۃ الطارق کمی ہے' اس کی انیس (۱۹) آیات' اکسٹھ (۴۱۰) کلمات اور دوسوان کیس (۲۳۹)حروف ہیں۔

وجدربط

اس سورة كاسورة كروج كے ساتھ رابطه كلام كى ترتيب كى جہت سے بالكل ظاہر ہے كہ دونوں كے آخر ميں امور غيبية دونوں كة خرميں امور غيبية دونوں كة خرميں امور غيبية جوكم آسان كروج اور ستاروں كى قسميں ہيں جبكہ دونوں كة خرميں امور غيبية جوكم آسان كى لوح محفوظ اور آدى كى جان ہے كى حفاظت خداوندى كا بيان ہے بيان كى ضرورت نہيں۔

وجدتشمييه

اوراس سورة كا نام سورة الطارق ال وجه سے ركھا گيا ہے كہ لفت عرب ميں طارق الله مهمان كو كہتے ہيں جو كہ رات كے وقت آئے ہم ہر واقعہ كو جو رات كے قوت رونما ہو بمى طارق كتے ہيں اور اى ليے صديث شريف ميں وارد ہے نعوذ بالله من طوارق الليل طارق كتے ہيں اور اى ليے صديث شريف ميں وارد ہے نعوذ بالله من طوارق الليل marfat.com

Marfat.com

مین ہم ان حادثوں سے اللہ تعالیٰ کی بناہ لیتے ہیں جو کہ اچا تک رات کے وقت رونما ہوں اس لیے کہ ان حادثوں کا تدارک تدبیر علاج اور مرد ما تکنے کے ساتھ دشوار ہوتا ہے اور عرب کے اشعار میں معثوق کے خیال کو جو کہ عاشق کے دل میں بار بار آتا ہے بھی طارق کہتے ہیں اشعار میں معثوق کا خیال آنا زیادہ تر خلوت اور فراہمت کے اوقات میں ہوتا ہے جو کہ غالب ما سے معثوق کا خیال آنا زیادہ تر خلوت اور فراہمت کے اوقات میں ہوتا ہے جو کہ غالب

اور حدیث شریف میں مسافر کومنع فر مایا گیا ہے کہ وہ طروق کرے یعنی ہے کہ رات کے وقت اچا کے گئی ہے کہ رات کے وقت اچا تک گھر میں آئے تا کہ اس کے گھر والے ملاقات کے لیے مستعداور تیار ہو جا کیں اور اے تا پندیدہ حالات و کھے کرگھن کی بیدا نہ ہو۔

اور اس سورۃ میں طارق ہے مراد آسان کا ستارہ ہے کہ تمام ستارے اس وصف میں برابر ہیں اس لیے کہ رات کے وقت ظاہر ہوتے ہیں اور دن میں اوجمل ہو جاتے ہیں اور بعض علاء نے اس بات پرنظر کرتے ہوئے خاص زحل ستارہ مرادلیا ہے کہ سب سے اونچا ستارہ ہے اور اس کی شعاع سات آ سانوں کے جم کو چیر کرزمین پر پڑتی ہے۔ پس اس میں عاقبیت لین خیره کرنے کامعنی زیاده کامل ہے۔اور بعض نے ثریامراولیا ہے اس لیے کہ چند ستاروں کے انوار جمع ہونے کی دجہ اس میں زیادہ چک آئی ہے جبکہ اکثر علاء اس م میں کے ستاروں کی جنس مراد ہے اور برستارہ اس میں داخل ہے اس کے کہ برستارے کی تمن مفتیں ہیں۔ پہلی میرکدانی شعاع سے تاری کو دور کرتا ہے دومری میر کشتی اور تری کے مسافروں کی راو کی علامت اورمشرق ومغرب کی سمت کا تعین حاصل ہوتا پہنے تیسری ہے کہ شیاطین کے شرآ سان کی حفاظت کا سبب ہوتا ہے۔ اور اس کی دوجہتیں ہیں۔ پہلی جہت سے كرشياطين وموئيس كے مارے سے پيدا ہوئے ہيں اور طبعی طور برظلمت اور تاريكی كو بہند كرتے بي اور روشى ہے بعاضے بيں۔ چانج تجرب كيا كميا ہے كدان كا زيادہ تر غلبہ ال كى کے وقت اور تاریک مکان میں ہوتا ہے اور شمع اور چراغ کے ہوتے ہوئے مکان میں کم وخل ویتے ہیں۔ پس آسان کوان نورانی قند لموں ہے روشن کیا گیا ہے تا کہ اجزائے آسان می جوكه صاف وشفاف بين روشي معينے كى وجدسے شياطين خيره بهوكر بھاك جاكيں۔

تغیر کزیزی مست میست (۲۲۸) میست تیموال پاره

دوسری جہت ہے کہ ستارے کی شعاع سے فرشتے گیند کی طرح بنا کر شیاطین کے پیچے چلاتے ہیں جیسے توپ کا گولا جو کہ دشمن کو بھگانے کے لیے پھینکا جاتا ہے اور ستاروں کے ساتھ آسان کی حفاظت اس توپ ساتھ آسان کی حفاظت کی اس طرح رعایت کی گئی ہے جس طرح قلعہ کی حفاظت اس توپ خانے سے کی جاتی ہے جو کہ اس کے برجوں اور فصیل کے اوپر نصب کیا جاتا ہے۔ فرق یہ ہے کہ آسانی ستاروں اور گولے کی شکل جو کہ ان کی شعاع سے پیدا ہوتی ہے وونوں کو لغت میں ستاروں اور ہندی میں تارہ کہتے ہیں اور توپ خانے میں غلولے کو توپ کا نام میں ستارہ نے اور قرآن مجید میں ستاروں کے اس فائدے کو جا بجاذ کر فرمایا گیا ہے۔

اور یہ بینوں صفات جو کہ ہرستارے میں موجود ہیں اس قتم میں پیش نظر ہیں اس لیے کہ جس صفحت ہوں کے ساتھ تاکید فرمائی گئی ہے 'یہ ہے کہ آدی کی جان جتنی بھی بختیوں کہ جس صفحون کی اس قتم کے ساتھ تاکید فرمائی گئی ہے 'یہ ہے کہ آدی کی جان جتنی بھی بختیوں اور مصیبتوں میں گرفتار ہو جائے' اللہ تعالیٰ کی حفاظت کے ساتھ محفوظ ہے اس کا ٹوٹٹا اور فنا قبول کرنا محال ہے۔

آ دمی کی جان ابدی ہے فناپذ رہیں

ای کے حدیث شریف میں وارد ہے انبا خلقتم للابد لینی آ دی کی جان کہ حقیقت میں آ دی ای سے عبارت ہے ابدی ہے فنا پذیر ہرگز نہیں۔اوروہ جوعرف میں مشہور میں مشہور ہو کہ موت جان کو ہلاک کرتی ہے محض مجاز ہے۔موت کا کام اتنا ہے کہ جان بدن سے جدا ہو جائے۔اور مربی اور محافظ نہ پانے کی وجہ سے پاش پاش ہو جائے ورنہ جان کے لیے فات کا محصور نہیں ہے اور اس مورة میں بھی ای تصور نہیں ہے اور اس مورة میں بھی ای تصور نہیں ہے اور اس مورة میں بھی ای داوہ سے آخرت کو ثابت فرمایا گیا ہے۔

اجمال کی تفصیل

اس اجمال کی تفصیل ہیہ ہے کہ آدمی دو چیزوں سے مرکب ہے: جان اورجہم اس کا جزواعظم جان ہے۔ جس میں تغیروتبدل راہ نہیں پاتا جبکہ بدن بمزلہ لباس ہے جس کا رنگ مال کے پیٹ میں ہونے کی صورت میں اور تھا۔ اور پیٹ سے باہر آنے کے بعد بچینے کی آخری عمر تک اس کا رنگ اور ہوتا ہے۔ اور اس میں جوانی اور بڑھا ہے میں کافی اختلاف سے ماک کا رنگ اور ہوتا ہے۔ اور اس میں جوانی اور بڑھا ہے میں کافی اختلاف سے ماک کا رنگ اور ہوتا ہے۔ اور اس میں جوانی اور بڑھا ہے میں کافی اختلاف

رونما ہوتا ہے تو اس کا جزواعظم جو کہ جان ہے اور شعور اوراک لذت حاصل کرنا اور تکلیف محسوس کرنا اس کا خاصہ ہے جب فنا قبول نہ کرے اوران محافظوں کے قبضے میں رہے جو کہ بارگاہِ خداوندی سے اس پر مقرر ہیں تو جسم کے اجزاء جمع کرنے اور اس شکل وصورت میں انہیں جوڑنے اور ترکیب دینے میں کیا دُوری رہی کہ اس طرح کے عمل کا بننے کی ابتدا سے لے کرعمر کی انتہا تک بار ہا مشاہدہ کیا جاتا ہے اور جب جان کی تفاظت کی دلیل ستاروں کے ذریعے آبان کی تفاظت کے دلیل ستاروں کے ذریعے آبان کی تفاظت کے دلیل ستاروں کے کرنے کی ابتدا میں آبان اور ستاروں کی قشم یا دفر مائی گئی اور اس سورۃ کوستارے کے نام کرنے کی ابتدا میں آبان اور ستاروں کی قشم یا دفر مائی گئی اور اس سورۃ کوستارے کے نام سے موسوم کیا گیا کیونکہ مقصد کا زیادہ تر شہوت اس کی حفاظت کو دیکھنا ہے۔

یہاں جانا چاہے کہ اس سورۃ کے نزول کا سب اس بات پر دلالت کرتا ہے کہ طارق سے مراد بھاگنے والا ستارہ ہے جے شہاب کہتے ہیں اور حقیقت میں شیاطین کی گزر سے آسان کی حفاظت کرنے والا بھی وہی ہے کہ یہ شیاطین کی راہ بند کرتا ہے اور انہیں جلا دیتا ہے اگر چہ تو یہ کے گولے کی طرح گڑے ہوئے ستاروں کی شعاع سے پیدا ہوا ہوتو زیادہ بہتر یہ ہے کہ طارق کوشہاب پرمحمول کیا جائے۔

سبب نزول

اس سورة كنزول كاسب يرتفاكه ايك رات جفور صلى الله عليه وسلم كے بچا ابوطالب حفور عليه الصلاة والسلام كے بال حاضر آئ آپ نے ان كے ليے كھانا حاضر فرما يا جوكه روقی اور دوده تھا ادر دونوں نے تناول كرنا شروع كرديا اى دوران ايك ستاره آسان سے ينجي أثرا اور زمين كے اس قدر قريب ہواكه اس كی شعاع سے سارا گھر منور ہوگيا اور ابوطالب كی آئكھيں چندھيا گئيں اور بے قرار ہوكر انہوں نے كھانے سے ہاتھ كھينج ليا اور كو البوطالب كى آئكھيں چندھيا گئيں اور بے قرار ہوكر انہوں نے كھانے سے ہاتھ كھينج ليا اور كو شراع ہوگئے اور بولے كه يدكيا ہے؟ حضور صلى الله عليه وسلم نے فرمايا كه يدا يك ستاره بحث شياطين سے آسان كى حفاظت كے ليے فرشتے تھيئے ہيں اور يدقد رست اللي كى علامات ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہے۔ ابوطالب نہايت متجب ہوكر خاموش ہوكر خاموش بيش گئے ميں سے ایک علامت ہوكر خاموش ہوكر خا

اوراس سورة میں اس بات کا پند دیا گیا ہے کہ ان چیزوں کو دیکے کر دینِ اسلام کے بعد عقائد پردلیل لینا چا ہے اور انہیں ضائع نہیں کرنا چا ہے اس لیے کہ بیہ معاملہ آ دی کے حشر ونشر اور آخرت میں لوٹائے جانے پر ایک قوی دلیل ہے اس لیے کہ جب اپنی عظمت بزرگ اور آئی بلندی کے باوجود کہ وہاں تک کی کا ہاتھ نہیں پہنچ سکا' آ سان اللہ تعالیٰ کی تفاظت کا محتاج ہوا تارہ پہنچ سکا' آ سان اللہ تعالیٰ کی مفاظت کا محتاج ہوا ستارہ پیدا ہوتا ہے اور اس کی حفاظت کی صورت اس انداز میں نمودار ہوئی کہ آ سان میں گرے ہوئے ستاروں کی شعائ سے ایک لیتا ہوا ستارہ پیدا ہوتا ہے اور شیطانوں کی راہ روکتا ہے اور انہیں بھگاتا ہے تو آ دی کی جان جو کہ بہت نا تو اں ہے' اللہ تعالیٰ کی حفاظت کے بغیر مصائب وحوادث کی اس کھکش میں کیے باتی رہ سکتی ہے۔ اور چونکہ اللہ تعالیٰ کی طرف بغیر مصائب وحوادث کی اس کھکش میں کہے ہیں۔ پس آ دمی کی جان اللہ تعالیٰ کی قبض ہو خواہ موت کے بعد اور پہیں سے سمجما جا سکتا ہے کہ اور تصرف میں ہے۔ خواہ زندگی میں ہو خواہ موت کے بعد اور پہیں سے سمجما جا سکتا ہے کہ موت کے بعد وہاں کا انعام پانا اور تکلیف اُنھانا اس کے دست قدرت میں ہے۔ باتی رہ گیا موت کے بعد وہاں کا انعام پانا اور تکلیف اُنھانا اس کے دست قدرت میں ہے۔ باتی رہ گیا جاتھ کیا تھا ہوتا ہوا سکتا ہے۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

و السّبَآءِ و الطّارِقِ جَعِيْمَ ہے آسان كى اور ستار ہے كى جوكدرات كے وقت نمودار بوتا ہے جونكداس ستار ہے ميں جوكدرات كے وقت بھاكتا ہوا نظر آتا ہے لوگوں كائى ميں بہت تردد ہے۔ بعض يوں كتے ہي كه زمين كى طرف ہے وجوالى أُمّعة كر آسان كي بطرف ماتا ہے جب بحى كرة نار ميں پنچتا ہے تو اس تيل كى وجہ ہے جو آس ميں باتى ہے جل أفتا ہے آر لطيف ہے تو جلدى بجھ جاتا ہے اور اگر غليظ ہے تو چند روز تك نيزے يا وُم دار ستارے يا دومرى شكلوں ميں قائم رہتا ہے۔

اور بعض یول کہتے ہیں کہ قمر کے آسان کے ینچے کرہ نار ہے اور اس کرے ہے بھی بھڑ کئے کی حرکت کی وجہ سے جو کہ فلک کے ورجات میں سے کسی درج میں گرم مزان متارول کے اجتماع کی شعاعوں کی قوت سے پیدا ہوتی ہے کوئی چیز جدا ہوکر ینچے آجاتی ہے اور دوڑتے اور دوڑتے میں کے طبقے میں جو کہ کرہ نار اور نری ہوا کے درمیان ہے شمودار ہوتی ہے اور دوڑتے میں جو کہ کرہ نار اور نری ہوا کے درمیان ہے شمودار ہوتی ہے اور دوڑتے

ہوئے ستارے کی مانندنظر آئی ہے اور طبقۂ زمیر بیس پہنچی ہے تو جامد ہو جاتی ہے اور نظر سے غائب ہو جاتی ہے۔

اور ان دونوں باتوں میں بحث ہے اس لیے کہ وہ نور جو بھامحے ستاروں میں دیکھا جاتا ہے آگ کے اس شعلے کے ساتھ مشابہت ہرگز نہیں رکھتا جو کہ دھوئیں کے اندر بجڑ کا ہو بلکہ اس ستارے کا نور انوار آسانی کے ساتھ پوری مشابہت رکھتا ہے جیسا کہ محسوس ہوتا بلکہ اس ستارے کا نور انوار آسانی کے ساتھ پوری مشابہت رکھتا ہے جیسا کہ محسوس ہوتا

نیزان ستاروں کی حرکت کی سمت صرف او پرت نیچے میں پخصر نہیں ہے تا کہ او پر اُٹھنے والے دھو کیں ہے۔ بیزیادہ تر با کیں سے والے دھو کی جائے۔ بیزیادہ تر با کیں سے دا کی اور دا کیں سے با کی بھاگتے ہیں اور صرت طور پر معلوم ہوتا ہے کہ ان کی حرکتیں طبعی حرکات نہیں ہیں بلکہ ارادہ و اختیار والی چیزوں میں ہے کوئی ذیر دست چیز انہیں ذیر دئی دوڑاتی ہے ان شکوک وشبہات کو دُور کرنے کے بیٹے موالی وجواب کے طریقے سے ارشاد فرمایا جارہا ہے۔

وَمَا آذرَاكَ مَا الطَّارِقُ اورتو كيا جانے كروة رابت كو آنے والا ستارہ كيا ہے۔

النَّجُدُ الثَّاقِبُ الكِ ستارہ ہے جوكہ التي شخاع سے شياطين كو فيرہ كرتا ہے اور بمى

اس شطے سے جوكہ اس كی شعاع سے پيدا ہوتا ہے آئيس جلا ديتا ہے اور اس كی شعاع كی قوت كی وجہ سے شیاطین كی بعید وہى حالت ہوجاتی ہے جوكہ سورج كی شعاع میں چگاوڑ كی جوتی وہ ہے اور جب طارق كی حقیقت بیان كرنے سے فراغت ہوئى تو اب وہ صمون بیان فر مایا جارہ ہے جس برتم أشائى كئے ہے كہ

اِنْ كُلُّ نَفْسِ لَمَاعَلَيْهَا حَافِظَ سَمِي بَكُولَى جان جَمِولَى موامِرى نَيك موايرُ لَ الله عائم لَكُ كُلُ حمر القد تعالى كى طرف سے اس بر ايك جمهان ب جوكدات مصائب اور حوادث كے معدموں كى وجہ سے فتانبيں ہونے ديتا۔

محافظ فرشتول كابيان

یہاں جانا جاہے کہ آ دمی کی جان کی معدوم اور فنا ہونے سے حفاظت کرنے والا marfat.com

داروغدایک فرشتہ ہے جو کہ حفرت اسرافیل علیہ السلام کے لشکر سے ہے جو کہ آخر میں اس جان کو دونخوں کے درمیان کی مدت میں صور میں بہنچا دے گا۔ آ دمی کے متعلقہ دوسر۔ محافظین بہت ہیں جو کہ باری باری دن رات کے پہرے کے طور پر آ دمی کے جسم کی حفاظت کرتے ہیں مگر اس وقت تک جب تک کہ اس کے جسم کو ضرر پہنچانے کے ساتھ تقدیر الہی متعلق نہیں ہوئی ہے اور جسے ہی ضرر کا وقت مقدر پہنچا ہے وہ دست بردار ہو جاتے ہیں اور تقدیر کے حوالے کردیتے ہیں۔

اور صدیث پاک میں وارد ہے کہ وکل بالمومنین ما ته وستون ملکا یذبون عنه کما یذبون عنه کما یذب عن قصعة العسل الذباب و لووکل العبد الی نفسه طرفة عین لاختطفته الشیاطین عضوا عضوا برمومن پر ایک سوساتھ فرشتے مقرر بیں جو کہ شیاطین کواس سے اس طرح دُورر کھتے ہیں جس طرح شہد کے بیالے سے کھیال دُورکی جاتی شیاطین کواس سے اس طرح دُورر کھتے ہیں جس طرح شہد کے بیالے سے کھیال دُورکی جاتی ہیں اگر بندے کواس کی اپنی حفاظت پر چھوڑ دیا جائے تو شیاطین اس کا ایک ایک عضوا کیل ایس اگر بندے کواس کی اپنی حفاظت پر چھوڑ دیا جائے تو شیاطین اس کا ایک ایک عضوا کیل ایس ا

اوراس صدیث سے معلوم ہوا کہ ایمان والے کی دوسر سے لوگوں کے مقابلے میں زیادہ کا نظت اور نگہ بانی ہے اس لیے کہ ایمان کی وجہ سے اس کے بہت سے ویمن پیدا ہوگئے ہیں جو کہ کافروں کے ویمن نہیں ہیں اور عام کا فطوں کا ذکر جو کہ ہر موہن و کافر کی برنی آفات سے نگہ بانی کرتے ہیں۔ سورۃ رعد ہیں موجود ہے لمہ معقبات من بین یدیدہ ومن خلفه یحفظونه من احر الله اور ہرکی کی جان کے کافطوں کا ذکر سورہ انعام میں ہے کہ وھو القاھر فوق عبادہ ویرسل علیکھ حفظة حتی اذا جاء احد کھ الہوت توفته رسلنا وھو لایفرطون اور دوسر فرشتے جو کہ بندوں کے ایجھ بر ساموت توفته رسلنا وھو لایفرطون اور دوسر فرشتے جو کہ بندوں کے ایجھ بر کے انگال کھتے پر مامور ہیں' ان کا ذکر سورہ اذا السباء انفطرت میں ہے اور وہ فرشتہ جو کہ المال کھتے پر مامور ہیں' ان کا ذکر سورہ اذا السباء انفطوت ہیں ہو کہ جرکی کے اصلی کلام یہ ہے کہ یہاں جان کی حفاظت کا بیان کرنا مقصود ہے جو کہ ہرکی کے حاصلی کلام یہ ہے کہ یہاں جان کی خفاظت کا بیان کرنا مقصود ہے جو کہ ہرکی کے حاصلی کلام یہ ہے کہ یہاں جان کی خفاظت کا بیان کرنا مقصود ہے جو کہ ہرکی کے جاتھ کیاں حفاظت کا بیان کرنا مقصود ہے جو کہ ہرکی کے جاتھ کے واقع ہے اس حفاظت ہیں بھی کوئی کوئائی نہیں ہوتی اور جب آ دی کو آخرت میں لو شنے واقع ہے اس حفاظت ہیں۔

کی بحث ہے اپنقس کی بقاء اور موت سے پہلے اور موت کے بعد اپنی جان کا محفوظ رہنا مغلوم ہو گیا اور اس نے جان لیا کہ میر کی جان جو کہ حقیقت میں میر کی ذات ہی ہے اور بدن لباس کے طور پر ہے الک حقیق کے قبضے میں ہے تو اسے قیامت کے دن لوشے اور حشر ونشر کے صبح ہونے کے اعتقاد میں کوئی شک ندر ہا گر صرف جسم کے لوٹا نے کو در از امکان بھنے کی جست سے بچھ شک باتی ہے کہ اس کے اجزا موت کے بعد بالکل منتشر ہوجاتے ہیں ' پچھ جست کے بعد بالکل منتشر ہوجاتے ہیں ' بور خین کی خاک میں ال کر نیست و نابود ہوجاتے ہیں اور پچھ حیوانات کا لقمہ ہوجاتے ہیں اور دوسر کے حیوانات کا لقمہ ہوجاتے ہیں اور محمول خین کی خاک میں اور کچھ برندوں وہ حیوانات مختلف مقامات میں جامرتے ہیں اور مئی میں برابر ہوجاتے ہیں اور پچھ برندوں میں ایک ملک سے دوسر کے ملک اور صحرا سے دوسر ہوجا تک بھیل جاتے ہیں تو ان سب منتشر اجزا کو جمع کرنا اور جدا جدا کرنا کہ یہ فلاں جسم کا جزو ہے اور یہ فلاں جسم کا حصر ہونا ہے ای لیک میں بہت دشوار معلوم ہوتا ہے ای لیک می کہنے والے نہندی شعر میں کہا ہے۔

بات جمز نتے یوں کہیں سُن رے بنکی رائے اب کے بچمڑے ناہ کمیں دور پڑیں سے جائے

ناچاراس أبحصن كودُوركرنے كے ليے آدى كوايك اور راه كا پنة ديا جار ہا ہے۔ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِنَّا خُلِقَ چاہے كه آدى ديكھے كه وه كس چيز سے بيدا كيا كيا اور اس كى خلقت كا ماده كہال كہال سے جمع كر كے لايا كيا ہے۔

خلقيت انساني كي تفصيل

کس دیبات کی زمین کے کوئی قطعہ میں کاشت کے گئے تھے اور سوداگروں کو کیا ضرورت پیش آئی کہ انہوں نے اس دُور دراز کے ملک ہے بیلوں اور اونٹوں پر لا اگر بازار میں لا کر مجھے میں چالی اور اونٹوں پر لا اگر بازار میں لا کر مجھے میں چالی کھلائے گئے اور ای قیاس پراپی غذا کے تمام ارکان اور ضروریات کے حال کو بھی اور جان لیس کہ میر ہے والمدین کو بھی ای طریقے ہے دُور دراز کے شہروں سے مختلف غذا کیں جمع کر کے کھلائی گئی ہیں حتی کہ میرا نطفہ ان کے جسم میں پیدا ہوا اور جو غذا میں ہرروز اس قدر متفرق اجزا کو جمع فرما تا ہے اور مہیا کرتا ہے کہ اگر بیسب پھھا کی جگہ ڈھیر کیا جائے تو آ وئی کے جسم کی تعداد سے جم میں ہزاروں مرتبہ زیادہ ہواس سے کیا بعید ہے کہ چالیس سال کی مدت میں جو کہ دو نفوں کے درمیان ہے جسم کے تمام اجزا کو جو کہ بلاشبہ اس مقدار سے کم تر ہیں مختلف اور درراز جگہوں سے مہیا کر کے گوشت اور کھال کا لباس پہنا دے۔

پھراس کے بعد کہ غذا نطفہ ہوگئ اسے کہاں سے یکجا کرتے ہیں اور اس نطفے کی راہ میں کون کون کی سخت ہڈیاں حائل ہیں جو کہ آ دمی کے جسم کے پہاڑ کی مثل ہیں اور اس کے باوجود اس نطفے کو کس تدبیر کے ساتھ مغز کے گود ہے سے باہر نکال کر آ لے کے سوراخ تک پہنچایا جا تا ہے اور وہاں سے رحم کی مجرائی میں کس طرح پہنچایا جا تا ہے اور وہاں سے رحم کی مجرائی میں کس طرح پہنچا ہے۔ چنا نچے فر مایا جارہا ہے

کیلی مین مآء دافق لین آ دی کود نے والے پانی سے پیدا کیا گیا ہے اوروہ پانی مرد اور عرص کے ساتھ الکی کی بیدا کیا گیا ہے اور اگر چہ اور عرص کے ساتھ الک کی بیدا کی اطفہ ہے جو کہ رخم میں ایک دوسر سے کے ساتھ الک جیز ہوگئ تو تغلیب کی بناء پر اس جموی مرکب پر مزد کا اطلاق فر مایا گیا اور بعض طبیب اس کے قائل جیں کہ عورت کی منی کے لیے بھی رخم کے اغدر کودنا ہے لیکن رخم کی مجرائی کے پوشیدہ ہونے کی وجہ سے محسوس نہیں موتی جیسا کہ وہ حورکت جو کہ از ال کے وقت عورت کو ہوتی ہے اس پر گواہ ہے۔ پس ان تمام مفداوں کو ہفتم کے مراحل ملے کرنے کے بعد صورت بخش اس بات کی صرت کو دلیل ہے کہ صورتوں کو بدنا قدرت النی میں ایک نہایت ہی آ سان کام ہے۔

یَخُرُ جُ مِنْ بَیْنِ الصَّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ جُوکہ پِشْتِ اور سِنے کی ہُریوں کے درمیاں marfat.com

ے نکانا ہے اس لیے کہ مادہ منوبہ پہلے د ماغ سے نیکتا ہے اور کان کی پیچیلی رگوں میں جاری ہوکر حرام مغز میں پہنچتا ہے اور حرام مغز کامحل پشت اور سینے کے درمیان ہے۔ پس مرد کا وہ مادہ پشت کی ہڈی کے مہرول سے گزر کر گردول اور وہاں سے خصیوں میں اور وہاں آلے کی بادہ پشت کی ہڈی ہے اور رحم میں گرتا ہے جبکہ عورت کا مادہ سینے کی طرف سے ای طرح گزر کرخصیوں میں پہنچتا ہے اور رحم میں گردن میں رکھے گئے ہیں اور حرکت جمائی اور گدگدی کی وجہ سے رحم کے منہ میں گرتا ہے اور رحم کے اندر دونوں پانی جمع ہوجاتے ہیں۔

یہاں ہے معلوم ہوا گہاں آیت میں اس پانی کا گزار نامقصود ہے کہ اسے کس طرح
اس وشوار اور سنگلاخ میں چاری کیا جاتا ہے جس کے دونوں طرف ہڑیاں واقع ہیں اور اسے
سنر کی انتہا تک بہنچاتے ہیں نہ یہ کہ مادہ منویہ پشت اور سینے کی ہڑیوں کے درمیان میں بیدا
ہوتا ہے تا کہ طب کے قواعد کے خلاف ہواس لیے کہ ان کے نزد کیک منی تمام اعضاء ہے ل
جاتی ہے ای لیے بیٹے میں والدین کی مشابہت کا ہر عضو میں مشاہدہ ہوتا ہے اور وہ مادہ دماغ
میں جمع ہوکر وہاں سے رگوں کے راستے کانوں کے بیچھے گرتا ہے۔

اور جب انسان کو اپنی جان کی بقاء حضرت حق تعالی کے قبضہ اور تقرف میں ہونے کا علم ہوگیا اور اپنی غذا کے متفرق اجزا کے جمع ہونے کی کیفیت اور ابتدائے خلقت میں اپنے مادہ کا وجود میں آنا اور اس کے حال کا ایک صورت سے دوسری صورت میں بدلنا اور اس کا ایک جگہ سے دوسری جگہ کی طرف گزرنا بھی ظاہر ہوگیا اور اس نے اپنی ابتدا اور دنیوی زندگی کوخوب جان لیا تو وہ آخرت میں لوشے کے مقد ہے کو بھی آئیس دو حالتوں پر قیاس کر لے گا اور اس یقین سے ثابت ہو جائے گا کہ

اِنَّهُ عَلَى رَجُوبِهِ لَقَادِرٌ مُحْقِقَ الله تعالى جوكماس فدكوره طریقے كماتھ آدى كو پيدا كرنے والا ہے يقيناً اسے لوٹانے پرقادر ہے اور صدیت پاك میں وارد ہے كہ جب الله تعالى مردول كوزنده فرمانے كا اراده فرمائے گاتو عرشِ عظیم ہے ایک ہارش نازل فرمائے گا جس كے پانی میں مرد كے ماده منوبیكی خاصیت ہے اور اس میں گرہ لگانے كی قوت رکھی گئ ہے تاكه مردہ جسم كے اجزاكوزندگی قبول كرنے كی استعداد بخشے اور اس كے ساتھ ارواح كا تعلق تاكه مردہ جسم كے اجزاكوزندگی قبول كرنے كی استعداد بخشے اور اس كے ساتھ ارواح كا تعلق

تغير عزيزي مستعمل المناسب المن

درست ہوجائے کیکن بیلوٹانا اس وقت پرموقوف ہے جس کا بیان اس آیت میں ہے۔ یَوْمَ تُبْلَی السَّرَ آیْرُ جس دن کہ پوشیدہ چیزیں ظاہر کر دی جا کیں۔

لتحقيق مقام

اوراس مقام کی تحقیق ہے ہے کہ دنیا ہیں آ دمی کے بدن کے احکام غالب ہیں اور روح کے احکام مغلوب اس لیے وہ تصنع اور تکلف کے ساتھ اپنی روح کے اوصاف کو اس حد تک چھیا سکتا ہے کہ ان کا اثر بدن پر بالکل ظاہر نہ ہونے دے۔ چنا نچے لوگ بزدئی بخل اور اپنی دوسری نم کی صفات کو تکلف اور تصنع کے ساتھ چھیائے رکھتے ہیں اور گھبراہ نے اور بے چینی کے اثر ات اپنے بدن پر ظاہر نہیں ہونے دیتے۔ قیامت کے دن بدن کا تکم مغلوب ہوجائے گا اور جوارواح گا جو تاریکی جو ہر روح بیل تفی تھی چہرے کی سیابی کے ساتھ ظاہر ہوجائے گی اور جوارواح اعضاء میں پھیلی ہوئی ہیں ان اعضاء کے کروار کی گوائی دیں گی اور باطن کی تمام صفات ظاہر اور منتشف ہوجا کی اور جب آ دمی کولوٹانا جزا پہنچانے کے لیے ہے ناچاراس وقت پر بی اور منتشف ہوجا کیس گی اور جب آ دمی کولوٹانا جزا پہنچانے کے لیے ہے ناچاراس وقت پر بی مقرر ہوگا اور اس سے پہلے اسے لوٹانا حکمت کے نقاضا کے خلاف ہے۔

اور افت پس سرائر پوشدہ چیزوں کو کہتے ہیں اور یہاں عقائد باطلہ ناپاک بیتوں اور ایجھے یُرے اعمال کے اثرات کو شامل ہے۔ جو کہ آدی کی روح میں پختہ ہو جاتے ہیں اور ایسے کہ ایسے کہ ایسے کہ سرائر سے مراد پوشیدہ گناہ اور کروفریب ہیں جنہیں دنیا میں چھپانے کی کوشش کی جاتی تھی سرائر سے مراد پوشیدہ گناہ اور کروفریب ہیں جنہیں دنیا میں چھپانے کی کوشش کی جاتی تھی اور بعض نے کہا ہے کہ اس سے مرادا یسے فرائفش ہیں کہ جن کا اوا کرنا اور نہ کرنا تھی آدی کے اور بعض نے کہا ہے کہ اس سے مرادا یسے فرائفش ہیں کہ جن کا اوا کرنا اور ذرہ وضوعت کے اس پر مطلع ہونا ممکن نہیں جھنے نماز روزہ وضوعت کی ایس بر مطلع ہونا ممکن نہیں جسے نماز روزہ وضوعت کی درمیان واقع ہیں دوسر سے لوگوں کو ان کے مطالبے کا حق نہیں اور ان کی اوا نیکی دوسروں سے متعلق نہیں ہے۔ مثل بر روزہ آدی طاہر کرے کہ میں روزے سے ہوں یا جنبی طاہر کرے کہ میں دیا اور کیا ہے یا دہ قوش کے کہ میرا وضو ہے یا وہ شخص جوسونے چاندی کی ذکو ق نہیں دیتا اور کیا ہے کہ جس نے زکو ق نہیں دیتا اور کیا ہے کہ جس نے زکو ق در بی ہے اور تعارض کیا ہے کہ جس نے زکو ق در سے میں اور اس کے کہنے پر اسے چھوڑ و بینا چاہے اور تعارض طاہر کرتا ہے کہ جس نے زکو ق در سے می ف اس کے کہنے پر اسے چھوڑ و بینا چاہے اور تعارض طاہر کرتا ہے کہ جس نے زکو ق در سے می ف اس کے کہنے پر اسے چھوڑ و بینا چاہے اور تعارض

نہیں کرنا ج<u>ا</u>ہے۔

اور تحقیق بیہ ہے کہ سرائر کالفظ ان چیزون سے زیادہ عام اور وسیع ہے۔

فکالکہ مین قُوّۃ تو آ دمی کواس روز اظہار کورو کنے اور اسرار کو چمپانے کی کوئی طاقت نہیں ہوگی جس طرح کے دنیا میں سنجا لئے اور رو کئے کی طاقت رکھتا تھا اور بے چینی کے وقت خود کومستقل ظاہر کرتا تھا اور پٹائی کے باوجود چوری اور دوسرے جرائم کا اقر ارنہیں کرتا تھا۔

وکا ناصر اوراس کا کوئی مددگار نہ ہوگا جو کہ جرم ظاہر ہونے کے باو جوداس سے اس کی سزا کو دُور کر دے۔ جس طرح کہ دنیا میں مدد کرنے والے اور ساتھی حقوق کے ثابت ہونے کے باوجود بدلہ پنچانے میں رکاوٹ بن جاتے ہیں اور چھڑا لیتے ہیں اور جب دنیا میں جرم اور گناہ سے نجات کی راہ آئیس دوطریقوں میں مخصر ہے یا تو اس گناہ کو چھپانے میں پوری قوت کے ساتھ کوشش کر کے اسے ثابت نہ ہونے دے یا ظاہر کرنے کے باوجود ساتھیوں اور حامیوں سے مدد لے کراس کی سزاسے نے جائے اس روز ان دونوں طریقوں کی ساتھیوں اور حامیوں سے مدد لے کراس کی سزاسے نے جائے اس روز ان دونوں طریقوں کی نئی کردی گئی ہے اور انہیں ختم کردیا گیا ہے تا کہ شخق تک جزائے جنچنے میں کوئی اختلاف اور کوتائی راہ نہ پائے ورنداس دن کا مسلم بھی دنیا کی طرح درہم برہم ہوجائے اور روزفصل نہ

اگر چدان آیات میں دومضمون بیان کے میے ایک تو یہ کدروح اورجم کی ترکیب کے ساتھ آدمی کولوٹانا اللہ تعالیٰ کی قدرت میں داخل ہے اور دومرا بید کہ قیامت کا دن مخفیات اور پوشیدہ چیزوں کے ظاہر ہونے کا دن ہے کہ نفس کے اندر مخفی حالات اس دن ظہور پذیر ہوں کے اور کسی حیارہ تد بیر کے ساتھ انہیں روکنا ممکن نہیں ہوگا' ان دونوں مضامین کو ٹابت کرنے کے لیے تتم کی صورت میں دواور دلیلیں بیان کی جارہی ہیں۔

وَالسَّمَاءِ ذَاتَ الرَّجْعِ بِحِصَّرُونَ واللَّمَ الن كَلَّم ہے جوكہ بميشہ حركت دوريہ من الني چيوڑى من الني چيوڑى من الني چيوڑى من الني چيوڑى موئى طرزكو بجرطلب كرتا ہے اور دن رات كے ہر دور ہے ميں اپني چيوڑى موئى طرزكى طرزكى طرف رجوع كرتا ہے۔ بعض ستارے سال ميں اور مبينے ميں اور بعض اس سے ہوئى طرز وں كى طرف رجوع كرتے ہيں تو روح انسانى كا اپنى ذاكد مدت ميں اين چيوٹى موئى طرز وں كى طرف رجوع كرتے ہيں تو روح انسانى كا اپنى

marfat.com

مچوڑی ہوئی زندگی کی طرف رجوع کرنا اور اینے پرانے بدن کی تدبیر کرنا کیا بعید ہے؟ کہ اس کی مثل عمل کا فلک کی حرکت دور یہ میں ہردن رات میں مشاہرہ ہوتا ہے۔

وَالْاَدُ ضِ ذَاتِ الصَّدَعِ اور جَصِ زَمِن كُ فَتَم ہے جو كہ پھٹے اور طاہر كرنے والى ہے۔
مار من كى نباتات اس كے باطن سے طاہر ميں آتی ہيں چشے جارى ہوتے ہيں اور اس كا كانوں سے سونا اور جواہرات نكالے جاتے ہيں تو نفسِ انسانی ميں سرد كيے گئے اسرار كا قيامت كے ون طاہر ہونا بعيد ندر ہا۔ اس ليے كہ جب خزاں كے ونوں ميں زمين كو ديكھا جاتا ہے منام نباتات اس ميں چھے ہوئے اور پوشيدہ ہيں اور جيے بى موسم بہار پہنچا اور بارش كے بانی نے زمين كو ابرا ميں خلوط ہوكر انہيں نشو ونما دى وہ تمام پوشيدہ چزيں طاہر ميں جلوه كر بوئيں اور جيے ہيں اور جيے ہيں ہوئي ہوں ہيں اور دريا كے ہوئيں اور عالم آخرت ميں روح كے اثر كے فيغان كى وجہ سے فيس كى بہي حالت ہے۔ ہو كئيں اور عالم آخرت ميں روح كو بارش پر محمول كيا ہے۔ وہ كہتے ہيں كہ زمين اور دريا كے بخارات او پر اُخھ كر جب طبق زمير ہے ہاں چہنچے ہيں تو پانی ہوكر فیک پڑتے ہيں اور اس بخارات او پر اُخھ كر جب طبق زمير ہرے ہاں چہنچے ہيں تو پانی ہوكر فیک پڑتے ہيں اور اس تفسیر پر بھی بخارات کے مادہ كے ليے اسے اصلی مكان كی طرف رجوع خابت ہوا اور وہ قسیر پر بھی بخارات کے مادہ كے ليے اسے اصلی مكان كی طرف رجوع خابت ہوا اور وہ

انسان کے عالم روحانی کی طرف لوٹنے کی دلیل ہے جو کداس کا اصلی ٹھکاند تھا اور اس بخن سے پہلامضمون ثابت ہوتا ہے۔

اِنَّهُ شخین بیہ بات کرخی تعالی انسان کولوٹانے پر قادر ہے اور اس کالوٹانا اسرار کے طاقور کے دفت کے دفت کے دفتہ کے دفتہ کے دفتہ کے دفتہ کے دفتہ کے دفتہ کے ساتھ مقرر ہے جو کہ قیامت کا دن ہے۔

لَقُولُ فَصُلُ البت ایک واضح ی بات ہے کہ جس میں کوئی شبہ نہ رہا۔ وَمَاهُو بِالْهَدُلِ اور بیہ بات کوئی ہودہ بات نہیں جس کی کوئی قوی ولیل نہ ہواور خیل کے طور پر دل میں گزری ہواور شاعروں کے مبالند کی طرح بے حقیقت ہوجس طرح کہ کفار کہتے ہیں کہ قیامت اور جزاکے دن کے متعلق انبیائے علیم السلام کے وعدے وعیدای طرح کے ہیں بیسے موہومہ چیزوں سے بچی کو ڈراتے ہیں تاکہ خوشی نہ کریں ای طرح انبیائے علیم السلام نے اس مقصد کے لیے جہال کی رسم خراب نہ ہواور کری رسمیں اور کے اعمال رائج نہوں ازرہ عمل وعدہ اور وعید کے ساتھ رغبت ولاتے اور ڈراتے ہیں۔ حقیقت میں یہ چیزیں ازرہ عمل وعدہ اور وعید کے ساتھ رغبت ولاتے اور ڈراتے ہیں۔ حقیقت میں یہ چیزیں

محالات کے قبیلے سے ہیں اور ان کے محال ہونے کو ٹابت کرنے کے لیے بعیداز امکان شہات کا ذکر کرتے ہیں۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے

إِنَّهُ مَ تَحْقِيلَ بِهِ كَفَار جُوكُةُ رَآن بِاك كُوكَام فَصَلِ تَسَلِيم بَهِي كُرِيّ بِلَكْهُ بَرَل مَكَان كريّ

یکیڈٹون کیڈا مضامین قرآن کوردکرنے کے لیے ازرہ مکروفریب حیلے تراشیے ہیں اور بعید فتم کے شبہات لاتے ہیں تا کہ عوام کے نزدیک اس کا ہزل ہونا ثابت ہو۔

واکینٹ کیٹ اور میں بھی ان کے مقابے میں اپنی خفیہ تد پیر فرماتا ہوں تا کہ اس کا مرل اور واضح کلام ہونا عام خاص کے نزدیک ظاہر ہو جائے۔ اس لیے کہ جب بھی کفار جزا اس اور نشر کے وقوع کے بعید ہونے میں کوئی شبہ بروئے کار لاتے ہے اس کے جواب میں حشر ونشر کے وقوع کے بارے میں جزا کے مقد مات کی مثال اور دلیل زیادہ واضح ہوتی یہاں تک کہ اجمال تفعیل تک جا بہنچا اور اس میں کوئی شک شبہ نہ رہا۔ پس ان کے شبہات مطالب کوزیادہ تابت کرنے اور مقعد کوزیادہ واضح کرنے کا موجب ہوئے اور کفار اس معنی کے خلاف چے کررے اور کیارائ کیں۔ کے مطلوب کے خلاف چے کو بروئے کا رائ کیں۔ اور اس کے مطلوب کے خلاف چے کو بروئے کا رائ کیں۔

اوراگر چالد تعالی قادر ہے کہ کفار کے باخبر ہونے کی صورت میں بھی اثبات مطلب کو بروئے کارلائے لیکن بے خبری کے الزام میں ان کی انتہائی ذلت ورسوائی مقصود ہے اس لیے کہ وہ بد بخت بھی اللہ تعالی کے رسولوں علیم السلام کی پریٹائی کا قصد کرتے ہے اور جب ثابت ہوگیا کہ اس وقت جو کہ نزول وقی اور اسلام کے اقدائل کا وقت تھا اور عقا کہ اسلام کو باطل کرنے میں تم تم مے شبہات لانا اس اعتبار سے کہ دلائل اسلامی کی ترتی اور اس کے عقا کہ واضح ہونے کا موجب ہے اور جب بحک وہ زندہ ہیں اور شبہات قائم کر رہے ہیں۔ گویا دلائل اسلام کی ترتی میں کوشش کر رہے ہیں اس وجہ سے کہ بخبر ہیں کفار کا ہونا عین محکمت اور سراسر منفعت ہے تو اس وقت ان کی ہلاکت کی دعا مناسب نہتی اگر چہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم جا ہے کہ وہ جلد ہلاک ہوں اس لیے ارشاد ہوا

marfat.com

فکھیل النگافیرین پس کفار کومہلت دیں اور ان کی ہلاکت کی دعا میں جلدی ندکریں تاکہ ان کے شہبات کی وجہ سے ان کے جواب میں پے در پے وی کا نزول ہواور شریعت اور دین کے حقائق اور حشر ونشر کے حالات کی کما حقہ تحقیق و تفصیل ہو سکے۔ اس کے بعد جب دین بچر سے طور پر ظاہر ہوجائے اور الزام جست اور شبہات کا ردا نتہا تک پہنچ جائے اس وقت میں بچر جہاد اور لڑائی کا تھم دیں اور آپ کے ہاتھوں انہیں ہلاک کریں۔ چنانچے فر مایا جارہا

آخید کی ابتدا ہے چودہ سال کے قریب تھا اور ای اثناء میں ان کے ولوں میں جو شہر گزرائ شریفہ کی ابتدا سے چودہ سال کے قریب تھا اور ای اثناء میں ان کے ولوں میں جو شہر گزرائ انہوں نے وارد کیا اور اس کا جواب پایا۔ اس کے بعد ان کے ذہن میں کوئی شہدند ہا اور ان کا عزاد اور سر کئی فاہر ہوگئی اور سز ااور وارنگ کے قابل ہو گئے اور اتنی مدت مہلت دیے میں نکتہ ہے کہ بید مقدار آدی کے من بلوغ کی ہے کہ جب وہ اس عمر کو پہنچتا ہے اس کی عقل اور جسم کامل ہو جاتے ہیں اور وہ سز اور جزا کے لائق ہو جاتا ہے۔ اس بعث کی ابتدا میں مکداور اور جسم کامل ہو جاتے ہیں اور وہ سز اور جزا کے لائق ہو جاتا ہے۔ اس بعث کی ورو گر اور در سر کے کفار بیکی آہتہ آہتہ شریعت کی بچو دوائل میں غور و گر اور دین کے قواعد کے حسن و جو کو جانے کی تعلیم و تربیت منظور تھی۔ اور اس باب میں مجزات اور دین کے قواعد کے حسن و جو کو جانے کی تعلیم و تربیت منظور تھی۔ اور اس باب میں مجزات اور زبری پردرش کے باوجود اور بسکھانے اور سزا دینے کے تاج ہوئے تو جہاد اور لڑائی کا تھم پوری پردرش کے باوجود اور سکھانے اور سزا دینے کے تاج ہوئے تو جہاد اور لڑائی کا تھم نازل ہوا۔

سورة الاعلى

سورة الاعلیٰ کی ہے اس سورة میں انیس (۱۹) آیات 'بہتر (۷۲) کلمات اور دوسوا کہتر (۲۷۱) حروف ہیں۔

رابطے کی دجہ

اورسورة طارق كساته اسسورة كرابطي وجديد كداس سورة بس بيان فرمايا

میا ہے کہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہر نفسِ انسانی کا ایک محافظ ہے جبکہ اس سورۃ میں اس بات کا ذکر ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کفسِ مقدس کی خود خدا تعالیٰ اس امر سے حفاظت فرما تا ہے کہ علوم غیبیہ کی وجی فراموش ہوجائے۔ نیز وہاں انسان کی تخلیق کی ابتدا کی کیفیت کا بیان ہے کہ اس کا نطفہ کہاں سے آتا ہے اور کہاں سے گزرتا ہے جبکہ یہاں اس کی تخلیق کی انتہا کی کیفیت کا بیان ہے کہ پوری تربیت کے بعد اس نے کیا صورت اختیار کی ہے۔ نیز وہاں تربیت کے بعد اس انجاز پرجنی کلام کا کیا مرتبہ ہے جبکہ یہاں قرآن پاک کے اوصاف کا ذکر ہے کہ فی نفسہ اس انجاز پرجنی کلام کا کیا مرتبہ ہے جبکہ یہاں بھی آدمیوں کی نسبت سے قرآن مجید کے اوصاف کا بیان ہے کہ اس پر عمل نجات کا موجب ہے اور اس سے روگر دانی ہلاکت کا باعث اور ان مضاحین کا آپس میں جو رابطہ ہے پوشیدہ نہیں ہے۔

وجدتنميه

اوراس سورة كا نام سورة الاعلى اس ليے ركھا كيا ہے كداس كى ابتدا ميں اسائے حسىٰ ميں سے بينام فركور ہے اوراس نام كى حقيقت اس بات پر دلائت كرتى ہے كدالله تعالى بركمال كا مرجع ہے۔ اس كمال كے آغاز ميں بھى اور انتها ميں بھى اس ليے كداس عالم ميں مرتبہ كى بلندى دو قسموں ميں مخصر ہے ايك تتم ابتداكى بلندى ہے كد كمال وہاں سے شروع ہوتا ہے اور ايك تتم انتهاكى بلندى كد كمال وہاں فتى ہوتا ہے اور جو دونوں قسموں كا جامع ہے اعلی ہے جب تن تعالى كا اس نام سے ذكر كيا كيا تو معلوم ہوا كداس كے كمالات نقصان ميں برگز نبيل رہے ور ندابتدايا انتها ميں اس كے علوم تبت ميں قصور لازم آئے۔ پس حضور صلى الله عليہ واكم كواس نام كے صرف ذكر سے ہى تعلى الحمينان حاصل ہو جائے اور قلب مقدس عليہ والا اندیشہ بالكل ذائل ہو جائے۔

سبب نزول

تغیر عزیزی بیست معانی کو لکھے بغیر اور کتاب کی طرف رجوع کے بغیریا در کھنا بھے سے کیے ممکن ان الفاظ اور ان معانی کو لکھے بغیر اور کتاب کی طرف رجوع کے بغیریا در کھنا بھے سے کیے ممکن ہوگا؟ کہیں ایسا نہ ہو کہ اس میں سے بچے فراموش ہوجائے اور رسالت کی ذمہ داری میں فرق پڑ جائے ۔ حق تعالی نے آپ کے قلب مقدس کی تسلی کے لیے بیسورۃ اُتاری اور اس میں بیٹارت دی کہ رب العزت آپ کی استادی خود فر مائے گا' آپ کو سبق فراموش ہونے کا خطرہ بالکل نہیں ہوتا جا ہے۔

ای لیے حدیث شریف میں دارد ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ دسلم اس سورۃ کو بہت پند فرماتے تنے اور اکثر اوقات وترکی پہلی رکعت اور جمعۃ المبارک کی پہلی رکعت میں اس کی تلاوت فرمایا کرتے تنے اور اکثر پہلے بزرگان دین نماز تہجد میں اس سورۃ کو پڑھا کرتے تنے اور اکثر پہلے بزرگان دین نماز تہجد میں اس سورۃ کو پڑھا کرتے تنے اور اکثر پہلے بزرگان دین نماز تہجد میں اس سورۃ کو پڑھا کرتے تنے اور اس کی برکت کے امید دار ہوتے۔

اور حفرت عقبہ بن عامر رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ جب آیت فَسَبِح بِالسّهِ دَبِّكَ الْعَظِیْمِ نازل ہوئی تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں عکم دیا کہ اس شیخ کو آپ رکوع میں کرلو۔ یعنی رکوع میں شبخان دَبِّی الْعَظِیْمِ کہو۔ اور جب آیت ' سَبِّعِ السّمَ دَبِّكَ الْاَعْلَی نازل ہوئی تو فرمایا کہ اس شیخ کو آپ ہجدے میں بجالاؤ لینی ہجدے میں سَبِّعَانَ دَبِّی نازل ہوئی تو فرمایا کہ اس شیخ کو آپ ہجدے میں بجالاؤ لینی ہو۔ نیز حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے منقول ہے کہ جو محض سَبِّعِ السّمَ دَبِّكَ الْاَعْلَى کہو۔ نیز حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے منقول ہے کہ جو محض سَبِّعِ السّمَ دَبِّكَ اللّهُ عَلَى کہو۔ نیز حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ سے منقول ہے کہ جو محض سَبِّعِ السّمَ دَبِّكَ اللّهُ عَلَى کہو تا کہ مَمْ خداو تدی کی اللّه عنہ سُبُعَانَ دَبِّی الْاَعْلَى کِمِتا کہ مَمْ خداو تدی کی اللّه علی کا شرف حاصل کرے۔

بسسم الله الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبِّحِ اسْمَ دَبِكَ الْأَعْلَى الَّيْ يروردگارك نام كو پاك جان جوكه بربلندے زياده دے۔

یہاں جانا چاہیے کہ اکثر مفسرین کے نزدیک نام کو پاک جانا ذات کو پاک جانے سے کنایہ ہے اس لیے کہ حرب کا قاعدہ ہے کہ تعظیم وادب کے مقام میں ذات سے نام کے ساتھ تعبیر کرتے ہیں جیسا کہ عرف میں مشہور ہے کہ بادشاہوں اور سرواروں کو خطاب کرتے ہیں جیسا کہ عرف میں مشہور ہے کہ بادشاہوں اور سرواروں کو خطاب کرتے ہوئے جیسے ہیں کہ حضرت کے نام سے بیکام ہوگیا اور بید فتح میسر آئی اور آگر سمح ربک کہا جاتا

تو تعظیم وادب کی رعایت حاصل نہ ہوتی۔ نیز حضرت حق جل شانہ کی ذات کواس کے سواکوئی نہیں جانتا تو اس کی ذات کو پاک جانے کامعنی یمی ہے کہ اس ذات پاک پر ناقص اور خلاف ادب ناموں کا اطلاق نہ کریں۔

ذات حق كوياك جاننے كامفهوم

اور ذات حق کو پاک جانے کامعنی جس قدر شریعت میں وارد ہے رہے کہ اجمالی طور پر جانتا چاہیے کہ اللہ تعالیٰ کی ذات محتول واد ہام کی گرفت سے بالاتر ہے اور کوئی غیرموزوں وصف 'نقصان اور عیب اس کے سراپر دہ جلال کے قریب نہیں پھٹھا۔

اور تفصیل کے ساتھ بجھنا چاہے کہ وہ ذات اقد س جو بر نہیں اور جسم نہیں ہے اور عرض

نہیں ہے اور کل اور بعض کی اس میں کوئی مخوائش نہیں ہے اور اسے صورت ؛ جہت صدانتہا مکان

اور مجلس بالکل لاحق نہیں ۔ اور کوئی شے اس کے مشابہ نہیں ہے اور وہ کسی چیز کے ساتھ مشابہت

نہیں رکھتا ۔ پس مثل اور شریک ہے بیوی اور بیٹے ہے اور کھانے پینے اور ان سب چیزوں

ہوں دو دو دے کولازم ہوں یا زوال وفا کا موجب ہوں وہ ذات پاک منزہ اور مبراہے۔

اورمغرین کی ایک جماعت نے کہا ہے کہ جس طرح اللہ تعالی کو پاک جانا فرض ہے
اسی طرح اس کے اساء کی تعظیم اور احترام بھی واجب ہے۔ پس اس آیت بی اللہ تعالی کے
ہام کو پاک رکھنا مراد کیوں نہ ہوگا۔ اور اللہ تعالی کے اساء کو پاک رکھنا ہے ہے کہ اس کا نام اس
چیز سے نہ لیس جو نقصان اور عیب پر والمات کرے اور اس کے ناموں کو اس کے غیر پر جاری
نہ کریں اور اللہ تعالی کے نام کا ذکر تعظیم کے طریقے طہارت کی شرط حضور قلب اور کمال توجہ
نہ کے ساتھ بجالا ئیں تا کہ اس سے ول کی صفائی حاصل ہواور اچھے نتائے کی آ مرہوں۔

ما در طاہریہ ہے کہ اعلی رب کریم کی مغت ہے اس لیے کہ اگلی مفات یعنی اَلَّذِی خَلَقَ فَسَوْی وغیر ہا مفاتِ رب میں نہ کہ مفاتِ اسم اور بعض صوفیاء نے فرمایا ہے کہ اعلی صفتِ مفت

تضوف كاايك مسئله

اور وہ مسائل تعنوف میں ہے ایک مئلہ کی طرف اشارہ ہے اس لیے کہ اہلِ تقنوف marfat.com

کنزدیک مخلوقات میں سے ہر مخلوق کے لیے اسائے الہید میں سے ایک رب ہے جو کہ اس مخلوق کے تعین کا مبداء اور اس مخلوق کی انتہا کا مرجع ہے اور اس کے سنر کا منتی ہے اور دہ مصحدی علی صاحبھا الصلوة والتسلیمات جو کہ اکمل مخلوقات ہے کا رب اسم اعلی ہے اور وہ ذات مع جمیع الصفات سے عبارت ہے اور اس اسم کی شیخ کا معنی یہ ہے کہ حق کے ماموا سے تجرد افقیار کرو اور غیر کو دیکھنے سے اپنی حفاظت کرو تا کہ تمہاری ذات پر کمالات ماموا سے تجرد افقیار کرو اور غیر کو دیکھنے سے اپنی حفاظت کرو تا کہ تمہاری ذات پر کمالات حفائیہ پورے طور پر تجلی فرما کی کیونکہ تمام کمالات الہید وقبول کرنے کی مکمل استعداد ذات محمدی علی صاحبھا الصلوة والتسلیمات کے سواکسی مخلوق کو حاصل نہیں ہے اور ہر چیز کی شیخ جو کہ اس چیز کے ساتھ خاص ہے اسائے الہید میں سے اس اسم کی شیخ ہے جو کہ اس چیز کا مر بی اور اس کے کمال کا مرجع ہے۔

(اقول وبالله التوفیق جب کمالات البید حضور سید عالم صلی الله علیه وسلم پر پورے طور پر متجلی ہیں جیسا کہ مفسر علام نے نقل فرمایا تو ان کمالات حقانیہ کے جلوؤں ہے ذات باک صبیب علیہ الصلوق والسلام روشن اور منور ہے اور آپ کی ذات مقدس کمال کی ہر نقیض ہے یاک ہے۔ بچ فرمایا حضرت بیخ محقق دہلوی رحمۃ الله علیہ نے

برنعمة كدداشت خداشد بردتمام

لا ورب العرش جس کو جو عدان سے ملا

بنتی ہے کوئین میں نعمت رسول اللہ کی

(التاقل محمد محفوظ الحق غفرله)

خلاصہ کلام بیر کہ اس اسم کو یہاں لانا اس مقعد کو بیان کرنے کے لیے ہے کہ اے حبیب یاک علیک السلام کہ آپ میں جو کمال بھی متجلی ہوا ہے اس کے نقصان کا خوف نہ كرين اس فيليك آب كا برورد كاروبى باعلى جوكه بركمال كامبداء اورمرجع باور برجيز کواپی شان کے لائق کمال کی حد تک پہنچا تا ہے اور جمیل وتربیت میں اس کے افعال ناتص نہیں رہے۔ چنانچہ اس مقصد کی گواہی کے لیے اور بیٹابت کرنے کے لیے کہ اللہ تعالیٰ ہر كمال كامبداء اورمرجع بيئن اورصفات لاكرفر مايا جار ہا ہے۔

الَّذِي خَلَقَ فَسَوى آب كايروردگاروه ذات ہے جس نے ہر چيزكو پيدا فرمايا۔ پس اسے بورا فرمایا اور معتدل بنایا۔ حاصل مخفتگو رہے کہ اس نے ہر چیز کی پیدائش کو اس چیز سے مقصودخواص منافع اورفوا كدكے اعتبار ہے حد كمال تك پہنچایا اوراہے ایک خاص مزاج بخشا جو کہاس کمال کو قبول کرے اور اس سے وہ مناقع اور فوائد ظاہر ہوں۔ چٹانچے جو مخص انسان اور ہاتھی سے لے کرمچھراور بہوتک کا مطالعہ کرے اور اس طرح نباتات کا بحس کرے تو یقین سے جان لے کہ ہر چیز کواس کے فوائد اور منافع حاصل کرنے کے اسباب عطافر مائے

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدى اورآب كايروردگاروه ذات ہے جس نے بركى كے ليےكوئى نہ كوفى كمال مقدر فرمايا۔ يس اس في اس چيز كواسين كمالات حاصل كرنے كى راه وكھائى ہے يهال تک كه لمال كے بيث ميں بيچكو بيث سے باہرة نے كى كيفيت الهام فرمائى جاتى ہے۔ ا اور پیٹ سے باہر آتے ہی اے بہتان سے دودھ چوسنے اور رو کر شکایت کا اظہار كرف كااليام موتا ب-اور برزكو ماده يركودن ياني من تيرن كنوال بيجان اورروزي کی دوسری مسلحتی غیب سے تلقین کی جاتی ہیں اور شہد کی کھی کو ماہر انجینئر بنایا گیا ہے کہ عجیب محمر بناتی ہے پھراس سے شہد نکالتی ہے۔ اور کہتے کہ افعیٰ جوکہ ایک سخت زہر یلی قتم کا سانب ہوتا ہے موسم سرما میں ہوا کی شندک کی وجہ سے اندھا ہوجاتا ہے اور جب بہار کے دن آتے marfat.com

ہیں تو سونف کے پودے کا قصد کرتا ہے اور اپنی آنکمیں اس کے پتوں پر تھجلاتا ہے تا کہ بینا ہوجائے۔

اور وہ الہامات جو کہ پرندول وحتی جانورول چار پایوں اور کیڑوں کوڑوں کوروزی کے اسباب حاصل کرنے توالد و تناسل اور دوسرے منروری امور میں ہوتے ہیں جائب المخلوقات کی کتابوں میں شرح و بسط کے ساتھ بیان کیے گئے ہیں اور حکماء نے کہا ہے کہ ہر مزان ایک خاص قوت کی استعداد رکھتا ہے اور ہرقوت ایک کام کی لیافت کے لیے معین ہوتو تنام میں بات سے عبارت ہے کہ جم کے اجزا کو اس طرح مرکب کیا جائے کہ ایک قوت کو قدر کو تول کرنے کے لیے مستعد ہو جبکہ ہدایت اس قوت کا فیض دینے سے عبارت ہے تا کہ معین کام کام مصدر قرار یائے اور اس انداز تقرف سے جہان کی مصلحوں کا انتظام ہو۔

وَالَّذِی اَخُدَ ہَ الْمَدُعٰی اور تیرا پروردگاروہ ذات ہے کہ جس نے اپنی قدرت سے
اس چیز کونکالا جسے جانور چرتے ہیں مشم کی محماس جسے چار پائے اور وحثی جانور کھاتے ہیں
اور رنگار تگ پھول کہ شہد کی معمی اور دوسرے پرندے اسے غذا بناتے ہیں اور شم شم کی کھیتیاں ،
میوے اور پھل جنہیں انسان اور بعض جانور کھا کرنع یاتے ہیں۔

فَجَعَلَهُ عُفَاءً آخُولی پی اس چراگاہ کوخٹک سیاہ کردیا کیونکہ موسم سرما کی خشکی اور معندک کی ویکہ موسم سرما کی خشکی اور معندک کی وجہ ہے اس کی رطوبت اور تری زائل ہو جاتی ہے اور خشک اور سیاہ ہو کر ذخیرے کے کام آتی ہے تاکہ نہ ملنے کے وقت صرف ہو سکے۔

ندکورہ تین صفات کے بیان کی صمت

Marfat.com

لخزي

اعتدال اعضاء کے تناسب اور ہاتھ کو ہاتھ کے ساتھ کان کوکان کے ساتھ آنکھ کو آنکھ کے آ ساتھ اور پاؤں کو پاؤں کے ساتھ برابر کرنے کی رعایت کمال اور خوب صورتی کے ساتھ ہارے مشاہدے میں ہے اور محسوس ہورہی ہے۔

اور کمال ذاتی کو جوکہ روح کے ساتھ تعلق رکھتا ہے ٹابت کرنے کے لیے وَالَّذِی قَلَّدَ فَهَائی الله الله کیا اس لیے کہ ارواح کو استعدادوں کے اندازے کو مختلف کرنا پھر استعداد کے مطابق راہ دِ کھانا تا کہ اس کمال کو حاصل کرے جو کہ اس کی استعداد کے لائق ہے بھی مشاہدے میں ہے اور محسوس ہورہا ہے۔

اور وہ کمال جس کا تعلق دوسرے کو نفع دینے کے ساتھ ہے ٹابت کرنے کے لیے وائی فی اُخد ہے الکہ دُعلی فَجَعَلَمُ عُفاَۃً اُحُویٰ لایا گیا ہے اس لیے کہ گھوڑوں کا چارہ انسانوں کی غذا اور شم می خوشبویات اور ملبوسات اور یات اور زہریں پیدا کرنا اور انہیں ایک وقت تک ترادت اور رطوبت کے ساتھ نشو ونما دینا اور اس کے بعد رطوبتوں میں خشکی اور شعند کے ساتھ نشا کہ ویک مسلط کر کے ان سے فضلہ وُور کرنا تا کہ طویل مدت تک پڑے دہنے کی وجہ سے ان میں تعفن پیدا نہ ہواور انہیں ذخیرہ کیا جا سکے اس کمال کی ابتدا اور انہا پر تو ی دلیل ہے۔

اور جب معلوم ہوگیا کہ تن تعالی رب اعلیٰ ہے کہ ہر کمال کا مرجع ہے ابتدا میں بھی اور انتہا میں بھی اور انتہا میں بھی اور انتہا میں بھی اور انتہا میں بھی اور آپ کو اس کے نام کی تبیع کی وجہ سے اس ذات پاک سے عظیم مناسبت حاصل ہوگئی تواہیے کمال کے نقصان کے متعلق فکر مندندر ہیں اس لیے کہ

سَنُقُرِئُكَ ہم آپ كوقر آن اور اس سے نظنے دالے بے انتہا علوم خود پڑھا كيں گے اور آپ اس تختی کے اور آپ اس تھا ہے اور آپ اس تھا ہے قلب مقدس كا تصفير فرما كيں تاكہ كوئى تجاب نہ ہو۔

فَلَاتَنْسٰی پی آب بہیں تھولیں مے اس لیے کُہ تعقیہ قلب کی وجہ سے آپ کی استعداد کامل ہوجائے کی اور نیبی فیض کے آمے کوئی حجاب نہیں ہوگا۔

آلا مَاشَآءَ اللّٰهِ لِین جوعلوم غیب آپ کی استعداد کے لائق ہیں اور روز بیناق جو کہ استعدادات کی تقسیم کا وقت تھا' آپ کے جصے میں آئے ان میں ہے آپ کوئی چیز فرام دش نہیں کریں گے محرجو خداتعالی نے چاہا ہے اور اس کی حکمت تقاضا فرماتی ہے کہ اس دنیا میں مہیں کریں گے محرجو خداتعالی نے چاہا ہے اور اس کی حکمت تقاضا فرماتی ہے کہ اس دنیا میں

آپ کے ذہن سے فراموش ہو جائے تاکہ قیامت کے دن محمود کے حصول کے لیے ذخیرہ ہو۔ چنانچہ حدیث شریف میں وارد ہے کہ مقام محمود میں مجھے اس قتم کے محامد اللی تعلیم دی جا کیں گی جو کہ اس وقت میرے ذہن میں حاضر نہیں ہیں اور بلا شہدوہ محامد اللہ یہ حضور صلی اللہ علیہ وہلم کی استعداد میں درج تھیں اور آپ عالم روحانی میں ان محامد پر اجمال توجہ رکھتے علیہ وہلم کی استعداد میں درج تھیں اور آپ عالم روحانی میں ان محامد پر اجمال توجہ رکھتے تھے۔ کو یااس دنیا میں کی حکمت کی بناء پر ان سے بے تو جی کرائی گئی تھی۔

اور بعض قرآنی آیات جو که فراموش کرا کر حضور صلی الله علیه وسلم کے سینۂ پاک کی حتی ے محوہوئیں وہ بھی ماشاء اللہ میں داخل ہیں کیونکہ فراموش کرانا بھی تننح کی ہی ایک فتم ہے۔ چنانچەسورۇ بقرە میں فرمایا گیا ہے كه مَانَنْسَخْ مِنْ آیَةِ أَدُ نُنْسِهَا نَانْتِ بِعَیْرِ مِنْهَا أَدْمِ ثَلِهَا لَيْنَ جَانَا جِابِي كَهْ فراموش كرانا نَنْحُ كَى علامت أَس وقت ہوگا جب حَضور صَلَّى الله علیہ وسلم اور اُمت کے سب قاریوں کے سینے سے محوہوجائے ورنہ حدیث سیح میں وارد ہے کہ ایک مرتبہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نماز کی قرائت میں ایک آیت چیوڑ مے نماز کے بعد آپ نے الی بن کعب رضی اللہ عنہ سے بوچھا کہ کیا میں اس سورة میں ایک آیت چھوڑ گیا ہوں؟ الى نے عرض كى بال يارسول الله! فلال آيت ره كئي۔ فرمايا تونے ياد كيوں نه كرائى؟ عرض كى که میں سمجما که بیه آیت منسوخ ہوگئی۔فرمایا منسوخ نہیں ہوئی میں فراموش کرحمیا تھا اگر منسوخ ہوتی تو میں تہیں اس کی خرریتا۔ (اقول و باللہ التو فیق سہودنسیان کے متعلق اکابرین كى رائے يد ہے كدنى عليه العلوٰة والسلام برمبودنسيان جائز ہے ليكن صرف وہاں جہال مسئله شرى جارى كرنا مراد بو_ چنانچه عدة القارى از علامه بدرالدين محود عنى رحمة الله عليه جس ص ١٩٠٠ ي -- أن السهود النسيان جائزان على الانبياء عليهم الصلوة والسلام فيما طريقه التشريع. محمنون التح تغرل) ..

اِنَّهُ یَعُلَمُ الْجَهُدَ وَمَا یَعُفیٰ تحقیق الله تعالیٰ آپ میں جلوہ گران کمالات کو جانتا ہے جو بالکل آشکار ہیں اور ہرکس و ناکس انہیں و یکھا اور جانتا ہے اور جو پنہاں ہیں یعنی ابھی تک آپ کے نہانخانہ استعداد میں ہیں جو کہ صلحوں کے مطابق اپنے وقت پر قوت سے نعل میں ظہور کریں گے اور جسسنور صلی الله علیہ وسلم کو اپنی استادی کے ساتھ تسلی وے وی

گئ تا کہ قرآن کے حفظ ہے آپ کا دل فارغ ہواور آپ کومعلوم ہو کہ پورا قطعا اور یقینا بارآ ورہونے والا ہے ایبانہیں ہے کہ بشری اساتذہ کسی کی تعلیم کے دریے ہوتے ہیں اور وہ فخص اُلجھنوں اور رکاوٹوں کی بناء پر کمال تک نہیں پہنچ پاتا اور تاقص رہتا ہے اب دوسرے علوم کی حفاظت کے متعلق آپ کومطمئن فرمایا جارہا ہے کہ

و نَیْزِیدُ کَ لِلْیُسُدِی اور ہم آپ کے لیے آسانی کی راہ چلنا آسان کردیں گے جو کہ اللہ تعالیٰ کی طرف سب سے قربی راستہ ہے عبادت میں ہمی اور ملک و ملت کی سیاست میں بھی ۔ پس وہ علوم جو ان تینوں چیزوں کے ساتھ متعلق ہیں فوارے کی طرح آپ کے قلب مقدس سے جوش ماریں گے اور آپ کو ان علوم کے حاصل کرنے میں کوئی مشقت نہیں ہوگ اور آپ کو ان علوم کے حاصل کرنے میں کوئی مشقت نہیں ہوگ اور آپ کو ان علوم کے حاصل کرنے میں کوئی مشقت نہیں ہوگ اور آپ کو ان علوم کے حاصل کرنے میں کوئی مشقت نہیں ہوگ اور آپ کی کتاب دستور العمل 'مرشد اور استاذ کے عتاج نہیں ہوں گے۔

اور جب بیم معاملہ ایسا ہو آپ کو تران پاک اور دوسر علوم یادکرنے میں مبالغ اور کوشش کی ضرورت نہیں ہے بلکہ آپ کو چاہیے کہ دوسر دل کوان کے بحولے ہوئے علوم یاد ولائیں اور آپ کمال سے کممل کرنے والے بنیں کہ آپ کوصرف اُمت کے دُکھ تکلیف اور شخیل سے لیے بعیجا گیا ہے آپ کی پخیل ہمارے ذمہ کرم پر ہے۔ چنا نچ فر مایا جا رہا ہے کہ فکی گئے گئے اِن تفقت اللّه تحریٰ تو آپ لوگوں کو یاد دِلا ئیں اگر یاد دِلا تا اور نفیحت کرنا فع دے تاکہ آپ کا کمال آگے ہوئے جا میں۔ ففع دے تاکہ ایس سوال

گان کے ساتھ مشروط ہے اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا منصب ہرکی کو یاد ولانا اور عظار تا نہیں ہے ہاں علم اللی کی تبلیغ اوراس کے عذاب سے ڈرانا تا کہ الزام جمت ہواور جہالت اور نہ جانے کا عذراً تھ جائے ہرکی کے نبیت سے ضروری ہے لیکن اسے تذکیر و موعظت نہیں کہتے اور سورہ عاشیہ بیں قول میچ کے مطابق کہ الامن تولی و کفر بیں استثناء فدکر سے ہاس شرط کی صراحت بچھ بیں آتی ہے اور کہا جا سکتا ہے کہ بیشرط تذکیر کے امرکی تاکید کے لیے ہوئی اگر کی کو تذکیر نفع دے تو آپ کو اسے تذکیر لیعنی یاد ولانا چاہے اور یقین ہے کہ جہان میں کی کو تذکیر فوق تذکیر مرور نفع کرتی ہے کہ تاکید کا موجب ہے۔ چنان چہ حدیث میں کہ تعدی ماتھ کی مقابلہ میں الاحمد محدد شون فان یک فی احتی احد فاند عدر دوسوالات اور ان کے جوایات

اور یہاں دواورسوالات تفاسیر میں ندکور میں انہیں جوابات سمیت لکھا جاتا ہے۔ پہلا سوال یہ ہے کہ شرط کے ساتھ معلق کرنا اس کے حق میں بجا ہے جسے کام کے انجام کی خبر نہ ہو اور حق تعالی جو کہ علام الغیوب ہے اس کے کلام میں تعلیق بالشرط کا کیا مقصد؟

اس کا جواب یہ ہے کہ انبیا علیم السلام کی دعوت اور ان سب کی بعثت ظواہر پرجی ہے مخفیات پرنہیں ای لیے حضرت موئی علیہ السلام نے حضرت خضر علیہ السلام کی حرکات پر گرفت فرمائی جو کہ بظاہر درست نہ تعیں اور باطن میں انہی تعیں نیز فرعون سے خطاب کے بارے میں حضور موئی علیہ السلام کو ارشاد ہوا کہ فقولا لکہ قولا لیکنا لکھکہ یکند تحق بارے میں حضور موئی علیہ السلام کو ارشاد ہوا کہ فقولا لکہ قولا لیکنا لکھکہ یکند تحق اور است کریں ہوسکتا ہے کہ وہ تھیجت تبول کرے یا خدا سے فررے حالانکہ علم اللی میں یہ بات مقررتی کہ وہ تھیجت تبول نہیں کرے گا اور خدا تعالیٰ سے نہیں ڈرے گا۔

دوسراسوال بہہے کہ وعظ کو تذکیر کا نام کیوں ویا گیا حالانکہ لغت میں تذکیریاد ولانے معنوں میں تذکیریاد ولانے کے معنوں میں ہے جو پہلے سے معلوم ہواور فی الحال فراموش ہوگئی ہو۔

اس کا جواب ہے ہے کہ دین عرادت خداو عمی اور و حید کی خوبی بن آ دم کی عقاوں میں جبلی اعتبار ہے گری ہوئی ہے۔ چنانچ فرمایا گیا ہے کہ فطرة الله التی فطر الناس علیها تو گویا امور دین کے متعلق علم برخض کے نفس میں عاصل تھا فطری اُ بجنوں اور رکا وٹوں کی وجہ ہے کھول گیا۔ اب انبیاء علیم السلام کی وعظ وقسے ساس کھولے ہوئے علم کو یاد ولانے کے مرتبے میں ہیں اس لیے بعض عقل والوں نے کہا ہے کہ بنی آ دم کی ارواح بدن سے متعلق ہونے سے بہلے ان چزوں کو جانے والی تعین جنہیں جانتا ضروری ہے جب اس دنیا میں تدبیر بدن میں لگ گئی تو سب بچو کھول گیا جیسا کہ شدید بڑھا ہے کی عالت میں جبکہ شریع بدن میں لگ گئی تو سب بچو کھول گیا جیسا کہ شدید بڑھا ہے کی عالت میں جبکہ تدبیر بدن مشکل ہو جاتی ہے سابقہ معلومات فراموش ہو جاتی ہیں تو آئیس بچی فراموش شدہ معلومات انبیاء علیم السلام اور واعظوں کے ذر سے یاد کرائی جاتی ہیں۔ چنانچہ حدیث الادواح جنود مجندة ما تعارف منها ائتلف وما تناکر منها اختلف سے اس المار میں جاس سے معلومات کی مبک سونگھی جاسے ہیں جاس سے معلومات کی مبک سونگھی جاستی ہے۔

اور افلاطون سے منقول ہے کہ وہ اپنے شاگردوں سے کہنا تھا کہ میں تہمیں وہ نہیں پڑھاتا جوتم جانتے تھے اور جب بدیان پڑھاتا جوتم جانتے تھے اور جب بدیان فرمایا گیا کہ آپ کو تھو آ کہ اس کا بیان ہور ہا ہے گیا کہ آپ کو تھو تھا کہ اس کا بیان ہور ہا ہے جو کہ نی علیہ العمل ہ و السلام کی وعظ سے نفع حاصل کرے گا۔

میکا کی من یکی من یکی فریب ہے کہ وہ فض تعیدت قبول کرے جو کہ خدا تعالیٰ سے درتا ہے بعث اگر چہ آپ برعموی طور پر وعظ کرنا فرض ہے لین برخض اس سے نفع نہیں پائے کہ اس کا بلکہ اس کا فی استعداد کی شرط کے ساتھ مشروط ہے اورای لیے کہا کمیا ہے کہ ۔

امل استعداد شرط معبت است
مرد چوں کو رست عینک لعبت است
مرد چوں کو رست عینک لعبت است
مین معبت شیخ کے لیے درامل استعداد شرط ہے جب آ دمی اندھا ہوتو عینک ایک معلونا

اور خونب خداکی علامت دل کی نری اور معنوی مصاحبوں کی باطل تنم کی باتوں ہے marfat.com

فطرت کامحفوظ ہونا ہے تا کہ روح کی نورانیت اور صفائی تاریکی اور کدورت میں نہ بدلے اور نبوت کی شعاع کا عکس تجول کرے اور بعض مغمرین نے اس آیت کا معنی یوں کیا ہے کہ اگر ایک بارھیجت کریں اس لیے کہ جوایک بارھیجت کرنے ایک بارھیجت کرنے اس سے خدا سے قدر جائے وہ جلد پوری تھیجت حاصل کرلے گا اور اس صورت میں اعتراض بھی بالکل زائل ہو گیا اور جے تھیجت کرنا نفع دے اس کی علامت بھی درمیان میں آئے گی۔ اور بالس خیل جو کہ تحرار کرنے پر دلالت کرتا ہے اس معنی کے ساتھ پورے طور پر مناسب ہو گیا اور جب نفیعت سے نفع پانے والوں کے بیان سے فراغت ہوئی اب نفع نہ لینے والوں کا بیان ہور ہا ہے۔

وَیَتَعَبِیْهَا الْاَشْقَی اوراس لیبحت سے وہ فض کنارہ کرے گا جو انتہائی بدبخت ہے اور در حقیقت بیدوہی ہے جے کوئی خوف خدائیں ہے اور کفروعناد میں غرق ہے۔ پس حقیقت کلام اس طرح لاناتھی و یَتَعَبِیْهَا مَنْ لَایَغُشیٰ لیکن اس حقیقت کو جنلانے کے لیے کہ جے خوف خدائیں وہ انتہائی بدبخت ہے اَشْقی کو مَنْ لَایَغُشیٰ کی جگہلایا میا۔

یہاں جانا چاہے کہ آ دی کی بریخی یہ ہے کہ اس کا اعتقاد اور عمل درست نہ ہواور جس
کا عمل نادرست اور اعتقاد درست ہو وہ بھی تقی ہے لیکن جوعقیدہ بھی غلار کمتا ہے وہ اس ک
نبست زیادہ بد بخت ہے پھر اگر اس کے اعتقاد جس کوئی کو تائی نری ناوائی کی وجہ ہے یا سب
جہالت سے مانوس ہرنے اور فدا بب باطلہ جس سے کی فد بب کا مقلد ہونے کی وجہ ہو
تو اے عمکن ہے کہ نیکوں کی صحبت اور مرشد کے جمانے سے داستے پر آ جائے اور جس کا
عقیدہ عناد کی وجہ سے خراب ہے کہ جان ہو جو کر اس نے حق کے انگار کی مشل کی اور اس کی
ماستعداد کے آئے نے پر گھرا پر وہ پڑ گیا اس کی اصلاح مسلم کی تعلیم اور مرشد کے اور شاک کی اور اس کی
استعداد کے آئے نے پر گھرا پر وہ پڑ گیا اس کی اصلاح مسلم کی تعلیم اور مرشد کے اور شاک کے بارے جس ہے
ہرگر ممکن نیس ری وہ بدختی کی ایچا کو بی گھی گیا۔ او بیشے الایات والا در اس کے بارے جس ہے
برگر ممکن نیس ری وہ بدختی کی ایچا کو بی تھی تھی دیے اور اس آ یہ بھی انتخاص ہے کہ اور اس کے کام کا انتجام ہے کہ

قَيْنَ يَصْلَى النَّارَ الْمُكْبُرِي بِيض وه ہے اور الله على والل ہوكا جس كا

حال سورہ واللیل میں اس جگہ ہے جہاں فر مایا گیا ہے کہ فَانْفَدُ تُنْکُدُ فَادًا تَلَظَی اور وہ ایک ایس آگ ہے جو دوزخ کے نچلے طبقے میں ہے جو کہ ساتویں نہ ہے جو کہ آل فرعون اور اس اُسی آگ ہے جو دوزخ کے نچلے طبقے میں ہے جو کہ ساتویں نہ ہے جو کہ آل فرعون اور اس اُمت کے منافقوں اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے مائدہ کے منکروں کی جگہ ہے اور دوسری تہوں کی آگ سے زیادہ تیز اور جلانے والی ہے۔

اوراگرچہ کے حدیث میں وارد ہے کہ نار کھ ھذہ جزء من سبعین جزء من نارجھند کلھن مثل حرھا لینی ہے آت ونیا گری میں جہنم کی آتش کا سروال حصہ ہے۔ پس جہنم کی آگ کی اصل دنوی آگ کی بہنست بہت بردی ہے ای لیے حسن بھری وحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا ہے نار کبری جہنم کی آگ ور نار مغری دنیا کی آگ ہے لیکن جو آگ اس نہ میں ہے وہ دوسری تہول کے مقابلے میں وہی تھم رکھتی ہے جو کہ جہنم کی آگ وندی ہے۔

اورگری کی زیادتی کی وجہ سے اس آگ کو دوسری آگوں کے مقابلے میں ایک مثال کے ساتھ ذہن میں لانا چاہیے کہ سرد علاقوں میں بارش برف اور بجر پورسرد بوں کے وقت شندگ کے کام میں جیسے ملاحی اور پانی بجرنا خصوصاً شمنڈی عمر اور شمنڈ میں جیسے کہ بلغی مزاج بوڑھا اس قدر جلن رکھتی ہے کہ اسے بدن پر برواشت نہیں کیا جا سکتا پجر ای آگ کوگرم علاقوں میں موسم گر ما کے سورج کی میں گری اور گرم کام میں مشغول ہونے میں جیسے باور پی گری اور روٹی پکانا خصوصاً جب مفراوی مزاج آدی جو کہ روزہ وار اور بخار میں جمال ہو قیاس کرنا چاہیے کہ کس قدر فرق ہے اور اس قیاس پر اس آگ کی گری کو دوسری قدر فرق ہے اور اس قیاس پر اس آگ کی گری کو دوسری آگوں کی گری کے مقابلے میں بھتا چاہیے۔ اللہ تعالی آگ کی سب اقسام سے اپنی پناہ میں مسکھے۔

اور جب دنیا میں آدمی کو جومعیبت بھی چین آتی ہے اس کا آخرانجام یہ ہے کہ موت
کک پنچاد تی ہے اور موت اس مصیبت سے راحت اور خلاصی پانے کا موجب ہوجاتی ہے
جبکہ اس بد بخت کو اس راحت سے بھی محروم کر دیا محیا ہے کہ اس قدر شدت کی گری کے
باوجود ہلاک نہیں ہوتا۔ چنانچ فر مایا جا ۔ ہا ہے

نع کیکوٹ فیما ہراس قدر عذابی شدت اور اتی طویل مرت اس آگ میں رکھنے کے باوجود نیم مرے گا کہ مرکزاس کے جسم کا ڈھانچہ کمل جائے اور جدا جدا ہو جائے اور اس کی روح اس کی کہ مرکزاس کے جسم کا ڈھانچہ کمل جائے اور جدا جدا ہو جائے اور اس کی روح اس کی کہ مرکزاس کے کہ اس جہان کے جسموں کے ڈھانچوں کا کھلنا اور بھرناممکن نہیں ہے اور اس میں رازیہ ہے کہ اس جہان میں روح کے احکام بدن پر غالب آتے ہیں اور ابدان کو ارواح کا تھم مل جاتا ہے اور روح کو معدوم ہونا محال ہے ای خالب آتے ہیں روح معدوم نہیں لیے دنیا میں کرچہ معیمتیں اور نا قابل پر داشت مدے پیش آتے ہیں روح معدوم نہیں ہوتی بلکہ آسے انتہائی ہے جینی اور تکلیف میں چھوڈ کر چلی جاتی ہے اور جب وہاں کے جسموں کو ارواح کا تھم حاصل ہو جائے گا تو ان کی ترکیب کا بھم زنا ہی محال ہو جائے گا۔

و کلایکٹی اور نہ زندہ رہے گا اس لیے کہ وہ اس کی روح دائمی طور پر درد اور عذاب میں ہے یہاں تک کہ وہ موت کی آرز و کرتا ہے اور موت نہیں آتی اور اس فتم کی زندگی حقیقت میں زندگی نہیں۔ بیت

> عمر چول خوش گزره زندگی خعنر کم است وربتا خوش گزره نیم نفس بسیاراست

یعن جب عرخوشی میں گزرے تو عرضان بھی تعوزی ہے اور اگر تکلیف میں گزرے تو آ دھا سانس بھی بہت ہے ہاں اس کے جسم کی کھال آگ کی تا شیر سے جل جائے گی پھر روح کے غلبے کی وجہ سے آتا فانا دوسری تازہ کھال جسم پر آگ آئے گی جس میں درد کے احساس کی قوت پہلے سے زیادہ قوی ہوگی جیسا کہ دنیا میں زخم پر انگور آنے کے بعد مشاہدہ ہوتا ہے۔

اور جب آبت سَمَّدٌ تَحُدُمُنْ يَعْضَى مِن ال مُحْمُ كابيان كياجا چكا جوكه انبياء عليم السلام كي نفيت سن عاصل كرتا ہے اب فرمايا جارہا ہے كه بزرگوں كى وعظ ونفيحت سن كرآ دى كے ول ميں خوف اللي پايا جانا كمال كى ابتدا ہے كمال كى انتها اور چيز ہے صرف خوف بائے جانے پراعتاد نبيں كرنا چاہيے كه اگر وہ خوف ول ميں پيدا ہونے والے خيال كى خوف بائے جانے پراعتاد نبيں كرنا چاہيے كه اگر وہ خوف ول ميں پيدا ہونے والے خيال كى طرح آيا اور چلا كيا تو كوئى فائدہ نبيں۔ جب وہ ول ميں جاگزيں ہواور تو توں اور اعضاء كو

نامناسب کاموں سے روک دے اور مناسب کاموں پر پابند کر دے تو اس وقت وہ قابلِ اعتبار ہے اور نجات کاموجب

قَدُ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى تَحْقِيق وه ظلمي بالمياجس في إكيز كي عامل كي-

یا کیزگی کی چندانسام

اور پاکیزگی کی چند قسمیں ہیں۔ پہلی قسم کا کفر شرک عقائد باطلہ کری نیتوں اور ندموم اخلاق جیسے غل یعنی بد باطنی کین دغابازی حسد کیمبروغیرہ سے پاک ہونا۔

دوسری قتم: بدن اور کیڑے کا نجاستوں سے پاک ہونا جیسے خون پیپ بول براز منی .

تیسری شم: جم کابے و مُسکّی اور جنابت سے و ضواور شل کے ساتھ پاک ہونا چوتھی شم: جم کا سنت کے طور پر فالتو چیزوں سے پاک ہونا جیسے زیر ناف اور بغل کے بال ناخن جسم کی میل کچیل وغیرہ

اوراگرکسی کی رئیش یا سرے بال لیے ہیں تو اسے ہر ہفتہ بیں جعہ کے دن ان بالوں کو دھونا ' منتلمی کرنا اورعطر لگانا سنت مؤکدہ ہے۔

پانچویں تم ال کا پاک ہونا' زکوۃ اور صدقات دے کر اور سودی مال اور دوسرے حرام طریقوں سے حاصل شدہ مال کو طانے سے پر ہیز کرنا جیسے جوا کھیلنا' بدکاری کی اُجرت' جامل سین سینگ سے چوس کر خون نکا لئے کی اُجرت اور وہ مال جونا پاک چیزوں کی تجارت سے حاصل ہو جیسے مردار کا چڑا جور نگانیس کیا اور ذرح کی اُجرت اور دوسرے کام جن میں نجاست کے ساتھ ملوث ہونالازی ہوتا ہے۔

وَذَكُواسُدَ رَبِهِ اور بوری طہارت كے بعدائي بروردگاركا نام ليا ابتدا نماز بلى تجبير تحريم كي ماتھ اور دوران نماز قرات تبيح تشهد اور حضورقبی كے ماتھ اور نماز كے اوقات كے علاوہ زبان اور دل كے ماتھ اس ليے كه ذكر استعداد كے تعفيد اور كمالات كا فيض ينج كاموجب ہاور ذكر من بروردگاركا نام جس قدر زيادہ واقع ہؤ معرفت كا درخت

marfat.com متاورونایا ہے۔ Marfat.com فَصَلَٰی پساس نے نماز اداکی اور جوذکر دل اور زبان ہے کرتا ہے اعضاء کے افعال ملاکراہے ایک موافقت کی وجہ سے ملاکراہے ایک موافقت کی وجہ سے منعم حقیقی کی نعمتوں سکرکا مرتبہ کامل حاصل کرتا ہے۔

ا کابرین کے تقبیری اقوال

حضرت مولانا لیقوب چرخی رحمة الله نے فرمایا ہے کہ اس آیت بیس منازل سلوک کا اشارہ ہے جس کی ابتدا توبداوراس کے بعد نمری صفات زائل کر کے اور ایجھے اوصاف حاصل کر کے نفس کو پاک اور صاف کرنا ہے اس کے بعد لسانی ، قلبی روحی اور سری ذکر کا دوام ہے اس کے بعد لسانی ، قلبی روحی اور سری ذکر کا دوام ہے اس کے بعد مشاہدات تک پہنچنا ہے۔ پس قد آفلکتم من قدَّ تُحی پہلے مرتبہ کا اشارہ ہے اور فصلی مرتبہ مشاہدہ تک چینچنے کا اشارہ ہے دوام کا اشارہ ہے اور فصلی مرتبہ مشاہدہ تک چینچنے کا اشارہ ہے کے دوام کا اشارہ ہے اور فصلی مرتبہ مشاہدہ تک چینچنے کا اشارہ ہے کونکہ الصّلَوةُ عِفْدَ اللهُ اللهُ عِمْدِيْنَ

حضرت امیرالمونین علی کرم الله وجهه نے فرمایا ہے جوصدقہ فطرادا کرے اور عیدگاہ کے راستے میں اور عیدگاہ میں کونیخ پر تکبیرات عید کے اور نماز عیدادا کرے جمعے امید ہے کہ اس آ بت کی بشارت میں داخل ہوجائے گا۔ پس اس سورة میں لفظ تزکی ذکو قصالیا گیا ہے اور صدقہ فطر جو کہ واجب یا فرض ہے ذکو ق کا تکم رکھتا ہے تو یہ لفظ صدقہ فطر دینے کا اشارہ ہوگا اور وذکر اسم رہ تحبیرات اور فصلی نماز عید کا اشارہ ہے۔

ظاصة الكلام يہ ہے كه ال تغيير سے حضرت امير المونين على كرم الله وجه كى مراديہ ہے كہ آت اللہ اللہ واللہ اللہ وكر ساؤة كے بعد آيا جبكہ يہاں نماز بلكه ذكر سے بھى پہلے كہ قرآن مجيد ميں ہر جگہ زكوة كا ذكر صلوة كے بعد آيا جبكہ يہاں نماز بلكه ذكر سے بھى پہلے لايا كيا ہے۔ لاز ماكوكى خاص صورت مراد ہے كہ جہاں يہ تينوں فعل ترتيب كے ساتھ واقع ہوں اور وہ صورت شريعت ميں اس صورت كے سواكہيں نبيں ہے۔

ان آیات سے فعہاء کا استدلال

اوراکشرفقہاء نے تینوں مضامین کونماز کےشرا نظاوراس کے ارکان پروارد کیا ہے۔ وہ فرماتے میں کہ تزکل طہارت کا اشارہ ہے وضو ہوخواہ شسل خواہ تیم اور وذکراسم رہے جمیرتح پر میں کا اشارہ ہے اور خصلی اوا نگلی نماز کا اشارہ ہے اور حضرت ایام اعظم رحمة الله علیہ نے اس تغییر کا اشارہ ہے اور مصلی اوا نگلی نماز کا اشارہ ہے اور حضرت ایام اعظم رحمة الله علیہ نے اس تغییر کا اشارہ ہے۔ اور مصلی اوا نگلی نماز کا اشارہ ہے اور حضرت ایام اعظم رحمة الله علیہ نے اس تغییر کا اشارہ ہے۔ اور مصلی اوا نگلی نماز کا اشارہ ہے۔ اور مصلی اوا نگلی نماز کا اشارہ ہے۔ اور حضرت ایام اعظم رحمة الله علیہ نماز کا اس تعلید نے اس تغییر کا اشارہ ہے۔ اور مصلی اور نماز کی اس تعلیم اور مصلی اور کی اس تعلید نے اس تغییر کا اس تعلید نماز کا اس تعلیم کی تعلید نماز کی اس تعلیم کی تعلیم

کے مطابق مسائل فقہ سے دومسکے اس آیت سے نکالے بین ان میں سے ایک یہ کہ تریم باندھتے وقت خصوصیت کے ساتھ اللہ اکبر کے الفاظ لازم نہیں ہیں جو چیز ذکر خدا ہو سکے کافی ہے جیسے الدّ خیل اعظم 'یا لا الله یا سبتھان الله بال وہ ذکر جوکی غرض اور حاجت کے ساتھ ملا ہوا ہو اس کے ساتھ نماز شروع کرنا جائز نہیں جیسے اللّٰه مد اغفر لی اس لیے کہ خاص ذکر نہیں ہے

(اقول و بالله التوفیق ان الفاظ تعظیم سے ابتدا تو ہوجائے گی مگریہ تبدیلی مکروہ تحریی کے ۔ چتا نچے مراتی الفلاح میں ہے ویصح الشروع بکل ذکر خالص للله تعالی ۔۔۔۔۔ چتا نچے مراتی الفلاح میں ہے ویصح الشروع بکل ذکر خالص للله تعالی ۔۔۔۔ وان کرہ اے تحریما بہار وان کرہ اے تحریما بہار شریعت جساص ۱۷۔ محم محفوظ الحق غفرلہ)

دوسرا مسئلہ یہ ہے کہ آپ کے نزدیک تکبیر تحریم نمازی شرط ہے نمازین داخل نہیں داخل نہیں ہے۔

ہاس لیے کہ فصلیٰ کو وذکر اسم ربہ پرحرف فا کے ساتھ معطوف کیا گیا ہے جو کہ معطوف اور مسئلہ معطوف علیہ کے ایک دوسرے کا غیر ہونے پر دلالت کرتا ہے اور اس فہ بہ پر متفرع مسئلہ یہ ہے کہ اگر نماز کی شرا لکا جسے طہارت سر عودت اور استقبالی قبلہ تکبیر تحریمہ کے دفت کی کو حاصل نہ ہوں اور اس کے بعد بلافعل حاصل ہوجا کیں تو اس کی نماز درست ہے جبکہ امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ تکبیر تحریمہ نماز میں داخل ہے اس وجہ سے کہ فدکورہ تکبیر شافعی واحد ہیں شرا نکا کا وصول ہونا ضروری ہے۔

قیام کی حالت میں شرا نکا کا وصول ہونا ضروری ہے۔

اور جب اس آیت میں بیان فرمایا حمیا کہ حصول کمال اور عذاب سے خلاصی پاکیزگئ فراور نماز سے وابسۃ ہے جو کہ خون خدا کا نتیجہ ہے تو یہاں گنجائش تھی کہ کفار شبہ کے طور پر ذکر اور نماز سے وابسۃ ہے جو کہ خون خدا کا نتیجہ ہے تو یہاں گنجائش تھی کہ کفار شبہ کے طور پر ذکر کریں کہ جمیں پوری عقل و دانش کے باوجود ان اعمال اور افعال کی خوبی کیوں معلوم نہیں ہوتی اور حصول فلاح کے لیے ان اسباب کی سبیت ہماری نگاہ سے کیوں پوشیدہ ہے جو اب میں فرمایا جارہا ہے کہ تم ازلی بدختی کی وجہ سے ان چیز وں کو کمال نہیں سمجھتے ہو۔

بَلْ تُوثِرُونَ الْحَمْوةَ الدُّنْيَا بلكمتم دنيوى زندگى كوآخرت براختيار كرتے ہوجوكه ايك چراگاه سے زياده نبيس ہے اور آخر خشك سياه گھاس كى طرح ہونے والى ہے اور كمال كو

تغير مزيزي مستسمست تيموال پاره

دنیا کی محسوس لذتوں اور نام اور مرتبہ حاصل کرنے میں منحصر بیجھتے ہو حالانکہ دنیا کی زندگی ہرگز اس قابل نہیں کہ اسے اخر وی زندگی برتر جے دی جائے کیونکہ

وَالْاَحِدَةُ مَعْدُو اور آخرت سب کی سب نیکی ہے وہاں بدی کی کوئی مخبائش نہیں۔

انخلاف دنیا کی زندگی کے آگر چافعت وولت مرتبداور رعب کے ساتھ گزاری جائے لیکن ورد کو کھونے فکراور نم اس کی ذات کولازم ہیں۔ اور کوئی دنیوی نعت نظر نہیں آتی مراس کے پہلو میں کوئی درد کروری اور اضحلال ہے اور آگر بالغرض دنیا بھی نیک ہواور اس میں کی وجہ سے کوئی درد کروری اور اضحلال ہے اور آگر بالغرض دنیا بھی نیک ہواور اس میں کی وجہ سے بھی شراور کرائی کی مخبائش نہ ہواگر چہ بی فرض کرتا محال ہے پھر بھی دنیا میں اس قابل نہیں کہ اسے آخرت پرتر نیچ دی جائے اس لیے کہ آخر دنیا فانی ہے اور آخرت باتی ہے۔ چنا نچو فر مایا جارہ ہے۔

داتھی اور ونیا سے زیاوہ ہاتی رہنے والی ہے اس لیے کہ دنیا کی بقاء گرچہ دراز اور طویل ہوئیکن اس کے پیچے فتا ہے جبکہ آخرت کی بقاء فتا کے کھنے کے بغیر ہے اور کیا ہی اچھا کہا گیا ہے

مامل دنیاز کہن یا ہو چل گزر تدہ است نیرزد بجو الحری است نیرزد بجو الحدیث پرانی نی دنیا کا مامل یہ کہ جب گزرنے دالی ہے تو ایک جو کے برابر نہیں دنیا کا مقدالی قدر ہے کہ اسے آخرت کا دسیلہ بنا کیں کہ اللانیا مزدعة الاخدة الحد و اس کے مارے کہ ایک ہوئی ہو جو اس کے میں مندول نے کہا ہے کہ دنیا کواس کمر کی طرح سجے دیے آگے تھی ہوئی ہو جو کہ دہ ہے اس سے نکال نے۔ بیت

مافظ عمر عزیز است عنیمت والش مراث میراث میراث میراث

اے مافظ عمر عزیز ہے اسے غنیمت جان اس کے میدان سے جو نکال سکے نکال لے۔
الل کلام نے کہا ہے کہ اس اعجاز پر بنی کلام میں کمال اختصار کے باوجود دنیا کوآخرت پر ترجے
کے باطل ہونے پر دومضبوط دلیلیں فدکور میں یعنی خیر ہونا اور باتی ہونا۔ اس لیے کہ کوئی عقل
منداعلی کے بدلے ادنی کوئیس لیتا۔ نیز باتی کے بدلے فانی کو اختیار نیس کرتا۔ ہیں آخرت

پر دنیا کی ترجیح تاجروں کی عقل کے تقاضے کے خلاف ہے جو کہ بادشاہوں سرداروں علماءاور حکماء کی عقل سے بہت کم ہے۔

جب اس مضمون کو کہ آخرت پر دنیا کو ترجی نہیں دیا جا ہے اور دنیا میں دل نہیں لگانا چاہیے اور دنیا میں دنیا کی مجت اور چاہیے بی آ دم کے نفوس کے نقاضے کے خلاف دیکھا کہ ان کی جبلت میں دنیا کی محبت اور آخرت کی سمت کو ترجیح وسینے کو ان کا ممان تسلیم نہیں کرتا۔ ناچار اس مقصد کو ثابت کرنے کے لیے پہلی کتابوں سے جو کہ جہان والوں کے زدیک خصوصاً دیار عرب کے رہنے والوں کے نزدیک مسلم الثبوت تھیں ایک سندلا کرفر مایا جا رہا ہے

ہوا۔ کفی الصحفِ الادلی البت پہلی کتابوں میں ندکور ہے اور پیمنمون بمی منسوخ نہ ہوا اور نہیں بدلا۔

صُحُف إِنْرَ اهِنَهُ وَمُوسَى المَعِفول مِن جُوكَهُ مَعْرِت ابرائيم اور معرت مول عليه السلام كوآسان عطاكي مح تقويم معمون وين وشريعت كال تواعد كليه من عهم السلام كوآسان معطاكي مح تقويم معمون وين وشريعت كال تواعد كليه من عهم حركى في عليه السلام كذمان من منوخ فين موت الى كا اتكار كوياعلوم فكريكا اتكار به جوكم موضطائيون كا كام ب-

آ سانی کتابوں کی تعداد

(۱۰) محیف حضرت موی علیہ السلام پر تورات کے علاوہ تازل ہوئے۔ واللہ اعلم لیکن یہود ہوں کے ہاں تورات کے علاوہ حضرت موی علیہ السلام کے صحائف میں سے کوئی چر سنے میں ہیں آئی جبکہ حضرت ابراہیم علیہ السلام کے صحائف موجود ہیں اوران میں متم تم کے مواعظ اور نصیحیّں ورج ہیں۔ ان میں سے یہ ہے کہ ینبغی للعاقل ان یکون حافظا مواعظ اور نصیحیّں ورج ہیں۔ ان میں سے یہ ہے کہ ینبغی للعاقل ان یکون حافظا للسانہ عارفا بزمانہ مقبلاعلی شانہ لین عقل مندکو چاہیے کہ اپنی زبان کی تمہانی کے اپنی زبان کی تمہانی کرے اپنے زمانے کو بچانے اورائے کام میں پورے طور پرمعروف ہوں۔

سورة الغاشيه

کی ہے'اس کی سولہ(۱۹) آیات ہیں' بہتر (۷۲) کلمات اور ایک سوا کا نوے (۱۹۱) حروف ہیں۔ اور حدیث سیح میں تکرار کے ساتھ وار د ہوا ہے کہ حضور معلی اللہ علیہ وسلم اکثر نماز ول خصوُ مما نماز جمعہ اور نماز عشامی اس سورة کوسورہ سبح اسعہ دبل الاعلی کے ساتھ دورکعات گئ قرائے۔

وجدربط

پس اس سورة کا سورة الاعلیٰ کے ساتھ دابط نی کریم علیہ السلام کے اشادے سے ق عابت ہو گیا ای لیے صحابہ کرام دضوان الدعلیم اجمعین نے تالیف قر آن کے دفت اس سورة کوسورة الاعلیٰ کے بعد لکھا ہے اور غور دفکر کے بعد اس دابطے کی بہت می وجوہ ظاہر ہوتی ہیں۔ ان میں سے یہ ہے کہ اس سورة میں فَذَیِّر اِنّکا آنت مُذَیِّر واقع ہے جبکہ وہاں فَذَیِّر واقع ہے جبکہ وہاں فَذَیِّر اِنّکا آنت مُذَیِّر واقع ہے جبکہ وہاں فَذَیِّر واقع ہے جبکہ وہاں فَدیِّر واقع ہے جبکہ وہاں فَدیِّر واقع ہے جبکہ وہاں بَدی ہے اور ان میں سے یہ ہے کہ بہاں تصلی فاراً حاصِیة واقع ہے جبکہ وہاں یصلی النّار المُکٹری ہے اور ان میں سے یہ ہے کہ اس سورة میں ان زندگی کو پند کرنے کی فدمت اور آخرت کی خیریت کے بیان پر ہے جبکہ اس سورة میں ان اور انہوں نے دیا میں مشغول ہو گئے ہیں اور انہوں نے اور ان ہوگ ہیں اور انہوں نے آخرت کی ذمی کو بیند کر دیا ہے اور ان لوگوں کا حال ہے جنہوں نے دیا میں آخرت کی ذمی کی تعلیم آخرت کی خریت کی تفصیل ہے کہ میں آخرت کی ذمی کی تعلیم آخرت کی خریت کی تفصیل ہے کہ میں آخران میں رختی کی تفصیل ہے کہ میں آخرت کی خریت کی تفصیل ہے کہ میں آخرت کی خوالم کی خوا

جوکہ باتی اور خیرفانی ہیں تو کو یا اس معنی میں بیسورۃ اس سورۃ کا بقایا ہے۔ کو کلام کے انداز اور عبارت میں مشابہت کم ہوگی۔

وجدتسميه

اوراس سورة كا نام سورة غاشيه الله ليے ركھا كيا ہے كه غاشيه قيامت كا نام ہے اوراس سورة كے آغاز ميں قيامت كى ہولنا كيول سے ڈرانا ہے جبكه قيامت كے حالات سے ڈرانا قرآن كريم كے بہت بڑے موضوعات ميں سے ہے۔

بِسُمِ اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلُ آنَاكَ حَدِيْتُ الْعَاشِيَةَ كَيا آ ب تك قيامت كى خريجى ہے كہ لوگوں كے ماتھ كياكر _ كى اور لغت من عاشيه اس جزكو كہتے ہيں جو ڈھانپ لے ۔ اى ليے زين پوش كو عاشيہ كہتے ہيں اور قيامت كا حادثہ چند چيز ول كو ڈھانپ لے گا۔ ايك تو ہوش كو جو كه ڈرك شدت سے پوشيده ہو جائے گی دوسر _ جسموں كو اس دن كا عذاب نيخ آ كے جيجے واكي باكيس سے ڈھانپ لے گا جيما كه دوسر سے مقام پر فرمايا كيا ہے يَوْهَ يَغْفَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَهِنْ تَحْتِ آر جُلِهِمْ وَيَغْفَى وَجُوْهَهُمُ النَّارُ تَيسر سے يہ كے كا اور ايكان والوں كے يُم ے كاموں كو بحى چمپا لے كئ بہلوں كو احتياط كے ساتھ اور دوسروں كو معاف كرنے اور يخشے كے ساتھ ۔

اوراس پوچنے سے کہ کیا آپ تک قیامت کی خبر پہنی ہے؟ مقصد یہ ہے کہ سننے والا پوری توجہ کے ساتھ دھیان کرے اور اگل بات کو حضور دل کے ساتھ سنے۔ چنانچ اس بے دار کرنے اور ہوش میں لانے کے بعد اس دن کا کاروبار لوگوں کے سامنے بیان فر مایا جا رہا

وُجُوهُ یُومَنِیْ خَاشِعَة ال روز ایک گروه کے چرے ذکیل و رسوا ہوں کے اور اگرچہ ذلت و رسوائی ان چرے والول کی صفت ہے لیکن چوکلہ ذلت و رسوائی کے اثر ات زیادہ ترچروں پر ظاہر ہوتے ہیں۔ کویا یہ صفت می چروں کی ہے اور عرب کا قاعدہ ہے کہ کی فیادہ تر خون اور سرکے ساتھ کرتے ہیں اس لیے کہ یہ اعضاء کی میں محصل کی ذات کی تعییر چرے کرون اور سرکے ساتھ کرتے ہیں اس لیے کہ یہ اعضاء کی Marfat.com

تفير عزيزي مستعمل المهاري المه

كى ذات كى بقاء كامدار ہوتے بين تو كوياذات كے قائم مقام بيں۔

اوروہ چران اوگوں کے ہول مے جودنیا میں دین کے مقد مات کے سلطے میں اپنے اور عاجزی اکساری اور ذلت ورسوائی پندنیس کرتے تھے۔ اور وہ دین تکلیف اور مشقت سے اسر احت چاہتے تھے۔ اور تن آسانی اور بدن پروری میں غرق اور ای کی حرص میں رہتے۔ ای لیے دنیا سے ان کا زیادہ تر مقصد لذیذ کھانے کھانا کھیف مشروبات بینا اور عطریات استعال کرنا تھا۔ اس روز اس سب کا بلی اور تن پروری کے بدلے آئیس ذلت و رسوائی میں گرفآر کریں مے۔ اگر آئیس و نیا میں دینی معاملات اور رب کریم کی عبادت میں بینشوع نصیب ہوتا تو سب سے عظیم تو اب پاتے لیکن اپنی تن پروری کے لیے مشقت طلب اعمال کی اعمال سے جی چراتے تھے۔ چنا نچہ اس کے بدلے آئیس اس روز مشقت طلب اعمال کی تکلیف دیں کے اور آئیس بے تاخی کے ایک ایک ایک ان بین اس روز مشقت طلب اعمال کی تکلیف دیں کے اور آئیس بے تاخی کے ایک تائی خرا ایا جارہا ہے۔

عَامِلَة وه چرے اس روزی کام کریں سے ایک ہے کہ تیس بہاڑوں پرخت مشقت سے چڑ منا۔ اور انہیں میں سے گرون اور پاؤل میں آتھیں طوق اور زنچر بہننا ہے اور آتی دونرخ میں ہی جے جانا جیا کہ اونٹ دلدل میں فوطے کھاتا ہے اور اس روز کے ان مشقت طلب اعمال کی تفمیل قرآن مجید کی دوسری سورتوں میں فرکور ہے جیے سارھقه مشقت طلب اعمال کی تفمیل قرآن مجید کی دوسری سورتوں میں فرکور ہے جیے سارھقه صعودا ' خذوہ فعلوہ ثمر الجمحید صلوہ ثمر فی سلسلة فرعها سبعون فراعا فاسلکود دیوھ یدعون الی جھند دعا۔ دیطوفون بینها دبین حدید آن

گناه گارول کے عذاب کی اقسام

اور صدیث شریف میں وارد ہے کہ ذکوۃ نہ دینے والے کی پیشانی پہلو اور پشت پر آئے سے گرم کی ہوئی سونے اور جا عدی کی تختیوں کے ساتھ واغ لگا کیں ہے اور جن کے مورثی شخصاور وہ مویشیوں سے اللہ تعالی کا حق نہیں دینے شخصائیں قیامت کے میدان میں پشتوں کے بل ڈال کرمویشیوں کو تھم ہوگا کہ انہیں روند ڈالیس اور نصویر سازوں کو تکلیف دی جائے گی کہ اپنی بنائی تصویروں میں جان ڈالیس اور انہیں جو خواب کے متعلق جموت ہو لئے جائے گی کہ اپنی بنائی تصویروں میں جان ڈالیس اور انہیں جو خواب کے متعلق جموت ہو لئے تکلیف دیں سے کہ جو میں کرہ لگا کیں اور جو لوگ حق بات کہنے سے خاموش ہو کئے ان کے متعلق مورکئے ان کے متعلق مورکئے ان کے اس کے کہ جو میں کرہ لگا کیں اور جو لوگ حق بات کہنے سے خاموش ہو گئے ان کے متعلق مورکئے ان کے متعلق میں میں کا میں کی کہ جو میں کرہ لگا کیں اور جو لوگ حق بات کہنے سے خاموش مورکئے ان کے متعلق میں کے کہنے میں کی کہنے کے متعلق مورکئے ان کے متعلق مورکئے ان کے متعلق میں کی کہنے کے خواب کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کو کو کئی کے کہنے کہنے کی کہنے کا کہنے کے کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کے کہنے کی کو کہنے کی کہنے کی کو کئی کے کہنے کی کہنے کے کہنے کے کہنے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کے کہنے کے کہنے کی کی کہنے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کی کہنے کے کہنے کی کہنے کے کہنے کی کرنے کی کہنے کی کہنے کی ک

تغیر مزیزی مستنسست تیسوال باره

مند میں آگ کی لگام ڈالیں سے علی بڈاالغیاس

ناصبة يعن وه چراس روزان اعمال كي وجه بين رنج أشات بوت بول كاس ليكه مشقت طلب كام جوكي ثواب اور مين كي الجديث مرينه مؤنري تكيف ب-

اور بعض مفسرین نے کہا ہے کہ بیرلی اور دی وولوں و تیا میں بی اور اس سے مراد
ہندووں بہودیوں نصاری اور دوسرے فرائیس باطلہ کیدیاضت کرنے دالوں کے چبرے
ہیں جو کہ دنیا میں خدا تعالیٰ کے لیے مشعب بالیا ہے کہ سے اللہ کرتے شاور نری تکلیف اُٹھاتے سے
ہیں جو کہ دنیا میں خدا تعالیٰ کے لیے مشعب بالی ندال نے کی وجہ سے سب ضائع اور بے فائدہ
ہیں۔

اور بعض مغرین نے کہا کہ کمل دنیا ہیں اور رنج آخرت میں مراد ہے۔ اور وہ عیش و عشرت کرنے والوں اور مال ومرتبہ چاہے والوں کے چہرے میں کہ انہوں نے ان دنیوی مقاصد کے لیے شدید مشقتیں اور تا قابل برداشت تکالیف اُنھا کیں اور آخرت میں انہیں ان سب مشقتوں کا پھل بے فائدورنج کی صورت میں حاصل ہوگا بلکہ ان کا پھل صرف رنج کی صورت میں حاصل ہوگا بلکہ ان کا پھل صرف رنج می نہیں ایک اور چیز بھی تعاقب میں ہے جس کا بیان ان آیات میں ہے۔

تصلی نارًا حامِیة دو ایک انتهائی گرم اور جلانے والی آگ می داخل ہوگا اس کے بھوں اور بدلے کہ خدا تعالی سے عافل ہو کر پر فضا مکانات اور شندی ہوا میں جہت کے بھوں اور خس کی نئیوں کے نیچ بیٹے سے اور اس آگ کی گرمی کا بیان حدیث شریف میں اس طرح وارد ہے کہ اسے ایک بڑار سال تک جلایا گیا یہاں تک کہ سفید ہوگئی۔ پھر اسے مزید ایک بڑار سال تک جلایا گیا یہاں تک کہ سفید ہوگئی۔ پھر اسے مزید ایک بڑار سال تک جلایا گیا یہاں تک کہ سفید ہوگئی۔ پھر اسے مزید ایک بڑار سال تک جلایا گیا یہاں کی سیاہ ہوگئی۔ اب اس سیابی پر ہے۔ اور جب دوزخ کی ہوا کی گرمی ان کے اندر تشکی پیدا کر سے گو با تقیار ہو کر انعطش العطش بہاریں مے اور جا ویانی پی کراس گرمی کی تسکین کا قصد کریں گے اور اس وقت

تُستظی مِنْ عَیْنِ النِیَةِ البین اس چشے سے پانی پلایا جائے گاجو کدانہائی گرم ہاور وہ پانی پینے سے دوز خیوں کے مونث کہاب موجا کیں مے اور ان کی انتزیاں ریزہ ریزہ ہوکر

باہر آ جا کمیں گ۔ پھر انہیں درست کر کے عذاب میں گرفتار کریں گے اور ان کی بیر قواضع ان لذیذ شربتوں اور سوڈ اواٹروں کے عوض ہوگی جو برف میں لگا کر چیتے تھے اور جب دوزخ ک ہوا کی حرارت اور اس بانی کی گرمی ان کے اندر جمع ہو کر بھوک کی آ گ بھڑ کائے گئ ایک ہزار سال تک ان پر بھوک کا عذاب مسلط کیا جائے گا اور حدیث شریف میں ہے کہ دوز خیوں ہزار سال تک ان پر بھوک کا عذاب مسلط کیا جائے گا اور حدیث شریف میں ہے کہ دوز خیوں کی نظر میں یہ اکیلا عذاب دوزخ کے تمام دردناک عذابوں کے برابر ہے اور بے شارنالہ و فریاد کے بعد جہنم کے موکلوں کو اجازت ہوگی کہ انہیں کوئی چیز کھلا کیں ۔ لیکن

لیّس لَهُمْ طَعَامٌ ان کے لیے وہاں کوئی طعام نہیں ہے جوکہ ان مرغن اور لذیذ کھانوں کاعوض ہوجود نیا ہیں لذت اورجم موٹا کرنے کے لیے کھاتے تھے۔اورضج سے شام تک باورچیوں سے تتم قتم کے کھانوں کی فر مائش میں گزارتے تھے اِلّا مِن ضَریْع مُرضر یع کی جنس سے۔اور یہ ایک گھاس کا نام ہے جو کہ زیادہ تر دریاؤں کے ساحل اور نہروں کے مناروں پر اُگی ہے۔ جب تک بیتر ہوتی ہے اسے شرق کہتے ہیں اور اونٹوں کے کناروں پر اُگی ہے۔ جب تک بیتر ہوتی ہے اسے شرق کہتے ہیں اور اونٹوں کے جارے کو اسے خرک ہوجائے تو اسے ضریع کہتے ہیں اور زہر جارے کوئی جانور نہیں کھاتا۔

اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ وہاں کی ضریع کو یہاں کی ضریع پر قیاس نہ کی جائے۔ وہ آگ میں ایسی چیز ہے جو چینے میں کاننے کی طرح ہے اور ایلوے سے زیادہ کر دی مردار سے زیادہ بد بوداراور آگ سے زیادہ سخت گرم ہے۔ اور اس کی وجہ بیہ ہے کہ جس طرح دنیا میں خاک اور پانی کا جو ہر نہا تات اور حیوانات کی طبیعتوں پر غالب ہے اس طرح جہنم میں جو ہرناری وہاں کے نہا تات اور حیوانات پر غالب ہے۔ پس وہاں کے نہا تات اور حیوانات سے مشابہت رکھتے ہیں اس نباتات اور حیوانات سے مشابہت رکھتے ہیں اس کے نباتات اور حیوانات سے مشابہت رکھتے ہیں اس کے لیے ایک کے نام کو دوسرے پر بولا جاتا ہے لیکن معنوی اعتبار سے ان کا مادہ جو ہرآ تش ہے۔ اور دیوان کی ہر چیز میں ناریت اور جلن موجود ہے۔

اور چونکہ کھانے کا مقصد تین چیزوں سے خالی نہیں ہوتا' لذت یا جسم کوموٹا کرنا یا بھوک وُ در کرنا اور خونکہ کھانے کا مقصد تین چیزوں سے خالی نہیں ہوتا' لذت یا جسم کوموٹا کرنا یا بھوک وُ در کرنا اور ضریع اور اس کے وہ اوصاف جو کہ حدیث شریف میں وارد ہیں' ذکر کرنے

ے لذت تو میلوں وُور جاپڑی اب دو چیزوں کی جوبعض اوقات کے بےلذت کھانا کھانے سے مقصود ہوتی ہے نفی فر مائی جارہی ہے۔

لَايُسُونُ وَلَايُغُنِي مِنْ جُوعٍ نہ بدن کوموٹا کرے اور نہ بھوک دُورکرنے کے کام آئے جبکہ طعام کے فواکد بہی چیزیں ہیں اور جب طعام ان تینوں چیزوں سے خالی ہے گویا طعام ہی نہیں اگرجہم کوموٹا کرتا تو بھی دوز خیوں کو فائدہ ہوتا کہ اس کی وجہ سے بچھ قوت ملتی اور اس قوت کی وجہ سے بچھ قوت ملتی اور اس قوت کی وجہ سے ان پر عذا ب برداشت کرنا آسان ہوتا۔ اگر بھوک دُورکرتا تو بھی اس عذا ب کی شدت میں بچھ کی آتی جو کہ بھوک کے غلبہ کی وجہ سے تھا۔

دوجواب طلب سوالات

یہاں دوسوالات باتی رہ مسے جو کہ جواب طلب ہیں۔ پہلاسوال یہ ہے کہ آگ میں نباتات کا وجود ممکن نبیں ہے اس لیے کہ موسم گر ماکی گرمی اکثر درختوں کوجلا دیتی ہے۔ چہ جائیکہ آگ کی گرمی خصوصاً اس تم کی آگ۔

اس کا جواب ہیہ کہ جب اس آگ میں انسان کے جسم کا پایا جانا اور سانب اور بچھو
کا وجود تنکیم شدہ ہے تو نبا تات کے پائے جانے میں کیا امر مانع ہے۔ علاوہ اس کے سور ن
کی عین گرمی اور سوزش میں بعض نبا تات کے سرسبز ہونے اور نشو ونما پانے کا مشاہرہ کیا جا تا
ہے۔ جیسے اونٹ کی مرغوب خاروار گھاس اور مسکھوا اور دوسرے موسم گرما کے درخت۔ پس
کیا بعید ہے کہ وہاں کی آگ میں بھی بی ماصیت ہردگی کی ہو کہ بعض نبا تات کو سرسبز کرے
اور نشو ونما دے۔ خصوصاً جبکہ ان نبا تات کی طبیعت کی بنیاد میں جو برآتھیں غالب ہوتو ہم
مشل ہونے کے اعتبارے آگ کی گرمی ہے در لے لیں جیسے کہ آگ کی ارا سمندر) دنیا

اس کا جواب ہے ہے کہ دوز خ کے مختلف طبقے ہیں اس کے بعض طبقات کا بین کھانا ہوگا

نہ کہ پجھادر۔اور وُجُوہٌ یُومَنِیٰ خَاشِعَة ہے مراداس طبقے والے ہوں۔ پس کوئی اعتراض

نہیں ہے جبکہ بعض مغسرین نے کہا ہے کہ من ضریع ہے مراد خاص ضریع ہی مراد نہیں ہے بلکہ

ہروہ چیز جو بے لذتی ' فخی ' بد ہو' موٹا نہ کرنا اور بھوک دُور نہ کرنے میں ضریع کی جس سے ہے

ہروہ چیز جو بے لذتی ' فغی بیاں تک کہ بعض مغسرین نے ضریع کوفعیل بمعنی مفعل جیسے علیم

اور بدیج لیا ہے اوراس کا معنی ہوں بیان فرمایا ہے کہ ہروہ کھانا جو کہ زاری ' خواری اور طبیعت

میر مرکی کا موجب ہوتا ہے' ضریع ہے اوراس صورت میں بھی اعتراض دُور ہوجاتا ہے۔

اور جب دوز خیوں کی رہائش گاہول' مشروبات' فرشوں اور برتوں کا حال بیان کرنے ہے

فراغت ہوئی اب جنتیوں کی رہائش گاہول' مشروبات' فرشوں اور برتوں کا حال بیان فرمایا جا

درہا ہے اور چونکہ جنتیوں کے حال کا بیان اس ایمال کی تفصیل ہے جو کہ حدیث الغاشیہ میں

مذکور ہوا ہے اس لیے یہاں حرف عطف ذکر نہیں فرمایا گیا۔ بخلاف سورۃ قیامت کے کہ وہاں

حرف عطف کے ساتھ مذکور ہے اس لیے کہ وہاں مجمل کی تفصیل نہیں ہے اور پہلے ہے کوئی

وُجُوہ یُومَن نَاعِمَۃ اس روز ایک گروہ کے چرے زم اور خوش منظر ہوں گے اس
لیے کہ ذلت و رسوائی کے اسباب خوف خطرہ مشقت اور دُکھ نے ان کے چروں میں اثر
نہیں کیا بلکہ ان چرے والوں نے آج کے دن کی خینوں سے نجات پانے کے لیے دنیا میں
بیشار خیال جھیلیں اور برداشت کیں اور این پروردگار کی خوشنووی کے لیے اپنی جان اور
جسم پرتکالیف اور مشقتیں گوارا کیں۔ چنا نجے فرمایا جارہا ہے

لِسَعْیها رَاضِیَة اس روز اپنی کوشش سے خوش ہوں کے کہ وہ ساری کوششیں جو وہاں کیس اچھاانجام رکھتی ہیں۔

لَاتُسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيمَةُ اس باغ من ب بوده گفتگونيس سنة و بال گالی گلوچ كاكياكام اورجہنيوں كى چيخ پكار جوكه نرى ب بوده ب و بال نہيں پہنچی که ان كا آ رام و آسائش كمدر نہواورجنتوں كو يرصفت تصلى نارًا حامِيةً كمقابل من دى گئ ب اور گرم جشے ك مقابل من ان كے ليے مقابل من ان كے اور كرم جسم مقابل من ان كے ليے مقابل من ان كے ليے مقابل من ان كے اور كرم جسم مقابل من ان كے اور كرم جسم مقابل من ان كے اليے من ان كے ليے مقابل من ان كے ليے اور كرم جسم مقابل من ان كے ليے مقابل من ان كے ان مقابل من ان كے ليے مقابل من ان كے ليے مقابل من ان كے ان مقابل من مقابل من ان مقابل من م

فیھا سُرُدٌ مَّرْفُوعَة اس باغ مِن بلند تخت ہول کے تاکہ پورے وقارے بیٹیس اور دوز خیوں کے دُکھ تکلیف اور تا پاک خور دونوش کے مقالبے میں ان کے لیے

وَاکُوابٌ مَوْضُوعَة ال خُول بِرَتب كماتھ بنے ہوئے كوزے ہول كے يعنى انہيں جب بھی كى مائے فرزے ہول كے يعنى انہيں جب بھی كى مائے ياشراب بانى وودھاور شهد ميں سے كوئى شے بنے كى رغبت ہوكى اللہ كے بغير أثفا ليس اور استعال كريں اور اس كی ضرورت نہيں ہوگى كہ خنوں سے بنچ أثريں اور اس جنت میں فرش كے طور بران كے ليے اُرس اور اس جنت میں فرش كے طور بران كے ليے

وَنَهَادِقُ مَصْفُوفَةٌ عَلَيه اورتو هَكُيل مول كى جنهي مف بصف بجهايا كيا بتاكه جس كيداورتو شك برجاين آرام كري اورفيك لكائي اوران كمكانول من وياين آرام كري اورفيك لكائي اوران كمكانول من وياين كم وفرد الله وفرد الله

حالانکہ بلند تختوں پر بار بار چڑھنا اور اُئر نا ایک تکلیف دہ مشقت ہے۔ نیز کہنا ہے کہ وہاں پانی اور شراب سے بھرے ہوئے کوزے رکھے گئے ہیں اور مسندوں اور قالینوں کے فرش بجھائے گئے ہیں حالانکہ ایک تخت صرف بیٹھنے کے لیے ہوتا ہے اور اس میں اتی چیزوں کی مختجائے گئے ہیں حالانکہ ایک تخت صرف بیٹھنے کے لیے ہوتا ہے اور اس میں اتی چیزوں کی مختجائی نہیں ہوتی۔ نیز اگر وہ کوزے اوند ھے ہوجا کیں تو فرش تر ہوجا کیں اور مل بیٹھنا بے مزہ ہوجائے۔

حق تعالیٰ نے اس طعن اور خداق کے جواب میں یہ آیات بھیجیں اور جواب کا خلاصہ یہ کہ جنتیوں اور دوز خیوں کا نمونہ دنیا میں موجود ہے اور جنت اور دوز خی کی صورت بھی نمودار ہے۔ پس وہ جنتیوں اور دوز خیوں کے حالات اور جنت اور دوز خی صفات کا کیوں انکار کرتے ہیں اور اس چیز میں جو اُن میں سے ہرایک کے سامنے موجود ہے غور نہیں کرتے اور وہ چار چیز یں ہیں۔ پہلی چیز جانوروں سے جو کہ اونٹ ہے دوسری چیز عالم بالا کے فرشوں اور وہ چار چیز ی بیں۔ پہلی چیز جانوروں سے جو کہ بہاڑ ہے اور چوشی چیز عالم سفلی کے جو کہ آ سان ہے تیسری چیز معد تیات سے جو کہ بہاڑ ہے اور چوشی چیز عالم سفلی کے فرشوں سے جو کہ زمین ہے۔ پس پہلے اونٹ کا ذکر فرمایا گیا ہے کہ

اَفَلَا ينظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ توكياوہ اونٹوں كی طرف نظرنہيں كرتے كه وہ كيے پيدا كيے گئے ہيں اور ان كی پيدائش میں جہنيوں اور جنتيوں دونوں كا نمونہ موجود ابن كی پيدائش میں جہنيوں اور جنتيوں دونوں كا نمونہ موجود ہے۔ اپنی ذات اور بودو باش میں دوز خیوں سے مشابہت رکھتے ہیں اور اپنے فواكد اور منافع كے انتبار سے جنتيوں سے مناسبت رکھتے ہیں۔

ذات اور بودوباش کے اعتبار سے اونٹ کی دوز خیوں سے مشابہت کابیان

اپنی ذات اور بودوباش کے بارے میں ان کی دوز خیوں سے مشابہت اس وجہ سے
ہے کہ جم کے لمبا اونچا اور بڑا ہونے کے باوجوداس قدر ذکیل اور خوار ہیں کہ انسانوں کے
بی بلکہ ایک چوہاس کی مہار کو تھنے کر ہر طرف لے جا سکتا اور بھا سکتا ہے اور جو چاہاس
پر لادے پھر کھڑا کرے اور چلائے اور بیسب پھھاس کے چبرے کی رسوائی کی وجہ ہے
اس کی ناک چیز کراس میں کیل ڈالتے ہیں اور اس کی وجہ سے وہ ذکیل اور مطبع ہوجاتا
ہے۔ اور اس جانور کی بودوباش کی جگہ زیادہ تر گرم علاقے اور ریکستان ہے جو کہ گرم ہوا چلے
سے۔ اور اس جانور کی بودوباش کی جگہ زیادہ تر گرم علاقے اور ریکستان ہے جو کہ گرم ہوا چلے
سے۔ اور اس جانور کی بودوباش کی جگہ زیادہ تر گرم علاقے اور ریکستان ہے جو کہ گرم ہوا چلے
سے۔ اور اس جانور کی بودوباش کی جگہ زیادہ تر گرم علاقے اور ریکستان ہے جو کہ گرم ہوا چلے
سے۔ اور اس جانور کی بودوباش کی جگہ زیادہ تر گرم علاقے اور ریکستان ہے جو کہ گرم ہوا چلے

اورسورج کی بیش کی وجہ ہے آگ کا روپ وحار لیتا ہے اور بیجانور مدتوں پانی کے بغیر رہتا ہے اور اگر اسے پھیمسر ہوتا ہے تو بالکل گرم پانی جو کہ نوک گرمی کی وجہ سے جوشا ندہ یا قہوہ کی ماند ہے اور اس کی خور اک خاردار زہر لیے درخت جیسے محکمر ااور ضریع اور اس کے باوجود بوجہ اُنٹھانے کی مشکل کام کرنے بہاڑوں پر چڑھنے اور ان سے اُنٹر نے اور پانی اور کچڑ میں داخل ہونے کی جو تو ت اور طاقت وہ رکھتا ہے کوئی جانور نہیں رکھتا اور ہمیشہ اس و کھ تکلیف میں گرفتار ہے۔

فوائداورمنافع كاعتبار ساونث كى جنتيول سعمشا يهت كابيان

ربی فوائد اور منافع کے اعتبار سے جنتیوں نکے ساتھ اس کی مناسبت تو وہ اس طرح ہے کہ اگر اس کی پشت کو دیکھیں تو ایک او نیا رکھا ہوا تخت ہے اور اس بلندی کے باوجود کہ آدمی کا ہاتھ اس کی پشت تک نہیں پہنچ سکتا جب جا ہیں اسے بٹھالیں اور جنت کے تختوں کی طرح اس برسوار ہوجائیں۔ چنانچے معالم التزیل میں بدروایت لائی می ہے کہ جنت کے تخت دُورے بلندمعلوم ہول مے اور جنتی جا ہیں سے کدان پر بیٹیس تو نیچے ہو جا کیں سے پھر اونے ہوجائیں کے اور اونتی کے جار پہتان دودھ سے بحرے ہوئے کوزے ہیں جو کہ تیار کر كسنبال كرر كے ہوئے بي اوران سے دودھ كا چشمہ جارى ہے اوراس كى پشم سے نمده اورقالین بناتے ہیں۔ ممل کی مندیں بناتے ہیں اس کا کوشت کھایا جاتا ہے۔اس کا دودھ يا جاتا ہے۔اس كے بالوں كالباس بنآ ہے۔اوراس كى پشت يرسوارى كى جاتى ہے۔اور جب بوجدلاد كرچلائي توكنتى ہے جوكدائے ياؤل يرجاري ہاور بغير بوجد كيجين تو ایک دور تا ہوا ایکی ہے۔ اور جب الل وعیال سمیت خود اس برسوار ہوں اور الی ضرورت کا سامان اس پررکھ لیس تو اسے یاؤں پر چانا ہوا ایک تھرہے۔ پس دنیا کے جانوروں میں یہ ایک انتائی عجیب جانور بے لیکن کثرت سے میل جول کی وجہ سے اس سے تعجب نہیں ہوتا۔ کتے ہیں کد کسی جانور میں بیمغت نہیں ہے کہ اگر اس پر بوجد لادیں تو سارے کھر کا سامان أفعاليما باوركى مكم بمين جوكه طويل مسافت يرجونو جلاجاتا باوراكراس كادوده نكاليس تو ممر بركومير كرديتا ب اوراس كاكوشت حاصل كرين قوايك مطاكوكافى بmarfät.com

اور ای لیے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الابل عز لاھلھا والغنم برکة والنحیل معقود بنواصیھا الحیر الی یوم القیامة لینی اونٹ اپنے مالک کے لیے عزت ہے۔ اور کمری بایرکت ہے۔ اور گھوڑے کی پیٹائی کے ساتھ قیامت تک خیروابت ہے۔ اور اتنا بڑاجم ہونے کے باوجود ایک سواونٹ کی قطار کوایک بچھینج سکتا ہے بخلائی ہے۔ اور اتنا بڑاجم ہونے کے باوجود ایک سواونٹ کی قطار کوایک بچھینج سکتا ہے بخلائی ہاتھی اور دوسرے طاقت ورحیوانات کے کہان میں بیاطاعت اور عاجزی نہیں ہے اور اس کے باوجود بے حدم کی مالک ہے اور دس (۱۰) ون تک پیاس برداشت کر لیتا ہے اور اپنی کی مام اور مشقت میں بھی کوئی کی نہیں کرتا۔

اونث کے عجائب اور خواص

اوراس کے بجائب اور خواص میں سے بہ ہے کہ اکثر اوقات رویقبلہ جاتا ہے اور اگر

اس کی پیم کو جلا کیں اور اسے خٹک پیس کر جاری خون پر چھڑک دیں تو خون بند ہو جائے اور

اس کے دودھاور پیشاب میں استنقاء تلی اور بواسیر کے مریضوں کے لیے جو فائدے رکھے

اس کے دودھاور پیشاب میں استنقاء تلی اور بواسیر کے مریضوں کے لیے جو فائدے رکھے

گئے ہیں طب والوں پر فلا ہر ہیں ۔ اور اونٹ کی تھیلی کو عاشق کی آسین پر با ندھیں اس کا عشق زائل ہو جائے ۔ اور اونٹ تمام حیوانات میں سے غیرت کے ساتھ موصوف ہے کہ جائے ہوئے اپنی مال اور بہن کے قریب نہیں جاتا اور مستی کے وقت اس پر جوعشق کے آثار اور جون کا ولولہ بیدا ہوتا ہے سے عاشقوں کا نمونہ ہوتا ہے اس وقت اپنی عادت سے تین گنا جنون کا ولولہ بیدا ہوتا ہے سے عاشقوں کا نمونہ ہوتا ہے اس وقت اپنی عادت سے تین گنا زیادہ بوجھ اُٹھا لینا ہے۔ اور اس کا کھاتا پینا گھٹ جاتا ہے۔ اور اس کی پیدائش میں اس کی گردن کی لمبائی بچائیات میں سے ہے۔

منقول ہے کہ بعض اہل فراست کے سامنے ذکر کیا گیا تھا کہ جانوروں میں سے ایک جانور ہے جے شرکتے ہیں اس کی خصوصیتوں میں سے یہ ہے کہ اسے بٹھا کراس پر خاطرخواہ بوجھ لاددیں پھروہ اپنی طافت پر کھڑا ہوجا تا ہے اور یہ خاصہ کسی جانور میں نہیں ہے کہ بوجھ لادنے کے بعد کھڑا ہو سکے اس صاحب فراست نے کہا کہ اس جانور کی گردن کمی ہوگی تاکہ وہ گردن کے زور سے کھڑا ہو سکے۔'

نیزاونٹ کی خوراک اکثر اوقات او نیچے درختوں کے پیج میں اگر اس کی گرون کبی نہ marfat.com

Marfat.com

وَإِلَى السّبَاءِ كُيْفَ رُفِعَتْ اورا یا آسان فی طرف بیس دیسے که مس طرح بلند کیا استہاء کیفف رُفِعَتْ اورا یا آسان فی ابند کی کو بعید نہ جموداور آسان فی اس بلند کی کو بعید نہ جموداور آسان فی اس بلند کی باوجود حرکت دوری کی دجہ سے اس کے اجزا بیس سے ہر جز ورات دن کی گروش بیس پست بھی ہوتا ہے اس حد تک کر مرکی طرف سے قدم کی طرف بیس آ جا تا ہے اور جنتی کے قدم کے بیخ جنت کے اور نج تختوں کا جمک جانا اس بلند کی اور پستی سے جمعا جا سکتا ہے۔ نیز آسان بیس ستارے کو ذوں کی طرح رکھے جمیع بیس کہ آسان کی حرکت دُوری کی دجہ سے اپنے مرکز سے بالکل نہیں بلتے اور اُلٹے نہیں جس طرح بہشت کے کوزے گرم اور مرد تم کے مشروبات سے بالکل نہیں بلتے اور اُلٹے نہیں جس طرح بہشت کے کوزے گرم اور مرد تم کے مشروبات مرداریدی ہے اور مردخ کی شعاع مرخ اور مشتری کی بالکل سفید زخل کے لیے تار کی اور مرداریدی ہے اور مردخ کی شعاع مرخ اور مشتری کی بالکل سفید زخل کے لیے تار کی اور مداری کی نور بین کور بین اور جو مشترک کی بالکل سفید زخل کے لیے تار کی اور شعاعیں گوشم کی ہوتی ہیں اور جو مشترک کی بالکل سفید زخل کے لیے تار کی اور شعاعیں گوشم کی ہوتی ہیں اور جو مشترک کی نیز میں ہے محسوس ہور ہی ہے۔ ای طرح کی شعاعی در نہرہ کی رطوبت علی بند القیاس

marfat.com

نیزآ سان میں سورج کا چشمداور جاند کا چشمہ جنت کے جاری چشمے کا فمونہ ہیں کہ ایک سے سرخ شراب فوادے کی طرح تیزی سے چونی ہے جبکہ دوسرے سے معندا دودھ لکا ہے۔ نیز جوستارے برجول منزلول اور دوسری شکلول میں مشاہرے میں آتے ہیں مخمل کی مندول ادر رنگار تک قالینول کی طرح بین که بعض کو ملا کرمف کی شکل میں پھیلایا گیا ہے اور بعض کی جمعرے پھولوں کی طرح متغرق کر کے ڈالا کمیا ہے۔ پس ونیا میں آسان جنت کا ممونہ ہے اور وہاں کے رہنے والے جو کہ فرشتے ہیں نورانی چروں اور اچھی کاوشوں کے ساته مسرور وشادال بین اور و بال تبیع اور ذکرالی کے سواکوئی بے مقصد بات سنائی نبیس دین اور اگر اس آسان کوشیطانوں اور بی آ دم کے تناہ حالوں اور زمانے کے برنعیبوں کی نبست ت ملاحظه كريس تو دوزخ كى مثال سامنة تى باورشياطين اور بدكارول كى ارواح ك ليه وبال سے آمل كے شعلول كے ساتھ مسلسل وُ حتكار طعن اور ستك بارى جارى ہے اور ان کے لیے وہاں نری ذات اور خواری ہے اور ملائکہ کی مختلو کی چوری کے لیے جانے ملک الموت كى پكڑے بعامنے اور سخت ذلت اور خمارے كے ساتھ واپس آنے ميں شہاب كى آ مک اور آسان کے دربانوں کی آتش قبران کے لیے وہاں تیار ہے اور کرم چھے کی طرح محرم سورج کی محرم ان پر برتی ہے اور تھی غذا کا استعال موکلوں کے کوڑوں کے سوا وہاں

وَالَى الْعِبَالَ كَيْفَ نُصِبَتْ اوركيا بها (ول كونين ويكي كرس طرح كريك يك بين كه بواتين المعتبال كي بارش برسن اورزل لي آن كي باوجودا بي جكه سي كرينين اوراً لنت نبين اسى طرح جنت كوزول كى حالت كوجمنا چاہے بلكه اگر خوركيا جائ تو بها و اوراً لنتے نبين اسى طرح جنت كى مانند ہے كه زبين كى بداؤ موذى چزين اور روى بلندى اور الحجى بواكى وجه سے جنت كى مانند ہے كه زبين كى بداؤ موذى چزين اور روى بنارات و بال نبين كي خيد اور دنيا والول كى افو با تين اور الانے جھر نے والوں كى جھر د بال بالكل سنة نبين جاتے اور ميلے پائى كے جشمے جارى بين اور صاف چنا نين اور خور و درخوں پر الكتے بھل جنتى كوزوں كى طرح ركھ كے كى طرح الى جگرے دول كى طرح ركھ كے كى طرح الى جگرے دول كى طرح ركھ كے كى طرح الى جگرے دول كى طرح ركھ كے ياں اور خور دول ورخوں كى طرح بكھرے ہيں۔

marfat.com

اور اگر کوئی ای پہاڑ کو بد بختوں اور بدنھیبوں کی نسبت سے جو کہ گرفتار مصیبت ہیں اور دہاں تاہ حال پڑے ہوں کے طاحظہ کرے تو جہنم کا نمونہ ظاہر ہے کہ چڑ حتا اور وہاں سے اُتر ناسر اسر مصیبت اور تکلیف اور وہاں کی غیر موافق آب و ہوا خصوصاً دامن کوہ کہ جے ہتدی زبان میں اول کہتے ہیں جہنم کے گرم جشمے کی مانداور خارزار جماڑیاں ضریع اور زقوم کی طرح

پی ان چار جزول کو لما حظہ کرنا جنت اور دوزخ کے حالات کو بھے بھی مختل مندول کے لیے کافی ہے اور مثال بھے کے لیے ان چار چیزوں کواس لیے اختیار فرمایا گیا ہے کہ اس مجزانہ کلام کے مخاطب عرب کے بادیہ شیں اور ان علاقوں کے صحراؤں بی پھرنے والے لوگ تھے جو کہ جانوروں میں سے زیادہ تر اونٹ کی پردرش کرتے تھے اس کا گوشت کھاتے تھے اس کا دورہ چیے تھے اور اس کی اون اور رہم سے اپنے لیے کپڑے اور فرش بتاتے تھے اور سنروں میں اس برسواری کرتے اور بوجھ لادتے تھے۔

اور اللِ تجربہ نے کہا ہے کہ ملک عرب کے کاروبار کی بنیاد اونٹ پر ہے اور ایران marfat.com

والوں کا کاروبار اشتر پر ہے اور تو را نیوں کا کاروبار گھوڑے پر ہے اور ہندوستان کے لوگوں۔

کے کاروبار کی بنیاد گھاس پر ہے چونکہ صحرائیس زیادہ تر مولیٹی پالتے ہیں' انسان کو پانی اور
گھاس کی سخت ضرورت ہوتی ہے اس لیے کہ اکثر اوقات ان کی نگاہیں آسان پر گڑی رہتی
تھیں کہ کس طرف سے ہوا چلتی ہے اور کوئی ہوا بارش لاتی ہے اور ان کی جائے قرار اور
جائے پناہ بڑے برے برئے پہاڑ ہوتے ہیں کہ دشمن کے قریب آنے یا زمین پر پانی اور گھاس کا
قط پڑنے کے وقت دوڑ کر پہاڑوں میں چلے جاتے اور وہاں بافراغت وقت گزارتے۔
چنانچان میں ہے کوئی کہنے والافخر کے مقام پر کہتا ہے لنا جبل

پھراس میں کی طرف محابی پوشیدہ نہیں کہ چارہ اُسے کی جگہ بھی ہے کاشت کاری اور پھلوں کا کل زمین کی طرف محابی پوشیدہ نہیں کہ چارہ اُسے کی جگہ بھی ہے کاشت کاری اور پھلوں کا کل بھی ہے مقام سکونت بھی اور مقام عمارت بھی۔ اور اس میں سونے اور جواہرات کی کا نیں بھی ہیں۔ پس سے چار چیزیں اس کے رہنے والوں کے خیال میں غالبًا جلد جھے ہوجاتی ہیں۔ اور اس مثال کی بنیادمحسوسات کی خیالی صورتوں کو ذہنوں میں حاضر کرنے پر ہے کہ ان صورتوں سے معنی معقولہ تک لے جایا جائے اور جو خیال میں جلدی گزرے اس کی مثال وینا نے دور اس مثال کی بنا وحسوسات کی مثال کو بیان کرنے میں جے۔

اور محققین نے فرمایا ہے کہ قرآن مجید میں اپنی نعتیں یاد ولانے ذات و صفات کی وصدت کے دلائل اور اپنی ذات کے کمالات ذکر کرنے میں الی راہ اختیار کی گئی ہے جو کہ شہوت مص اور د نیوی زینت کی طرف نگاہ اُٹھانے کا باعث نہ ہو ور نہ مثال بیان کرنے کی غرض فوت ہو جائے اور لوگ اپنی مرغو بات اور خواہشات کے ذکر کی وجہ سے ان میں ڈوب کرمقصد سے مشرق و مغرب کی دوری پر جا پڑیں اور ای طرح وہ عجیب چزیں بھی جو کہ بی آ دم کی کاری گریوں کی وجہ سے صورت پذیر ہوئیں اور کام میں آئیں مقام استدلال کے آدم کی کاری گریوں کی وجہ سے صورت پذیر ہوئیں اور کام میں آئیں مقام استدلال کے ظلاف ہیں کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ وہ ان تمام عجا تبات کو بی آ دم کے ارادہ و اختیار اور ان کی محمت اور قدرت کے حوالے کر دیں اور مقصد تک چنچنے سے محروم رہیں ٹاچاراس چز کو جو ہر محمت اور قدرت کے حوالے کر دیں اور مقصد تک چنچنے سے محروم رہیں ٹاچاراس چز کو جو ہر محمت اور قدرت کے حوالے کر دیں اور مقصد تک جاتے اور طبی حسن و جمال رکمتی ہے اس کلام محمت اور ترص وطبع کا موجب نہیں ہوتے اور طبی حسن و جمال رکمتی ہے اس کلام محمت اور ترص وطبع کا موجب نہیں ہوتے اور طبی حسن و جمال رکمتی ہے اس کلام محمد شک کی کو حاصل ہے اور ترص وطبع کا موجب نہیں ہوتے اور طبی حسن و جمال رکمتی ہے اس کلام میں آئیں کی کو حاصل ہے اور ترص وطبع کا موجب نہیں ہوتے اور طبی حسن و جمال رکمتی ہے اس کلام سے اور ترص وطبع کا موجب نہیں ہوتے اور طبی حسن و جمال رکمتی ہے اس کلام

پاک میں مثال بیان کرنے کے لیے جگہ جگہ منتخب کیا گیا ہے اس لیے کہیں نہیں فر مایا گیا کہ بادشاہوں کے باغات اور عجمیوں کی عجا تبات میں غور کریں یا بے ریش لڑکوں یا خوب صورت عورتوں کی اچھی شکلوں میں غور کریں اور وہاں سے حضرت صانع جل مجدہ کی حکمت کے کمال کا سراغ لگا کیں۔

ز مین کی شکل کا بیان

اوربعض علاء فے سطحت کے اس لفظ سے جو کہ زیبن کے بارے بیں بولا گیا ہے اس بات پراستدلال کیا گیا ہے کہ زیبن کی شکل گول نہیں لیکن بیاستدلال بہت ضعیف ہے اس لیے کہ زیبن اگر چہ حقیقت میں گول ہے لیکن بہت بڑی ہونے کی وجہ سے دیکھنے میں گول نہیں لگتی اور اس کے باہم ملے ہوئے اجزا کے اوپر نیجے ہونے کی دریافت نہ ہونے کی وجہ سے بچھی ہوئی معلوم ہوتی ہے اور گفتگوان وہم وخیال والوں سے ہور ہی ہے جو کہ اس قدر بڑے جسم کے گول ہونے کو دریافت نہیں کر سکتے۔

اور جب جنت اور دوزخ کے متعلق اور جنتیوں اور ووزخیوں کے حالات کے بارے میں کفار کے طعن اور بعید سجھنے کے جواب سے فراغت ہوئی۔ گویا ایسا مقام آ محیا کہ ندکورہ کفار کے شدید تمر داور عناد پر نظر کرتے ہوئے حضور صلی اللہ علیہ وسلم پندونھیجت کرنے میں ہے تو جبی فرمائیں اور اس سب وعظ ونھیجت کو بے فائدہ سمجھیں اس بناء پر اس کی امر تاکید منظور ہوئی اور آپ کے قلب مقدس کی تسلی ضروری ہوئی اس لیے فرمایا جارہا ہے کہ

فَذَیْ کِیْ إِنّهَا اَنْتَ مُذَیِّرٌ تو آپ میحت کرین آپ تو تعیمت کرنے والے ہیں لینی جب آپ نے چاروں چیزوں کو جو کہ ہر کس وناکس کے سامنے موجود ہیں آخرت کے امور کی طرح جان لیا اور جنت اور دوزخ کے حالات پر تو کی دلیل پالی تو ان کے طعن اور بعید بجھنے کے طفت کا کام کے لفظ سے جو کہ جھڑے سے زیادہ مجھ نہیں آپ پریٹان نہ ہوں اپنا وعظ وقعیمت کا کام کرتے حاکم ۔

کشت عَلَیْهِمْ بِمُصَیْطِرِ آپ ان پرداروغنیں ہیں کہ آئیں سیدی راہ ہے بالکل پررائی علیہ بین کہ آئیں سیدی راہ ہے بالکل پرنے نددیں اور ان کے دِلوں میں جراحق بات کو ہٹھا کیں بیمقلوب القلوب کا کام ہے martat.com

اللا من تولی و کفتر بین سب کوبار بار پندونعیمت کریں مرجس نے آپ کی وعظ و تعیمت سے روگردانی کی اور کفیرا فقیار کیا اور آپ کی رسالت کا انکار کیا اسے بار بار وعظ و تعیمت سے روگردانی کی اور کفیرا فقیار کیا اور آپ کی رسالت کا انکار کیا اسے بار بار وعظ و تعیم سے ایک باراحکام اللی کی تبلیغ اور ہمیشہ کے کے عذاب سے فیری تا آپ فارغ ہو محے اب اس کا معاملہ خدا کے سرد ہے۔

فیعی بنه الله العداب آلائی تو اسالته تعالی ایباعذاب دے کا جوکہ دوسرے گا وہ دوس کے عذاب سے برا ہے جنہوں نے کفراختیار نہیں کیا اور دوگر دانی نہیں کی اور دو میں میں گا دول کے عذاب سے برا ہے جنہوں نے کفراختیار نہیں کیا اور دو کی عذاب ہوا در تو بہ کے بغیر مر جیسے کا عذاب دینے میں جائے اس دردناک عذاب دینے میں جو کہ ان کے حوال کی گرفت سے عائب ہے اور بنی آ دم کی پٹائی کے سواکوئی عذاب نہیں جو کہ ان کے حوال کی گرفت سے عائب ہے اور بنی آ دم کی پٹائی کے سواکوئی عذاب نہیں جائے گئی کری تو بے جاہوں کے کہ

اِنَّ اِلْیَنَا اِیَابَهُمْ مُحْقِیْ ان کالوٹا ہاری طرف بی ہے کہ مرنے کے بعد ہر کسی کی روح حواس کی گرفت سے پوشیدہ ہو جاتی ہے اور جہان غیب میں پہنچ جاتی ہے۔ پس تاجار ہرکسی کواس جہان میں جاتا ہے جس کا اللہ تعالی کے سواکوئی مالک نہیں۔

ٹھ اِن عَلَیْنَا حِسَابَھُ کی مِحْقَیْنَ ان کا حساب ہمیں پرہے ہم ہرچھوٹے برے کناہ اور کفر وعناد کی قسموں پر ان کے مطابق جزادیتے ہیں تو جس کی روگر دانی اور کفر زیادہ شدید ہوگا اس کا عذاب اور سزا بھی زیادہ بڑی ہوگی۔ والعماذ با فلہ تعالیٰ مِنْدُ

لی آیت إِنَّ اِلَیْنَا اِلَابَهُمْ مِن احوال برزخ كا اشارہ ب جوكه موت كے فوراً بعد في أن عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ مِن روزِ قيامت كے معاطى كا اشاره بيش آنے والا ب جبكه آیت تُورِ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ مِن روزِ قيامت كے معاطى اشاره بيش آنے والا ب جبكه آیت تُورِ اِن عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ مِن كه ما جَي كه ما جب اور مبلت بر ولا ات كرتا ب جوكه مدت وراز كے بعدرونما ہوگا اى ليے كله فم جوكه تا جيراور مبلت بر ولا ات كرتا ب اس آیت كی ابتدا میں لایا میا۔

تغير مريزي ______ تيسوال پاره

سورة الفجر

کی ہے اس کی تمیں (۳۰) آیات ایک سوسینتیں (۱۳۷) کلمات اور پانسوستانوے (۵۹۷)حروف ہیں۔

رابطے کی وجہ

ملحدين كاشبداوراس كاجواب

اوراس سورة کا زول ایک شب کے جواب میں ہے جو کدا کھر طحدین اور زند بقول کے دل میں گزرتا ہے اور وہ اس شبہ کے ساتھ انبیاء علیم الصلاۃ والسلام اور واعظوں کا مقابلہ کرتے ہیں۔ جس کا خلاصہ یہ ہے کداللہ تعالیٰ کو بندوں کی اطاعت اوران کی نافر انی ک پرواہ بالکل نہیں۔ پس وہ جو انبیاء علیم السلام اور واعظ لوگ کہتے ہیں کہ جہان و نیا کے بعد ایک اور جہان ہے جس میں حشر ونشر سوال و جواب اور جزا وسرا ہوگی نری ہے اصل بات ہاں لیے کداللہ تعالیٰ بی آ دم کے اجھے کہ ہے اعمال کی ہر چز پرمطلع ہے اور ہر سی کواس کی سرا تک پنچانے پر قادر ہے اگر وہ نیکیوں سے خوش ہوتا اور گناہوں سے ناراض تو کی سرا تک پنچانے پر قادر ہے اگر وہ نیکیوں سے خوش ہوتا اور گناہوں سے ناراض تو اطاعت کرنے والوں کو بے شار خوتوں سے کیوں شواز تا اور گناہ کا موں کوسراؤں میں گرفتار کیوں نہ کرتا اور جزا کی تا خیر اور قیامت آنے کا انتظار یا تو اس لیے ہے کہ اس وقت اسے آدمیوں کے احوال نیکی بدی اور ان کے کردار کی اطلاع نہیں یا اس لیے کہ فی الوقت وہ انتظام کی قدرت نہیں رکھتا اور دونوں امور کا اللہ تعالیٰ کے بارے میں تصور بھی نہیں تو معلوم انتظام کی قدرت نہیں رکھتا اور دونوں امور کا اللہ تعالیٰ کے بارے میں تصور بھی نہیں تو معلوم انتظام کی قدرت نہیں رکھتا اور دونوں امور کا اللہ تعالیٰ کے بارے میں تصور بھی نہیں تو معلوم انتظام کی قدرت نہیں رکھتا اور دونوں امور کا اللہ تعالیٰ کے بارے میں تصور بھی نہیں تو معلوم انتظام کی قدرت نہیں رکھتا اور دونوں امور کا اللہ تعالیٰ کے بارے میں تصور بھی نہیں تو معلوم

ہوا کہ اے ایکھے کرے کو جزادینا منظور نہیں اور جو کچھ کرتا ہے بروائی کے ساتھ ای جہان دنیا میں کرتا ہے کہ کو جزادینا منظور نہیں اور جو کچھ کرتا ہے بروائی کے ساتھ اور کرتا ہے اور کرتا ہے اور کسی کو قتم قتم کی مصیبتوں اور مجتابی میں گرفتار کر دیتا ہے اور ذلیل کرتا ہے۔

اوراس شبہ کا جواب میہ ہے کہ اللہ تعالیٰ اپنے علم وقدرت کے کمال کے باوجود حکیم مطلق ہے اور اس کی عکم تیامت کے دن کا مطلق ہے اور اس کی حکمت کا نقاضا ہے کہ ہر کسی کواس کی جزادیے میں قیامت کے دن کا انتظار کیا جائے۔

جزائے اعمال کو قیامت پرموتوف کرنے کی حکمت

اوراس اجمال کی تفصیل ہے ہے کہ آ دمی کی تین حالتیں ہیں۔ پہلی حالت دنیا کہ جس میں انواع واقسام کی ضرورتوں میں گرفتار ہے اور مخلوق کے ساتھ کی قتم کے تعلقات رکھتا ہے جیسے ر شینے داری دوی اور ہمسائیگی۔ نیز طاعت اور بندگی کا مکلف اور آخرت کا سفرخرج حاصل كرنے ميں مصروف ہے اور اسينے راس المال كو بروصانے اور تفع زيادہ كرنے ميں لكا ہوا ہے۔ دوسری برزخ کی حالت کہموت کے بعد اسے ان مصروفیات سے فراغت ملی لیکن جو میکھاس کے بھائیول رشتہ دارول شاگر دوں اور دوستوں نے اس کے لیے اور اس کے تھم پر د نیا میں کیا ہے ای کی طرف منسوب ہوتا ہے تو تکویا انجمی تک وہ خود دارالعمل میں ہے۔ نیز برزخ میں ان حقوق والوں کے اجتماع کی صورت نہیں بنتی جن کے ساتھ اس نے نیکی اور مُرائی كرنے كے تتم تتم كے معاملات كيے تتے۔ اس ليے كه بركى كى موت ايك وقت يرم ترر ہے۔ يس حقوق والول كى حاضري كے بغيراس كے معاملات كا فيصله كرنا عدل كے خلاف ہے۔ تيسري آخرت كي حالت جس مين اليه كوئي عمل اورمصرو فيت نبيس بهاوراس كي نوع والے اور اس کی پیروی کرنے والے سب موجود اور جو پھھاس نے خود کیا تھایا دوسروں نے اس کے لیے اور اس کے علم پر کیا تھا' سب کا سب اس کے یاس پہنے چکا اور نوع انسانی ختم ہونے کی وجہ سے آئندہ کسی اور چیز کے چینجنے کی توقع بالکل ندرہی۔ پس اس کی حکمت ہرگز تقاضا نہیں کرتی کہ اے دنیوی حالت میں سزا دی جائے اس کیے کہ اہمی وہ کام میں مصروف ہے اور عمر کی پوری مدت جو کہ بمز لداس کے سرمائے کے ہے ابھی تک اسے پوری martat.com

ہاتھ نہ گلی اور اس نے اوقات کے جمع اور خرج کو برابر نہیں کیا۔ پس اگر اسے اس حالت میں جزامیں گرفتار کر دیں تو وہ جواب میں کہ سکتا ہے کہ جمھے مہلت دینا چاہیے تھی تا کہ میں اپنی عمر پوری کروں اور ابتدائے جوانی اور ناتج بہ کاری میں مجھ سے جو کوتا ہیاں واقع ہو کیں آخر عمر میں اس کا تدارک کرلوں۔

اور تاجروں کا دستوریم ہے کہ جب کسی ملازم کوکار وہار کے لیے کسی طرف سیجتے ہیں تو اسے مہلت و بیتے ہیں کہ اپنے اختیار اور صوابدید کے مطابق مدت دراز تک مال کی گردش میں تقرف کر ہے اور اس سے کسی ایک معاطع میں غین یا نقصان دیکھیں تو اس سے مواخذہ نہیں کرتے کہ شاید کسی دوسرے معاطع میں اس کی طرف سے اس غبن اور نقصان کا تدارک ظاہر ہو جائے۔

اورای طرح برزخ میں جزا پہنچانا بھی خلاف حکمت ہے اس لیے کہ ہر مکلف کے اعمال کے نفعوں اور نتائج کی وصولی بی نوع انسان کے باتی ہونے کی وجہ ہے ابھی تک باتی ہوئے تاکہ ہے تو گویا ابھی تک اس کا جمع اور خرچ برابر نہیں ہوا۔ نیز حقوق والے جمع نہیں ہوئے تاکہ پہنچ چلے کہ اس کا جمع اور خرچ برابر نہیں ہوئے تاکہ پہنچ کے کہ اس کا حق کس پر نکلٹا ہے اور اس پر کس کا حق بنٹا ہے اور حقوق والوں میں ہے کون اپناخق ما نگلا ہے اور کون معاف کرتا ہے۔ تو ناچار جزاویے کے لیے جہان آخرت ہی مقرر ہوگا اور اس وقت تک اللہ تعالی بندوں کے اجھے کرے اعمال کو ملاحظہ فرما تا ہے اور لکھتا ہے خفلت بالکل نہیں ہے اور ان دبیات قبائید صاد کا بھی معنی ہے اور اس مضمون کو اس سورۃ میں چندقسموں کی تاکید فرما کر بیان فرمایا گیا ہے۔

وجدتشميه

اوراس سورۃ کا نام سورۃ الفجراس لیے رکھا گیا ہے کہ پہلی قتم فجر کی واقع ہوئی ہے اور جیسا کہ چاہیے فجر کی روز قیامت کے ساتھ مشابہت ہے کہ لوگ ساری رات اس فجر کے آنے کا انتظار کرتے ہیں اور جب فجر ہوگئ گویا موت کے بعد اُٹھائے گئے اور بازاروں' درباروں اور راستوں میں اجتماعات ہوئے اور جن کاموں کا انتظار میں ساری رات گزری' انتظار کا استخام دینے کی صورت بی اور جب ان قسموں میں کام سرانجام دینے کے انتظار کا Martat. COM

بیان مقصود ہے جو کہ بنی آ دم کے فرقول میں سے ہر فرقے کی عادت ہے اور بیہ مقصد ثابت کرنے کے عادت ہے اور بیہ مقصد ثابت کرنے کے لیے فجر بہت بڑی دلیل ہے ناچاراس سورة کواس نام کے ساتھ موسوم کیا گیا۔ بیشیم اللّٰهِ الوَّحْمَانِ الوَّحِمَانِ الوَّمَانِ الوَّمَانِ الوَّمِمَانِ الوَّمَانِ الوَانِ الوَانِمَانِ الوَّمَانِ الوَانِ الوَّمَانِ الوَانِ الوَان

والفَخو بحص فجر کے وقت کی تم ہے کہ اکثر تخلوقات اپنی کام سرانجام دینے میں اس کا انظار کرتے ہیں اور کام کے اسباب کے باوجود فجر ہونے تک تا فیر کرتے ہیں اڑنے والے جانور رزق کی تلاش کے لیے محون لے سے باہر نگلنے میں بحو کے اور خالی پیٹ اس کے منظر ہوتے ہیں۔ اور چرنے والے جانور چراگا ہوں کو جانے کے لیے بھی اس کے منظر ہوتے ہیں۔ اور چہر یوں والے اپنے مقاصد پورے کرنے مقد مات والے اپنے جھڑے حکام ہیں۔ اور پجہر یوں والے اپنے مقاصد پورے کرنے مقد مات والے اپنے جھڑے کے اس کے منظر ہوتے ہیں اور ہروہ کے پاس لے جانے ہمر اور بازار والے اپنے کاروبار کاشت کار بال چلانے اور اپنے دوسرے کاموں کے لئے اور مسافر سفر طے کرنے کے لیے اس کے منظر ہوتے ہیں اور ہروہ سب کام جو کہ اظہار اور اعلان سے وابستہ اور روشی حاصل ہونے پر موقوف ہیں سب کے سب کام جو کہ اظہار اور اعلان سے وابستہ اور روشی حاصل ہونے پر موقوف ہیں سب کے سب فیرطلوع ہونے برمعلق ہیں۔

اور بعض فجروں کی خصوصیات زیادہ ہیں کدان کے انتظار میں بہت ی مخلوق وقت گزارتی ہے جیسے حاجیوں کے لیے روز عرفداور روز فرکہ سارا سال ای دن کی آرزو ہیں گزارتے ہیں اور دوردراز علاقوں سے وہ دن یانے کے لیے ان متبرک مقامات میں کانچتے ہیں۔

اور نمازم بھی ای وقت میں ہے وہ فرشے جو کہ بندول کی حفاظت پر مامور ہیں ہاری
باری دن رات میں آئے اور جاتے ہیں اس وقت میں نشست و برخاست کی دونوں چوکیال
جمع ہو کر اس وقت کی نماز کا انظار کرتے ہیں ای لیے صدیث شریف میں وارد ہے کہ من
صلی صلوة الفجر فہو فی ذمة اللّه کہ جس نے نماز فجر اواکی وہ اللہ تعالی کے ذے
میں ہو اسری میں واقع ہوا اِنَّ قُوْ آنَ الْفَجْدِ کَانَ مَشْهُو دًا یعیٰ فجر کی قرات کے
ماضری میں ہوتی ہے اور اس کی تغییر صدیث شریف میں فرمائی می ہوتی ہے کہ دن رات کے
فرشتے اس وقت حاضر ہوتے ہیں اور ان کے حاضر ہونے کی وجہ سے انوار و برکات میں کی
منااضافہ ہوتا ہے۔

حاصلِ کلام یہ کہ اکثر مخلوقات کو اپنے کاروبار کے لیے فجر کے آنے کا جو انظار ہوتا
ہے پوشیدہ نہیں۔ دردوالے ساری رات اس امید پر درد کے ساتھ گزارتے ہیں کہ جب فجر
ہوگی طبیب کے پاس جا کیں اور اس سے علاج کراکیں اور گدااور فقیر ساری رات بھوک اور
فالی پیٹ کے ساتھ اس امید پر کا شتے ہیں کہ مجمح امیروں کے دروازوں پر جا کر سوال کریں اور دو قی کے سر ہوں ۔ علی ہذا القیاس

بن آدم كے تمام گردہ ائى ضرور تيس مج ہونے پر موقوف ركھتے ہيں۔ پس ضرورت اور قدرت کے ہیں۔ پس ضرورت اور قدرت كے بادجوداس وفت كے انظار ميں كاموں كوموخ كرنا جے حكمت نے اس كام كے ليے معین كيا ہے نوع انسانی كی جبلت ہے اى قیاس پر قیامت كا دن آنے كے انظار میں برائے مقدے كومؤخر كرنا سجمنا جاہے۔ برائے مقدے كومؤخر كرنا سجمنا جاہے۔

وَلَيْهَالِي عَشْرٍ اور بحصے دس راتوں کی تتم ہے جو کہ بہت بزرگ اور متبرک ہیں اور لوگ سارا سال ان دس راتوں کے آنے کے انتظار میں گزارتے ہیں اور اپنے کارو بارکوان کے آنے برموقوف رکھتے ہیں۔

دس متبرك راتول كابيان

اوران دس راتوں کی تین اقسام ہیں: پہلی تیم ذوالجۃ کے مہینے کی پہلی دس راتیں کہ اطراف واکناف کے حاجی ان دس راتوں ہیں کہ معظمہ کے شہراوراس کے نواح ہیں جج کرنے اور طواف کرنے کی خاطر جمع ہوتے ہیں اور اجتماع کی ابتدا پہلی رات سے ہوتی ہے اور اس کی انتہا دسویں رات میں ہوتی ہے اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ کوئی دن ایسا اور اس کی انتہا دسویں رات میں ہوتی ہے اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ کوئی دن ایسا نہیں جس میں کیا ہواعمل صالح ذوالحجہ کی دس راتوں سے بہتر اور افضل ہو ان کے ہر دن کا روزہ ایک سال کے روزوں کے برابر ہے اور ان میں سے ہر رات کی عبادت شب قدر کی عبادت شب قدر کی عبادت کے برابر ہے۔

دوسری منتم ماہِ رمضان المبارک کی آخری دس راتیں کہ عبادت گزار سنت اعتکاف ادا کرنے اور لیلتہ القدر کی برکات پانے کے لیے سارا سال ان کے انتظار میں ہوتے ہیں اور حدیث شریف میں ہے کہ جب بیدی راتیں آتیں 'جنور علی الصلاق والسلام کھر چھوڑ کرمسجد صدیث شریف میں ہے کہ جب بیدی راتیں آتیں 'حضور علی الصلاق والسلام کھر چھوڑ کرمسجد

شریف میں اعتکاف بیٹھتے تھے اور کمر مبارک کوخوب باندھ لیتے اور شب بیداری میں اپنے ا اہل وعیال کواپنار فیق بناتے اور انتہائی مجاہدہ فر ماتے۔

تیسری تشم محرم کی پہلی دس راتیں ہیں کہ یہ شہداء کی غربت کے دن ہیں اور انہوں نے اللہ تعالیٰ کی راہ میں جو صبر اور رنج برداشت کیا ہے اس کا بے حدو حساب تو اب ان کی ارواحِ مقدسہ پر ان دس راتوں میں نازل ہوتا ہے اور بدعتی لوگ جہالت کے طریقے سے گریہ زاری سینہ پیٹنے کا ب بڑھنے مرھے پڑھے تعزیہ بنانے اور ڈھول بجانے کی رسم بجا لانے کے انظار میں ساراسال کرتے ہیں۔

اوربعض مفسرین نے بیدوس را تیس پورے سال میں جدا جدابیان کی ہیں۔وہ کہتے ہیں کہ رمضان المبارک کے آخری دہا کے کی پانچ طاق را تیس جن کے متعلق لیلة القدر کی برکات کی امین ہونے کا گمان ہے ایک عیدالفطر کی رات ایک عرفہ کی رات ایک بقرعید کی رات اور ایک معراج النبی صلی اللہ علیہ وسلم کی رات جو کہ رجب کی ستا کیسویں رات ہواور ایک شب برات مراد ہے۔واللہ اللہ علم

یہاں جانا چاہیے کہ اس سورہ میں ساری قسمیں معروف باللام لائی گئی ہیں جبکہ لیال عشر کوئکرہ لایا گیا اس کی وجہ ان دس راتوں کی تعظیم بیان کرنا ہے اس لیے کہ ان کی تعظیم کا سب مخفی اور پوشیدہ ہے۔ بخلاف دوسری قسموں کے کہ ان کی عظمت کی وجہ ظاہر اور روشن ہے۔ نیز لیال عشر میں، ہاروجہوں کا احتمال ہے جبیبا کہ بیان ہوا۔ پس ان کے مہم اور ظاہر ہونے کا فائدہ دینے کے لیے انہیں کرہ لایا گیا تا کہ سارے احتمالات کی تنجائش ہو۔

وَالنَّفُعِ وَالْوَتْ اور مجھے جفت اور طاق عدد کی قتم جو کہ اعداد کے سارے مرتبول کو شامل اور محام معدودات کو شامل ہے اور انسانوں کو جس طرح اپنی مہمات سرانجام دینے کے لیے اوقات کا انظار ایک جبلی اور فطری امر ہے اس طرح عدد کے جفت اور طارق مرتبول کی اپنے معاملات اور قرضوں کے لین دین میں انظار کرنا فطری اور جبلی چیز ہے۔ حاملہ کے لیے وضع محل میں نو ماہ کا انظار کرنا چاہیے جو کہ طاق عدد ہے اور نیجے کو دودھ سے رو کئے کے لیے دو سال کا انظار کرنا چاہیے جو کہ جفت عدد ہے۔

بالغ ہونے کی مدت کے عین کا ذکر

اور بیجے کو کمتب میں بٹھانے میں چارسال تعلیم نماز میں سات سال روزہ سکھانے میں دس سال اور بالغ ہونے اور شادی نکاح میں پندرہ سال کا انظار کرنا چاہے۔علیٰ ہذا القیاس ہرمہم اور کام کے لیے مہینوں کی تواری میں طاق اور جفت کے عدد کا انظار کرتے ہیں اور ہشت سے سال پورا کرنے میں بارہ مہینوں کا انظار کرنا چاہیے اور ہفتہ پورا کرنے میں سات دن اور مہینہ پورا کرنے میں تمیں یا انتیاں دنوں کا انتظار کرنا چاہیے اور ہفتہ پورا کرنے میں شمیں یا انتیاں دنوں کا انتظار کرنا جا ہے اور دورکھت و چارد کھت کی نماز میں تجمیر کے شروع سے لے کرسلام پھیرنے تک دو رکھت یا چارد کھت کا انتظار کرنا چاہیے اور تین رکھت کی نماز میں تین رکھت کا انتظار کرنا چاہے۔ اور تین رکھت کی نماز میں تین رکھت کا انتظار کے انتظار کرنا چاہے۔ اور تین رکھت کی نماز میں تین رکھت کا انتظار کے ہے۔

قفع اور وتر کے بارے میں مفسرین کے مختلف اقوال

اور بعض مفسرین نے کہا ہے کہ جفت سے مراد مخلوق ہے اس لیے کہ مخلوقات میں سے ہر چیز کو دوسری چیز کے ساتھ ملا کر ذکر کرتے ہیں جیسے آسان و زمین روز وشب نور وظلمت اور نرمادہ جبکہ طاق سے مراد حضرت حق جل جلالہ کی ذات پاک ہے کہ کوئی چیز اس کے برابر نہیں ہے۔

اور بعض نے کہا ہے کہ فتع سے مراد مخلوق کی صفات ہیں جو کہ نقیض اور ضد کے ساتھ مخلوط ہیں جیسے علم اور جہالت قدرت اور عجز حیات اور موت عزت اور ذلت اور قوت اور ضعف جبکہ وقر سے مراد صفات حق تعالی ہیں کہ وجود ہے عدم کے بغیر قدرت ہے عجز کے بغیر علم ہے جہالت کے بغیر حیات ہے موت کے بغیر عزت ہے ذلت کے بغیر اور قوت ہے ضعف کے بغیر اور قوت ہے صعف کے بغیر اور قوت ہے صدف کے بغیر ک

اوربعض نے کہا ہے کہ شع سے مراد دور کعتی اور چار رکعتی نمازیں ہیں جبکہ وتر ہے مراد
تبن رکعتی نمازیں مراد ہیں اور یہ تفسیر حضرت عمران بن حصین رضی اللہ عنہ کی روایت کے
ساتھ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے ٹابت ہونا ہے۔

اور بعض نے کہا ہے کہ جفت ہے مراد جنت کے مدواج اور اس کے دروازے ہیں جو IMarfat. Com

کہ آٹھ ہیں جبکہ طاق سے مرادجہنم کے طبقات اور اس کے دروازے ہیں جو کہ سات ہیں۔
اور بعض نے کہا ہے کہ جفت بارہ برج ہیں جبکہ طاق سات سیر کرنے والے ستارے
ہیں جن کی ان برجوں میں گردش کی وجہ سے دنیا میں گونا کول حالات اور انقلابات رونما
ہوتے ہیں۔

اوربعض نے کہا ہے کہ جفت سے مراد وہ مہینہ ہے جو پورے میں دنوں کا ہے جبکہ طاق سے مراد وہ مہینہ ہے جو پورے میں دنوں کا ہے جبکہ طاق سے مراد وہ مہینہ ہے کہ جفت سے مراد ہر رکعت کے دوسجد سے جبکہ طاق سے مراد ایک رکوع ہے۔

اوربعض نے کہا ہے کہ جفت سے مرادوہ بارہ جشے ہیں جو کہ حضرت موی علیہ السلام کے دست مبارک سے ایک پھر پر عصا مار نے سے جاری ہوئے جبکہ طاق سے مراد حضرت موی علیہ السلام کے وہ نومجزات ہیں جو کہ آپ نے فرعون کے مقابلے میں ظاہر فرمائے اور قرآن مجید میں بھی ان کا اشارہ ہے۔ وکھ آپ نے ما موسی تیسم آیات ہیں تیات

مند کو تیامت تئ جزا کومؤخر کرنے کے راز اور حکمت تک پہنچا دیتا ہے ای لیے فرمایا جارہا

marfat.com Marfat.com ے کہ

هَلُ فِي ذَالِكَ قَسَمٌ آلِنِي حِجْر كيا اس ميں جوكه ذكر كيا مياكوئي فتم ہے جوكه صاحب عقل كے ليے الى بات كو عابت كرنے ميں كافى جي كيا ہو۔ كويا يہ پانچوں قسميں عقل مند كے ليے الى بات كو عابت كرنے ميں كافى جين كہ ہر نيك و بدكى ہزا پہنچانے ميں جن سجانہ و تعالیٰ وقت قيامت كا انظار ميں ہے بلكه ان قسموں كالحاظ كيے بغيرى عقل ہزاواجب كرنے اور ہزاكے وقت كوئل ادر حكم عمل كے وقت سے جدا بجھنے كے ليے كافى ہے اور اگر ناقعی عقل والوں كو يہ چيز بعيد اور عالی نظر آتی ہے تو اس وجہ ہے آتی ہے كہ الى روز جبكہ اولين اور آخر بين سب كا اجتماع ہوگا ، ہمركى كو اس كى ہزا پہنچانا ايك بہت دشوار كام ہے خصوصاً جب كہ وہ كثير جماعت مقابلے كہ ہمركى كو اس كى ہزا پہنچانا ايك بہت دشوار كام ہے خصوصاً جب كہ وہ كثير جماعت مقابلے كے الى جمع ہو جائے اور وہ وہ فاع پر اُر آتا كي كہ الى دو ت ميں ہزا پہنچانا مكن نہيں رہتا اى ليے اقتد ار والے بادشا ہول نے طاقت ور جموم كو مزا دينے ہے ہر بنائے حكمت كنارہ كيا ہوا وہ پہلے محتلف تد ابر اور حيلوں كے ساتھ ان كى جمعیت كومنتشر كر كے ان كى قوت كو پاش پاش كيا معالمہ جدا جدا جدا جدا جدا جات اتو اس وشوارى ہے زیادہ دُورى ہونا۔

الله تعالی نے اب ذکورہ قسموں اور جس مضمون پر یہ قسمیں اُٹھائی ہیں جو کہ اِن دَبّک کَبالُورُ صَادِ ہے کے درمیان جملہ معرضہ کے طور پر دنیا میں جزادیے کے اینے تین واقعات بیان فرمائے جن میں سے ہرایک واقعہ میں نہایت طاقت وراور کشر التعداد جماعت والوں کو انتہائی آسان اسباب کے ساتھ بالکل جاہ اور نیست و نابود فرما دیا تو اس کی قدرت کے سامنے طاقت ورول کی کثیر تعداد کو جزا دینے کے معاملے کو دشوار اور محال ہرگز نہیں سجھنا سامنے طاقت ورول کی کثیر تعداد کو جزا دینے کے معاملے کو دشوار اور محال ہرگز نہیں سجھنا جا ہے اور اس کی قدرت پر قیاس نہیں کرنا جا ہے کہ ان کی اس سے کوئی نبست نہیں۔

اور بہال تین واقعات کواختیار کرنے کی وجہ یہ ہے کہ اگر کسی سے کوئی ایسا کام ایک مرتبہ مسادر ہوتا ہے جو کہ خلاف عادت ہوتو اسے امراتفاتی خیال کرتے ہیں لیکن جب دو بار یاسہ بار واقع ہوتا ہے تو یفین حاصل ہوجاتا ہے کہ یہ کام اس مخص کے لیے بہت آسان اور ہلکا ہے۔ اور یسراصل میں یسری تھا'یا کو حذف کر کے کسر دیکو اس پر دلیل کے طور پر چھوڑ دیا اور یسراصل میں یسری تھا'یا کو حذف کر کے کسر دیکو اس پر دلیل کے طور پر چھوڑ دیا مسامل میں یسری تھا'یا کو حذف کر کے کسر دیکو اس پر دلیل کے طور پر چھوڑ دیا مسامل میں ایسری تھا'یا کو حذف کر کے کسر دیکو اس پر دلیل کے طور پر چھوڑ دیا مسامل میں ایسری تھا'یا کو حذف کر کے کسر دیکو اس پر دلیل کے طور پر چھوڑ دیا مسامل میں ایسری تھا'یا کو حذف کر کے کسر دیکو اس پر دلیل کے طور پر چھوڑ دیا

کیا۔ کہتے ہیں کہ ایک مخص نے انعث نحوی سے اس یا کے گرانے کی وجہ ہوچھی۔انفش نے کہا کہ جب تک تو ایک سال تک میری خدمت نہ کرے میں تجھے اس یا کے گرانے کی وجہ ہیں بناؤں گا ایک سال کی خدمت کے بعد اس نے یوں بیان کیا کہ بسری مشتق ہے سری ہے جس كامعنى ہے رات كو چلنا اور بدرات كو چلنے والوں كى صفت ہے ندكدرات كى صفت ليكن مجازی طور پراسے رات کی مفت بنا دیا میا ہے اس لیے کہ بیرات کو چلنے کا وفت ہے اور عربوں کی اصطلاح ہیں مجازی طور پرنعل کو زمان یا مکان کی طرف منسوب کرنے کا بہت رواج ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ لیلہ قائم' نہارہ صائم' تو جب یسری کےمعنوں میں تبدیلی واقع ہو گئ تو انہوں نے جا ہا کہ اس کے لفظ میں بھی چھ تبدیلی کردیں تا کہ لفظ معنی کے مطابق ہو۔ یہ ہے وہ جواب جواس بارے میں اخفش ہے منقول ہے۔ لیکن پیہ بات وومقد مات پر موقوف ہے۔ایک بیا کہ بسری سری سے مشتق ہے اور بیالاً زمنیس بلکہ ظاہر بیا ہے کہ مرایت سے مشتل بتاكه وَالسَّلْيُسِلِ إِذَا مسجى وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَى كَمْ طَالِلْ مُوجِائِد ومرابد بات كداكرسرى مصنت موتو جلنے والوں كى صفت موكى ندكدرات كى صفت اور يا بمى لازم نہیں ہے بلکہ ظاہر یہ ہے کہ رات کو چلنے سے جدا کر کے مطلق چلنا مرادلیا کیا ہے۔ واللیل اذا ادبر کے انداز میں۔ پس بیرات کی مغت ہوگی یا شب روی کا استعارہ رات کے جانے کے لیے ہوگا اس کیے کہ رات کا جانا اور رات میں جانا ایک دوسرے کے موافق ہیں بلکہ اگر ہم تحقیق نظرے کام لیں تو شب روی کی حقیقت بھی رات کی مفت ہو سکتی ہاس طرح سے كرحقيقت مى رات زمين كے كاؤدم سائے كانام ہے جوكدة فاب كے مقابلے ميں حركت كرتا ہے اور اس كاؤدم كے پيندے كے آفاق ميں ہے كسى أفق ير يورا أترنے كى وجہ ہے اس اُفْق کی رات آ جاتی ہے اور وہ گاؤ دم ہمیشہ حرکت میں ہے لیکن ہراُفق کی نبست ہے اس ک حرکت رات میں اس اُفق میں ہوتی ہے۔ پس زیادہ بہتر یہ ہے کہ اس یا کو گرانے کی وجہ مخزشتہ یات کے آخری کلمات سے ہم شکل ہونے کی رعایت ہے کھے اور نہیں۔

آلَمْ تَرَكَیْفَ فَعَلَ رَبُّكَ كیا تونے دیکھائیں كہ تیرے پروروگارنے كیا كیا اور يہال و كيمائیں كہ تیرے پروروگارنے كیا كیا اور يہال دیکھنا جائے كے معنوں میں ہال ليے كہ بيدواقعة تواتر اور شہرت كے اس مرتبے پرتھا marfat.com

كداسے جاننا كوياد كى اسے۔ لفظ دبلے لائے كى وجہ

اور یہاں بلکہ اس ساری سورۃ اور دوسری سورتوں میں اسم ذات پاک کی بجائے ربک کالفظ استعال ہوا ہے اور یہاں اور اس جیسے دوسرے مقامات میں اس لفظ کو اختیار کرنے کی وجہ یہ ہے کہ دور ربو بیت جو کہ عظیم الثان رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف منسوب ہے جامع ہے اور جامع ربوبیت بلاشہ عدل و انصاف قائم کرنے کا متقاضی ہے جبکہ عدل و انصاف نافر مانوں اور سرکھوں کو ہلاک کرنے کا تقاضا کرتا ہے۔

بعًادٍ إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ارم كرب والفرق عادك ساتھ اور وہ ارم بلند يُرتكلف سنونوں والا تفاعماد عمر كى جمع بے جيسے كہ جبال جبل كى جمع ہے۔

عاددوفرقول كانام ہے

یہاں جانتا جاہیے کہ عاد دوگر وہوں کا نام ہے۔ عاد اولی کہ جنہیں قدیم عاد بھی کہتے ہیں اور وہ عاد بن ارص بن ارم بن سام بن حضرت نوح علیہ السلام کی اولاد ہیں اور انہیں عاد ارم بھی کہتے ہیں اس لیے کہ ارم ان کا دادا تھا اور انہوں نے شہر ارم کو بھی اپنے دادا کے نام سے موسوم کیا تھا اور ان کی رہائش گاہیں عدن کے ساتھ تھیں۔

عاد دوم کہ یہ ایک دومرے شخص کی اولاد ہیں اس کا نام بھی عاد تھا۔ عاد اولیٰ کی باتی رہنے والیٰ سل بھی ہے والی سے تھااس نے حضر موت کے ساتھ احقاف کی زبین ہیں وطن بنایا اور اس کے بیٹے اس ملک میں بھیل مجے اور اپنے نبی علیہ السلام کے ساتھ جو کہ حضرت ہود علیہ السلام سے بیٹے عاد دوم کا واقعہ قرآن مجید بی بحرار کے ساتھ وارد ہے جیسا کہ اپنے مقام پر ندکور ہے جبکہ عاد اولیٰ کا واقعہ قرآن مجید بی دومقامات سے زیادہ نہیں آیا اور وہ بھی اجمالی طور پر ہے جبکہ عاد اولیٰ کا واقعہ قرآن مجید بی دومقامات سے زیادہ نہیں آیا اور وہ بھی اجمالی طور پر ہے ایک یہاں اور دوسرے سورة النجم بی کہ و آھلک عاد ہی الدولیٰ اشارہ کرتا ہے۔

عاداولی کا بفترر کفایت واقعه

حاصلِ کلام بیر کہ ان کا واقعہ نس قدر اس آیت کی تغییر میں کافی ہے یہاں تکھا جاتا marfat.com

ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اس گروہ کو بہت بڑے جم وراز قد اور بے تعاشا طاقت دی تھی اور وہ اپنے زمانے والوں میں سے ان صفات میں ممتاز تھے۔ ان میں سے سب سے چھوٹے قد والا بارہ گرکا تھا۔ اور ان میں سے برخض بڑی بڑی چٹانوں کو کہ جنہیں کثیر جماعت کے بغیر اُٹھا نہیں سکتے تھے۔ ایک ہاتھ سے اُٹھا کر پلٹ دیتا تھا۔ اور وہ پورے ملک یمن پر اپن طاقت اور توت کی وجہ سے قابض تھے یہاں تک کہ دو بڑے بادشاہ ان میں بیدا ہوئے۔ پہلا شدید اور دوسرا شداد اور بید ونوں بادشاہ مشرق سے مغرب تک زمین پر قابض تھے اور ان کے بہ شارف کر اور بے پناہ نزانے تھے۔ خصوصاً بڑے بھائی شدید کے مرنے کے بعد شداد کی دولت اور حکومت حد سے زیادہ بڑھ کی چارسو سے کھی او پر بادشاہوں نے اس کی مات نہ ماتھی اور خات نہ کی اور زمین کے بادشاہوں میں سے کی میں بھی اس کے مقابلے کی طاقت نہ ماتھی اختیار کی اور زمین کے بادشاہوں میں سے کی میں بھی اس کے مقابلے کی طاقت نہ

اس تکبر کی وجہ ہے اس نے خدائی کا دعویٰ کر دیا اس زمانے کے واعظوں اور داناؤں نے جن کے پاس انہیاء علیم السلام کی میراث جس ہے پچھ کم باتی تھا اس تعین کو وعظ وضیحت کے طور پر خدا تعالیٰ ہے ڈرایا۔ اور اسے اللہ تعالیٰ کی عبادت کی دعوت دی۔ اس نے کہا کہ جھے اللہ تعالیٰ کی عبادت میں اس دولت نعت مرتبہ اور ثروت سے زیادہ اور کیا حاصل ہوگا ، جوکسی کی خدمت بجا لاتا ہے۔ جوکسی کی خدمت بجا لاتا ہے۔ جوکسی کی خدمت کرنے کی خرورت نہیں ہے۔ انہوں نے کہا کہ یہ جھے یہ بہوں نے کہا کہ یہ بھے یہ بہوں نے کہا کہ یہ بہوں نے کہا کہ یہ بہوں میں ایک چیز میں میرورت نہیں ہے۔ انہوں نے کہا کہ یہ سب دنیوی حکومت و دولت زائل اور فائی ہے اللہ تعالیٰ اپنی عبادت کے تواب میں ایک چیز مساری و نیا ہے بہتر عطا فر باتا ہے جس کا نام بہشت ہے اور گزشتہ انہیاء علیم السلام اس کی تعریف بیان کر میے ہیں اس نے پوچھا کہ اس بہشت کی کیا صفت ہے؟ واعظوں نے انہیاء علیم السلام ہے منقول اوصاف کے مطابق تمام اوصاف بیان کر دیتے اس نے کہا کہ جھے اس بہشت کی بھی ضرورت نہیں اس لے کہ ہیں دنیا ہیں اس کی بانند بہشت بنا سکتا ہوں۔ اس بہشت کی بھی ضرورت نہیں اس لے کہ ہیں دنیا ہیں اس کی بانند بہشت بنا سکتا ہوں۔ شدا لعین کی خودسا ختہ بہشت کا واقعہ شدا لعین کی خودسا ختہ بہشت کا واقعہ

اس نے ایپے معتبر سرداروں میں ہے ایک سوآ دمیوں کی ڈیوٹی نگادی اور ان میں ہے۔ Martat.com

برایک نے ساتھ بزاروں کو مقرر کر دیا تا کہ وہ عمارت کے پروگرام اور اعمال میں اس سردار
کی مدد کریں اور سرداروں کو ڈیو ٹیوں پرلگا دیا۔ اور ساری دنیا کے تمام ممالک میں احکام بھیج
دیئے کہ جہاں بھی سونے اور چاندی کی کا نیں ہوں ان کی اینٹیں بنا کر بھیجی جا کیں اور اس
نے زمین کے مدفون خزانے نکال باہر کیے اور کو وعدن کے ساتھ ایک مربع شکل کے شہر ک
جس کا حلقہ چالیس کو س تھا ' ہر طرف سے دس کوس مقرد کر کے بنیا در کھی۔ پہلے اس کے تھم پر
اس کی بنیا دکو کھود کر پائی تک پہنچایا گیا اور اسے سلیمانی پھر کے ساتھ پُر کیا گیا اور جب اس
کی بنیا دس کے زمین پر ظاہر ہوگئ تو سونے اور چاندی کی اینٹوں سے اس شہر کی چارد یواری بنائی
گی بنیا دس کی دیوار کی بلندی اس وقت کے متعارف پیانے کے مطابق پانسوگر بنائی گئی۔
سورج طلوع ہونے کے وقت اس کی شعاعیں جپکنے سے نگا ہیں اس دیوار کود کھنے سے چندھیا
جاتی تھیں۔

اور ندکورہ چار دیواری کے اندرایک ہزار محلات کی بنیادر کھی گئ ہرکل ہزار ستونوں پر مشتمل تھا اور ستونوں کو تیم سے زمر داور یا قوت کے ساتھ مرصع کیا گیا اور شہر کے عین وسط میں ایک نہر بنائی اور اس نہر سے چھوٹے چھوٹے کھالے محلات کی طمرف جاری کیے۔ اور ان نہروں کے حن کو بینی یا قوت اور دوسرے جو اہرات سے پُر کیا۔ اور نہر اور کھالوں کے نہروں کے حن کو بینی یا قوت اور دوسرے جو اہرات سے پُر کیا۔ اور نہر اور کھالوں کے کنارے درخت کھڑے کے جن کے شخص زمر دکی اور شکوفوں کے بجائے یا قوت اور مروارید لگانے کا تھم دیا اور مکانوں اور ڈکانوں کو اندر کی طرف سے گلاب کے ساتھ مشک وعنر کا گارا بناکر لیمیا گیا۔

اورسونے یا توت اور جواہر کے انہی آ واز والے اور خوب صورت پرندے درختوں پر بنائے اور شہر کے اردگرد ایک ہزار سونے کے اور جواہر کے مینار تیار کیے اور میناروں میں چوکیدار مقرد کیے تاکہ باری باری بہرہ دیں اور جب مکانات اور محلات سمیت بیشہر بن گیا تو اس نے تھم دیا کہ پورے شہر کے لیے قالین اور فرش سونے کی تاروں سے بنائے جا کیں اور سونے اور چا ندی کے برتن اس شہر کے مکانوں میں سلیقے کے ساتھ چُن دیں اور بعض نہروں میں میں دودہ اور بعض میں شہد جاری کر دیا اور بازاروں اور

marfat.com

دُکانوں کو بھی سونے کی تارول سے منقش پردول سے آ راستہ کر کے پیشے اور صنعت سے وابستہ لوگوں کو تھم دیا کہ وہ اپنے اپنے کام بیں لگ جائیں اور انواع و اقسام کے کھانے مشائیاں وغیرہ تیار کر کے تھم دیا کہ دربار شاہی کے جو تھے کھانے کے طور پرتمام شہریوں کو بہنچائے جائیں اور اس کیفیت کے ساتھ بیشہر بارہ سال کی مدت میں تیار ہوا۔

اس کے بعداس نے تھم دیا کہ تمام بڑے بڑے امراء پوری زیب وزینت کے ساتھ اس شہر میں داخل ہوں اور سکونت افتیار کریں اور وہ خود بھی اپنے پیروکاروں اور لشکر سمیت پورے تکبر اور غرور کے ساتھ اش شہر کود کھنے کے لیے چلا۔ اور وہ واعظوں اور نفیوت کرنے والوں کو نداتی اور تسخر کے طور پر کہدر ہاتھا کہتم جمعے بھی جنت حاصل کرنے کے لیے تکلیف درت در در ہے تھے کہ میں کی کے حضور اپنا سر جمکاؤں اور عاجزی کروں۔ یہ ہے میری قدرت اور دولت تم نے دیمی اور میر استغناء اور بے نیازی کا مشاہدہ کیا۔ کہتے ہیں کہ جب وہ اس شہر کے قریب پہنچا تو اس شہر کے لوگ گروہ درگروہ استقبال کے لیے ہا ہر آ کر اس پُر زر جو اہر کی نچھاور کر رہے ہے ابھی شہر کے دروازے سے ایک خماور کر رہے ہے اور کئے و تھا کف پیش کر رہے ہے ابھی شہر کے دروازے سے ایک خماور کر رہے ہے اور کئے و تھا کف پیش کر رہے ہے ابھی شہر کے دروازے سے ایک خماور کر رہے ہے اور کئے و تھا کہ بیش کر رہے ہے ابھی شہر کے دروازے سے ایک خماور کر رہے کا در بادشاہ بھی دروازے پرگرا اور بڑپ کر مرگیا اور جس شہر کو اس مشقت میوت کر کے بنایا تھا اسے دیکھنے کی حسرت دل میں ہی لے گیا۔

حضرت ملک الموت کی رفت کے دوواقعات

اور بعض کتابوں میں پڑھا ہے کہ تن تعالی نے ملک الموت سے فرمایا کہ بچے کی مخلوق کی روح کو بھی کرنے میں بھی رقت پیدا ہوئی ہے یائیس؟ عرض کی بارخدایا! ووقت موں کی روح کو بھی ان کی جان روحین قبض کرنے میں جھے بہت رقت وامن گیر ہوئی۔اگر تیرا بھی نبہ ہوتا تو میں ان کی جان لینے کا اقد ام ہر گز نہ کرتا' ان دو میں سے ایک نومولود پچ تھی جو کہ اپنی مال کے ہمراہ سمندر میں کشتی کے ایک تختے پر روگیا تھا' جھے اس کی مال کی جان قبض کرنے کا بھی ہوا اس وقت جھے اس کی مال کے بغیر خرگیری اس نبی مال کے بغیر خرگیری کرنے والا کوئی نہ تھا۔ دوسرا ایک بادشاہ تھا جس نے ایک شہر بڑی آ رزوؤں کے ساتھ بنایا کرنے والا کوئی نہ تھا۔ دوسرا ایک بادشاہ تھا جس نے ایک شہر بڑی آ رزوؤں کے ساتھ بنایا کہ سے مالے کے اس کی نہ تھا۔ دوسرا ایک بادشاہ تھا جس نے ایک شہر بڑی آ رزوؤں کے ساتھ بنایا کی مالے میں اس کے ایک شہر بڑی آ رزوؤں کے ساتھ بنایا کی مالے میں کا ساتھ بنایا کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کے مالے کی مالے کی مالے کے مالے کی مالے ک

تھااوراس شہرجیاد نیا بیں کوئی شہر بنایا نہیں گیا۔ جب اس نے وہ شہرد کھنے کے لیے اس کے دروازے پر قدم رکھا تو تھم ہوا کہ بیں اس کی جان لےلوں اس وقت بھی وہ حسرت دکھے کر جو وہ بادشاہ دل بیں لے گیا مجھے رفت ہوئی۔ در بار خداوندی سے ارشاد ہوا کہ یہ بادشاہ وہی بجہ تو ت اور بچے تھا جے بیں نے اس کے ماں باپ کی پرورش کے واسطے کے بغیر اس د بد بے تو ت اور دولت تک پہنچایا جب وہ اس مرتبے پر پہنچا تو اس نے ہمارے تھم سے سرکشی کی اور تکبر اختیار کیا اور این سرا یائی۔

شداداوراس کی ماں کا واقعہ

مؤرض ہوں کہتے ہیں کہ متنی کا وہ تختہ جس پر سے بچررہ گیا تھا ہوا کے حرکت دینے کی وجہ سے مندر کے کنارے بینے گیا۔ ساحل پر دھو بی کپڑے دھورہ سے جب انہوں نے دیکھا کہ ایک بچر میت کے ہمراہ تخت پر پڑا ہے سندر ہیں بینے گئے اور شختے کو گئی کر لے گئے۔ وہ خوب صورت اور گئے۔ کو وہ نوب صورت اور گئے۔ کو وہ کو کو وہوں کے سردار کے پاس لے گئے۔ وہ خوب صورت اور خوش وضع بچد کے کو فرنے کر دیا اور بچکو دھو یوں کے سردار کے پاس لے گئے۔ وہ خوب صورت اور خوش وضع بچد کے کو فرنے کر فریع ہوگیا اور بھی اور شخل بالیا اور اس کی پرورش شردع کر دی یہاں تک کہ سات سال کا ہوگیا اور بچپنے سے ہی اس ہیں وانائی اور عقل مندی کر قرام کا ہر سے وہ ایک دن بتی سے باہر بچوں کے ہمراہ کھیل رہا تھا کہ اچا تک شور اُٹھا کہ بادشاہ کی سواری گزر دی ہو اور گئر کے اور بادشاہ کی سواری اور لشکر کے گزر نے کا فظارہ کر رہا تھا یہاں تک کہ سب لشکری گزر گئے اور بادشاہ کی سواری اور لشکر کے گزر نے کا فظارہ کر رہا تھا کہاں تک کہ سب لشکری گزر گئے اور بادشاہ کی سواری اور لشکر کے گئر کے اور بادشاہ کی سواری اور کھولا دیکھا کہاں نے دیکھا کہ ایک لیٹا ہوا کاغذ سرداہ پڑا ہے اس نے وہ کاغذ اُٹھا لیا اور کھولا دیکھا کہاں کاغذ ہی سرمہ لیٹا ہوا کاغذ سرداہ پڑا ہے اس نے وہ کاغذ اُٹھا لیا اور کھولا دیکھا کہاں کاغذ ہی سرمہ لیٹا ہوا ہے۔

ال نے اپ دوستوں ہے کہا کہ جھے یہ سرمہ طا ہے میری نظر کمزور ہے اگر آپ کہیں تو جس آ کھ جس ڈالوں؟ شاید کوئی فائدہ ہو۔ انہوں نے کہا کہ گری ہوئی چیز اُٹھا نائبیں چاہیے اور اگر تو نے اسے اُٹھا لیا ہے تو آ زیائے بغیر آ کھ جی ڈالنا بالکل درست نہیں۔ چاہیے کہ marfat.com

یہلے اسے کسی اور کی آنکھ میں استعمال کروتا کداگر نقصان وہ نہ ہوتو خود بھی استعمال کر لینا۔ اس پیادے نے دائیں بائیں دیکھااس لڑکے کے سواکوئی نظرنہ آیا جو کہ ٹیلے پر کھڑا نظارہ کر ر ہاتھا اس نے کہالڑ کے! ادھرآ وُتمہاری آنکھوں میں سرمہ ڈالوں جس سے تمہاری آنکھوں کوزیب وزینت حاصل ہوگی۔لڑکا بھا گتا ہوا گیا اور اس نے پیادے کے ہاتھ ہے سرے والا كاغذ كے كرا يك سلائى اپنى آئكھ ميں ۋال لى۔ سرمہ ۋالے بى زېرز مين خزانے اس كى نظر میں ظاہر ہونے لگے اس چیز کی طرح جو کہ یانی کی تہ سے ظاہر ہوتی ہے۔ اڑ کے نے ہوشیاری اور دانائی کے طریقے سے چیخنا شروع کر دیا کہ اے ظالموں! ناانصافو! تم نے میری آ تھول کو اندھا کر دیا میں بادشاہ کے حضور فریاد کرنے جار ہا ہوں اور تمہیں سزادِلوا تا ہوں۔ بیادے بیدواقعہ سنتے بی گرتے پڑتے جیران ویریثان بھاگ کھڑے ہوئے۔بیاؤ کا سرمے والا كاغذائي بمراه كرممرة عميا وهوبيول كرمردار سي بدراز بيان كياس نے كہاك میرے بیر کدھے اور محوڑے حاضر ہیں ات کے وقت جب لوگ سو جائیں تو کسیاں اور كدال كے كر جہال تہميں خزانے نظرة كيل بيسب كدمے اور كموڑے وہاں لے جاؤ اور قابلِ اعتماد مزدور جو كه سالها سال سے مير ے رفق اور دوست بين ساتھ لے جاؤ اور جو پچھ <u> ہوسکئے اُٹھالاؤ۔</u>

لا کے نے ہی کام شروع کردیا اور بے شار مال لا ناشروع کردیا اور سبستی والوں کو اپنے ساتھ متنق کرلیا اور اس بستی کے سردار کوئل کر کے اس کی جگہ خود قابض ہو گیا۔ رفتہ رفتہ بینج بی وہ اس کے انقام کے در پے ہو گئے اس لا کے نے بیخ می وہ جس اکر میں اور مقابلے کیے اور غالب آیا یہاں تک کہ بادشاہ مرکمیا اور بیال کا بعنوں رہمی قابض ہو گیا اور روئے بعنوت کر کے بادشاہ بن گیا اور رفتہ رفتہ وُور درازکی ریاستوں رہمی قابض ہو گیا اور روئے زمین کے تابع ہو گئے۔

شداد کے شہرتک عبداللہ بن قلاب رضی اللہ عند کی رسائی اور

<u>اس کے متعلق اخبار بالغیب</u>

اب ہم یہاں پہنچے کہ مذکورہ شہر کا کیا ہنا۔ معتبر نفامیر میں لکھا ہے کہ اس بادشاہ اور اس martat.com

کے لٹکریوں کے ہلاک ہونے کے بعداس شہر کے لوگوں کی نظرے چھیا دیا حمیا مرب کہعض را توں میں عدن کے شہر کے مضافات میں رہنے والوں کو وہاں ایک چیک اور روشنی نظر آتی ہے اور کہتے ہیں کہ یہ چمک اس شہر کی و بواروں کی ہے۔ اور حضرت عبداللہ بن قلابہ رضی الله عنہ جو کہ جمارے رسول کر میم صلی اللہ علیہ وسلم کے اصحاب میں سے بیں ایک ون اس علاقے میں تھہرے ہوئے تھے۔ آپ کا ایک اونٹ بھاگ گیا' آپ اسے پکڑنے کے لیے دوڑے اوراس شہرکے میاں پہنچ محتے اور اس کے مینار اور دیواریں و کیھتے ہی دہشت زوہ اور ہکا بکارہ سي اورول ميس سوجا كداس شهر كي صورت بعينه اس بهشت كي هي جس كا جمار سرسول ياك صلی الله علیه وسلم نے ہمارے ساتھ وعدہ فرمایا ہے۔شاید مجھے اس دارالعمل میں وہ بہشت وكھائى گئى ہو جب اس شہر كے دروازے ير يہنچ اور اندر داخل ہوكر و يكھاكماس شہر كے محلات نہریں اور درخت سب کے سب وعدہ شدہ جنت کے مشابہ ہیں اور شہر میں کوئی بھی نہیں۔ آپ نے محلات کے صحنوں میں بچھے ہوئے کچھ جواہرات اور بواقیت اپنی جا در میں اُٹھا لیے اور تنہائی کے خوف ہے باہر آ کرومشق کی راہ لی اور حضرت معاویة بن ابوسفیان رضی اللہ عنہ کے پاس یہ ماجرابیان کیا جو کہ اس وقت کے ظیفہ تھے۔ آپ نے ان سے پوچھا کہ آپ نے يشرخواب مين ديكها ہے يا بے دارى مين؟ كها بے دارى مين ويكها ہے اور مين نے اس شهر کی علامات کو دل میں بکا کر رکھا ہے کہ کو و عدن سے فلال سمت کواتے فاصلے پر ہے اور دوسری سمت سے اس کی علامت فلال درخت ہے اور دیکرسمت سے فلال کنوال اور میہ ہیں وہ جوابرات اور یا قوت جو کہ بیں نے وہاں سے اُٹھائے ہیں میرے یاس موجود ہیں۔

حضرت امیر معاویة رضی الله عند یه ماجرائن کر بہت منتجب ہوئے اور آپ نے اس وقت کے علاء کے پاس آ دمی بھیجے کہ کیا دنیا میں کوئی ایبا شہر ہے جو کہ سونے اور جاندی کے ساتھ بنایا گیا ہو اور اس کی صفات اس قسم کی ہوں۔ وفت کے علاء نے کہا کہ ہاں قرآن پاک میں اس شہر کا ذکر آ یا کہ ارم ذات العماد ہے اور اس شہر کوئی تعالی نے لوگوں کی نظر سے پوشیدہ رکھا ہے اور حضور صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ میری اُمت کا ایک آ دمی اس شہر میں داخل ہوگا دووہ می شدہ اونٹ کی تلاش میں داخل ہوگا دووہ می شدہ اونٹ کی تلاش میں داخل ہوگا دووہ می شدہ اونٹ کی تلاش میں داخل ہوگا دووہ می شدہ اونٹ کی تلاش میں داخل ہوگا دووہ می شدہ اونٹ کی تلاش میں

اس شہرتک پنچ کا اور اس کے عجائبات کا مشاہرہ کرے گا جب حضرت امیر معاویة رضی اللہ عنہ نے عبداللہ بن قلابہ رضی اللہ عنہ میں وہ اوصاف مطابق واقعہ پائیس تو فر مایا کہ اللہ تعالیٰ کے قتم وہ فحص یہی ہے۔

خلاصۃ المرام آئکہ اس شہر کے اوصاف میں اس قدر سے زیادہ ذکر نہیں کیے جاسکتے کہ جمعے معلومات کوعلم ذات کے محیط ہونے کے باوجود حضرت رب العزت نے اس کے بارے میں ارشاد فرمایا ہے کہ بارے میں ارشاد فرمایا ہے کہ

۔ آگئی لَمْ یَغُلُقُ مِنْلُهَا فِی الْبِلَادِ وہ شمرکہ جس کی شل روئے کے شہروں میں ہے کوئی شہر پیدائیں کیا میا۔

وَنَهُوْدَ اللّذِينَ جَابُوا الصَّغُورَ بِالْوَادِ اور تیرے پروردگار نے فرقہ خمود کے ساتھ کیاسلوک کیا جو کہ وادی القریٰ میں بڑے بڑے پھر تراشتے تھے اور فرقہ خمود والے فرقہ عاد والوں کے بچے تھے جو کہ عادیوں کی ہلاکت کے بعد حجاز مقدی اور شام کے درمیان رہائش پذیر ہوگئے تھے اور جمرے لے کروادی القریٰ تک سترہ سوآ بادیوں پرقابض تھے۔ ہر شہر میں اونے محلات اور ان میں پھول دار درختوں تراشے ہوئے پھر کی محرابی ممارات اور گل و ریاضین کی تھوری ہی درست کر کے دارعیش دیتے تھے اور بت پرتی کرتے تھے حتی کرتی تعالی ریاضین کی تھوری سے العملوٰ قوالسلام کو رسول بنا کر ان کے پاس بھیجا اور ان کا واقعہ سور کی واشت میں فرورے۔

اور وادی القری ایک شہر کا نام ہے جو کہ طول وعرض میں مکہ معظمہ کے برابر ہے وہاں کھجور کے باغات اور چشمے بے شار ہیں اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم فتح خیبر کے بعداس شہر پر اور اس کے مضافات پر قابض ہوئے اور اگر چہ شود یوں کی بنائی ہوئی زیادہ تر عمارات اور باغات جمر اور اس کے مضافات میں منے لیکن وادی القری کو خصوصیت کے ساتھ اس لیے باغات جمر اور اس کے مضافات میں منے لیکن وادی القری کو خصوصیت کے ساتھ اس لیے بیان فرمایا کہ بید مقام ان کی آباد یوں کی آخری حدتمی اور ججاز مقدس کی سرحد سے متصل اور اس کے میان کی آباد یوں کی آخری حدتمی اور ججاز مقدس کی سرحد ہے وار جاز مقدس کی سرحد ہے۔ جاز مقدس کے سے اور جاز سے دور ہے۔ جاز مقدس کے اور اس کے احوال پر کما حقہ مطلع نہ تھے۔ نیز ویران اور لق ودق بڑا تھا۔

وَفِرْ عَوْنَ ذِى الْأَوْتَادِ اور كياسلوك كيا فرعون كے ساتھ جوكه ميخوں والا تھا يعنى لوگوں كو جوميخا كر كے عذاب دينا تھا۔ چنانچداس نے چندمسلمانوں كو جومعرت موكى عليہ السلام پرائيان لائے تھے اى طریقے سے ہلاك كرديا تھا۔

ان میں سے جبرئیل نامی اس کے خزانے کا داروغہ تھا اور وہ چوری چھے حضرت موکیٰ علیہ السلام پرائیان لیے آیا تھا۔فرعون نے اس کے اس حال پرمطلع ہوکراسے جارمیخ زمین میں انکا کر ہلاک کردیا۔

ان میں سے داروغہ جرئیل کی بیوی تھی جو کہ فرعون کی بیٹی کے بالوں میں کنگھی کرنے والی تھی وہ بھی حضرت موی علیہ السلام پرائیان لا چکی تھی۔ فرعون کی لڑکی نے اس ماجرے پر مطلع ہو کر فرعون کو آگاہ کر دیا۔ فرعون نے اس عورت کو نکا کر کہا کہ اسلام سے پھر جا' وہ عورت پر گشتہ نہ ہوئی اس نے تھم دیا حتی کہ اس کے ہاتھ اور پاؤں کو جار میخوں کے ساتھ زمین میں گاڑ کر ہلاک کر دیا۔

اوران میں سے حضرت آسیہ ہے فرعون کی ہوی۔ وہ بھی حضرت موی علیہ السلام پر المیان لا بھی تھیں۔ آپ فرعون کو جب وہ حضرت موی علیہ السلام کوستانا چاہتا تو پندونھیجت کرکے بازر کھتی تھیں۔ حق کے فرعون غضب ناک ہو گیا اور اس کے تھم پر انہیں بھی چار میخوں کے ساتھ باندھ دیا گیا اور سورج کی شدید گری میں ان کے سینے پر بھی کا پاٹ رکھ دیا گیا اس وقت حضرت آسیہ نے اپنے پروردگار کے حضور مناجات شروع کر دی کہ بارخدایا! میر سے لیے بہشت میں ایک گھر بتا اور ان ظالموں سے نجات عطافر ما۔ حضرت جبر کیل علیہ السلام پہنے کے اور ان کی روح کو بہشت میں پہنچا دیا اور انہیں اس گھر میں داخل کر دیا جو کہ مروارید سے خاص ان کی روح کو بہشت میں بہنچا دیا اور انہیں اس گھر میں داخل کر دیا جو کہ مروارید سے خاص ان کے لیے بنایا گیا تھا جب فرعون اُٹھا اور اس نے دیکھا تو معلوم ہوا کہ ان کا تن بے خاص ان پڑا ہے بایوس ہوکر لوٹ گیا۔

اوربعض مفسرین نے کا ہے کہ میخوں سے مراد نشکر ہیں اس لیے کہ نشکر ہیں کا کاروبار
سب میخ پر جنی ہے ان کے خیمے سب میخوں کے ساتھ قائم رہتے ہیں اور ان کے جانور
سکوڑنے اونٹ اور بیل سب میخوں کے ساتھ باند ھے جاتے ہیں۔ لہذا لشکری ایک میخ دینے
سلامی میڈوں کے ساتھ باند ھے جاتے ہیں۔ لہذا لشکری ایک میخ دینے
سلامی میڈوں کے ساتھ باند ھے جاتے ہیں۔ لہذا لشکری ایک میخ دینے
سلامی میڈوں کے ساتھ باند ھے جاتے ہیں۔ لہذا لشکری ایک میخ دینے
سلامی میڈوں کے ساتھ باند ہے جاتے ہیں۔ لہذا لشکری ایک میخ دینے

میں اس قدر بخل کرتے ہیں کہ شہری سونا دینے میں اتنا بخل نہیں کرتے اور فرعون کے بے شار لفکر سے صدوحیاب سے باہر ہے۔ کہتے ہیں کہ اس کے فشکر میں رسم بیتی کہ ایک رسائے کا دوسرے دس سے احتیاز گھوڑوں کے رنگوں کے ساتھ ہوتا تھا۔ مثلاً کمیت گھوڑوں کے سوار ایک گروہ کی صورت میں آتے ہے اور مشکیں گھوڑوں کے سوار دوسرے گروہ میں ای طرح ابلتی گھوڑوں کے سوار جن کا رنگ دوسروں سے کم تر ہوتا سوار دوسرے گروہ میں ای طرح ابلتی گھوڑوں کے سوار جن کا رنگ دوسروں سے کم تر ہوتا ہے لئنگر کے آگے ہراق ل وستے کے طور پر چلتے ہے ان کی تعداد ستر ہزار تھی اور یہاں سے اس کے کمیت گھوڑوں کے لئنگر کے آگے ہراق ل وستے کے طور پر چلتے ہے ان کی تعداد ستر ہزار تھی اور یہاں سے اس کے کمیت گھوڑوں کے لئنگر کو قیاس کرنا جا ہے۔

اور جب ان تین واقعات کے بیان سے جو کہ آن واحد میں نہایت طاقت ور کثیرالتعداد گروہوں پر دارالا ہتلاء ہیں جو کہ جزا کا مقام نہیں جزا واقع ہونے پر دلالت کرتے ہیں فراغت ہوئی اب بیان فرمایا جا رہا ہے کہ ان طاقت ور سرکش تین گروہوں کو ہلاک کرناان کے ملک اور مال کی طبع کی بناء پر نہیں تھا جیسا کہ بادشاہوں کو اپنے دشمنوں کی ہلاک کرناان کے ملک اور مال کی طبع کی بناء پر نھااس لیے کہ ان کا حال ہدے

الّذِيْنَ طَغُوا في الْبِلَادِ بيره الوّك تتے جنہوں نے شہروں میں نافر مانی اور سرکتی کی میں۔ اور شہروں کی تخصیص آس لیے ہے کہ غالب طور پر امن و امان کی جگہ اور مخلوق کے ہر گروہ کے رہنے کی جگہ ہوتے ہیں اور اگر ملک کے مالک ظالم ہوں تو بھی اپنے شہروں میں امن اور انصاب کی راہ قائم رکھتے ہیں آگرظلم و تعدی کرتے ہیں تو محرا اور کو ہتان میں اور انتظروں میں کرتے ہیں جو کہ اپنی قلم و سے باہر ہوں جبکہ یہ تینوں بے باک گروہ اپنے شہروں میں طغیان اور سرکشی اختیار کے ہوئے تھے۔

فَاکُنُکُورُوْا فِیْهَا الْفَسَادَ لَهِی شہروں میں فساد بہت کرتے ہتے اور فساد زیادہ کرنا ہے کہ شہروالول کے عقائد خراب کرتے ہتے۔ اور ظلم و تعدی اور اموال کو ہنے کی بُری رہم بھی رائج کرتے ہتے۔ اور گلم و تعدی اور اموال کو ہنے کی بُری رہم بھی رائج کرتے ہتے۔ اور قل و غارت اور گالی گلوچ بھی عمل میں لاتے ہتے تو لوگوں کا دین بھی بریاد ہوتا تھا اور آبرو بھی اور جان و مال بھی۔ بخلاف دوسرے ظالموں کے کہ ان کی طرف

ے نقصان یہ ہے کہ زیادہ تر جان اور مال ضائع کرتے ہیں۔

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ دَبُّكَ تَو تيرے پروردگار نے ان پر بارش كى طرح گرايا جس كى ربوبيت عام اور جامع ہے جس طرح وہ فساد يوں كا رب ہے مظلوموں كا بھى رب ہے اور اس كى ربوبيت مظلوموں كے ليے تقاضا فرماتى ہے كہ ان كے ظالموں سے واجبى انقام ليا حائے۔

سَوْطَ عَذَابِ جو کہ ان تینوں گروہوں پر بارش کی طرح نازل ہوئے اس عذاب کے مقابلے علیہ جو کہ ان تینوں گروہوں پر بارش کی طرح نازل ہوئے اس عذاب کے مقابلے میں جس کے یہ قیامت میں مستحق ہوئے ہیں اور وہاں ان کے لیے تیار ہے تھوار کے مقابلے میں ایک کوڑے کا تھم رکھتے ہیں اور لفظ صب اور سوط کے مجموعے سے پنہ چلا کہ عذاب کے لیے دواستعار نے رائے گئے ہیں۔ پہلا استعارہ بارش جس کی صب کا لفظ ترشی ہے اور دوسرا استعارہ کوڑا جس کی بابت لفظ سوط صراحت کرتا ہے اور ایک عبارت میں دواستعاروں کو جمع فرمانا کلام اللہ کا دستور ہے۔ بشر کے کلام میں نہیں پایا جاتا جیسا کہ فَا ذَا تَعَهُمُ اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوءِ وَ اَلْعَوْفِ مِی فَرِوجِ۔

غدكوره تنبن واقعات كي تخصيص ميں نكته

اوران تینوں واقعات کوخصوصیت کے ساتھ لانے بیں نکتہ یہ ہے کہ عوام کے ذہنول میں کثیر کلوقات سے بدلہ لینے اور انہیں سزادینے کو کال سجھنا یا تو اس جہت سے ہوتا ہے کہ وہ کثیر جماعت نہایت طاقت ور اور چالاک ہے کہ کوئی بھی ان کے مقالبے کی تاب نہیں رکھتا اس کال جانے کو دُور کرنے کے لیے شداد اور عاد کا واقعہ بیان فرمایا گیا۔

یامکان کے محفوظ اور قلعے کے مضبوط ہونے کی وجہ سے ہے اور اس طرح محال بجھنے کو دور کرنے کے لیے محمود کا واقعہ ارشاد فرمایا یا بجوم کی کثرت اور لشکروں کی زیادتی کی وجہ سے ہے اور اس بعید جانے کو دُور کرنے کے لیے فرعون کا واقعہ یاد دِلایا گیا اور ہر واقعہ میں اجمالی طور پرایک دو لفظ ایسے ارشاد فرمائے جو کہ محال جانے کی وجہ کا پہند دیتے تھے۔

آب اس مضمون کو بیان فرمایا جار ہاہے کہ جس کے لیے پانچ قشمیں اور تین واقعات martat.com

اِنَّ دَبَّكَ لَبِالْهِدْ صَادِ تَحْقِق ثابت ہوا كرآ بكا پروردگار البته كميں گاہ ميں ہے جيے كہ كوئى سرراہ حجب كر بيشا ہے اور گزرنے والوں كو ديكھ رہا ہے اور جانتا ہے كہ فلاں كيے گزرااس نے كيا كيا كاكہ بدلہ دینے كے وقت اس كے مطابق عمل كرے۔

يس الله تعالى جو دنيا ميس انقام نبيس ليتا صرف بني آدم كے التھے يُرے اعمال كو بورے طور پر جمع کرنے کے لیے ہے۔ کہ جب تک نوع انانی خم نہ ہو بوری طرح جمع كرنے كى مورت نبيل بنى ئنديد كدان كے اجھے يُرے اعمال سے عاقل ہے يا انقام لينا بے پروائی کے طور پراس کامقصود نہیں تو بیسب کھے مہلت دینا ہے بے مقصد چھوڑ تانہیں ہے۔ اور بندول کے بارے میں زیادہ ترید کمیں گاہ اور انظار مال عزت مرتبہ اور نعمت دسينے يا نددينے كى جهت سے ہے جب تك بير بات درجة ظبور ميں ندآ سے كه مال مرتبداور نعمت دینے کی صورت میں شکر کرتا ہے اور اپنی حدسے باہر قدم نبیں رکھتا یا تکبر اور فخر کی راہ چلتا ہے اور نافر مانی اورسرکشی اختیار کرتا ہے اور مال اور مرتبہ ندوینے کی صورت میں بھی ظاہر فرما تا ہے کہ آیا نعمتوں کی ناشکری کرتا ہے اور بے چینی اور بے قراری کرتا ہے یا صبر کرتا ہے اور قضا پر راضی مونا اپنادستور بناتا ہے لیکن اس کمیں گائی اور اس انظار کو اللہ تعالی انبیاء ملیم السلام صديقول اوليائ الله اورعلائ كرام كسواكونى نبيس جانا اورجولوك كغيبك كيفيت اورمعاطے ے غافل بي اس رازكو بالكل نبيس بيجائے اور ظاہرى تعيت اور مال پر فریفته موجاتے ہیں اور ظاہری غربت اور تکلی سے محبراہث اور شکایت کا شکار ہوجاتے ہیں اورنااميد ہوجاتے ہيں۔ چنانچ فرمايا جار ہاہے

فَآمَا الْإِنْسَانُ تورہاانسانُ وہ اس پوشیدہ معالمے سے عافل ہے اور اس کی غفلت کی لیل بیہ ہے کہ

اِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُنْهُ جب اس کا پروردگار مال دے کراس کا امتحان لیتا ہے فاکخر مَنْهُ تو است اس کا بخر مَنْهُ تو است اس مرتبے کی وجہ سے جو کہ مال دینے سے حاصل ہوا' عزت دیتا ہے۔وَنَعَنَهُ اور اسے marfat.com

نعت میں رکھتا ہے اس لیے کہ مال ہر نعمت کے حصول کا سبب ہے۔

فَیَقُولُ رَبِّی اکْرَمَنْ بِی کہنا ہے کہ میرے پروردگار نے جھےعزت دی بغیرای کے کہ حقیقت کا سراغ لگائے اور جانے کہ بیسب امتخان ہے۔اللہ تعالیٰ کی خفیہ تدبیر سے بے خوف نہیں ہوا جا سکتا اور نہ بی وحوکا کھایا جا سکتا ہے۔کہ جب جب ابتدائی حالت میں عزت اور مال عطا فرمایا ہے آخر میں بھی ای کے مطابق عمل ہوگا بلکہ بیہ مقدمہ ابھی تک جاب اور پردے میں ہے۔

وَاعْمًا إِذًا مَمَا ابْتَلَاهُ اور جب اس كابرورد كارفقراور غربت كے ساتھ اس كا امتحال ليتا

فَقَدَ عَلَيْهِ دِذْقَهُ پِس اس كے رزق كواس پر تنگ فرمائے اگر چه بفذرِ حاجت ميسر آئے جس پراس كى بقاء دابسة ہے۔

فیقول رہی اھائن تو کہتا ہے کہ میرے پروردگار نے جھے ذکیل کر دیا بغیراس کے کہاں امری حقیقت کا سراغ لگائے کہ بیسب بچھ میرے مبراور سکون کے امتحان کے لیے ہور ابھی عزت اور ذلت کا مقدمہ پردہ خفا میں ہے بہت سے متاجیاں ہیں جو کہ آخرت کی عزت کا موجب ہو گئیں اور بہت سے دولت اور مال ایسے ہیں جو کہ آخرت میں حسرت اور وہال کا باعث ہوئے۔ اپن حال کی ابتدا سے دھو کہ کھانا اور نعمت اور مصیبت دونوں صورتوں میں غیب کے معاطے کو جو کہ امتحان اور آزمائش ہے نہ بجھنا اِنَّ دَبِّکَ لَبِالْهِدْ صَادِ کے مضمون سے بہت بری غفلت کی دلیل ہے۔

چندسوالات اوران کے جوابات

یہاں چندسوالات باتی رہ مھے جن کے جوابات ضروری ہیں۔ پہلاسوال یہ ہے کہ لفظ فا فرع بھانے کے لیے فا فرع بھانے کے لیے آتا ہے جبکہ لغت عرب میں اما کا کلمہ کسی مجمل کی تفصیل کے لیے ہے جو کہ پہلے کلام میں گزرا ہواس کلام میں وہ مجمل کہاں ہے اور فرع لا نا اور تفصیل بیان کرنا کسی چیز کے ساتھ متعلق ہے۔

اس کا جواب سے ہے کہ وہ مجمل کلام اِنَّ رَبَّكَ لَبَالْمِدْصَادِ کامضمون ہے اس لیے کہ marfat.com

اس مضمون سے معلوم ہوا کہ پروردگار عالم آ زمائش اور امتحان کے دریے ہے اور وہ بندوں اور کے حالات سے غافل نہیں ہے اور اس کا تقاضا ہے کہ بندے بھی خبر دار اور پرحذر ہوں اور غافل نہ ہوں لیکن آ دمی غفلت میں گرفتار ہے اور عزت و ذلت اور امیری غربی دونوں صورتوں میں اس کی غفلت کا بیان اس مضمون کی تفصیل ہوا اور اس تفصیل کو اس اجمال پر فا کے لفظ کے ساتھ فرع کے طور برلایا گیا۔

دوسراسوال بیہ ہے کہ دولت کی آنر مائش کی طرف فاکرمہ فرمایا گیا اور بندے کی زبان سے بھی فاکرمہ فرمایا گیا اور بندے کی زبان سے بھی فاکرمن فقل فرمایا گیا جبکہ غربت کی آنر مائش کی طرف فاہانہ نیس فرمایا اور بندے کی زبان سے فاہان نقل فرمایا محیا اس انداز کو بدلنے میں کیا نکتہ ہے؟

اس کا جواب یہ ہے کہ رزق کی تنگی حقیقت میں ذکیل کرنے کا سبب نہیں ہے۔ پس فقیری کو ذکت کہنا غافل بندے کا کام ہے واقعہ کے مطابق نہیں۔ اس لیے کہ بسا اوقات ظاہری فقر بندے کی دنیا و آخرت کی درتی کا سبب ہوجا تا ہے بلکہ عزت اور مرتبے کا ذریعہ بھی بن جا تا ہے جیسا کہ اولیائے اللہ کی اس جماعت میں اس کا مشاہدہ کیا گیا ہے جنہوں نے فقراء اور غربت میں زندگی بسر فرمائی ہے جبکہ دولت اور مال حقیقت میں غالب طور پر فاہری عزت کا سبب نہ ہو بہر حال دنیا میں رزق کی فراخی دنیا و آخرت کی عزت کا سبب نہ ہو بہر حال دنیا میں رزق کی فراخی دنیا و آخرت کی عزت کا سبب نہ ہو بہر حال دنیا میں رزق کی فراخی دنیا و آخرت دونوں کے مجموعی خدارے سے بہتر ہے اس تکتے کے لیے یہاں فاکر مہ کا لفظ بڑھایا گیا ہے۔

تیراسوال بیہ کہ کلام کا ظامہ یوں معلوم ہوتا ہے کہ فامّا الْاِنسانُ فَیَقُولُ رَبّی اَهَانَن اِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَّدُ الْحُرَمَنُ اِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدُولُ رَبّی اَهَانَن اِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدُولُ كَرْمَنُ اِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَیَقُولُ کا ظرف عَلَیْهِ رِذْقَهُ تُوفَیَقُولُ دونوں جگہ مبتدا کی خبر ہے اور اَمّا اِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَیقُولُ کا ظرف ہے جبکہ کلام مجید میں پہلے اما کو انسان پر داخل کیا گیا اور پھر اَمّا کو اِذَا مَا ابْتَلَاهُ پر لایا گیا جو کہ یقول کا ظرف ہے اس تبدیلی میں کیا تکت ہے؟

اس کا جواب یہ ہے کہ حقیقت میں اما ظرف پر واخل ہے اس لیے کہ لفظ امالانے سے
انسان کی تفصیل منظور نہیں ہے بلکہ دولت اور فقر کے ساتھ اس کی آنر مائش کی تفعیل مطلوب

ہے اور پہلے قرینے میں جہاں لفظ انسان اما کے متصل وارد ہے ضمیروں کے مرجع کو معین كرنے كے ليے ہے جوكد بہلے ذكر تبيل ہوا۔ پس معنول برنظر كرتے ہوئے اصل كلام كويوں مجمنا جاہے کہ اِنَّ رَبَّكَ لَبَالُهِرُصَادِ والانسان غافل عن ذالك في كلتا الحالتين فاما اذا ما ابتلاه ربه فاكرمه ونعمه فيقول ربى اكرمن واما اذا ما ابتلاه فقدر عليه رزقه فيقول ربى اهانن ليني آبكا بروردگار الاحظفر مار باب جبكه انسان اس بات سے دونوں صورتوں میں غاقل ہے تو جب است اس کا پروردگار آ زمائے ہیں اسے عزت عطا فرمائے اور تعتیں دے تو کہتا ہے کہ میرے پروردگارنے جھےعزت دی اور جب اے آزمائے بس اس براس کارزق تک فرمائے تو کہتا ہے کہ میرے پروردگارنے مجھے رسوا كيا بلكه اكر كرى سوج سے ديكھيں تو يہال دوتغميلات مطلوب بيں۔ يہلى ميك اها الانسان فهو غافل عن كون ربه لبالهر صاد في كلتا الحالتين ليخي رہا انسال تو اپنے بروردگار کے مرصاد میں ہونے (یعنی اس کے حالات کا ملاحظہ کرنے) سے دونوں حالتوں میں غافل ہے۔ دوسری تفصیل ہے ہے کہ امانی حالة الابتلاء بالنعمة والمال فلايتلقى النعمة بالشكر وامافي حالة الابتلاء بالفقر والضيق فلايتلقاه بألصبر ولايدرى ان ربہ مترقب لیجازاتہ علی معاملتہ لیخ*نمت آور* مال کے ساتھ آ زمانش کی صورت نعمت کوشکر کے ساتھ قبول نہیں کرتا اور فقر اور بھی کے ساتھ آ زمائش کی حالت میں اے صبر کے ساتھ قبول نہیں کرتا اور نہیں جانتا کہ اس کا پرورد گاراس کے معالمے پراہے جزا ويے كے ليے جمہاني فرمانے والا ہے۔

چونکہ پہلی تفصیل مقصود بالذات نہ تھی لفظ انسان کواس تفصیل ہے اس تفصیل کے آغاز میں برحادیا گیا تا کہ اس تفصیل کا اشارہ ہوجائے اور دوسری تفصیل کو بھر پورانداز میں لایا گیا اس لیے کہ مقصود بالذات تھی۔ واللہ اعلم

چوتھا سوال یہ ہے کہ اکر من اور اہائن کہنے پر انسان کی ندمت جو کہ اس مجزانہ کلام سے ظاہر ہوتی ہے کس چیز پر متوجہ ہے۔ حالا نکہ بے چارہ انسان یہ کہنے میں سچا ہے۔ چنانچہ اکرام کی طرف میں تو اس کے مطابق خود اشارہ فر مایا گیا ہے جب کہ بندے نے بھی ای ساکرام کی طرف میں تو اس کے مطابق خود اشارہ فر مایا گیا ہے جب کہ بندے نے بھی ای ساکرام کی طرف میں تو اس کے مطابق خود اشارہ فر مایا گیا ہے جب کہ بندے نے بھی ای

کے مطابق بات کی تو انکار کی کوئی جگہ ہے اور اہانت کی سمت میں اگر چ خوونیس فر مایا گی لیکن وہ بھی واقع کے مطابق ہے اس لیے کہ فقر اور تنگی معاش اکثر اوقات فاہر بینوں کی نظر میں ذلت اور رسوائی کا موجب ہوتی ہے۔ چنا نچے انہوں نے کہا کہ عزة الدنیا بالمال وعزة الاخرہ بالاعمال لیعنی ونیا کی عزت مال اور آخرت کی عزت انمال کے ساتھ دعزة الاخرہ بالاعمال لیعنی ونیا کی عزت مال اور آخرت کی عزت انمال کے ساتھ دے۔

اس کا جواب میہ ہے کہ اکرمن اور اہان کہنے پر انکار اور نذمت اس وجہ سے نہیں کہ مطابق واقع نہیں ہے جگہ اس وجہ سے نہیں کہ مطابق واقع نہیں ہے جلکہ اس وجہ سے کہ بندہ دنیوی عزت و ذلت کی قید میں گرفتار ہوکر اس امتحان اور آزمائش سے غافل ہو جاتا ہے جو کہ اس عزت اور ذلت کے پردے میں یوشیدہ ہے۔

اورعزت وذلت کی حقیقت کو جو کہ جزا کے دن ظاہر ہوگی نہیں جانا اور د نیوی عزت و ذلت کے سواکسی عزت و ذلت کا تضور نہیں کرتا۔ پس بندہ ناقص العقل بچے کے مشابہ ہے جو کہ شکر میں لپٹی ہوئی زہر کوشکر مجھتا ہے اور بدمزہ دوا کو جو کہ اس کے حق میں سراسر نفع بخش ہے زہر گمال کرتا ہے اور انکار اور جمڑکی اس کے فیم کی کوتا ہی پر ہے کہ حقیقت سے صورت پر اکتفاء کرتا ہے اور باطن سے ظاہر ہے۔

پانچوال سوال بہ ہے کہ انتظاء کا معنی عرف کے اعتبار سے فقر میں تو ظاہر ہے مگر دولت اور عزت پانے میں ابتظاء کا معنی کیا ہے؟ اس کا جواب بہ ہے کہ لغت میں ابتظاء کا معنی امتخان اور آز مائش ہے اور جس طرح فقر میں ایک آزمائش ہے کہ مبر کرے گایا نہیں دولت میں بھی ایک آزمائش ہے کہ مبر کرے گایا نہیں دولت میں بھی ایک آزمائش ہے کہ شکر کرے گایا نہیں۔ بہت

باده نوشیدن و بشیار نشستن سبل ست مربدولت بری مست نه مردی مردی

یعنی شراب کا بیالہ بینا اور بھیار بینے رہا آسان ہار تھے دولت مے اور تو بے بوش نہوتو مرد ہے۔ اور تو بے بوش نہ بوتو مرد ہے۔ پس بیال ابتلاء لغوی معنوں میں ہے زکد عرفی معنوں میں۔

جب دولت اور فقر دونوں حالتوں میں آ دی کے حال کی تنصیل بیان کرنے ہے

فراغت ہوئی اب اے حقوق مالیہ اور شکر کے لواز مات اوا نہ کرنے پر ڈانٹا جا رہا ہے۔ گلّا یعنی بیمقدمہ یوں نہیں کہ مال اور مرتبدد یے پر فریفتہ ہو کر اللہ تعالی کے حضور اپنی بزرگی مجھو اور اس کی نعمتوں کواس کی خوشنودی میں صرف نہ کر وجیسا کہ بنی آ دم کا دستور ہے۔

بَلْ لَا تُنْحُدِهُوْنَ الْيَقِيْعَ بِلَكُمْ يَتِم كَ عِزت نهيں كرتے ہو حالانكہ اللہ تعالى نے حمرہ مور کو کوئ و دوخصوصاً يتيم كوجس حمرہ موكوں كوعزت دوخصوصاً يتيم كوجس كے پاس بے وقل كے اسباب ہر طرف ہے جمع ہیں۔ چنانچہ اس نے زاكہ مال اس ليے ويا ہے كہ فقيروں اور كمزوروں برخرچ كرواور انہيں سير كرواور تم بيكام نيس كرتے ہو۔

وَلاَ تَعَاضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ اور دوسرے كوبھی منظتے كو كھانا كھلانے كى بائدى اور تاكيدنى اور تاكيدنى اور تاكيدنى اور تاكيدنى اور تاكيدنى اور تاكيدنى كارتے ہو بلكه اپنے مال سے دينا تو ايك طرف دوسروں كے مال كو بے تحاشہ فرج كرتے ہو۔اس ليے كہ

وَتَأْكُلُونَ التَّرَاتَ الْكُلَالَةُ اورتم النِ آباء كى ميراث بدرلن كھاتے ہيں اور النِح كى درميان جوكہ حمال ہاور شركاء كے حق كے درميان جوكہ حرام ہے كوكى فرق نبيس كرتے ہو ليس تمهار فيم كا مرتبہ جانوروں كفيم سے كمتر ہے جوكہ بہلے اپنا چارہ سو تھمتے ہيں اور جس ميں اپنا قائدہ اور مسلمت و كھتے ہيں كھاتے ہيں ورنہ چھوڑ دیتے ہيں اور النہ قائدہ اور مسلمت و كھتے ہيں كھاتے ہيں ورنہ چھوڑ دیتے ہيں اور اگركوكى كي كرمران تو اپنا مال ہے جس میں سے يتم اور مسلمین كودول اور نہ بی میں نے اپنے باپ كی ورافت سے كوكى مال پايا ہے كہ میں نے شر كھوں كاحق كھايا ہواس كے جواب ميں فرمايا جارہا ہے كہ

وَتُحِبُونَ الْمَالَ حُبَّا جَمَّا اورتم مال سے بہت سے زیادہ محبت کرتے ہوا ارچ تہارے ہاتھ میں کوئی مال ند ہولیکن تمہارے ول مال کے دام میں گرفتار میں اگر تمہارے ہاتھ لگ جائے تو دی کچے کروجو دومرے کرتے ہیں۔

محبت کے لیے مال کی حد

تغير عزيزي مستعمل الهيهام الهي

کے ساتھ وابستہ ہے۔ اور جو ندموم ہے وہ وہ ی ہے جو حاجت سے زائد ہے۔

کلّا یون بین بھنا چاہے کہ اللہ تعالی بندوں کے ایتھے کرے اعمال سے عافل ہے یا اسے بندول کے اعمال سے عافل ہے یا اسے بندول کے اعمال پر انہیں جزا دینا منظور نہیں بلکہ اللہ تعالی ملاحظہ فرما رہا ہے اور اس وقت کے انتظار میں ہے جس کے ساتھ اس کی حکمت نے جزا دینے کو وابستہ کر رکھا ہے اور اس وقت کا بیان یہ ہے۔

وَجَآءً رَبُّكَ اور تیرا پروردگار آئے بین جلال اور قبر کی مغت کی بخل فرمائے اور بندوں کوجزا دینے پرتوجہ فرمائے۔

وَالْمُلَكُ صَفًّا صَفًّا اور فرشتے مف بصف آئیں سات آسانوں کے فرشتوں کی سات صفیں ہوں گی۔ حاملانِ عرش کی صف اور ہوگی۔ وعلیٰ ہذاالقیاس

وجینی یومنی بیتھی اوراس روزجہم کولایا جائے اور لانے سے مراو ظاہر کرنا ہے جیسا کہ دوسری آیت میں فرمایا گیا ہے کہ وَبُرِ ذَتِ الْجَوحِیْدُ لِبَنْ یَدی اور بعض روایات میں وارد ہے کہ جہم کوستر ہزار فرشتے ستر ہزار لگام ڈال کراس کے مقام سے مینج کرعرش عظیم کی بائیں جانب لائیں گے اور جب حباب کے مقام سے دوسوسال کی راہ دُور رہ جائے گی اس سے شعلے باہر تعلیں گے اور اتن مسافت سے اس کے گرجنے کی آواز اہل محشر جائے گی اس سے شعلے باہر تعلیں گے اور اتن مسافت سے اس کے گرجنے کی آواز اہل محشر کے کانوں میں آئے گی اس وقت اس مجمع کے حاضرین پر زبر دست خوف غالب ہوگا۔ انہیاء کے کانوں میں آئے گی اس وقت اس مجمع کے حاضرین پر زبر دست خوف غالب ہوگا۔ انہیاء ملیم السلام منبروں اور کرسیوں سے نیچ اُر آ کیں گے اور ساری مخلوق گھنوں کے بل ہوکر نفسی نفسی نفسی نفسی نفسی نفسی کیارے گی۔

يَوْمَنِنْ ِ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ اس دِن آ دِی نفیحت قِیول کرے گا اور یاد کرے گا کہ جو marfat.com

پھانبیاء بلیم السلام اور نصیحت کرنے والے کہتے تھے کہ اجھے کُر ہے کردار کی جزا ہرت ہوں اور قیامت آنے والی ہے صحیح اور درست تھااس لیے کہ جزا دینے کے تمام اسباب جمع ہوں گے۔ دوزخ جیسا قیدخانہ پوری ہولنا کی سمیت حاضر فرشتوں جیسے بے شار بیادے پکڑنے اور جلال اور بند کھولنے کے لیے موجود۔ حضرت رب العزت جیسا قاہر حاکم پوری سطوت اور جلال کے ساتھ جلوہ گرنز مین جو کہ جسموں اور روح کامسکن اور جائے قرارتھی سب درہم ہرہم ہو چکی اس میں بھاگنے کی جگہ رہی نہ اس میں مضبوط قلعہ اور محفوظ مکان نظر آتا ہے لیکن اس وقت یاد کرنا کوئی فائدہ نہیں دےگا۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے کہ

وَآنَى لَهُ الذِّحُدِٰى اوراس وقت نفیحت پکڑنا اور یاد کرنا اسے کیا فاکدہ کرتا ہے اس لیے کہ وہ دن عمل کا دن نہیں ہے۔ بلکہ جزا کا دن ہے آج نفیحت قبول کرنا چاہیے تا کہ اس ون کام آئے ورنہ حسرت اور ندامت کے سواجو کہ عذاب کی سب سے شدید تتم ہے بچھ بھی حاصل نہ ہوگا۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے ۔

یَقُولُ یَالَیْتَنِیْ قَدَّمْتُ لِحَیْوتِیْ کے گااے کاش! کہ میں اپی اس زندگی کے لیے مال اور ایمان اور اطاعت جیسے نیک اعمال میں سے کوئی چیز آ گے بھیج دیتا جو کہ ذخیرہ ہوتی اور ریہ حسرت اس کے لیے جسمانی عذاب سے زیادہ سخت ہوگی۔

فیو مونی آؤی می ایک ایک ای دورالله تعالی کے عذاب جیسا کوئی عذاب نہیں کرے گا۔ ندآ گ برمقر دفرشتے ندسانپ ند بچھوجو کدآ گ بی ہوں گاس لیے کدان کی طرف ہے جوعذاب آتا ہے جسمانی ہاور جوعذاب اس مجرم کی روح کواللہ تعالی حسرت اور غدامت کے ذریعے فرمائے گا روحانی عذاب ہے اور جسمانی عذاب کی روحانی عذاب کی روحانی عذاب کے دوجانی عذاب کے ساتھ کوئی نبست نہیں ہے۔

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَاءُ آحَدُ اورالله تعالى كے مقيد كرنے كى طرح كوئى مقيد نہيں كرے كا اس ليے كه دوزخ كے موكل اگر چه طوق زنجير دروازے بند كرنے اور سرپوش بہنانے كے ساتھ مجرموں كومقيد كريں مح كيكن ان كى عقل اور خيال كومقيد نہيں كر سكتے جبكہ عقل اور خيال كى عادت ہے كہ بہت سے امور پر توجہ كرتے ہيں اور ان ميں سے بعض امور بعض دوسروں

سے جاب ہو جاتے ہیں۔ پس عین قید کے دوران بھی ایک مخص کوعقل اور خیال کی توجہ کی وسعت حاصل ہوتی ہے۔ برخلاف اس مخص کے جس کی عقل اور خیال کوحق تعالیٰ نے امورِ کثیرہ برتوجہ کرنے سے باز رکھا ہواورایک دردناک چیز کی طرف اس کی ساری توجہ مبذول کر دے کہ وہ قید جسمانی قید سے ہزاروں مرتبہ زیادہ تخت ہوتی ہے۔ اس لیے پاگلوں اور سودائیوں کو عین باغ اور صحراکی سیر کے وقت وہم و خیال سے ایک تنظی محسوس ہوتی ہے کہ وہ تمام کھلا میدان ان کی نظر میں ایک انگوشی کے جلقے سے چھوٹا معلوم ہوتا ہے اور کیا ہی ایجھا کہا گیا ہے کہ

اذاكان قبلب السمرء في الامرسمائر فناضيت من تسمعين رحب السباسب

یعنی جب آ دمی کا دل کسی امر میں پریشان ہوتو وہ نوے بیابانوں کے میدانوں میں بھی نگ ہوتا ہے۔

بعض معتر قراء نے وکا یُعیّد کو گوی تی کو مجهول صینے کے ساتھ پڑھا ہے اور اس صورت میں معتر قراء ہے وکا اس عافل کے عذاب کی مانند کی کو عذاب نہیں کیا جائے گا اور اس عافل کو بند کرنے کی مانند کی کو بند نہیں کیا جائے گا۔ اس لیے دوسرے گناہ گاراگر چہ گناہوں کے مرتکب تھے لیکن اس روز سے عافل نہیں تھے بھی بھی اس دن کا خوف ان کے خیال میں گزرتا تھا جب وہ اس دن کو دیکھیں تو اتنا مد ہوش نہ ہوں کے کیونکہ وہ پہلے ہے ہی اس حیال میں گزرتا تھا جب وہ اس دن کو دیکھیں تو اتنا مد ہوش نہ ہوں کے کیونکہ وہ پہلے ہی اس حیات تھے۔ ان کے حق میں بلائے نا گہانی نہیں ہوگی اور ان کے عذاب اور قید میں مشکرین جزاکی نبیت پچھتخفیف بھی حاصل ہوگی اور اس ہولناک دن میں کہ جے و کیکھتے ہی مشکرین جزاکی نبیت کے تخفیف بھی حاصل ہوگی اور اس ہولناک دن میں کہ جے و کیکھتے ہی اس حکم یک جن اطاعت کرنے والوں اور نیکوں کو تسلی دی حالے گی اور ندا ہوگی کی در نہ کی کاور ندا ہوگی کی در ندا ہوگی کی در ندا ہوگی کی در ندا ہوگی کی در نہ کی کی در ندا ہوگی کی دور ندا ہوگی کی در ندا ہوگی کی دور ندا ہوگی کی در ندا کی در ندا ہوگی کی در ندا کی دور ندا ہوگی کی در ندا ہوگی کی در ندا ہوگی ک

یَایَّتُهَا النَّفُسُ الْمُطْمَنِیَّةُ ال حِنْ کے ساتھ آرام پانے والی جان إکد تھے اس اس جناب کے سواکی سمت توجہ نہ تھی' تھے زمین کے ریزہ ریزہ ہونے' فرشتوں کی مفیں دیمیے اور جہنم کی ہولناک آ واز سننے کی کیا پرواہ ہے۔

اڑجینی الی ربّک اپنے بروردگاری طرف لوث جاکہ تو ہمیشہ اس کے مشاہرے میں متغرق تھی اور ماسواکی طرف تیری کوئی توجہ نہتی۔

رَاضِيَةً مَّرُضِيَةً اس عالت من كه تو جمال شهودى حق كى جلى سے خوش وقت ہونے والی ہے اور تجھ میں جمل مطلق کے جمال کے آٹار ظاہر ہونے كی وجہ سے تو پہنديدہ ہے۔ والی ہے اور تجھ میں جمیل مطلق کے جمال کے آٹار ظاہر ہونے كی وجہ سے تو پہنديدہ ہے۔ يہ وہ من من من والی ہو جاجو كہ

فَاکْتُ لِی فِی عِبَادِی پی تو میرے مقرب بندوں کے زمرے میں داخل ہو جا جو کہ ہارے دیں اخل ہو جا جو کہ ہارے دیدار کے مقام میں ہیں اور خوش ہیں اور بیروحانی سعادت کے مرتبوں میں سب

ہے۔

وَاذُخُلِیْ جَنَتِی اور میری جنت میں داخل ہو جا کہ وہ حسی لذتوں کو بورے طور پر عاصل کرنے کا مقام ہے جیسے ماکولات مشروبات منکوحات کمبوسات اور اجھے مکانات اور یہ جسمانی سعادت کے مرتبوں میں سے سب سے اعلیٰ ہے اللہ تعالیٰ ہمیں دونوں سعادتمی حاصل کرنے میں کامیاب فرمائے۔

نفوس انسانی کی تین صفات

یہاں جانا چاہے کہ قرآن مجید میں نئس انسانی کو تمن صفات سے موصوف فر مایا گیا ہے۔ امارہ کو امداور مطمئے۔ امارہ ہونا کافروں اور گناہ گاروں کے نفول کی صفت ہے جو کہ کفر اور گناہ سے بازنہیں آتے۔ اور ان کانئس ہر وقت یُرے کاموں کا تھم دیتا ہے۔ اور لوامہ ہونا ان گناہ گاروں کے نفول کی صفت ہے جو کہا ٹی یُر ائی پر تدامت محسول کرتے ہیں اور ارتکاب گناہ کے بعدا ہے آپ کو طلامت کرتے ہیں کہ ہم نے کول کیاا: رکیا گیا۔ جبکہ مطمئے ہونا انہیا نے بیم السام اولیائے اللہ اور اُمت کے نیک لوگوں کے نفول کی صفت ہو کہ ایمان طاعت و کرو گرحق میں اظمینان پاتے ہیں اور گناہوں کے اسباب اور خطرات جو کہ ایمان طاعت و کرو گرحق میں اظمینان پاتے ہیں اور گناہوں کے اسباب اور خطرات ان کے حال میں مزاحمت نہیں کرتے اور ان کے اوقات کو بے حرو نہیں کرتے۔

صغت ہے جبکہ ذکر کا نورساری تو توں پر غالب آجا تا ہے۔

اور حضرت امام حسن بھری رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا ہے کہ قیامت کے دن تمام نفوس کو امد ہوں گئام نفوس کے دن تمام نفوس کو امد ہوں گئے اور خود کو ملامت کریں سے کہ اگرتم نے نیکی کی ہے تو زیادہ کیوں نہیں کی اور اگر نافر مانی کی تو کیوں کی؟

اوراگر چراصل میں اس ندااور بشارت کا وقت فزع اکبر کا وقت ہے جو کہ قیامت کے دن ہوگالیکن اس کانمونہ ہرمومن کی وفات کے وفت ظہور کرتا ہے۔ چنانچے حضرت عبداللہ بن عمررضی الله عنهما ہے مروی ہے کہ میں نے حضور صلی الله علیہ وسلم سے سنا ہے کہ جب مردِ مومن کی اجل آتی ہے تو اس کے سر ہانے خوب صورت 'خوش لباس اور معطر جسم والے فرشتے آتے ہیں اور کہتے ہیں کہاے حق کے ساتھ اطمینان پانے والی جان! راحت اور آسانی ہے باہرآ کہ بچھ سے اللہ تعالی راضی ہے مومن کی جان پوری مسرت کے ساتھ باہرآتی ہے اور جہان اس کی خوشبو ہے معطر ہوجاتا ہے اور فرشتے اسے معطر ریٹی کپڑوں میں لیتے ہیں اور آسان کے دروازے کھل جاتے ہیں۔اور وہاں کے دربان اسے مرحبا کہتے ہوئے استقبال كرتے ہيں۔ اور اس كى بخشش كى وعاكرتے ہيں۔ اور اسے عرش مجيد كے ينجے لے جايا جاتا ہے تا کہ حل سبحانہ و تعالی کے حضور سجد و کرے۔ اور حضرت میکائیل علیہ السلام کو تھم ہوتا ہے كهاس جان كوايمان والوں اور نيكوں كى جانوں كے تفہرنے كى جكەلے جاكر داخل كريں اور اس کی تبرکوفراخ کردیں تا کہ اے راحت اور آسانی ہواور اے فرمایا جاتا ہے کہنی ولبن کی طرح سوجا کہ اس کی نیندکوکوئی خراب نہیں کرتا اور اس کے برعکس معاملہ کافر کی جان کے ساتھ واقع ہوتا ہے۔

سورة البلد

سورۃ البلد کی ہے'اس کی بائیس (۲۲) آیات' بیای (۸۲) کلمات اور تین سواکتیس (۳۳۱) حروف ہیں۔

وجەتتى<u>مىيە</u>

ادرائے سورۃ بلداں لیے کہتے ہیں کہ اس کے آغاز میں کم معظمہ کے شہری متم اضاف marfat.com

Marfat.com می ہے۔ اور بلد لغت عرب میں شہر کو کہتے ہیں اور اس شہر کی قتم اُٹھانے کے وقت اس شہر کے حالات کا ملاحظہ کرنا اس بات کی بالکل ظاہر اور روشن دلیل ہے کہ آ دی کو دنیا میں یا آ خرت میں وُکھ تکلیف اُٹھانے کے بغیر چارہ نہیں اس لیے کہ جب اس قتم کاعظمت والاشہر اس قتم کی تکلیفوں کی آ ماجگاہ ہوتو دوسر سے شہر تو بطریت اولی شدید مشقتوں سے خالی نہ ہوں گے اور چونکہ انسان مدنی الطبع ہے شہر کے بغیر سکونت نہیں کرسکتا اور کوئی شہر راحت کی جگہ نہیں کہ کوئی خزانہ تکلیف کے بغیر نہیں ہے۔

مكه معظمه كي عظمت كي وجوه

اور مکہ معظمہ کے شہر کی عظمت بے شار وجوہ کی بناء پر ہے۔ حرمِ اللی کامحل ہے مخلوق کے لیے مقامِ امن اور مرجع ہے کہ لاکھول انسان ہر سال وُور دراز علاقوں اور شہروں سے اس کا قصد کر کے آتے ہیں دوعمہ عبادتوں جج اور عمرہ کی ادائیگی کی جگہ ہے و نیا کی سب سے بہلی محارت ہے۔ یہاں جہان کا قبلہ اور مخلیل علیہ السلام ہے۔ اور سب سے بالاتر یہ کہ مضطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کی جائے ولا دت اور خدا تعالیٰ کی طرف سے آپ پر وحی اُتر نے کا مقام ہے۔

ماقبل کے ساتھ را بطے کی وجہ

اوراس سورة كرسورة الفجر كرساتهدرا بطى وجديه كرد بهال يتيم كرع ترمت مركف اورسكين كوكهانا كهلان كرائي تاكيداور مال كرمجت كى خدمت فركور به جبكه يبال بهى يبى مضامين لكه بوئ بيل و في الله فاقت ورسر مشول جيسے عاد فرعون اور شمودكى ان كر كانابول كى شامت كى وجد سے بلاكت كا ذكر بے جبكه يبال بھى ايك كافركو دُانٹا گيا ہے جو كراني قوت ير تازكرتا تھا اوركى كو فاطر ميں نہلاتا تھا۔

سورة كاسبب نزول

اوراس سورة کے نزول کا سبب بیہ ہے کہ قریش میں کلدہ بن اسید نامی ایک کافر تھا' ایک قوی بیکل زور آور پہلوان۔ جے ابوالاسد کی کنیت دی مختمی اوراس کی قوت اس درجے تھی

کہ گائے کی کھال کواینے قدم کے پنچے لیتا تھا اور کثیر جماعت سے کہتا کہ یہ کھال میر _ یاؤں کے نیچے سے مینے لؤوہ سب اپن پوری قوت صرف کرتے اور کھال پارہ پارہ ہو جاتی لیکن اس کے باؤں کے نیچے سے نہیں ہلتی تھی۔ جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اسے اسلام کی دعوت دی وہ ایمان نہ لایا اور سخت ست باتمیں کیں کہ آپ مجھے ایسے قیدخانے ہے ڈراتے ہیں جس کے کل انیس موکل ہیں میں تو ان سب کو بائیں ہاتھ کے ساتھ کافی ہوں۔ کون ہے جو مجھ پر غالب آئے۔ نیز آپ مجھے ایک باغ کا فریب دیتے ہیں۔ حالانکہ میں نے شادیوں اور مروتوں میں اننے ڈھیروں مال خرچ کیے ہیں کہ اگر ان کا شار کریں تو آپ کے وعدے والا وہ باغ اینے زیور' زیبائش' درختوں اور نہروں سمیت اس کے برابر کیجھ نہ ہو۔ اس کی ان خرافات کے جواب میں حضرت حق تعالیٰ نے بیہورہ بھیجی اور اس سورہ کامضمون یہ ہے کہ آ دمی کوجسمانی قوت زور بازو کشرت مال اور نام اور مرتبے کے اوینے ہونے پر مغرورنہیں ہوتا جا ہے۔ اور اپنی پیدائش کی ابتدا کوموت کی حد تک نظر میں رکھنا جا ہے کہ کتنی سختیاں در پیش ہیں کہ جنہیں اللہ تعالیٰ کی امداد کے بغیر برداشت کرنے کی طاقت میسر تہیں ہے اور مال کواس وفت نعمت سمجما جا سکتا ہے جب آخرت کی گھانیوں میں کام آئے ورنہ دنیا كى نمود ونمائش تو سراب كے يانى اور يانى پرنقش كى طرح بے ثبات ہے۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

لاَ أَقُدِهُ بِهِلْنَا الْبَلَدِ بَحِي اسْ شهر كَ فَتَم بَ اور لا وراصل نقى كِمعنى مين به اور يها وقت كيا بهت زياده به يهال فتم كى تاكيد كے له يا يا يا به جيسا كر نفت عرب مين اس كا استعال بهت زياده به كرتاكيد كے مقام مين يه لفظ لاتے ہيں اور اس لفظ سے تاكيد سمجھانے كى وجہ بيہ بكر ذياده ترتم اس بات پر أشاتے ہيں جس كاكوئى مشر ہو۔ پس پہلے كامه لا كے ساتھ مشكر كے انكار كى نفى كرتے ہيں اس كے بعد قتم كے ساتھ ابنا مقصد ثابت كرتے ہيں۔ كويا مقصد دو وجہ سے في كرتے ہيں اس كے بعد قتم كے ساتھ ابنا مقصد كو ثابت كرتے ہيں۔ كويا مقصد دو وجہ سے خاب ہوتا ہے۔ نقیض كو باطل كرنے اور نين مقصد كو ثابت كرنے كے ساتھ ۔ اور اگر صرف شم ذكر كريں تو مقصد كا اثبات ايك وجہ كے ساتھ ہو اس ليے كام نفى لا نا تاكيد كى زيادتى كا قتم ذكر كريں تو مقصد كا اثبات ايك وجہ كے ساتھ ہو اس ليے كام نفى لا نا تاكيد كى زيادتى كا

اورعلاء میں ہے بعض کہتے ہیں کہ اس سے مراد تنم کی نغی ہے بینی اس مطلب پر تنم کی حاجت نہیں کہ بالکل ظاہر ہے۔

اوربعض نے کہا ہے کہ بیکلم مقسم بہ کی بزرگی پر ولالت کرتا ہے بیعنی وہ چیز اس سے
بالاتر ہے کہ اس آسان مطلب پر اس کی قشم اُٹھائی جاسکے اور ہرصورت میں مطلب کے
ثبوت سے کنا بہ ہے یا اس کے ظاہر ہونے کا دعویٰ ہے۔ پس اس طرح سے بھی تا کید ثابت
ہوئی۔

اور جب سم کا مقصد ہے ہے کہ آدمی کی پیدائش ابتدا سے انتہا تک مشقت اور تکلیف میں ہے تو اس شہر مکہ کی سم اُٹھانا اس مقصد کے عین مطابق واقع ہے اس لیے کہ معظمہ کا شہرساری زمین کی اصل ہے کہ سب سے پہلے پانی کی سطح پر یہی نقطہ پیدا ہوا تھا۔ بعدازاں اس نقطے سے تمام زمین کو کشادہ کر کے بچھایا گیا۔ اور زمین انسان کے ماد ہے کی اصل ہوتو اسے کہاں سے تو قع کرنا چا ہے کہ جب اس کی اصل مشقت اور رنج کا مقام ہوتو اسے کہاں سے تو قع کرنا چا ہے کہ مشقت اور رنج سے خلاصی یا ہے۔

شہر مکہ کے مشقت اور رنج کا مقام ہونے کی وجہ

ہم یہاں پنچ کہ بیشہر کس جہت سے مشقت اور رنج کا مقام ہے۔ اوّل ہی کہ ایک سنگان زمین ہے رمجیتان میں واقع ہے کاشت کاری کے بالکل قابل نہیں کروے پانی سنگان زمین ہے دور سنگان ہونے کی وجہ سے دہاں کنواں کھودنا وشوار پس وہاں کر ہے والوں کو پانی اور غلے کا قمط ہمیشہ لاحق ہے اور ایسی جگہ واقع ہے کہ جہاں پوری گرمیوں میں جو کہ جوز ااور سرطان کے دو مہینے ہیں سورج ان کے سرکی طرف سے متصل وائیں بائیں ست جو کہ جوز ااور سرطان کے دو مہینے ہیں سورج ان کے سرکی طرف سے متصل وائیں بائیں ست ہو اور خت جلن کا موجب ہوتا ہے اور کو ہتان سے سورج کی شعامیں منعکس ہونے کی وجہ سے داتوں میں بھی شدت کی گری ہوتی ہے اور خوش طبع لوگوں کا مسکن نہیں ہوسکا۔ لہذا قد یم ان وجوہ کی بناء پر زمانے کے عیش کوشوں اور خوش طبع لوگوں کا مسکن نہیں ہوسکا۔ لہذا قد یم زمانوں سے ذوی الاقتدار باوشاہ اس مملکت کے قریب نہیں مجھ ہیں اور انہوں نے اسے اپنی تنام روسے خارج کر ۔ یا جو بھی اس مقام کا قصد کرتا ہے خالص زیارت کی نہت سے کرتا تھا مارج کر ۔ یا جو بھی اس مقام کا قصد کرتا ہے خالص زیارت کی نہت سے کرتا تھا مارج کر ۔ یا جو بھی اس مقام کا قصد کرتا ہے خالص زیارت کی نہت سے کرتا تھا میں مقام کا مسکن نہیں گانے تین کر ۔ یا جو بھی اس مقام کا قصد کرتا ہے خالص زیارت کی نہت سے کرتا تھا مارج کر ۔ یا جو بھی اس مقام کا قصد کرتا ہے خالص زیارت کی نہت سے کرتا تھا مارج کر ۔ یا جو بھی اس مقام کا قصد کرتا ہے خالص زیارت کی نہت سے کرتا ہو اس مقام کا قصد کرتا ہے خالص زیارت کی نہت سے کرتا ہو اس مقام کا محد کرتا ہے خالی کی نہت سے کرتا ہو اس مقام کا محد کرتا ہے خالی کی نہت سے کرتا ہو اس مقام کا محد کرتا ہے خالی کی نہت سے کرتا ہو کو جس اس مقام کا محد کرتا ہے خالی کی نہت سے کرتا ہو کی کو بھی اس مقام کا محد کرتا ہے خالی کی نہت سے کرتا ہو کو کو کی کی کرتا ہو کی کا کرتا ہو کی کرتا ہو کی کا کی کرتا ہو کی کرتا ہو کرتا ہو کو کرتا ہو کرتا

ہے۔ کیونکہ وہاں سیروتفری کے اسباب نہیں ہیں اور اس عظیم مقام کی زیارت کے سفر میں جو تکلیفیں اور وُکھ اُٹھاتے ہیں سمندر میں بھی اور خشکی میں بھی بالکل ظاہراور روشن ہیں۔

اور یہ جو پچھاس عالی شان مقام میں دنیوی مشقت اور رنے کے اسباب ذکر کے گئے ہمارے رسول کریم صلی اللہ علیہ و کلم کے وجود باجود سے پہلے موجود ہتے۔ جب آپ کی بعث شریفہ ہوئی 'ایک اور پھول کھلا۔ اور ایک عظیم دینی مشقت رونما ہوئی کہ اس شہر والوں کی ایک جماعت حضور علیہ السلام پر ایمان لے آئی۔ اور انہوں نے اپنے آباء واجداد کا باطل ند ہب جماعت حضور علیہ السلام پر ایمان لے آئی۔ اور انہوں نے اپنے آباء واجداد کا باطل ند ہب چھوڑ دیا اور ہتوں کی پرستش ختم کر دی اور ہر گھر میں مخالفت' وشنی' جھڑ ااور لڑائی بیدا ہوگئے۔ کفار اس جماعت اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کوستانے اور قتل کرنے پر کمر بستہ ہوگئے اس نے شہر یوں کے اوقات انتہائی مشقت اور وُ کھ میں گزر نے زیر دست واقعہ کی وجہ سے اس کے شہر یوں کے اوقات انتہائی مشقت اور وُ کھ میں گزر نے گئے اور ہر روز اور ہر شام فریقین وار دیکر میں معروف تھے۔

اس تازه مشقت اور رنج کی طرف اشاره کرتے ہوئے اس عبارت میں فرمایا جارہا

وَالْتَ حِلْ بِهِ لَمَا الْبَلَدِ بِحَصَال شَمِرَى فَتَم الل وقت ہے جبکد آ بال شہر میں جلوہ گرا ہیں ہو میں کونکہ آ پ کے اس شہر میں نزول اجلال فرمانے سے اس شہر کی عزت اور بزرگی بھی بڑھ گئی کہ مکان کی عزت کمین سے ہوتی ہے اور ویٹی مشقت اور تکلیف کے اسب بھی زیادہ ہوگئے اور اس شہر کے رہنے والے کبیرہ گنا ہوں میں سے سب سے بڑے گناہ میں گرفآر ہوگئے جو کہ اللہ تعالیٰ کی تخلوق سے سب سے بہترین شخصیت کوفل کرنا اور ستانا ہے۔ اور حرم کے احرام سے کہ جس کا لحظ کرتے ہوئے موذی جانوروں کوفل نہیں کرتے سے خاردار درخوں کوئین کا مخت کے ایک قرم صاف جواب دے کر اس عقیدہ کے ظلف ہو گئے اور اس وقت جوظم ان شہریوں سے وقوع پذیر ہوا ، حضرت آ دم علیہ السلام کے وجود سے لے کر اس وقت جوظم ان شہریوں سے وقوع پذیر ہوا ، حضرت آ دم علیہ السلام کے وجود سے لے کر اس وقت تک کی سے بھی داتی نہ ہوا ہوگا۔ پس یہ قید بڑھانے کی وجہ سے کہ وآئت جِلْ بِھِلْمَا اللّٰ اس شم کو مقصد کے ساتھ السّلَابِ اس قیم کو مقصد کے ساتھ السّلَابِ اس قیم کو مقصد کے ساتھ میں ایک مناسبت میں ایک قیم کر ائی اور پوشیدگی ہے جے ذبین لوگوں کے سواور یا ہے تہیں اس کی مناسبت میں ایک قیم کر ائی اور پوشیدگی ہے جے ذبین لوگوں کے سواور یا ہو تہیں

كياجاسكتا ايك اورعام فبم فتم بھى ذكر فرمائى كئى۔

وَوَالِدِ وَمَا وَلَدَ جِنْ وَالِے كُ تُم اوراس كى جے جنا ہے كہ دونوں كمال مشقت اور رئے ميں گرفتار ہيں اس ليے كہ جننے والى كو پہلے تو حمل ذائع كى برمزگى اور در وزه كا يوجھ أضانا چاہيے۔ بعدازاں يچ كى پرورش ہيں ختياں اور تكليفيں ديكھنا چاہيے اور جے جنتی ہے كہا ہے اسے رخم كى تار كى ہيں انتہائى عاجزى اور كمزورى كے ساتھ وقت گزارنا چاہيے۔ بعدازاں اس سرائے فانى كى محنت ميں فتم قسم كے جسمانى اور دومانى ذكھوں ميں جتال ہونا چاہيات کے بہائش كے وقت بچ كارونااى طرف اشارہ ہے كہاس جہان ميں دوتے بى گزرے كى اور كياا چھا كہا كيا ہے

لسماتون الدنيا من صروفها يكون بكاء الطفل ساعة يولد والا فسما يسكيسه منها وانها لاوسع مسماكان فيسه وارغد

لینی جب دنیاایے حوادث کی وجہ سے تعلیٰ ہوگئ کچہ ولادت کے وقت روتا ہے ورنہ وہ دنیا میں جہاں وہ دنیا میں آنے سے کیوں روئے جہاں وہ دنیا میں مقام سے زیادہ وسیع اور خوشکوار ہے جہاں وہ تھا۔

حضرت آدم علیہ السلام کے نطفے کا پانی ہے اور دونوں مشقت میں گرفآر ہیں اور یہاں کبدکو باکی زیرے پڑھنا چاہیے جو کہ مشقت کے معنوں میں ہے۔ کبد باکی زیرے جو کہ جگر کے معنوں میں ہے۔ کبد باکی زیرے جو کہ جگر کے معنوں میں ہے بھی اس کی ڈیونی باور جی معنوں میں ہے بھی اس کی ڈیونی باور جی گری ہے نقدالانے اسے پہلنے اور اسے تقسیم کرنے میں کی مشقتیں برداشت کرتا ہے اور جبکہ دوسرے اعضاء لقے پر بے دردی ہے مقرف ہوتے ہیں۔

انسانی مشقتوں کا اجمالی تذکرہ

اور اگر آ دمی کی مشقت اور تکلیف کوتفصیل ہے بیان کیا جائے تو طویل وفتر جائیں کیکن اجمالی طور پر اس قدر جانتا جا ہے کہ پہلے نو آ دمی کی پیدائش جار صدوں گرمی اور سردی' رطوبت اور خشکی ہے ہے اور بیر جاروں اس کے مزاح میں اپنا غلبہ جا ہتی ہیں۔اوراس کے اعتدال کو درہم برہم کرنے کے دریے ہوتی ہیں وہ ہمیشدان جارا ژو ہاؤں کی تھینچا تانی میں رہتا ہے پھر کچھ عرصہ رحم کے قید خانے میں بند ہے۔ اور پچھ اور وقت میں انتہائی عاجزی اور کمزوری کے ساتھ کہوارے میں مردے کی طرح پڑا ہے۔ ندزبان کداپنا ماضی القیمر بیان كرے نہ ہاتھ ياؤں جن ہے اپني خواہش طلب كرے۔ پھر دانت نكلنے كے در د اور پيتان چھوڑنے کی تکلیف میں مبتلا ہوتا ہے۔ پھر کھتب میں استاد کی ڈانٹ کی تکلیف اُنٹھا تا ہے۔ اور جب عقل کے بندھنوں میں گرفتار ہوتا ہے تو بدکر اور بدند کر کی تھینچا تانی میں پڑ گیا۔اور كنى فتم كے رئے اور ملال میں ليينا ميا۔ طبيعت اسے جمعی شہوانی زور اور قوت كے ساتھ جانور ک طرح ذلیل کرتی ہے اور اے حص میں گرفتار کرتی ہے۔ ایک درہم کی خاطراس کے سریہ بھاری ہو جھر کھتی ہے اور سارا دن معمولی می مزووری کی خاطراہے آگ اور دھوئیں کے سپرو ت كرتى ہے اور چند پيوں كى محنت كے ليے اسے ذكان ميں قيد كر ديتى ہے اور چندوانوں كى خواہش کی وجہ ہے اسے دو بیلوں کے پیچیے بھاتی ہے۔

اور جمی توت غصبیہ کے جوش مارنے کی وجہ سے اسے در ندول کی گفتی میں ڈال وی ق ہے۔ اور اسے مخلوق کی نفرت اور جہان کی بدگوئی نصیب ہوتی ہے اور بھیڑ یئے کی طرح تقویمنی اور پنجہ کھول ہے اور مخلوق کوستا تاہے۔ اور ان سب سے عجیب تر دشواری میہ ہے کہ اس سے محسب تر دشواری میہ ہے کہ اس

برطبیعت کا تھم بھی چلتا ہے اور شریعت کا بھی۔شریعت طبیعت کی مخالفت کرتی ہے جبکہ طبیعت نفس کی موافقت کرتی ہے۔عباوت کی رکاوٹوں کے ہوتے ہوئے اے عبادت کا تھم ہے اور گناہ کے محرکات کے ہوتے ہوئے اس گناہ سے روکا گیا ہے۔ دنیا میں کوئی تکلیف مندوں کو جمع کرنے اور ہمزاد مخالفوں کوراضی کرنے سے بڑی نہیں ہے اور بیتمام مشقتیں اور تکالیف ہر شخص کی ذات ہے تعلق رکھتی ہیں۔

دوسرول کے حق سے وابستہ تکالیف کا تذکرہ

رہی وہ مشقتیں جو کہ غیر کے حق سے تعلق رکھتی ہیں تو ان سب سے زیادہ سخت ہیں' رعیت ہمیشہ بادشاہ کی اطاعت میں اسپراور بادشاہ کے لیے اس طمرح رعیت پرعدل واحسان ضروری۔ بیٹا 'ماں باپ کی خدمت کے رہنج میں اور ماں باپ بیٹی اور بیٹے کے اخرا جات کے رنج میں۔ای طرح بیوی کا حال شوہر کے ساتھ اور شوہر کا حال بیوی کے ساتھ اور غلام آتا کے ساتھ اور آتا غلام کے ساتھ۔ اور ہمسابیہ دوسرے ہمسائے کے ساتھ۔ کوئی بھی اس قتم کی مشقت سے خالی مہیں ہے اور ان تمام د نیوی مشقتوں کے باوجود سکرات موت کی مشقت۔ مال کی جدائی اور اولاد کی فوتید گی کارنج ' قبر کی بھی کھر کی تاریکی وہاں کی تنہائی مسکر کمیر کے سوالات تامت اورا تصنے کے دن کی ہولنا کی صور پھو تکنے کی ہیبت سب اگلوں پچھلوں کے سامنے رسوائی کا خوف حساب اور وزن اعمال کے وقت شرمندگی کا لاحق ہونا رب العزت كے حضور كھڑے ہونا اور اگر معاذ الله ان سب كے باوجود دوزخ نصيب ہوئى تو بميشه كا خسارہ ال ممیا اس کی مشقت اور رنج بیان سے باہر ہو کمیا اور جب کوئی عمر کی ابتدا ہے لے کر اس کی انتها تک ای متم کی تکالیف می گرفتار مؤاسے زور باز دادر بے پناہ مال خرج کرنے پر فخركرنا انتهائى نازياب ينانج فرمايا جار باب:

اَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ آحَدٌ كيا بيمشقتون اورتكليفون كالخلوق مان كرتي ہے کہاس پر کوئی قادر نہیں ہوگا کہ اے جزا دے اور اچھے نرے اعمال کے متعلق بازیری كرے حالانكه وہ ہرةم قہراللی میں مغلوب اور اس كى لامتنا ہى قدرت كے ماتحت ہے بلكہ اس کی انتہائی کمزوری مخلوق جو کہ مسی اور مچھر ہے کے عہد ہے ہے ہاہر نہیں آسکتا۔ martat.com

اور جب اس کا زیادہ تر نخر بہت سا مال خرچ کرنے پر تھا۔اور اس وجو ہے میں کہ مجھ پر
کوئی قابونیں پائےگا۔ اس کا زیادہ تر اعتمادا پنی عزت اور مرتبے پر تھا جو کہ اس نے بہت سا
مال خرچ کر کے حاصل کیا تھا۔ کیونکہ جو شخص مال زیادہ خرچ کرتا ہے وہ ولوں میں بیارا اور
نگا ہوں میں بلند مرتبہ معلوم ہوتا ہے۔اورکوئی شخص حیا کی وجہ سے بیاس کی طرف ہے کسی نفع
کی تو تع کی وجہ سے اسے لٹاڑنے اور ذلیل کرنے کی کوشش نہیں کرتا اس کے اس غرور کو
منانے اور اعتماد کو باطل کرنے کے بارے میں فرمایا جارہا ہے۔

یقُولُ اَهْلَکْتُ مَالَا لُبَدًا فخرے مقام میں اور بیٹابت کرنے میں کہ بھے پرکوئی قابونہیں پائےگا۔ کہتا ہے کہ میں نے ڈھیروں مال نیست و نابود کیا ہے اور ہر بڑے کام میں بڑی بڑی رقمیں صرف کی ہیں اور اس وجہ سے میرا مقام اور عزت لوگوں کے ولوں میں جاگزیں ہے کوئی شخص میرا مقابلہ کرنے کے لیے قدم نہیں اُٹھا سکتا۔

آیکٹسٹ آن نگر یکو اکھوں کیا وہ گمان کرتا ہے کہ اسے کی سے نہیں ویکھا جبکہ وہ مال کے پیٹ سے بھوکا اور نکا باہر آیا تھا۔ اور اس کے پاس ایک دھیلہ تک نہ تھا۔ پھر جب اس نے مال اس نے مال کمانا شروع کیا تو کس طریقے سے حلال سے یا حرام سے؟ پھر جب اس نے مال خرج کیا تو کس معرف میں کیا؟ مناسب مقام پریا بے جا خرج کیا؟ اور کس نیت سے خرج کیا؟ فرد کیا تو کس معرف میں کیا؟ مناسب مقام پریا بے جا خرج کیا؟ اور کس نیت سے خرج اس کیا؟ خداتعالیٰ کی رضا کے لیے یا فخر وریاء کے لیے؟ پس اسے وہ مال خرج کر آور ہوکہ اس کے ہاتھ میں بالکس ما تی ہوئی چیز ہے اور زیادہ تر حرام طریقے سے حاصل کیا گیا، حرام جگہ صرف کیا گیا اور بڑی نیت سے خرج ہوا فخر کرنا اور خوش ہونا مناسب نہ تھا۔ اور اگر وہ یہ فخر اور خوش کیا اظہار کی ایسے خص کے پاس کرتا جو کہ اس کی ابتدائی حالت سے اس کی اختمان کی ابتدائی حالت سے اس کی اختمان کی جہت سے اور اس کی باطنی نیت سے آگاہ نہ ہوتو منجائش تھی۔ اس کی اختمان کے مال حیائی ہے حال اور مستقبل کو حیائش ہے کہ اس نے فخر کے ساتھ لب اسرار اور مخفیات کا علم رکھنے والے اور حال اور مستقبل کو جانے والے کے سامنے فخر کے ساتھ لب کشائی کی۔ اور اگر وہ کفر اور جہالت کے طریقے جانے دوالے کے سامنے فخر کے ساتھ لب کشائی کی۔ اور اگر وہ کفر اور جہالت کے طریقے سے اللہ تعالیٰ یوں ارشاد فر ماتا

آلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ كيا ہم نے اس كے ليے دوآ تكفيں نہيں بنائى ہيں تاكہ چيزوں كو ديھے اور جوذات دوسروں كو بينائى بخشے اور بينائى كے اسباب پورے كرے اس كى اپنى بينائى ميں كس طرح كى ہوگا۔ اور اگر وہ خدا كے ديھے كوتتليم كرتا ہے اور كہتا ہے كہ ميرے دل كى نيتوں كوكوئى نہيں جان سكتا تو اس كے جواب ميں فرما يا جارہا ہے

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ كَياوركيا بم نے اس كى ايك زبان اور دولب نہيں بنائے اور جس نے مانی الضمير كو ظاہركرنے كى قدرت دوسرول كو بخشى . ب وہ دوسر بے كے مانی الضمير پركس طرح مطلع نہ ہوگا۔ اور آ دمی میں زبان كا فائدہ تو بالكل ظاہر اور واضح ہے كہ بات كرنے اور مانی الضمير كو ظاہركرنے كا آلہ وہى ہے۔

دولیوں کے چندفوائد

جبکہ دولیوں کے چند فائدے ہیں۔ پہلا فائدہ دودھ چوسنا اور ای طرح مجلوں سے جیسے آم وغیرہ کارس چوسنا۔

دوسرا فائدہ منہ کو ڈھانچا کہ کوئی جانور یا تکا وغیرہ منہ میں نہ جائے۔ تیسرا فائدہ دائتوں کو چھپاٹا کیونکہ ان کا کھلا رہنا انتہائی بھدامعلوم ہوتا ہے۔ چوتھا فائدہ بات کہنے میں مدرکرنا کیونکہ شغوی حروف ہوئوں کے بغیر نہیں نکل سکتے جیسے با اور واؤ اور دوسرے حروف میں بھی ان کی مدد ضروری ہے۔ پانچوال فائدہ کھانا کھانے اور پانی چینے نیز چبانے نیچے لے جانے اور فضلہ موڑنے میں ان سے مدد لیمنا ضروری ہوتا ہے۔ چھٹا فائدہ بانسری میں بھونک مارنے اور پھونک والے آلات میں ان کا نفع بالکل فلا براورواضح ہے۔

المنكصين دواورزبان ايك بونے كى حكمت

اور باریک بین علاء نے یوں فرمایا ہے کہ فق تعالی نے آدمی کو دو آتھیں اور ایک زبان عطا فرمائی ہے تاکہ اس بات کا اشارہ ہو کہ اس کا بولنا' دیکھنے سے کمتر ہوتا چاہیے اس لیے کہ اس کا دیکھنا خیر اور شرکوشائل ہے جبکہ بولنا سوائے خیر کے قابلِ تعریف نہیں ہے اور اس کے دو محافظ مقرر کیے گئے جیں جو کہ دونوں ہونٹ جیں تاکہ اسے معلوم ہو کہ این زبان کولگام عمر مرکزا جا ہے جیسیا کے دیکے تعالی اشام فرماتا ہے : هما یَدُفِظُ

مِنْ قَوْلِ إِلَّا لَدَيْهِ دَقِيْبٌ عَتِيدٌ لِينَ آدى زبان سے جوكلم بھى نكالنا ہے اس كے زويك ايك مستعد بگہبان اس كام كے ليے مقرر ہے۔

احفظ لسانك ايها الانسان لابسلسدغسنك انسشه ثعبسان

یعنی اے انسان! پی زبان کی حفاظت کر بید ایک از دھا ہے کہیں تجھے ڈس نہ لے۔
حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ سے منقول ہے کہ جب آ دمی بات کرنا چا ہے تو اس
چا ہیے کہ پہلے غور کر ہے اور اپنے ول سے مشورہ طلب کر ہے۔ اگر معلوم کر سے کہ بات کرنے
میں سراسر مصلحت ہے اور دین اور دنیا کے اعتبار سے کوئی نقصان نہیں تو بات کرنے کا اقدام
کر ہے۔ اور اگر مصلحت کے وجودیا نقصان لاحق ہونے میں شک رکھتا ہے تو اسے بات کرنا
ہرگز جا نزنہیں۔ چہ جا نیکہ اس میں کوئی مصلحت ہی نہ ہواور نقصان کا گمان یا یقین ہو۔

نیز حدیث شریف میں وارد ہے کہ جب آ دمی میے کرتا ہے اس کے تمام اعضاء زبان کے آگے عاجزی اورزاری کرتے ہیں اور کہتے ہیں اے ظالم! انصاف کرہم سب تیری خوبی کے آگے عاجزی اورزاری کرتے ہیں اور کہتے ہیں اے ظالم! انصاف کرہم سب تیری خوبی کے ساتھ وابستہ ہیں اگر تو سیر می راہ پر ہے تو ہم بھی نجات پاتے ہیں ورنہ تیرے عمل کی وجہ ہے ہم سب گرفتار ہوتے ہیں۔

مذکورہ تین نعمتوں کی شخصیص کی ایک اور وجہ

اور اس آیت میں ان تمن نعتوں آئی زبان اور لیوں کوخصوصیت کے ساتھ بیان کرنے کی ایک اور وجہ بھی ہے اور وہ یہ ہے کہ جب آ دمی ماں کے شکم سے پیدا ہوتا ہے بھوکا marfat.com

ہوتا ہے اور پہلی چیز جو دنیا ہے اپنی غذا کے لیے کما تا ہے پستان سے دودھ چوسنا ہے۔ اور دودھ چوسنے میں ان تینوں اعضاء سے چارہ نہیں تا کہ دودھ دینے والی کو دیکھے اور لب کے زور سے پستان چوسے اور دودھ کو زبان اور مزہ چکھنے کی مدد سے طلق میں نیچے اُ تارے۔ تو جو اپنی پہلی کمائی پر قادر نہ ہوجس پر اس کی بقاء اور زندگی موقوف ہے تو دوسری کمائیوں پر اسے خود بخو د ناز کرنا کیے درست ہوگا۔ اور اگر فریق مخالف جو کہ وہی نہ کورہ کا فر ہے کہ کہ اگر چہ اللہ تعالی ہر چیز کے ظاہر و باطن کو د کھی اور جانتا ہے لیکن جہاں میں نے مال خرچ کیا اور جس نیست کے ساتھ کیا میں معذور تھا اس لیے کہ مجھے وہی مقام اور وہی نیت اچھی اور بہندیدہ گی اور میں کی دوسرے مقام اور دوسری نیت کو پہلے نتا ہی نہ تھا کہ اس مقام میں اور اس نیت کے ساتھ مال خرچ کروں اس کے جواب میں فرمایا جارہا ہے کہ

وَهَدُينَاهُ النّبُحِدَيْنِ اور ہم نے اسے خیر اور شر دونوں راہوں کا نشان دیا۔ پس بہچانے اور تمیز نہ ہونے کے دعوے میں بالکل جموث کہتا ہے اس لیے کہ پہلے ہم نے اسے عقل دی پھرہم نے انبیاء لیہم السلام اور واعظوں کے وسیلے سے اس کے کانوں میں اچھی اور کری راہ کی علامات پہنچا کیں اور دونوں راہوں کو اس کی نظر میں جدا جدا کر دیا اس نے کری راہ کو اختیار کیا اور سیدھی راہ سے بہک گیا اور اپنا مال قائل تعریف مقام میں بالکل صرف نہ کیا۔ چنانچ فرمایا جارہا ہے

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ لِي اس كافر سے بینہ ہوا كہ خت اور دشوار شيلے برگز رتا اور ختی اور دشواری بھی اچھی راہ كی عمرہ علامات عيں سے ہاس ليے كه يُرى راه نفس كى مناسبت اور اس كى موافقت كى وجہ سے آسان اور جكى معلوم ہوتی ہاور خواہش كى چيزوں عيں لذتيں بورى كرنے عيں مال خرچ كرنا آسان ہوتا ہے مال خرچ كرنے عيں دشوارى وہاں ہوتی ہے جہال كوئى لذت ياس عيں كى منفعت كى تو قع نہ ہواور صرف الله تعالى كى رضا حاصل كرنے ہے الے واقع ہو۔ چنانچ فرمايا جارہا ہے كہ

وَمَا آذَرَ اكَ مَا الْعَقَبَةَ اورائِ انهان! تو كياجائے كه وه بخت اور دشوار ثيلا كيا ہے كه جہاں مال خرج كرنا طبيعت اورننس پرنا كوارا وركراں گزرتا ہے۔ marfat.com

تغیر مزیزی مست میست (۲۳۴) میست تیسوال یاره

فَكُ دُقَبَةٍ وه سخت اور دشوار ثيلاً كردن آزاد كرنا هـ

گردن آزاد کرنے کی چندصورتیں

اور بید چند وجوہ سے ہوتا ہے۔ ایک تو اپنی ملک سے غلام آزاد کرنا۔ دوسری قتم جان کو قصاص اور خون سے خلاصی دینا ہے کہ اس کے عوض خون بہا دے کر اس کی جان بخشی کی جائے۔ تیسری قتم قرض دار کو چھڑا نا ہے جے اس کے قرض خواہ اپنے حق کے مطالبے میں پکڑ کر قید کر لیس اور وہ قرض ادا کر کے اسے اس کے قرض خواہوں سے رہائی بخشیں۔ چوتھی قتم کر قید کر لیس اور وہ قرض ادا کر کے اسے اس کے قرض خواہوں سے رہائی بخشیں۔ چوتھی قتم اس قیدی کو چھڑا نا ہے جو کسی کا فریا ظالم کے پاس گروی رکھا ہوا ہوا ور مال دیتے بغیر چھٹکارا نہ باے۔

اور حدیث سیح میں وارد ہے کہ ایک فخص حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمتِ عالیہ میں حاضر آیا اور عرض کی یارسول اللہ! صلی اللہ علیہ وسلم جھے کی ایسے عمل کا پنہ دیں جس کی وجہ سے میں جنت میں داخل ہو جاؤں فرمایا غلام آزاد کرواور گردن آزاد کرواس نے عرض کی یارسول اللہ! صلی اللہ علیہ وسلم کیا بیدونوں ایک چیز ہی نہیں ہیں؟ فرمایا نہیں! غلام آزاد کرنا یہ بارسول اللہ! صلی اللہ علیہ وسلم کیا بیدونوں ایک چیز ہی نہیں ہیں؟ فرمایا نہیں! غلام آزاد کرنا یہ ہے کہ تو اے کی تاوان یا خون سے چھڑا نے میں مدد کرے۔

تاوان یا خون سے چھڑا نے میں مدد کرے۔

حفرت امام اعظم رحمة الله عليه في مسكين كو كهانا كهلاف سے پہلے فك رقبة كوبيان كرنے سے استدلال فرمايا ہے كہ بياخرا جات صدقہ ہے بہتر ہيں جبكہ دوسرے علماء نے اس كرنے سے استدلال فرمايا ہے كہ بيا خرا جات صدقہ ہے بہتر ہيں جبكہ دوسرے علماء نے اس كے برعكس كہا ہے وہ كہتے ہيں كہ صدقے ميں جان كو ہلاكت سے رہائى دِلانا ہے اس ليے كہ جسم كى بقاء غذا كے ساتھ ہے اور غلام آزاد كرنے ميں قيد سے چیڑانا ہے اور قيدا تى تكليف دہ نہيں كداس سے ہلاكت كا خوف ہے۔

اَدُ إِطْعَامٌ فِی يَوْمِ ذِی مَسْغَبَةٍ يا اس دن کمانا کملانا ہے کہ جس میں بھوک اور محتابی زیادہ ہو جیسے قط کے اور غلہ نہ ملئے کے ایام کہ اس وقت کمانا کملانا سونا اور جواہرات بخشنے سے زیادہ بہتر ہوجاتا ہے۔

يَتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ اللهِ يَتِيم كوجور شِيِّے دار بھی ہوجیے بعیّجا' پھوپھی زاد اور خالہ زاد marfat.com

وغيره

احتیاج کے دن کی قیدلگانے کی وجہ

اور بيقيداس لي لائي كئي ہے كه كھانا كھلانا ہروفت عبادت ہے اس ليے كه كھانے والا بھوک کے بغیر نہیں کھا سکتا۔ تو ہر خض امیر وغریب کھانا کھانے کے وفت مختاج ہی ہوتا ہے اور کھانا کھانے سے اس کی روح تازہ ہو جاتی ہے۔اس کیے جب حضور ملی اللہ علیہ وسلم سے یو جھا گیا کہ اسلام کے کاموں میں بہترین کام کون ساہے؟ آپ نے ارشادفر مایا کھانا کھلانا جو ملے اسے سلام کہنا۔ اور رات کو اس وقت نماز پڑھنا مینی نوافل ادا کرنا جب لوگ سوئے یڑے ہوں۔اور جب کمانا قحط اور غلہ نہ ملنے کے وفت کملا یا جائے اس کا اجر کئی گنا زیادہ ہو جاتا ہے اس لیے کہ ان اوقات کے علاوہ اگر کوئی مخص بھوک کی ابتدا میں تکلیف اُٹھائے گا' ایک دو کمڑی بعدرونی مل جائے کی اور اے جان کی ہلاکت کا خطرہ نہیں ہوگا۔ بخلاف ایام تجط اور غلہ کی نایا بی کے کہان دِنوں وہ لوگ جوروزی کمانے کی کوشش اور تلاش کر سکتے ہیں یا كوئى والى وارث ركعتے بين أنبيس بھى ايك دودن بعد كھانا نصيب بوتا ہے اور ان كے معاش کے ذمہ دار قلیل و کثیر کے ساتھ ان کی خبر کیری کر لیتے ہیں۔ جبکہ پیٹیم جس کے پاس ان میں ے کو بھی نہیں اور اس کی ہلاکت کا خوف یقین کی حد تک پہنچ جاتا ہے اور اس کی محتاجی انتہا كوين جاتى ب_خصوصا وويتم جوكدر شت دارى كاتعلق بمى ركمتا بوكدا ي كمانا كملانا صدقه مجى ہے اور صلدرى مجى جوكدا كيد مستقل عبادت ہے۔ نيزيتيم كوكھانا كھلانے ميں خصوصاً جو رشتے دار بھی ہو تواب آخرت کے بغیر می فوری یا بعداز مدت تفع کی تو تع نہیں ہے اس کیے كديج مونے كا عتبار سے اس سے كوئى كام بحى نبيل موسكا اور مدح وثناء كاكوئى اعتبار بحى مبیں ہوتا اور اگراہے کھانا کھلانے کے وقت کوئی موجود بھی ہوتو اسے رہنے واری کے تعلق كاحرام برمحول كرك كالبس ريا اوز فخركرن كادروازه بالكل بند موجائ كااور خلوم نیت بورے طور بر محقق ہوگا۔

آؤ میں کینا ذاعب آبتے یا اس منگلے کو کھانا کھلانا ہے جو خاکساری والا ہواور خاک پر پڑا رے اور بیاتی اس کے لائی می ہے کہ مسکین بھی اس مختاج کو کہتے ہیں جس کا خرج اس کی Martat.com

آمدنی سے زیادہ ہوجیہا کہ سورہ کہف میں واقع ہے۔ وَاَمَّا السَّفِینُنَهُ فَکَانَتْ لِسَاکِیْنَ یَعْمَلُوْنَ فِی الْبَحْدِ لَیکن وہ مسکین خاکساری اور اضحلال کی حد تک نہیں پہنچا تا کہ اس ک جان کو ہردَم ہلاکت کا خطرہ لاحق ہواور جب گدا کی نوبت اس حد تک پہنچ جاتی ہے تو وہ بھی مسکی فوری اور بعداز مدت نفع کی تو قع کامحل نہیں رہتا اور صرف رضائے خداوندی کے لیے مال خرج کرنا محقق ہوجاتا ہے۔

اور چونکہ ان تین وجوہ میں جو کہ ذکر کی تمکی ال خرچ کرنا بھی کافروں اور بدعقید لوگوں سے بھی اپنی جنس پر رفت آنے اور فطری رحم کی وجہ سے واقع ہو جاتا ہے اور آخرت کے حساب میں وہ ضائع اور برباد ہو جاتا ہے۔ ناچار اس خرچ کرنے سے بیخے کے لیے ایک اور شق بڑھا کرار شادفر مایا جارہا ہے کہ

تُعَمَّ كَأْنَ مِنَ الَّذِيْنَ المَنُوا كَمُروه النسب ك باوجود ال لوكول ميس سے بوجو ایمان لائے ہیں اور انہوں نے دین شریعت اور وقت کے نبی علیہ الصلوٰ قوالسلام کی تقدیق کی ہوتا کہ اس شخص کا بیاج ماعمل آخرت میں کفراور نبی علیہ السلام کی تکذیب کی نحوست کی وجه سے رائیگال اور برباد نه ہواور تم کالفظ اگر چدان اعمال سے ایمان کی تراخی اور تاخیر پر دلالت كرتا ہے۔ حالانكه ايمان تمام عبادتوں اور نيكيوں كى قبوليت كى شرط ہے اور شرط ہميشه مشروط سے پہلے ہوتی ہے لیکن یہاں تراخی اور تاخیر بیان میں مراد ہے ند کدایمان کے واقع ہونے میں جیسا کہ کہتے ہیں کہ نماز اس وقت مقبول ہوتی ہے جب اس کے ارکان کو تکبیر ہے کے کرسلام تک ترتیب کے ساتھ ادا کریں پھروضو بھی کیا ہو حالانکہ وضونماز کی شرط ہے۔ نماز سے پہلے کرنا چاہیے لیکن بیان میں شرط کا مرتبہ مشروط کے مرتبے کے بعد ہے اس تاخیر کا پت دیے کے لیے یہاں لفظ ثم استعال فرمایا گیا ہے اور اگر ایمان کا ذکر پہلے کیا جاتا تو یوں وہم ہوجاتا کہ ایمان بھی مال کے عقبہ کے ارکان میں واخل ہے جبکہ واقع میں ایسانہیں ہے۔ اور بعض علاء نے کہا ہے کہ وقوع میں تاخیر مراد ہے اس لیے کہ کفار کے اجھے اعمال موتوف رہتے ہیں اگر وہ پچھلی عمر میں ایمان لے آئیں وہ سب سابقہ اعمال بعد میں لاحق ، ہونے دالے ایمان کی برکت سے مقبول ہوجاتے ہیں اور وہ ان کا تواب پاتے ہیں۔ چنانچہ ا

حدیث صحیح میں حضرت کیم بن حزام رضی الله عند نے جو کہ حضرت اُم المونین خدیجہ رضی الله عنہا کے بیتیج بین اسلام لانے کے بعد حضور صلی الله علیہ وسلم سے سوال کیا کہ یار سول الله!

میں نے زمانہ کفر میں اچھے اعمال بہت کیے ہیں۔ آپ نے فرمایا تیرے اسلام نے ان سب اعمال کونیک بنادیا اور وہ مقبول ہوگئے۔ پس اس صورت میں آیت کا معنی یوں ہوگا کہ پہلے جس نے بھی وجوہ نہ کورہ میں مال خرج کیا اس کے بعد اسے ایمان کی تو فیق بھی اُل گئ وہ شخت اور دشوار نیلے سے گزر گیا۔

ا يك فني سوال اور اس كا جواب

اور عربی کے علاء کو اس آیت کی ترکیب میں ایک مشہور مشکل در پیش ہے جس کا خلاصہ یہ ہے کہ کلام عرب میں فعل ماضی کی نفی لا کے ساتھ نہیں آئی ہے سوائے دعا کے جیسے لَابَادِ کُ اللّٰهُ فِی سَهِیْلِ یا سوائے تکرار کے جیسے فَلَاصَدَّقَ وَلَاصَدُّی میں۔اس آیت میں فلا اقتحد فعل ماضی کی نفی لا کے ساتھ ہے اور یہ دونوں قسموں سے خارج ہے۔

اس کا جواب سے کہ جب عقبہ کو چند چیزوں کے ساتھ بیان کیا گیا تو معنوی اعتبار کے ماتھ بیان کیا گیا تو معنوی اعتبار کے ماضی میں کرار آگیا تو گویا یوں فرمایا گیا کہ فلافک دَقبَةً وَلااَطْعَمَ فِی یَوْمِ ذِیْ مَسْفَبَةٍ وَلَا کَانَ مِنَ الْآئِدُنُ الْمَنْوُ اور کلام میں زیادہ تر معنوں کا اعتبار ہوتا ہے نہ کہ لفظوں کا اور اس کے علاوہ قرآن پاک کی لغت کی حجت کافی ہے کوئی گواہی لانے کی ضرورت نہیں۔

اور جب عقبہ کے بیان میں یہاں تک پہنچ گئے تو مال خرج کرنے میں مرتبہ کمال پورا ہوااب اس باب میں کمل کرنے کا مرتبہ بیان فرمایا جار ہا ہے اس لیے کہ بھیل کے بغیر کمال چنداں اعتبار کے لائق نہیں۔

وَتَوَاصَوْ بِاللَّصَبْرِ اور وہ ایک دوسرے کومبر کی وصیت کرتے ہیں جو کہ اچھے اخلاق کا مجموعہ ہے۔

<u>مبرکی نضیلت کا بیان</u>

اور کتاب الله میں تمیں ہے کھے اوپر آیات میں اس کی تاکیدواقع ہے اور حق تعالیٰ نے Marfat. Coff

الیہ بینیرصلی اللہ علیہ وسلم کواس کا تھم دیا ہے کہ فاصبر کما صبر اُولوا الْعَزْمِ مِن الدُّسُلِ اور یہاں سے مبری فضیلت کا سراغ لگایا جا سکتا ہے کہ قرآن پاک میں اس کا ذکر الدُّسُلِ اور یہاں سے مبری فضیلت کا سراغ لگایا جا بیا آیٹھا الّذِیْنَ المَنُوْ السَتَعِیْنُوْ السَتَعِیْنُوْ السَتَعِیْنُوْ السَتَعِیْنُوْ السَتَعِیْنُو السَصْلُوةِ نیز رہ العزت نے اپنی رفاقت مبروالوں کے ساتھ مخصوص فرمائی ہے کہ ان اللہ مع الصائمین مع الصائمین مع الصائمین مع السلمین مع الصائمین مع الستصدیدن نہیں فرمایا ۔ نیز بر مل کا ایک اجرمقرر فرمایا گیا ہے جبکہ مبرکے لیے بحساب المتصدیدن نہیں فرمایا گیا ۔ اللہ تعالی نے فرمایا آنگا یُوفّی الصّابِووْنَ اَجْدَهُمْ بِعَیْسِ حِسَابِ اور دین کے پیشواؤں کو مبر کے ساتھ وابستہ کیا گیا ہے کہ وَجَعَلُنَا مِنْهُمْ اَئِنَةٌ یَّهُدُونَ اور دین کے پیشواؤں کو مبر کے ساتھ وابستہ کیا گیا ہے کہ وَجَعَلُنَا مِنْهُمْ اَئِنَةٌ یَّهُدُونَ اِلْمُونَا لَا سَابُووْنَ اللّهُ مِنْ اللّهُ اللّه اللّه اللّه اللّه مِنْ اللّه اللّه اللّه اللّه اللّه مِنْ اللّه اللّه اللّه اللّه اللّه مِنْ اللّه اللّه

مبركي حقيقت كابيان

اب مبری حقیقت کو بھنا چاہے تا کہ پتہ چلے کہ مبری وصیت کرنا گویا تمام وجوہ کمال
کی وصیت کرنا ہے۔ مبری حقیقت یہ ہے کہ انسان طبیعت اور نفس کی تھینچا تانی کے وقت
این دین کے نقاضوں پر قائم رہے۔ اور پختگی اختیار کرے اور یہ استقلال اور ثابت قدمی
مجمیجم کے ساتھ ہوتی ہے اور اس کی دونشمیں ہیں۔ مشقت طلب عبادت سے ستی نہ کرنا
اور جی نہ چرانا اور مصیبتوں کے آنے سے متاثر نہ ہونا۔ اور اپنی وینی قدروں کو نہ چھوڑ نا اور
کبھی ثابت قدی نفس کے ساتھ ہوتی ہے۔ پس اگر پیٹ اور شرم گاہ کی دونوں خواہشات
سے اس کانفس متاثر نہ ہواور اس سے دین کے خلاف کوئی حرکت اور خواہش صادر نہ ہوئا۔
عفت یعنی پاک دامنی کہتے ہیں اور اس کے مقابل فجور ہے۔

اور اگر کروہات اور شبہات سے پر ہیز کرنے اور طبی نا خوشگواریوں کو برواشت کرنے میں نفس ثابت قدم رہے اے مبر مطلق کہتے ہیں اور اس کی ضداضطراب اور بے باک ہے۔ اور اگر مال داری اور دولت مندی کی صورت میں نفس کوظم شرع کے تحت قابور کھے اور تکمبراور غرور فراہم نہ کرے اور بے جاخوشی اور نخر نہ کرے تو اے وسعت حوصلہ کہتے ہیں اور تسمبراور غرور فراہم نہ کرے اور بے جاخوشی اور نخر نہ کرے تو اے وسعت حوصلہ کہتے ہیں اور تسمبراور غرور فراہم نہ کرے اور بے جاخوشی اور نخر نہ کرے تو اے وسعت حوصلہ کہتے ہیں اور سے مسلم کھیں اور نے مسلم کے تابی اور سے مسلم کے تابی کی کے تابی کی کے تابی کے تابی کے تابی کے تابی کے تابی کی کے تابی کی کے تابی کی کے تا

اس کی ضد تھی حوصلہ ہے۔

اوراگر جنگ میں بھا گئے اور کا بلی کرنے سے پر بیز کرئے اسے شجاعت کہتے ہیں اور
اس کی ضد جبن بینی بزولی ہے اور اگر غصہ پینے کے وقت مستقل رہے اسے علم کہتے ہیں اور
اس کی ضد طیش ہے اور اگر عظیم کام سرانجام دینے میں بحک دل نہیں ہوتا' اسے سینے کی کشادگی،
کہتے ہیں اور اس کی ضد تنگ ول ہے اور اگر دا زواری اور بحید چھپانے میں غیر ذمہ داری نہیں
کرتا' اسے کتمان لیتی چھپانا کہتے ہیں اور اس کی ضد اظہار ہے۔ اور اگر حقوق جیسے امانت
اور قرض کی حفاظت میں احتیاط کرتا ہے اسے امانت کہتے ہیں اور اس کی ضد خیانت ہے۔ اور
اگر دنیا کی لذت میں رغبت نہیں کرتا اور بعد رضرورت اکتفاء کرتا ہے' اسے زہداور تناعت
کہتے ہیں۔ اور اس کی ضد حرص ہے۔ حاصل کلام یہ ہے کہ اکثر اخلاق ایمان صبر میں درن کے ہیں۔ اور اس کی ضد حرص ہے۔ حاصل کلام یہ ہے کہ اکثر اخلاق ایمان صبر میں درن کے اس کے حدیث تی میں دارد ہے کہ الصبد نصف الایمان۔

اور حرام ہے مرکرنا فرض اور کروہ ہے قال ہے اور دین میں مبر ہے بہتر کوئی چیز نہیں ہے اس لیے کہ عبادت کی بنیاد مبر پر ہے کوئکہ عبدت میں داخل ہونانس کی مرض کے خلاف ہے اور عبادت کو پورا کرنا زیادہ ترنفس کے خلاف پڑتا ہے اگر مبر نہ ہو کوئی عبادت مرانجام نہیں ہوتی ۔ نیز دنیا محنت اور آ زمائش کا گھر ہے اور گھبرا ہمث اور ہے جینی نیک کرفار رکھیں اور روکنے والی ہے۔ اگر مبر نہ ہوتو دندی تکالف بھیشد انسان کو بے چینی میں گرفار رکھیں اور عبادت کے لئے کہمی فراخت میسر نہ آتے اور بھائی سے مبر کونماز سے پہلے لانے کی وجہ واضح ہوگئی۔

مبر ك عناف ركول اور شعبول كابيان

تغير مزيزي مسيد من المهما من المهما من المهما المهم

کوتا ہی اوراد قات وشرائط کی رعابت نہ کرنے سے عبادت کی تفاظت کرنا ہے۔ اور گنا ہوں سے صبر میہ ہے کہ ریاضت کے ساتھ نفس کو ان میں رغبت کرنے سے روکے اور ورع کا قصد کرے جو کہ معصیت کے اسباب اور وسائل سے پر ہیز کرنے سے عالم سے س

اورمصیبت میں صبری دوقتمیں ہیں اس لیے کہ مصیبت کی بھی دوقتمیں ہیں۔ پہلی وہ مصیبت ہے کہ جس پر انتقام اور جزادینے کی انسان میں طاقت ہو سکتی ہاں تم کی مصیبت پر مبر کرنا ہی ہے کہ قل کرے اور بدلہ نہ لے قول سے نہ فعل سے اور اس باب میں بزرگانِ سلف نے ظالم کے بارے میں بددعا ہے بھی پر بیز فر مایا ہے اور اسے صبر کے نقصان کا موجب قرار دیا ہے۔ چنا نچہ صحیح صدیث میں وارد ہے کہ حضرت اُم المونین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا سامان چرانے والے چور کے بارے میں دعائے ہلاکت فرماری تھیں، حضور صلی اللہ تعالی عنہا سامان چرانے والے چور کے بارے میں دعائے ہلاکت فرماری تھیں، حضور صلی اللہ تعلیہ وسلم نے سن کرار شاد فرمایا کہ کیا تو جا ہتی ہے کہ اس چور کا عذاب ہلکا ہوجائے اور اس کی مصیبت کا دن آسان ہو جائے اور تیراا جربھی کم ہو جائے؟ اس کے بارے میں بدعا مت کروتا کہ اس کا وبال زیادہ بخت ہواور تیمارا اجربھی کم ہو جائے؟ اس کے بارے میں بدعا مت کروتا کہ اس کا وبال زیادہ بخت ہواور تیمارا اجربھی کم ہو جائے؟ اس کے بارے میں بدعا مت کروتا کہ اس کا وبال زیادہ بخت ہواور تیمارا اجربھی کم ہو جائے؟ اس کے بارے میں بدعا مت کروتا کہ اس کا وبال زیادہ بحت ہواور تیمارا اجربھی کم ہو جائے؟ اس کے بارے میں بدعا مت کروتا کہ اس کا وبال زیادہ بخت ہواور تیمارا اجربھی کم ہو جائے؟ اس کے بارے میں بدعا مت کروتا کہ اس کا وبال زیادہ بحت ہواور تیمارا اجربھی کم ہو جائے؟ اس کے بارے میں بدعا مت کروتا کہ اس کا وبال زیادہ بحت ہواور تیمارا اجربھی کا دیا ہے۔

دوسری وہ مصیبت ہے کہ جس کا تدارک بندہ کے بس میں نہ ہواور اس قتم کی مصیبت میں صبر ریہ ہے کہ گھبرائے نہیں اور قول فعل سے شکایت بالکل نہ کرے۔

و تو اصوا بالكر حكة اورايك دوس كو كلوق خدا پر مبرياني اور شفقت كى وصيت كرتے بيل اس كيے كه بيخال دربار الوجيت كے اخلاق ميں سے ہے كه الرحمن الرحيم اور دربار نبوت على صاحبا الصلوات والتسليمات كى عمده صفات سے ہے كه بالمونين رؤف رحيم اور ببت سے التحے اخلاق كا منع ہے ۔ عفو و كرم اور لطف و صلم اى خلق سے بيدا ہوتے بيل اى اور ببت سے التحے اخلاق كا منع ہے ۔ عفو و كرم اور لطف و صلم اى خلق سے بيدا ہوتے بيل اى ليے صديث صحيح ميل وارد ہے كه المر احسون يو حمه مد المد حمان اد حموا من في الله صديث من في السمآء ليني رحم كرنے والوں پر رحمن رحم فرماتا ہے زمين والوں پر رحمن رحم فرمات انس بن مالك رضي بر رحم كرو أمان والے تم پر رحم كريں مے اور ابو يعلى طبراني نے حضرت انس بن مالك رضي الله عليه وسلم فرما رہے ہے كہ حق تعالى اپن

رحت نازل نہیں فرماتا گر رجیوں پر صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم اجمعین نے عرض کی کہ یارسول اللہ! ہم میں سے ہرکوئی رحمت رکھتا ہے۔فرمایا کہ رجیم وہ نہیں جو کہ اپنی جان اور این بچوں پر رحمت کرے رحیم وہ ہے جو کہ تمام مسلمانوں پر مہربان ہو بروں کو باب کی طرح ، برابر والوں کو بھائی کی طرح اور چھوٹوں کو اولاد کی طرح جانے۔

اور ابن عدى كامل ميں حضرت امير المومنين ابو بكر صديق رضى الله عنه سے روايت كرتے ہيں كہ حضور صلى الله عليه وسلم نے فرمايا كه مسلمانوں كو چاہيے كه ايك دوسرے سے مشفقت دوئى اور حسن سلوك ميں ايك جسم كى طرح ہوں اگر جسم كا ايك عضو در دكرے اس كے ساتھ سارا جسم بے خواب رہتا ہے اور اسے بخار ہوجاتا ہے۔

اورطبرانی نے اس صدیث کی روایت کے بعد کہا ہے کہ میں نے ایک دن حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خواب میں زیارت کی اور آپ سے اس صدیث پاک کے بارے میں پوچھا' علیہ وسلم کی خواب میں زیارت کی اور آپ سے اس صدیث پاک کے بارے میں پوچھا' آپ نے دست مبارک کے ساتھ اشارہ کرتے ہوئے فرمایا سمجے' صحیح

ایک دن حفرت امیرالمونین عربن الطاب رضی الله عنہ کے دکام میں سے ایک حاکم
آپ کی ملاقات کے لیے حاضرآ یا۔ اس نے دیکھا کہ آپ چت لیئے ہوئے ہیں اور غربول
کے بچ آپ کے پیٹ پرسوار ہو کر کھیل رہے ہیں۔ عرض کی کہ یہ حرکت خلافت کے رعب
کے مناسب نہیں۔ آپ نے فر مایا کیا تو اپنی رعایا سے (محبت کا) یہ سلوک نہیں کرتا؟ اس نے
عرض کی جب میں دربار میں بیٹھتا ہوں تو وہال مغرور اور سرکش لوگ میری ہیبت سے دَم نہیں
مار سکتے ، چہ جائیکہ نقیروں اور غربوں کے بچ میرے بیٹ پر کھیلیں۔ آپ نے فر مایا تو
مارے کام کانہیں ، معزول ہو جا ، ہمیں اپنے رسولی کر مح صلی الله علیہ وسلم کی اُمت پر نری اور
مہر بانی منظور ہے فر ماں روائی کے رعب اور ہیبت کا اظہار مقصود نہیں۔ نیز بعض احادیث میں
مہر بانی منظور ہے فر ماں روائی کے رعب اور ہیبت کا اظہار مقصود نہیں۔ نیز بعض احادیث میں
مہر بانی منظور ہے فر ماں روائی کے رعب اور ہیبت کا اظہار مقصود نہیں۔ نیز بعض احادیث میں
مزادت نفس سنے کی صفائی اور مخلوتی خدا پر مہر بانی کر کے اس مر ہے پر پہنچ ہیں۔
سخاوت نفس سنے کی صفائی اور مخلوتی خدا پر مہر بانی کر کے اس مر ہے پر پہنچ ہیں۔

<u>صبراور رحمت کی تخصیص کی وجہہ</u> اب جانا چاہیے کہ اللہ تعالیٰ نے عبادت مالی کی پیمیل کے بارے میں ان دو صفات marfat.com

صبراور رحمت كوخصوصيت كے ساتھ كيوں ذكر فرمايا۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ خیرات اور نیکیوں کی اقسام میں مال خرج کرنے کی ان دوصفات کے بغیرصورت نہیں بنتی۔ پہلے چا ہے کہ حرام مال سے مبر کرے اور حلال کے ساتھ لذت حاصل کرنے میں بھی اپنے نفس کو بازر کھے اس کے بعد رحمت اور شفقت کی وجہ ہے وہ مال محتاجوں مسکینوں اور قیموں پر خرج کرے۔ پس مبر بمز لدر کاوٹ کو دُور کرنے کے کوئکہ حص جو کہ مال خرج کرنے سے روکنے والی ہے مبر کی وجہ سے دُور ہوتی ہے اور رحمت اور شفقت بمز لہ منتفاکے پائے جانے کے ہے کوئکہ بیصفت حضرت ربوبیت کے اخلاق سے اور ربوبیت احسان اور پرورش کا تقاضا کرتی ہے اور چونکہ رکاوٹ کو دُور کرنے والا مشفقائے پائے جانے ہے ہے۔ اس لیے مبر کو ذکر کرنے میں رحمت سے پہلے لایا متفائے پائے جانے ہے۔ بہلے اس لیے مبر کو ذکر کرنے میں رحمت سے پہلے لایا

یہال یہ بھی جانا چاہے کہ جاہلوں کے ذہنوں میں اکثر اوقات دل کی تی مبر کے ساتھ مشتبہ ہو جاتی ہے اور وہ بچھتے ہیں کہ مصیبت اور تی میں گلوتی خدا کا بے تاب ہونا اور بہتینی کا اظہار کرنا مبر کے منافی ہے اور ای خیال فاسد کی وجہ سے وہ اپنے رشتے داروں اور دوسری مخلوتی خدا کی مدد کرنے سے محروم رہتے ہیں۔اللہ تعالی نے اس وہم کو دُور کرنے کو دوسری مخلوتی خدا کی مدد کرنے سے محروم رہتے ہیں۔اللہ تعالی نے اس وہم کو دُور کرنے کے لیے مبرکی وصیت کے رضت کی وصیت کو طاکر بیان فر مایا تا کہ اس بات کا اشارہ ہو کہ استقلال اور فابت قدی وہاں قابل تعریف ہے جہاں اللہ تعالی کے بعدوں میں سے کسی بندے کو نقصان مختیجے کا محمان نہ ہوورنہ

اگر بینم که نابینا و جاه است اگر خاموش بفتینم مناه است

یعن آگر بھے نظر آ رہا ہے کہ اعراب کے آگے کواں ہے اب آگر بیں چپ
رہوں تو محناہ ہے۔ ای لیے عرب کے بزرگوں نے اپنی مثالوں بیل کہا ہے کہ صبوك فی
مصیبتك خیرمن جزعك وجزعك فی مصیبة اخیك خیرمن صبوك مین اپنی
مصیبت بیں مبركرنا گرانے ہے بہتر ہے اور اپنے بمائی کی مصیبت بیں گرانا مبرسے بہتر
مصیبت بیں مبركرنا گرانے ہے بہتر ہے اور اپنے بمائی کی مصیبت بیں گرانا مبرسے بہتر
مصیبت بیں مبركرنا گرانے میں بہتر ہے اور اپنے بمائی کی مصیبت بیں گرانا مبرسے بہتر

4

اُولِیَكَ اَصْحَابُ الْمَیْهَیَّةِ وہ لوگ جو کہ ایک دوسرے کویہ وسیتیں کرتے اوراس کے مطابق عمل کرتے ہیں وہی برکت والے ہیں اس لیے کہ یمن اور برکت کامعنی ہے کہ کہ کہ جیز ہے ہمیشہ کافی نفع حاصل ہو اور ان لوگوں ہے ان وصیتوں کی وجہ ہے جن پر کہ لوگ قیامت تک احسان رائج قیامت تک احسان رائج اور قائم رہتا ہے اور محلوق خدا کو ہمیشہ کے لیے بے بناہ نفع پہنچتا ہے اور خود ان کے لیے ان تمام احسانات کا ثواب ان کے اعمال ناموں عمل ورج ہوتا ہے۔

اور بعض مفسرین نے میمنہ کو دائیں طرف پر محمول کیا ہے اس لیے کہ عرب کے عرف میں وائیں طرف کو میمون و مبارک جانے تھے اور ای لیے وہ دائیں طرف سے چلنے والی ہوا کو متبرک سجھتے تھے اور بائیں جانب کو منوس خیال کرتے تھے اس لیے اس ست کی ہوا سے برشگونی لیتے اور بیٹاق کے دن افل نجات کو حضرت آ دم علیہ السلام کی پشت کی دائیں سمت سے نکالا گیا اور قیامت کے ون اعمال نا ہے ان کے دائیں ہاتھوں میں دیئے جائیں گے اور انہیں جنت میں داخل کریں مجے جو کہ اس دن عرش عظیم کی دائیں جانب ہوگی تو اس معتی کے انہیں جنت میں داخل کریں مجے جو کہ اس دن عرش عظیم کی دائیں جانب ہوگی تو اس معتی کے انتہار سے بھی اصحاب المیمنہ یہی ہزرگوار ہیں۔

وَالَّذِیْنَ کَفَرُوْا بِآیَاتِنَا اورجنہوں نے ہارے احکام کا انکار کیا اگر چہائی فاسد نیتوں دغوی مقاصد یا اپنے بنوں اور معبودانِ باطلہ کی خوشنودی کی خاطرانہوں نے گردنیں آزاد کی ہوں تیبیوں اور مسکینوں کو کھانا کھلایا اور ایک دوسرے کو صبر اور رحمت کی وصبت کی ہوئی بین سے کو کھانا کھلایا اور ایک دوسرے کو صبر اور رحمت کی وصبت کی ہوئیکن ان کے کفر کی نوست کی وجہ سے آئیں کوئی فائدہ نیس ہوگا۔

گفتہ اَضْحَابُ الْمَشْنَهُ وَبَى تُحِست اور ذلت والے بیں کدانہیں ایک کلمہ کفر کی وجہ سے دائی عظیم نقصان نصیب ہوا۔ اور ان کی تمام نیکیاں اور اچھا کیاں ہرباد ہوگئیں۔ تو تمام مالی عبادتوں کے ساتھ کفر کے مقابلے سے پتہ چلا کہ وہ تمام مالی عبادات جب کفر کے ساتھ ملی ہوئی ہوں تو بالکل بے فائدہ اور بے ہودہ بین فخر ادر مسرت کا مقام نہیں اور کفار جس طرح نحوست اور رسوائی والے بین اس طرح بینات کے دن حضرت آدم علیہ السلام کی پشت

marfat.com

کی بائیں سمت سے باہر آئے اور قیامت کے دن اپنے اعمال نامے بائیں ہاتھوں میں پائیں سمت سے باہر آئے اور قیامت کے دن اپنے اعمال نامے بائیں ہاتھوں میں پائیں گے اور عرب محلی کی راہ ہے روانہ ہوں سے تو اگر مشمہ کو بائیں کے معنی میں لیا جائے تب بھی ورست ہے اور جب اس قدر بیان ہو چکا کہ کافر کوکسی کام سے بھی فخر نہیں اس لیے کہ اسے ذکیل ورسوا کرنے کے لیے اس کا کفر بی کافی ہے اب بیان فر مایا جارہا ہے کہ ان کے بارے میں اس ذکیل ورسوا کرنے یہ بی اکتفاء نہ ہوگا بلکہ

عَلَيْهِمْ نَادٌ مُوصَدَةً ان پرايي آگ مسلط ہوگی جو کہ سرپوس کر دی جائے گی اور اس کے دروازے بالکل بندتا کہ اس کی گرمی کا کوئی گرم سانس باہر نہ آئے اور باہر کی سردی سے خند اسانس اندر نہ پہنچ کہ پچھ تخفیف حاصل ہواور اس وقت ان کی مشقت اور تکلیف انتہا کو پہنچ ہم دوز خیوں کے حال سے اللہ تعالی کی پناہ ما تکتے ہیں۔

سورة والشمس

سورهٔ وانشمس کمی ہے اس کی پندرہ (۱۵) آیات چون (۵۴) کلمات اور دو سو چھیالیس (۲۴۲)حروف ہیں۔

كزشته سورة كے رابطے كى وجه

اورسورۃ لاافتم کے ساتھ اس سورۃ کے رابطے کی وجہ یہ ہے کہ وہاں خیروشرکی راہ کی ہدایت کا ذکر ہے کہ همکیڈنا کا النّاجہ کی بنی جس طرح کہ یہاں فجور وتغویٰ کے الہام کا بیان ہے۔ نیز وہاں اصحاب میمنۃ اور اصحاب کشمۃ کا بیان ہے جیسا کہ یہاں تزکید فنس اور تذلیل نفس والوں کا بیان ہے اور دونوں مضامین ایک دوسرے کے قریب ہیں۔

وجدشميه

اوراس سورة كانام والشمس اس ليے ركھا ميا ہے كدراو خداد ندى كے سالك كو جوعمه ه چيز دركار ہے آ فآب نبوت كى شعاع ہے جس كى وجہ سے اس كى بھيرت كى آ كھرراو نجات اور راہ بلاك كے درميان تميز كرتى ہے اور دوست كا دشمن سے امتياز كرتى ہے اور مخالف اور موافق ميں فرق كرتى ہے۔

آ فآبِ نبوت کی سورج کے ساتھ مناسبت کابیان

آ فآبِ نبوت حمی انوار کی و نیا میں آ فآب کے ساتھ جے لغت عرب میں تمس کہتے ہیں کال مناسبت رکھتا ہے اوراس ابہام کی وضاحت یہ ہے کہ د نیا میں جو کہ آخرت کی کھیتی ہے نفسِ انسانی بمزلہ ایک مزارع کے ہے جے معرفت اللی کا نتیج و سے کر اور اس نتیج کی کاشت کے آلات جو کہ تو تیں اوراعضاء ہیں عطافر ماکراس کھیتی میں بھیجا گیا ہے ہم مزارع کے لیے چے چیزوں کے بغیر چارہ نہیں کہان کے بغیر ذراعت کا عمل ممکن نہیں۔

سب ہے بہلی چز آ قاب ہے جس کی شعاعوں سے زمین کی اصلاح ہوتی ہے اور زمین کے باطن میں گری پیدا ہوتی ہے اور اس گری کی وجہ سے نشو ونما کی قوت جوش مارتی ہے اور اگر خور کریں تو زراعت کے بارے میں آ قاب میوانات کے بارے میں حرارت غریزی کے قائم مقام ہے اس لیے کہ جب نیج کوزمین میں رکھا جاتا ہے تو خاک ہوا اور پانی شخوں لی رحیات نباتی لیجن اُ کئے کی صلاحت بیدا کرتے ہیں۔ لیکن پکانے اور بد بودار کرنے شخوں لی رحیات نباتی لیجن اُ گئے کی صلاحت بیدا کرتے ہیں۔ لیکن پکانے اور بد بودار کرنے کے لیے حرارت درکار ہے۔ اگر حرارت آگ کے عضر سے لیس تو نیج جل جائے ناچار حکمت بو ایک نات کی اس کی حرارت کو صلا کیا جائے تاکہ آگ والا فائدہ حاصل ہوا وار اس کا نقصان ختم ہو جائے۔ نیز موسموں کی تبدیلی بہار اور موسم سرما کا آ تا آ قاب کی حرات کی وجہ سے ہواور اس کا نقصان ختم ہو جائے۔ نیز موسموں کی تبدیلی نظروری ہے۔ حاصل کلام یہ برادراعت کی ابتدا ہے ۔ اور عمل زراعت کے لیے موسم کا آ تا فروری ہے۔ حاصل کلام یہ کے دراعت کی ابتدا سے ۔ اور عمل زراعت کے لیے موسم کا آ تا قاب کے فائدے زراعت کا علم رکھنے والے پر پوشیدہ جس ہیں۔

دوسری چیز چاعہ ہے کو تکہ دانہ اور میوہ بننے اور اس کے زمین سے او نچا ہونے کے وقت یانی کی رطوبت کافی نہیں ہوتی ۔ پس او پر کی طرف ایک اور رطوبت چاہے تا کہ میوہ اور دانہ پُر مغز اور موتا بیدا ہواس اعتبار سے دانہ اور میوہ بننے کے وقت چاعہ کی چانہ نی سے گریز نہیں جیسا کہ یہ معتی بھی زراعت بیٹے لوگوں پر ظاہر اور روش ہے۔

تيسري چيز دن جوكه الأش محنت بل جلائے پانی محینے اور دیگر اعمال اور معروفیات كا

بختی چیز رات کیونکه اگر رات ند آئے آدمی امدیلی آرام ند یا نمی اور سورت کی martat.com

تغير مرزي ميسي (٢٥٢) ميسي تيه وال ياره

شعاعوں کے ہمیشہ اٹر کرنے سے کھیتیوں اور پھل اور درختوں کوجلانے تک نوبت جا پہنچے اور شبنم جو که تازگی اور سرسبزی کا باعث ہے مہیا نہ ہو۔

یا نچویں چیز' آسان کہ بارش کا اُتر نا اور ہواؤں کا چلنا ہر دفت کی ضرورت کے مطابق

چهنی چیز وسیع اور فراخ زمین جو که کلرشور اور سنگلاخ نه مواور ان دو چیزوں کی طرف كاشت كاركامختاج مونا اظهرمن الشمس ہے۔

اور چونکه نفس انسانی کودنیا کی تعیتی میں مزارع بنا کر بھیجا ممیا ہے اسے بھی ان چیزوں کے بغیر جارہ نہیں۔

ایک ایا آفآب جواس کے کام آئے اینے زمانے کے نی علیہ الصلوة والسلام کا قلب مقدس ہے جس کی شعاعیں دُور ونز دیک تک پہنچی ہیں اور وہ چاند جواہے کام دے اب صاحب طریقه کا نور ولایت ہے اور جس طرح حسی جاند حسی سورج کا خلیفہ ہے اس طرح نور ولايت نور نبوت كے قائم مقام ہے۔

بلكه حقیقت میں وہی نور ہے جس كی كیفیت دوسري ہے۔

نور نبوت اورنور ولايت كى كيفيت ميس فرق

اور اگر دونوں کیفیتوں کے درمیان فرق مطلوب ہونو سننا جا ہیے کہنو یہ نبوت غلبے اور حكراني كے ساتھ ملا ہوا ہے اى ليے انبياء عليم السلام اپني اُمتوں ير وہي تھم ركھتے ہيں جو بادشاہوں کا تھم رعایا پر ہے۔ اور ان سب پر ان کی اطاعت فرض اور واجب ہے۔ جن کی طرف انبیں بمیجا گیا ہے اور ان کی مخالفت ہمیشہ کی تبائی اور خسارے کا موجب ہے اور ان كى طرف سے مجزات قاہرہ كا ظاہر ہونا اور زبان اور تكوار اور نيز _ كے ساتھ جہاد كرنالازم اور مینی ہے جبکہ نوبر ولایت نوبر جمال ہے اور اُلفت دِلانے 'مائل کرنے اور تھینینے کا نور ہے لہذااس میں یہ چیزیں ضروری نہیں ہیں اور کیا ہی اچھا کہا گیا ہے آل بادهٔ شعله مول که وارد خورشید در کاست ماه چول رسد شیر شود

martat.com

یعنی وہ شعلوں جیسی شراب جو کہ سورج میں ہے جب جاند کے پیالے میں پہنچتی ہے' دودھ بن جاتی ہے۔

نیز دونوں نوروں میں اصل اورظل ہونے کا فرق ہے کہ سورج کا نوراس کا ذاتی ہے جبہ جا ندکا نوراس کے جبہ کے اس میں سورج کی شعاعوں کے جبکنے کی وجہ سے ہے۔ ای لیے مقابل ہونے اور قریب ہونے اور تربیج یعنی ہلال اور بدر کی درمیانی رات کی حالت میں مختلف اور بدلا ہوا نظر آتا ہے۔ ای طرح نور نبوت اصلی ہے اور نور ولایت ظلی یعنی اس کا سابیہ

اور جو دن سالک طریقت اور مزارع آخرت کو درکار ہے کمائی نیف عاصل کرنے اور ریاضت کرنے کا وہ وقت ہے جس میں نویہ نبوت اور نویہ ولایت کو کوشش تلاش اور کدوکاوش کے ساتھ کام میں لاتا ہے۔ اور جو رات اس کے لیے مفید ہے اس کے فطری تقاضول راحت ابنی ضروریات اور اہل وعیال اور دوسری مخلوق کے حقوق کی اوا نیکی میں معروفیت کے اوقات ہیں اور اگر اس کے لیے بیرات ندہوتو نویہ نبوت اور نویہ ولایت کا اس کے ول پر ہمیشہ جلوہ ریز ہونا اسے دندی کام کاح سے معطل کر دے اور اس سے لوازم انسانیت علیمہ وہ وجا کیں۔

اور اسے جو آسان درکار ہے آسان شریعت ہے جو کہ تمام اعمال افلاق احوال مقالت عقائداور غدام المحال افلاق احوال مقالت عقائداور غدامب کومحیط ہے اور وجیں سے رحمت الحما کا فیض بارش کی طرح اس پر ستا ہے اور جذب وکشش کی ہوائمی چلتی جی اور اسے مختلف حالات کے ساتھ فشیب وفراز و تی جی تا کہ این کا لی حد تک بھی جائے۔

اوراس کی زیمن اس کی استعداد کی زیمن ہے جس کی فراخی اور مغائی کے اندازے کے مطابق اے احوال اور مقامات کی نشو ونما میسر آتی ہے اور جب ان امور میں ہے عمد اور اس روحانی پروگرام کی بنیاد نور نبوت ہے تو اس سورة کو جو کہ سلوک طریقت اور کمال معرفت کی زراعت کے لوازم کے بیان میں ہے'آ فناب کے ذکر سے شروع فرمایا میا جو کہ اس کے مناسب ہے اور اس سورة کوائی نام ہے موسوم کردیا میا ہے۔

سی مناسب ہے اور اس سورة کوائی نام ہے موسوم کردیا میا ہے۔

سی مناسب ہے اور اس سورة کوائی نام ہے موسوم کردیا میا ہے۔

سی مناسب ہے اور اس سورة کوائی نام ہے موسوم کردیا میا ہے۔

سی مناسب ہے اور اس سورة کوائی نام ہے موسوم کردیا میا ہے۔

سی مناسب ہے اور اس سورة کوائی نام ہے موسوم کردیا میا ہے۔

سی مناسب ہے اور اس سورة کوائی نام ہے موسوم کردیا میا ہے۔

تغيير عزيزي مستعمل الموسال الم

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالشَّنْسِ مِحْصَاً فَآبِ كَ مَنْم ہے جو كہ وقت كے نبى عليہ السلام كے دل كى مثال ہے۔ وَضُحْهَا اوراس كى شعاع كى تتم جو كہ تمام مخلوقات پر نور نبوت جيكنے كى مثال ہے۔

وَالْقَدَرِ اور مجھے جاندگ قتم ہے جو کہ صاحب طریقہ مرشد کی مثال ہے اور نبی علیہ السلام کے تشریف لے جانے کے بعدان کے ضلیعے کی مثال ہے۔ اِذَا تَلْهَا جب وہ آ فاب کی پیروی کے کہ مرشدگی آ برونو رِنبوت کی پیروی کے کی پیروی کے ساتھ مشروط ہے اور میں شرط اس لیے لائی گئی ہے کہ مرشدگی آ برونو رِنبوت کی پیروی کے ساتھ مشروط ہے اور کمال اتباع کی وجہ سے اسے منصب خلافت نصیب ہوا۔

اور چاند کا سورج کی پیروی کرنا چند وجہ کے ساتھ ہے۔ پہلی وجہ نور کا استفادہ کرنے میں دوسری وجہ غروت میں اس کی پیروی اور وہ مہینے کی ابتدا میں ہوتی ہے تیسری وجہ طلوع میں اس کی پیروی اور وہ مہینے کے وسط میں ہوتی ہے 'چوتی وجہ حسن ظاہر کے اعتبار ہے جسم کے بڑے ہونے میں پیروی اور وہ مہینے کے وسط میں ہوتی ہے 'چوتی وجہ حسن میں سورج کی برابری نہیں کرتا اگر چہ طول وعرض اور مجرائی کے دلائل کے مطابق بڑا ہو۔ پانچویں وجہ اس جہان کی مصلحتوں کے اس کی حرکت کے ساتھ وابستہ ہونے میں پیروی کیونکہ ظاہر ہے کہ سال کے مسلحتوں کے اس کی حرکت کے ساتھ وابستہ ہونے میں پیروی کیونکہ ظاہر ہے کہ سال کے مسلحتوں کا بدلنا اور وہرے بڑے برے بڑے کام آفاب کی موسموں کا بدلنا 'پورے سال کے ساتھ متعلق حساب ماہتاب کی حرکت سے وابستہ ہیں اور ماہانہ صورتوں کا بدلنا اور مہینے کے ساتھ متعلق حساب ماہتاب کی حرکت کے ساتھ مر بوط ہیں اور ان گرم بھار یوں کا بخار' حیوانات کے دماغوں میں رطوبتوں کی زیادتی 'پٹریوں کے مغز' دودھ والے جانوروں کا دودھ' بدن میں خون کا جوش مارنا اور مہینے کی زیادتی 'پٹریوں کے مغز' دودھ والے جانوروں کا دودھ' بدن میں خون کا جوش مارنا اور مسید ہے۔

وَالنَّهَارِ إِذَا جَلُهَا بِحِصِون كُنتم ہے جب اس آفاب كوروش كروئے جوكد مالك كى رياضت كے وقت كى مثال ہے اور يہاں بھی ايك شرط زياوہ كى گئى ہے كہ تاكداس بات كى رياضت كا وقت كى مثال ہے اور يہاں بھی ايك شرط زياوہ كى گئى ہے كہ تاكداس باصت كا پت چلے كہ رياضت كا وقت اى وقت عزت اور بزرگى پيدا كرتا ہے جب اس رياضت كى وجہ ہے سالك كے دل پرنور نبوت جلوہ قتن ہواور جاب أثم جا كي ورنہ جو كيوں اور دوسرے وجہ ہے سالك كے دل پرنور نبوت جلوہ قتن ہوا ور جاب أثم والوں كى جموئى رياضتيں جن كى وجہ ہے نور نبوت جلوہ قتن ہوتا اور درميان من الله والوں كى جموئى رياضتيں جن كى وجہ ہے نور نبوت جلوہ قتن ہوتا اور درميان

marfat.com

ے پردہ نبیں اُٹھتا کوئی عزت اور بزرگی عطانبیں کرتیں۔

ایک شبه اور اس کاحل

یہاں اکثر مفسرین شبہ وارد کرتے ہیں کہ دن کو روش کرنا آفآب کا کام ہے نہ کہ آفآب کو روش کرنا آفآب کا کام ہے نہ کہ آفآب کو روش کرنا دن کا کام ہے تو یہاں بیر کیب اُلٹی کیوں لائی گئی حی کہ بعض مفسرین نے اس شبہ کی قوت پرنظرر کھتے ہوئے ضمیر کو آفآب سے پھیر کر زہین کی طرف لوٹایا ہے اور اضار قبل الذکر لازم آنے سے مرجع پر دلالت کرنے والے قرائن ذکر کے جان چھڑائی۔

اور حق یہ ہے کہ صار کو منتشر کرنا اچھانہیں کیونکہ ضحبا اور تااہا کی ضمیر بلاشبہ آفاب کی طرف لوئی ہے اور ذکر شدہ مرجع کے ہوتے ہوئے محذوف مرجع کی طرف لوئن ممکن نہیں لیکن اس ترکیب کی وجہ کو سننا چاہیے جو کہ بظاہر اُلی نظر آتی ہے۔ وہم کی عادت ہے کہ جب کی چیز کو وقت مقرر میں دیکھتا ہے اور بید کھنا بار بار ہوتو اس وقت کے آنے کو اس چیز کا سب سمجھتا ہے اور عملی قانون کے مطابق بھی اثر کا پایا جانا موثر کے پائے جانے کی دلیل ہے جیسا کہ بر بان الی کی بحث میں طے شدہ ہے۔ تو جب عقلی اور وہمی دونوں وجہ سے زمانہ آفاب کو جلوہ گرکرتا ہے تو اس کی طرف نسبت کردی گئی اور بیجاز جو یہاں لایا گیا مثل لدک حقیقت جلوہ گرکرتا ہے تو اس کی طرف نسبت کردی گئی اور بیجاز جو یہاں لایا گیا مثل لدک حقیقت برنظر کرتے ہوئے جو کہ دیا صنت کا وقت ہے اور نویر نبوت کے جلوہ گرکرنے کا موجب ہے۔ حقیقت استعمال کرنے سے بہتر ہے اور احتمال ہے کہ اِذَا جَدَلْها کا معنی یہ ہو کہ اس دن کو کی نسبت دن کی طرف کرنا بلاتکلف بادل اور غبار حاکل نہ ہو اس صورت میں روٹن کرنے کی نسبت دن کی طرف کرنا بلاتکلف درست قرار یا تا ہے۔

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْضُهَا اور مجھے رات كى هم جب كه آفاب كو دُهان ليتى ہے جوكر راحت اور الل وعيال كے حقوق كى ادائيگى كے وقت اور غفلت اور نور نبوت سے برد بيل مونے كے وقت اور غفلت اور لور نبوت سے برد بيل مونے كے وقت كى مالك كے ليے مرورى ہے وقت كى مالك كے ليے مرورى ہے ورنہ جہان و نيا دگرگوں ہوجائے اور ان عبادات سے جوكہ حقوق خلق كے ساتھ متعلق بيں جيسے بيار برى رشتے داروں كى ملاقات اور الل وعيال كے ليے روزى كمانا وغير و

ے محروی رہے اور آخرت کی کمینی کے نقصان کا اعتصام ہو۔ marfat.com

حدیث می وارد ہے کہ حضرت امیر المونین ابد بکر مدیق رضی اللہ عندایک دن حفورنى كريم ملى الله عليه وسلم كى محفل مقدى سے أخد كراين كمرجارے تے كدا جاك راستے میں حظلہ نامی ایک محانی سے ملاقات ہوئی اور اس نے بلند آ واز سے کہا کہ حظلہ منافق ہو گیا۔حضرت ابو بمرمیدیق رضی اللہ عنہ نے پوچھا کہ کیا بات ہے؟ اس نے کہا کہ جب میں حضور صلی الله علیه وسلم کے نورانی در بار میں ہوتا ہوں تو عالم غیب اس طرح واضح ہوتا ہے کہ کو یا سرکی آئمول سے دیکھر ہا ہوں اور جب اس محفلِ مقدس سے اُٹھ کرا پے گھر جاتا ہوں اور اہل وعیال میں تھل مل جاتا ہوں تو وہ کیفیت باقی نہیں رہتی۔حضرت ابو بمر مديق رضى الله عنه نے فرمايا كه بيرحالت تو ہركسى كولاحق ہے۔ آ ہے تا كه حضور صلى الله عليه وسلم كى خدمت عاليه ميں حاضر ہوكرعرض كريں وونوں حضور عليه الصلوٰة والسلام كى بارگاہ بے محمل پناہ میں حاضر آئے اور حظلہ نے ای انداز میں بلند آواز سے عرض کی کہ حظلہ منافق ہو گیا۔ سرکار علیہ السلام کے یو چھنے پر سارا ماجرا بیان کر دیا۔ آپ نے فر مایا اگر تمہاری وہ حالت دائمی رہے جو کہ میری بارگاہ میں یا ذکر کی محفلوں میں رونما ہوتی ہے تو مجمی بھی اہلِ خانه سے لذت حاصل نہ کرواور جنگل میں نکل کرنعرے لگاتے رہواور فرشتے تمہارے ساتھ مصافحہ کریں کیکن میہ حالت کسی کے لیے دائی نہیں ہوتی بلکہ ایک ساعت اس حالت میں مخزرتى باورايك ساعت غفلت مين تاكه توجه بحق اور توجه بخلق دونول كاانظام مويه

یہاں سے معلوم ہوا کہ غفلت اور راحت کے اوقات کی بھی وقعت ہے کہ آئدہ
ریاضت میں الدادکرتے ہیں اور ان عبادات کا تواب حاصل کرنے کا باعث بھی ہوتے ہیں ہ
جو کہ حقوق خلق سے متعلق ہیں۔ چنا نچہ حضرت معاذین جبل رضی اللہ عنہ نے فرمایا ہے کہ
انی لاحتسب نو معنی کما احتسب قو متی لیخی میں اپنی نیندیں بھی اجر و تواب کی تو قع
رکھتا ہوں جیسا کہ اپنی تبجد میں۔ کیونکہ اگر تبجہ د مضرت خالق جل وعلا کے حق کی اوائیگی ہے تو
نیند بھی حق نفس کی اوائیگی ہے اور دونوں حقوق اللہ کے واجب قرار دینے کی وجہ سے واجب
نیند بھی حق نفس کی اوائیگی ہے اور دونوں حقوق اللہ کے واجب قرار دینے کی وجہ سے واجب
میں۔ ہال جو خفلت کہ نیکی پر المداد نہ کرے اور حکم شریعت اور فرمان اللی کی تھیل کی نیت کے
ساتھ نہ ہوں' وہ غفلت کوئی وقعت نہیں رکھتی بلکہ مطلقا حرام ہے اور یہاں سے معلوم ہوا کہ
ساتھ نہ ہوں' وہ غفلت کوئی وقعت نہیں رکھتی بلکہ مطلقا حرام ہے اور یہاں سے معلوم ہوا کہ

در حقیقت بیر چاروں تشمیں آئاب کے ساتھ متعلق ہیں ای لیے اس سورۃ کا نام آ فآب رکھا گیا ہے۔

وَالسَّمَاءُ وَمَا بَنَاهَا اور مجھے آسان کی سم ہواوراس حکمت الی کی جس نے اسے ہراس چیز پرمحیط بنایا ہے جو اس کے پیٹ میں ہواور بیشر بعت کی مثال ہے جو کہ آسان کی طرح معلقین کے تمام اعمال کو محیط ہے اور اس میں ہر عمل کا تھم موجود ہے۔ اور اس میں آسان کی طرح چار مثلثوں کے شمن میں بارہ برج ہیں۔ پہلامثلثہ جو کہ اعتقاد کا مثلثہ ہے تمن برجوں پرمشتل ہے۔ برج ذات وصفات برج انبیاء پیم السلام وطلا گمة و کتب اور برج آخرت۔ دوسرا مثلثہ جو کہ مثلثہ عبادات کا برج قبین برجوں پرمشتل ہے۔ بدنی عبادات کا برج جسے نماز' روز ہ تلاوت قرآن مجید' اذکار' دعائیں اور ورودوسلام' مالی عبادات کا برج جسے ذکو ق مدقات وقف اور مجد بی سرائیں مررے کویں بل اور مہمان خانے بنانا اور بدنی اور مالی ہے۔ برق بنانا اور بدنی اور مالی ہے۔ برق بنانا اور بدنی اور مالی ہے مرکب عبادات کا برج جسے خوعرہ' جہاد' عیدیں قائم کرنا۔

اور تیسر اعلام معاملات کا مثلثہ ہے وہ بھی تین برجوں پر مشتل ہے وہ معاملات جو کہ ایک وجہ سے عبادت بھی ہیں جیسے نکاح ' خدمت والدین پرورش اولا داور غلاموں ' ہسایوں ' ہم کشینوں مہمانوں اور دوسرے دشتے داروں کے حقوق کی رعابت کرنا اور وہ معاملات جو کہ عبادات کی کوئی وجہ نہیں رکھتے جیسے خرید وفروخت ' اجارہ ' رئن شرکت وکالت اور کفالت و غیر ذالک اور وہ معاملات جن میں نیکی اور احسان کی وجہ بھی لمی ہوئی ہے جیسے ہبہ کرنا ' قرض لینا فرض دینا اور مفار بت

اور چوتھا مثلثہ جو کہ سیاست کا مثلثہ ہے کہی تمن ہرجوں پر مشمل ہے۔ کفارات جو کہ سیاست کے ساتھ ایک جہت عبادات کی بھی رکھتے ہیں جیسے شم کا کفارہ قبل نفس کا کفارہ ورزہ تو ڑنے کا کفارہ فلمار کرنے کا کفارہ والت میں جماع کرنا وغیرہ اور تعزیرات۔ اور قصاص کی حدود جو کہ صرف سیاست ہیں جیسے زنا کی حد شراب چینے کی حد و کیمی کی حد میں جائے گی حد وغیرہ۔ اور خون بہا اور متعلقات کی صافت کہ سیاست کے ساتھ ایک جہت معاطے کی بھی رکھتے ہیں۔

نیزاس میں ستارے بھی ہیں جو کہ احکام کے دلائل ہیں'ان میں سے سات ستارے کردش کرنے والے ہیں کہ احکام کی قسموں میں گھو متے ہیں۔ کتاب' سنت' اجماع' قیاس' استصحاب' تعامل اور آباحت اصلیہ اور باتی ستارے ثابت ہیں کہ ابنی جگہوں میں قائم ہیں جسے جزوی مسلحیں جو کہ ہرفرد میں یائی جاتی ہیں۔

اوراس آسان کی تغییر جو کہ شریعت سے عبارت ہاں طرح واقع ہوئی ہے کہ جبال بھی مکلفین اس کے نقاضے کے پابند ہوں ان ہے اجھے اعمال قبولیت کے مقام تک پہنچ جا کیں اور اس طرف سے وہ قبولیت رحمت و ہدایت کی صورت پکڑ کر بارش کی طرح بر ہے جا کیں اور اس طرف سے وہ قبولیت رحمت و ہدایت کی صورت پکڑ کر بارش کی طرح بر ہے جیسا کہ بخارات جو کہ زمین سے اُٹھتے ہیں اور آسان پر جا کر پانی کی شکل اختیار کر کے واپس لوٹے ہیں اور گھیتی کے سرسبز اور شاداب ہونے کا ذریعہ بنتے ہیں۔

والأذف وماطعها اور جھے زمین كافتم اور اس حكمت الى كاجس نے اسے وسیع اور ان حكمت الى كاجس نے اسے وسیع اور فراخ كر كے بچھا يا ہا اور وہ نفس انسانى كى استعدادكى مثال ہے جو كہ وسعت كى بناء پر خم معرفت بونے كے قابل ہے اور جب عالم حسن میں نفس انسانى كى كوئى هيبه اور نظير جو كہ قابل تعظیم ہواور اس كافتم أشماكى جائے باكی نہیں جاتى خود اس نفس كی فتم أشماكر فرما يا جار ہا قابل تعظیم ہواور اس كی فتم أشماكى جائے باكی نہیں جاتى خود اس نفس كی فتم أشماكر فرما يا جار ہا

و نفس بحصنی کاتم ہے جس میں دو چیزیں ہیں اول کب کمال کی صلاحیت اور دوسری چیز کمال کا بالفعل فقدان کہ ان دو چیزوں کی وجہ سے اسے تخم معرفت کی کاشت میسر آئے اور وہ انسانی نفس ہے اس لیے کہ نفوس ملا نکہ اپنے کمالات بالفعل عاصل رکھتے ہیں انہیں کمال عاصل کرنے کی ضرورت نہیں اور انفوس حیوانی کمب کمال کی صلاحیت نہیں رکھتے لئیں کمال عاصل کرنے کی ضرورت نہیں اور اس نکتے کے لیےنفس کو کرہ لایا گیا تا کہ نفوس کی انواع میں صحافہ کی کاشت ممکن نہیں اور اس نکتے کے لیےنفس کو کرہ لایا گیا تا کہ نفوس کی انواع میں سے ایک نوع پر دلالت کرے۔ بخلاف دوسری قسموں کے کہ انہیں معرف لایا گیا ہے اس میں نوع کے متعدد ہونے کا تصور کیا ہے اس میں نوع کے متعدد ہونے کا تصور شین ہے کو نکہ آئی بابتا ہے، آ سمان اور زمین فر دواحد میں مخصر کمیات ہیں اور دن رات نہیں ہے کو نکہ آئی بابتا ہے، آ سمان اور زمین فر دواحد میں مخصر کمیات ہیں اور دن رات گرچ عقلی استدلال کے مطابق متعدد معلوم ہوتے ہیں لیکن عرف کی تحقیق ان کے اعادہ اور

بكراركاتكم دين ب متعدد مونے پريفين تبيل كرتى -

وَمَاسَوَّاهَا اور مجھے اس حکمتِ الہی کی تتم ہے جس نے اس نفس کو درست بنایا ہے اور اسے مزاج کا اعتدال ظاہری باطن حواس طبعی حیوانی اور نفسانی تو تیس سب کچھ عطا فرمایا تاکہ پڑھانے اور سمجھانے کے لائق ہوجائے اور مشقت طلب اعمال صبر اور ثابت قدمی کا متحمل ہواور ان آلات کے ساتھ تخم معرفت کی کاشت کرسکے۔

اوربعض مفسرین نے فس انسانی کے سواان چیقسموں کی تخصیص کی وجہ میں ہوں ذکر کیا ہے کہ اللہ تعالیٰ کو اس سورۃ میں نفس انسانی کا حال اور فجور وتقویٰ کے البام کو قبول کرنے میں اس کا اختلاف بیان کرنا اور اس کی وسعت اور فراخی کا ذکر کرنا منظور ہے تا کہ قوت عملیہ کے مطابق تمام جہان کا نمونہ بن جائے اور سارا جہان اپنے ظلی وجود کے ساتھ اس میں نہ سائے اور اپنی قوت عملیہ کے مطابق حضرت رہو بیت کا ظیفہ ہوکہ مخلوقات میں سے ہر چیز کو ایک کام میں مصروف کر دے اور کاری گروں کو کامل کرنے اور ذرات عالم میں سپرد کیے گئے منافع اور مصالے کو پورے طور پر حاصل کرنے کا قصد کرے۔ پس ابتدائے کلام میں چھ چیز وں کو قتم کے طور پر یاوفر مایا گیا کہ وہ چھ چیز یں اطلاق اور وسعت کے عموم میں حضرت الو بیت کا نمونہ ہیں۔

اجمال كي تفصيل

اس اجمال کی تفصیل یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے دو چیزوں کو جہان میں وہ وسعت اور فراخی عطافر مائی ہے جو کسی چیز کو حاصل نہیں۔ ایک زمان دوسرا مکان لیکن وسعتِ مکان کا رنگ اور ہے اور وسعتِ زمان کا رنگ جدا۔ مکان نے عرش سے لے کر فرش تک آن واحد میں بے ثار مخلوقات کو پکڑر رکھا ہے اور اپنے اندر جگہ دی جہے اور وہ خود ایک ہی وضع پر ثابت ہے اور اس کے اندر کی چیزیں گزر رہی جی ایک چلا جاتا ہے اس کی جگہ دوسرا آجاتا ہے۔ اور زمان کا عموم اس طرح ہے کہ خود گزر رہا ہے جبکہ اس کی جگہ دوسرا آجاتا ہے۔ اس کا ہر کھ اور مرائخ نہیں اور اس بے ثباتی کے باوجود اپنے اندر موجود بے اس کا ہر کھ اور ور کو جود این اندر موجود بے صدوحیا بین ورائ کے ہوئے جیں۔ عموم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے صدوحیا بیزوں کو محیط اور قابو کیے ہوئے جیں۔ عموم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں قسموں کو یاد دِلانے کے سے معرم کی ان دونوں تسموں کو یاد دِلانے کے سے معرف کی ایک دونوں تسموں کو یاد دِلانے کے سے معرف کی سے معرف کے معرف کی سے معرف کی س

لیے آسان اور زمین کو جو کہ عمدہ مکانات میں سے ہیں ذکر فرمایا گیا ہے اور دن رات کو جو کہ روبدل کی مت مختر ہونے کے باوجود کھلا اختلاف اور واضح اختیاز رکھتے ہیں زمان کے اجزا میں سے لایا گیا اور یہاں انوار کا فیض دینے میں عموم اطلاق کی ایک فتم ہے جو کہ ذلیل اور عرب خی اور فقیر مسلمان اور کا فرز نیک اور بد کے درمیان فرق کے بغیر واقع ہے اور وہ در بارِ انو ہیت سے وجود اور نوعی صورتوں کے لواز مات کا فیض دینے کے ساتھ پوری مشابہت رکھتی الوہیت سے وجود اور نوعی صورتوں کے لواز مات کا فیض دینے کے ساتھ پوری مشابہت رکھتی ہے۔ آفاب اور ماہتاب کو ذکر کر کے اس قتم کی مہک سمجھ دار لوگوں کے مشام تک پہنچائی گئی

باتی رہ گئی ہے بات کہ عموم کی ان نیزوں قسموں میں دو دو چیزوں کی قسم کیوں اُٹھائی گئی ہے اس کا جواب ہے ہے کہ عموم کا فائدہ دینے کے باوجود کمال ونقصان' نورانیت وظلمت اور اصلیت و تبعیت کا اختلاف بھی منظور ہے تا کہ ان صفات میں عموم تصرف کے باوجود نفوس انسانی کے اختلاف کا بھی پند دیا جائے اس مقصد کے لیے ضروری ہوا کہ نیزوں قسموں میں دو دو چیزوں کا ذکر کیا جائے ۔ عالم انوار میں آ فاب اصل ہے اور ماہتاب ظل' اجزائے زمان میں سے دن روش ہے اور رات تاریک اور آسان او نچا اور محیط اور زمین پست اور محاط ہے جب نفس انسانی کے عموم کو ان چیزوں کے عموم کر قیاس کریں تو اس کی دور کی بھی ظاہر ہو جائے۔ چنا نچے فرمایا جارہا ہے

فَالْهَمَهَا فُجُوْدَهَا لِي اس نفس كواس كى بدكارى كا البام كيا ورافت ميں البام كى وركت شخص كے حلق ميں كھانا ڈالنا ہے اس كے بغير كه اس شخص كى طرف سے دائوں كى حركت واقع ہو كى چيز كے متعلق كہا جاتا ہے البمت اے انتلاء ميں نے اے نگل ليا۔ البمہ ليعنى اس نے اسے نگل ليا اور قرآن پاك كے عرف ميں كى سابقہ غور وفكر كے بغير كى كے دل ميں كى كا م كى خواہش ليا اور قرآن پاك كے عرف ميں كى سابقہ غور وفكر كے بغير كى كے دل ميں كى كا كام كى خواہش ڈالنے سے عبارت ہے۔ اور چونكہ بنى آ دم كے البحص كر سے سا المال خواہش اور ارادہ كے ساتھ خواہش اور ارادہ كے تابع ہيں پس نيك وبدكى الميت اى خواہش اور ارادے كے ساتھ وابستہ ہے اور اس الميت كو اپنے تينے ميں ركھا كيا ہے اور كى دوسر سے پر جيسے نفس شيطان مشيروں اور مصاحبوں پر نہيں چھوڑا گيا۔ ہال ہے چيز ہی عالم غيب سے نيك و بدكى خواہش مشيروں اور مصاحبوں پر نہيں چھوڑا گيا۔ ہال ہے چيز ہی عالم غيب سے نيك و بدكى خواہش

کے فضان کا سبب تیار کرنے والی ہو جاتی ہیں اور ای وجہ سے لوگ عمّاب اور طامت کا کل بختے ہیں اور حدیث سے میں وارد ہے کہ ان قلوب بنی آدم بین اصبعین من اصابع الرحین یقلیها کیف یشآء لین نی آدم کے دل قدرت کی دوالگیوں کے درمیان ہیں انہیں جس طرف جائے پھیردیتا ہے۔

ايك شبداوراس كاجواب

اگریہاں کی کے دل میں شبہ گزرے کہ جب نیکی اور بدی کی خواہش ڈالتا اس طرف سے ہوئی۔ اور جزا دیے 'فیجت کرنے' ڈرانے اور جزا دیے 'فیجت کرنے' ڈرانے اور رغبت دِلانے کا سب پروگرام دگرگوں ہوگیا اور انبیاء میہم السلام کو بھیجنا' کتابیں نازل کرنا' قیامت قائم کرنے' حشر نشر' سوال اور حساب سب کا فائدہ ختم ہوگیا؟

اس کا جواب ہے کہ جراس صورت میں لازم آتا ہے کہ درمیان میں ارادہ اور افتیار نہ ہواور جہاں جو کچھ بھی کرایا جاتا ہے اس مخص کے ارادہ و افتیار سے کرایا جاتا ہے تو جر کول لازم آئے؟ ہرکی کے لیے اپنے اجھے مُرے اعمال میں جو کہ وہ اپنے ارادے اور افتیار سے کرتا ہے اور جماوات کی حرکات میں جینے پانی کا جہنا 'پھر کا گرنا فرق بالکل فلا ہر ہے۔ جریتے ہے نہ کہ وہ اور جزادیے اور دومرے نہ کورہ امور کے لیے افتیار کا پایا جانا کافی ہے نہ یہ کہ افتیار بھی اپنے ہاتھ میں ہواور جریوں ہونے نے دومری جگہ سے تیام اور جود پایا ہے قداس کا افتیار کول اپنے ہاتی میں ہواور جریوں اپنے ہاتی سے مرکا کیونگہ صفت کا مرتبہ موصوف سے کم ہوتا وجود پایا ہے قداس کا افتیار کول اپنے ہاتی سے مرکا کیونگہ صفت کا مرتبہ موصوف سے کم ہوتا

فبور کامعنی

اور فجور کامعنی ہے کہ آدمی کو تین تو تیں دن گئی ہیں۔ قوت عقل جس کے ساتھ اجھے کہ کے پیچانتا ہے قوت شہوی جس کے ساتھ چیز وں میں رغبت کرتا ہے اور مزاحت کرنے کو حاصل کرتا ہے اور توت عفی جس کے ساتھ مخالفت کرنے والے اور مزاحت کرنے والے کو دوکرا ہے جب بید دونوں تو تیں لیمن شہوی اور عفیی قوت عقلی کے تابع ہو جا کیں اور اس کی رہنمائی سے باہر نہ تکلیں اور وہ رغبت اور نفرت میں سے جس چیز کا تھم دے بجالا کیں اس کی رہنمائی سے باہر نہ تکلیں اور وہ رغبت اور نفرت میں سے جس چیز کا تھم دے بجالا کیں اس کی رہنمائی سے باہر نہ تکلیں اور وہ رغبت اور نفرت میں سے جس چیز کا تھم دے بجالا کیں اس کی رہنمائی سے باہر نہ تکلیں اور وہ رغبت اور نفرت میں سے جس چیز کا تھم دے بجالا کیں اس کی رہنمائی سے باہر نہ تکلیں اور وہ رغبت اور نفرت میں سے جس چیز کا تھم

اور جس کے ساتھ کیے جنگ کریں اور مقابلہ کریں اور اس قوت عقلی کونور شریعت کے ساتھ منور اور انبیاء ملیم انسلام کی ہدایت کے ساتھ مزیں کرے اور نیکی کوئیکی اور بُرائی کو بُرائی سمجھ کران دونوں تو توں کو کام میں لگا دے تو اسے تقویٰ کا مقام حاصل ہو۔

اور اگر معاذ اللہ توت عظی نور شریعت کے ساتھ منور نہ ہوئی اور اس نے نیک کو کر ااور کر کے دنوں توتوں پر کر نیک گران کیا یا نور شریعت کے ساتھ منور ہونے کے باوجود اس کا تھم دونوں توتوں پر جاری نہ ہوا اور ان دونوں قوتوں نے اس کی صوابد ید پڑمل نہ کیا بلکہ اے اپنا تابع کے جس چیز میں جاہا' رغبت کی اور جس سے جاہا' جھڑا کیا تو نجور کا مرتبہ حاصل ہوگیا تو نجور کی حقیقت تو تے شہویہ اور خصبیہ کو توت عقلیہ پر غالب کرنا ہے۔

وَ نَقُوٰهَا اوراس نفس كوتقوى كا الهام كيا اور حقيقت تقوى قوت عقلى كوقوت شهويه اور غصبيه پرغالب كرنا ہے اور جب قسميں ياد كرنے سے فراغت ہوئى تو اس مضمون كو بيان فرمايا جارہا ہے جس كے ليے قسميں اُٹھائى گئى ہيں۔

قد افکح مَنْ ذَکْهَا تحقیق اس نے چھکارا پایا جس نے اس نفس کو پاک کیا اور نفس کو پاک کیا اور نفس کو پاک کرنا ای طریعے ہے ہے کہ قوتِ شہویہ اور غطبیہ کو عقل کے تابع کر دے اور عقل کو شرع کے تابع کر دے تاکہ روح اور قلب جملی الہی کے نور سے روشن ہوں اور اس شخص کا مرتبہ فرشتوں کے مرتبہ سے بلند تر ہے اس لیے کہ فرشتے صرف قوتِ عقلیہ رکھتے ہیں نہ قوت شہویہ اور نہ ہی قوت عقلیہ جبکہ اس شخص نے قوت شہویہ اور غصبیہ کو نیچا کر کے نور شرع کو تابع ہو کہ فرشتوں کو میسر نہیں ہے۔ نیز سے روشن عقل کا خادم بن مجاہدے کا وہ مقام حاصل کرلیا جو کہ فرشتوں کو میسر نہیں ہے۔ نیز میں کے ابعہ ہو کہ ذوق شوق غیرت الہی اور وشمنان میں سے دین سے لڑائی کرنے کے ایسے عجیب حالات بروے کار لاتے ہیں کہ فرشتوں کو ان میں سے کہتے بھی حاصل نہیں۔

اور تزکیر نفس کے بارے میں اصحابِ طریقت نے رسائے اور کتابیں تالیف کی ہیں جیسے توت القلوب احیاء العلوم تعرف عوارف اور اس فن کی دوسری کتابیں ۔لیکن قرآن پاک جیسے توت القلوب احیاء العلوم تعرف عرف الرام کا لفظ ذکر ہے جو پچھ معلوم ہوتا ہے ۔ یہ ہے کہ ہیں (۲۰) آیات میں بعض اجھے اعمال پر فلاح کا لفظ ذکر

کیا گیا ہے اور اس آیت میں فلاح کو تزکیہ کے ساتھ مربوط کیا گیا ہے۔ پس اس اشار سے کے مطابق ان اعمال کو بجالا نا تزکیۂ نفس کے لیے کافی ہے اور در حقیقت اہل طریقت کے رسائل اور کتابیں ان بیں (۲۰) آیات کی شرع اور تفصیل ہیں۔ وہ آیات سور وُ بقرہ اور سور وُ مور وُ بقرہ اور دوسری سورتوں میں پھیلی ہوئی ہیں۔ مومنون کے اقرائل میں اور سور وُ روم سور وُ تو بہ اور دوسری سورتوں میں پھیلی ہوئی ہیں۔

وقد خاب من من من من اور خین وہ زیاں کاراور محروم رہا جس نے اس نفس کو گمنام کر دیا اور نفس کو گمنام کر دیا اور نفس کو گمنام کر دیا اور نفس کو گمنام کر نا ہیہ ہے کہ اس پر جمل اللی کے نور کی چمک نہ پڑے اور بیصورت شہوت اور خضب کے تقاضوں کو نور شرح سے روش عقل کے تقاضوں پر ترجیح دینے کی وجہ سے حاصل ہوتی ہے۔ اور جب وہ اس نور سے محروم رہا تو اس کا مرتبہ حیوانات کے مرتبہ سے مطاسل ہوتی ہے۔ اور جب وہ اس نور کو حاصل کرنے کے اسباب نہ تھے جبکہ اس شخص گھٹ گیا اس لیے کہ حیوانات میں اس نور کو حاصل کرنے کے اسباب نہ تھے جبکہ اس شخص کے پاس سارے اسباب موجود تھے اور اس نے اسباب کے باوجود اسے حاصل نہ کیا بلکہ جب میں پڑگیا جس کا اُنھانا دشوار نہیں۔

اور چونکہ وام الناس کے زدیک شہوت وغضب کوعقل اور شرع کے تقاضوں پر غالب کرنا عامرادی اور محروئی کا موجب نہیں ہے بلکہ اس سم کے مواقع پر جرائت کرنالذ تیں حاصل کرنے میں کامیابی کا سبب شار کرتے ہیں اور نام اور مرتبہ حاصل کرنے کے لیے مضبوط سبب تجھتے ہیں اور ای لیے کہا گیا ہے کہ معن داقب الناس مات حما و فاذ باللذات سبب تجھتے ہیں اور ای لیے کہا گیا ہے کہ معن داقب الناس مات حما و فاذ باللذات العجود لینی جولوگوں کی تمہبانی کرئے بخار سے مرتا ہے اور خوش رہنے والا لذتیں حاصل کرنے میں کامیاب ہوتا ہے۔ نیز کہتے ہیں کہ الرذق یعطی باب عاقل قومہ ویسبت ہو ابالمباب الاحمق لیمی رزق قوم کے عقل مند کا دروازہ بحول جاتا ہے جبکہ احق کے دروازے پر پہرے دار بن کر دات گزارتا ہے۔ اس بناء پر ضروری ہوا کہ قد خاب کے دروازے پر پہرے دار بن کر دات گزارتا ہے۔ اس بناء پر ضروری ہوا کہ قد خاب میں مثال اور گوائی لانے کے طریقے سے ایک واقعہ بیان کیا جائے تا کہ اس واقعہ سے واضح ہو جائے کہ شہوت اور غضب کوعقل و شرع پر غالب کرنا رفتہ رفت تا کہ اس واقعہ سے واضح ہو جائے کہ شہوت اور غضب کوعقل و شرع پر غالب کرنا رفتہ رفت دین کی شکنہ یب اور انکار تک لے جاتا ہے اور ابدی ہلاکت کا سب ہوتا ہے بلکہ بعض اوقات دینوی ہلاکت بھی اس کا نتیجہ ہوتا ہے اب اس واقعہ کی طرف اشارہ فر مایا جا رہا ہے۔

کُذَبَتُ ثَنُودُ بِطَعْفُواهَا شمود نے اپنی سرکٹی کی وجہ سے جو کہ شہوت وغضب کوشرع و عقل کے علم پر ترجیح و سینے سے عبارت ہے نبی علیہ السلام اور حکم الہی کا انکار کیا اور بیرترجیح ان کے حق میں انکار اور تکذیب کا سبب ہوئی۔

لفظ طغوى ميں اشكال اور اس كا جواب

اور لفظ طغوی میں ایک مشیع انجمن ہاس لیے کہ بیط فیان ہے مشتق ہے۔ پس چاہی کو اف کے ساتھ میں ایک بدلا گیا۔ علاء نے اس انجمن کے جواب میں لکھا ہے کہ فعلی ہو۔ یا کو واؤ کے ساتھ میں بدلا گیا۔ علاء نے اس انجمن کے جواب میں لکھا ہے کہ فعلی بھی اسم ہوتا ہے اور بھی صفی ۔ اسم اور صفت میں فرق کرنے کے لیے اسم میں یا کو واؤ سے بدل دیتے ہیں اور صفت اپنی اصل پر رہتی ہے۔ چنا نچہ کہتے ہیں امر ء ق صدیا وخذ یا لیمنی ایک ورت ہے تشنہ اور رسوا۔

ثمود كانعارف

اور خمود حضرت نوح علیه السلام کی اولا و سے ایک خفس کا نام ہے جو کہ عامر بن ارم بن سام بن نوح عليه السلام كابياب اور چوتني پشت مي حصوب نوح عليه السلام تك پېنچا ب اس مخض کی اولا د فرقهٔ عاد کی ہلا کت کے بعد عرب کے علاقوں میں پھیل منی اور قابض ہوگئ اوران کا وطن شام اور تجاز کے درمیان تھا جوشہر انہوں نے شام کی طرف بنایاس کا نام جربے اور جو حجاز کی طرف بنایا اس کا نام وادی الغری ہے۔ ان دونوں شہروں کے درمیان بستیوں اور قصبول ہے سترہ سو (۲۰۰۰) آبادیاں ان کے قبضے میں تھیں اور انہوں نے ہر جگہ پھر کے او نے محلات تغیر کرر کھے تھے کاشت کاری کرتے تھے چشے کھودتے البتدان کی زمین میں یانی کم تھا' پھریلی زمین ہونے کی وجہ ہے کنویں اور چشمے بروی مشکل سے کھودے جاتے تھے اکثر اوقات اینے مال بہاڑوں میں عمارتیں بنانے باغ لگانے نہریں جشمے اور کنویں کھودنے میں خرج کرتے۔ یہاں تک کہ ان کے سنگ تراش اور کاری گریہاڑوں پر منقش عمارات تراشتے وفت رفتہ پھروں ہے عجیب وغریب مورتیاں تراش کران میں مورتیوں کو یو جنے کا رواج ہو گیا اور بت پری پھیل گئی۔ اور حضرت حق جل شانہ ہے بالکل بے خبر اور غافل ہو گئے۔اللہ تعالیٰ کی ہدایت نے حضرت صابح بن عبید کو بجن لیا جو کہ شکل اور حسن کے اعتبار martat.com

ہے بھی ان میں ہے متاز اور جدا تھے اور حسب ونسب کے اعتبار ہے بھی اور بچینے ہے ہی آ پ ہے ہدایت اور صلاحیت کے آثار طاہر ہونا شروع ہو گئے یہاں تک وی اللی پنجی اور حکم ہوا کہ اپنی قوم کو بنوں کی بوجا ہے منع کریں اور انہیں اللہ تعالیٰ کی عبادت میں معروف کریں۔ اور ان تک اللہ تعالیٰ کے عبادت میں ماصل کریں۔ اور ان تک اللہ تعالیٰ کے احکام پنجا کیں اور سمجھا کیں کہ بیتمام نعتیں جو تہمیں حاصل ہیں اللہ تعالیٰ کی طرف ہے ہیں ان نعتوں کا شکر اوا کرواور سرکھی اور تکبر مت کرو۔

حضرت صالح عليه السلام نے تھم اللي كالعيل ميں انہيں دين كى طرف بلانے كاكام شروع فرما دیا۔انہوں نے بالکل قبول نہ کیا اور حضرت صالح علیہ السلام ہے معجزہ طلب کیا۔ آب نے فرمایا کہ اگر میں تنہارے سامنے مجزہ ظاہر کردوں اور تم مجھ پرایمان نہ لاؤ تو سب کے سب عذاب خداوندی میں گرفتار ہوجاؤ کے۔انہوں ن اس بات پر یفین نہ کیا اور کہنے کے کہ ہم سال میں فلاں روز شہرے باہر آتے ہیں اور اپنے بنوں کو بھی مکلف پیشاک اور مرضع زیورے آراستہ کرکے ظاہر کرتے ہیں۔ آپ بھی ہمارے ہمراہ چلیں۔ ہم اینے بنول ے سارے سال کی ضرور تمیں اس روز طلب کرتے ہیں۔ وہ ہمیں دیتے ہیں۔ آپ ہمی اینے خدا ہے کوئی حاجت طلب کریں۔ہم دیکھیں گے کہ آپ کا خدا کیا دیتا ہے۔حضرت صالح عليه السلام نے قبول فرماليا اور ان كے همراه باہرتشريف لائے اور ووقليل مي جماعت كاوك جوآب برايمان لائے تنے آپ كے يتھے ہو ليے۔ جب عيد كاه ينيخ ديكما كه بنول کو بورے تکلف اور آ رائش کے ساتھ تختوں پر رکھ کر انہیں سامنے رکھا ہوا ہے اور بوری عاجزی اور ادب کے ساتھ ان کے سامنے کھڑے ہو کر اپنی ماجنٹی چیش کر رہے ہیں۔ حعرت مه الح عليه السلام في فرما يا كرتم اسين بنول سے عادت كے خلاف چيز ما كوتا كه مي و پھوں کہ ان میں کیا طاقت ہے؟ انہوں نے اپنے بنول سے خلاف عادت چیزیں مانگمنا شروع كردي اور صدي زياده آه وفغال كي مطلے بياڑنے كيسوا انبيس كوكى فاكده ندلاجب عاجر ہو مھے تو حضرت مسالح علیہ السلام نے فرمایا کہتم جو کہو عمل اسینے خداتعالی سے مامکوں اس کی قدرت کا تماشا کرو۔ان کے بوے لیڈر نے جس کا نام جندع بن عمروتھا' دوسروں ے کہا کدائیں اسی بات کہوجو کے عقل کی نظر میں محال ہواور یہ ایبا کرنے سے عاجز ہوتا کہ marfat.com

ہارے بنوں کی عزت اور آبر و برقرار رہے ورنہ نمیں خفت ہوگی اورالزام آئے گا۔ حضرت صالح علیہ السلام کی اونمنی کا واقعہ

سب نے کہا کہ تو ہمارا سردار ہے اور مجھے عقل و دانش میں برتری حاصل ہے سوج کر الیی چیز کی فرمائش کر کہ میہ عاجز ہو جائیں اور ایبا نہ کرسکیں۔ جندع نے حضرت صالح علیہ السلام سے کہا کہ آپ پہاڑ کے اس نیلے سے جو کہ عیدگاہ کے سامنے ہے اور اسے ان کے عرف میں کا ثیہ کہتے تھے ہمارے لیے اونٹی نکالیں جس کی پیٹانی سیاہ اور باقی جسم سفید ہوا اس کے بال کیے ہوں رہیم سے پُر ہواور دس ماہ کی امید سے ہواس کاجسم اس قدر بروا ہو کہ لوگول کے دیکھنے میں اس پہاڑی ٹیلے کے برابرمعلوم ہو باہر آنے کے بعد ہمارے سامنے بچہ جنے جو کہ شکل ور اور جنے کے برا ہونے میں اس کے برابر ہو۔حضرت صالح علیہ السلام نے فرمایا کہ اگر میں اس متم کی اونٹی اس بہاڑی شلے سے باہر نکال لوں تو کیاتم ایمان لاؤ کے اور اللہ تعالیٰ کے دین کی بیروی کرو گے؟ سب بولے کہ ہاں! حضرت صالح علیہ السلام ان سے تاکیدی عبدو پیان اورمضبوط قول وقرار لے کر اورمسلمانوں کوایے ہمراہ لے کراس بہاڑی شیلے کے یاس تشریف کے سے محت وورکعت نماز اوا فرمائی اور بارگاہ خداوندی میں وعا میں مصروف ہو مجئے اور آپ نے مسلمانوں سے فرمایا کہ میرے پیچھے کھڑے ہو کر آمین آمین کہتے رہواور فرقۂ محمود کے سردار اپنی افواج اور سیابیوں سمیت ان کے اردگرد دائرہ باندھے دیکھ رہے تھے کہ کیا ہوتا ہے۔

پر گر بڑا اور اپنج جرموں کی معافی کی درخواست کے۔ دوسرے سرداروں نے نفس کی شامت کی وجہ سے انکار پراصرار کیا۔ اور انہوں نے اپنج بیروکاروں کو گمراہ کرنا شروع کر دیا کہ تم اس جادو پر فریفتہ نہ ہوتا' اپنج دین و فد بہب پر قائم رہو کہ بیامتحان کا وقت ہے' ان بد بختوں نے اپنج سرداروں کے گمراہ کرنے کی وجہ سے پھر کفریہ کلمات بجنے شردع کردیئے اور حضرت صالح علیہ السلام نے فر مایا کہ اب تم اور حضرت صالح علیہ السلام نے فر مایا کہ اب تم نے عہد کی خلاف ورزی کی ہے اور جھ پر ایمان نبیس لائے ہو۔ لیکن اس اونٹی اور اس کے نہو پوری تعظیم کے ساتھ اپنے پاس رکھو اور اسے کسی طرح بھی تکلیف نہ دینا کیونکہ نہرارے امن وامان کا باعث ہے جب تک یہ اور اس کا بچ تمہارے درمیان رہیں تم پر عذاب نبیس آئے گا۔

(اتول و بالله التوفيق معلوم ہوا کہ الل اللہ کے جانوروں کی تعظیم نبوت کی تعلیمات کا حصہ ہے۔ نیز یہ جانور عذاب خداوندی سے حفاظت کا ذریعہ ہیں۔ انداز و کیجیے کہ جن کے جانور قابل تعظیم اور دافع البلاء ہوں ان مقربین بارگاہ خداوندی کی تعظیم کس قدر مطلوب و مقصود ہونی چا ہے اور خودان کے دافع البلاء ہونے میں کیا شک باقی رہا۔ اور پھرسید عالم نور مجسم ملی اللہ علیہ وسلم کی عظمت کا کیا عالم ہوگا؟ ولنعم ماقیل۔

شرک تغیم حبیب اس می تغلیم حبیب اس کے اس ک

(محم محفوظ الحق عفرله)

اس معجزه کی شخصیص میں نکته

یہاں جانا چاہے کہ اس فرقے کے لیے اس مجزے کی تخصیص میں کھتہ یہ تھا کہ وہ لوگ سٹک تراثی میں تصویر کی ہیری باریکیاں پیدا کرتے تھے اور سحرکاری کرتے تھے۔ پس یہ مجزہ ظاہر کرنے میں انہیں ایک باریک اشارہ کیا گیا ہے کہ اگر چہتم پھروں سے مجیب و غریب تصویریں بناتے ہوئیں ان میں جان نہیں ڈال سکتے ہوئیم پھر سے ایک جان دار کو جو کہ ان ملاقوں کے جانوروں میں سب سے بڑا ہے نکال سکتے ہیں۔ کہ ان علاقوں کے جانوروں میں سب سے بڑا ہے نکال سکتے ہیں۔ سے معالم ملکت میں۔ سے معالم میں۔ سے معالم میں۔ سے معالم ملکت معالم میں۔ سے معالم معالم میں۔ سے معالم معالم

بيت

کافرال از بت بے جال چہتمتع دارید بارے آل بت پر سنید کہ جانے دارد یعنی اے کافرو! بے جان بت سے نفع کی کیا امیدر کھتے ہواس بت کوتو پوجو جس میں جان ہے۔

نیز اس بات کا اشارہ ہوا کہ ہدایت الٰہی پھروں کونرم کر دیق ہے اور اس ہے روح کے اوصاف ظاہر کرتی ہے۔

اونمنى كاباقى واقعداوراس كى خصوصيات

ہم باتی واقعہ بیان کرتے ہیں کہ وہ اونتی اینے جتے میں بہت بڑی اور توی ہیکل تھی۔ چنانچے صحابہ کرام رضی الله عنبم میں سے حصرت ابوموی اشعری رضی الله عندفر ماتے ہیں کہ میں خمود کے شہر جمر میں گیا تھا۔ اس اومٹی مصیفے کی جگہ کی جو کہ ان علاقوں میں معروف اور مشہور ہے اور وہ اس کی زیارت کرتے ہیں میں نے اینے ہاتھ سے پیائش کی اس کا تھیرا ساٹھ (۲۰) گزیا ساٹھ (۲۰) ہاتھ تھا اور اس اذمنی کی خاصیت بیٹھی کہ کمریلو اور وحثی تمام جانوراے دیکھتے ہی بھاگ جاتے تھے اور وہ جس جنگل میں چرتی تھی کوئی دوسرا جانور قدم نبیں رکھ سکتا تھا اور وہ جس کنویں اور چیٹے پر پہنچ جاتی تھی سب کا سب کی جاتی اور چرا گاہ کو مجمی حارے سے خالی کر دیتی تھی۔شام کے وقت شہر میں آ جاتی 'شہر کے لوگ اس کے وووھ ے اپنے برتن بحر لیتے اور بورے شہر والوں کواس کا دودھ کافی ہوتا۔ جب ایک مدت گزرگی مویشیوں اور جانوروں والے اس کی سیر اور گردش سے عاجز آ مجے۔حضرت صالح علیہ السلام كے حضور فريادى موسئے۔آب نے يوں مطفر مايا كمايك دن تم لوگ اسينے جانوروں کوچراگاہ میں چیوڑ دیا کرواور ہم اس اونٹی کو کھر میں روک لیس سے اور ایک دن ہم اس اونٹی کوچھوڑ دیا کریں کے اورتم لوگ اینے جانوروں کو کھروں میں روک لیا کرو۔ایک مدت تک اس قول وقرار برعمل موتار مالیکن اکثر شهر دالول کو جو که مویشیوں اور جانوروں کی پرورش کا

شون رکھتے تھے کہ تقدیم بھی ناکوار مہوئی۔ marfat.com Marfat.com

وہ دل میں جائے تھے کہ اس اوغنی کو کسی حیلے ہے دُور کر دینا جا ہے تا کہ ہمارے جانور بافراغت یانی پیکس اور چرا گاہ میں چریں۔لیکن عہد تھنی اور قول وقر ارکی خلاف ورزی سے گریز کرتے تھے۔ای اثناء میں ان میں سے ایک نوجوان قذار بن سالف نامی شوخ آ دمی موتی گردن والا مٹاکٹا کا ال کوستانے والا باب سے بےزار تیز زبان اور بے حیا پیدا ہوا اور اسے غزہ نامی ایک فاحشہ عورت کے ساتھ عشق ہو گیا جو کہ حسن و جمال باہمی تفتیکو کی خوبی ہ ظرافت طبع اور نزاکت میں اس ملک میں ضرب المثل تھی اور وہ اسینے دوستوں میں سے آٹھ افراد کے ساتھ جو کہ اس وضع کے لوگ منے ان میں سے ایک کا نام مصدع بن واہر تھا جو کہ اس کا پچازاد بھائی تھا اس فاحشہ عورت کے کمر جاتا اور دادیش دیتا اور اس کے دوسرے دوست بھی شرابیں بی کراس فاحشہ کی لونڈیوں کے ساتھدروسیا بی کرتے۔ایک دن اس قذار نامی نوجوان نے اس قاحشہ سے کہا کہ ہم کب تک میہ چوری کی محفلیں جاری رکھیں سے تو میرے نکاح میں کیوں نہیں آ جاتی تا کہ عمر دراز اطمینان کے ساتھ گزاری جائے اس نے کہا كديخياس كام كاشوق بي توميرى ايك فرمائش يورى كرتومس اين تمام اموال اوركنيرون سمیت تیری ہو کے رہول کی اور وہ فرمائش ہے ہے کہ بیدادتی جس کے وجود سے جمیں اور بمارے سب شمروالوں کورنے اور ملال ہے اور بے زبان جانور بھوک اور بیاس مس گرفتار ہیں منل كرد اورخم كرد اورال فاحشر كم بهت مدوثي تصال وجهاات اوتنی سے بہت رہے اور دُ کوتھا۔

قد ارف انہائی ردی خواہش کی بناہ پر میم ہمرانجام دینے کی ذمدداری تبول کرئی اور
اس کام کے بیچے لگ گیا اور اپنے دوستوں کو بھی اس میں اپنا شریک بنالیا حی کہ ایک دن
ایک تک کو ہے میں جو کہ او تی کی ررگاہ تھی اس کی راہ میں چھپ کر بیٹے گیا اور اپنے دوست
میں اس کو ہے میں پھیلا دیئے جب او تی چراگاہ ہے دائی ہوئی اور اس کو ہے میں داخل
ہوئی مصدع نے پہلے ایک تیر اس کی چیٹانی پر مارا اور سات دوسرے آ دمی کو ارس لہراتے
ہوئے نعرے لگاتے ہوئے او تی پر حملہ آ در ہوئے۔ او تی تیم کا زخم برداشت کرنے کے
باوجودان پر حملہ کرتی تھی اور وہ منتشر و جاتے ہے اور قدار نے بیچے ہے بی کراس او تی پر

حملہ کیا اور کونچیں کا ف دیں۔ او خن زمین پر گر بڑی اس کے بعد اس کے ساتھیوں نے او خنی کو مملہ کیا اور کھڑے کر دیا۔ شہر والوں کو او خنی کے مارے جانے ہے خوشی ہوئی اس کا موشت تقتیم کر کے کھروں کو لے مسلے اس او خنی کا بچہ جو کہ بیجھے تھا جب اس نے دیکھا کہ اس کا موشت تقتیم کر کے کھروں کو لے مسلے اس او خنی کا بچہ جو کہ بیجھے تھا جب اس نے دیکھا کہ اس کی ماں کوئل کررہے ہیں بھا کے کرای بہاڑی ٹیلے پر جا کھڑا ہوا۔

جب حضرت صالح علیہ السلام کو یہ خبر کینی آپ افسوں کرتے ہوئے باہر تشریف لائے اور شہر کے لوگوں سے فرمایا کہ تم نے یہ کیا کیا؟ اپنے او پرعذاب فداوندی کو نازل کرلیا اب تدبیر یہ ہے کہ شہر سے ساتھ آ و اور اس کے بچے کو شہر شی لاؤ تا کہ اس بچے کے وسلے سے عذاب سے نکح جاؤ۔ قذار اور دوسرے کفار نے اس بات پرکوئی توجہ نہ دی اور اسے آسان سجھا اور مسلمان حضرت صالح علیہ السلام کے ہمراہ بچے کولانے کے لیے صحوا میں گئے جب اس بچے نے حضرت صالح علیہ السلام کو دیکھا ، تین آ وازیں کیں پہاڑی ٹیلہ بھٹ گیا اور وہ اس میں ساگیا۔ حضرت صالح علیہ السلام افسوس کرتے ہوئے واپس تشریف لے آئے اور وہ اس میں ساگیا۔ حضرت صالح علیہ السلام افسوس کرتے ہوئے واپس تشریف لے آئے اور آپ نے شہر والوں سے فرمایا کہ ان تمن آ وازوں کی تعبیر یہ ہے کہ تبہیں تمن دن کی مہلت ہے۔ پہلے دن تمہارے چیرے ذرو و مرے دن سرخ اور تیسرے دن سیاہ ہو جا کی مہلت ہے۔ پہلے دن تمہارے چیرے ذرو و مرے دن سرخ اور تیسرے دن سیاہ ہو جا کی گیا ور یہ واقعہ بدھ کے دوزشام کو چیس آ یا تھا۔

حعرت صالح عليه السلام كي قوم كي بلاكت كاواقعه

جعرات کوشمر والے من اُشخ سب کے چرے زرد ہو کچے سے اُٹیل یقین ہو گیا کہ معنرت صالح علیہ السلام نے جو فر مایا ہے برق ہے لیکن اس وقت ان کی قوت عمیہ نے جوش میں آ کرعش کو معزول کر دیا۔ قد ار نے آ ٹھ دوسرے آ دمیوں کے ساتھ ل کر باہم ہم اُٹھا اُل اور کہنے گئے کہ تمن دن گزرنے اور عذاب آنے نے پہلے حضرت صالح (علیہ اُٹھا اُل اور کہنے گئے کہ تمن دن گزرنے اور رات کے وقت یہ فو بد بخت صفرت صالح علیہ السلام کو السلام) کا کام تمام کر دیا جائے اور رات کے وقت یہ فو بد بخت صفرت صالح علیہ السلام کو رمعاذ اللہ اُٹھ کر نے اداوے سے آئے۔ آپ اپنی مجہ می تشریف فرما تھاس میں ایک ورخت تھا اس دوخت نے بلکہ آ واز سے صفرت صالح علیہ السلام کو فرد دی کہ قد ادا ہے ماتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ رہا ہے آپ اپنے کم تشریف نے جاکس ساتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ رہا ہے آپ اپنے کم تشریف نے جاکس ساتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ دہا ہے آپ اپنے کم تشریف نے جاکس ساتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ دہا ہے آپ اپنے کم تشریف نے جاکس ساتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ دہا ہے آپ اپنے کم تشریف نے جاکس ساتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ دہا ہے آپ اپنے کم تشریف نے جاکس سے ساتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ دہا ہے آ ب اپنے کم تشریف نے جاکس ساتھیوں سمیت آپ کی کے اداوے سے آ دہا ہے آ ب اپنے کم تشریف نے جاکس ساتھیوں سمیت آپ کے اداوے سے آ دہا ہے آ ب اپنے کم تشریف نے جاکس سے آ

اور ورواز ہ بند کرلیں۔ چنانچہ آب اپنے دولت کدہ میں تشریف لے گئے اور دروازہ بند کرلیا جب قذار مبحد میں پہنچنا ہے وہاں حضرت صالح علیہ السلام کوئیس پاتا اس نے اور اس کے ساتھیوں نے وروازہ تو ڈر آپ کے دولت کدہ میں وافل ہونے کا ارادہ کیا ای اثنا میں فرشتے حضرت صالح علیہ السلام کی تمایت کے لیے پہنچ جاتے ہیں اور اپنے پر قذار اور اس کے احباب کے منہ پر مارتے ہیں وہ سہے ہوئے اور جیران و پریٹان کرتے پڑتے نا بینے ہو کے درا کیں بائیں بھاگ رہے ہیں کسی کا سردیوار سے ظرایا اور پھٹ کیا بعض کویں میں گردا کیں بائیں بھاگ رہے ہیں کسی کا سردیوار سے ظرایا اور پھٹ کیا بعض کویں میں گر

قصہ مختروہ نوافراد سب کے سب ہلاک ہو محتے جب ان کے وارث مبح اُسطے کیا و کھتے ہیں کہ تمام شہروالوں کے چہرے سرخ ہیں۔ قذار اور اس کے دستوں کی تلاش کرنے ملے جب پت چلا کہ حضرت ممالح علیہ السلام کے تمر کے پڑوی میں سر بھٹے ہوئے ذکیل و رسوا پڑے ہیں تو میسارا ماجر شہر کے سرداروں سے بیان کیا جو کد کا فرقتے اور سب شہر والوں نے آپ کے کھر پر دھاوا بول دیا اور کہنے لگے کہ آپ نے ان نو افراد کو اونٹی کے بدلے رات کوئل کر دیا ہے ہم آپ کو اور آپ کے سب اہلِ خانہ کو قصاص میں قلّ کریں گے۔ حضرت صالح علیدالسلام نے فرمایا کہ میں ان کے محروں میں نہیں گیا انہوں نے رات کے وفت میرے کمریر حملہ کر دیا' انہیں جو مزا کمیٰ غیب سے کمی۔ اس سوال و جواب کے روران جندع بن عمروجو كمشرك سردارول من سے مشرف بداسلام ہو يكے تنے اور حضرت صالح عليه السلام كے معتقد اور مخلص منے بير حالات معلوم كر كے اپنالا وُلككر لے كر معزرت كى حمايت کے لیے نکل آئے اور دوسرے سرداروں کے ساتھ مقابلہ کیا۔ آخرلوکوں نے درمیان میں سلح كرا دى اور بات يون طے ہوئى كەحفرت صالح عليه السلام اس شهرست نكل جائيں۔ آپ اسے غنیمت جانے ہوئے جندع بن عمرواور دوسرے مسلمانوں کوساتھ لے کرشہرے باہر تشریف کے محے اس دن مبح کے وقت جو کہ ہفتے کا دن تھا' تمام شہروالوں کے چہرے سیاہ ہو محت اوراس دن تشویش میں پڑھتے اور تھین اور مضبوط مکانات خالی کر کے اس امر کی تیاری کی کداگرعذاب اللی آسان کی طرف سے یا زمین کی طرف سے آئے تو ان معبوط مکانات marfat.com

تغیر از کرنے کے اس میں نہ تو زلزلہ اثر کرتا ہے اور نہ ہی بارش اور ژالہ باری نقصان بہنے تی ہے۔ بہنچاتی ہے۔

اتواری صبح کو حضرت جرئیل علیہ السلام آسان اور زمین کے درمیان انتہائی بوی اور بیب ناک شکل میں ظاہر ہوئے اور سخت تیز آواز ظاہر کی جس کی وجہ سے پہاڑوں کو جنبش آگئی اور تیز ہوا چلنے لگئ تمام شہر والے ہیبت کے مارے پھر کے مکانوں میں گھس گئے۔ حضرت جرئیل علیہ السلام نے دوسری مرتبہ پہلے کی نسبت زیادہ تیز آواز کی اس آواز کے صدے کی وجہ سے سب لوگ اپ زانوؤں پر رکھے گر پڑے اور ان کے بیت میں گئے اور مرکئے اور ان میں سے کوئی بھی باتی نہ رہا۔

خضرت صالح علیہ السلام نے بیخبر سننے کے بعد مسلمانوں سے فرمایا کہ اس شہر کو چھوڑ
دو جو کہ غضب البی کے نازل ہونے کا مقام ہے اور مکہ معظمہ کے حرم کی نیت سے احرام
باندھ لواور وہیں سکونت اختیار کرو۔ ای بڑعمل کیا گیا اور شیخ حدیث میں وارد ہے کہ تبوک کے
سفر میں جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم حجر شہر کے وروازے سے گزرے تو اپنے صحابہ کرام
رضوان اللہ تعالیٰ علیم اجمعین سے فرمایا کہ چاہیے کہتم میں سے کوئی بھی اس شہر میں داخل نہ
ہواور اس شہر کا پانی نہ چیئے اور اس عذاب پانے والے گروہ پرگز رنہ کرے مگر اس حالت میں
کہ رور ہا ہواور عبرت حاصل کر رہا ہو کیونکہ ان بد بختوں کی روحوں کو اس شہر میں عذاب ہور ہا
تقاجی جگر عذاب اللی ظاہر ہو وہاں سے دُور رہنا بہتر ہے۔

نیز حدیث شریف میں وارد ہے کہ شمود کے کافرول میں سے کوئی بھی یاتی نہ بچا گر ابو
رغال نامی ایک شخص جو کہ کی تقریب کی وجہ سے حرم مکہ میں گیا ہوا تھا جب تک وہ حرم شریف
میں تھا' عذاب سے محفوظ رہا جب حرم شریف سے باہر لکلا اور طائف کی طرف روانہ ہوا تو
راستے میں اسے بھی وہی عذاب پہنچا جو اس کی قوم کو پہنچا تھا۔ چنا نچہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم
طائف کی مہم پر تشریف لے جاتے وقت جب اس کی قبر کے پاس پہنچ اور اس علاقے کی
عادت تھی کہ سب گر رنے والے اس کی قبر کو سنگار کرتے تھے۔ آپ نے صحابہ کرام علیم
عادت تھی کہ سب گر رنے والے اس کی قبر کو سنگار کرتے تھے۔ آپ نے صحابہ کرام علیم
عادت تھی کہ میں گر کہ میں کی قبر کو شاموں نے عرض کی کہ میں کوئی علم

نہیں خدا تعالی اور خداتعالی کے رسول علیہ السلام ہی بہتر جانتے ہیں۔حضور علیہ الصلاۃ والسلام نے ساراواقعة تفصیل کے ساتھ بیان فر مایا۔

ارشادفر مایا کدمیری سچائی کی علامت بیہ کہ اس مخص کے ہمراہ سونے کی ایک چیئری

فرن کی گئی ہے۔ صحابہ کرام بیہ ماجراسُن کر وہاں پہنچ اور اس کی قبر کو اپنی تلواروں کے ساتھ
اُ کھاڑا' وہ سونے کی چیئری برآ مد ہوئی' اُٹھالائے اور اس کی قبر کو چیئر بند کر دیا گیا۔ خمود کا واقعہ
یہ ہے جو کہ ذکر کیا گیا۔ چنا نچہ اس واقعہ کا بعض حصہ دوسری سورتوں بیس تفصیل کے ساتھ
مذکور ہے۔ یہاں حق تعالی نے اشارے کے طور پر اس واقعہ کا پچھ حصہ جو کہ اس مقام کے
مناسب ہے یاد دِلایا ہے اور فر مایا جا رہا ہے کہ شمود کو سرکشی اور شہوت وغضب کو عقل و شرع
کے تقاضے پر غالب کرنے کی وجہ سے احکام اللی کے انکار اور رسول علیہ السلام کی تکذیب

اِذَانْبَعَتَ اَشْقَاهَا جب كهاس گروه كاسب سے برا بد بخت خوش وخرم اُنھا اور اس نے عقل وشرع كے تقاضوں كے خلاف شہوت وغضب كى پيروى كى اور اونمنى كى كونچيں كا ب دي اور حضرت صالح عليه السلام كول كرنے كے در بے جوا اور سب سے برا بد بخت قذار بن سالف تھا۔

قول رسول قول خدا ہے

فقال لقد رسول الله تو انبی الله تعالی کے رسول نے فرمایا جو کہ حضرت صالح علیہ السلام تھے اور جہاں رسول الله کا لفظ اس لیے لا یا حمیا ہے اور حضرت صالح علیہ السلام کا میں لیا حمیا تاکہ بعد چلے کہ حضرت صالح علیہ السلام کا بیکہ تا خدا تعالیٰ کا کہنا تھا اور آ ب کا دُرانا ہے اس لیے کہ کسی کا بھیجا ہوا اس کا تھم رکھتا ہے اور وہ جو کہتا ہے اس کی زبان سے کہتا ہے اور اگر حضرت صالح علیہ السلام کا نام لیا جاتا تو اس حقیقت کا بعد نہ چلا۔

نَاقَةَ اللّٰهِ خداتعالیٰ کی او مُنی کوچھوڑ دوتا کہ جہاں چاہے جہے۔ اور جو پانی چاہے پیئے اوراے کوئی تکلیف اوراذیت نہ پہنچاؤ اوراس کے تمل کے دریے نہ ہونا۔ اس لیے کہ کسان martat.com

اور دیہاتی اپنی ناتعی عقل کے باہ جود آئی بات کو بچھتے ہیں کہ طاقت وروں کے مویشیوں کو پانی اور چارے سے ہانکنا نہیں چاہیے اور قل کرنے اور تکلیف دینے کے در پے نہیں ہونا چاہیے۔ پس خدا تعالی جو کہ سب طاقت وروں سے زیادہ طاقت ورادر فوری انتقام لینے پر قادر ہے کے جانور کوستانا اور قل کرنا ظاہر ہیں عقل کے تقاضوں کے خلاف ہے اور شہوت قادر ہے کے جانور کوستانا اور قل کرنا ظاہر ہیں عقل کے تقاضوں کے خلاف ہے اور شہوت سے مغلوب ہونے کی وجہ سے آئی کی بات کو جو کہ کسان اور بحریوں کے چروا ہے جانے ہیں نہ بھمنا انتہائی جمافت ہے۔

الله تعالى كى اونمنى كينے كى وجه

اوراس اونی کی نسبت خداتعالی کی طرف اس وجہ سے کی گئے ہے کہ وہ خداتعالی کے سوا

کسی کی ملک نہتی۔ نیز مال باپ کے واسطے کے بغیر چٹان سے پیدا ہوئی۔ نیز قدرتِ الی

کی مظہرتی اور قیامت قائم ہونے اور قبروں سے مردون کو زیرہ کرنے کی دلیل تھی۔ پس

اسے جانوروں میں وہ مرتبہ حاصل تفاجو کہ محارات اور مکانات میں بیت اللہ کو حاصل ہے۔

دَسُفُهُ اَ اوراس کے پانی کے مصے کو جھوڑ دو تا کہ تبھارے جانوراس کے پانی کے صے
میں تعرف نہ کریں اس لیے کہ تم نے معاہدہ کیا ہے اور قول وقر ارکیا ہے کہ ایک دن یہ اونی

وسعیه اوراں سے پال سے جہور دوہ دہ دہ وراں ہے وراں سے پال سے میں تقرف نہ کریں اس لیے کہ تم نے معاہدہ کیا ہے اور قول وقر ارکیا ہے کہ ایک دن بیاؤنی پانی چئے اور دوسرے دن تمہارے جانور اور حہد تھی اور قول وقر ارکی مخالفت تمام شریعتوں میں حرام اور ممنوع ہے۔ شہوت و خضب سے مظوب ہونے کی وجہ سے عہد تھی کا اقد ام انتہائی ہے دینی ہے۔

فَكُنَّبُوهُ وَاسَ مارى قوم نے اس دُرائے اور سمجانے میں معزت مالح علیہ السلام کی محذیب کی اور آپ کی بات پر جو کہ لا تکسوھا بسوء فیا خذکہ علاق النہوکا مغہوم ہے بیتین نہ کیا۔

فعَفَرُوْهَا لهل الله اوْتَى كَ كُوْلِي كاف دي اوراكر چدكوفي كاف والا وى تذاربن الف اوراس كة مرضى سے بواركويا وه سب اس الف اوراس كة محدماتنى تقريحن جب يوفل سب كى مرضى سے بواركويا وه سب اس على شريك بوك اى ليے كروه كے ايك فض ككام كو جو كه سب كے مشورے اور مرضى سے بواس كروه كى طرف منسوب كيا جاتا ہے۔ اور سورة قر على جو فتعالمى وعقر واقع بواتو سے بواس كروه كى طرف منسوب كيا جاتا ہے۔ اور سورة قر على جو فتعالمى وعقر واقع بواتو سے بواس كروه كى طرف منسوب كيا جاتا ہے۔ اور سورة قر على جو فتعالمى وعقر واقع بواتو سے بواس كروه كى طرف منسوب كيا جاتا ہے۔ اور سورة قر على جو فتعالمى وعقر واقع بواتو سے بواس كروه كى طرف منسوب كيا جاتا ہے۔ اور سورة قر على جو فتعالمى وعقر واقع بواتو

فعل کواس کے مرتکب کی طرف منسوب کرنا مراد ہے۔ پس کوئی اختلاف نہیں۔

فَلَمْ لَمُ عَلَيْهِمْ دَبُهُمْ تو ان كے پروردگار نے ان پر ان كے روزگار كو ألث ديا جس طرح كر أنہوں نے اس كى ترتيب كے حسن كو ألث ديا تھا كيونكد اللہ تعالى نے أنہيں شہوت اور غضب كى طاقت اس ليے دى تھى كدان دونوں كوعمل كے تابع كرديں اور عمل اس ليے دى تھى كدان دونوں كوعمل كے تابع كرديں اور عمل اس ليے دى تھى كدانے كرديں جبكدانہوں نے اس كے برتكس شريعت كوعمل كے اور عمل كو تيں جبكدانہوں نے اس كے برتكس شريعت كوعمل كے اور عمل كو تابع كرديں جبكدانہوں ا

بنڈ بیمٹر ان کے مناہ کی وجہ ہے جو کہ حکمتِ النی کی ترتیب کو باطل کرنا اور اس کی ضد بہل کرنا تھا اس مخص کی طرح جوا ہے غلام کو تلوار تھائے کہ میرے دشمن کوئل کر دواور وہ اس کے جیے کوئل کر دے۔

وَلَا الله الله مُعْنَى المورالله تعالى اس فرق كى بلاكت كانجام عنيس ورتاس لي الحيائي اور يُرائى كونيس لي كري كام كانجام عورتاس كى شان عبد بها قواس كى الحيائى اور يُرائى كونيس كي الارت بالله على المحالة الله يجانا اور نه جائح موت اس من قدم وكمنا عبد الله تعالى علام النيوب كمال فرابى كا قدارك ندكر كل جواس كام برمزت موتى عبد الله تعالى علام النيوب كمال قدرت والا اور في مطلق عبد الحمل كي واونيس عبد كداس كي عوق عدوي كروه كمث فدرت والا اور في مطلق عبد الحمل كي واونيس عبد كم على غرامه دراز تك اس فرق كو بالا تعالى يرى بورش ضائع كى اور عن في جرورش كي تنهول في وكام في كار من كار مندام احداود دومرى معتبر كمابول عن يهال جانا جائي الي جائد و ما منهول عن معتبر كمابول عن المسال جائدا جائد و و كام في المول عن المسال جائدا جائد و و كام في المول عن المسال جائدا و المنا جائد و كام في المول من المسال جائدا و المنا جائدا و المسال عنا جائد و كام مندام احداود دومرى معتبر كمابول عن المسال جائدا و المنا و المنا جائدا و كل معتبر كمابول عن المسال حائدا و المنا و

واقع ہے وارد ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت اہر المونین علی مرتضیٰ کرم اللہ وجہہ سے ترار کے ساتھ ارشاد فر مایا کہ تہمیں کچھ معلوم ہے کہ پہلی اُمتوں کا سب سے بڑا بخت کون تھا اور اس اُمت کا سب سے بڑا بد بخت کون ہے؟ آپ نے عرض کی مجھے معلوم نہیں اُس نے فر مایا کہ پہلی اُمتوں کا بد بخت ترین شمود کا وہ سرخ رنگ کا آ دی ہے بعنی قذار بن سالف جس نے اللہ تعالیٰ کی اوفیٰ کی کونیں کا ان دیں اور اس اُمت کا بد بخت ترین وہ خفس سالف جس نے اللہ تعالیٰ کی اوفیٰ کی کونیں کا دیں اور اس اُمت کا بد بخت ترین وہ خفس ہے جو تمہارے سر پر تکوار مارے یہاں تک کہ تمہاری ریش تمہارے خون سے تر ہوجائے اور سے شہید ہوجائے۔

شمود کے قذاراوراس اُمت کے ابن مجم کے بد بخت ترین ہونے کی وجہ

تو یہال بید امر ضروری ہے کہ پہلوں میں سے قذار اور اس اُمت میں سے حضرت مرتضٰی علی کرم اللہ وجہہ کے قاتل ابن مجم کے بد بخت ترین ہونے کی وجہ بیان کی جا ، کے اور اس کا بیان چندمقد مات کی تمہید برموقوف ہے۔

پہلامقدمہ یہ ہے کہ شرم گاہ کی شہوت سب سے زیادہ حقیر شہوت ہے کہ اس حالت بیں اور بیل اسان عقل سے بہت دُور ہوجا تا ہے اور اس سے جانوروں کی حرکتیں صادر ہوتی ہیں اور اس خواہش کو پورا کرنے کا مقام بھی نجاستوں اور پلیدیوں کی آ ماجگاہ ہے اور سر کا کھلنا جس کا چھیانا بنی آ دم کے تمام گروہوں کے نزدیک لازم ہے اس خواہش کو پورا کرنے میں ضروری ہوتا ہے۔ لہذائی آ دم کی جبلت ہے کہ اس خواہش کو انتہائی پردے اور سر میں پورا کرتے ہیں اور اپنی محافل و بجالس میں اس کلیام اشارے اور کنائے کے بغیر نہیں لیتے اور کرتے ہیں اور اپنی محافل و بجالس میں اس کلیام اشارے اور کنائے کے بغیر نہیں لیتے اور جہان میں جو گائی کئی جاتی خواہش کی بیشی سے لی میں ہے۔

کے پیدا ہونے کی جگہ ہے جبکہ توت شہوبہ خوشامد اور جاپلوی کا منبع ہے اور لوگوں کے ذہنوں میں اثر ڈالنے والی قوت اثر قبول کرنے والی قوت سے بہتر ہے۔

تیرا مقدمہ شہوت اور غضب جب حقوق واجبہ میں سے کسی حق کو ضائع کرنے تک پہنچا کمیں تو تمام انسانوں کے نزدیک معیوب اور قابلِ طعن وشنیع ہوتے ہیں اور حق جس قدر برا ہوگا عیب اور طعن اس قدر زیادہ لاحق ہوگا۔ پس بدبخت وہ ہے جوا بی شہوت اور غضب کو این شہوت اور غضب کو این شہوت اور اس حق کو ضائع کر دے اور اس سے زیادہ بدبخت وہ ہے جو کہ اپنی شہوت اور غضب کو پورا کرنے کے لیے غیر کے حق کو ضائع کر دے اور اس سے جو کہ اور اس سے خوان دونوں کے لیے غیر کے حقوق کو ضائع کر دے بورا کر وے پھر حقوق کو ضائع کر دے پھر حقوق کو ضائع کر دے پھر حقوق کی منائع کر دے پھر حقوق کی منائع کر دے پھر حقوق کو کا اس سے اور اخر دی حق ضائع کرنا آسان ہے اور اخر دی حق ضائع کرنا آسان سے خوت ہے۔

چوتامقدمة دى كوزے تين برے تن ثابت ہيں۔ پہلااللہ تعالى كائ جوكداس كا لك اورائ فعيس عطافر بانے والا ہے اورا دى جرائے اللہ تعالى كا حسان كے نيجے ہے اور جركام ميں اس كى مدوكاتيان اس ليے كوئى تن اس تن كى برابرى نہيں كرتا۔ دوسراا بن جماعت كائن كہ جيئے مرنے ميں ان كامخان ہے اور ان سے جركی قسم كی المداوكی تو تع رکھتا ہے۔ تيراا پے نفس كائن اس تن كاعمدہ بو ، بالكل ظاہر ہے بيان كی ضرورت نہيں۔ بہی بدبختوں ميں سے زيادہ بدبخت وہ ہے جو كدان تينوں حقوق كو حقير ترين شہوت كے بدلے ايك دَم منافع كر دے اور بيوصف كر شته اُمتوں ميں قدار بن سالف ميں تنى جس نے اس حقير ترين شہوت كے بدلے ايك دَم منافع كر دے اور بيوصف كر شته اُمتوں ميں قدار بن سالف ميں تنى جس نے اس حقير ترين شہوت كے بدلے ايك دَم خواہش كو پورا كرنے كے ليے اپنا تن بحی تنافع كيا كہ كافر مرا اور دوز خ كا ايندھن ہوكیا۔ ان ذرگی بربادكر لی۔ اور اپنی قوم كاخ ت بحی ضائع كر ديا كہ اللہ تعالى كے مذاب كے ساتھ ال تن خواہش كی اور اس كی جو كہ اللہ تعالى كی ہوایت كی صورت تنی اور اس كی جن سے نابع دیا ہو كہ ہوائے كے مان كا مام ونشان بحی باتی خدر ہا اور اللہ تعالى كی ہوایت كی صورت تنی اور اس كی عنایت نے اس جانور كے جم میں تنے م ہوكر کھ برا تھا كی كی ہوایت كی صورت تنی اور اس كی عنایت نے اس جانور کے جم میں تنے م ہوكر کھ برا تھا كی کی ہوایت كی صورت تنی اور اس كی عنایت نے اس جانور کے جم میں تنے م ہوكر کھ برا تھا كی کی ہوایت کی صورت تنی اور اس اُمت میں حضرت امیر الموثین علی کرم اللہ وجہ کے قاتل میں بید وصف تنی اور اس اُمت میں حضرت امیر الموثین علی کرم اللہ وجہ کے قاتل میں بید وصف تنی اور اس اُمت میں حضرت امیر الموثین علی کرم اللہ وجہ کے قاتل میں بید وصف تنی اور اس اُمن میں حضرت امیر الموثین علی کرم اللہ وجہ کے قاتل میں بید وصف تنی اور اس اُمن میں حضرت امیر الموثین علی کرم اللہ وجہ کے قاتل میں بید وصف تنی اور اس اُمن میں مورک کے ان کا اُمن کی کی اُمن و کی اللہ وجہ کے قاتل میں بید وصف تنی اور اس کی اور اس کی اور اس کی اور اس کی دورائی کی حس کی تاتی میں مورک کے اللہ واللہ کی کے ان کی اُمن کی دورائی کے ان کی اُمن کی کے اُمن کی کی دورائی کے دورائی کی دورائی کی دورائی کے دورائی کے دورائی کے دورائی کی دورائی کی کی دورائی کے دورائی کی کی دورائی کے دورائی کی کی دورائی کی کے دورائی کی کی دورائی کی کی دور

اس ابهام کی وضاحت ہے ہے کہ جس طرح نافتہ اللہ حضرت صالح علیہ السلام کے کمال کی مورت تھی اور آپ کی نبوت کی صدافت کی دلیل۔ اور اللہ تعالیٰ کی وہ عنایت جو کہ ثمود کی ہدایت کے لئے حضرت صالح علیہ السلام کی بعثت بیس غیب سے متوجہ ہوئی تھی۔ اس گروہ کے طلب کرنے کے مطابق اوفنی کی شکل اختیار کر کے اور حیوانی خلصت پہن کر ان میں قائم ربی حی کی کہ عذاب دُور کرنے میں اس اوفنی کی تعظیم اور اس کاحق ادا کرنا حضرت صالح علیہ السلام کی شریعت تبول کرنے اور ان کے دین میں داخل ہونے کے قائم مقام ہونے کی طرح ہوگیا تھا۔ کو یا حضرت صالح علیہ السلام کی شریعت تبول کرنے اور ان کے دین میں داخل ہونے کے قائم مقام ہونے کی طرح ہوگیا تھا۔ کو یا حضور آپ کا قرب اور مرتبہ اور اس دربار میں آپ کی دعا کی تبویت ای جمرو کے سے ظاہر ہوتی تھی۔

فضائل شاه ولايت حعنرت على كرم الثدوجهه

ای طرح حفرت امیر المونین مرفعنی علی کرم اللہ وجہ کا وجود جسمانی جو کہ قاتم الخلفاء

ے دربار نبوت علی صاحبها الصلوات والعسلیمات کے کمال دلایت کی صورت ہو چا تھا اور ان

کا نور ہدایت اس سے جلوہ ریز ہوتا تھا اور دربار نبوت کا قرب معنوی ای جمرو کے سے فمودار
تھا اور اس وقت بینجبری کی خلافت اور حضور کی جائیتی اس شاہ ولایت رضی اللہ عن کی وات
قابل السفات میں مخصر ہو چک تھی ای لیے حدیث شریف میں جس طرح کو یہ کے تی میں
فرمایا گیا ہے کہ النظر الی المحصبة عباحة اور قرآن مجید کے متعلق فرمایا گیا ہے کہ العظر
فرمایا گیا ہے کہ النظر الی المحصبة عباحة اور قرآن مجید کے متعلق فرمایا گیا ہے کہ العظر
الی المصحف عباحة ای طرح اس شاہ ولایت کرم اللہ وجہ کے بارے میں ارشاد ہوا کہ
النظر الی وجمه علی عباحة کویا آپ کا وجود مبارک حضرت نبوت علی صاحبها الصلوات
والتیات کے وجود شریف کا عس جسل تھا کہ تشکان اُمت اس ایک منج سے بیراب ہو تے
قد اور کمالا سے نبوی کے جامع ہونے کی وجہ سے ہر ظاہری اور باطنی صاحبہ آپ کی ذات
سے اور کم الا سے نبوی کے جامع ہونے کی وجہ سے ہر ظاہری اور باطنی صاحبہ آپ کی ذات

(معلوم ہوا کہ دربارِ نبوت کے انوار سے فیض یاب ہونے کی وجہ سے ہر ظاہری اور باطنی حاجمت مولائے کا نئات شاہ ولایت علی کرم اللہ و جہہ کی ذات سے پوری ہوتی تھی جیسا Marfat.com

کے مفسر علام قدس مرہ نے ارشاد فر مایا اس لیے آپ کو حاجت روا اور مشکل کشا کہنا درست قرار پایا ای لیے اکابر بن اسلام نے آپ کو مشکل کشامانا ہے حتی کہ اعداد اللہ مساحب مہاجر کی ارشاد مرشد کے مسال بول دعا کرتے ہیں ۔

دُور كرول مے جاب جہل وغفلت مير مدب

کول دے دل میں درعلم حقیقت میرے رہے۔ ہادی عالم علی مشکل کشاکے واسطے۔ (محرمخوع الحق غفرلہ)

اس سے بڑے بدبخت نے جس نے اس سے وجودمنورکوشہیدکیا خداتعالی کا حق بھی تلف کیااور پوری اُمت کاحق بھی کدری کے بغیر جماڑ و کی طرح کمالات کے انتشار کا شکار ہوکرا پی وجدانی کیفیت کو بیٹے اور کوئی اور آپ کا قائم مقام ندر ہا اور اپناحق بھی ضائع کیا کہ جہم کا اید من بن کیا اور اپنی زندگی پر بادکر دی اور بیسب پھھای حقیر ترین خواہش کی بیروی کی بناء پر تفا۔

حضرت على كرم الله وجهد كى شهادت

مين جيب كربيفه جااوربيكام كركزر

رمضان یاک کی انیس (۱۹) تاریخ مبح کے دفت انجمی اندمیرا تھا' حضرت شاہ دلایت كرم الله وجهدالكريم ممرے معجد ميں تشريف لائے يد عين معجد كے ستون كے بيجھے چھيا ہوا اس کام کے لیے تیار بیٹھا تھا اور حضرت کی عادت شریفہ بیٹمی کے سوتے ہوئے لوگوں کو مجد میں بلند آواز سے تکبیر کہد کر بے دار فرماتے تھے تا کہ اُٹھ کر وضو اور طہارت میں مصروف ہول۔ای دوران کہ آپ مجد کے دروازے سے اندر آئے اس تعین نے ستون کے پیچھے ے آ ب كى مرمبارك برتكواركى ايك ضرب لكائى اور ضرب لكانے كے بعد بھاگ كيا۔لوگ ہرست ہےاہے پکڑنے کے لیے دوڑےاوراہے گرفتار کرلیا۔ زخم اگر جدا تنا نہ تھالیکن زہر نے سرایت کی اور حضرت شاہ ولایت کرم اللہ وجہہ عالم جاودانی کو انتقال فرما مجے اور اکیسویں شب کو آپ کاجسم مبارک نجف الحیر و میں ون کیا گیا جو کہ کونے کے قریب جامع مسجد ہے ا ایک فرسخ کے فاصلے پر جیرت النعمان کی راہ میں واقع ایک مقام ہے۔ اور آپ کی قبر مبارک کواونیا نہ کیا گیا اور علامت کے بغیر رکھا گیا تا کہ خارجی لوگ جو کہ اس زمانے میں کوف کے حردونواح میں تھیلے ہوئے تنے ہے ادبی نہ کریں۔ اور بیہ واقعہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی ہجرت سے چالیسویں سال میں واقع ہوا اور نبوت کے بعد جو خلافت تھی منقطع ہوگئی۔ اور ساری اُمت پرایک عام مصیبت ٹوٹ پڑی کہانہوں نے مقام نبوت کے نائب کوم کردیا اس حادث ومعلوم كركم محابه كرام رضى الله عنهم كوسخت افسوس موار چنانج وحضرت عائشه صدیقدرضی الله عنها ہے مروی ہے کہ جب آپ نے حضرت ولایت مآب رضی الله عند کی رحلت کی خبرسُنی تو فرمایا اب عرب جو حیامیں کریں' وہ ندر ہا جوانہیں ناپسندیدہ کاموں ہے منع فرما تاتھا۔

پندونفیحت کے رنگ میں تھانہ کہ تھم پینجبر کے رنگ میں اس وجہ سے حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللّٰہ عنہانے یہ کلمہ ارشاد فرمایا۔

یہاں سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت امیرالمونین علی کرم اللہ وجہہ کے قاتل کو اشقی ہونے کے ساتھ مخصوص کرنے کی وجہ کیا ہے؟ وہ یہ ہے کہ اس وقت آپ کی ذات قائم مقام نبی ہونے کے کمال میں ان کمالات کے جامع ہونے کی وجہ سے جو کہ حضور علیہ الصلاة والسلام کے جانتین کے لیے چاہئیں' منفرد یعنی تنہاتھی۔ بخلاف خلفاء کے کہ ان میں یہ انفرادیت نہ تھی اگر ان کے قاتموں نے اس نور کو بچھانے کی کوشش کی تو ان کی کوشش آگے انفرادیت نہ تھی اگر ان کے قاتموں نے اس نور کو بچھانے کی کوشش کی تو ان کی کوشش آگے دیرت شاہ ولایت کرم اللہ وجہہ چونکہ خاتم الخلفاء سے آپ کا قتل نور اللی کو بچھانے کا معرجت شاہ ولایت کرم اللہ وجہہ چونکہ خاتم الخلفاء سے آپ کا قتل نور اللی کو بچھانے کا موجب ہوااورالی مصیبت رونما ہوئی جس کا تدارک ممکن نہ رہا۔

ايك شبداوراس كاجواب

ادراگر کسی کے دل میں شبہ گزرے کہ خمود کے بدبخت ترین کی حرکت کی وجہ سے تمام فرقۂ خمود تباہ ہو گیا جبکہ اس اُمت کے بدبخت ترین کی حرکت کی وجہ سے باقی اُمت کو کوئی گزند نہ جبنجی۔ یہاں فرق کس لیے ہے؟

اس کا جواب ہیہ ہے کہ دو وجہ سے فرق ہے۔ پہلی وجہ بیہ کہ ثمود کی ساری قوم او ثمنی کو قتل کو تقلق کا جواب ہیں ہوگئی جبکہ اس اُمت کی اکثریت اس حرکت پر راضی نیمنی بلکہ انہوں نے میں کرنے پر راضی نیمنی بلکہ انہوں نے میں کرنے والے پر نفرت اور لعنت جمیعی ۔

دوسری وجہ یہ ہے کہ اونٹی کے آل کے بعد اس کا بچہ عائب ہو گیا جبکہ حضرت شاہ والایت کرم اللہ وجہد کی وفات کے بعد آپ کی اولاد کرام باقی رہے اور جس نور کے حامل حضرت ولایت مآب رضی اللہ عنہ تنے طبقہ بعد طبقہ ایک حامل پیدا ہوتا رہا جو کہ اپنے وقت کا امام ہوتا تھا۔ اس وجہ سے اس اُمت کو اس نور سے محرومی نصیب نہ ہوئی اور وہ اس ہدایت سے نیض یاتے رہے۔ گر چہ کمالات کی وجدانی کیفیت دگر گوں ہوگئی اور وہ کمالات استعداد سے فیض یاتے رہے۔ گر چہ کمالات کی وجدانی کیفیت دگر گوں ہوگئی اور وہ کمالات استعداد کے مطابق اجھے گروہوں میں سے ہر گروہ میں متفرق اور منتشر ہو مے اور آپ کی شہادت سے مطابق اجھے گروہوں میں سے ہر گروہ میں متفرق اور منتشر ہو مے اور آپ کی شہادت سے مطابق اجھے گروہوں میں سے ہر گروہ میں متفرق اور منتشر ہو مے اور آپ کی شہادت سے مطابق اجھے گروہوں میں سے ہر گروہ میں متفرق اور منتشر ہو می اور آپ کی شہادت میں سے ہر گروہ میں متفرق اور منتشر ہو میں اور آپ کی شہادت سے مطابق اجھے گروہوں میں سے ہر گروہ میں متفرق اور میں متفرق اور میں متفرق اور میں متفرق اور آپ کی شہادت میں سے ہر گروہ میں متفرق اور میں متفرق اور میں متفرق اور آپ کی شہادت سے مطابق اجھے گروہوں میں سے ہر گروہ میں متفرق اور میں متفرق اور آپ کی شہادت سے میں متفرق اور میں متباد میں میں متباد میں م

تغير عزيزي مسيد من المهالياره

کے بعد جو بجیب واقعات رونما ہوئے ان میں سے ایک بیہ ہے کہ آپ کی شہادت کے دن بیت المقدس میں کوئی ایسا پھرنہ تھا جس کے بنچے سے خون نہ اُبلتا ہو۔

سورهٔ والليل

کی ہے اس میں اکیس (۲۱) آیات ٔ اکہتر (۷۱) کلمات اور تین سو دس (۳۱۰) وف ہیں۔

سورة والشمس كے ساتھ را بطے كى وجه

اورسورہ وافقس کے ساتھ اس سورۃ کے رابطے کی وجہ یہ ہے کہ دونوں ہی قسموں کے ساتھ شروع ہونے میں پوری مناسبت رکھتی ہیں۔ وہاں انسانی نفوس کے اختلاف کا ذکر ہے کہ بعض کو بخو رکا البہام ہوتا ہے اور بعض کو تقوے کا۔ اور ان لوگوں کی انجی حالت کا بیان ہے جو کہ تزکیہ نفس میں معروف ہوتے ہیں۔ اور ان لوگوں کی کری حالت کا ذکر ہے جو شہوت اور غضب کی پیروی کر کے نفس کو ذلیل وخوار کرتے ہیں۔ جبکہ یہاں بھی نی آ دم کے اعمال کا اور غضب کی پیروی کر کے نفس کو آسانی کی راہ چلنے کی تو فتی دینے اور بعض کو رسوا کرنے اور شقاوت میں اور بعض کو آسانی کی راہ چلنے کی تو فتی دینے اور بعض کو رسوا کرنے اور شقاوت کی راہ ڈالنے میں مختلف ہونا بیان فر مایا گیا ہے۔ نیز دونوں سورتوں میں بربختوں کا ذکر ہے وہاں شود کے اشتی کا ذکر ہے جبکہ یہاں اس بد بخت کا حال بیان کیا جمیا کہ دلال کا است کے آغاز میں حضرت بلال رضی اللہ عنہ چھی خضیت کو عذاب دے کر شقاوت کی دلال میں بڑ گیا اور اس اعتبار سے کہ حضرت بلال رضی اللہ عنہ کو حضور صلی اللہ علیہ وکی مرت کی ہوگئی۔

وجدتشميه

رات عیاشوں کی رات فراق اور جدائی میں دردمندوں کی رات اور احباب کے دصال کی رات کا آپس میں کس قدر فرق ہے۔ چنانچہ کہتے ہیں ع رات کا آپس میں کس قدر فرق ہے۔ چنانچہ کہتے ہیں ع شب تنور گزشت وشب سمور گزشت

اور ہردن میں آگر چائ تم کا اختلاف اور رنگار کی ہے لیکن چونکہ وقت اسرار کے کھلنے اور واضح ہونے کا ہے سب لوگ بناوٹ اور تکلف کے ساتھ اپنے آپ کوشنق کرتے ہیں ، چور عابد کے رنگ میں باہر آتا ہے۔ اور فاسق اپنے آپ کو نیکوں کے لباس میں ظاہر کرتا ہے۔ بخلاف رات کے کہ تار کی کے پردے کی وجہ سے حیا کا حجاب اُٹھ جاتا ہے اور ہر شخص اپنے نفس اور دل میں پوشیدہ خواہش کے مطابق بے تکلف اور بے حجاب ایک کام میں مشخول ہوجاتا ہے اور بناوٹی اتفاق زائل ہوجاتا ہے۔

شا<u>ن</u> نزول

اوراس سورة کا سبب زول ہے کہ مکہ معظمہ میں دوسردار مال دار سے ایک حضرت
ابو بکر العمد بن رضی اللہ عنہ اور دوسرا أميہ بن خلف۔ مال خرج کرنے میں دونوں کا معاملہ
علاف ہوگیا۔ أميہ بہت مال دار تھااس نے بارہ (۱۲) غلاموں کو تربیت کر کے برایک کوایک
کام پر لگار کھا تھا اور اس تد بیر کے ساتھ مال زیادہ کرتا تھا کہ ایک غلام کوکاشت کاری کا نتظم
کر دیا و در سرے غلام کو گل دار باغات کا کام بیرو کردیا 'ایک غلام کو بیش قیمت منقش کیڑوں
کی تجارت کے لیے بحن اور شام کی طرف بھیجا اور کی غلام کومویشیوں پر مقرد کر کے دودھ من وی اور سل کھی ہے مال بو حاتا ہے گلی بندالتیاس اور اتنا امیر اور دولت مند ہونے کے باد جود منظم کو ایک درہم نہیں دیتا تھا اور اگر اس کا کوئی غلام اس کے مال سے کی تھان کو بچھ دے منظم کو ایک درہم نہیں دیتا تھا اور اگر اس کا کوئی غلام اس کے مال سے کی تھان کو بچھ دے دیتا تو اس کہ اور اگر اسے کوئی کہتا کہ اتنا مال ہوتے ہوئے تو آخرت کا ذخیرہ کیوں نہیں بناتا؟ تو کہتا کہ پہلے تو آخرت ہے کہاں؟ اور اگر بالغرض آخرت ہوتو میں نے اس قدر مال اور اولاد کی کمائی کی ہے کہ بچھے جنت کی نعتوں کی بالغرض آخرت ہوتو میں نے اس قدر مال اور اولاد کی کمائی کی ہے کہ بچھے جنت کی نعتوں کی بنایا جائے۔
منرورت بالکل نہیں ہوگی بچھے اس لا کھ کی بالکل پرواہ نہیں کوئی جوں کو بچھے دے کر انہیں ابنا

حضرت بلال رضى الله عنه كے فضائل اور ان كى تكاليف كابيان

اوراس کے غلاموں میں سے حضرت بلال رمنی اللہ عنہ بھی ہتے جو کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے خادم خاص ہیں اور ان کی ہزرگی اس مدتک پہنچ بچکی تھی کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں جنت میں اسے آ گے دیکھا اور فرمایا کہ جنت بلال کی مشاق ہے۔

جن دِنول حضرت بلال رضى الله عنه الله عنه الله عنه خفيه طور برمشرف به اسلام ہو گئے ہوتے ہوتے اسے آپ کے مسلمان ہونے کا پنہ چل گیا۔ پہلے تو اس نے آپ کو خدمت سے معزول کر دیا' خزانے اور بت خانے کی نفاظت کا 6م جوآپ کے سپروتھا' کسی دوسرے غلام کودے دیا۔ پھرآ ب کوائے روبرو ملا کر ہو جھنے لگا کہ تو کس کی عبادت کرتا ہے؟ حضرت بلال رضى الله عنه نے فرمایا حضرت محملی الله علیه وسلم کے خدا کی۔اس لعین نے کہا كهاس دين سے دست بردار ہوجا ورنہ تخصے سخت ترين عذاب كے ساتھ ہلاك كردوں گا۔ فرمایا بیس اس سے مند پھیرنے والائیس جو جاہے کڑیس تیراغلام ہوں۔وو ظالم کافرون کے آغاز میں حضرت بلال رمنی اللہ عنہ کے جسم ہے کپڑے اُتار دیتا اور کیکر کے کا فے آپ کے جمم میں پیوست کر دیتا یہاں تک کروہ کانے بڑی تک بھنے جاتے۔ اور جب ون گرم ہوجاتا تو حضرت بلال رضی الله عنه کواین دوسرے غلاموں کے سپرد کردیا کہ اسے سورج کی حرمی میں پشت پرلٹا دو۔ اور دحوب میں بطے ہوئے گرم پھراس کے سرے لے کر یاؤں تک پہن دواوراس کے اردگرد آگ جلا ووتا کہ اے اسنے کام کی حقیقت معلوم ہوجائے جب دن ختم اورسورج غروب موجاتا توحعرت بلال رمنى الله عنه كوبيريان اورطوق وال كرتاريك جرے میں بند کردیتا اوراسیے غلاموں سے کہتا کہ باری باری ساری رات اے کوڑے مارو اور منى تك كور عدى آواز بندند مور حعزت بلال رمنى الله منداس زيردست تكليف ميس وقت كزارت اوراحداحد كتع يعى ميرا خداايك ب ميرا خداايك بـ

ایک دن حضرت ابو بر صدیق رضی الله عنه کا رات کے وقت اس کو ہے ہے گزر ہوا
العین کے کمرے کرید و زاری کی آ واز آپ کے کانوں میں پنچی۔ پوچھا کہ اس کے گھر
میں کیا واقعہ رونما ہوا ہے؟ لوگوں نے کہا کہ وہ بلال نامی اپنے غلام کوعذاب وے رہا ہے اور

وہ غلام گریہ وزاری کرتا ہے۔ میے ہوتے ہی حضرت البو برصدین رضی اللہ عنداس کے گھر گئے
اورا سے نصیحت فرمانے گئے کہ خدا سے ڈراوراس غلام کو ناحق سزا نہ دے اورظلم نہ کر۔ کیونکہ
اس نے وئی کو قبول کیا ہے اور خدا تعالیٰ کی دوئی حاصل کی ہے۔ چاہیے کہ تو اس غلام کو
غنیمت سمجھے اور اس کے ساتھ اچھا سلوک کرے کہ آخرت میں تیرے کام آئے اس لعین
فنیمت سمجھے اور اس کے ساتھ اچھا سلوک کرے کہ آخرت میں تیرے کام آئے اس لعین
فنیمت سمجھے اور اس کے ساتھ اچھا سلوک کرے کہ آخرت میں تیرے کام آئے اس لعین
فنیمت سمجھے وزیا میں کیا کی ہے کہ آخرت کی بی کہاں سے حق بن گیا اور اگر بالفرض آخرت ہو بھی تو
مجھے دنیا میں کیا کی ہے کہ آخرت کی بی بروہم نعمتوں پرفریفتہ ہو جاؤں۔ جنت میرے پاس
فقد موجود ہے جیسا کہ آپ جانے ہیں کہ مال کی کوئی فتم نہیں جو میرے خزانوں اور کارخانوں
میں مدھ نہیں۔

حضرت ابوبكرصديق كاحضرت بلال كوخر بدنارضي التدعنهما

طرح کے قابل غلام کے ساتھ تبادلہ کرلیا جو کہ دو ہزار دینار کا مالک ہے۔ حضرت ابو بحر معدیق رضی اللہ عنہ نے بیہ بات سُن کر فر مایا کہ میری نظر میں بیغلام اس مرہے کا ہے کہ اگر تو یمن کی ساری بادشاہی کے وض بیجا تو میں خرید لیتا۔

بعدازال حفرت بلال رضی الله عنه کوحفور صلی الله علیه وسلم کی خدمت میں پیش کر کے عرض کی کہ یارسول الله اصلی الله علیه وسلم میں نے بیا غلام اس طرح خریدا ہے آپ کواہ رہیں کہ میں نے دخفور صلی الله علیه وسلم نے رہیں کہ میں نے دخشائ کہ میں نے دخشائ الله علیه وسلم نے اسے آزاد کر دیا۔ حضور صلی الله علیه وسلم نے انتہائی مسرت کا اظہار فر مایا اس دن سے حضرت بلال رضی الله عنه فارغ البال ہوکر بارگاہ سید عالم صلی الله علیه وسلم کی حاضری کی سعادت سے مشرف ہوئے۔

فضائل حضرت ابوبر صديق طافظ اورآب كة زادكرده غلامول كي تغصيل

اور حضرت صدیق اکبروضی الله عنه نے ابتدائے اسلام اور سلمانوں کی انتہائی کمزوری اور خربت کے وقت اپنا مال راہ خدا میں حضور علیہ الصلاق والسلام کے اخراجات مسلمانوں کو کفار کے ہاتھوں چیئرانے اور دوسرے اچھے طریقوں پرخرچ کرکے آخرت کا ذخیرہ جمع فرمایا جیسا کہ حضرت بلال رضی اللہ عنہ کے واقعہ میں آپ نے جو پھی خرچ کیا معلوم ہو چکا اور ای طرح آپ نے قریش کے سات غلاموں اور کنیزوں کو جو کہ دسین اسلام پر مضبوطی سے قائم طرح آپ نے قریش کے سات غلاموں اور کنیزوں کو جو کہ دسین اسلام پر مضبوطی سے قائم فرح آزاد میں اور ایس کے منا میں بناء پر انہیں تتم فتم کے عذاب دیتے تھے خرید کر آزاد فراداں کے مالک کفر کے تعصب کی بناء پر انہیں تتم فتم کے عذاب دیتے تھے خرید کر آزاد

ان میں سے ایک عام بن فہم و رمنی اللہ عنہ ہیں جو کہ بھرت کے وقت حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ہمراہ ہے آپ نے انہیں ان کے مالکوں سے جو کہ بنی جدعان تنے ایک رطل خالص سونے کے عوض خرید کرآ زاد فر مایا۔ جو کہ شا بجہان آ باد میں رائج آ دھ سیر کے قریب خالص سونے کے عوض خرید کرآ زاد فر مایا۔ جو کہ شا بجہان آ باد میں رائج آ دھ سیر کے قریب ہے۔ عام بن فہم و دمنی اللہ عنہ بیئر معونہ کے واقعہ میں شہید ہوئے اور صحابہ کرام رمنی اللہ عنہ بیئر معونہ کے واقعہ میں شہید ہوئے اور صحابہ کرام رمنی اللہ عنہ میں سے تنے۔

ان میں سے ایک زنیرہ رمنی اللہ عنہا ہیں جو کہ ایمان و ملاحیت میں عظیم المرتبت کنیر تحص ۔ جب آپ نے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے اسے خرید کر آزاد فر مایا اس کی آنکموں میں درد ہو کی ادر بیمائی فتم سے درد ہو کی درد ہو ک

ہوئی پُر انے مالکوں نے ایک دن طعن وتشنیع کرتے ہوئے کہا کہ تو نے لات اور عزیٰ کا کرشمہ دیکھا کہ کم طرح تیری بینائی سلب کر لی اس نے کہا تم جموٹ کہتے ہو لات وعزیٰ میں یہ طاقت نہیں کہ اللہ تعالی کے علم کے سواکسی کوکوئی نقصان یا نفع پہنچا کمیں۔ پس اللہ تعالیٰ میں یہ طاقت نہیں کہ اللہ تعالیٰ کے علم کے سواکسی کوکوئی نقصان یا نفع پہنچا کمیں۔ پس اللہ تعالیٰ نے اس کی اس بات پرمہر بانی فر مائی اور اسی وقت اس کی بینائی درست ہوگئی۔

اور ان میں سے مہدید اور اس کی بیٹی ہے دونوں بنی عبدالدار کی ایک عورت کی ملک تھیں ، وہ عورت انہیں خت عذاب دیتی تھی۔ حضرت ابو بمرصدیق رضی اللہ عنداس ماجرا پر مطلع ہوکر اس عورت کے ہاں تشریف لے گئے اور اسے نصیحت فرمائی کہ ان سے دست بردار ہوجا اور ان کی قیمت میں جو چاہے ، مجھ سے لے لے اس عورت نے بھاری قیمت کا مطالبہ کیا۔ آپ نے اس وقت اوا کر دی اور ان دونوں کو جو کہ اس عورت کا آٹا پینے میں مصروف تھیں ، خوش خبری دی کہ میں نے جمہیں خرید کر آزاد کر دیا ہے۔ اب اُٹھواور میر سے ساتھ آؤ' ان دونوں نے عرض کی کہ حضرت! اسے سالوں کی صحبت کا حق یہ ہے کہ ہم اس ڈیوٹی سے فارغ ہوکر اسے آٹا پہنچا کر بھر حاضر ہوں۔ مصرت ابو بمرصدیق رضی اللہ عند نے فرمایا شاباش! ہوکر اس بہت اچھا ہے ایسانی کرو۔

اوران میں ہے ایک کنیز ہے جو کہ بنومول کی ملک تھی جو کہ بنوعدی کا ایک گروہ ہے اور دھنرت عمر رضی اللہ عنداس وقت مشرف بداسلام نہیں ہوئے تھے۔ آپ اس لونڈی کو اسلام ہیں ہوئے تھے۔ آپ اس لونڈی کو اسلام کے بارے میں شدید ایذاء دیتے تھے یہاں تک کہ حضرت ابو بکر رضی اللہ عند نے اسے بھی خرید کرآ زاد فر مایا علی فداالقیاس اُم عبیدہ اور چنداورلوگوں کو بھی آ زاد فر مایا۔

اوران تمام اخراجات کے بعد چالیس ہزار درہم جو کہ آپ کا سرمایہ تھا مفورطلی اللہ علیہ وہ کہ آپ کا سرمایہ تھا میں مسلمانوں کی ضروریات پرخرج فرمایا اور چھ ہزار درہم جو کہ کی خطیہ وہ کہ کی کے تیخ ہجرت کے دوران معجد نبوی علی صاحبہا اصلوات والعسلیمات کی زمین کی خریداری اور خیرات کی دوسری وجوہ میں خرج کر دیے۔ چنا نچے ہے کہات حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان مبارک پربار ہا آئے ہیں کہ انفعنی مال احد قط منافعنی مال اور خیرات کی دوسری وجوہ میں خرج کر دیے۔ پنانچے ہے کہات حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زبان مبارک پربار ہا آئے ہیں کہ انفعنی مال احد قط منافعنی مال احد قط منافعنی مال اور خیرات کے جی کہ انفعنی مال احد قط منافع نہ دیا جتنا کہ ابو بحر (رضی اللہ عنہ) کے مال نے بھی کہ انفعنی مال اور خیرات کے ایک اللہ عنہ کے مال نے بھی کہ انفعنی مال ایک بحر کے مال نے بھی اتنا نفع نہ دیا جتنا کہ ابو بحر (رضی اللہ عنہ) کے مال منافع نہ دیا جتنا کہ ابو بحر (رضی اللہ عنہ) کے مال منافعنی مال ایک بحر کے مال نے بھی کہ انتان نفع نہ دیا جتنا کہ ابو بحر (رضی اللہ عنہ) کے مال منافعنی مال اللہ بحر کے مال منافع نہ دیا جتنا کہ ابو بحر (رضی اللہ عنہ) کے مال منافعنی مال اللہ بحر کے مال منافعنی مال اللہ بحر کے مال منافعنی مال اللہ بحر کے مال منافع نہ دیا جتنا کہ ابو بحر اللہ بحر کے مال منافع نہ دیا جتنا کہ ابو بحر کی اللہ بعد کے مال منافعات کی دیا ہوں کی دیا ہوں کو دیا ہوں کی دیا ہوں ک

تغیر مزیزی را و نفه را

حضرت صدیق اکبررضی الله عنه کے مال اور دیگر خدام کے مال میں فرق

کیونکہ ظاہر ہے کہ حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہا اور جناب ابوطالب اور حضرت عبدالمطلب کا مال جو کہ حضور علیہ السلام کے خرچ میں آیا مرف خوراک بوشاک صلاحی مبدالمطلب کا مال جو کہ حضور علیہ السلام کے خرچ میں آیا مرف خوراک بوشاک صلاحی مبدال نوازی اور محتاجوں کی خبر کیری کے لیے تھا جبکہ یہ مال عظمتِ اسلام بر حمانے کفار کے ہتھوں سے مسلمانوں کو چیٹرانے اور کمزور مسلمانوں کی امداد کرنے کا موجب تھا اور ان دونوں تم کے خرچ میں آسان وزمین کا فاصلہ ہے۔

بارگاہِ خداوندی ہے حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ پرسلام

اس کے بعد جب حضرت ابو برصدین رضی اللہ عند کا مال بالکل خم ہوگیا اور آپ پر فقر نے غلبہ کیا ایک ون آپ کرتے کی جگدا کی کبل مبارک میں والے اے ایک کا نے کے ساتھ باہم جوڑے ہوئے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی مجلس مبارک میں حاضر سے کہ جر نکل علیہ السلام نازل ہوئے اور پوچھا کہ یارسول اللہ! صلی اللہ علیہ وسلم باوجود اسے مال دار ہونے کے ابو برکا یہ کیا حال ہے کہ اس فقیرانہ لباس میں بیٹھے ہیں؟ حضور علیہ العسلاة و والسلام نے فرمایا انہوں نے اپنا سارا مال مجھ پر اور میری راہ میں خرج کر کے ختم کر دیا ہے۔ حضرت فرمایا انہوں نے اپنا سارا مال مجھ پر اور میری راہ میں خرج کر کے ختم کر دیا ہے۔ حضرت جرکئل علیہ السلام نے کہا کہ خدا تعالی نے ابو بکر پرسلام فرمایا ہے اور پوچھا ہے کہ کہواس فقر کی صورت میں مجھ پر راضی ہویا کوئی خلاس ہے؟ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ پر بیانتے کی صورت میں مجھ پر راضی ہویا کہ کہ رہے ہے کہ بیوں میں اپنے دب پروردگار کے ساتھ کی نفر سرائی فرمار ہے ہے کہ انا عن دہی داخن اناعن دہی داخن میں اپنے رب سے راضی ہوں میں اپنے رب

بسم الله الرّحمن الرّحيم

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْضَى بِحِصِ رات كُوتُم ہے جس وقت كرسورج كے نوركو وُ حانب ليتى ہے اور جہان كوتاريك كرديتى ہے اور يدير كانمونہ ہے جو كدروح اور قلب كنوركو اپنى تاريكى كرديتى ہے اور جينے اور پوشيدہ ہونے كا وقت بھى ہے اور جوا ممال كرستر اور حيا كے ساتھ متعلق ہيں زيادہ تر اى وقت واقع ہوتے ہيں جيسے رازكى بات كهنا عيب كر بھا گنا جورى كرنا بدكارى كرنا جادو وُ نداور شيطانى اعمال۔

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى اور جُمع دن كُنتم ہے جب سورج طلوع ہونے اور بادل اور غبار چھنے كے ساتھ روش ہو جو كه روح اور قلب كوروش كرنے ميں نيك عمل كانمونه ہے اور جو اعمال ظهور اور بے جابی كے ساتھ تعلق ركھتے ہيں زيادہ تر اس ميں واقع ہوتے ہيں جيسے روزى كي تلاش كمائى كے ساتھ تعلق ركھتے ہيں زيادہ تر اس ميں واقع ہوتے ہيں جيسے روزى كي تلاش كمائى كے ليے تلوق كامنتشر ہوتا ايك دوسرے كى ملاقات اور فائدہ دينا اور ليا۔

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأَنْثَى اوراس حَمَتِ النَّى كَ قَتَم جَسَ نے حیوانات كى اقسام سے نراور مادہ كو پیدا فرمایا۔ تاكہ وہ ملیس اور نسل دودھ اور تھى پیدا ہو۔ اور نراور مادہ كى بيد پیدا نشر اور شراور كمال اور نقصان كے تلوط ہونے كانمونہ ہے اور بے شار نتائج اور ثمرات پیدا ہونے كا سبب ہے كہ ایك میں خیر اور شرا كمال اور نقصان كى تو تع نہ تمى اور جس مضمون پریہ تین قسمیں اُٹھائى مى جی بیا ہے كہ

ان سَعْیکُد اَشَتْی خَمِین اعمال اور معروفیات میں تمباری کوشش بہت مختف اور رفارگ ہے ایمان اور کفر ملاح اور شق عاوت اور بخیلی علی ہزاالقیاس اور آومیوں کے ایمان کا اختلاف اس حد تک ہے کہ اسے ضبط نہیں کیا جا سکتا محر یہ کہ ان ک بنیادی تشمیس تین اقسام سے باہر نہیں ہیں۔ پہلی تشم صرف خیر دوسری قتم نراش تیسری قتم بنیادی تشمیس تین اقسام سے باہر نہیں ہیں۔ پہلی تشم صرف خیر دوسری قتم نراش تیسری قتم بنیادی قتم ان تین اقسام کا اشارہ فرمایا میں ان تین اقسام کا اشارہ فرمایا میں ہے۔

محض خیران اعمال میں ہے جن کا ظاہر و باطن نیک ہواور وہ ایباعمل ہے جس میں تین marfat.com

ارکان پائے جاکیں اس کی صورت جائز ہو نیت خالص ہوادر صحیح عقیدے اور درست یقین رمنی ہو۔

محض شروہ ہے جس میں تینوں چیزیں نابید ہوں اس کی صورت ناجائز نیت فاسداور وہ فلط عقیدے پہنی ہواور جس میں خیراور شرکاوط ہوں اس کی چند تشمیں ہیں۔ بہلی تم یہ ہے کہ اس کی صورت جائز ہواور نیت فراب جیساریا کاری کی نماز دوسری تم یہ ہے کہ اس کی صورت ناجائز اور نیت صحیح جیسے شہدائے کر بلا کے لیے نوحہ و ماتم اور شوقی الٰی اُبھار نے کے لیے مزامیر کا اسنا 'تیسری تتم ہیہ ہے کہ صورت اور نیت دونوں صحیح ہوں مگرا عقاد درست نہ ہو جیسے کفار کی مالی عبادات۔ جو صرف اللہ تعالیٰ کی رضا کے لیے عمل میں لاتے ہیں اور ان جیسے کفار کی مالی عبادات۔ جو صرف اللہ تعالیٰ کی رضا کے لیے عمل میں لاتے ہیں اور ان اقسام میں سے ہرا کی بہت وسعت رکھتی ہے اور اس میں بے شار انواع اقسام کی مخوائش ہیں ہوئی ہیں اور ہرا کی قتم ثواب اور ہے جیسا کہ خور کرنے والے پر مخفی نہیں ہے لیکن ان تمام انواع واقسام کی جا نے ہا تو شرے خواب اور عمل ایک دوسرے کے ساتھ مخلوط ہو کر تقاضا کرتی ہے۔ چنا نچہ مال فرج عذاب کا جدا جدا یا ایک دوسرے کے ساتھ مخلوط ہو کر تقاضا کرتی ہے۔ چنا نچہ مال فرج کی جارے میں اس اختلاف کی تفصیل کہ اس سور تا ہیں کی بیان کرنا مقصود ہے بیان کی جاری ہیں۔

فَاهَا مَنْ أَعْظَى تَوْجَسَ نَهِ اپنا مال دیا۔ وَاتَقَی اور ریاء وسمعہ سے محناہوں اور شہوتوں میں خرج کرنے کے بعد بھی شہوتوں میں خرج کرنے کے بعد بھی احسان جہلانے اور عوض ما تھنے سے پر جیز کیا۔

دَصَدَّنَ بِالْعُسْنَى اور الحجی شریعت اور الحجی جزا کی تقدیق کی جس کی اسے وار آخرت میں تو تع ہے۔ تو اس شخص نے وہ عمل کیا جو کہ ہر طرح سے زی فیر ہے۔ اس کا ظاہری عمل مال دینا ہے جو کہ ساری شریعتوں میں جائز ہے۔ اور اس کا باطنی عمل ریاء وغیرہ سے بچنا ہے جو کہ نیت کو سحے کرنے اور مال فرج کرنے کے انجام کو باتی رکھنے میں کافی ہے۔ اور اس کا عقیدہ بھی سمجے اور درست ہے کہ انجی شریعت اور آ فرت میں اعمال کی جزا کی قور اس کی تو تع پر مال فرج کرتا ہے۔ بیں وہ انجی جزا کا مستحق ہو میا۔ تقدیق کرتا ہے۔ اور اس کی تو تع پر مال فرج کرتا ہے۔ بیں وہ انجی جزا کا مستحق ہو میا۔

چنانچ فر مایا جار ہاہے کہ

فَسَنْ بَسِوْهُ لِلْبُسُوٰى لِي قريب ہے کہ ہم اس کی نظر میں آسانی کی راہ آسان کر رہے۔ لیے کہ ہم اس کی نظر میں آسانی کی رات اور آخرے کے درجات قرب کی تو نیق عطافر مائیں تاکہ اس کی وجہ سے نیکیاں اور عبادتیں آسان ہوجائیں اس لیے کہ نیک اعمال کی خاصیت ہے کہ جب کوئی فخص ان پر بینی کی کرتا ہے اس کے نفس میں نورانی استعداد پیدا ہوجاتی ہے جس کی وجہ سے اس پر خیر کی راہ پر چلنا آسان ہوجاتا ہے جی کہ اس کا تکلف طبیعت کا تکم حاصل کر لیتا ہے اور العبادة طبیعت ٹائیدا سے اس رہ چلنے میں کوئی تکلیف اور مشقت نہیں رہتی ۔ پھر جب موت اور العبادة طبیعة ٹائیدا سے اس راہ پر چلنے میں کوئی تکلیف اور مشقت نہیں رہتی ۔ پھر جب موت اور اس دنیا سے جانے کا وقت پنچ تو اسے اور آسانی نصیب ہوتی ہے اور موت کے بعد کیرین کے سوال حشر ونش مساب میزان اور بل صراط سے گزرنے میں بھی اس پر کوئی رنج اور دُکھنیں اس پر کوئی رنج اور دُکھنیں رہتا ہے اور ان خت مقامات میں اس پر کوئی رنج اور دُکھنیں رہتا ۔

وَاَمَّا مَنْ بَوْحِلَ وَاسْتَغْنَى اورجس فے اپنے مال میں بکل کیا اور اخروی تعتوں سے لاہروائی کی اور استے اپنی لاہروائی کا سرمایہ مجما۔

و کلک با آنجسنی اوراچی شریعت اوراچی جزاکی تکذیب کی تواس شخص نے ایسا علی بروزاشر ہاں لیے کہ بخل تمام دینوں میں ندموم اور معیوب ہے اور آخرت کے تواب سے لا پروائی کرنے کی وجہ سے انجی نیت بالکل دگر گول ہوگئی۔اورشریعت کی تکذیب کی وجہ سے اس کا عقیدہ خزاب ہو گیا۔ پس نداس کے ظاہری عمل میں جو کہ پخل سے نہ باطنی عبر جو کہ تواب آخرت سے مال کی وجہ سے لا پروائی کرنا ہے اور نداس کے اعتقاد میں جو کہ شریعت کی تکذیب ہے۔ کی وجہ سے انچھائی ندر بی پس اس کی جزا بہی تحض کری ہوگ چانچے فرمایا جارہا ہے کہ

فَسَنَيْسِوْهُ لِلْعُسُوٰى تو قريب ہے كہ ہم اس كى نظر ميں دشوارى اور تنى كى راه آسان كريں حتى كہ وہ علط راه اور يُر سے اعمال ميں تكليفيس أشاتا ہے اور رخى برداشت كرتا ہے جبكہ دوركعت نماز ميں ستى كرتا ہے اور جى جراتا ہے جبيا كدوسرے مقام پراس تتم كے لوگول

marfat.com

کے بارے میں فرمایا گیا ہے کہ إِذَا قَاهُوْا إِلَى الصَّلُوةِ قَامُوْا مُسَالُى نَيْرَ فرمایا گیا کہ وَلَّقَا الْحَبُورَةُ الْاَعَلَى الْمُعَاشِعِیْنَ اور جب موت کا وقت آ پہنچ تو انتہائی بخق ہے اس جہان سے جائے اور موت کے بعد کمیرین کے سوال حشر ونشر حماب میزان اور جہنم کے کئی قسمول کے عذاب میں بخق پر بخق دیکھے اور جس مال کو اس نے اس سم کی بختیوں کے لیے سنجال رکھا تھا اور اسے اس کی تو تع تھی کہ بختی کے وقت کام آئے اور بختی کو آسان کرے اس سنجال رکھا تھا اور اسے اس کی تو تع تھی کہ بختی کے وقت کام آئے اور بختی کو آسان کرے اس سنجال رکھا تھا اور اسے اس کی تو تع تھی کہ بختی کے وقت کام آئے اور بختی کو آسان کرے اس سنجال رکھا تھا اور اسے اس کی تو تع تھی کہ بختی کے وقت کام آئے اور بختی کو آسان کی سنجا اس کی تو تع تھی کہ بختی کے وقت کام آئے اور بختی کو آسان کرے اس

وَمَا يُغْنَى عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدُى اور جب وه الماك موتواس كا مال اس كے كسى كام نه آئے اور ایک گفن کے سوا کہ بھی ہمراہ نہ لے جائے۔

یہاں جانا چاہے کہ نی آ دم کے اعمال جیسا کہتم ہیں اس کا اشارہ گزراہے ہیں تم کے ہیں اور جزا کے بیان ہی صرف دوقتم کے اعمال کی جزا کے ذکر پراکھاء فرمایا گیا جو کہ فیر کورش جی اور شرکھن ہیں اور اس عمل کی جزا کوجس میں فیراور شرکھن طور کورمیان میں نہیں لایا گیا۔اس کی وجہ یہ ہے کہ عقل مند تھوڑی ہی توجہ ہے اس کے تھم کو ان دوقتموں کے تھم سے معلوم کرسکتا ہاں لیے کہ جہال فیراور شرجع ہوتے ہیں المنتصحه تتبع الاخس الاد ذل لین نتیجہ ردی اور ذکیل شے کے تالع ہوتا ہے کے مطابق شرکا تھم عالب آتا ہے اور فیر کا تھم مغلوب ہوجاتا ہے۔

مسئله شرعي

چنانچ شریعت میں بیہ بات طے شدہ ہے کہ جو حیوان طال اور حرام جانور سے پیدا ہوا ہو کرا کے جیسے نچر اور جس مال میں حلال اور حرام مخلوط ہو کرا کیک جان ہو جا کیں جیسے اپنا دودھ چیسے ہوئے پانی کے ساتھ مل کر شربت ہو گیا ہو جرام ہوتا ہی نے ساتھ مل کر شربت ہو گیا ہو جرام ہے تو ای تیاں پر جب کی عمل میں خیراور شرجع ہو جا کیں وہ عمل شرقر ارپائے گا اور اس کا خیر ہونا مغلوب ہو جا گئے گا۔ والند اعلم

مذكوره تين قسمول كي شخصيص ميں نكته

اور بعض مفسرین نے ان تمن قسموں کوخصوصیت کے ساتھ بیان کرنے کے تکتہ کے marfat.com

متعلق یوں ذکر فرمایا ہے کہ بی آ دم کے اعمال کا اختلاف بیان کر تامقصود ہے۔ پہلے رات اور دن کی قتم لائی گئی جو کہ اعمال کے اختلاف کا زمانہ ہے چوروں کی رات اور عابدوں کی رات میں اور بدکاروں کی رات اور پر بیخ گاروں کی رات میں جوفرق ہے بالکل ظاہر ہے اس طرح دن میں بھی اس کے بعد بی آ دم کے اصل الاصول جو کہ زراور مادہ بین میں بھی اعمال افعال ہمت اور رغبت کا پورا اختلاف ہے۔ مردوں کے اعمال اور بیں اور ان کی ہمتیں بلند جبکہ عورتوں کے اعمال اور بیں اور ان کی ہمتیں بلند جبکہ عورتوں کے اعمال اور بیں اور ان ہمتیں بست مردوں کی رغبت نام اور مرتبہ حاصل کرنے میں معروف ہے جبکہ عورتوں کی رغبت لباس اور آ رائش میں محدود ہے۔ لی ان دونوں اصول کی قتم بھی یا دفر مائی گئی تا کہ بی آ دم کے اعمال کے مختلف ہونے ہمتیں اور محرکات جدا جدا جدا ہونے کی دلیل ہو کہ اصل کا تھم فرع پر جاری ہوتا ہے ای لیے کہا گیا ہے کہ المولان سو لابعہ اور حضرت امیر خسر وقدس سرہ العزیز کا ارشاد ہے۔ در جوانم دی و مردی ہر کہ کارے پیش برد

در جوائمردی و مردی ہر کہ کارے تیں برد ناجوانمردی بود گر برزبال آروخن بینی مردمی میں جس نے کوئی کام کیا اگر زبان پر اس کے متعلق کوئی بات لائے تو

جوانمردی نیس موگی۔

آ نکہ او کرد و نکفت اورا شمر مرد تمام وانکہ اوکرد و بکفت او زن بود بے بچے نکن

جس نے کام کیا اور زبان ہے اس کی بات نہیں کی اسے پورامرد مجھواور جس نے کام کیا اور اس کے متعلق بات کی وہ بلاشہ عورت ہے۔

> آ نکہ ناکرد و عکفت آ نرا مدال جزینم مرد وآ نکہ ناکرد و مجفت ادر الخوال جزینم زن

اورجس نے کام کیا نہ بات کی اسے صرف آ دھا مرد مجھوا درجس نے کام نہ کیا اور بات کی اسے آ دمی عورت کہو۔

اورزمان کا تھم بھی زیادہ تر زمانے والوں پر جاری ہوتا ہے جیبا کد حضرت امیر الموشین marfat.com

على كرم الله وجهدن فرمايا م كه الناس بزمانهم اشبهِ منهم بأبائهم لوكو! اسيخ آباؤ اجداد کی نبست اینے زمانے کے مثابہ زیادہ ہوتے ہیں اور صدیث شریف میں حضرت اميرالمونين على كرم الله وجهد سے وارو ہے كہ ہم حضور صلى الله عليه وسلم كے ہمراہ ايك حض كے جنازے میں نکلے اور آپ تبر کی تیاری کے انتظار میں تشریف فرما ہوئے ہم آپ کے اردگرد بیٹ مسے مصلے اللہ عابیہ وسلم نے فرمایاتم میں سے برخص کی جکہ جنت یا دوز خ علم الہی میں مقدر ہے اور لورِ محفوظ میں لکھی ہوئی ہے جس میں تغیر و تبدل کی کوئی راہ نہیں۔ ہم نے عرض کی یارسول الله!صلی الله علیه وسلم اگر معامله یوں ہے تو ہم ایپے متعلق لویے محفوظ کی تحریر پر اعتاد کیوں نہ کریں اور عمل کیوں ترک نہ کریں کہ بے فائدہ تکلیف کیوں برداشت کی جائے جو ہونا ہے ہو کے رہے گا؟ آپ نے فرمایا کھل کرتے جاؤ۔ اس لیے کہ ہر کسی کواس عمل کی تو نیق دی جاتی ہے جس کے لیے اسے پیدا کیا گیا ہے اگر اسے نیک بخت پیدا کیا گیا ہے تواس سے نیک بخوں کے اعمال صادر ہوتے ہیں۔ اور اگراہے بدبخت بیدا کیا گیا ہے تواس سے بدبخوں کے اعمال صادر ہوتے ہیں تو جس طرح کہ ہرکسی کا مکان جنت یا جہنم مقرر ہے ای طرح اچھے کرے اعمال بھی برکی کے لیےمقرر ہیں پھر آپ نے بیرآ بت تلاوت فرما كَي فَأَمَّا مَنْ أَعْظَى وَاتَّظَى ٱخْرَتَكَ تلاونت فرما كَي _

مئلەتقىزىر كى اي<u>ك نفيس توجيە</u>

اور یہال بیآ بت تلاوت فرمانے سے ایک اور معن سمجھ میں آتا ہے یعنی تنہارے کام علم اللی میں مختلف اور دنیا میں کی کو نیک اور کسی کو فاس لکھا گیا ہے اور دنیا میں ای کے مطابق اس سے ایکے اور کرے اعمال صادر ہوتے ہیں۔ پس اعظی وَاتّظی وَصَدّقَ بِالْحُسْنَى سے مراد بیہ کے مطابق اس سے مقدر ہیں اور فَسَنَیسِوْ وَ لِلْمُسُورُی بِالْمُحْسَنَى سے مراد بیہ کے مطابق میں بیا عمال اس سے مقدر ہیں اور فَسَنَیسِوْ وَ لِلْمُسُورُی سے مراد بیہ کے کہ وہ و نیا میں ان کاموں کی تو فیق یا تا ہے۔

حاصل کلام یہ ہے کہ اعمال کو جس مرتبے میں دیکھیں ایک نتیجہ رکھتے ہیں۔ علم الہی میں کہ ایٹھے یُرے اعمال مقدر ہیں۔ اس کا پھل دنیا میں تو بنتی اور رسوائی کا عاصل ہونا ہے اس نے کہ دنیا عالم تقدیر کا سابیہ ہوا اس کے ساتھ اس کی نبعت ایسے ہے جیسے بنائی می ساتھ اس کی نبعت ایسے ہے جیسے بنائی می ساتھ اس کے ساتھ اس کی نبعت ایسے ہے جیسے بنائی می ساتھ اس کے ساتھ اس کی نبعت ایسے ہے جیسے بنائی می ساتھ اس کے ساتھ اس کی نبعت ایسے ہے جیسے بنائی می ساتھ اس کے ساتھ اس کی نبعت اس کے ساتھ اس کی نبعت اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ اس کے ساتھ اس کی ساتھ کی

چیز کی نبعت اس کے سانچے کے ساتھ ہوتی ہے کہ اس سے کم وہیش نبیں ہوسکتی اور اگر انسان سے صادر ہونے کے بعد ان اعمال کو دیکھیں تو اس کا پھل اُخروی جزاہے کہ آخرت اس کھیتی کے کاشنے کا وقت ہے جسے دنیا ہیں کا شت کر گئے ہیں۔

> بیب از مکافات عمل عافل مشو محندم از محندم بردید جو زجو این چنین گفته است پیر معنوی کائے برادر ہرچہ کاری بدروی

یعی عمل کی جزائے عافل نہ ہو گندم سے گندم اور جو سے جوا کتے ہیں۔ پیرمعنوی نے یوں فرمایا ہے کہ اے بھائی تو جو بوئے گا'وہی کائے گا۔

اور چونکہ یہاں اِک شبے کا گمان ہے کہ اگر نیکی اور بدی کی توفیق دربار الہی سے ہے تو پھر سب لوگوں کو نیکی کی توفیق کیوں نہیں دی جاتی اور پُر ائی کی راہ سے مجبور کر کے کیوں نہیں روکا جاتا تا کہ سب کو آسانی کی راہ میسر آئے اور کوئی شخص بختی کا چہرہ نہ دیکھے اس کے جواب میں ومقدے ارشاد فرمائے جارہ ہیں۔

پہلامقدمہ یہ ہے کہ إِنَّ عَلَيْماً لَلْهُ لَى تَحْتِق نَیْ اور بدی تک پہنچ کے رائے ک
رہنمائی اور دلالت کرنا ہمارے ذہ ہے۔ اور ہم یہ ہرکس کے لیے کرتے ہیں۔ پہلے تو ہم
نے ہرکسی کو قوت عقلیہ سمیت ظاہری حواس خمسہ اور باطنی حواس خمسہ عطافر مائے جو کہ خیراور شریمی تمیز کرتے ہیں۔ اس کے بعد ہم نے اخبیاء پلیم السلام کی بعثت کتابوں کے نزول شرائع اور احکام کے بیان جنت کی نفتوں اور جہم کی خیوں کا ذکر صاحب ارشاد لوگوں اور واعظوں کے تقر راور تنجیہ اور عبرت کے اسباب کو پیدا کرنے کے ساتھ سیدھی راہ کو نیزھی راہ سے جدا اور متاز کر کے سب کو پید دے دیا۔ اور مجبور کر کے اچھی راہ پر چلا تا اور نیزی راہ سے ورد کو کا تماری ذمہ داری نہیں ہے بلکہ دوراستوں ہیں ہے ایک پر چلنے کو اختیار کرنا ہم نے دور رکھنا ہماری ذمہ داری نہیں ہے بلکہ دوراستوں ہیں ہے ایک پر چلنے کو اختیار کرنا ہم نے بندے کے ارادے اور خواہش کے ساتھ وابستہ کر چھوڑ ا ہے۔ ورنہ امتحان اور اختیار کا بت نہ بندے کے ارادے اور خواہش کے ساتھ وابستہ کر چھوڑ ا ہے۔ ورنہ امتحان اور اختیار کا بت نہ

ہواوراطاعت گزار نافر مان سے متاز نہ ہو کیونکہ جب تو راہِ راست پر چلنے کے لیے سب مجبور ہوجاتے اور ہدایت پانے اور گراہ کم میں میں میں بند آتی بلکہ ہدایت پانے اور گراہ کر خوشیات میں میں نہتی اور آدی آسان ستاروں ہوا مٹی پانی اور آگ کی طرح چار و کرنے کی صورت ہی نہتی اور آدی آسان ستاروں ہوا مٹی پانی اور آگ کی طرح چار و ناچار تخیر اور اطاعت میں ہوتا اور انسانی تخلیق کی خصوصیتیں جو کہ ان چیز وں سے پور القیاز چاہتی ہیں ہوتا اور انسانی تخلیق کی خصوصیتیں جو کہ ان چیز وں سے پور القیاز چاہتی ہیں ہے کار اور معطل رہ جاتیں اور کیا نہ کیا برابر ہوجاتا۔

دوسرا مقدمہ ہے کہ وَاِنَ لَنَا لَلْاَ خِرَةَ وَالْاَوْلَى اور حَقِينَ عالَم آخرت اور عالم دنیا ليے اور ہمارے ہی تعرف میں ہے۔ تو جو ہم ہے آخرت طلب کرے اسے ہم آخرت دیتے ہیں۔ اور جو دنیا طلب کرے اسے دنیا تک پہنچاتے ہیں اور جو دونوں چاہوتو دونوں سے نوازتے ہیں اور آگر ہم سب کو مجبور کر کے آخرت کی راہ پر چلاتے تو جہانِ دنیا خراب اور بے وقعت ہو کر رہ جاتا۔ اور دغوی آرائشیں اور تکلفات عدم کے پردے میں خراب اور بے وقعت ہو کر رہ جاتا۔ اور دغوی آرائشیں اور تکلفات عدم کے پردے میں کھیں رہ جاتیں۔ اور انہیں حاصل کرنے میں کوئی رغبت نہ کرتا۔ بس دونوں جہانوں کی تغیر کے لیے لوگوں کی ہمتوں کو ہم نے فقف کر دیا اور ہم کی کے دل میں ای کام کی خواہش ڈال دی جو کہا تی اور کیا تی خوب کہا گیا دی جو کہا تی دی جو کہا تیا۔

ہر کے رابیر کارے ساختہ میل آل را در دلش اغداعتد

اورجس ونت فَسَنَيسِرُه لِلْعُسُرِى كَلفظ مِن اجمالى طور پراس بخي كا ذكر فرمايا كيا جوكه بدهمل كو در پيش ہے اب اس بخي كى اقسام مِن سے جوسب سے زيادہ شديد اور فتيج ہے ' اس كا ذكر فرمايا اور اس سے ڈرايا جاريا ہے۔

لاَيصْلَهَا إِلَّا الْأَشْفَى اس آك من تمام بدبخول من زياده بد بخت بى واخل موكاجو

که کافر ہے۔

بدسختی کی اقسام

یہاں جانا چاہے کہ بربختی کی چند تسمیں ہیں کی کو دنیا میں بد بخت کیا جاتا ہے کہ اس
کاجہم کی زحمت میں جاتا ہوتا ہے اور ہر تلاش و کمائی میں مال حاصل کرنے سے محروم رہتا
ہے جتی کہ لوگوں کے نزدیک خوار زلیل اور بے وقعت ہوتا ہے۔ اور کسی کو امور آخرت میں
بد بخت کیا جاتا ہے اور اس کے بھی کئی درجے ہیں۔ بعض کو صغیرہ گناہوں پر ضد کرنے اور
نیکیوں میں کوتائی کرنے میں جاتا کرتے ہیں اور کسی کو کبیرہ گناہوں کے ارتکاب اور تو بہ ک
تو نیت سے محروی میں گرفارر کھتے ہیں۔ اور کسی کو بد بختی کے سب سے او نیچ مرہے شرک و
کفر کے ساتھ نامزد کرتے ہیں۔

تو جب د نیوی امور فانی اور زائل ہونے والے ہیں ان امور میں بریختی کا اتنا وزن نہیں ہے۔اللہ تعالیٰ کے ہاں بریخت وہی ہے جو کہ امور آخرت میں بدبخت ہے۔اور ان امور میں ہے بھی بعض اس سطح کے ہیں کہ برزخ میں ختیاں و کیمنے اور کی قتم کا عذاب چکھنے اور مقامات قیامت حشرونش حساب اور میزان میں رنج اور مشقت اُٹھانے اور انبیاء میہ السلام اور اولیاء اللہ کی شفاعت کی المداو کی وجہ ہے ختم ہو جا کیں گے جیسے مغیرہ اور کبیرہ گناہ اور بعض اس سطح کے ہیں کہ ان کا اثر زائل نہیں ہوگا اور ان کے قد اور میں کوئی سفارش کام نہیں آئے گی تو جو خض پہلی قتم میں گرفتار ہے شقی ہے اور جو دوسری قتم میں گرفتار ہوا اُشقیٰ ہوگیا ای لیے اُتھیٰ کی تو جو خض پہلی قتم میں گرفتار ہے شق ہے اور جو دوسری قتم میں گرفتار ہوا اُشقیٰ ہوگیا ای لیے اُتھیٰ کی تفیر اس آئے۔ کے ساتھ فر مائی جاری ہے۔

آلینی گذت وہ ہے جس نے دین کی گذت وہ ہے جس نے دین کا در کئی گذیب کی اور حکم خداوندی سے دوگردانی کی۔اور یہ نیس سوائے کا فرکے کسی پر پوری نہیں اگر تی کی کونکہ مومن اگر چے گناہوں کا ارتکاب کرتا ہے لیکن اس کی دین تقعد اپن میں رخنہ بیس برتا اور وہ حکم خداوندی کو قبول کرنے ہے کہی روگردانی نہیں کرتا۔

ايك سوال اور اس كاجواب

یہاں ایک سوال باتی رہ گیا اور وہ ہے کہ جسے انتخیٰ کامعنی کا فر مواتو آگ میں Marfat. Com

داخل ہونے کوکا فر میں منحصر کرنا کس طرح درست ہوا کیونکہ بعض ممناہ کارمومن بھی آئے۔ میں داخل ہوں مے؟ (العیاذ باللہ)

اس کا جواب میہ ہے کہ پہلے اشارہ ہو چکا ہے کہ شعلے مارنے والی آگ سے مرادایی آگ ہے جو کہ کفار کے ساتھ مخصوص ہے۔ گناہ گارمومن کوگر چہ آگ میں داخل ہونا ہوگا لیکن دوسری آگ میں نہ کہ اس آگ میں۔ تو حصر درست ہے۔

اور بعض مفسرین نے یوں فرمایا ہے کہ گناہ گار مومن کا دوزخ میں داخل ہونا چونکہ گھور نے اورادب سکھانے کے انداز میں ہے۔ گویا داخلہ ہے بی نہیں ایبادا خلہ جس کے بعد نکلنا ثابت ہی نہ ہو کافر کے ساتھ مخصوص ہے۔ پس اس متم کا حمر مراد ہے نہ کہ مطلق داخلہ جس طرح کہ کہتے ہیں کہ جنگ نہیں کی گرزید نے نئیمت نہیں پائی گر عمر و نے یعنی زیادہ جنگ نہیں کی گرزید نے اور بے ثار مال غنیمت ہاتھ ندآ یا گر عمر و کے۔

چونکہ آگی آ بت میں وَسَیْجَعْبُهَا آلاتُظی کے الفاظ وارد ہیں کرف حمر ندکور نہیں ہیں وہاں بیشبہ بالک ہی وارد نہیں ہوتا۔ اور وہ جو کہتے ہیں کہ آگر ناراتلظیٰ ہے مراو کفار کے ساتھ مخصوص آگ ہے تو اس ہے دُور رہنے ہیں تمام ایمان والے شریک ہیں تو آئقی کی تعریف کیا ہوئی؟ ہم کہتے ہیں کہ اس آگ سے دُور رہنا بھی بڑی وسعت رکھتا ہے اس سے انتہائی دُوری آتھی کے لیے ہی جبکہ دوسرے ایمان والوں کے لیے اس قدر دُوری نہیں ہے۔ نیز دُوری آتھی کے لیے ہے جبکہ دوسرے ایمان والوں کے لیے اس قدر دُوری نہیں ہے۔ نیز اختال ہے کہ وَسَیْجَنَبُهَا کی ضمیر مطلق آگ کی طرف لوئی ہوجیسا کہ خدکورہ آگ کا مقید ہونا دلالت کرتا ہے اور اس صورت میں مفید مدح ہو۔

تقى اوراتقي كى تعريف

وَسَيْجَنَبُهَا الْأَتْفَى اور قريب ہے كدائ آك سے اے وُور ركھا جائے جوكہ بہت تقوى والا ہے اور المي شرع كى اصطلاح ميں تقى وہ ہے جوكہ كفر كبائر اور صغائر ہے پر بيز كرے۔ اور اگر بمى كوئى مناہ صاور ہوجائے تو تو بداستغفار اور ندامت كے ساتھ اس كا جلد تدارك كرے تاكدائ كا اثر ول ميں جگہ نہ پاڑے اور پخت نہ ہوجائے۔ اور اتق كا مرتبہ اس حد سے ذیادہ اونجا ہے اور وہ ہے كہ آ وہی شریعت وطریقت جھوڑنے ميں بھی احتیاط اس حدسے ذیادہ اونجا ہے اور وہ ہے كہ آ وہی شریعت وطریقت جھوڑنے میں بھی احتیاط اس حدسے ذیادہ اونجا ہے۔ اور وہ ہے كہ آ وہی شریعت وطریقت جھوڑنے میں بھی احتیاط اس حدسے ذیادہ اور وہ ہے کہ آ وہی شریعت وطریقت جھوڑنے میں بھی احتیاط اس حدسے ذیادہ اور وہ ہے۔ اور وہ ہے کہ آ دہی شریعت وطریقت جھوڑنے میں بھی احتیاط

اور پر ہیز کرے اور گناہ کے وسوسوں اور نمری نیتوں سے بھی بنیجے اور ظاہر و باطن کو یکساں رکھے اور ریمعنی بہت تا در اور تایاب ہے۔

اور یہاں مفسرین کے اجماع کے مطابق آتی سے مراد حضرت ابو برصدیق رضی اللہ عنہ ہیں کہ بیسورۃ آپ کی شان میں نازل ہوئی جیسا کہ اعمیٰ سے مراد اُمیہ بن خلف ہے جس نے شقاوت کفر کو بخل نافر ماندل معفرت بلال رضی اللہ عنہ کوستانے اور اسلام کی عدادت کے ساتھ جمع کر کے اشتیٰ کا درجہ حاصل کیا تھا۔

انضل البشر بعدالانبياء يبم السلام حضرت صديق اكبروضي التدعنه بي

اورائل سنت وجماعت نے ای لفظ کے ساتھ انہا علیم السلام کے بعد جو کہ خارج از جدت بین حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے ساری اُمت سے افضل ہونے کی دلیل پکڑی ہے اور دلیل اس طرح پکڑی ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کو اللہ تعالیٰ نے یہاں آفی فرمایا جبکہ دوسری آیت میں فرمایا ہے اِنَّ اکْدَ مَکْمُ عِنْدَ اللّٰهِ آتُقْکُمْ تو دونوں یہاں آفی فرمایا جبکہ دوسری آیت میں فرمایا ہے اِنَّ اکْدَ مَکْمُ عِنْدَ اللّٰهِ آتُقْکُمْ تو دونوں آیات کے مجموعی تقاضے کے مطابق ثابت ہوا کہ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ اللہ تعالیٰ کے بال اکرم الناس ہوں اور افضلیت کامعنی کی ہے۔

افضليت كےخلاف تفضيله كى دليل اوراس كاجواب

اور فرقد تغفیلہ والے کہتے ہیں کہ اس آ بت بھی آفی سے مرادتی ہے نہ یہ کہ آپ کا تقویٰ ہرکی سے برحا ہوا ہواس لیے کہ حضرت ابو برصدیق رضی اللہ عنہ تقویٰ ہیں جناب رسول کریم علیہ الصلوة والسلام سے کمتر ہیں۔ پس اس معنی بیں آفی کا اطلاق ان پر درست نہیں بیٹھتا بلکہ یہ لفظ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ مخصوص ہوگیا اور جب آفی بحق تق ہوتو آپ کی افغلیت پر دلالت نہیں ہوتی۔ آپ کی افغلیت پر دلالت نہیں ہوتی۔

افل سنت اس کا جواب بیددیتے ہیں کہ آتی کو تھی کے معنوں میں لین الغیب عربیہ کے مطاف ہے تو کلام الی کو جو کہ قرآن عربی ہاس پر محمول کرنا درست نہ ہوگا۔ اور اس منی پر محمول کرنا درست نہ ہوگا۔ اور اس منی پر محمول کرنا درست نہ ہوگا۔ اور اس منی پر محمول کرنے کی جو ضرورت بیان کی گئی ہے وہ یوں دُور ہو جاتی ہے کہ کلام سارے لوگوں کے بارے میں ہے نہ کہ انہیا و کیسیم السلام کے بارے میں ایس کے کہ میں ہے نہ کہ انہیا و کیسیم السلام کے بارے میں ایس کے کہ میں ہے ہے کہ اس کے کہ اس کے کہ السلام کے بارے کہ السلام کے بارے کے السال کی کیسی کے کہ السلام کے بارے کہ السلام کے بارے کہ السلام کے بارے کہ السلام کے بارے کے کہ السلام کے بارے کے السلام کے بارے کے السلام کی بارے کے کہ السلام کے بارے کہ السلام کے بارے کہ السلام کی بارے کے کہ کا السلام کی بارے کے کہ کی بارے کے کہ کا السلام کی بارے کے کہ کا السلام کی بارے کہ کا السلام کے بارے کے کہ کا السلام کی بارے کے کہ کا السلام کی بارے کے کہ کا السلام کی بارے کے کہ کی بارے کو بارے کی بار

الله تعالیٰ کے حضور عزت اور مرتبے میں انبیا علیم السلام متاز ہیں انبیں سارے لوگوں پر اور سارے لوگوں پر اور سارے لوگوں کو ان پر قیاس نہیں کیا جا سکتا۔ (معلوم ہوا کہ حضور علیہ السلام بلکہ تمام انبیاء علیم السلام کواپنے او پر قیاس کرنا عام انسانی کمزور یوں اور ضابطوں پر قیاس کر کے ان میں علیم السلام کو اپنے او پر قیاس کرنا عام انسانی کمزور یوں اور ضابطوں پر قیاس کر کے ان میں عام لوگوں کی سفات کا عقیدہ رکھنا خشاء قرآن مجید سے کملی بعناوت ہے عارف روی رحمة الله علیہ نے کیا خوب فر مایا

کار پاکاں را قیاس از خودمگیر زانکه باشد در نوشتن شیر و شیر

(محرمحنونا التي غفرله)

پس عرف شرع میں درجات کی فضیلت اور بڑائی کے سلسلے میں اس قتم کے الفاظ اُمت کے لیے جنسوص کیے جاتے ہیں اور عرف کی تخصیص ذکر کی تخصیص سے زیادہ تو ی اے جنا نجہ جو کہے کہ گندم کی روٹی دوسری روٹیوں سے بہتر ہے تو اس سے بادام کی روٹی سے افغال ہونا ہر گزنہیں سمجھا جائے گا اس لیے کہ بادام کی روٹی کا استعمال معروف ہو اور بحث سے فارج ہے کونکہ اس قتم کے مقام میں بحث دانوں اور غلوں کے ساتھ مخصوص ہوتی ہے نہ کہ بچلوں اور میووں کے ساتھ۔

اور اللِ سنت کے بعض بزرگوں سے سنا گیا ہے کہ فرما رہے تھے کہ یہاں آفی اپنے معنوں میں ہے لین ، ہ جو اپنے تمام ماسوا ہے تقویٰ میں بڑا ہوخواہ تیفیر ہو خواہ اُمت لیکن ان لوگوں کے ساتھ مخصوص ہے جو کہ حیات طاہری میں ہوں۔ پس حضرت صدیق اکررمنی اللہ عنہ اُن عرکے آخری حصے میں جو کہ سیدعالم صلی اللہ علیہ وسلم کی رحلت کے بعد آپ کی طافت کا زمانہ تھا اس کلے کا مصداق ہو سکتے ہیں اور چونکہ حضرت عینی علی نہینا وعلیہ السلوة والسلام آسان میں اُنھائے کئے ہیں اور وہ اس ہے مشتیٰ ہیں اور آفی کے لیا زم نہیں ہے والسلام آسان میں اُنھائے کئے ہیں اور وہ اس ہے مشتیٰ ہیں اور آفی کے لیے لازم نہیں ہے کہ ہروقت اور زندوں اور رحلت کرنے والوں میں سے ہرخض کی نبیت سے تقویٰ میں بڑھا ہوا ہو ورزئری کو آفی کہنا درست نہ ہو کو کہ کہنا ہیں ہے اور شرقی طور پر قابلِ تعریف ہر منصب میں اعتبار آخری عمر کا ہے جسے صلاحیت 'فوھیت' تعلیت'

ولایت اور نبوت اس لیے ان لوگول کو جو کہ عمر کے آخری جصے میں ان درجات سے مشرف ہوئے ہیں اس ورجات کے الفاظ کے ساتھ یا دکرتے ہیں اگر چدا قائل میں انہیں بدرجات حاصل نہ تھے تو آفی وہ ہے جو کہ عمر کے آخری جصے میں جو کہ اعمال کے اعتبار کا وقت ہے دوسرے موجود لوگوں ہے تقوی میں بڑھا ہوا ہواور اس کے ساتھ کسی تکلف اور تاویل کے بغیر مدی ثابت ہوجاتا ہے۔

اور چونکہ آگ سے دُورر کھنے کے سلسلے میں آفلیٰ کا ذکر فرمایا میں اس کے پچھے اجتمے اوصاف کا بھی ذکر فرمایا جارہا ہے جو کہ اس سورۃ کے نزول کے وقت بارگاہِ خداوندی میں قبول ہوئے تنھے۔

الکینی یونی ماکنہ لین وہ صاحب تقوی جو کہ اپنا مال راہِ خدا میں دیتا ہے جیسا کہ حضرت بابل اور دوسرے غلاموں اور کنیروں کے خرید نے میں جو کہ مشرف بداسلام ہو چکے سے اور غلام ہونے کے ناطے گرفتار اور سخت عذاب میں جالا تنے سونا دے کرانہیں خلاصی دِلا کر آزاد کیا اور حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی ضروریات اور اخراجات میں اور سامانی ہجرت اور مجد نبوی علی صاحبا الصلوات والتسلیمات کے لیے قطعہ زمین کی خریداری میں دیا اور یہ مان دیا ہور یہ کا مقعد یہ ہے کہ

یَتَزِیْ وہ اپنے آپ کو پاک کرتا ہے اور دہم ہال دے کرتر تی کررہا ہے اوراس کا کمال اس پاکیزہ بودے کی طرح ہے جے آب وجوا مہا ہے اور وہ دن بدن نشو ونما پارہا ہے اس لیے کہ ذکو ہے دومن جی بی یا کیزی اور نشو ونما۔اے دونوں معنی حاصل جیں۔

وَمَا لِاَحَدِ عِنْدَهُ مِنْ يِنْعَدَةٍ تُجُوزى اوراس پركى كاكوكى انعام اوراحان بيس ب كرمال وكراس بدله چكايا جائے كيونكه احسان كے بدلے بس مال دينا بھى قابل تعريف بيكن چونكه نام اور مرتبيكا فتذر كھتا ہے اس ليے اخلاص كے كمال كے مرتب ہے بيچے رہ حاتا ہے۔

فضائل ابوبكر صديق بربان رسالت على صاحبها الصلوات والتسليمات

اور مدیث مجمع می وارد ہے کے حضور ملی اللہ علیہ سلم نے فریا جس کا منہوم ہیہ ہے کہ Tharfat. Coin

جس کسی نے بھی میری خدمت کی ہے جس نے اس کا بدلہ چکا دیا ہے سوائے ابو بکر صدیق کے انہوں نے میری وہ خدمت کی ہے کہ جس نے اس کا بدلہ نہیں چکایا قیامت کے دن اللہ تعالیٰ ان کی جزا کی خود کفالت فرمائے گا۔ یہیں سے حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے تواب کا اعدازہ لگالیما جا ہے۔

نیز حدیث مجے میں وارد ہے کہ حضور ملی اللہ علیہ وسلم نے حیات ظاہری کے آخری ایا میں و صال مبارک سے چندروز پہلے خطبہ ارشاد فر مایا اور اس خطبے میں حضرت ابو بر صدیت رضی اللہ عنہ کے مناقب اور فضائل ارشاد فر مائے۔ ان میں سے بیہ ہے کہ جھ پر کسی کواس قدر مائی بدنی اور جانی حق خدمت ثابت نہیں جس قدر کہ ابو بکرکو ہے اس نے اپنی صاحب زادی میر سے نکاح میں دی اور جھ سے حق مہر نہ کیا۔ بلال کو اپنے خالص مال سے فرید کر آزاد کیا میر ساتھ میں دی اور جھ سے حق مہر نہ کیا۔ بلال کو اپنے خالص مال سے فرید کر آزاد کیا میر ساتھ میر وقت میری خم خواری کی۔ اب ابو بکر کے وروازے کے سوا اس مجد اپنے مال کے ساتھ میر وقت میری خم خواری کی۔ اب ابو بکر کے وروازے کے سوا اس مجد کے سارے دروازے بند کر دو۔

اور حضرت ابو بحرصدیق رضی الله عند کے مرتبے کا کمال ہے کہ حق تعالی ان کے دی ا خلوص کی کوابی خود ارشاد فرمار ہاہے اور فرماتا ہے کہ وہ یہ سب کام نہیں کرتا۔

الله البتفاء وجد ربته الاعلى مرائ بروردگارى رضا جائ كے ليے جوكہ بلندو
الله إلا إدرات اس مال كورج كرنے ملى كس طرح نفسانيت بيش نظر نيس بلك
الا إدرات اس مال كورخ كرنا بحى مقعود نيس حورت خديث مح ملى ہے كہ جب حضرت
الا بكر صديق نے مسلمان فلاموں اور لوظ يوں كو بحارى مال كوش فريد كر آزاد فر مايا تو
آپ كے باب الوقاف نے طامت كى كراكر جہيں غلام آزاد كرنا منظور تھا تو جا ہے تھا كہ
كارا مدفلاموں كو جوكہ كمائى كرنے اور تمبارى الدادكر نے پرقاور ہوت فريدكر آزادكرتا بيد
كرور غلام اور لوندياں جوكى كام كے بيس بيں اور آزادى كے بعد بحى ان كى خوراك اور
پرشاك تم نے اسے ذے له ركى كام كے بيس بيں اور آزادكرنے كاكيا فاكدو۔

حفزت ابوبکرمدیق دمنی اللہ عنہ نے اپنے ہاپ کے جواب میں بھی کہا کہ اس کو کرکت marfat.com

ے میرامقصدی تعالی کی خوشنودی ہے اور محصیل ۔

اور جامع عبدالرزاق میں صحت کے طریقے سے مروی ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم
نے فربایا کہ مسلمانوں میں سے کسی کا مال میرے حق میں معنرت صدیق اکبر کے مال سے
زیادہ تافع نہ ہوا۔ راوی فرماتے ہیں کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے
مال میں بلا ججب اس طرح تصرف فرماتے جیسا کہ اپنے مال میں۔ آپ اپنے مال میں اور
ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے مال میں کوئی فرق اور اختیاز نہیں فرماتے ہے۔

اورسنن ابن ماجہ میں فدکور ہے کہ ایک ون حضور صلی الله علیہ وسلم نے فرمایا کہ جھے کی کے مال نے اتنا نفع نہ دیا جنتا کہ ابو بکر سکے مال نے نفع دیا اس وفت حضرت ابو بکر صدیق وہاں موجود تنے ان پر دفت طاری ہوگئ اور پھٹم پُرنم عرض کی کہ بارسول اللہ! میں اور میرا مال سب آپ کی ملک ہے اور اس واقعہ کو امام احمہ نے بھی روایت فرمایا ہے۔

نیز صرت مدین اکبر منی الله عند کر جا کا کال ہے کہ فن تعافی نے اپ رسول علیہ الله می ول جوئی اور خاطر داری کے مقام میں جس چرکا سورة واللی میں وعده فر مایا ہے کہ وکسوف یع فیلے کہ دیک فقد رضی ای کی ما تنداس سورة میں صرت الایکر معدین رضی الله عند کے لیے وعده فر مایا ہے کہ وکسوف یو فیلی اور بیتینا الایکر فعدا ہے راضی ہوگا یا فعدا الایکر خدا ہے راضی ہوگا یا فعدا الایکر سے اس لیے کہ رضیٰ کی ضمیر کے دوا حال ہیں۔ ایک یہ کہ صرت الایکر کی طرف اوئی مودووں مودووں میں مدی حاصل ہے اور کیا خوب کہا مودومرا یہ کہ فعدا تعالی کی طرف راج ہودووں مودووں میں مدی حاصل ہے اور کیا خوب کہا میں۔ ا

بخت اگر مدد کند دامنش آدرم بکف مربکشم زے طرب وربکشد ذے شرف مین اگر میرا بخت یادری کرے قیس ان کا دائمن پکڑلوں اگر بھی سمجنج کول تو تعظیم خوشی کی بات ہے ادرا گردہ سمجنج لیں تو تعظیم عزت ہے۔

حضرت جابر بن عبدالله رض الدعند ب روایت ب آپ نے فرمایا کہ ایک ون ہم مہاجر من اور انعمار کی ایک عندے مراتم حضور ملی الله علیہ وکلم کے درواز و پاک پر حاضر مہاجر من اور انعمار کی ایک بر حاضر مناد کا ایک بر حاضر مناد کی بر حاض

تے اور آپس میں محابہ کرام کے نضائل اور بزرگیوں کا ذکر کر دہے تھے ای اثناء میں پھے
آ وازیں جو بلندہوئیں حضور صلی اللہ علیہ وسلم دولت فانہ سے باہر تشریف لائے اور فر مایا کیا
کر رہے ہو؟ ہم نے عرض کی کہ محابہ کرام کے فضائل کا ذکر ہور ہا ہے۔ آپ نے ارشاد فر مایا
کہ آگر یہ کام کر رہے ہوتو خبر دار! کسی کو ابو بکر پر فضیلت نہ دینا اس لیے کہ وہ تم سے دنیا و
آ خرت میں افضل ہے۔

اور حفرت ابودردا ورضی الله عند سے دار قطنی میں سندیجے کے ساتھ روایت ہے کہ آپ نے فرمایا کہ ایک دن میں راستے میں حضرت ابو بکر رضی الله عنہ کے آگے آگے آگے جا رہا تھا 'اچا تک حضور سلی الله علیہ وسلم سے ملاقات ہوگی۔ آپ نے فرمایا کیا تو ایسے فخص کے آگے آپ کے مشاور سلی الله علیہ وسلین علیم آگے جا د ہا و آخرت میں تھے سے بہتر ہے۔ الله تعالیٰ کی فتم انبیاء و مرسلین علیم السلام کے بعد کی ایسے فخص پر سورج طلوع ہوان غروب جو ابو بکر سے بہتر ہو۔

ابن السمان كتاب الموافقة من حفرت امام جعفر صادق رمنى الله عنه سے سند مجے ك ساتھ روايت كرتے بيل كدانهوں نے اپنے والد بزرگوارامام محمد باقر انہوں نے اپنے والد كرا مى حفرت امام زين العابدين انہوں نے جناب سيد المشہد او خاتم آل عباسيط رسول التعلیمان حفرت امام زين العابدين الله تعالى عنم اور انہوں نے حضرت امير المونين على كرم الله التعلیمان حضرت امام حسين رضى الله تعالى عنم اور انہوں نے حضرت امير المونين على كرم الله وجهد سے روايت فرمائى ہے كم آپ فرماتے تنے كه بن نے حضور صلى الله عليه وسلم سے سناكه انبياء ومرسلين عليم السلام كے بعد مى ايسے پر سورن طلوع ہوا نہ غروب جوكم الوركر سے بہتر انبياء ومرسلين عليم السلام كے بعد مى ايسے پر سورن طلوع ہوا نہ غروب جوكم الوركر سے بہتر

یہاں سے معلوم ہوا کہ جب طرح حضرت رسول کریم صلی اللہ طلیہ وسلم کی رضا اُمت کی شفاعت میں منحصر ہے اس طرح حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کی رضا بھی اُمت کی شفاعت میں ہے اس لیے کہ رضائے ابو بکر رضی اللہ عنہ رضائے مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم میں فانی تھی۔

(اقول وبالله التوفق معلوم ہوا كه حضرت امام حسين رض الله عنه كوسيد الشهد اء كهنامفسر علام كنزديك درست بئ ان لوگول كے ليے كه كلريہ جواس سے اختلاف كرتے ہيں۔ نيز مسئلہ شفاعت برحق ہے۔حضور شفع المذہبین صلی الله عليه وسلم كے خدام بھی شفاعت كريں سے۔ نيز مسئلہ شفاعت برحق ہوا كہ قيام تعظيمی جائز ہے جيسا كه مركار عليه السلام نے حضرت معديق اكبر رضی الله عنه كے فرمایا۔ محم محفوظ الحق غِفرل ؟)

سورة والضحئ

سورہُ واضحیٰ کی ہے'اس کی حمیارہ (۱۱) آیات' جالیس (۴۰) کلمات اور ایک سو بانو ہے (۱۹۲)حروف ہیں۔

وجد تسميه

اے سورہ والعی اس لیے کہتے ہیں کہ اس سورۃ کے آغاز ہی خی ہمعنی چاشت اور
سورج کے اونچا ہونے کے وقت کی شم فرمائی گئی ہے اور ہر روز اس وقت کا رات کی تاریکی
کے بعد آ تاایک کے بعد دوسری مرتب وی پرآنے کی دلیل ہے اور اس سورۃ کا مقصد ہی ہے
اس لیے کہ اس کے نزول سبب ہوں ذکر کیا گیا ہے کہ جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے کہ
معظمہ میں اسلام کی دعوت کو عام فرمایا تو کہ کے لوگوں نے مدینہ کے یہود یوں کے پاس کی
کو بھیجا کہ ہمارے درمیان اس شم کا آدمی پیدا ہوا ہے جو کہ نبوت کا دعوی کرتا ہے تم اس کے
امتحان اور دعوے کی سچائی کے لیے کی علامت کا بیت دو اس لیے کہتم المل کتاب ہواور انبیاء
کی علامات سے پوری واقعیت رکھتے ہو تاکہ ہم اس علامت سے اس کا امتحان لیں۔
یبود یوں نے کہا اس سے تین چیزوں کی بابت سوال کروہ ذو القرنین کا واقعہ اصحاب کہف کا

واقعدادر هیقید روح - کفار مکه حضور صلی الله علیه وسلم کے پاس آئے اور ان تین چیزوں کے متعلق سوال کیا۔ آپ نے فرمایا کہ میں حمہیں ان چیزوں کے متعلق کل خبر دوں گا اور آپ کی زبان مبارك براس وقت انشاء الله كالكمه نه آيا چندروز وي منقطع ربي بعض كي مطابق وس روز ا بعض کے مطابق پندرہ روز اور بعض نے اس سے بھی زیادہ کہا ہے اور بیدت جالیس دن تک برد مائی ہے۔حضور ملی الله علیه وسلم کواس وجه سے انتہائی غم لاحق موا اور کفار نے اس يرخوش موتے موے طعن وتشنع شروع كر دى حتى كه ابولهب برمجلس ميں كہتا ان معددا ودعه ربه و قلاد لین محرکواس کے پروردگار نے جمور دیا اور اس سے ناراض ہو کیا اور ابولہب کی عورت نے انہائی بے حیائی طعن اور چمیڑ جماڑ کے طریقے سے جو کہ عورتوں کی جبلت ہے معنور ملی اللہ علیہ وسلم کے پاس آ کرکہاما ادی شیطانك الاقدار كك يعن مجملے یول مکان ہوتا ہے کہ جو تیرے یاس آتا تھا کچھے چھوڑ کمیا ہے۔ان وحشت انگیز باتوں سے سرکار علیہ السلام کو انتہائی پریشانی ہوئی۔ اور آب نے اس سلیلے میں حضرت خدیجہ رمنی الله عنها سے بات کی۔ای اثنا میں بیسورة نازل موئی اور اس کے آغاز میں دن رات کی جہان میں آمدورفت اورنوراور تاریکی کا ایک دوسرے کے پیچے آنا ذکر فرمایا حمیاتا کہ اشارہ ہوکہ دنیا کا کام ایک بی ڈگر پرنہیں ہے جمعی روش دن سارے جہان کویر انوار کرویتا ہے اور مجمی اندمیری رات تاری کا بستر پمیلا دی ہے اور جس طرح نور بمیشہیں رہتا تاری مجى دائى نہيں ہے اور تاريكى كے بعد نور اور نور كے بعد تاريكى آتى ہے اى طرح وى كے نزول اوراس كمنقطع موسف كوسجعنا جاسيداور اكرجه چندروز بيسلسله منقطع موجائة تو بريثان نبيل مونا جابي كراس انقطاع من بمي مكمتيل بين جس طرح كدرات كي آمد ميل حکمتیں ہیں۔

بِسُم اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالسَّعْمَى بَحِصَ عِلَاتَ كَو وَتَ كَاتِم بَدِر جَوكُما قَاب كَاونِ إِهونَ اوراس كاسلطنت كى فابر بون كاوقت ب-اس ليے كه پورے دن رات من آفاب دوح كتيں كرتا ب- بہل حركت صاعدہ يعني اوپر آنے كى حركت جوكة كرشتہ آومى رات سے شروع

ہوتی ہاور نصف دن تک رہی ہاور دومری حرکت ہابطہ لینی نیچ اُتر نے کی حرکت جو کہ
زوال کے بعد شروع ہوتی ہاور آئدہ آ دھی رات تک رہی ہاور بیر چاشت کا وقت اس
کی پہلی حرکت کی انجا کا وقت ہے تو بیز ول وقی کے وقت کے ساتھ پوری مشابہت رکھتے
جو کہ حقائق الی آور حقائق کا نتات کے ظہور کے کمال کا وقت ہاور بیروقت اور خصوصیات
بھی رکھتا ہے۔ ایک بیر کہ روزی کمانے اور علم و ہنر حاصل کرنے کا زیادہ تر بی وقت ہے۔
دوسری یہ کہ بیروقت فریعت نماز سے خالی ہاور نظی عبادات کے لیے فارغ ہے۔ تیسری بید
کہ بیروہ وقت ہے کہ حضرت مولی علیہ السلام کے ساتھ حق تعالی کی گفتگوائی وقت ہوئی تھی۔
چوتی یہ کہ فرعون کے جادوگر ای وقت جی حصرت مولی علیہ السلام کا مجرہ و دکھ کرائیان لائے
اور انہوں نے بحدہ کیا۔ پس بیروقت سابقہ اُمت جی باطل کی تار کی کا جواثر ہوا تھا اس پر نور
حق کے کمال ظہور کا وقت ہے۔ پانچویں بیر کہ چاشت کی نماز کے لیے بی وقت مقرر ہے۔

نماز جاشت كابيان

اس کی کم ہے کم چاررکعت ہیں اور زیادہ سے زیادہ بارہ رکعت اور اس نماز کے بہت
سے فضائل ہیں جو کہ حدیث شریف ہی وارد ہوئے اور تجربہ کارلوگ ہوں کہ گئے ہیں کہ جو
غربت سے ڈرئے چاہیے کہ نماز چاشت ادا کرے اور جو قبر سے ڈرے کہ رات کی نماز ادا
کرے اور مشارکنے کے اوراد ہیں مقرر ہے کہ وہ نماز چاشت کی چاررکھت میں یہ چارسور تیں
پڑھتے تھے۔ والشہس واللیل والصعلی اور العر نشوح

اس کی جگہ جہان کوروش کرنے کے لیے موجود رہتا ہے ای طرح خلفائے راشدین رضی اللہ تعالیٰ عنبم نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے سینۂ مبارک کی روشنی کواپنے اندرجلوہ گرکر کے جہان والوں کواپنے نور سے منور کیا ہے۔ اور خلافت کا زبانہ منقطع ہونے کے بعد رات کی تاریکی فالوں کواپنے نور سے منور کیا ہے۔ اور خلافت کا زبانہ منقطع ہونے کے بعد رات کی تاریکی سے جرگروہ والے اپنی ہمت کے مطابق چراغ مشع اور مشعل نے بچوم کردیا۔ طالبانِ حق میں سے جرگروہ والے اپنی ہمت کے مطابق چراغ مشع اور مشعل سے مدد کیتے ہیں اور کام چلاتے ہیں۔

اور یکی وجہ ہے جہتدین کے مذاہب اور اولیاء اللہ کے طریقے اس نور کا فیض دیے میں مختف اور جداجدا ہیں۔ پس چاشت کا وقت حضور نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کے قلب مقدس پر نورالی کے جیکئے کے وقت کی مثال ہے اور رات ظلمت بشری کی مثال ہے جو کہ نفوس اور ارواح پر جوم کر کے ہر چیم کونظر ہے اوجمل کردیتی ہے۔ دوسورة ول کے والیل اور والضحی سے آغاز کی حکمت

اور یہاں ایک بحث ہے اور وہ یہ ہے کہ واللیل کی سورۃ میں پہلے رات کی تم اُٹھائی می ہے اس کے بعد دن کی جبکہ یہاں اس تر تیب کے برتکس ہے اس کا سبب کیا ہوگا۔

مفرین نے یوں ذکر فرایا ہے کہ اللہ تعالی نے رات کو بھی بزرگی کی ایک قتم کے ساتھ تخصوص فر مایا ہے کہ وہ راحت سکون آ رام خواب اور پردہ پوشی کا موجب ہے اور دن کو بھی ایک قتم کے بھی ایک دومرے کی ملاقات بھی ایک دومرے کی ملاقات بھی ایک دومرے کی ملاقات اور آ مدور فت کی بروات وغیرہ کا باعث ہے۔ بہی قتم اُٹھانے میں بھی رات کو ون پر مقدم کر دیا گیا اور بھی دن کورات برتا کہ پہلے ذکر کرنے کی عزت سے دونوں کو حصہ لے۔

اور یہال سے پہ چلا کہ دو جو اسدطوی نے دن اور رات کے مناظرے میں ذکر کیا بے کہ اللہ تعالی نے میں ذکر کیا ہے کہ اللہ تعالی نے میں دن کو رات سے پہلے یاد فرمایا ہے۔ سورہ واللیل سے خلات برجی ہاں کے تمام ایمات کا ترجمہ ہیں۔

رات اور دن کی بحث کا ایک واقعش جو که دل سے فم کی شدت کو دُورکتا ہے ووثوں کے ورمیان فنیلت پائے جانے کے اعتبار سے تعریف اور قدمت میں کافی طویل محفظو ہوئی۔ رات نے کہا کہ دن سے میری فنیلت زیادہ ہے کہ خدا تعالی کے دربار میں دن میں ہوئی۔ رات نے کہا کہ دن سے میری فنیلت زیادہ ہے کہ خدا تعالی کے دربار میں دن میں

عبادت کرنے والے سے رات کے وقت سجدہ وعبادت کرنے والے کا مقام زیادہ ہے۔
حضرت مویٰ علیہ السلام تو م کومنا جات کے لیے رات کے وقت لے گئے اور حضرت لوط علیہ
السلام بھی رات کے وقت قوم کے ظلم وسم سے جدا ہوئے۔ حضرت محمد رسول الله صلی الله علیہ
وسلم نے رات کے وقت آسان کا چاند دو کلائے فر مایا۔ اور مسجد حرام سے معراح کے لیے
رات کے وقت بی تشریف لے گئے۔ دن جی تمین اوقات ایسے ہیں جن میں نماز منع ہے
جبہ ساری رات کی نماز نبی علیہ العسلوٰ ق والسلام اور اُمت کے لیے فخر ہے تیری وجہ سے
آسان ایک نیکوں فرش کی طرح ہے اور میری وجہ سے باغ ارم کی طرح سجا ہوا ہے عرب
کے ماہ وسال کی گئی میرے چاند سے ہے۔ نیز میرے چاند پر جرئیل علیہ السلام کے پر کی

دن ہے بات سُن کر پریٹان ہوا اور کہنے لگا کہ خاموش ہوجا تو جھے نیادہ پختہ بات

کیا کر کئی ہے۔ تو دن میں عیب کا طعنہ کیے کرتی ہے کہ عرش کے رب نے قشم فرمانے میں

دن کی تعریف تھے ہے پہلے کی ہے جو روزہ سازی مخلوق رکھتی ہے سب دن میں ہیں۔ جج کا

احرام بیت الحرام ہے دن کے وقت ہے خشر کے لیے مخلوق دن کے وقت اُسطے گی جس

وقت سب لوگ عدم ہے وجود میں آئے دن تھا میری وجہ ہے آفاق کا چہرہ اچھا معلوم ہوتا

ہے جبکہ تیری وجہ ہے کہ الگتا ہے۔ میری وجہ ہے مخلوق کی آئے موں کا نور برخمتا ہے اور تھے ہے

نی میری وضع اسلام کی ہے اور تیری کفر کی میرالباس خوشی کا اور تیرالباس فم کا۔ جب میرا سورج علم بلند کرتا ہے تیراستاروں کا لفتکر ایک دَم بھاگ جاتا ہے۔ آگر تیرے چاند سے عرب کے ماہ و سال کا پید چلتا ہے تو میرے آفاب ہے جمیوں کے ماہ اور سال وابست میں۔ تیرا چاند میرے سورج کی روشی سے نور پاتا ہے سورج کے حضور اپنی پشت خشم کرتا ہے۔ تین فرض نمازیں دن میں ہیں جبکہ رات میں دو ہیں تیری ایک نماز اس لیے کم ہے کہ تو

سورة والليل ميں رات كي مم يملے لانے كى حكمت

اب ہم یہاں پنچے کہ سورۂ واللیل میں رات کی قتم کو پہلے لانے کے ساتھ مخصوص فر مایا marfat.com

میا اور اس سورة کواس اعداز کے ساتھ کیوں مخصوص کیا میں۔ اس میں تکتہ یہ ہے کہ سورة واللیل حضرت ابو برصدیق رضی اللہ عند کی سورة ہے اور نوراسلام سے پہلے آ ب جس ماحول میں سخے وہ تاریک تھا۔ جبکہ بیسورة حضرت علیہ الصلاة والسلام کی سورة ہے آ ب کوابتدائی سے نوز عصمت حاصل تھا۔ بس اس سورة کی ابتدا میں دن کا ذکر کیا میا جو کہ نورائیان کے مشاہرہ ہے۔

اور یہاں ایک اور لطیفہ ہے کہ آگر پہلے دات کا ذکر کریں جو کہ حضرت ابو بکر وضی اللہ عنہ کے مناسب ہے اور پھر وہاں ہے او پر چلیں اور حضرت جر صلی اللہ علیہ وسلم کو پالیس جو کہ دن کے مشابہہ ہیں چنانچہ دات کے بعد دن آتا ہے اور اگر دن کا ذکر پہلے کریں جو کہ حضرت سید عالم صلی اللہ علیہ وسلم کے مشابہہ ہے اس کے بعد نزول کریں بلافصل حضرت ابو بکر صدیت رضی اللہ عنہ کو پالیس جو کہ دات کے مشابہہ ہیں کیونکہ دن کے بعد بغیر فاصلے ابو بکر صدیت رضی اللہ عنہ کو پالیس جو کہ دات کے مشابہہ ہیں کیونکہ دن کے بعد بغیر فاصلے کے دات آتی ہے اور اس لطیفے سے ان دونوں بر رکوں کی باہمی رفاقت باحس وجوہ جلوہ کر ہوتی ہوتی ہے۔ چنانچہ غار کے واقعہ اور مزارات کے اتعمال اور دوسری صحبتوں ہیں اس رفاقت کا اثر ظاہر ہوا۔

خلاصہ کلام ہیکہ اس سورہ کے آغاز میں دن اور رات کی شم واقع ہے۔ محویا اشارہ فر مایا جا
رہا ہے کہ بھی ہم دن کی ساعتوں کو کم کرتے ہیں اور رات کی ساعتوں کو بڑھاتے ہیں اور بھی
اس کے برنکس اور یہ کی بیشی محبت وعداوت کی بناء پر نہیں بلکہ حکمت کی رعایت کی بناء پر ہے
اس کے برنکس اور یہ کی بیشی محبت وعداوت کی بناء پر نہیں بلکہ حکمت کی رعایت کی بناء پر ہے
اس کے برنکس اور زول وی کے پروگرام کو بچھٹا جا ہیے کہ بھی یوں ہے اور بھی یوں۔
لطیفہ

اوراس مقام کے لطائف میں سے یہ جب کہ جب کفار نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر دعویٰ کیا کہ آ ب کے پروردگار نے آپ کو جواب دے دیا اور رخصت کر دیا اور مدعی بن محے اور مدعی پر کواہ لا ذم ہا ہوتے ماجز آ کے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر شم لا ذم آئی۔ پس دن اور دات کی قتم فر ماکران کے عاجز آ کے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم پر شم لا ذم آئی۔ پس دن اور دات کی قتم فر ماکران کے مدعی کی بیشی سے محفوظ نیس ہوتے مدعی کا انکار کیا گیا اور اس تم میں اشارہ ہے کہ دن رات بھی کی بیشی سے محفوظ نیس ہوتے اسلام کا انکار کیا گیا اور اس تم میں اشارہ ہے کہ دن رات بھی کی بیشی سے محفوظ نیس ہوتے اسلام کا انکار کیا گیا اور اس تم میں اشارہ ہے کہ دن رات بھی کی بیشی سے محفوظ نیس ہوتے اسلام کی انکار کیا گیا اور اس تم میں اشارہ ہے کہ دن رات بھی کی بیشی سے محفوظ نیس ہوتے اسلام کی انکار کیا گیا اور اس تم میں اشارہ ہے کہ دن رات بھی کی بیشی سے محفوظ نیس ہوتے کا میں کیا تھا کہ کی بیش ہوتے کی میش ہوتے کی کا انکار کیا گیا اور اس تم میں اشارہ ہے کہ دن رات بھی کی بیش ہے میں اشارہ ہے کہ دن رات بھی کی بیش ہوتے کی بیش ہوتے کی دن رات بھی دن رات بھی کی دن رات بھی دن رات بھی دن رات بھی دی دن رات بھی دن رات بھی دن رات بھی دی دن رات بھی دی دن رات بھی دن رات بھی دن رات بھی دی دن رات بھی دیں رات بھی دی دن رات بھی دی دن رات بھی دی دن رات بھی دی دن رات بھی دی دی دن رات بھی دیں دی در دی دن رات بھی دی دن رات بھی دی دن رات بھی دی دی دن رات ہوں دی دی دن رات ہوں دی دن رات ہوں دی دن رات ہوں دی دی دن رات ہوں دی دی دن رات ہوں دی دی دن رات ہوں دی

آپ بھی قوقع در کھیں کے تلوق کی زبان سے محفوظ رہیں گے۔ نیز رات تنہائی اور وحشت کا
وقت ہے۔ چبکہ دن اجہاع اور روزی کا تو کو یا ہوں فر مایا کیا کہ آپ خوش رہیں اس لیے کہ
انتظاع وی کی پریشانی کے بعد آپ کو طائلہ کے ساتھ اجہاع کا وقت حاصل ہوگا۔ نیز دن
سرور اور اجہاع کا وقت ہے جبکہ رات عمول اور وحشت کا اور دن کے وقت میں سے چاشت کا
انتخاب فرماکر اس کی تم یا وفر مائی کئی اور رات کی تم میں ساری رات ذکر کر دی نیاس بات کا
اشارہ ہوگا کہ دنیا کے فم مسرت اور خوشی سے زیادہ ہیں۔

ضحی اور کیل کے متعلق اقوال

بعض مفسرین نے یوں فر مایا ہے کہ تی سے مراد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے میلاد پاک کا دن ہے جبکہ لیل سے مراد صب معراج ہے۔

اور بعض فرماتے ہیں کہ خی سے مرادسید عالم صلی اللہ علیہ وسلم کا رُخ انور ہے اور لیل سے مراد آپ کے بال مبارک جو کہ سیابی ہیں رات کی طرح ہیں۔ بعض کے نزدیک دن سے مراد آپ کا ہوم وصال ہے جبکہ رات سے مراد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی عبادت خداوندی ہیں مشخولی کی رات ہے۔ بعض کہتے ہیں کہ خی سے مراد وہ نویطی ہے جو کہ حضور علیہ الصلوٰ ق فیل مشخولی کی رات ہے۔ بعض کہتے ہیں کہ خی سے مراد وہ نویطی ہے جو کہ حضور علیہ الصلوٰ ق والسلام کو عطافر مایا محیا اور اس کی وجہ سے غیب کی دنیا کے پردہ نشین جلوہ گراور ظاہر ہو گئے جبکہ رات سے مراد آپ کا محاف کرنے کا علق ہے جس نے اُمت کے عیب چھیا لیے۔

بعض نے فرمایا کہ دن سے مراد حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے ظاہری احوال ہیں جن پر علام الغیوب کے سوا علق مطلع ہوئی جبر رات سے مراد آپ کے باطنی حالات ہیں جن پر علام الغیوب کے سوا کوئی بھی آگاہ ہیں۔ بعض کتے ہیں کہ دن سے مراد اِسلام کی سرباعدی کا وقت ہے جبکہ رات اسلام کی غربت کا زمانہ ہے جیسا کہ صدیث شریف میں وارد ہے کہ ان الاسلام سیعود غریبًا اور بعض کتے ہیں کہ می فی فیراد زعر کی کا زمانہ ہے جبکہ رات قبر میں سکونت افقیار کرنے کا وقت ہے اور ہرایک کے احتال کی مخوائش ہے۔ (اقول و باللہ التوفیق آپ کے تو طاہری کمالات پر بھی کماحقۂ ماسولے ذات کے کسی کواطلاع نہ ہوگی۔ جمر محفوظ الحق غفرلا) ماؤ دیک و دردگار نے آپ کوجدانہیں فرمایا ہے اور نہ بی

Marfat.com

marfat.com

آپ سے ناراض ہے یعنی وی کے غائب رہے کا وقت جو دراز ہوگیا اس وجہ سے نہیں کہ اللہ ایک تعالیٰ کی تربیت بین کوئی کوتا ہی ہے یا آپ کی صفات کمال میں کوئی تقص واقع ہوگیا بلکہ ایک حکمت کی بناء پر ہے اور عنقریب وی دوبارہ شروع ہو جائے گی جیسا کہ دن کے بعد جلد ہی رات لوٹ آتی ہے اور اگر بعض عوارض کی وجہ سے وی کا انقطاع واقع ہوتو فکر نہ کریں کہ آخر رات لوٹ آتی ہے اور اگر بعض عوارض ختم ہو جائیں کے اور جدائی کے بغیر وصال نصیب نور حق غالب آئے گا اور سب عوارض ختم ہو جائیں کے اور جدائی کے بغیر وصال نصیب ہوگا۔ چنا نے فرمایا جارہا ہے۔

وَلَلْا يُخِرَةُ خَيْرِتُكَ مِنَ الْأُولَى البته بربعدوالى حالت آب كي يبلي معالل سے بہتر ہوگی حی کہ آپ کی بشریت کا وجود بالکل ندر ہے اور آپ پر ہمیشہ کے لیے نور حق کا غلبه حاصل مو۔ اور اگر آخرت کو مابعد الموت برحمول کریں تو بھی مخبائش ہے اس لیے کہ اس ون حضور ملى الله عليه وملم كى سيادت كاظهور آپ كى مركزيت اور آپ كى ذات والاصفات كے سرچشمہ سے اللہ تعالی كافينان اور جودوكرم يورى قوت اور بلندى ير موكا۔ يهال تك ك قیامت کے دن سب اولین و آخرین آپ کی شفاعت کے مختاج ہوں مے اور آپ کے جمندے کے بیچے سامیہ یا کیں مے اور آب کے حض کے یانی سے سراب موں مے اور جنت کے درجات اور مکانات کی تقیم آب کے دست کرم سے بی ہوگی۔ (اقول وہاللہ التوقيق امام السيد طحطاوي رحمة التدعليه محقى مراتى الغلاح في مصورملي الله عليه وسلم كى كنيت ابوالقاسم كى أيك توجيهه يبيمى بيان فرمائى بلاند يقسد البعنة بين اهلها يعي آب كو ابوالقاسم اس کئے کہا کیا ہے کہ آپ جنتوں میں جنت تقتیم فرمائیں مے۔ بلکہ سرکار علیہ الصلوة والسلام كاارشاومنقول بانها انا قاسم والله يعطى من وتعتيم كرتا اورالله تعالى عطافرماتا ہے چونکدرب العزت کی عطاعام ہے پت چلا کہ حضور علیہ السلام کی تعتیم بھی عام ہے لیعنی رب العزت کی ہرعطا کے قاسم حضور علیہ العلوٰۃ والسلام ہیں اسی لیے اعلیٰ حعزت الشاه احمد رضاخال فامنل بريلوى رحمة الله عليه فرمايا:

لا درب العرش جس کو جو ملا ان ہے ملا بٹتی ہے کونین میں نعمت رسول اللہ کی (محممنوط الحق غفرلہ)

اور رَبِّكَ كِلْفَا عِي حَضُور عليه العملوة والسلام كے ليے كمال آلى ہے ليئى كيا خيال ہے كہ جس مالك نے آپ كواس انداز سے پالا ہواور آپ كے جن عيس الى مختلف قتم كى تربيت معروف فرمائى يہاں تك كہ كى مرشد اور رسول كے واسطے كے بغير آپ كى روح پراپ نور كى جَلَى فرمائى آپ كورخست كرد كا اور جواب دے دے گائيہ بات تو مجازى مالكوں سے محى بعيد ہوتی ہے جيا كہ شہور ہے كہ نواخت را نبايد اندا خت يعنى جے نواز اجائے اسے گرايا نہ جائے۔ چہ جائيكہ مالك حقیق جو كہ ہر چیز كے وجود سے پہلے اس كى استعداد اور كرداركو جائے ہوئے ہوائيك كوكى مقام اور مرتبے كے ساتھ مخصوص فرما تا ہے اور كيا خوب كها كيا ہے كہ سے كھ سے كہ سے كے كہ سے كھ سے كہ سے كھ سے كے كہ سے كہ سے كہ سے كے كہ سے كہ سے كہ سے كور سے كہ سے كہ سے كہ سے كہ سے كہ سے كے كے ساتھ كے كے ساتھ كے كے سے كے كور سے كے ساتھ كے كے سے كے سے كے سے كے سے سے كے ساتھ كے كے ساتھ كے كے كے ساتھ كے كے ساتھ كے كے ساتھ

چول بعلم ازل مرا دیدی دیدی دیدی آنکه بعیب بکریدی من میب آنکه بعیب بکریدی من میب آن تو بعلم مال درکمن بعیب آن تو بعلم مال درکمن آنچه خودپندیدی

لینی جب تو ازل ہے جی میرے عیب جانا ہے بی وی ہوں بھے دونفر ما۔

یہاں جانا چاہیے کہ جب مہریان اور قدردان مالک اپنے نوکروں بی سے کی نوکر کو

کی خدمت پر مقرر کرے اور وہ نوکر پوری محنت اور کوشش کے ساتھ اس کام بی مشخول ہوئا میں مشخول ہوئا میں مدور ہوئی کے دریے ہوجا کیں اور اس کے متعلق ہے اصل افواہ اُڑا وی کہ فلاں اپنے مالک کی نظر ہے کر گیا اور جس خدمت پر مامور تھا اس سے معزول ہو گیا اس وقت اس مالک کوچاہے کہ کمال لطف وشفقت کے طور پراس نوکر کی ول جو کی کرے اور اس فرک وی اس فواہ کے سننے سے اس نوکر کے دل اس اس می بیٹھ گیا اس کے مرتبے کی ترتی کے وعدے سے مخصوص کرے اس میں بیٹھ گیا اسے کی انعام خلعت اور اس کے مرتبے کی ترتی کے وعدے سے مخصوص کرے اس تی کم ایک کار کام ہو ہے۔

وُلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُكَ فَتَوْضَى اور البته آپ كا پروردگار آپ كواس قدر عطا فرمائ كاكه آپ رامنی موجا كي اوراس سے آپ كي استعداد كا پيانه مجر پور موجائے اور marfat.com

کوئی طلب اور پیاس باقی ندرہ اوراس وعدے میں کمال وسعت ہے خصوصاً کاطب کی استعداد کے پیش نظر جو کدانیا عالی مرتبت رسول علیہ السلام ہو معلوم کیا جا سکتا ہے کہ اے عطائے البی کس قدردی جائے گیا تا کہ وہ میر ہوجائے۔

اور حدیث شریف میں ہے کہ جب ہے آیت نازل ہوئی تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنے محابہ کرام رضوان اللہ علیم اجمعین سے فرمایا کہ میں ہرگز راضی نہیں ہوں گا جب تکہا کہ اپنی اُمت میں سے ہرایک کو جنت میں داخل نہ کرلوں اور حضور علیہ الصلوٰ ق والسلام کی روح انور کی پیدائش کی ابتدا سے لے کر جنت میں داخل ہونے تک آپ کے حق میں اللہ تعالیٰ کی جونواز شات واقع ہوئیں ہور ہوں جی میں اور ہوں گی قیاس کی گرفت اور بیان کی حد سے باہر بیں۔ ان میں سے اجمالی طور پر بچھ بیان کی جاتی ہیں۔

جانا چاہے کہ جب کوئی فض اپنے متوسلین میں سے کی کو اپنامجوب بنالے تو اسے بہت کی چیزوں کہاں مواری بیضنے کی جگداور دوسرے حالات میں متاز کر دیتا ہے تا کہاں کی محبوبیت ہرخاص و عام کی نظر میں جلوہ محروجائے۔

حضور عليدالصلوة والسلام كخصوصيات كى دوسميس بي

اور بارگاہ خداد عری میں سے حضور صلی اللہ علیہ دسلم کو جو خصوصیات حاصل ہو کی دوشم کی ہیں: پہلی وہ خصوصیات جن میں دوسرے انہیا ملیم السلام بھی شریک ہیں لیکن آپ کو وہ ۔ نعمت سب سے پہلے اور سب سے زیاوہ نصیب ہوئی اور اس کی وجہ سے آپ کومتاز کیا گیا۔ اور ایک شم وہ ہے جو صرف آپ کے ساتھ مخصوص ہے اور کسی کو اس بھی سے حصر ہیں ملا اور ہم یہاں دونوں قسموں میں سے چھ ایک باہم ملاکر بیان کرتے ہیں تا کہ اس آ سے کا معنی سننے دالوں کے ذہن میں پوری طرح رائے ہوجائے۔

حضور عليدالصلؤة والسلام كي جسماني خصوصيات

آپ کے جم مبارک میں جو خصوصیات رکی کی تھیں نے جی کے حضور ملی اللہ علیہ وہلم اپنی پشت مبارک کی طرف ہے ای طرح و کھتے تھے جس طرح کے سامنے ہے و کھتے تھے رات اور اعربی ہے 1 کی طرف کے ایک کی جم اللہ کی کی العاب

وہن شریف کڑوے یانی کو میٹھا کر دیتا تھا۔ آپ شیرخوار بچوں کولعاب وہن کا قطرہ عطا فرماتے اور وہ بیجے سارا ون سیرر بہتے اور دود حزمیں ماسکتے تھے۔ جبیبا کہ عاشورا کے دن اہل بیت کے بچوں کے متعلق تجربہ ہوا اور حضور ملی اللہ علیہ وسلم کی بغل شریف کا رنگ سفید براق تھا۔ بال بالكل نبيس منے اور آپ كى آواز وہاں تك چہنچى تھى كدوسرول كى آواز اس كے سویں جھے تک بھی نہیں جاتی تھی۔اور آپ اسٹے وُور کے فاصلے سے سُن لیتے تھے جہال ے دوسرے نبیں سُن سکتے منے۔ آپ آرام فرماتے محرول خردار رہتا 'ساری زندگی سرکار عليه السلام كو جمائى نبيس آئى اور آپ كوخواب ميس بمى عسل كى حالت لاحق نبيس موئى تقى -آ پ کے لیبنے مبارک میں کستوری سے بھی زیادہ مہک تھی یہاں تک کداگر آ پ کلی میں سے گزرتے تو ہوا میں دیر تک آپ کے لیسنے کی خوشبور جی رہنے کی وجہ سے لوگ سراغ لگا لیتے تنے کے حضور ملی اللہ علیہ وسلم اس کو ہے سے گزرے ہیں۔ سی محض نے آب کے فضلہ مبارک كا اثر زمين يرتبيس ديكما' زمين مثل موكراب اين اندر ك ليى تقى ولادت كے وقت آپ ختنه شدهٔ ناف بریده اور پاک مساف تشریف لائے۔ آپ کے جم مبارک پرکوئی آ اکش بینی زمیں برمیدے کی صورت میں اپی انگشت مبارک آسان کی طرف اُنھاتے ہوئے جلوہ کر ہوئے۔اور آپ کی ولادت کے دفت نور کی الی شعاعیں تکلیں جن کی وجہ سے آب كى والدومخر مدنے شام كے شمروں كود يكھا۔ آپ كا پيكموڑ افر شنے بلاتے سے۔ بجينے میں جب آپ کبوارے میں ہوتے تو جائرآ بسے ہم کلام ہوتا۔ آپ جب اس کی طرف اشارہ فرماتے تو آپ کی طرف جمک جاتا آپ نے چھموڑے میں بار ہا گفتگوفر مائی۔

موسم گرا کی دھوپ میں بادل ہیشہ آپ کے سرانور پرسایہ کرتا اگر آپ کی درخت

کے یے تشریف فرماتے تو درخت کا سایہ آپ کی طرف متوجہ ہو جاتا۔ آپ کا سایہ زمین پر نہیں پڑتا تھا' آپ کے پیرائن مقدس پر کھی نہیں پیشی تھی۔ جوں آپ کو تکلیف نہیں دیتی تھی۔ اگر آپ کی جانور پرسوار ہوتے تو جب تک آپ سوار رہے۔ پیشاب دغیرہ نہیں کرتا تھا۔ عالم ادواح میں سب سے پہلے آپ کا نورظہور ہوا جس نے سب سے پہلے آسٹ بر آپٹی کھڑ کے جواب میں بلی کہا' دہ آپ ہیں۔ سیر معراج آپ کے لیے مضوص ہے۔ برات

martat.com

ک سواری بھی آپ کے ساتھ مخصوص ہے۔ آسان پر جانا' قاب توسین کی حدتک پنچنا' دیدارِ اللّٰہی سے مشرف ہونا اور فرشتوں کا آپ کے سپابی اور لشکری بنتا یہاں تک کہ انہوں نے آپ کے مسابی اور لشکری بنتا یہاں تک کہ انہوں نے آپ کی معیت میں لڑائی کی' یہ بھی آپ بی کا خاصہ ہے۔ چاند کا دو کلا ہے ہونا اور دیگر بجیب وغریب مجزات بھی آپ کے ساتھ مخصوص ہیں۔

اور تیاست کے دن جو کھا آپ کوعطا ہوگا، کسی کونہیں دیا جائے گا۔ سب سے پہلے آپ کو افاقہ ہوگا۔ آپ کو مزار پُرانوار سے آپ باہرتشریف لائے گے۔ سب سے پہلے آپ کو افاقہ ہوگا۔ آپ کو براق پرسوار کر کے میدانِ حشر میں لایا جائے گا، آپ سر (۵) ہزار ملائکہ کے جلوں کے ساتھ تشریف لا کیں گے۔ عرش کی دا کیں طرف آپ کو کری پر رونق افر وزکیا جائے گا، مقام محمود کا شرف آپ ہی کو حاصل ہوگا، آپ کے ہاتھوں میں لوا م المجمد ہوگا کہ حضرت آ دم علیہ السلام اور آپ کی تمام اولاداس جمنڈ سے کے پہوگئ تمام انبیاء علیم السلام اپنی آمتوں کے ہمراہ آپ کے چیے چلیں کے اور دیدار خداوندی سب سے پہلے آپ سے شروع ہوگا اور آپ کو شفاعت عظلی کا عملی آب کو شفاعت عظلی کا عملی اظہار اس وقت ہوگا ورنہ یہ منصب تو آپ کو پہلے بی سے عطا فر مایا جا چھا ہے۔ چو محفوظ الحق فالے الحق مان اور آپ کے پہلے بی سے عطا فر مایا جا چھا ہے۔ چو محفوظ الحق فالے الحق الحق مانا جا چھا ہے۔ چو محفوظ الحق فالے الحق الحق مانا جا چھا ہے۔ جو محفوظ الحق فالے الحق الحق مانا جا چھا ہے۔ جو محفوظ الحق فالے الحق الحق مانا جا جھا ہے۔ جو محفوظ الحق فالے الحق الحق مانا ہو جھا۔ الحق میں کا گزر ہوگا۔

حضرت سيده خاتون جنت رضى الثدعنها كااعزاز

اورتمام مخلوق کو تھم ہوگا کہ اپنی نگائیں جمکا لوتا کہ حضور سید عالم ملی اللہ علیہ وسلم کی صاحب زادی سیدہ فاطمۃ الزہرا رضی اللہ عنہا پل صراط سے گزر جا کیں۔ سب سے پہلے جنت کا دروازہ آپ کھولیں مے۔ اور قیامت کے دن آپ کو وسیلہ کا مرتبہ عطافر مایا جائے گا اور وہ ایک ایسا مرتبہ ہے جو کہ نہایت بلند ہے۔ مخلوقات میں سے کی کونصیب نہیں ہوا اور حقیقت یہ ہے کہ اس دن در بار خداد ندی سے آپ کوسلطنت الہیدی وزارت کا مقام حاصل موجھا

آ<u>پ کی شرعی خصوصیات</u>

اورآب كوشمائع من خصوميا في المنظمة الم

باعث ہوگا۔ کافروں کی غیموں کا حلال ہونا۔ آپ کی اُمت کے لیے سارے روئے زمین کو مسجد کا تھم دیا گیا ہے اور زمین کی خاک کو آپ کی خاطر پاک اور پاک کرنے والی بنادیا گیا۔ نماز بنج گانہ اس طریقے کے مطابق وضؤ اذان اقامت سورہ فاتحہ آمین روز جعہ جمعت المبارک کے دن میں قبولیت کی ساعت ماہ رمضان المبارک کی برکات اور لیلۃ القدرسب آپ کے ساتھ مخصوص ہیں۔ یہ ہیں وہ خصوصیات جن تک فلاہری نظر پہنچتی ہے۔

آ یے کے باطنی کمالات

لین آپ کی دہ خصوصیات جو کہ مراتب باطنی کے اعتبار سے تھیں دہ انوار و تجلیات جو کہ روز ترقی اور اضافے میں ہیں۔ وہ درجات جو آپ کی پیروی کے طفیل آپ کے امتیوں کو قیامت تک حاصل ہوئے اور ہورہے ہیں۔ اور وہ علوم و معارف جن کا فیضان آپ کو تیامت تک حاصل ہوئے اور ہورہے ہیں۔ اور وہ علوم و معارف جن کا فیضان آپ کو پینی میں یہ لا متنائی سلسلہ ہے اور اس آیت میں ان تمام چیزوں کا اشارہ ہے اس کے عطا کو خاص نہیں فر مایا گیا کہ کیا چیز دیں گے۔

اور جب کی آدی کوستقبل میں کی تعت کا وعدہ دیا جاتا ہے تو اس وعدے کواس نعت کے شواہداور دلائل کے ساتھ جو کہ زمانہ ماضی میں صادر ہوئے پکا کیا جاتا ہے تا کہ وہ انتہا کو ابتدا پر قیاس کر ہے۔ اور اس کی اُمید تو کی ہوجائے۔ میں وجہ ہے کہ اس وعدے کے بعد وہ گزشتہ نعتیں جو کہ کی سابقہ خدمت اور کی سوال کی مناسبت کے بغیر محض ایک ابتدا تھیں اور کمی شور ملک کہ وہ تعتیں ایک جزا کے طور پر ہول مضور ملک کہ وہ تعتیں ایک جزا کے طور پر ہول مضور ملک اللہ علیہ وسکل کہ وہ تعتیں ایک جزا کے طور پر ہول مضور ملک اللہ علیہ وسکل کہ وہ تعتیں ایک جزا کے طور پر ہول مضور ملک اللہ علیہ وسکل کہ وہ تعتیں ایک جزا کے طور پر ہول من حضور ملک اللہ علیہ وسکل کہ وہ تعتیں ایک جزا کے طور پر ہول مضور ملک اللہ علیہ وسکل کہ وہ تعتیں ایک جزا ہے طور پر ہول مناسب کیا جارہا ہے۔

ہوتا ہے کہ بچہ ضائع ہو جائے اور اس کی سیح پرورش نہ ہو۔ حضرت حق بحانہ وتعالی نے ابتدا

ہوتا ہے کہ پردرش کی صورت ہوں فاہر فرمائی کہ آپ کے والد ہزرگوار کی وفات کے بعد

آپ کے جدا مجداور والدہ محترمہ کے دل میں بیش از پیش شفقت پیدا کر دی یہاں تک کہ وہ شفقت ، پدری شفقت کے قائم مقام ہوگی اور آپ کے واوا اور والدہ محترمہ ہردن رات آپ میں مجبوبیت کے کر شے فاہر کرتے سے حتی کہ عاشقوں کی طرح آپ کی پرورش میں کوشش میں مجبوبیت کے کر شے فاہر کرتے سے ۔ور آپی جانوں سے بھی زیادہ عزیز رکھتے سے اور جب آپ کے جدا مجد کا وصال ہوگیا وہ آپ کو آپ کے حیقی بچا ابوطالب کے ہرد کر گئے اور آپ کی خدمت کے لیے آئیس انتہائی تاکید کر دی۔ ابوطالب نے ان کی وصیت کے مطابق آپ کی خدمت میں انتہائی کوشش کے ساتھ کام کیا۔ اور اس دور ان اللہ تعالی کی معنوی تربیت حن اخلاق اور مختی انتہائی کوشش کے ساتھ کام کیا۔ اور اس دور ان اللہ تعالی کی معنوی تربیت حن اخلاق اور مختی از داب کی رعایت سے پوشیدہ طور پر اپنا کام کر دبی تھی حتی کہ آپ بلوغ کی حد کو بہتے گئے اور اس کی رعایت سے پوشیدہ طور پر اپنا کام کر دبی تھی حتی کہ آپ بلوغ کی حد کو بہتے گئے اور اس کی رعایت سے پوشیدہ طور پر اپنا کام کر دبی تھی حتی کہ آپ بلوغ کی حد کو بہتے گئے اور اس کی رعایت سے پوشیدہ طور پر اپنا کام کر دبی تھی حتی کہ آپ بلوغ کی حد کو بہتے گئے اور اس کی رعایت سے بوشیدہ طور پر اپنا کام کر دبی تھی حتی کہ آپ بلوغ کی حد کو بہتے گئے اور اس کی رعایت سے بوائی تو می کو گئے تھی۔ اور اس کی عام عور اپنے قوم کا گئے بن گئے۔

ووجكك ضالا فهلى اورآب كومنال ياياس برايت فرمائى

اس ہدایت اور صلال کا بیان ہے ہے کہ بلوغ کی حد کو کانچنے کے بعد حضور ملی اللہ علیہ وسلم کوا پی عقل خداداد کے کمال سے بیعلم تھا کہ بتوں کی پوجااور جاہلیت کی رسیس سب ضنول اور ہے بعودہ ہیں۔ آپ دین حق کی جبتو میں لگ گئے۔ اور آپ نے پرانے بوڑھوں سے سا کہ اصل دین حضرت ابراہیم علیہ السلام کا دین ہے۔ آپ ای جبتو ہیں بتوں کی پوجا سے ہزار اور جاہلیت کی رسموں سے کنارہ کیے ہوئے حضرت ابراہیم علیہ السلام کے رب کی معردت کی تلاش میں معروف ہوئے۔ لیکن چونکہ کمی کو ملب ابراہیم یا دونیس ربی تھی اور ندوہ معردت کی تلاش میں معروف ہوئے۔ لیکن چونکہ کمی کو ملب ابراہیم یا دونیس ربی تھی اور ندوہ کسی کا اللہ علیہ وسلم کوئی کتاب پڑھ سے تھے ناچار آپ اس ملت کے احکام کی تلاش میں بے چھین اور بے قرار رہے۔ اور معلومات کے مطابق اس ملت کے احکام کی تلاش میں بے چھین اور بے قرار رہے۔ اور معلومات کے مطابق تسبیحات جہلیا ت تجیرات اعتکاف جنابت سے شمل منامکہ ج ، خلوت اور اس قسم کی دوسری معروفیات میں گئے رہے۔ یہاں تک کہ اللہ تعالی نے آپ کو اپنی وئی کے ساتھ ملت صفی کے اصول سے آگائی بخشی اور اس ملت کی فروع کو آپ کے لیے نہایت احسن ملت میات کے احکال سے آگائی بخشی اور اس ملت کی فروع کو آپ کے لیے نہایت احسن ملت سے مطابق ملت سے احتاجی کا تھی ہوئی کے احتاج نہا ہے۔ اور اس ملت کی فروع کو آپ کے لیے نہایت احسن ملت ملت می خور کو آپ کے لیے نہایت احسن ملت ملت سے میں کی فروع کو آپ کے لیے نہایت احسن ملت ملت میں خور کو آپ کے لیے نہایت احسن ملت ملت کی فروع کو آپ کے لیے نہایت احسن ملت ملت ملت کی فروع کو آپ کے لیے نہایت احسن

طریقے ہے مقرر فر ہایا اس وقت وہ پیاس اور بے چینی ذائل ہوگئ۔ کویا اٹی کم شدہ چیز لل میں۔ آپ چاہے مقرر فر ہایا اس وقت وہ پیاس اور اس کا پیتنہیں چلنا تھا اس راہ کوآپ کی نظر میں ماہ ہر کر دیا میا۔ پس اس بیاس بے چینی اور اس راہ کے متعین نہ ہونے کے دُکھ کوراستہ کم کے بیں۔ اس بیاس بیاس نے پیس اس منال کی تغییر میں دُوردُورتک مے ہیں۔

حضورعليه السلام كے بجينے ميں ابوجهل كامعجزه و كھنا

بعض کہتے ہیں کہ ضال ہے مراد ظاہری راستہ گم کرنا ہے کہ پچپنے کے وقت آپ مکہ شریف کے پہاڑی دروں ہیں گھر کا راستہ گم کر کے جمران پھر رہے تھے اچا تک وہاں سے ابوجہل اونٹی پر سوار گزرا اور آپ کو اُٹھا کر حضرت عبدالمطلب کے پاس لے آیا۔ اور عبدالمطلب ہے کہنے لگا کہ جمیں پہنیس کہ تیرے اس بچ کے ہاتھوں ہمارا کیا حشر ہوگا۔ حضرت عبدالمطلب نے فرمایا کیا بات ہے؟ ابوجہل کہنے لگا کہ ہیں نے اس بچ کوفلاں پہاڑ ہیں جران اور راستہ گم کیے ہوئے پایا ہیں نے پہلے اے اُٹھا کر اپنے چیچے سوار کر لیا ہیا وہ بی جران اور راستہ گم کیے ہوئے پایا ہیں نے پہلے اے اُٹھا کر اپنے چیچے سوار کر لیا ہیا وہ بیا کہا ہے بیٹھی کی دران اور واستہ گم کے ہوئے پایا ہی اور اس واقعہ ہی حضرت موئی علیہ السلام کے واقعہ آگے بیٹھا لیا اوٹھی اور چلے گی اور اس واقعہ ہی حضرت موئی علیہ السلام کے واقعہ کے ساتھ مشابہت ہے کہ جس طرح آپ کی پرورش آپ کے دیمن فرجون سے کرائی گئی ای طرح حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو آپ کے دیمن ابوجہل کے ہاتھوں آپ کے جدامجہ تک پہنچایا

طيمه سعديد سے حضور عليه السلام كالم مونا

اور بعض کہتے ہیں کہ جب آپ کی وائی طیمہ آپ کو حفرت عبدالمطلب کے پال
پہنچانے کے لیے لائیں آپ کہ معظمہ کے دروازے پران سے م ہو گئے وہ بے چین ہو کر
ایک بوے بت جمل کے پائل گئیں اور بلند آ واز کے ساتھ شکایت شروع کر دی۔ جیسے بی
اس نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا نام لیا سب بت سرگوں ہو کر گر پڑے۔ اور بتوں کے اندر
سے ایک آ واز پیدا ہوئی کے خبردار! تو کیا نام لے ربی ہے ہماری پر بادی ای بچے کے ہاتھوں
ہے۔ ای اثناہ میں جرئیل امن علیہ البلاے نے حضوں کی اللہ علیہ وسلم کا ہاتھ پکڑ کر انہیں آپ
ہے۔ ای اثناہ میں جرئیل امن علیہ البلاے نے حضوں کی اللہ علیہ وسلم کا ہاتھ پکڑ کر انہیں آپ

کے جدامجد حضرت عبدالمطلب تک پہنچا دیا تھا۔ دائی حلیمہ نے بت فانے سے مایوں ہوکر ارادہ کیا کہ حضرت عبدالمطلب کوآپ کی مشدگی کی اطلاع دے تا کہ کہیں تلاش کریں یہاں ، پہنچتی ہے تو حضرت کو جناب عبدالمطلب کے پاس دیمعتی ہے اور متجب رہ جاتی ہے۔ پس پہنچتی ہے اور متجب رہ جاتی ہے۔ پس اس آیت میں اس دافعہ کی طرف اشارہ ہے۔

اور بعض کہتے ہیں کہ مثلال سے مراد بجرت کی ست کو گم کرنا ہے کہ کدھر جانا چاہیے یا قبلہ م کرنا یا پہلی بار جرئیل علیہ السلام کونہ پہچانتا یا امور دنیا کی راہ گم کرنا ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم عبادت خداوندی میں مشغولیت کی زیادتی کی وجہ سے امور دنیا کی راہ ورسم کی طرف متوجہ نہیں ہتھے یا آسانی راہوں کو هم کرنا ہے جن کے متعلق شب معراج میں ہدایت واقع ہوئی۔

اوربعض کہتے ہیں کہ یہاں صلال اختلاط کے معنوں میں ہے۔ عرب کہتے ہیں کہ ضل الماء فی البن یعنی پانی دودہ میں اس طرح مل حمیا کہ تمیز نہیں کی جاسکتی اور بعث ہے پہلے حضور علیہ الصلاۃ والسلام اس معاشرہ میں کسی احمیاز کے بغیر عمر بسر فرماتے رہے (اقول باللہ التونیق الینے کے گزرے معاشرے میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم ابتدائی چالیس (۴۰) سال جلوہ گررہے می آپ نے اس معاشرے کا اثر قبول نہیں کیا بلکہ معاشرے کو متاثر فرمایا حتی کہ وہ لوگ آپ کو صادق اور المین کے القابات سے یاد کرتے تھے اور خود ابوجہل نے تسلیم کیا کہ میں اللہ علیہ دسلم) نے بھی جموث نہیں بولا۔ میر محفوظ الحق غفرلہ)

اوربعض کہتے ہیں کہ مثلال سے مراد مجبت اور مرتبہ عثق ہے جیسا کہ معزت یعقوب علیہ السلام کے بیٹول نے معزت ہوسف علیہ السلام کے ساتھ آپ کے والہانہ عثق کی ان لفظول کے ساتھ آپ کے والہانہ عثق کی ان لفظول کے ساتھ تجیر کی ہے کہ اِنْکَ لَفِی ضَلَالِكَ الْقَدِینِدِ اور ہدایت سے مرادیہ ہے کہ ہم نفظول کے ساتھ تجیر کی ہے کہ اِنْکَ لَفِی ضَلَالِکَ الْقَدِینِدِ اور ہدایت سے مرادیہ ہے کہ ہم کے سنے مجبوب حقیق تک مین خینے کا آپ کو پت دیا۔ خلاصة الكلام بے ہے کہ اللِ تغیر کے ای قیم کے اقوال ہیں۔

عصمت انبياء ليبم السلام كامسكله

یہاں اتی بات یقین کے ماتھ جانا جاہے کہ انبیاء علیم السلام بعثت سے پہلے بھی marfat.com

اس کے بعد جب میں بیدار ہوا تو محفل برخاست ہو بھی تھی آئ طرق باردگر میں نے ارادہ کیا اور نیز میر ہے اور افسانے مزامیر سننے کے درمیان حاکل ہوگئ۔اور میں اللہ تعالیٰ ک حفاظت کی وجہ سے محفوظ رہا اور اس کے بعد میرے دل میں بھی خیال تک نہ گزرایہاں تک کہ اللہ تعالیٰ نے جھے اپنی رسالت سے نوازا اور اس عصمت کو دوبالا کر دیا لیکن شرائع کو جانے اور انہیں دریافت کرنے کی بیاس انبیاء میہم السلام کو بعثت سے پہلے بھی ہوتی ہے جو راور تن کی تاش میں ہوتے ہیں اور لفظ منلال کے استعمال کے لیے ای قدر کافی ہے جیسا کہ راوی کی درکافی ہے جیسا کہ رویا کے درکافی ہے جیسا کہ رویا کی درکافی ہے جیسا کہ رویا کی درکافی ہے جیسا کہ رویا کے درکافی ہے جیسا کہ رویا کی درکافی ہے درکافی ہے جیسا کہ رویا کی درکا کی درکا کی درکا کی درکا کے درکا کے درکا کی درکا کے درکا کی د

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَآخُعٰی اورآب کوعیال دار پایا پی فن کردیا۔ حضورعلیہ السلام کوفن کرنے کا بیان

اور اس نعت کا بیان یہ ہے کہ پہلے تو حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو آپ کے دادا عبدالمطلب کے مال کے ساتھ غنی کر دیا کہ وہ آپ کو اپنے تمام بیٹوں سے زیادہ عزیز سمجھ کر پردرش کرتے ہے اس کے بعد ابوطالب کے مال کے ساتھ غنی فرمایا جو کہ اپنے والد بزرگوار سما کھ منی فرمایا جو کہ اپنے والد بزرگوار مسلم کے اس کے مالے کی مالے کے مالے کے مالے کے مالے کے مالے کے مالے کے مالے کہ مالے کو مالے کو مالے کو مالے کے مالے ک

کی وصیت کے مطابق آپ کو اپنی اولاد سے مقدم رکھتے تھے۔ بعدازاں جب آپ پیس (۲۵) سال کے ہو گئے تو حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہا جو کہ انتہائی بال دار تعین مضورعلیہ الصلوٰۃ والسلام کے نکاح بیس آئیں۔ وہ آپ کی عجبت اور خدمت میں اس قدر معروف ہوئیں کہ اپنا سارا بال سونا، نقذی اور جنس آپ کی خدمت میں پیش کر دیا۔ اور قریش سرداروں کو ہُلا کر گواہ بنایا کہ بیسارا بال حضور کا ہے آگر آپ چا ہیں تو ابھی اسے تقییم کر دیں اور اگر چا ہیں سنجال رکھیں۔ اور جب حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہا گزرگئیں تو آپ کو حضرت اور اگر چا ہیں سنجال رکھیں۔ اور جب حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہ الا بیکر صدیق رضی اللہ عنہ کے دل میں حضور ملی اللہ عنہ والہ وسلم کی خوشنودی میں فنا اور عجبت اس قدر اُتر پھی تھی کہ کے دل میں حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خوشنودی میں فنا اور عجبت اس قدر اُتر پھی تھی کہ آپ نے بنا چالیس ہزار درہم کا راس المال حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ضروریات میں خرج کر دیا اور جبرت کے بعد انصار کے مال کے ساتھ می فن رایا۔ اس کے بعد کفار کی نوحات خرج کر دیا اور اجرت کے بعد انصار کے مال کے ساتھ می فن رایا۔ اس کے بعد کفار کی نوحات اور ان بر بختوں کے مالی غیر میں تعد کا اس کے ساتھ می اللہ سنتنا و ماصل ہوئی۔

اوراگر چہان میں سے بعض واقعات اس سورۃ کے نازل ہونے کے بعد واقع ہوئے لیکن جو پچھ علم اللی میں ہے واقع جیسائی ہے۔ لہذا احسان جنلانے کے مقام میں آئیس بھی بیان فرمایا گیا ہے۔ اور اس ظاہری غناء کے باوجود باطنی غنا جے قناعت کہتے ہیں محضور علیہ السلام کواس قدر عطا فرمائی گئی کہ سیرت نگاروں کی زبان پر بیدالفاظ جاری اور گردش کر رہے السلام کواس قدر عطا فرمائی گئی کہ سیرت نگاروں کی زبان پر بیدالفاظ جاری اور گردش کر رہے ہیں کہ آ یہ کے نزد یک پھراور سونا برا ہر شھے۔

حضورعليه السلام كيميتم تشريف لانے كى تحكمت

حضورعلیہ السلام کے حق میں منظور بیرتھا کہ آپ عمر شریف کی ابتداء سے انتہاء تک اللہ تعالیٰ کے سواکسی پراعتاد نہ فریا کیں اور آپ کواعلیٰ تو کل کا مرتبہ نصیب ہواور بیہ مقصد بیسی کے بغیر بورانہیں ہوتا۔

نیزیتیم ہونا عام عادت کے مطابق بچوں کی زندگی ضائع اور ان کے غیر مہذب انداز بیل بالغ ہونے کا موجب ہے۔ اور جب کوئی شخصیت اس حالت میں کمال حسن اخلاق اور تہذیب سے موصوف پیدا ہوتو بلاشہ اسے ایک مجز ہ شار کریں اور اسے نبوت کی دلیل قرار

آپ کے فقر کاراز

اورحضور ملى الله عليه وآله وملم كفقر اورآب كو دادا، چيا، الميه، يارغار اور جان نار انصار کے مال کے ساتھ فی کرنے میں راز بیے کہ اگر شروع سے بی آب کودولت مند کرویا جاتا توعادت اللي كےمطابق دولت مندول كى عادتيں جوكد برترى اور بردائى جائتى بل اثر كرجاتين اورنشست وبرخاست دولت مندول كى ساته موتى اورتواضع بمستنسى وم بدم الله تعالی کے حضور زاری اور بے مالی کی لذت کا احساس ندہوتا۔ نیز جس صورت میں کہ آ پ کو خودانے مال کے ساتھ دولت منداور عن کیا جاتا آپ کے بیروکاروں کے عن میں برگمانی ہوتی کہوہ اس مرتبے والے انسان کے مال اور رواداری کی طمع اور لا کی کے لیے اس کے بیردکار موئے میں۔ اور فرا اخلاص ، ایمان اور حق کی رعایت کا پیند نہ چلتا۔ (اتول و بہاللہ التوقق بيسب مغروض علل كاعتبارے بي كه علائق بشرى كى وجهد اكثر الى تتم كے اثرات مرتب موت بي ليكن حضور سيّد عالم ملى الله عليه وآله وملم ان سب سے قطعاً مبرا بي جیہا کمنسرعلام قدس سرونے آپ سے جسمانی خصائص بیان کر کے خود اعتراف فرمایا ہے)۔ بقول حضرت مولانا حسن رمنا بر بلوی ۔ سرے یا تک ہرادا ہے لاجواب خوبرووُل مِن بين ان كاجواب- بموجب الله اعلم حيث جعل رسالته الله سيحانه وتعالی کی حمایت و عنایت شروع سے بی ان کی جمیمانی کرتی ہے۔ محم محفوظ الحق غفرله ولوالدبير)

تغیر مزیزی مسید میسید میسید (۱۳۳۳) میسید میسید تیسوال ماره

بنابریں آپ کی ولادت فقر کی حالت میں ہوئی اور لوگوں کو آپ کی محبت کی کشش میں مسخر فر مادیا گیا تا کہ وہ خود بخو دا پنا مال اور جان آپ برنثار کریں اور بیہ بات آپ کے کمال پر بہت بڑی دلیل ہے کہ کمی ظاہری سبب کے بغیر لوگ آپ کے اس قدر گرویدہ ہور ہے ہیں۔
بیں۔

ايك نكته

یہاں ایک گئتہ جانا چاہے اور وہ یہ ہے کہ ہرامیر اور خریب اپنی ابتدائی حالت میں بے مایہ اور بغیر کی چیز کے ہوتا ہے اور دوسرں کے مال کے ساتھ خلی ہوتا ہے کین اگر اپنی طرف سے طبع اور خواہش کرے اور کمائی اور تلاش کے ساتھ مال کی کثرت حاصل کرے تو ہرکی کے سامنے ذکیل، خوار اور حقیر ہوتا ہے اور اگر فخلف تدبیروں اور حیلوں کے ساتھ دوسروں کو اپنا مطبع کر کے ان کے مال سے نفع حاصل کرے تو اس کی عزت و شوکت کا موجب ہوتا ہے۔ یکی وجہ ہے کہ بادشاہ باوجوداس کے کہرعایا کے اموال کے ساتھ غن ہو اور ان سے باخ اور جو کہ اپنے جیے لوگوں اور ان سے باخ اور جو کہ اپنے جیے لوگوں اور ان سے باخ اور خوات کے طور پر ال لیتا ہے عزت والا ہے اور جو کہ اپنے جیے لوگوں سے ای طرح اور اس سے بھی کمتر ما بگا ہے ذکیل ہے تو پہتے چلا کہ مائی کا ہونا عزت کو لازم سے اس کرتا اور اس کا نہ ہونا حقارت کا موجب نہیں۔ بال جو مال قناعت، بے پروائی اور طبع جموز نے کے ساتھ حاصل ہو عزت کا موجب ہیں۔ بار جو فقیر طبع اور تلاش کی وجہ سے مشقت مجموز نے کے ساتھ حاصل ہو عزت کا موجب ہیں۔ اور جو فقیر طبع اور تلاش کی وجہ سے مشقت انتخائے باعث ذاحت ہے۔

اؤر چونکہ حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو دوسروں کے اموال کے ساتھ عزت، غلبہ اور شوکت کے طریقے سے غنا حاصل ہوئی آپ کے مرتبے کی بلندی کا باعث ہوئی اور کمی فتم کی عار لاحق ہوئی اور جب ان تین نعمتوں کے بیان سے فراغت ہوئی تو عار لاحق ہوئی تو ان کا شکر طلب کرتے ہوئے ارشاد فر مایا جارہا ہے کہ

فَآمِنَّا الْمُعَنِّمَةُ فَلَا تَقْهَدُ لِى يَتِيم بِإِلْكُلْ قَبِر نَهُ كُرِي لِينَ اس كَا مال اور حق تلف نه كيا جائے اور فقتگو مِس اس كے ساتھ تختى نه كى جائے اس ليے كه آپ خود يتيم رہے ہيں اور يتيم كى كمزورى كا آپ كوح اليفين كے ساتھ علم ہے كمعمولى سبب سے اس كى دل فتنى ہوجاتى ہے سمزورى كا آپ كوح اليفين كے ساتھ علم ہے كمعمولى سبب سے اس كى دل فتنى ہوجاتى ہے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اس كى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اس كى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتن ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اس كى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتنى ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتن ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتن ہوجاتى ہے کہ معمولى سبب سے کہ معمولى سبب سے اسكى دل فتن ہے کہ معمولى ہے کہ ہے کہ معمولى ہے کہ ہے کہ ہے کہ معمولى ہے کہ ہے کہ

اوربيه آلَمْ يَجِدُكَ يَتِيمًا فَأَوْى كَانْعت كاشكربيب-

وَاَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَدُ اور سائل کو بخت آواز کے ساتھ رونہ کریں اس لیے کہ آپ عیال دار اور اسباب ظاہری سے فارغ رہے ہیں اور آپ منرورت کا دُ کھ جانتے ہیں اور بیہ شکر وَ وَجَدَكَ عَائِلًا فَاعْنَى كی نعمت کے مقابے ہیں ہے۔

دَامَّابِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّتْ اور اپنے پروردگار كی نعتوں كی بات كريں اور بيان فرمائي اس كے قلب مقدس پر فرمائي اس كے كراس نے آپ كو بے شارتھ تيں عطافر مائی ہيں اور آپ كے قلب مقدس پر بے حدو حساب علوم ومعارف نازل فرمائے ہيں اس نعمت كاشكريہ ہے كہ آپ دوسرل كو بھی ان نعتوں كی دلالت فرمائيں اور ان ميں سے حصد عطافر مائيں۔

ايك لطيفه

ہماں ایک لطیفہ ہے اور وہ یہ ہے کہ ہداہت کو جو کہ دینی احمان اور نعمت ہے عنی کرنے پر جو کہ دینوی نعمت ہے مقدم فرمایا گیا ہے جبکہ شکر طلب کرنے کے مقام میں جو دینوی نعمت کے مقابل تھا مقدم کیا گیا ہے اور جو دینی نعمت کے مقابل تھا 'بعد میں لایا گیا ہے اس لیے کہ نعمت و فیوں کے مقابل کی مقابل کی مخلوق پر شفقت طلب فرمائی گئی ہے اور دینی نعمت کے مقابلے میں باطنی نعمیں حاصل کرنے کے طریقے پر دلالت طلب فرمائی گئی اور اللہ تعالی کی مخلوق پر شفقت آنہیں ہدایت دینے پر مقدم ہے اس لیے کہ جب تک معاشی کا اور اللہ تعالی کی مخلوق پر شفقت آنہیں ہدایت دینے پر مقدم ہے اس لیے کہ جب تک معاشی کا معاملہ منظم نہ ہو۔ دل کو ذمہ داریاں تجول کرنے اور امور آخرت کی حاش کی فرصت نمیں گئی ۔ نیز کہا جاسک ہے کہ مائل کو پتیم کے ماتھ پوری مناسبت ہے اس لیے جوشکر سائل کے حق کے ساتھ متعلی مقابل میں ہدایت کی نعمت کو غنا کی نعمت سے بہلے لایا گیا اس لیے کہ فنی ہونا اس وقت نعمت ہے جب اموال میں کو غنا کی نعمت سے جہلے لایا گیا اس لیے کہ فنی ہونا اس وقت نعمت ہے جب اموال میں تقرف کرنے کا طریقہ معلوم ہواور اس کا ہدایت کے بغیر تصور ہی نہیں اور تیوں شکروں کی تیوں نعموں کی میاتھ متوں کہ نیوں شعور ہی نہیں اور تیوں شکروں کی تیوں نعموں کی جیاں نکی میں۔

فدكوره نعمتول كساته فدكوره شكرول كى بالمنى مناسبت اورمسكله شفاعت

اور ایک اور پوشیده مناسبت ہے کہ یہ تینوں شکر قیامت کے دن حضور صلی اللہ علیہ وآلہ marfat.com

وسلم کی اُمت کی شفاعت پردلیل ہو سکتے ہیں اس لیے کہ پتیم سب سے زیادہ کزور ہاور اسے قوت دینے کی کوشش کرنا کمال لطف اور رقم کرنا ہے۔ اور سائل اکثر اوقات بے موقع اور ب وقت سوال جھڑ ہے اور زاری کے ساتھ ستاتا ہے تو اس کی ایڈا و رسائی پرمبر کرنا اور اس کے اس ستانے کے بجائے احسان کرنا گزاہ کو معاف کرنے کی دلیل ہے۔ اور کیے کونہ کیا سبحمنا ہے۔ اور اللہ تعالیٰ کی نعتوں کو بیان کرنا ایک ور دِسر چاہتا ہے اور اس مشقت کو برداشت کرنا جو کہ نفع و سینے کے لیے ہے بارگاہ خداو عربی میں لوگوں کو اس کے عذاب سے برداشت کرنا جو کہ نفع و سینے کے لیے ہے بارگاہ خداو عربی میں لوگوں کو اس کے عذاب سے چھڑانے کے لیے عرض و دنا تواست پیش کرنے کی تکالیف پرداشت کرنے کی دلیل ہے۔

اور وَاَمَّا بِنِعْمَةِ دَبِّكَ فَحَدِّتْ كَ الفاظ مِن اس بات كى دليل ہے كدا ہے اور اپنے میں سے ہے لیکن بیداس وقت ہے جبکہ مقصد سجے ہو جیسے زبان كے ساتھ اللہ تعالى كے شكر كى اشاعت كرتا يا دو سرے لوگوں كى اقتداء حاصل كرنا۔ اور اگر كمی فض كوفعت بيان كرنے سے خود بنى اور تكبر كا ڈر ہوتو اس كے بارے من جميانا اور يوشيد وركھنا زيادہ بہتر ہے۔

حفرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنما سے منقول ہے کہ آپ اپنی شب بیداری کے حالات من کے وقت لوگوں کے سامنے بیان کرتے کہ آج رات میں نے اسٹے نوافل اوا کیے اور اتی تلاوت کی بعض نا دانوں نے اعتراض کیا کہ بیا ظہار ریاء کے قبیلے سے ہے۔ آپ نے فرمایا کہ اللہ تعالی فرما تا ہے کہ وَاُمّا بِنِعْمَةِ دَبِّكَ فَعَمَدِهِ فَاور مِير ہے نزد يك اس کے برابراور کوئی نعمت نہیں ہے کہ جھے نیکی کی تو فق عطافر مائی عی ہے۔ تو میں بے تعمت کول بیان نہ کروں اور اس کے شکر سے محروم رہوں؟

حن ينيم عن سائل اورتحديث نعمت كمتعلق حضور عليه السلام كمعمولات

جاننا چاہیے کہ اس سورۃ میں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو تینوں چیزوں کی انہائی تاکیہ فرمائی گئی ہے۔ بیٹیم کے حق کی رعایت کرتا، سائل کے حق کی تلہبانی کرنا اور اللہ تعالیٰ کی معتوں کو بیان کرنا اور اللہ تعالیٰ کی اختوں کو بیان کرنا اور اس انہائی تاکید کی وجہ سے حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ان تینوں چیزوں کے بارے میں بے حدکوشش فرماتے تھے۔ جیسا کہ نی کریم علیہ العملؤۃ والسلام کی سیرت میں ہے حدکوشش فرماتے تھے۔ جیسا کہ نی کریم علیہ العملؤۃ والسلام کی سیرت میں اس میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں اللہ می سیرت

طیبه کی آ گابی ر محضے والوں پر بالکل ظاہر ہے۔

مدید میچ میں وارد ہے کہ حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے ارشاد فرمایا ہے کہ بیتم کو پالے والاخواہ وہ بیتم اس کارشتے دار ہو یا اجنبی قیامت کے دن میرے اس طرح قریب ہو کا جیسا کہ ہاتھ کی دوالگیوں کے ساتھ اشارہ فرا ا

نیز حدیث شریف میں ہے کہ ایک مخص حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ماضر ہوا اور عرض کی کہ بارسول اللہ! (مسلی اللہ علیہ وسلم) میرا دل بہت بخت ہے اس کا علاج فرمائیں۔ آپ نے ارشاد فرمایا کہ تیبول پر مہریانی کرو اور ان کے سرول پر ہاتھ رکھؤ تہاں ہے دل کی تنی و در ہوجائے گی۔

نیز وارد ہے کہ جو مخص شفقت کے ساتھ یتم کے سر پر ہاتھ پھیرے اس کے لیے ہر
بال کے بدلے ایک نیک کعی جاتی ہے۔ اور بزرگان سلف نے فر مایا ہے کہ جب یتم روتا ہے
عرش ملے لگنا ہے تو جس نے ول جوئی کر کے یتم کورونے سے چپ کرایا کو یا اس نے عرش کو
ملئے ہے ساکن کر دیا۔

حق سائل کے متعلق نقش سیرت طبیبہ

اور سائلوں کے بارے میں حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بخشش اس قدر تھی کہ آپ ک زبان مبارک پر بھی لاکا لفظ جاری نہیں ہوتا تھا۔ چنا نچہ بخاری میں حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ عنہا کی رواعت کے ساتھ مروی ہے کہ کسی نے بھی بھی حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ہے ، کسی چیز کا سوال نہ کیا جس کے جواب میں آپ نے لافر مایا ہو۔ چنا نچہ فرز وق شاعر اس مغہوم کو مبالفہ کے طریقے ہے اس شعر میں تھم کر کے کہتا ہے

مأقال لاقط الاني تشهد، لولا التشهد كانت لاء ه نعم

یعنی آپ نے تشہد کے سوام می لاندفر مایا اگر تشہد ندہوتا تو آپ کا لاہم ہوتا۔
اور ترفدی میں روایت کی گئی کہ ایک وفعہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں
بحرین کی طرف سے نوے (۹۰) ہزار ورہم لائے گئے تھے آپ انہیں مسجد شریف کی

marfat.com

چٹا کول پر ڈھر کر کے نماز بھر کے بعد تعتبے فرمانے گے اور نماز ظہر تک ایک درہم بھی ہاتی نہ بھا۔ اوراس دوران جوسائل بھی آیا آپ نے اے عطافر مایا۔ اتفاقاً تعتبے سے فارغ ہوئے تو ایک اور سائل آ دھمکا۔ آپ نے فرمایا کہ اپ تو سب پھتھیم ہو چکا لیکن جاؤ جمہیں جس چیز کی ضرورت ہے ہو پاریوں سے خرید او اور میرے نام درج کرادو جب وہ میرے پال پیز کی ضرورت ہے ہو پاریوں سے خرید او اور میرے نام درج کرادو جب وہ میرے پال آئے گا میں تعتب دا کر دول گا۔ ای اثناء میں حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ خاضر ہوکر کرف کی میں قیت اواکر دول گا۔ ای اثناء میں حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ واللہ وسل کی کہ یا رسول اللہ! (صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم) اللہ تعالی نے آپ کومقد ور سے زیادہ تکلیف نہیں دی ہے تو آپ یہ تر ضے کیوں برواشت فرما رہے ہیں؟ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو یہ بات پند نہ آئی اور آپ عرض کی انفق والا تعیش من ذی العدش اہلا ایک انساری حاضر سے انہوں نے عرض کی انفق والا تعیش من ذی العدش اہلا حضور آپ بلا تکلف خرج فرہا میں اور آپ عرش کے ماک کی طرف سے کمی قلت کا کوئی خطرہ محسوس نہ فرما میں۔ سرکار صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسکراتے اور آپ کے ڈرخ انور پر خوش کے تارنمایاں ہوئے اور فرمایا کہ جھے ای روش کا تھم ویا گیا ہے۔

حاصل کلام بدکساکوں پر حضور صلی الله علیہ وآلہ وسلم کی جود و سخائل مدتک تھی کہ اللہ تعالیٰ نے آپ کومیانہ روی کا بحم دیا اور بہت زیادہ خرج کرنے سے روک دیا۔ چنانچہ سور اسرکی کی تغییر میں نہ کور ہے کہ ایک دن حضور صلی الله علیہ وآلہ وسلم تشریف فرما تھے کہ ایک بچہ حاضر ہوا اور عرض کی کہ یارسول اللہ! (صلی الله علیہ وآلہ وسلم) بھری مال عرض کر رہی ہے کہ بیرے پاس پہننے کا کر تی بیس ہے بچھے ایک کرت عطافر ما کیں۔ آپ نے فرمایا ذرا تھر کرآیا والم مرکز آیا اور کھنے لگا میری مال عرض کر رہی ہے کہ بھی کرت جوجم مبارک برے بچے جا گیا اور بھرآیا اور کھنے لگا میری مال عرض کر رہی ہے کہ بھی کرت جوجم مبارک برے بچے جا گیا اور بھرآیا اور کھنے لگا میری مال عرض کر رہی ہے کہ بھی کرت والم میں تشریف خود برہنہ جم تشریف فرما رہے۔ صحابہ کرام رضوان اللہ علیم الجھین جو کہ آپ کا جا برتھر یف خود برہنہ جم تشریف فرما رہے۔ صحابہ کرام رضوان اللہ علیم الجھین جو کہ آپ کے جا برتھر یف فود برہنہ جم تشریف فرما کے اللہ تعالی نے یہ آپ یہ نازل فرمائی والدہ کو رہنے گیا۔ اللہ تعالی نے یہ آپ یہ نازل فرمائی والدہ کو رہنے گیا۔ اللہ تعالی نے یہ آپ یہ نازل فرمائی والدہ کو رہنے کو رہنے میں تشریف فرمائی دفرائی دفرمائی دفرمائی دئی دیمن تشریف فرمائی دفرمائی دفرمائی کہ آپ برہنہ جم کھر میں تشریف فرمائی دفرمائی دورمائی دفرمائی دفرمائی دفرمائی دفرمائی دورمائی دفرمائی دورمائی دفرمائی دورمائی د

رہیں اور ان مخلص احباب اور محابہ کرام سے مل بیٹمنا بھی نہ ہوسکے جو کہ فیض حاصل کرنے کے لیے آپ کی خدمت میں حاضر ہوتے ہیں۔

اور بخاری میں وارد ہے کہ ایک مرتبہ ایک فاتون نے اپنے ہاتھ سے ایک چادری کر حضورعلیہ الصلاۃ والسلام کی خدمت میں پیش کی اور عرض کی کہ میری آ رزویہ ہے کہ آپ اسے بنفسِ نفیس زیب تن فرما کیں کہ میں نے اسے اپنے ہاتھوں سے سیا ہے اور پُر تکلف حاثیہ لگایا ہے۔ سرکار علیہ السلام کو بھی چادر کی ضرورت تھی آپ نے لے کر پکن لی ای دوران ایک فیض آ گیا اس نے عرض کی کہ یہ چادر کنتی خوبصورت ہے اوراس کا حاثیہ کس قدر کردوران ایک فیض آ گیا اس نے عرض کی کہ یہ چادر کہ جھے عزایت فرما کیں۔ حضورعلیہ کُرکشش ہے۔ یارسول اللہ! (صلی اللہ علیہ وسلم) یہ چادر جھے عزایت فرما کیں۔ حضورعلیہ اللہ علیہ وآلہ وسلم جانس خریف کے فرمایا بہت اچھا اور وہ چادراسے عطافر مادی جب حضورصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جانس خریف کی ملامت کی اور کہا کہ تو نے سوال کو تو نیس فرماتے تو نے سوال کیوں نہیس کیا اس لیے کہ حضورصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے یہ چادر بری رغبت اور ضرورت کے ساتھ نہیس کیا اس نے کہا کہ جس نے یہ چادرد نیا جس مہنٹ کے لیے نہیں ماگل کورونیس فرماتے تو نے سوال کیوں کیا گئی ہے بلکہ آئے گئی کے بلکہ آئے گئی ہے بلکہ آئے گئی کے بلکہ آئے گئی کے بلکہ آئے گئی کے بلکہ آئے گئی کے بلکہ کہ جس نے یہ چادر دخشورصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ہاں مقبول اور آپ کے قلب مبارک کو پہندیدہ تھی۔

اور الله تعالی کی نعتوں کا بیان جو کہ آپ کے بارے میں دربار خداوندی ہے دنیا وآ خرت میں بارش کی طرح بری تعین منع وشام حضور ملی الله علیہ وآلہ دسلم سے دقوع پذیر ہوتا تھا اور ان کے بیان کے شکر کے مقام میں آپ نے دفتر وں کے دفتر ارشاد فر مائے ہیں جیسا کہ حدیث شریف کی کتابوں سے واقف حضرات سے پوشیدہ نہیں ہے۔

كمشده ك ليسورة والفحل كي خصوميت

واصبحت في جواد الله يُ حكرد ستك دين وهم شدول جائكا واللهاعلم

سورة الم نشرح

کی ہے، اس کی آٹھ (۸) آیات، اٹھائیس (۲۸)کلمات اور ایک سوتمیں (۱۳۰)حرف ہیں۔

وجدربط

اوراس سورة كا سورة والعنى كے ساتھ كى طور پر رابط ہے كہ دونوں بى حضور صلى الله عليه وآلہ وسلم پرائي نعتوں كا شار مقصود ہاور كام كا انداز بالكل ايك جيها ہاى ليے بعض لوگوں نے ان دونوں كو ايك سورة كمان كيا ہے۔ اور دونوں كو ايك سورة كمان كيا ہے۔ اور دونوں كو ايك سورة كمان كيا ہے۔ اور دونوں كو ايك سورة المان كيا ہے۔ اور دونوں كي الله كے ساتھ فاصله كيے بغير ايك ركھت بى پڑھنے كا فيصله كيا ہے۔ كيان اگر فور كري تو ايك ناتھ مالا كي بخير ايك ركھت بى پڑھنے كا فيصله كيا ہے۔ كيان اگر فور كري تو ياتا لفظ بى بھى اور معنى بى جہت لفظى سے اس بناہ پر كہ سورة والعنى بى استفہام كا مينه باتا لفظ بى بھى اور معنى بى جہت لفظى سے اس بناہ پر كہ سورة والعنى بى استفہام كا مينه بات ہو الكى خابر فرق ہے جو كہ ايك دومر ہے ہے والله يكبول خابر فرق ہے جو كہ ايك دومر ہے ہے وادر يہ اور درميان سے منانى ہے۔ اور اگر مرف اس بات پر نظر كرتے ہوئے كہ ان دونوں سورتوں جى مضور ملى الله عليہ وآلہ وسلم پر اپنى نوتوں كا شارم او ہے دونوں سورتوں كو ايك قراد ديں اور درميان سے الله عليہ وآلہ و خواب الرقوں على مناسبت ہميں بہت ى سورتوں جى الله على كمارة من الله كو كر ان لازم آئى كے۔ اس ماللہ كو كر ان لازم آئى كے۔ اس ماللہ كو كر ان لازم آئى كا سب كا سب ايك كلام كی طرح ہے تو اكثر سورتوں كے درميان سے بيم اللہ كو كر ان لازم آئى كا۔

ر ہامعنوی اعتبار سے تو اس بناء پر کہ حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر اللہ تعالیٰ کی تعتیں دو منتم کی ہیں: ایک فتم وہ ہے جس کا لوگ حس کے ساتھ مشاہدہ کرتے تھے اور وہ تعتیں آپ میں ہرعام و خاص کو تعلی تعلی ۔ اور دوسری فتم وہ ہے جو عام تو کیا خاص کو بھی نظر نہیں آتی تعیں ۔ اور دوسری فتم وہ ہے جو عام تو کیا خاص کو بھی نظر نہیں آتی تعیں ۔ اور وہ ایک مخفی اور پوشیدہ امر ہے تو دونوں قسموں کو جدا جدا بیان کرنا ضروری ہے۔

بہا فتم کوسورۃ وانفحیٰ میں تفصیل کے ساتھ بیان فر مایا ہے جبکہ دوسری فتم کو اس سورۃ میں تا کہ کوئی شبہ ندر ہے۔

نیز جن نفتوں کے ساتھ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو مخصوص فرہایا گیا' ان کی دو تسمیں ہیں: پہلی وہ جو آپ کے ظاہر کے ساتھ تعلق رکھتی ہے اور دوسری وہ جن کا تعلق آپ کے باطن کے ساتھ ہے۔ پس سور ہ واضی میں پہلی قتم کو بیان کرنا مقصود ہوا جبکہ یہاں دوسری قتم کو بیان فرمایا گیا۔ تو گویا ایک سور ہ حضور علیہ السلام کی ان خصوصیات کو شار کرنے کے لیے ہو ظاہر میں ہیں اور دوسری سور ہ آپ کی ان فعمتوں کے شار کے ملیے جو باطن میں ہیں اور دوسری سور ہ آپ کی ان فعمتوں کے شار کے ملیے جو باطن میں ہیں اور خاہر وباطن میں جوفرق ہے بالکل ظاہر ہے۔

سبب نزول

اور بعض مفسرین نے اس سورۃ کے نزول کا سبب بیول بیان کیا ہے کہ ایک دن حضورصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے در بار خداوندی میں عرض کی کہ اے میرے پروردگار! تو نے حضرت ابراہیم علیہ السلام کو خلت کا مرتبہ بخشا۔ حضرت مولی علیہ السلام کو کلیمی کی خلعت عطا فرمائی۔ حضرت واؤد علیہ السلام کو پہاڑ اور لوہ کی تشخیر کے ساتھ ممتاز فرمایا اور حضرت سلیمان علیہ السلام کو جنوں اور انسانوں کی باوشاہت اور آگ کی تشخیر کے ساتھ انفرادیت بخشی میرے لیے کون کی نعمت مخصوص کی گئی ہے؟ اس سوال کے جواب میں بیسورۃ نازل ہوئی اور ظاہری طور پر بیسوال واقعہ معراج سے پہلے کا ہوگا اس لیے کہ اس واقعہ کے بعد جو خصوصیات آپ کو عاصل ہوئیں گزشتہ انبیاء علیم السلام میں سے کسی کو بھی اس کا سوواں خصوصیات آپ کو عاصل ہوئیں گزشتہ انبیاء علیم السلام میں سے کسی کو بھی اس کا سوواں (۱۰۰ اوال) حصر حاصل نہ تھا۔

نكته

اورسورۃ الم نشرح کے نکات میں سے ایک تکتہ یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو آپ کی طلب کے بغیر اس قدر شرح صدر فر مائی کہ حضرت موی علی نینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام نے در بار خداو ندی سے اس کی طلب کی کہ دب اللہ حلی صدری پھر بھی انبیں اس مرتبے کی شرح صدر میسر نہ ہوئی جبیل کہ اس واقعہ سے ظاہر ہوا جو انبیں اپنے بھائی انبیں اس مرتبے کی شرح صدر میسر نہ ہوئی جبیل کہ اس واقعہ سے ظاہر ہوا جو انبیں اپنے بھائی اس مرتبے کی شرح صدر میسر نہ ہوئی جبیل کہ اس واقعہ سے ظاہر ہوا جو انبیں اپنے بھائی اس مرتبے کی شرح صدر میسر نہ ہوئی جبیل کہ اس واقعہ سے ظاہر ہوا جو انبیں ا

حضرت بارون عليه السلام كرماته بيش آيا اورائي مقام برآئي كات اس امركا اثاره بو كد جوكام الله تعالى ك عنايت اورآ دى كى طلب كر بغير مرانجام پائ اس كا مقام او نچا بوتا هر را اقول و بالله التو فيق بهال بير بحى اشاره به كه الله تعالى اپ رسل عليم العسلوت والتسليمات كو جونعتين ان كر ما تكف برويتا بها پخوب ملى الله عليه و آله و ملم كوان كى طلب كا حواله و ي بغير عطا فرماتا به جيد شرح صدر ك علاوه رفعت ذكر كه حضرت ابراجيم عليه العسلوة والسلام عرض كرت بيل وجعل لى لسان صدق فى الاخرين و اوراس كى قوليت ميس فرمايا: و تو كنا عليه فى الآخرين سلام على ابراهيم جبدا پخ حبيب قوليت ميس فرمايا: و تو كنا عليه فى الآخرين سلام على ابراهيم ابراهيم و في الدين و وفعنا لك لايب صلى الله عليه و آله و ملم كم متعلق فرمايا: و سلموا تسليمًا نيز فرمايا: و د فعنا لك ذكر ك محم محفوظ الحق غفر له ولوالديه)

وجدتشميه

خاصيت

اوراس سورۃ کے خواص میں سے بیہے کہ جوشن اس سورۃ کوسوتے وقت سر ہ (۱۷) بار پڑھ کرا ہے سینے پر دَم کرے اسے وسوسے اور نُم سے خیالات پر بیٹان نہیں کرتے اور وہ تہ بیروں میں غلطی نہیں کرتا۔

بسم الله الرّحمن الرّحيم

آلَدُ نَشَرَحْ كيا ہم في كشادُ و نيس فرمايا ہے لك صَدْدَكَ آپ كے ليے آپ كاسينہ تاكدوى كا بينہ تاكدوى كا بوجد برداشت كرے اور اس سينئه پاك ميں امرار الہيسائيں۔ اور دعوت و تبليغ كا غم، أمت اور دين كاغم، دنيا اور آخرت كاغم سب و بيں قرار پكڑيں اور كينه كھوف، بغض،

حداور کرے اخلاق قریب نہ پھیس اور علم ، ایمان اور حکمت کا نور محیط ہواور لک کا لفظ اس لیے لایا گیا ہے کہ آپ کے سینے کوفراخ کرنا صرف آپ کوفع کے لیے ہے تاکہ آپ انہائی کمال حاصل کریں اگر لك كالفظ نہ ہوتا تو بہ معنی مجھ جس نہ آتا۔

اصطلاح طريقت بمس صدر كالمغبوم

اورلغب عرب میں صدر سینے کو کہتے ہیں اور اللی طریقت کی اصطلاح میں اس کا معنی ہے کہ قلب کے دو دروازے ہیں: ایک دروازہ جو کفس کی طرف ہے اس کا نام صدر ہے اور اس کا ایک دروازہ جو کہ دورائ ہے جہت کشادہ اور وسیع ہے اس کا نام قلب ہے اور صدراس دروازہ جو کہ دوح کہ دوح کی طرف ہے بہت کشادہ اور حید صدر کو کشادہ کر دیں واقع ہوا ہے تو جب صدر کو کشادہ کر دیں گا ہر ہے کہ وہ دروازہ اور کشادہ ہوگا ای لیے یہاں لفظ صدر لایا گیا ہے نہ کہ لفظ قلب اس لیے یہاں لفظ صدر لایا گیا ہے نہ کہ لفظ قلب اس کی وجہ سے شیطان زیادہ تر ای سمت نفس کی طرف سے شورش کرتا ہے اور شک کرتا ہے اور ایمان کی وجہ سے شیطان زیادہ تر ای سمت نفس کی طرف سے شورش کرتا ہے اور شک کرتا ہے اور طلاحت کم ہو جاتی ہو اتی ہوتا ہے اور دل کی تنگی کی وجہ سے نیکی کی لذت اور ایمان کی طلاحت کم ہو جاتی ہے اور جب اس سمت دل کو کشادگی مل گئی تو بندگی کی ادائیگی پورے طلاحت کم ہو جاتی ہے اور جب اس سمت دل کو کشادگی مل گئی تو بندگی کی ادائیگی پورے ولولے کے ساتھ میسر آئی اور مقصد حاصل ہو گیا۔

یہاں جانا چاہیے کہ شرح صدر کا معنی حوصلے کی فراخی ہے۔ اور ہو خف کے حوصلہ کی فراخی اس کی استعداد کے مطابق اور اس کے کمال اور مرتبے کی وسعت کے انداز ہے پر ہوتی ہے۔ اور ہر مرتبے اور ہر کمال کے حوصلے کی فراخی جب تک اس مرتبے اور اس کمال کونہ پنیج در یافت نہیں کی جا سکتی۔ ای لیے اکثر عوام الناس چاہیں کہ بادشا ہوں کے حوصلہ کی فراخی در یافت کرلیس اور معلوم کرلیں قو صحت کے ساتھ ہر گر نہیں بچھ سکتے۔ اور اس قول کے مطابق کہ ولی را دلی می شناسد ونبی را نبی می شناسد۔ خصوصاً حضور سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی شرح صدر کا خود امکان نہیں کہ کوئی انسان کما حقد تصور کر سکتے اس لیے کہ آ ب کے مرتبے کا کمال جو کہ خاتمیت ہے کہ کی کو حاصل نہیں ہے اور کیا خوب کہا گیا ہے ۔

يناصباحب الجمال، يا مبد البشر، من وجهك المنير لقد نور القمر marfat.com .

تغير وزيزى ______ تيموال ياره

لایسمسکسن النسنساء کسمساکسان حقسه ، بعدازخدابزرگ تولی قصدمخفر حضور رحمتِ عالم صلی الله علیه وآله وسلم کی شرح صدر کابیان

کیکن حضورعلیہ الصلوٰۃ السلام کو جو حسی اور معنوی شرح مدر حاصل ہوئی یہاں اس کے متعلق مثال اور اجمال کے ساتھ نشان دیتا ضروری ہے۔

معنوی شرح صدر

آپ حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے معنوی شرح صدر کا اگر تصور کریں تو یوں جھنا چاہیے کہ آپ کے سینۂ پاک میں ایک بے پایاں فضا واقع ہے جس میں انتہائی وسیج ایک عظیم عمارت کی بنیاد رکمی گئی ہے اور وہ ممارت بارہ (۱۲) نشست گا ہوں پر مشتل ہے۔ ان میں ہے بعض کا تعلق دنیا اور بعض کا دین کے ساتھ ہے۔ جبکہ بعض دین و دنیا ہے بالاتر ہیں۔ ایک نشست گاہ میں تصور کرنا چاہیے کہ اس میں ایک عظیم الثان بادشاہ جلوہ گر ہے۔ اور روئے زمین کے سب بادشاہ اس کے دربار میں حاضر ہوکر اس سے مملکت کے ضابطے اور تہ بیریں پوچھتے ہیں اور فرامین کرئی، تو ذک تیموری، کلمات عالمگیری، واقعات بابری اور تہ بیریں پوچھتے ہیں اور فرامین کرئی، تو ذک تیموری، کلمات عالمگیری، واقعات بابری اور آئین آکبری سب بیبیں درتی اور امتحان کے معیار پر چیش کیے جاتے ہیں۔ اور مما لک کی فرمال روائی اور مختلف ریاستوں اور دُور در از شہروں کے ساتھ مسلح و جنگ کے آ واب ای سے فرمال روائی اور مختلف ریاستوں اور دُور در از شہروں کے ساتھ مسلح و جنگ کے آ واب ای سے فرماں۔

اور دوسری نشستگاہ میں ایک علیم جلوہ گر ہے جو کہ سیاست منزل، تہذیب اخلاق اور آداب کی آرائش کو کما حقہ بیان فرماتا ہے۔ اور زمانے کے حکماء اور جہان کے قلفی ای سے قوانین کا سبق لیتے ہیں۔ اور اس کے ہر قانون سے جو وہ بیان فرماتا ہے ارسطو، نصیر طوی ، ابن مسکویہ اور ابن سینا وغیرہ بے شارعلوم نکالتے ہیں اور اپنے فنون میں استعال کرتے ہیں۔

اور تیسری نشست گاہ میں ایک قاضی مند عدالت پر رونق افروز ہے۔ اور مقد مات کے نیملے کر نے میں رنگارنگ نیملے کر رہا ہے اور کے نیملے کر رہا ہے اور زمانے کے نیملے کر اسٹارات کو ابنادستور العمل سجھتے ہوئے سند کے طور پر لے زمانے کے بچ حضرات اس کے ارشادات کو ابنادستور العمل سجھتے ہوئے سند کے طور پر لے Martat.com

جارہے ہیں۔

اور چوتھی نشست گاہ میں ایک بتحرمفتی مندافقاء پر براجمان ہے۔اور فتووں کا سمندر اس کی زبان سے جوش مارر ہا ہے۔اور نئے رونما ہونے والے واقعات میں سے ہرواقعہ میں اصول کے مطابق کتاب و سنت سے حکم الہی واضح فرما رہا ہے۔ اور جہان کے راوی اور زمانے کے وائض نویس سب اس کے اردگرد بیٹھے اس کے ہرلفظ کونقل کررہے ہیں اور اپنی ضرورتوں میں کام میں لاتے ہیں۔

اور پانچوین نشستگاہ میں ایک محاسبہ کرنے والاحکومت کے تخت پر فائز ہے جا داس کے سامنے کھڑے ہیں اور مجرموں کو اس کے حضور پیش کر کے ہرکسی کو حدوقتوری قید اور سزا دے رہے ہیں۔ اور محاسبہ، حدود اور تعزیری قائم کرنے اور اللی بدعت کو سزا دینے کے منابطے اس امر سے وابستہ اہل کار اس سے یادکر رہے ہیں اور وہ نُرائیوں کے اسباب کو روکنے اور شہوات، غضب اور ظلم کے داخلے کی راہوں کی پیش بندی میں موشکا فیاں کر رہا

اورچمنی نشست گاہ میں سات قر اُتوں کا ایک بہترین اور خوش الحان قاری روایات کو از پر کیے ہوئے لوگوں کے سامنے تلاوت فرما رہا ہے اور دنیائے جہاں کے قاری حضرات اس سے ہرروایت کی وجہ کی تحقیق کر رہے ہیں۔ کسی کوادعام کا قاعدہ سکھا رہا ہے دوسرے کے سامنے ہمزہ کی تحفیف کی بحث کر رہا ہے تیسرے کو برطون ، اظہار اور اخفاء کے قانون کی دلالت کر رہا ہے۔ تیسرے کو برطون ، اظہار اور اخفاء کے قانون کی دلالت کر رہا ہے۔ علی بند القیاس

اور ساتوی خلوت نشستگاه میں ایک اوراد پڑھنے والا عابد و ظائف اور نوافل میں مشغول ہوکر دنیا و مافیہ کو صاف جواب دیے ہوئے سے شام تک اور شام سے شبح کل مشغول ہوکر دنیا و مافیہ اور مشخ کل حصن حمین، ملاعلی قاری کی حزب اعظم اور شخ کا در آن پاک، اذکار نبوی، جزری کی حصن حمین، ملاعلی قاری کی حزب اعظم اور شخ الشیوخ کے اوراد میں مصروف ہے اور اذکار کے انوار کی کشرت کی وجہ سے عالم علوی اور سفلی کے ملائکہ اس کی محفل سے مانوں ہوکر گروہ در گروہ اس کے اردگر د حاضر ہور ہے جی اور اسے ان کی حاضری کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی لذت حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کے احتمال ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کے احتمال ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کے احتمال ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کے حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کے حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کی حاصری کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی لذت حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کے حاصری کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی لذت حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کی حاصری کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی لذت حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو اس کی حاصری کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی لذت حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو سے مانوں کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی لذت حاصل ہور ہی ہے کہ دنیا و مانیہا کو سے مانوں کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی لذت حاصل ہور ہی ہو کہ دنیا و مانیہا کو سے مانوں کی وجہ سے ایک عظیم انس اور الی کی دیاں مانوں کی وجہ سے ایک عظیم کی دیا دور اس کی دیا کی دیاں کی دیاں

فراموش کے ہوئے ہے۔اور جن لوگوں کواس کام کا شوق ہےاس سے اس بحث کی تغییش کر رہے ہیں کسی کو دن رات کے نوافل اوا کرنے کا طریقتہ بیان فرمار ہا ہے ووسرے کولباس کہنے، پانی چنے، کھانا کھانے، چاندو کی منے اور دوسرے کاموں کی وعا کیں بتار ہا ہے اور اپنے اور قات کوذکر و درود کی ہوئے ہوئے ہے۔

اور آٹھویں نشست گاہ میں ایک عارف کائل اللہ تعالیٰ کی ذات، صفات اور افعال کے اسرار جو کہ کا نتات میں منتشر اور بکھرے ہوئے ہیں۔اور علوم لا متنائی کو اپنی کو ہرافشاں زبان سے دصاحت فرمار ہا ہے۔اور اس امر سے وابستہ لوگ فتو حاستے کمیہ اور فصوص الحکم اس کی زبان سے مُن کر لکھ رہے ہیں۔

اورنوی نشستگاہ میں ایک واعظ منبر پرتشریف فرما ہوکر عام بھی ہوئی محفل میں دِلوں کوجنش اوراروان کوحرکت میں لاکرکی کوظیم تو اب کی ترغیب کے ساتھ راوراست پر لارہا ہے۔ اور کوکوں کو قبر، حشر، نشر، ہے۔ اور کوکوں کو قبر، حشر، نشر، حساب، میزان اور بل صراط سے گذرنے کے واقعات، دوزخ کی سزاؤں، جنت کے بلند درجات اوران اعمال کا جوکہ ان مقامات میں نفع بخش ہوتے یا نقصان دیتے ہیں واضح بیان کے ساتھ پہند دے رہا ہے اس کی مجلس میں کافرز نارتو ڈرہے ہیں میں ماد قبر کررہے ہیں سخت دوں والے حقوق بیجان دے ہیں۔

اور دسویں نشست گاہ بیں ایک صاحب عزم رسول ہے جو کہ ولوں کو زم کرنے اور انہیں راہِ راست پرلانے بیں ہم تم کی تدبیری اور حلے بروئے کارلار ہا ہے۔اوراس کام کے لیے لوگوں کے ایک گروہ کو اپنے ساتھ طاکر برکسی کی استعداد کے مطابق اسے تبلغ اور دعوت کے لیے لوگوں کے ایک گروہ کو اپنے ساتھ طاکر برکسی کی استعداد کے مطابق اسے تبلغ اور دعوت کے لیے برطرف بھیج رہا ہے۔اور برقوم کے اپنے رسول کے ساتھ معاطے کوئن رہا ہے۔اور برقوم کے اپنے رسول کے ساتھ معاطے کوئن رہا ہے۔اور اس معالمہ کے تدارک بیں اپنی درست سوج کے ساتھ کار آ مداور مؤثر تدبیرین سکھا رہا ہے۔

کی استعداد کے مطابق ناشنای کے پردے کو دُورکرنے میں کوشش کررہا ہے اور انہیں منزل
تک پہنچانے کے طریقے کی نشائدہی فرما رہا ہے۔ اور انہیں احوال، مقامات، مراتب اور
مناصب کی راہ دِکھا رہا ہے۔ اور فیف لینے والوں کی بواطن میں قتم تتم کی توجیہات اور
تا خیرات فرمارہا ہے اور ارشاد و تزکید کا بازارگرم کیے ہوئے ہے۔

اور بارہویں نشست گاہ میں ایک تازک، ماہ جبین بلکہ کعبہ صورت محبوب جلوہ فر ما ہے جس کے جسم مقدس کو جمال الی کی جلی اپنا آشیانہ بتائے ہوئے ہے۔ اور طور پیکر مطلوب ا جس پرحسن از بی کے انوار چیک رہے ہیں۔اوراس میں محبوبیتِ الٰہی کی شان جلوہ گر ہے اور وہ محبت کی تشش کے ساتھ دِلوں کا شکار کررہا ہے۔ اور حسنِ ازلی کے لاکھوں عاشق دیوانہ وار کمی تفع اور کمال حاصل کرنے کی تو تع سے بغیر دُور وُور سے اس کی کشش کے کمند میں ہاتھ ڈالے بھامے آرہے ہیں اور اس کے آستانے پرسجدے کررہے ہیں اور اس کے جمال کی ایک جھلک کے مشاق میں اور میرم تبدان مراتب میں سے ہے جو کدانسان کو اس بارگاہ محمدیت کے مقبول محبوب کے وسیلہ جلیلہ کے بغیر نہیں ملا۔ اولیائے اللہ میں سے بعض ایسے ہیں جنہیں اس کی محبوبیت سے تعوری میک نصیب ہوئی اور وہ مخلوق کے مبحود اور دِلوں کے محبوب ہوئے ہیں جیسے حصرت غوث الاعظم اور سلطان المشائخ نظام الدین اولیاء قدس الله تعالی سر جما (اقول و بالله النوفيق حصرت مفسر علام قدس سره کی مندرجه بالا وضاحت سے پنة چلا كدسارى كائنات كاظاهرى ادر باطنى نظام سيد الكونين حبيب رب العالمين صلى الله عليه وآله وسلم کے اشاروں پرچل رہا ہے۔ساری کا تنات کی مشکلات بہیں سے حل ہوتی ہیں۔امام احمدمضا بربلوي درست فرمار ہے ہیں _

وہ جو نہ تھے تو کچھ نہ تھا وہ جو نہ ہوں تو کچھ نہ ہو جو نہ ہوں تو کچھ نہ ہو جان ہے جان کی جہان کی خیم مقدس پر چکنا، حسن ازلی کے خیر کھیے مقدس پر چکنا، حسن ازلی کے طالبوں کا آپ کے آستانہ پاک پر جدہ کناں ہونا اور قرب خداوندی کے تمام مراتب کا آپ کے وسیلہ سے ملنا سے تمام اوصاف بھی قابل توجہ ہیں کہ اگر نجدیوں کے بقول معاذ اللہ آپ

عام انسانوں جیسے ہیں تو حضرت مفسر علام کی ان تصریحات کے متعلق کیا فیصلہ کیا جائے گا اور پھر بینجی ہے جائے گا اور پھر بینجی ہت چلا کہ حضرت مفسر قدس سروحضور سید شہنشاہ بغدا در منی اللہ عنہ کوغوث الاعظم بینی سب سے بڑا فریا درس مانتے ہیں۔ محم محفوظ الحق غفر لہ ولوالدیہ)

اور کسی کے دل میں ان بارہ (۱۲) حلوت گاہوں کے بارے میں کوئی شک اور شبہ گزرے تو چاہیے کہ ان تمام کاموں کی بنیاد کہاں سے ہا اے بیٹنا پہتہ چل جائے گا کہ بیسب پچھ کمال جمدی علی صاحبہ الصلوات بنیاد کہاں سے ہا اے بیٹنا پہتہ چل جائے گا کہ بیسب پچھ کمال جمدی علی صاحبہ الصلوات والتسلیمات کے انوار کا پرتو ہے جو کہ شاخ در شاخ اور شعبہ در شعبہ نہروں کی طرح دریا سے والتسلیمات کے انوار کا پرتو ہے جو کہ شاخ در شاخ اور شعبہ در شعبہ نہروں کی طرح دریا ہے جدا ہوئے اور اس گروہ کو اپنے ہمسروں سے متاز کر دیا اور حضور سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا سینہ پاک فی الحقیقت مجموعی طور پر ان کمالات کا مخز ن تھا اور بہتم کام اور اشغال دن رات ای دربار سے نوارے کی طرح اُلے تھا جیسا کہ اہل سیر پر جو کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے احوال کو ملا خطہ کرتے ہیں پوشیدہ نہیں ہے۔

اور حکمت کا قانون ہے کہ دائی افعال کا ایک نیج پر معادر ہونا ان افعال کی استعداد حاصل ہوئے ہیں جاور افعال کی استعداد کے حاصل ہوئے بغیر محال ہے اور افعال جس قدر کمال انتظام کے مرتبے پر ہوں استعداد کے کمال پر دلالت کرتے ہیں۔

حى شرح صدر كے متعلق مقدمه

اور حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حسی شرح صدر کو ایک مقدمہ کی تمہید کے بغیر سمجھانا بہت مشکل ہے اور وہ مقدمہ یہ ہے کہ عالم غیب کی عالم شہادت کے ساتھ نبست وہی ہے جو اصل کی فرع کے ساتھ نبست ہے۔ پس عالم شہادت ہیں جو جیز بھی ہے ساتھ درست ورنہ ختم ہونے والے سراب اور چیز بھی ہے آگر عالم غیب میں اس کی کوئی اصل ہے تو درست ورنہ ختم ہونے والے سراب اور جھوٹے خیال کی طرح ہوگی۔ اور ہرغیبی چیز کی اگر عالم شہادت میں کوئی مثال یا صورت نہ ہوتو چھل کے بغیر درخت اور دلیل کے بغیر مدلول کی طرح رہ جائے گی اس لیے کہا گیا ہے کہ جو چیز عالم ارواح میں ہے مصدر ہے اور جو عالم اجمام میں ہے مظہر ہے۔ جو چیز عالم ارواح میں ہے مصدر ہے اور جو عالم اجمام میں ہے مظہر ہے۔ تو جیز عالم ارواح میں ہے مصدر ہے اور جو عالم اجمام میں ہے مظہر ہے۔ تو جیز عالم ارواح میں سے مطابم ہے کہ جس وقت حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور جب اس مقدے کو معلوم کر لیا تو جانتا جا ہے کہ جس وقت حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

marfat.com

کی معنوی شرح صدر عالم غیب میں قرار پائی حسی دنیا میں اس کی چار مرتبہ صورت بنی ۔ پہلی میں کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ابھی بطنِ مادر میں رونق افروز سے کہ آپ کے والد بزرگوار واصل بحق ہو گئے۔ آپ کی والا دت باسعادت کے بعد آپ کی والدہ محتر مہنے چاہا کہ آپ کو پرورش کے لیے دایہ کے سپر وکر دیا جائے۔

حضرت حليمه سعديه رضى الله عنهاك كمرشرح صدر كاذكر

اور عربوں کی عادت تھی کہ بچوں کو برورش کے کیے دائیوں کے سیرد کر دیتے تا کہ انہیں اینے گھر لے جائیں۔ اتفاقا ان دنوں بنی سعد کے قبیلے کی چند دودھ بلانے والی خواتین جو کہ شہرطائف کے گردونواح میں سکونت پذیر تھیں بچوں کی طلب میں مکہ معظمہ میں وارد ہوئیں۔ چونکہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے والد بزر کوار واصل بحق ہو مجکے تھے اس لے کسی دار کو بھی آپ کو لینے کی تو فیق نصیب نہ ہوئی۔ اور حلیمہ نامی ایک خاتون کو جو کہ ان خواتین میں سے تھی کسی نے بھی پرورش کے لیے اپنا بچہ نہ دیا کیونکہ بہت غریب اورمفلوک الحال خاتون تھی۔ وہ بہت جیران ہوئی کہ میں پرورش کے لیے بچہ لینے کے لیے آئی تھی اگر خالی ہاتھ وطن جاؤں تو مجھے بہت خفت اور ندامت ہوتی ہے۔ ناچار اس پیٹیم کو ہی اختیار كرلول _كرچهاس كى فرورش ميں اتن د نيوى منفعت كى تو قع نہيں حضور على الله عليه وآله وسلم كولي كرروانه موتني سوارى كے ليے ايك لاغر جانور ركمتى تنى جوكد بالكل چل نبيس سكتا تھا جیے بی حضور ملی الله علیه وآله و ملم کو گود میں لے کر اس ترسوار ہوئی وہ اتنا طاقت ور اور تیز رفار ہوگیا کہ تمام سواریوں سے آ مے آ مے جارہا تھا۔ قافلے والے اس سے تعجب كرر ب تنجے۔ طیمہ جب محمر بینچی اپنی زیادہ تر بکریوں کو لاغر چپوژ گئی تھی دیکھا کہ اس کی تمام بحریاں دودھ والی اور فربہ ہوگئیں۔اے یقین کے ساتھ معلوم ہو گیا کہ بیسب اس بیجے کی برکت

وہ بری شفقت اور ادب کے ساتھ پرورش کرتی تھی۔ یہاں تک کہ حضور سلی اللہ علیہ وہ کری شفقت اور ادب کے ساتھ پرورش کرتی تھی۔ یہاں تک کہ حضور سلی اللہ علیہ وہ کئے۔ ایک دن اپنی داید کے بچوں کے ہمراہ بحریاں جوانے میں معروف تنے داید کے لوکے کھانا لینے کے لیے اپنی والدہ کے پاس چلے سمئے اور بھی معروف تنے داید کے لوکے کھانا لینے کے لیے اپنی والدہ کے پاس چلے سمئے اور بھی معروف تنے داید کھانا لینے کے لیے اپنی والدہ کے پاس چلے سمئے اور بھی معروف تنے داید کے کھانا کینے کے لیے اپنی والدہ کے پاس چلے سمئے اور بھی معروف تنے داید کے کھانا کہنے کے لیے اپنی والدہ کے پاس جلے سمئے اور بھی معروف تنے داید کے کھانا کہنے کے لیے اپنی والدہ کے پاس جلے سمئے اور بھی معروف تنے داید کے کھانا کہنے کے لیے اپنی والدہ کے پاس جلے سمئے اور بھی کھانا کے دوران کے کھانا کے لیے اپنی والدہ کے پاس جلے سمئے اور بھی معروف تنے داید کے کھانا کے دوران کے کھانا کے دوران کے دوران کے دوران کے کھانا کے دوران کے کھانا کے دوران کے دوران کے کھانا کے دوران کے کہانا کے دوران کے دوران کے دوران کے دوران کے دوران کے کھانا کے دوران کی دوران کے دوران کے دوران کی کھانا کے دوران کے

سركارعليهالسلام بحريوں كے ياس الكياس جنگل ميں موجود تنے كدا جا تك كدى شكل كے دو برے پرندے نمودار ہوئے۔ایک نے دومرے سے بوجھا کہ کیا بدوی شخصیت ہے؟ اس دوسرے نے کہا ہاں! تو دونوں حضور علیہ السلام کی طرف متوجہ ہوئے۔ آپ ان پر ندوں کے خوف سے دوڑنے کے یہاں تک کہ دونوں پر ندوں نے آپ کے بازو پکڑ کر آپ کوز مین پر لثاديا اورايي چونچول سے سركارعليه الصلؤة السلام كے شكم مبارك كوجاك كر ديا اور سينهُ ياك سے دل مبارک؟؟ کوبھی باہر نکال کر جاک کیا اور اس سے جما ہوا سیاہ خون باہرنکال کر بچینک دیا اور انہوں نے کہا کہ بیر جما ہوا خون ہر مخض کے دل میں شیطان کا حصہ ہے۔ ہم نے اسے آ ب کے دل سے باہر نکال لیا ہے اور اب بیشیطان کا وسوسہ بالکل قبول نہیں كرے كا۔ (اتول و باللہ التو فيق-اور يوں بھي ہوسكتا تھا كہ يہ مجمد خون آپ كے قلب مقدس میں بالکل پیدائی نہ کیا جاتا محرابیانہیں۔ کیونکہ اس کا پیدا کرنا پھیل محمت اور قلب کے حسن تخلیق کے لیے منروری ہے اور پھراسے نکال باہر کرنا کمال نبوت کی دلیل ہے جس طرح بتقاضائے حسد انسانی حضور علیہ السلام کے جسد اطہر سے فضلات ظاہر تو ہوئے محر کا تنات سيمختلف بدبونه نجاست بلكه طيب وطاهراكريول ندموتا تواظها يعظمت ندموتا يحمحفوظ الحق غفرله)

اس کے بعد ایک مخص نے دوسرے سے کہا کہ برف کا پانی لاؤاس کے ساتھ ول مبارک کو دھویا گیا۔ بعد ازاں اولوں کا پانی طلب کیا گیا اوراس کے ساتھ ول مبارک کو دھویا گیا۔ ان بعد اس نے کہا کہ سکینہ لاؤ وہ ایک چیز تھی جے میرے ول بیں ڈالا گیا۔ اس کے بعد ایک نے دوسرے سے کہا کہ اسے کی دو۔ اوراسے کی کر مہر نبوت کے ساتھ مہر لگا وی کے بعد ایک نے دوسرے سے کہا کہ اسے کی دو۔ اوراسے کی کر مہر نبوت کے ساتھ مہر لگا وی کی اور حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سینے کوئی کر برابر کر دیا گیا۔ چنا نچہ حضور علیہ السلام کے حاضر باش خادم حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ فرماتے تھے کہ بیس نے حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سینۂ مبارک بیں سوئی کا اثر دیکھا تھا۔ اور اس اثناء بیس وایہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سینۂ مبارک بیں سوئی کا اثر دیکھا تھا۔ اور اس اثناء بیس وایہ طلمہ کے بیٹے اور دہ بھی نہ ہوگا آگے اور سے حالت دیکھ کر بے چین ہوکر اپنی والدہ کے پاس حلیہ بینچے اور دہ بھی بے چین ہوکر اپنی والدہ کے پاس

السلام کودیکھتی ہیں کہ جران کھڑے ہیں اور رنگ مبارک سبز ہے۔ دایہ نے آپ کو کود ہیں لیا اور دل جوئی کی اور ماجرا پوچھا۔ آپ نے جو پچھود یکھا تھا'بیان فرما دیا' اس کے بعد دایہ آپ کو پوری احتیاط کے ساتھ گھر ہیں محفوظ رکھتی اور آپ کو باہر نہیں آنے دیتی تھی۔ یہاں تک کہ اس کے شوہر نے کہا کہ یہ بچ بجیب مخلوق ہے اس پر ایسے حالات گزرتے ہیں جنہیں دریافت کرنے ہیں جاری عقل عاجز ہے۔ کہیں ایسا نہ ہو کہ اسے ہمارے پاس کوئی گزند بہتر یہی ہے کہ ہم اسے اس کے داوا عبد المطلب کے پاس پہنچا دیں۔ چنا نچہ اس عمر آپ کو آپ کے داوا عبد المطلب کے پاس پہنچا دیں۔ چنا نچہ اس عمر آپ کو آپ کے داوا عبد المطلب کے پاس پہنچا دیں۔ چنا نچہ اس عمر آپ کو آپ کے داوا عبد المطلب کے پاس پہنچا دیں۔ چنا نچہ اس عمر آپ کو آپ کے داوا عبد المطلب کے پاس پہنچا دیں۔ چنا نچہ اس عمر آپ کو آپ کے داوا عبد المطلب کے پاس پہنچا دیا۔

اوراس دفعہ جوشرح صدر کا داقعہ پیش آیااس کا مقصد بیتھا کہ دوسرے بچوں کے دِلوں میں جو کھیل کود ، نفنولیات اور دوسری غیرشائستہ حرکات کی محبت ہوتی ہے آپ کے دل کواس سے پاک رکھا جائے۔ چنانچہ ای طرح ہوا کہ حضورصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بچینے اور طفلی کے وقت کھیل کوداور نفنول کا موں کی طرف بالکل توجہ بیں فرماتے تھے اور بورے وقار کے ساتھ اُٹھتے بیٹھتے تھے۔

شرح صدر كا دوسرا واقعه

دوسرا واقعہ وہ ہے جو کہ ابن حبان، حاکم ، ابوقعیم ، ابن عساکر، ضیائے مقدی اور عبداللہ بن احمد نے زوا کد مند میں سندھی کے ساتھ روایت کیا ہے کہ جب حضوصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم وس سال کے ہوئے آپ جنگل میں شعے کہ دوخض ''آ دمیوں کی شکل میں ظاہر ہوئے سرکارعلیہ الصلوٰۃ والسلام فرماتے سے کہ میں نے ان دونوں کے چیروں کی طرح بھی کوئی نورانی چیرہ نہیں دیکھا' ان سے ایسی مبک آری تھی کہ میں نے کسی عظر میں محسوس نہیں کی ورانی چیرہ نہیں دیکھا' ان سے ایسی مبک آری تھی کہ میں نے کسی عظر میں محسوس نہیں کی اور ان دونوں شخصوں کے کپڑوں جیسے نفیس اور صاف کپڑے بھی نہیں دیکھے۔ اور وہ دونوں فضص حضرت جبرائیل اور میکائیل علیجا السلام شعب دونوں نے میرے بازو اس طرح کی گڑے کہ جمعے بالکل معلوم بی نہیں ہوا اور کوئی تکلیف نہ ہوئی۔ پھر انہوں نے میرا شکم چاک کیا' کی میراکوئی عضو بے جانہ ہوا اور کوئی تکلیف نہ ہوئی۔ پھر انہوں نے میرا شکم چاک کیا' میں ایک سے آری سے آری سے ایک سونے کے طشت میں پانی لار ہا تھا میں ایک سے آری سے آری سے آری سے ایک سونے کے طشت میں پانی لار ہا تھا میں ایک سے آرے میں بینی لار ہا تھا میں ایک سے آری سے ایک سے آری س

جبددوسرا میرے سارے اندرونی جھے کو دھور ہاتھا پھرایک نے دوسرے سے کہا کہ ان کا دل
عالی کرواور کینے اور حسد کے حکنہ اثر ات کو دُور کر دو۔ جما ہوا خون باہر نکالا گیا پھر اس نے
کہا کہ ان کے دل میں مہر بانی اور شفقت ڈال دو۔ چا ندی کے تو دے کی طرح کی ایک چیز
لاکر میرے دل میں ڈال دی گئی اور ایک خٹک دوائی اس کے اوپر چھڑک دی گئی پھر حضور علیہ
العسلاۃ والسلام کی انگلی پکڑ کر انہوں نے کہا کہ جا کیں اور سلامت رہیں۔ آپ فرماتے ہیں
کہ میں اس وقت سے اپ دل میں ہر چھوٹے اور بڑے کے لیے شفقت اور رحمت پاتا
ہوں اور اس دفعہ چونکہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سن بلوغ کے قریب پہنچ چکے تھے۔خواہش
کی طرف جھکا و اور غضب کی تیزی جوائی کے لواز مات میں سے ہے۔ ان ووٹوں صفات کے
ساتھ متعلق گنا ہوں سے جو کہ زیادہ تر جوائی میں اور جوائی کے بعد غلبہ کرتے ہیں معصوم
ماتھ متعلق گنا ہوں سے جو کہ زیادہ تر جوائی میں اور جوائی کے بعد غلبہ کرتے ہیں معصوم

شق صدر کا تیسراواقعه

تیرا واقعہ یہ ہے کہ جب بعث کا وقت قریب آیا اور حضور علیہ العساؤة والسلام کے قلب مقدس پر وہی اتر نے کا وقت نزدیک ہوا' آپ کے دل کو بحقیہ اور تقویت کے لیے پھر کھولا گیا اور اس واقعہ کو بہتی اور ابولیم نے دلائل بیں اور داؤد طیالی اور حارث ابن الی حسامہ نے اپنی مسانید بیں حضرت عاکثہ صدیقہ کی روایت کے ساتھ یوں نقل کیا ہے کہ ایک دفعہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے نذر فر مائی تھی کہ ایک ماہ کا اعتکاف کریں۔ حضرت فدیجہ رضی اللہ عنہ ابھی اس اعتکاف بیں آپ کے ساتھ شامل ہو کیں۔ اتفاقاً وہ مہیئہ رمضان مضی اللہ عنہا بھی اس اعتکاف بیں آپ کے ساتھ شامل ہو کیں۔ اتفاقاً وہ مہیئہ رمضان المبارک کا تھا' دونوں غار بیں معتکف تھے۔ رمضان پاک کی ایک رات بیں حضور علیہ السلام وقت دیکھنے اور ستاروں پر نگاہ ڈالنے کے لیے باہر تشریف لاکر کھڑے ہے کہ آ واز آئی انسکا کھر عکم نے اس اسے کی جن کا گذر ہوا ہے۔ بیں جلدی سے غار کے ایمر چلا گیا اور اس واقعہ سے حضرت خدیجہ رضی اللہ گزر ہوا ہے۔ بیں جلدی سے غار کے ایمر چلا گیا اور اس واقعہ سے حضرت خدیجہ رضی اللہ عنہا کو آگاہ کیا۔ انہوں نے عرض کی کہ یہ خوش خبری ہاں لیے آئیسکا کھر عکم نے نگر نے فرائر ماکس کے نگر نے ماکس کے فرنے فرائر ماکس کے نگر نے ماکس کے فکر نے فرائر ماکس کی خوش کی کہ یہ خوش خبری ہوا سے اس لیے آئیسکا کھر عکم نے نگر نے فرائر ماکس کے فکر نے فرائر ماکس کی علامت سے فکر نے فرائر ماکس کی

انس کی علامت ہے گلرنہ فرمائیں۔ marfat.com Marfat.com ایک دفعہ میں پھر باہر آیا میں نے ویکھا کہ جرئیل امین علیہ السلام سورن کے تخت پر بیٹے ہیں ایک پرشرق اور دوسرا مغرب تک پہنچا ہوا ہے۔ میں یہ حالت دیکھ کر پھر غار ک طرف متوجہ ہوا۔ جریل علیہ السلام نے جھے مہلت نہ دی اور فوراً آگر میرے اور غار ک دروازے کے درمیان حائل ہو گئے حتی کہ انہیں دیکھنے اور سننے سے انس حاصل ہوا۔ اس دروازے کے درمیان حائل ہو گئے حتی کہ انہیں دیکھنے اور سننے سے انس حاصل ہوا۔ اس وقت جریل علیہ السلام نے جھے سے وعدہ کیا کہ فلال وقت آپ اکیلے آئیں۔ میں اس وقت اکیلا کھڑ انظار کر رہا تھا جب بہت دیر ہوگئ میں نے چاہا کہ گھر لوٹ جاؤں۔ اچا تک درمیان پوری عظمت دیکھت ہوں کہ جریل اور میکا کیل علیہ السلام دونوں آسان اور زمین کے درمیان پوری عظمت کے ساتھ آرہے ہیں اور جھے دونوں نے دمین پر لٹا لیا اور پھر میرا سینہ چاک کر کے اور میرے دل کوزریں طشت میں زمزم کے پانی کے ساتھ دھوکر اس سے کوئی چیز نکالی جس کا پنت نہ چا پھر دونوں فرشتوں نے میرے ہاتھ اور پارکر کوٹ دیا جس طرح کہ برتن میں سے کی چیز کو باہرڈ النے کے لیے اُلٹا کرتے ہیں باک کی بید انہوں نے میری پشت پر مہر لگائی حتی کہ میں نے مہر لگانے کا اثر اپنے دل میں بیک میں وہوں کا آثر اپنے دل میں میں کا میں کے میری کوٹ کا اثر اپنے دل میں میکوں کیا۔

شق صدر کا چوتھا واقعہ

چوتھا واقعہ معراج کی رات رونما ہوا اور اس بارش صدر اس لیے تھا کہ آپ کے قلب مقدل میں عالم ملکوت کی سیر کی قوت پیدا ہوا ور اسے تبلیات بدیبہ اور انوار مثالیہ کے مشاہرہ کی طاقت حاصل ہو۔ اور وہ واقعہ معراج کے واقعہ کے شمن میں مشہور اور متواتر ہے اسے ذکر کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ اور اس واقعہ میں قلب مقدس کو حکمت اور ایمان کے ساتھ پُر کرنا بھی فدکور ہے جیسا کہ اپنے مقام پرگزرا۔ بہر حال یہ حی شرح صدر معنوی شرح صدر کا نمونہ تھا جو کہ یار بار ظہور پذیر ہوتا تھا اور اس کے تکرار کے راز کا بھی اس واقعہ کی باریکیوں شرات اور اس کے تکرار کے راز کا بھی اس واقعہ کی باریکیوں میں اشارہ کردیا گیا جیسا کہ بوشیدہ نہیں رہے گا۔

اور چونکہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر پہلی نعمت یہی تھی کہ ان کی استعداد کے سینے کو اس قدر فراخی بخشی گئی کہ اس میں ان کمالات کی مخبائش ہوسکتی تھی اس سورۃ کے آغاز میں اس Martat.com

نعت کا استفہام انکاری کے طریقے ہے جو کہ نفی کی نفی اثبات ہے کہ قانون کے مطابق اثبات کا تاکید کے ساتھ فائدہ دیتا ہے ذکر کیا گیا اس کے بعد دواور نعتیں بھی تنبیہہ کے طور برلائی گئیں جو کہ اس نعت کے آٹار میں سے ہیں۔ان میں سے ایک نعت بیے کہ

الَّذِي اَنْفَضَ ظَهْرَكَ جَسَ نِي آپشت کو جمعادیا تھا اور انتہائی متاثر کررکھا تھا اس کے کہ آپ کی ہشت کو جمعادیا تھا اور انتہائی متاثر کررکھا تھا اس کیے کہ آپ کی ہمت کا تقاضا تھا کہ ان تمام کمالات کوجمع کر لے۔ اور تشویشوں کوجہ سے آپ کوفراخ حوصلہ بخشا تو بیسب کچھ سے آپ کوفراخ حوصلہ بخشا تو بیسب کچھ آپ برآسان ہوگیا۔

<u> دزر کی تفسیر میں مختلف اقوال</u>

اورمفسرین اس بوجھ کے بیان میں وائیں بائیں گئے ہیں۔اور انہوں نے حقیقت کا سراغ نہیں لگایا ہے۔ بعض کہتے ہیں کہ وہ مکہ شریف سے باہر آنے کاغم تھا اور اس کا ازالہ مدینہ عالیہ پہنچانے سے ہوا۔ بعض کہتے ہیں کہ وہ کفار کے ظلم وستم کاغم تھا اور اس کا ازالہ اللہ تعالیٰ کی تائید اور المداد سے ہوا۔ بعض کہتے ہیں کہ وہ ملب حنفی کے احکام اور شرائع نہ پانے کا غم تھا اور اس کا ازالہ قرآن پاک کی وجی اور شرائع کے بیان کے ساتھ ہوا۔ بعض کہتے ہیں کہ وہ اور شرائع کے بیان کے ساتھ ہوا۔ بعض کہتے ہیں کہ وہ اُمت کاغم تھا اور اس کا ازالہ قرآن پاک کی وجی اور شرائع کے بیان کے ساتھ ہوا۔ بعض کہتے ہیں کہ وہ اُمت کاغم تھا اور اس کا ازالہ بھیا مشفاعت عطافر مانے سے ہوا اور بعض کہتے ہیں کہ وہ

رسالت کی ذمہ داریوں کا بوجھ تھا اور اس کا ازالہ حضرت مدیق اکبر، فاروق اعظم، ذوالنورین اورعلی مرتضی رضی الله عنیم جیسے قلص جان نارساتھی مہیا کرنے کے ساتھ ہوا۔

ببرحال ان بزرگواروں نے جو کچھ ذکر کیا ہے ای سمندر کا ایک قطرہ ہے اور ای چھ گز سے ایک گڑا ہے۔حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی شرح صدر کا دوسرا اثر بیہے کہ

وَدَفَعْنَالُكَ ذِكْرَكَ اور بم نے آپ كے ليے آپ كا ذكر اونچا كيا اُ آپ كو جامعيت مل كالات اس قدر ميسر آئى كه آپ مرتبه الوہيت كاظل ہو محكے اور آپ اس جامعيت ميں منفرد اور يك ايل اب آپ كو خدا تعالى كے ساتھ ياد كيا جاتا ہے۔ مثلاً بيكها جاتا ہے الله ورسول نے يوں فرمايا ہے۔ آپ واجب الاطاعت جيں۔ على فرمايا ہے۔ آپ واجب الاطاعت جيں۔ على فرمايا ہے۔ آپ واجب الاطاعت جيں۔ على فرمايا ہے۔

(تج فرمایا امام اللی سنت اعلی حضرت بر بلوی رحمته الله علیه نے مکن میں یہ قدرت کہاں واجب میں عبدیت کہاں جیراں جو یہ بھی نہیں وہ بھی نہیں وہ بھی نہیں حق ایہ کی نہیں حق ایہ کہاں اور عالم امکال کے شاہ بین عبد اللہ اور عالم امکال کے شاہ برزخ ہیں وہ سر خدا یہ بھی نہیں وہ بھی نہیں وہ می نہیں رفعت ذکر کی کیفیت اور تین مقامات کا ذکر جہاں حضور علیہ السلام کا نام خدا کے نام خدا کے نام خدا کے نام خدا کے نام

جاتا ہے دوسرامقام چھینک کے وقت صرف الحمد الله کہا جاتا ہے اور تیسرامقام وزیح کے وقت کہ صرف بسم اللّٰد کہا جاتا ہے اور ان نتیوں مقامات کے متنیٰ ہونے کی ایک وجہ ہے جو کہ اسینے مقام پر مذکور ہے۔

اور جب تینول اصلی اور فری تعتول کو بیان فر مایا جاچکا' انبیاء کیم السلام کے درمیان حضوصلی الله علیه وآلہ وسلم کی خصوصیت آپ میں موجود کمال کے ساتھ ٹابت ہوگئ۔ اب فر مایا جارہا ہے کہ بیسب اس مبرکی برکت ہے جو آپ نے تینوں پر کیا اور ہماری راہ میں تکیفیں برداشت کیں۔

فَانَ مَعَ الْعُسْرِيسْرًا لَهِ تَحْقِقَ بَرَخَق كِ ساتھ آسانى ہے جو كداس تق كے دوران دربار خداوندى سے عطاكى جاتى ہے اور وہ آسانى اس تحق كو برداشت كرنے كى طاقت دينا ہے جبكى وجہ سے دہ تحق آسان ہو جاتى ہے اور اگر مصیبت كے وقت كے بعد باس تحق سے بہلے اسے بادكريں تو اپنے اندراس تحق كو برداشت كرنے كى طاقت برگزنہ بائيس اوراس تسم كى آسانى حضور صلى الله عليه وآله وسلم كو كمالات حاصل كرنے كى تحق ميں سينے كى وسعت اور كى آسانى حضور صلى الله عليه وآله وسلم كو كمالات حاصل كرنے كى تحق ميں سينے كى وسعت اور حوصلے كى قراخى دے كر عطافر مائى كئى۔ تاكہ آپ دل تك اور طول نہ ہوں اور ركاوئيس طاہر مونے اور تتم قسم كى مزاحمتيں چين آنے كے باوجوداس كى انتہاء تك پہنچائيں۔

اِنَّ مَعَ الْفُسْرِيْسُرُ الْمُحْيَّنَ ال حَيْنَ ال الله اور آسانی مجی ہواور ہے آسانی مرتبے کی بلندی کی آسانی ہوال کے دربار میں مرتبے کی بلندی کی آسانی ہوالی ہوئی میں مربر آگر اللہ تعالیٰ کے لیے ہوتو اس کے دربار میں مرتبے اور در بے کی بلندی کا موجب ہوتا ہے۔ اور مرتبے اور متام کی بلندی کی پر خدمت اور مشقت کا حق ثابت کرنے کا موجب ہوتا ہے۔ اور مرتبے اور متام کی بلندی کی لذت سے وہ تخی پورے طور پر مہل اور آسان ہو جاتی ہے۔ جیسا کہ دنیا والوں میں اس کی آ زمائش اور تجربہ ہو چکا ہے اور اس تقریر پر وہ سوال وار دنہیں ہوتا جو کہ اس مقام پر مشہور ہے اور وہ یہ ہے کہ لغب عرب میں مع کا لفظ ملانے اور ساتھ کرنے کے لیے ہوتو زمانے کے اور وہ یہ ہونا مکن نہیں کہ دو ضدیں جع ایک ہونا مکن نہیں کہ دو ضدیں جع منہیں ہوتیں۔

اور دانش مندی کے قانون کے مطابق جواب کی وضاحت یہ ہے کہ دوضدوں کا اجتماع ووفئلف جہتوں سے ممکن ہے۔ چنانچہ کہتے ہیں کہ مسافر کو روزہ رکھنے ہیں اگر چہ روزے کی مشقت ہے لیکن مسلمانوں کی موافقت کی وجہ سے روزہ آسان ہو جاتا ہے اور مصیبت زدہ کے لیے اگر چہ مصیبت مشقت ہے لیکن رضائے اللی تک پہنچنا اور جزا پاناسہولت ہے اور اگر فقیر کے لیے اگر چہ مصیبت مشقت کا موجب ہے لیکن آخرت میں مال کے جمع و فقیر کے لیے تک دی اور فقر دنیوی مشقت کا موجب ہے لیکن آخرت میں مال کے جمع و خرج کا حساب دینے سے خلاص ۔ چوروں، ڈاکوؤں سے اور ظالموں کے تاوان دینے سے محفوظ رہنا بہت بردی سہولت ہے۔ پس ہوسکتا ہے کہ ایک چیز ایک زمانے میں ایک جہت سے تھی ہواور دوسری جہت سے آسانی۔

اور بعض مفسرین نے کہا ہے کہ آگر چہ اصل لغت میں مع کا لفظ ملانے کے لیے ہے لیکن جب ایک چیز دوسری چیز کے بیچھے قریبی زمانے میں حاصل ہواور اس اتصال قریب کو ملانے کی طرح اعتبار کر کے اس لفظ کو وہاں استعال کرتے ہیں اور بیہ مقام بھی اسی طرح کا ہے کہ دنیا کی تختی آگر چہ دراز اور طویل ہو جائے لیکن آخرت کے دنیا کے ساتھ پورے اتصال کی وجہ سے اسے ملے ہونے کا تھم دیا گیا ہے۔

آیت کے تکرار کی وجہ

اس آیت کے خرار کی دو وجوہ ہیں: پہلی وجہ یہ کہ صدیث شریف میں وارد ہے کہ اس آیت کے نزول کے بعد حضور صلی الله علیہ وآلہ وسلم خوش وخرم باہر تشریف لائے ادر صحابہ کرام رضی الله عنهم سے فرمایا کہ خوش ہو جاؤ الله تعالیٰ نے دنیا کی تخی پر دو آسانیوں کا وعدہ فرمایا ہے ایک دنیا میں ادر دوسری آخرت میں جیسا کہ بعض المل حکمت نے اس حقیقت کی طرف اشارہ فرمایا ہے۔ اذاا شعدت بك البلوی قفكر فی العد نشرح، لعسر بین مطرف اشارہ فرمایا ہے۔ اذاا شعدت بلک البلوی قفكر فی العد نشرح، لعسر بین یسرین اذا فكر ته فافرح جب تجھ پرکوئی سخت آ زمائش ہوتو الم نشرح میں خور کر اس لیے کہ ایک بی دوآسانیوں کے درمیان واقع ہے جب تو اس پرخور کر سے تو خوش وخرم ہو جا اور سی عدی ایک بی دوآسانیوں اور سی عدی ایک بی دوآسانیوں کے درمیان یعلب عسر یسرین یعنی ایک بی دوآسانیوں کے کہ ان یعلب عسر یسرین یعنی ایک بی دوآسانیوں کر بھی غلب نہیں کر ہے گی۔

اوراگریہاں کسی کوخیال گزرے کہ جس طرح بسر کا ذکر دوجکہ پر ہے عمر بھی دوجکہ مذکور ہے۔ پس عمر کا ایک ہونا اور بسر کا دو ہونا کہاں معلوم ہوتا ہے۔

ال کا جواب ہے کہ عربی دان کہتے ہیں کہ کرہ کو کرہ یا معرفہ کے بعد لا کیں تو پہلے کا غیر ہونے کا تقاضا کرتا ہے اور اگر معرفہ کو کرہ یا معرفہ کے بعد لا کیں تو اس سے ایک ہوتا سمجما جاتا ہے جیسا کہ آ یت میں ہے کہ آڈسٹلنا الی فیز عُون دَسُولًا فَعَطی فِرْ عَوْنُ الرَّسُولُ واضح ہے اور جاء نی دجل فقال دجل میں بھی ظاہر ہے۔ پس عمر کو دوبارہ لایا گیا ودونوں ایک بی جی اور یہ کو دونوں جگہ کرہ لایا گیا تو دوآ سانیاں معلوم ہو کیں۔

دوسری وجہ یہ ہے کہ تکرار تاکید کے لیے ہے اس لیے کہتی کے وقت آسانی کی توقع نہیں ہوتی۔ پس یہ مقام ایبا ہے کہ اس مختی کے گرفآر اس مختی کے بعد آسانی حاصل ہونے کا یعین نہ کریں ای لیے اس مضمون کی تاکید اور پھٹکی کی ضرورت چیش آئی۔

اور جب حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر اپنی نعمتوں کے شار کی فراغت ہوئی' آپ سے اس نعمت کا شکر پیرطلب فرمایا حمیا کہ

فَاذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ توجب آپ براس مرتبداور منصب جو کہ ہم نے آپ کوعطا فرمایا ہے جیسے نبوت، رسالت، ارشاد، معرفت، خلافت کبری، قضا، افزاو، محاسبہ، عبادت محراری، ولایت وغیرہ کے حقوق کی ادائیگی سے فارغ ہوں تو اللہ تعالی کی یادیس تکلیف اُنٹھا کین ادر محنت کریں۔

وَ اللّٰى دَبِّكَ فَادْغَبُ اورائ پروردگار کی طرف جس نے آپ کواس طرح پرورش کر کے اس کمال تک کہ بچایا جو کہ کا نتات بشریت کے کمالات سے بالاتر ہے رفیت کریں اور اسکے غیر کونظر میں ندلائیں۔

امیرالمونین عمر بن الخطاب رضی الله عند سے مروی ہے کہ آپ ہر نماز کے بعد بید عاکرتے سے الله حد ادر قنی شهادة فی سبیلك و وفاۃ ببلدر سولك ؟ الله معول تعالی فرائض نہیں بلکہ ہر نماز کے بعد وعا ما نگنا صحابہ کرام رضوان اللہ علیہ ماجھین کا معمول تعالی نیز ندکورہ تغییری توجیہ سے یہ بھی معلوم ہوا کہ نماز جنازہ سے فارغ ہوتے ہی ہاتھ اُٹھا کر دعا ما نگنا قرآن پاک کی اس آیت سے متفاد ہے۔ کیونکہ نماز فرض عین ہویا فرض کفایہ بہر حال نماز ہے۔ در بایہ فداوندی میں دعا ما نگنے ہے روکنے والے توجہ کریں مجھ محفوظ الحق غفرلہ) بعض مغسرین نے فداوندی میں دعا ما نگنے ہے روکنے والے توجہ کریں مجھ محفوظ الحق غفرلہ) بعض مغسرین نے یوں فرمایا ہے کہ آپ جب تشہد سے فارغ ہوں تو اپنی دنیا و آخرت کے لیے دعا کریں۔ ایک سوال اور اس کا جواب

یہاں ایک سوال باتی رہ گیا جو کہ اہلی عربیت ذکر کرتے ہیں اور وہ یہ ہے کہ الم نشرح کو صیغہ مضارع کے ساتھ لایا گیا جبکہ دوسرے معطوفات وَوَضَعْنَا وَدَفَعْنَا کوصیغہ ماضی کے ساتھ لایا گیا جبکہ دوسرے معطوفات وَوَضَعْنَا وَدَفَعْنَا کوصیغہ ماضی کے ساتھ لایا گیا ایسا کیوں ہے؟

اس کا جواب دوران تغییر اشارة بیان ہو چکا کہ شرح صدر پہلی نعمت ہے اس کی نفی پر استفہام انکاری لایا گیا اور صیغہ مضارع کے ساتھ ذکر کیا گیا تا کہ شرح صدر کی تجدید پر دلالت ہو جبکہ وضع اور دفع ایک فری نعمت ہے جو کہ شرح صدر کی وجہ سے حاصل ہوئی اسے ایسے صیغے کے ساتھ بیان فر ایا گیا جو کہ استمرار پر دلالت نہ کرے اوراس بات کا اشارہ ہو کہ ہم اس شرح کی وجہ سے وضع اور دفع سے فارغ ہو گئے۔ گویا جو شرح صدر کی گئی ہے اس میں وضع اور دفع سے فارغ ہو گئے۔ گویا جو شرح صدر کی گئی ہے اس میں وضع اور دفع ہو گئے۔ گویا جو شرح صدر کی گئی ہے اس میں وضع اور دفع ای شرح کا متبجہ ہے۔ واللہ اعلم۔

سورة التين

یہ سورۃ کمی ہے اس کی آٹھ (۸) آیات، چونتیس (۳۳) کلمات اور پچاس (۵۰) حروف ہیں۔

وجد تشميه

اسے سورہ النین اس لیے، کہتے ہیں کہ لغت عرب میں تین انجیر کے پھل کو کہتے ہیں اور marfat.com

انجیر جامع ترین میوہ ہے جیسا کہ انسانی جسم جامع ترین ہے۔ اور ای جامعیت کی وجہ سے
اس روح کے فیض کا مستحق قرار پایا جو کہ کمالات کی جامع ہے۔ پس قرآن کریم کے الفاظ
کے مشابہ ہے جو جامع اسرار کو حمن میں لیے ہوئے ہیں اور اس سورۃ ہیں شرع اور آخرت کو
پوری تاکید کے ساتھ ٹابت کرنا مقصود ہے ای لیے اس کے آغاز میں چارفتمیں ذکر فرمائی
گئی ہیں۔

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمُ الْجَرِكُوا بَكِ طَاهِرى خصوصيت ہے ورايك باطنی ورايك باطنی

انجيركي ظاہري خصوصيت اور فوائد

اس کی ظاہری خصوصیت ہے ہے کہ غذا بھی ہے۔ دوا بھی ہے۔ اور میوہ بھی ہے۔ اس
لیے کہ وہ ایسا کھانا ہے کہ لطیف طلابہ منم ہونے والا طبیعت کوئرم کرنے والا اور بدن کے
اندر سے بد بودار مادے نہینے کے راستے ہا ہر نکالیا ہے۔ اس لیے حرارت کے باوجود بخار کو
فائدہ دیتا ہے۔ بلخم کی تحلیل کرتا ہے گردے اور مثانے کی میل کچیل و ورکرتا ہے جم کوموٹا
کرتا ہے مسام کھولیا ہے اور جگراور تل کے غلیظ مواد کو و ورکرنے میں بے مثال ہے۔
اوراس میوہ کے جائب میں سے یہ ہے کہ یہ سب کا سب کھایا جاتا ہے مشملی نہیں رکھیا
جے بھینک دیں۔ قرآن پاک کی طرح کے سب کا سب مغز ہے اس میں وورکرنے کا چھلگا
ہے نہ سے کے کہ کے میں اس میں ورکرنے کا چھلگا۔

حضرت امام علی بن موی رضی الله عنها سے منقول ہے کہ انجیر ہمیشہ کھانا منہ کی بد بوکوختم کرتا ہے۔ سرکے بالوں کولمباکرتا ہے۔ اور فالج سے بچاتا ہے۔ نیژ اس میوہ کے جائب ٹین سے یہ ہے کہ اسے ایک درمیانے لقمے کے برابر بیدا کیا ممیا ہے۔ حتیٰ کہ اسے کھانے میں کوئی تکلیف اور مشقت نہیں ہوتی۔

انجيركي بإطنىخصوصيت

ری اس کی باطن صوصیت تو اس میں سے بیہ ہے کہ کاملین کے ساتھ پوری مشابہت رکھتا ہے کہ اس کا ظاہر و باطن ایک جیسا ہے۔ شخطی نہیں رکھتا ، چھلکا نہیں پھینکا۔ بخلاف دوسرے میووں کے کہ ان کا ظاہر کھانے کا ہے اور باطن پھینکنے کا۔ نیز اس پھل کا درخت ایک ای اورخت ایک ایا درخت ہے جو کہ دعویٰ سے پہلے اپنے کمال کا اظہار کرتا ہے۔ پہلے پھل لاتا ہے اس کے بعد شکوف دوسرے پھلوں کہ کے ان کے درخت پہلے اپنے آپ کو پتوں اورشگوفوں بعد شکوف دوسرے بھلوں کہ کے ان کے درخت پہلے اپنے آپ کو پتوں اورشگوفوں سے آراستہ کرتے ہیں اس کے بعد پھل لاتے ہیں۔ پس بید درخت کویا ایٹار کی صفت رکھتا ہے کہ پہلے دوسر کونفع ویتا ہے اس کے بعد اپنے آپ کوآ راستہ کرنے کی فکر کرتا ہے۔

اوردوس درخت کاروباری حفرات کی طرح ہیں کہ پہلے خودکو جاتے ہیں اس کے بعد دوسروں کو نفع پنچاتے ہیں۔ نیز جو نیغ اس پھل ہیں ہے دوسر سے پھلوں ہیں نہیں ہے کہ ایک سال ہیں چند بار پھل لاتا ہے اور اس کے باوجود اس پھل کو انسان کے ساتھ ایک ساست ہے۔ اس لیے کہ حضرت آ دم علیہ السلام سے جب جنت ہیں تقیل تھم میں فروگز اشت کی وجہ سے جنتی لباس لے لیا گیا تو آ پ لباس سے فارغ ہو گئے آ پ ہے لینے فروگز اشت کی وجہ سے جنتی لباس لے لیا گیا تو آ پ لباس سے فارغ ہو گئے آ پ ہے لینے کے لیے جب کی بھی درخت کے پاس دوڑ کر جاتے تا کہ ستر پوٹی کریں ہم درخت سرکشی کرتا تھا اور ہے نہیں دیتا تھا۔ جب آ پ اس درخت کے پاس پنچاس نے سرکشی نہ کی اور آ پ نے اس سے بیٹار ہے لیکرستر پوٹی فرمائی۔

ايك سوال اوراس كاجواب

اور وہ جو کھیتی باڑی کرنے والوں نے کہا ہے کہ کامل درخت وہ ہے جو دس چیز وں کا جامع ہو: جز،شاخ، پیت، پھول،میوہ عظمی، گوند، چینل، جملکا اور رس جیسے محجور۔اور جس TMATTAL.COM

میں ان دس چیزوں میں سے پچھ کم ہو ناقص ہے۔ پس انجیر کہ جس میں مخطی نہیں ناقص ہوا۔

اس کا جواب یہ ہے کہ یہ نقصان عین کمال ہے کیونکہ ہڑی کا منہیں آتی ' پھیکنے کی چیز

ہونے اس کا نہ ہونا اس کے ہونے سے بہتر ہوگا۔ بہر حال فوائد کا جامع اور بے ضرر ہونے پر

نظر کرتے ہوئی اس کی متم اُٹھائی می ہے۔ اور جامعیت انسان کے ساتھ اس کی مناسبت کی
رعایت فرمائی می ہے۔

وَالذَّيْنَةُونِ اورزينون كے درخت كى تتم جس كے پھل كو بھى زينون بى كہتے ہيں اوروہ ظاہر ميں بھى اور باطن ميں بھى بے شارفوا كد كا جامع ہے۔

زیتون کے ظاہری فوائد

اس کے ظاہری فوائد میں سے بیہ کہ اس کے پھل کو جب بر کے میں اچار کرکے کام میں لائیں، معدے کوقوت دیتا ہے کہ اس کے بردھا تا ہے اور کے ہوئے زیتون کو جب غذا میں استعال کریں تو بہت غذائیت دیتا ہے جسم کو موٹا کرتا ہے مردی طاقت کو زیادہ کرتا ہے اور جب زیتون کی جشمل کے مغز کو چربی اور آئے میں ملائیں اور پھلیمری پرلیپ کر دیتا ہے۔ اور زیجون کے رس کی بتی مقام مخصوص میں رکھنے سے دیں تو پھلیمری کو دور کر دیتا ہے۔ اور زیجون کے رس کی بتی مقام مخصوص میں رکھنے سے سیال ن الرحم کو نقع ہوتا ہے۔ جس نمکین پانی میں زیتون ڈالا گیا ہو جب اس سے کلی کریں تو دائتوں کی بنیاد کو مضبوط کر دیتا ہے۔

اور انجیر کے فوائد کہ غذا بھی ہے میوہ بھی اور دوا بھی۔ زیون بھی بھی ایک زاید چیز کے ساتھ موجود ہیں اور وہ زائد سے چیز ہے کہ زینون مدت دراز تک فائدہ دیتا ہے۔اس طرح کہ جو پھی جمز جائے اس سے تیل فکا لیے ہیں۔اور اسے زیت الانفاق کہتے ہیں۔اور چراغ اور قند ملیس روشن کرنے میں کام میں لاتے ہیں۔اور اس کی روشن انجائی صاف اور لطیف ہوتی ہوتی ۔اور جوز بنون پک جائے اس سے ہوتی ہے کہ دوسرے تیلوں کی روشن اس طرح نہیں ہوتی۔اور جوز بنون پک جائے اس سے بھی تیل فکا لیے ہیں اور اسے زیت الطیب کہتے ہیں۔ انجی مجک رکھتا ہے۔ اور فوائد میں بھی تیل فکا لیے ہیں اور اسے زیت الطیب کہتے ہیں۔ انجی مجک رکھتا ہے۔ اور فوائد میں بیدا ہونے والا شدید درد) سدے اور اسہال کھو لیے میں رئین الخروع یعنی انجیر کی کئڑی کے تیل کی طرح اور طلاء اور لیپ میں گل رغن کی طرح اور اس الحد میں الحد میں الحد میں کا مرخ کی کئڑی کے تیل کی طرح اور طلاء اور لیپ میں گل رغن کی طرح اور اس الحد میں الحد می

فارش، آتک ، تھلی، واد، سرورد، بالوں کی سیابی کی حفاظت، نقرس کا درداور جوڑوں کے درد زائل کرنے، آشوب چیٹم اور آتھوں کی بلکوں میں جمع ہونے والی غلیظ رطوبت کو دُور کرنے کے لیے بہت مفید ہے اور بچھو کے کاشنے کی جگہ پر بھی اس کا رکھنا فائدہ دیتا ہے۔ رُیتون کے باطنی فوائد

اس کے باطنی فوائد میں سے وہ عظیم فورانیت اور چک ہے جو کہ اس میں روغن بنانے کے بعد پیدا ہوتی ہے۔ اور اس باطنی خصوصیت کی وجہ سے ان کاملین کے ساتھ پوری مناسبت رکھتا ہے جو کہ جب اپنی زندگی کوریاضت کی بھٹی میں پکھلا کرروح کولطیف کرنے میں کوشش کر کے رفت پیدا کرتے ہیں تو آئیس عظیم فورانیت اور روشنی میسر آتی ہے۔ اور اس کے علاوہ اس کے تیل کا فورارواح کا ملہ کے فور کی طرح دھوئیں کی تاریکی کی آمیزش سے بالکل صاف ہوتا ہے۔ بخلاف دوسرے تیلوں کے کہ جھوٹی ریاضت والوں کی طرح دھوئیں گی تاریکی گرح دھوئیں گی تاریکی گرح دھوئیں گی تاریکی گرح دھوئیں گی تاریکی گرا ہے۔ بخلاف دوسرے تیلوں کے کہ جھوٹی ریاضت والوں کی طرح دھوئیں گی تاریکی گ

نیز فکر و استدلال والوں کے ساتھ بھی پوری مناسبت رکھتا ہے۔ جو کہ معلومات کے مواد کو قوت فکر میں ڈال کر بھلاتے ہیں تا کہ روشن اور نورانیت کا موجب اور حقائق اشیاء کے مطالعہ ہیں اے چراغ کی روشن کی طرح کام میں لائیں۔

نیز قرآن پاک کے الفاظ کے ساتھ پوری مناسبت رکھتا ہے کہ جب بھی ان الفاظ کے معنوں کو فظی لباسوں سے جدا کریں مقائق البیدی روشی اورنور چکے اورضوفشال ہو۔
اوران میں سے یہ ہے کہ دنیا میں کسی درخت کی عمراتی لمیں نہیں جتنی کہ اس کی عمر دراز ہوافلسطین میں جو کہ سرز مین شام کا ایک آباد اور مشہور شہر ہے بونانیوں کے لگائے ہوئے زیون کے درخت ابھی تک موجود ہیں جبکہ بونانی لوگ سکندر کے عہد میں ان علاقوں میں وارد ہوئے تھے۔ پس ان عربوں میں سے ہر درخت کی عمر تادم تحریر دو ہزار سال کے قریب بہنچی ہے۔

اور ان میں سے یہ ہے کہ اس درخت کے اُم کنے کی جگہیں زیادہ تر سرز مین شام میں بیں جو کہ انبیاء علیم السلام کامنکن اور اولیاء کا مقام ہے۔
میں جو کہ انبیاء علیم السلام کامنکن اور اولیاء کا مقام ہے۔
martat.com

اوران میں سے بیہ کہ حضرت ابراہیم علی الصلوٰۃ والسلام نے اس درخت کے لیے برکت کی دعا فرمائی ہے اور ان میں سے بیہ ہے کہ قرآن مجید میں اسے شجرۂ مبارکہ فرمایا گیا ہے۔

اوران میں سے بیہ ہے کہ تبیر کہنے والوں نے لکھا ہے کہ جو شخص خود کوخواب میں دیکھے کہاس نے زینون کا پہتہ ہاتھ میں لیا ہوا ہے اسے اس امر کی بشارت ہے کہ وہ عروہ وقتیٰ کو مضبوطی کے ساتھ بکڑے گا۔

ایک مریف تعبیر کہنے والول کے مردار ابن سیرین کے پاس آیا اور کہنے لگا کہ جھے خواب میں دکھایا گیا ہے کہ دونول لا سے کھاؤ۔ ابن سیرین نے فرمایا کہ زیتون کا پھل کھاؤ اس لیے کہ قرآن مجید میں اس کے بارے میں لاشر قیمة ولاغر بیمة وارد ہوا ہے اور صدیث شریف میں ہے کہ کلوا المزیت وادھنوا به فانه من شجرة مبار کة لینی زیتون کا تیل کھاؤاور بدن پراس کی مائش کرواس لیے کہ وہ تیل بایرکت درخت سے لیا گیا ہے۔ تیل کھاؤاور بدن پراس کی مائش کرواس لیے کہ وہ تیل بایرکت درخت سے لیا گیا ہے۔ فلا صد کلام یہ ہے کہ اس قتم میں پہلی تم کے مقابلے میں ترتی واقع ہوئی اس لیے کہ پہلی تم میں انجیرکا ذکر فرمایا گیا جو کہ باطنی نورانیت کے بغیر ظاہری فائدے در کھتا ہے جبکہ اس کہات میں زیتون کا ذکر فرمایا گیا جو کہ فاہری فوائد کے علاوہ باطنی نورانیت بھی رکھتا ہے۔ پس

وَطُودِ سِينِينَ اور دِخُول والے پہاڑی ہم ہے۔ جانا چاہے کہ طور افت میں پہاڑکو کہتے ہیں اور پہاڑ دوشم کے ہیں: ایک وہ پہاڑ جس میں ورخت ہیں کہاں میں سے پائی جاری ہے۔ اور ان پانیول کی وجہ سے اس میں سے بے شار ورخت اُ مجے ہیں اور پہلوں کی وو ماری ہے۔ اور ان پانیول کی وجہ سے اس میں سے بے شار ورخت اُ مجے ہیں۔ انجیر، زیتون اور تسمول میں سے چار مغز حب الذلع جے ہندی میں جرونی کتے ہیں۔ انجیر، زیتون اور دوسرے بڑے ورخت خصوصاً خودرو ساگوان بہت پیدا ہوتا ہے۔ اور دوا کی، جڑی دوسرے بڑے ورخت خصوصاً خودرو ساگوان بہت پیدا ہوتا ہے۔ اور دوا کی، جڑی دوسرے بڑے ہیں اور دوسرے مفیداور معز سنزے بجوم کرتے ہیں اور وہاں بوٹیاں، گرم مصالحے، تھو ہر، زہریں اور ہم می کے مفیداور معز سنزے بجوم کرتے ہیں اور وہاں بوٹی سے وغریب جانور جسے بارہ سنگا، سیاہ ہران، مرغ زرین جو کہ تیمز کی شکل کا مور کے مشابہہ برندہ ہے جس کے برسونے کی طرح چکتے ہیں اور دوسری بہت ی اقسام پیدا ہوتی ہیں اور برخی بہت ی اقسام پیدا ہوتی ہیں اور

كمال انساني كے ساتھ اس كى مناسبت زيادہ ہوئى۔

معدنیات میں بلور اور سبزی مائل پھر بیث معرض وجود میں آتے ہیں۔ پس اس قتم کے پہاڑوں کی جامعیت بہت او نچ مرتبے کو پہنچی ہے کہ اس میں کی قتم کی نباتات بھی ہیں۔ انواع واقسام کے جانور بھی ہیں اور دیواور پری کی قتم کی ارواح جنہ بھی اس قتم کے پہاڑوں میں بہت ہوتی ہیں اور ان چیزوں سے فائدہ لینے کے لیے وہاں انسانی افراد بھی سکونت اختیار کرتے ہیں۔ پس ایس جامعیت حاصل ہوئی کہ کسی اور جگہ اس کا دسوال بھی فلا ہرنہیں

كوه طور كابيان

لیکن اس جامعیت کے باوجود درختوں والا ہر پہاڑ جگی الی سے خالی ہے۔ جب اس فتم کے بہاڑ میں جلی البی بھی حاصل ہو گئی تو نہایت کامل جامعیت نصیب ہو گئی۔ اور اس فتم كا درختوں والا پہاڑ ايك وہ پہاڑ ہے جوكه مدين اور مصركے راستے كے درميان ہے جے كوہ قلسطین کہتے ہیں اور حضرت مویٰ علیٰ نبینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام کواسی پہاڑ میں جمل الہی سے مشرف فرمایا گیا۔ اور ای بہاڑے آپ کے کانوں میں انی انا الله ربّ العالمین کی ندا بہنجائی مئی اور وہاں آ ب کورُ تبد کلیمی حاصل ہوا۔ اس واقعہ کے بعد بھی حضرت موی علیہ السلام نے مناجات کے لیے اس بہاڑ میں جا کر جلنے کیے اور عبادتیں کیں۔ اور دربار خداوندی ہے تورات کی تختیاں اس پہاڑ میں یا ئیں۔ پس ظاہری جامعیت کے ساتھ ساتھ وہ بہاڑ حضرت موی علیہ السلام کی وحی کے اسرار اور آپ کی عبادات کے انوار کا بھی جامع ہوا۔ اور جوسراورنوراس بہاڑ برمجلی ہواجس کی وجہ سے حضرت موی علیہ السلام بے ہوش ہو مکے اس جگداس قدر قائم اور رائخ رہا کہ عرصد دراز گزرنے کے باوجود حضرت مولی علیہ السلام کے بیروکاروں کے قرب خداوندی اور ان کی شرائع کی امداد کے لیے کافی ہوا۔ پس حضرت موی علیدالسلام کے انوارجن سے نی اسرائیل منور اور مہذب ہوں کی ابتداوا نہا کا مقام وہی مبارک بہاڑ ہے۔ پس اس قتم میں گزشتہ قتم کی نسبت ترقی فرمائی حمیٰ۔اس کیے کہ زینون میں جونور ہے وہ عضری ہے اور جس نور نے اس پہاڑ میں جملی فرمائی اور اس کے اعضاء کوریزه ریزه اور پاره پاره کردیا نورالی تماجس کا اثر طویل زمانے گزرنے تک باقی marfat.com

رہااورحفرت میری علیہ السلام کے کمالات کے پودے کواس سے تاابد سراب رکھا گیا۔
دوسری قتم وہ ختک بہاڑجس میں درخت اور پانی نہیں ہے۔ اور وہ بہاڑ انسان کے مردہ جسم کی طرح ہے کہ بظاہر اقدان معلوم ہوتا ہے گر باطن میں کوئی کیفیت انسانی نہیں ہے۔ ای لیے وہ قتم کے قابل نہیں تھا۔ اس سے احر از کی بناہ پر لفظ سینین فر بایا گیا۔ اور اگر چہامل لفت میں طور سینین ہر درختوں والے بہاڑکو کہا جاسکتا ہے لیکن عرف عرب میں یہ لفظ موکی علیہ السلام کے ای بہاڑ کے ساتھ فاص ہے جس پر جلی الہی واقع ہوئی اور سینین کا لفظ موکی علیہ السلام کے ای بہاڑ کے ساتھ فاص ہے جس پر جلی الہی واقع ہوئی اور سینین کا لفظ موکی علیہ السلام کے ای بہاڑ کے ساتھ فاص ہے جس پر جلی الہی واقع ہوئی اور سینین کا بین اور عرب لوگ اس لفظ کوئی طرح کا تھرف کر کے استعمال کرتے ہیں۔ بھی سینین کہتے ہیں جمیس کی فتح کے ساتھ سینا جیسا کہ کو تدافع کی سورۃ میں واقع ہے اور بھی سینا، سین کے کسرے کے ساتھ پڑھتے ہیں جیسا کہ ابوعم، نافع اور ابن کیٹر پڑھتے ہیں۔

بعض مفسرین نے کہا ہے کہ انجیرے مراد اصحاب کہف کی مجد ہے جس کے اردگر د انجیر کے درخت ہے شار میں جبکہ زینون سے مراد مجد بیت المقدی ہے۔جس کے اردگر دیہ درخت بہت زیادہ ہے اور بعض نے کہا ہے کہ زینون سے مراد طور زیتا ہے جو کہ بیت المقدی کے مشرق کی طرف مجدافعی کے مامنے ایک بہاڑ ہے۔

كوهِ زيتا كابيان

اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ جب اُم المونین مقید زوجہ مطہرہ سید عالم ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم بیت المقدی کی زیارت کو شریف کا کیں اور مجدافعیٰ میں فناز اوا کرنے سے فارغ ہو کیں تو اس مجد سے باہر آئیں اور کو و زیتا پر تشریف لے کئیں۔ وہاں بھی آپ نے فارغ ہو کیں آوراس بہاڑ کے کنارے پر کھڑے ہو کر ارشاد فر مایا کہ ببیل سے قیامت کے دن لوگ جدا جدا ہوں گے۔ ایک حصہ جنت میں اور دو سرادو زخ میں جائے گا اور بیدوی پہاڑ دن لوگ جدا جدا ہوں کے۔ ایک حصہ جنت میں اور دو سرادو زخ میں جائے گا اور بیدوی پہاڑ کے جہال سے حضرت میں علیہ السلام کو آسان پر لے گئے اور اس مقام کی نصاری بہت تعظیم کرتے ہیں اور اس بہاڑ کی چوٹی پر ہیلا زنامی ایک فرگی عورت نے گرجا تیار کیا تھا اور اس کرتے ہیں اور اس بہاڑ کی چوٹی پر ہیلا زنامی ایک فرگی عورت نے گرجا تیار کیا تھا اور اس کے در میان ایک گنبد بنایا جے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اوپر چڑھنے کا مقام کہتے کو حسم سے مسلم کے اوپر چڑھنے کا مقام کہتے سے در میان ایک گنبد بنایا جے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اوپر چڑھنے کا مقام کہتے سے در میان ایک گنبد بنایا جے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اوپر چڑھنے کا مقام کہتے سے میں اور اس بہاڑ کی جو تھر سے میں علیہ السلام کے اوپر چڑھنے کا مقام کیج سے در میان ایک گنبد بنایا جے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اوپر چڑھنے کا مقام کیتے سے در میان ایک گنبد بنایا جے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اوپر چڑھنے کا مقام کیتے میں میں میں میں کر اس کا میں کر در میان ایک گند کی کا مقام کیتے میں میں کے در میان ایک گند کی در میان ایک گند کی کا مقام کیتے میں میں میں کر در میان ایک گند کی میں کر ایک کی کو میں کر در میان ایک گند کی کر در میان ایک کی کر در میان ایک کر در میان ایک کر در میں کر در میان ایک کر در میں کر در میں کر در میں کر در میان ایک کر در میں کر در میں کر در میں کر در میان ایک کر در میان ایک کر در میں کر د

تھے۔ رفتہ رفتہ وہ گرجا گرگیا۔ اس پہاڑی شخرنوب بطی کا درخت ہے جس کے متصل ایک، مسجد بنائی گئی ہے اور اس معجد کے بیچے ایک صاف غار ہے۔ بے شارلوگ اس کی زیارت کو آتے ہیں اس درخت کو خرنو بتہ البشرہ کہتے ہیں اور جب سلطان صلاح الدین رحمتہ اللہ علیہ نے بیت المقدس کو فتح کر کے فرگیوں کے ہاتھوں سے چیٹر الیا تو طور زینا کی ساری زمین شخ احمد حکاری اور شخ علی حکاری کے درمیان برابر برابر تقسیم کر کے وقف کردی اور سے واقعہ کا اور کی درمیان برابر برابر تقسیم کر کے وقف کردی اور سے واقعہ کا اور اور کی اولاد کے واقعہ کا دونوں بزرگوں کی اولاد کے وقف میں رونما ہوا اور زمین ابھی تک فدکورہ بالا دونوں بزرگوں کی اولاد کے قضے میں ہے۔

پس اس صورت میں پہلی تنم اس جگہ کی اُٹھائی گئی جو کہ اصحابِ کہف کی ولادت کے انوار کا مقام ہے۔ اور وہ لوگ اولیاء اللہ کا پہلا گروہ ہے جنہوں نے ننا کی راہ طے کی ہے۔ اس کے بعد نبوت عیسوی علی صاحبہا الصلوۃ والسلام کے انوار کی جگہ کی تنم فرمائی گئی۔ ازاں بعد حضرت مولی علیہ السلام کے انوار کی جگہ کی تنم فرمائی گئی اس کے بعد فرمایا جارہا ہے:

اعتبار سے عظیم ترقی واقع ہوئی۔ کویائیدایک ایسی جمعیت ہے جس نے سفلی جہان اور عالم بالا کے اسرار کوایئے اندر سار کھا ہے اور خالق ومخلوق کو ملا دیا۔

شهر مكه كابيان

ادر مکہ معظمہ کا شہرایک متعظیل شہر ہے جس کا طول اس کے عرض سے زیادہ ہے۔ اور پہاڑ قلعے کی طرح اس کے ادرگر دواقع ہیں۔ اور پہاڑ دل کے اس گیراؤ کے باد جوداس شہر کی حفاظت کے لیے تین طرف دیوار بنائی گئی ہے۔ جو دیوار مشرق کی طرف ہے وہ باب معلات کی دیوار کے نام سے مشہور ہے۔ جو کہ اس شہر کا مبارک قبرستان ہے۔ اور جو دیوار مغرب کی طرف اور بچوشال کی طرف نی پاک علیہ السلام کے مدینہ پاک کے مقابل ہے مغرب کی طرف اور بچوشال کی طرف نی پاک علیہ السلام کے مدینہ پاک کے مقابل ہے اسے باب الشمیکہ کی دیوار کہتے ہیں اور جو دیوار یمن کی طرف نے اسے باب الیمن کی دیوار کہتے ہیں اور ان تیوں دیواروں کی تقیمر وہاں کے مشرب کے مطابق جن کی دیوار بھی کہتے ہیں اور ان تیوں دیواروں کی تقیمر وہاں کے شریف کے مطابق جن کا نام سیدسن بن عجلان تقا ۱۹۸ھ جی واقع ہوئی۔

مكه معظمه إورحرم شريف كي حدود كابيان

اوراس شہر کا طول وعرض ہے کہ باب معلات سے لے کو باب ماجن تک جار ہزار چارہ ہورہ ہیں (۲۲۰) گز ہورہ باب معلات سے باب الشبیکہ تک بھی دوسو ہیں (۲۲۰) گز کے اور باب معلات سے باب الشبیکہ تک بھی دوسو ہیں ایک کو کی زیادتی کے ساتھ بہی مقدار ہے اور جودو پہاڑاس شہر کو گھیر سے جس لیے ہوئے ہیں ایک کو ابونتیس کہتے ہیں اور دوسر سے کو جس کا پھر سرخ اور ابونتیس کے بالمقائل ہے تعیقعان کہتے ہیں۔ ابونتیس کو احشب شرقی اور تعیقعان کو احشب غربی کہتے ہیں۔ ابونتیس کو احشب شرقی اور تعیقعان کو احشب غربی کہتے ہیں۔ ابونتیس کو احشب شرقی اور تعیقعان کو احشب غربی کہتے ہیں۔ ابونتیس کو احشب شرقی اور تعام بھی ہیں اور مکم معظمہ میں بے شار محار اس مجل کے دیا ہوئے کو یں، وقف شدہ حوض اور حمام بھی بہت ہیں اور اس جگہ کے مؤرخ فا کہی کے زمانے میں سولہ (۱۲) حمام گرم ہوتے تھے۔

اوراس شہر کو دوحصوں میں تقسیم کیا گیا ہے۔ معلات یعنی بالائی اور مسفلہ یعنی شیعی۔ کو و صفا کے نزدیک دارالخیز ران جو کہ مکہ معظمہ کی دائیں سمت ہے معلات کی حد ہے اور دارالعجلہ جو کہ مکہ شریف کی بائیں سمت مسفلہ کی حد کی علامت ہے اور یہ باعظمت و کرامت شہر تجاز کی حکومت میں ہے جو کہ شام ، عراق ، مصراور یمن کی ریاستوں کے درمیان واقع ہے شہر تجاز کی حکومت میں ہے جو کہ شام ، عراق ، مصراور یمن کی ریاستوں کے درمیان واقع ہے سے معلامی میں استفالہ کی مصراور کی کی ریاستوں کے درمیان واقع ہے مطلاح کے درمیان واقع ہے مطلاح کی حکومت میں ہے جو کہ شام ، عراق ، مصراور کین کی ریاستوں کے درمیان واقع ہے مطلاح کی مطلاح کی مطلاح کی درمیان واقع ہے مطلاح کی مطلاح کی درمیان واقع ہے دو کہ شام کی دیاستوں کی درمیان واقع ہے دو کہ شام کی دیاستوں کی درمیان واقع ہے دو کہ شام کی دیاستوں کی دیاستوں کی دو کہ دو کہ

اور کم معظمہ کے اردگرد حرم کی صد ہے جہال شکار کرنا آور در فت کا تا ور ست ہیں ہے اور حرم اور اگراس مقام میں بھی کوئی شکار کرلے یا در فت کا ٹے تو اس پر کفارہ لازم آتا ہے اور حرم کی صدم مجہ حرام کے دروازے جے باب بنی شیبہ کہتے ہیں 'کی دیوار سے ان دو میناروں تک جو کہ عرفات کی طرف حرم کی صد پر نصب کیے صلے ہیں سینس ہزار دوسود تل (۳۷۲۱) گز ہے اور باب المعلات سے لے کر آئیس دو میناروں تک پینیس ہزار ترای (۳۵۰۸۳) گز ہے۔ اور عاب المعلات سے لے کر آئیس دو میناروں تک جو کہ وادی تخلہ کے لیے بنائے گئے ہیں ستائیس ہزار ایک سو باون (۲۵۱۵) گز ہے۔ اور باب المعلات سے لے کر فہ کورہ دو میناروں تک بچیس ہزار بچیس (۲۵۱۵) گز ہے۔ اور باب المعلات سے جو کہ مدینہ مورہ کی ست میں واقع ہے جرم کی صد بارہ ہزار چارسوجیس (۱۲۵۲) گز ہے۔ اور یمن کی طرف کی ست میں واقع ہے جرم کی صد بارہ ہزار چارسوجیس (۱۲۵۲) گز ہے۔ اور یمن کی طرف نو باب ابراہم کی دیوار سے لے کر حرم کی صد کی علامت تک چوہیس ہزار پائے سو نو (۱۲۵۰۹) گز ہے۔ اور یمن کی طرف نو روسینتیس (۲۲) گز ہے۔ اور کوسوں کے حیاب سے بین بھی ہے بابی ہزار آٹھ سوچھ ہتر (۲۲۸۷۱) گز ہے۔ اور کوسوں کے حیاب سے حرم کا دورسینتیس (۲۲) کوئی کھی ہے۔ واللہ اعلم

خصوصيات يحرم

اورخصوصیاتِ حرم ہے وہ ہیں جو کہ زکر کی گئیں۔ یعنی وہاں شکاری جانوروں کا شکار marfat.com

درست ہے نہ انہیں سائے اور پانی سے بھگانہ۔ اور وہاں کے درختوں اور سبزوں کو کا ٹنا، اُ کھاڑنا اور پتے جماڑنا جائز نہیں۔سوائے اذخراور سنا کے کہ دوا کی ضرورتوں میں اسے جائز قرار دیا عمیا ہے۔ نیز اس حلقے میں آ دمی کو عمناہ کے قصد پر مواخذہ ہوتا ہے بخلاف دوسرے مکانات کے۔

اور وہال نیکیوں اور عبادتوں کا اجر کئی گنا زیادہ ہوتا ہے۔ چنانچے حضرت امام حسن بھری رضی النّدعنہ سے منقول ہے کہ مکہ شریف میں اَیب دن کا روزہ ایک لا کھروزے کے برابر ہے اور النّد تعالیٰ کے نام پر وہاں کسی کوایک در جس ویتا ایک لا کھ در ہم کے برابر ہے۔

اورمتدرک عالم کی حفرت عداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ اللہ کی ایک الکھ نیکی کے برابر اللحد مرکل حسنة بمائة الف حسنة بعنی حرم میں گئی بر نیکی ایک الکھ نیکی کے برابر ہے۔ نیز جو شخص کم معظمہ میں مرے اسے ایک شرف اور بزرگی عاصل ہوتی ہے۔ چنا نچہ طدیث شریف میں واقع ہے کہ من حالت بعک بعثه الله فی الاَ منین یوم القیامة یعنی جو شخص کم شریف میں مرجائے اللہ تعالی اسے قیامت کے ون امن والوں القیامة یعنی جو شخص کم شریف میں مرجائے اللہ تعالی اسے قیامت کے ون امن والوں میں اُٹھائے کے نیز سرت ابن عرضی اللہ عنی اللہ عنی مو شخص کم شریف میں مراکویا کہ وہ مات بعک میں اُٹھائے کے نیز سرت ابن عرضی اللہ عنی جو شخص کم شریف میں مراکویا کہ وہ میات بعک میں مراکویا کہ وہ میں اُٹھائے۔ اُٹھائے سان میں مراکویا کہ وہ میلے آسان میں مرا

نیزاس مبارک خطے میں چوظیم نشانیاں محسوں ہوتی ہیں اور مشاہدے میں آتی ہیں ان
میں سے یہ ہے کہ اگر کوئی در ندہ بھیڑیا اور چیتا کمی جانور کے پیچے بھا گے اور وہ جانور حم کی
صد میں دائل جائے تو در ندہ والی ہوجا تا ہے اور حرم میں بالکل داخل نہیں ہوتا۔ نیز لوگوں
مذحر کی حد کے درمیان ہرنوں اور در ندوں کو باہم ملے جلے اور مانوس و یکھا ہے۔ نیز جب
پر ندے اڑتے ہوئے خانہ کعبہ کے مقابل آتے ہیں تو داکیں باکیں پھر جاتے ہیں اور اس
مقد س کھر کے اور پر سے نہیں گذرتے اور بینشانی ہمیشہ لوگوں کی آئی موں کے سامنے ہے۔ نیز
پشمہ زمر م کا پانی شب برات میں اس قدر اُبلنا ہے کہ چشمے کے کناروں تک پہنے جاتا ہے۔
ہشمہ زمر م کا پانی شب برات میں اس قدر اُبلنا ہے کہ چشمے کے کناروں تک پہنے جاتا ہے۔
ہشمہ زمر م کا پانی شب برات میں اس قدر اُبلنا ہے کہ چشمے کے کناروں تک پہنے جاتا ہے۔
ہشمہ زمر م کا پانی شب برات میں اس قدر اُبلنا ہے کہ چشمے کے کناروں تک پہنے مقام ہوجاتا
ہیز آ ب زمز م کی بین خصوصیت ہے کہ لوگوں کو سیر کر دیتا ہے اور کھانے کے قائم مقام ہوجاتا
ہیز آ ب زمز م کی بین خصوصیت ہے کہ لوگوں کو سیر کر دیتا ہے اور کھانے کے قائم مقام ہوجاتا
ہیز آ ب زمز م کی بین خصوصیت ہے کہ لوگوں کو سیر کر دیتا ہے اور کھانے کے قائم مقام ہوجاتا
سیر آ ب زمز م کی بین خصوصیت ہے کہ لوگوں کو سیر کر دیتا ہے اور کھانے کے قائم مقام ہوجاتا

ہ

خلاصة الكلام بيہ كه كمال جامعيت كى وجہ سے بيمبارك شهرنہايت أو نچے مقام تك پہنچا ہوا ہے إى ليے اس سورة ميں شم كواس شهر پرختم فرما كرمقصد بيان فرمايا جارہا ہے۔كه

کونکہ اگف کے گفتا الانسان فی آخسن تقویع لین ان چاروں چیزوں کو سم اس مقصد

کے لیے ہے کہ تحقیق ہم نے انبان کو ایک بہترین صورت اور ترکیب میں پیدا فر مایا ہے
کونکہ اگر اس کی ظاہری صورت کو دیکھیں تو کمال حسن و جمال کے ساتھ موصوف ہے قد کے
بالکل سیدھا ہونے کے اعتبار سے بھی اور اجزاء کے خوب اور تناسب ہونے کے اعتبار سے
بھی اس کی گردن اونٹ کی گردن کی طرح دراز نہیں اور نہ بی کچھوے کی طرح بالکل چھوٹی
اور اس کی تاک ہاتھی کی سونڈ کی طرح دراز نہیں اور نہ بی دوسرے چار پایہ جانوروں کی طرح
بالکل نہ معلوم کی ۔ علیٰ بذالقیاس تمام اعضاء میں غور وفکر کرنا چا ہے اور اس کے حسن وخو بی کو
قیاس کرنا جا ہے۔

انسانی تخلیق کے حسن وخوبی کابیان

اس بے حضرت امام شافتی رحمتہ اللہ علیہ کے زمانے عمل ایک خفس نے اپنی ہوی ہے کہا کہ اگر تو چاند سے زیادہ حسین نہیں تو تجھے طلاق ہے۔ علائے وقت جران رہ گے اور انہوں نے طلاق واقع ہونے کا فیصلہ دے دیا اور جب بیسوال حضرت امام شافتی رحمتہ اللہ علیہ کے حضور پیش ہوا تو آپ نے فرمای کہ طلاق واقع نہیں ہوئی اس لیے کہ اس کی ہوی انسانی جنس سے ہے جبکہ انسان کے بارے عی اللہ تبارک و تعالی نے ارشاد فرمایا ہے کہ میں انسانی جنس سے انہی صورت میں پیدا فرمایا ہے آگر چاند کی صورت اس سے بہتر ہوتی تو اسے احسن تقویم کی وصف کے ساتھ بیان نہ فرمایا جاتا اور کیا ، پھا کہا گیا ہے کہ جب تو نے اسے سورج اور چاند کے تصبیہ دی تو اس کی تعریف نہیں بلکہ جو کی ہے۔ سورج میں وہ تل جو اسے سورج اور چاند کے تصبیہ دی تو اس کی تعریف نہیں بلکہ جو کی ہے۔ سورج میں وہ تل جو چود ہویں کی لڑی کا بننا کہاں ہے اور سے چود ہویں کی رات کے لیے وہ سرگیس بلکیں کہاں جو کہ ٹور کے کھل کر اس کے کناروں میں چین ہیں۔

اور ظاہر ہے کہ چاند میں روشن اور چمک کے علاوہ اور کوئی چیز نہیں ہے جبکہ اس نیخہ جامعہ میں صور تیں اور شکلیں بنانے کی باریکیاں درج اور پوشیدہ ہیں۔ چنا نچہ کہتے ہیں من جامعہ میں صور تیں اور شکلیں بنانے کی باریکیاں درج اور پوشیدہ ہیں۔ چنا نچہ کہتے ہیں من ماہ ندیدہ امر کله دار ، من سرو ندیدہ امر قبا پوش یعنی میں نے کس جاند کو کلاہ پہنے اور کسی مروکو قبا پہنے ہیں ویکھا ہے۔

اوراس جہت سے بھی کہ دنیا میں آ دمی کی شکل کی طرح کوئی شکل عبادات کشرہ کے لائق نہیں ہاس سے قیام، رکوع اور بجود ہو سکتے ہیں اور اگر اس کے حسن کو تفصیل کے ساتھ بیان کیا جائے تو علم تشریح کی مجلدات کونقل کرنا جاہے۔ لہٰذا اس طرف سے قلم کی لگام کو بیان کیا جائے تو علم تشریح کی مجلدات کونقل کرنا جا ہیے۔ لہٰذا اس طرف سے قلم کی لگام کو بیمیرنا ہی بہتر ہے۔

اوراگراس کے باطنی معنوں میں غور وفکر کریں تو اس نسخہ جامعہ میں چار جہان لیٹے ہوئے اور پیچیدہ ہیں۔ عالم جہوت، عالم غضب، عالم وہم اور عالم خیال اور چاروں جہانوں میں سے ہر جہان کوایک غیبی حاکم جو کہ عقل ہے کے حکم کے ینچے مخرکیا گیا ہے اوراس حاکم کوشرع شریف کی نورانی مشعل کی بینائی کا نور عطا فر مایا گیا تا کہ اس نور کے ساتھ نیک و بد ہروشر کو دریافت کرے۔ اور جب بھی اس حاکم کا حکم ان چار جہانوں پر غالب ہوتا ہے کہ وشر کو دریافت کرے۔ اور جب بھی اس حاکم کا حکم ان چار جہانوں پر غالب ہوتا ہے کہ وشر کو دریافت کرے۔ اور جب بھی اس حاکم کا حکم ان چار جہانوں سے جس چیز کے حصول کی توقع نہ میں ہوتی ہے جسے کہ جون مرکب کی خاصیت ہے کہ ہرمفرو سے کی توقع نہیں ہوتی ہے جب کی خرمفرو سے اس کے حصول کی توقع نہیں ہوتی لیکن اس حاکم کا نابہ صرف تا ترین غیبی اور توفیق آسانی کے ساتھ ہے۔ اس لیے ۔ کسی کو میسر نہیں۔

اس مخلوق کو کمالات حاصل کرنے کی استعداد کے باوجود محروم رہنے کی صورت میں ابدی مواخذہ اور دائمی عذاب در پیش ہے۔

إِلَّا الَّذِيْنَ المَنْوُ المحمر جولوك ايمان لائے اور انہوں نے اپی عقل كواسيے خيالات اورادهام پرغالب كرديا ـ وَعَمِلُو الصَّالِحَاتِ اورانهول في اعمال صالحه كيه اوراين عقل كو شہوت اور غضب پر غالب كرديا اور عظيم مجامدہ كيا۔ فكهم أجْدٌ غَيْرُ مَهُنُونِ بِل ان ك لے ایک ندختم ہونے والا اجر ہے۔ اگرچہ بیاری، بڑھاپے اور موت کی وجہ سے ان کا مجاہرہ ختم ہوجائے کیکن مضبوط استفامت کی وجہ سے ان کی روح میں جو کیفیت پیدا ہوئی ہے روز بروزتر تی برہ اور وہ اس ترقی کے بدلے ہر لمحظیم تواب یا تیں گے۔ چنانچہ حدیث شریف میں وارد ہے کہ جب بندہ مومن وین ہے متعلق اجھے طریقے پر گامزن ہو اور بڑھا ہے، مسافری اور بیاری کی وجہ ہے اس سے وہ طریقہ فوت ہو جائے اللہ تعالیٰ نیکیاں لکھنے والے فرشتوں کو تھم دیتا ہے کہ اس محض کے اعمال نامے میں ان عبادتوں اور نیکیوں کا ثواب لکھ دو جو کہ رہے بمیشہ کرتا تھا اور اس کے ثواب کو اس سے مت روکو۔ بلکہ بعض روایات میں یہال تک وارد ہے کہاس کے فوت ہونے کے بعد بھی فرشنوں کو تھم دیتا ہے کہاس کی قبر کے پاس میج ، تكبير اور تحميد من معروف رجواور وہ سب مجھاس بندے كے نام لكموتا كه قيامت كے دن أمضے اور اس وافرخزانے کو کام میں لائے (اقول وباللہ التوفیق اس روایت سے معلوم ہوا کہ قبركے پاس بيھ كرقر آن ياك يرصے اور الله تعالى كا ذكركرنے سے ميت كوفا كدہ يہنجا ہے اور ابیا کرنا جائز ہے۔فرشتوں کا دستور بلکہ حکم خداوندی ہے۔ تبروں پر جانے سے مطلقاً رو کنے دالے ذراعبرت کی نگاہ حاصل کریں۔محمحفوظ الحق غفرلہ)

اوربعض مفسرین نے تمد دکدناہ آسفل سافیلین کو برد حاپ اوراس کی وجہ سے عقل کے خلل میں پرنے کی حالات پرمحول کیا ہے کہ اس حالت میں انسان کی صورت بدل جاتی ہے اور قو کی مضمل ہو جاتے ہیں اس کی پشت کمان کی طرح جمک جاتی ہے اور قد کا سید حا ہونا خلل میں پر جاتا ہے اس کے سراورجہم کے بال سفید ہونے کی وجہ سے برص وہ معلوم ہوتا ہے۔اس کے چرے میں جو بل پر جاتے ہیں بہت کرے لگتے ہیں۔ دانت گرنے کی محت کرنے کی محت کے جرے میں جو بل پر جاتے ہیں بہت کرے لگتے ہیں۔ دانت گرنے کی است کرنے کی محت کے جات کی حد مصاد کی محت کے جرے میں جو بل پر جاتے ہیں بہت کرے لگتے ہیں۔ دانت کرنے کی محت کے جات کی محت کے جات کی حد محت کے جات کی محت کے جات کی محت کے جات کی حد محت کرنے کی محت کے جات کی حد محت کی جات کی حد محت کی

وجہ سے منہ کی بناوٹ بہت مُری معلوم ہوتی ہے۔لیکن اس توجیہہ پر اِلّاالَّذِیْنَ آهَنُوْا وَعَهِلُواالصَّالِحَاتِ کی استثناء مناسب نہیں مگر اس وقت جبکہ استثناء کومنقطع قرار دیں اور اس میں تکلف ہے۔

اور جب ان آیات سے معلوم ہوا کہ دین کی حقیقت عقل کوتمام تو توں شہوت، غضب، وہم اور خیال پر عالب کرنا اور عقل کونو رشرع سے منور کرنا ہے۔ پس دین کی تکذیب کی کوئی وجہ نہ رہی کی وکئی اسان کی معنوی صورت کا حسن عین دینِ اسلام ہے اور وہ حسن ہر کسی کو مطلوب اور مرغوب ہے۔ لہذا اس تکذیب کے ردے مقام میں فرمایا جارہا ہے کہ:

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ لِي السان! ان مقدمات كے واضح ہونے كے بعد تيرے كيو ين كى كلذيب كا باعث كيا ہے؟

حاصل کلام ہیہ کہ جب تو نے اپنی معنوی صورت کی حقیقت کو پالیا اور تجے معلوم ہو

میا کہ اس صورت کا حسن ای پر موقو نہ ہے کہ پہلے تو عقل کونور شرع ہے روشن کرے اس

کے بعد اسے اپنی قو توں پر حاکم بنائے تو دین کو جشلانے کی کوئی وجہ باتی ندری اس لیے کہ

نویشرع، دین کا نور ہے اور اس نور کے ساتھ عش کو ہدایت ملتی ہے۔ کیونکہ عشل آتھ کے

مرتبے میں ، ہم جبکہ دین کا نور سورج کی شعا موں کے مشابہ ہے۔ آگر سورج کی شعاع

ورمیان میں نہ ہو آت دی کی آتکھ سے پکوئیس کھلاتو وین کا نور انسان کی صورت معنوی کے

مال کی ضروریات میں سے ہے۔ اور جس طرح کہ انسان حی صورت کے خلل میں پڑنے

مرح معنوی صورت کے خلل میں پڑنے کی وجہ سے حدسے نکل جاتا ہے اور معنوی شخ میں

طرح معنوی صورت کے خلل میں پڑنے کی وجہ سے حدسے نکل جاتا ہے اور معنوی شخ میں

مثل ہو جاتا ہے اور کون ہے جو کہ انسانیت سے اپنے نکلتے اور حیوانیت میں وافل ہونے کا

دوادار ہواور اگر مزاح کی خرائی کی بناء پر کوئی چاہے کہ حیوائی صورت کی طرف رغبت کر ہے تو

دوادار ہواور اگر مزاح کی خرائی کی بناء پر کوئی چاہے کہ حیوائی صورت کی طرف رغبت کر ہے تو

اسے اس مقدے کے ساتھ مجمایا جاسکا ہے کہ:

آلیس الله باخگر الخرکوئن کیا فدانعالی تمام حاکوں ہے ہوا حاکم نیس ہے؟
اور جب دوسرے حاکم اپی رعایا ہے یہ پہندنیں کرتے کدایک فرقے ہے دوسرے فرقے marfat.com

کی طرف منتقل ہوں تو بہلوگ اونچے مرہے سے نہایت پہتی میں اُتر آ کیں حق تعالیٰ اس حرکت کو کیوں پندفر مائے گاجو کہ خلاف حکمت ہے۔

اوراس اختال کی گنجائش ہے کہ ہم دین کو جزا کے معنوں میں لیس۔اس صورت میں ان آیات کا اور سابقہ آیات کا رابطہ اس طرح سمجما جاسکتا ہے کہ انسان کی تخلیق کی ابتدا ہے جونظفہ تھا یہاں تک کہ پیدائش میں پورے اعتدال اور حسن صورت تک پہنچا اور اسے عقل دے کر اور اسے نورشرع سے منور کر کے حسن معنوی عطا فر مایا گیا۔ پھر اس کے بعض افراد کو اس قدر کھلم کھلا تنزلی دی گئی کہ تمام نیچوں سے نیچا ہوگیا 'طالات کے اس بدلنے پراللہ تعالیٰ کا قادر ہونا جب آدمی پر ظاہر ہوگیا تو قیامت کے دن جزادینا' مردوں کو زندہ کرنا اور حالات کو بدلنا کہ دنیا سے سرکشوں کو پست اور یہاں کے عاجزوں کو اور نیچ مرتبے تک پہنچانا کیا ہید ہوگیا

اور یہ جتنا بیان ہوا کہ اللہ تعالیٰ کی قدرت کے پیش نظر جزاکے واقع ہونے کو جائز قرار دینا دینے جس کافی ہے اوراگر اس کی حکمت اور عدل پر نظر کریں اور جانیں کہ نیک و بدکی جزادینا اور ایجھے کرے میں فرق کرنا حکمت اور عدل کی ونیا کے واجبات میں سے ہے۔ تو جزاکا واجب ہونا ثابت ہوجاتا ہے۔ چنانچہ آلیس اللّٰهُ بالْحُکھ الْعَاکِویُنَ اس مقدے کا اشارہ ہے۔ پس جزاکے معاطے کا واقع ہونا قدرت پرنظر کرتے ہوئے مکن اور حکمت وعدل کے چیش نظر واجب ہے۔

اور حدیث شریف بیس آیا ہے کہ جو بھی سورہ الین پڑھے اور اس آیت تک پنچ کہ آئیس اللّٰه با حکم الْحکم الْحَاکِمین تو چاہیے کہ کے بلی وانا علی ذائك من الشاهدین لین کیوں نہیں۔ تو سب حاکموں سے بڑا حاکم ہے بیں اور اس پر گواہی وینے والوں سے ہوں۔ اور حدیث شریف بیس ہے کہ حضور صلی الله علیہ وآلہ وسلم نماز عشا بیس بار ہا اس سورة کی تلاوت فرمات اور حضرت امیر المونین نمر سن الخطاب رضی الله عنه بھی بیسورة کعبة الله کے سامنے فرض نماز میں پڑھے تا کہ حراجہ بررگی کا اشارہ ہوجس کی اس سورة فرق میا و فرمائی می سے دواللہ الله بالصواب.

تغیر مزیزی مسلم الله می میران کاره

سورة اقرء

کی ہے۔ اس میں انیس (۱۹) آیات۔ بہتر (۷۲) کلمات۔ اور ایک سوای (۱۸۰) کروف ہیں اور اسے سورۃ علق بھی کہتے ہیں۔ اس لیے کہ اس سورۃ میں نہ کور ہے کہ آ دی کو علق بعی مجمد خون سے پیدا کیا گیا ہے اور بید ذکر کرنا دلالت کرتا ہے کہ اللہ تعالی اپنی رحمت سے ذلیل کوعزت والا کر دیتا ہے جیسا کہ اس نے جے ہوئے خون کو جو کہ انتہائی ذات کے درج میں واقع ہے انسانی صورت دے کر اور اس میں انسانی روح بھونک کر کمال عزت عطا فرمائی۔ ای طرح آ دی کو انتہائی احتیاج کے باوجود قرآن پاک اُتار کر اور وی کی تعلیم دے کرعزت سے نواز ا ہے۔ اور اس امر میں کفار کو جو محال ہونا کھٹکا ہے خلقت انسانی کی ابتدا خون سے ملاحظ کرنے کے ساتھ و دور ہوجاتا ہے۔

اورا کرمنرین نے اس سورة کو اوّلُ مَانَذَلَ مِنَ الْقُدْ آنِ کہا ہے بینی قرآن پاک مِن الْقُدْ آنِ کہا ہے بینی قرآن پاک مِن کس سے سب سے پہلے نازل ہونے والی سورت یہ ہے۔ جبکہ حضرت امیرالمونین مرتضی علی کرم اللہ وجہدے منقول ہے کہ سب سے پہلے فاتحۃ الکتاب اُتری ہے۔ اور حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ عنہ ہے مروی ہے کہ سب سے پہلے سورة مرثر نازل ہوئی۔ یہ اقوال بظاہر ایک دوسرے کے خلاف معلوم ہوتے ہیں لیکن ان تینوں اقوال کی باہم مطابقت اس طرح ہے کہ اول حقیقی اس سورة کی پائچ آیات ہیں۔ اس کے بعد تعلیم نماز کے لیے سورة فاتحہ اُتری اور وی کے عارضی انقطاع کے بعد پہلی سورة جو نازل ہوئی مرثر ہے اور اس کے بعد قرآن پاک کا نزول تو اُتر کے ساتھ واقع ہوا تو جس نے سورة مدثر کواؤل اُتر نے والی سورت مراد کی ہے۔ اور اس سورة کا کہا ہے کویا اس نے پہلی متصل اور متواتر اُتر نے والی سورت مراد کی ہے۔ اور اس سورة کا نزول مناجات کی تعلیم نزول باتی قرآن پاک کے نزول کی متبید قرار دیا ہے۔ اور سورہ فاتح کا نزول مناجات کی تعلیم نزول باتی قرآن پاک کے نزول کی متبید قرار دیا ہے۔ اور سورہ فاتح کا نزول مناجات کی تعلیم کے لیے قرار دیا۔ اور آئے کا آغاز سورہ مدثر سے کیا۔

نازل ہوئی تھی۔

سورة اقرء کے نزول کی کیفیت

ال سورت کے زول کی کیفیت ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے لیے وی کی علامات میں سے سب سے پہلے جو چیز ظاہر ہوئی' سے خواب سے کہ آپ رات کوخواب میں جو کچھ دی کھتے' دن کو بعینہ ای طرح واقع ہوتا۔ اس کے بعد آپ کے بابر کت دل میں تنہائی اور گوششینی کی محبت غالب آئی۔ آپ نے مکہ معظمہ سے متصل کو وحرا شریف میں جا کر اپنی خلوت کے لیے ایک غار مقرر فر مائی اور اس غار میں چند دن کی تھوڑی ہی خوراک ساتھ لے کو ایکے تشریف فر ماہوتے۔ اور اللہ تعالی کی حمد وثناء اور شیح وہلل میں مصروف رہنے حتی کہ خوراک پوری ہو جاتی۔ مجر دولت خانہ کو مراجعت فر ماتے اور ایک دو دن تھہرتے۔ اہل و خوراک پوری ہو جاتی۔ کی مدت غالب طور پر ایک ماہ سے کم ہوتی۔ اور اس خور ہوتے۔ اور اس غار میں پھر جلوہ افروز ہوتے۔ اور اس غار میں پھر جلوہ افروز ہوتے۔ اور اس غار میں آپ کے تھہرنے کی مدت غالب طور پر ایک ماہ سے کم ہوتی۔ اور بھی ناور طور پر آپ نے دہاں ایک مہینہ بھی گزارا ہے۔

خلوت کے ایام میں آپ ایک دن اس غارے باہرتشریف لائے اورجہم مبارک اور ہاتھ پاؤں دھونے کے لیے ایک جشمے کے کنارے کھڑے تھے کہ اچا تک حضرت جرئیل علیہ السلام نے فضا میں ہے آ واز دی۔ یا محرصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم! حضورعلیہ الھاؤة والسلام نے اور کی سمت دیکھا'کوئی آ دمی نظر نہ آیا۔ دوسری اور تیسری مرتبہ بھی ای طرح آ واز آئی۔ آپ جران ہوکر دائیں بائیں دیکھ رہے تھے کہ ایک قرم ایک نورانی شخص سورج کی طرح روشن نورکا تاج سر پر کھے ہوئے سنز برات حلہ بہنے ہوئے آ دمی کی شکل میں حضور سلی طرح روشن نورکا تاج سر پر کھے ہوئے سنز برات حلہ بہنے ہوئے آ دمی کی شکل میں حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے نزد یک بہنے گیا اور آپ سے کہنے لگا کہ پڑھیئے۔

اوربعض روایات میں آیا کہ اس بزرگ کے ہاتھ میں سبزریشم کا ایک کھڑا تھا جس بر پھے

لکھا ہوا تھا اس نے وہ کلزاحضورعلیہ السلام کے سامنے کیا اور کہا کہ پڑھیں۔حضور سلی اللہ
علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ میں صورت حرف کونہیں پہچانا اور پڑھنے والانہیں ہوں۔اس
بزرگ نے پھر کہا کہ پڑھیں اور آپ کوبخل میں لے کر پوری قوت کے ساتھ بھیجا حی کہ بررگ نے کھر کہا کہ پڑھیں اور آپ کوبخل میں لے کر پوری قوت کے ساتھ بھیجا حی کہ ساتھ بھیجا حی کہ ساتھ بھیجا حی کے ساتھ بھی بھی کے ساتھ بھیجا حی کے ساتھ بھی کے ساتھ بھیجا حی کے ساتھ بھیجا ہی کے ساتھ بھیجا حی کے ساتھ بھیجا حی کے ساتھ بھی کی کے ساتھ بھی بھی کے ساتھ بھی کے ساتھ

تغير مزيزي مستعمل المهم

آب کواس بھینجے سے بہت مشقت لاحق ہوئی۔ تین دفعہ ایابی کیا۔

(ایک قول یہ بھی ہے کہ کر مانی شارح بخاری نے بیان فر مایا ہے وعلی النصب معناہ
بلغ الملك منی المجھد بینی وہ عظیم فرشتہ بھے بھینچے تعلقی کیا۔ بہر حال حضورعلیہ
السلام کاجہم پاک متاثر ہوا یا جر بیل علیہ السلام تعک کے دونوں صورتوں میں جمد مبارک ک
عظمت اور قوت ظاہر ہے۔ بہلی صورت میں ای طرح کہ جر بیل علیہ السلام جیما طاقت ور
فرشتہ تین مرتبہ پوری طاقت سے دبائے گرجم شریف ٹابت اور قائم ہے اور دومری صورت
میں بالکل ظاہر ہے۔ خدا ومصلی کی رمز سے ادراک عاجز ہے خدا کومصلی جانے محمد کو خدا
جانے۔ ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔ محمد محفوظ الحق غفرلہ)

جانے ۔ مسلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ۔ محمد محفوظ الحق غفرلہ) مجر إَثْرَأْء باسم رَبُّكَ الَّذِي خَلَقَ بِإِنَّ آيات كل تلاوت كين برآيات حضور ملی الله علیه وآلبه وسلم کے ذہن شریف میں رائح ہو گئیں اور آپ نے یاد کرلیں۔ اور بعض روایات میں آیا کہ ان آیات کی تعلیم کے بعد اس بزرگ نے اپنایاؤں زمین پر مارا' جاری یانی کا ایک چشمه پیدا ہوا۔حضورعلیه السلام کوطہارت، وضواور استنجاء کا طریقه تلقین کیااور دورکعت نماز کی تلقین کی ۔ سور و فاتح بھی سکمائی تا کہ نماز میں پڑھتے رہیں۔ اوراس واقعدك بعدحنور ملى الله عليه وآله وملم اس مناثر بوكر كانيخ بوية مم واليس تشريف لاست ررأم المونين خديجه رمني الله عنها سي فرمايا كه محدير لحاف وال دوتاكه لرزه دُور ہو جائے۔لرزه دُور ہونے کے بعد حعزت خدیجہ رضی الله عنہانے کیفیت مال پوچی تو آپ نے ان کے سامنے سارا ماجرابیان کر کے ارشادفر مایا کہ جمعے اپنی جان برخوف ہے کہ میں اس سخت مندے سے چل بسول (اقول وبالله التوفق-موفیاء ارشاد فرماتے ہیں كدوى خداوندى كانزول توباعب رحمت اور ذريعه حصول بركت ہے موجب بلاكت بيس۔ ان الغاظ سے مراد حضرت کے قلب مقدس پر اس ذمہ داری کے احساس کا اثر اور اس کے ردمل کا وزن ہے جو کہ عالمکیر نبوت ورسالت کی شکل میں آپ پر ڈالی منی۔رومانی کیفیتوں

حبیب العق بالاتفاق صلی الله علیه وآله دسلم سے اس کا تصور کیے ممکن ہوسکتا marfat.com

كحصول كوتو أولياء الله بلاكت مستعيرتبيل كرتيد سيد المعلق على الاطلاق اور

ے۔ فاعتبروایا اولی الابصار - ممحفوظ الحق غفرلہ)

حفرت فدیجرض الله عنم نے عرض کی کہ آپ بالکل پریشان نہ ہوں اس لیے کہ تن تعالیٰ نے آپ میں اپنی رحمت کی صفات وافر طور پر ظاہر فر مائی ہیں۔ آپ ضعفوں پر رحم فرماتے ہیں اپنی رحمت واروں کے ساتھ اچھا سلوک کرتے ہیں مہمان نوازی فرماتے ہیں اور مخاجوں کے کاموں ہیں وظیری فرماتے ہیں جو ذات اللہ تعالیٰ کی مخلوق پر اس قدر رحم فرمائے وہ تو رحمتِ اللی کی مختق ہے نہ کہ کسی پریشانی کی۔ اس کے بعد حضرت فدیجہ رضی اللہ فرمائے وہ تو رحمتِ اللی کی مختق ہے نہ کہ کسی پریشانی کی۔ اس کے بعد حضرت فدیجہ رضی اللہ عنہا حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو لے کر اپنے چھازاد ورقہ بن نوفل کے پاس کئیں جو کہ حضرت عیلی علیہ السلام کے دین پر تھے اور عبر انی کی کتابوں اور تو رات اور آجیل سے پوری طرح واقف تھے اور ان کا ترجمہ عربی زبان میں لکھتے تھے۔

آپ نے فرمایا بھائی جان! ذرا اپنے برادرزادے کی بات سیس کہ کیا فرماتے ہیں۔
ورقہ نے ساراواقع سُن کر کہا کہ آپ کے پاس یہ آنے والاضحی ناموں اکبر ہے یعنی جرسکل
علیہ السلام جنہیں المل کتاب کی اصطلاح میں ناموں اکبر کہتے ہیں اور کہ یہ وہی ناموں اکبر
ہے جو کہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے انبیا علیم السلام پر دحی لاتا ہے اور حضرت موی علیہ السلام پر
بھی نازل ہوتا رہا۔ تو آپ خوش رہیں۔ اور کی تشم کا خوف محسوں نہ فرما کیں۔ لیکن آپ ک
توم اس تعمت کی قدر شای نہیں کرے گی اور یہ آپ کوستا کیں گے یہاں تک کہ آپ کواس
شمر سے نکلنا پڑے گا۔ اے کاش میں اس وقت زعرہ ہوتا تو آپ کی مدد کرتا اور دونوں
جہاتوی کی سعادت حاصل کرتا اس کے چھرونوں بعدورقہ بن فول فوت ہو گئے۔

انتیں حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے خواب میں سفیدلیاس پہنے ہوئے دیکھا اور بہتیر فرمائی کہ بیخض جنتی تھا۔ (اقوال وباللہ التوفیق حضرت فدیجہ رضی اللہ عنها کی حقیقت شنای حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے قرب کی سعادت پانے کی وجہ ہے ہے۔ جس کا انہوں نے آپ کے خصائل شریفہ کا ذکر کر کے اظہار فرمایا۔ جن کے قرب کی بدولت اس خاتون کو معرفت کا بیمقام حاصل ہوا وہ خود بے خبر کیوکر ہو سکتے ہیں۔ نیز آپ کا ورقہ بن نوفل کے تشریف لے جانا بظاہر حقیقت حال کا پیتہ کرنے کے لیے تھا لیکن حقیقت میں آپ ورقہ بن نوفل کو نوفل کو خان بظاہر حقیقت حال کا پیتہ کرنے کے لیے تھا لیکن حقیقت میں آپ ورقہ بن نوفل کو نوفل کو نوفل کو نوفل کو نوفل کو نوفل کے ایمان کو نوفل کے تشریف لے جانا بظاہر حقیقت حال کا پیتہ کرنے کے لیے تھا لیکن حقیقت میں آپ ورقہ بن

کے مرتبہ پر فائز کرنے کے لیے وہاں تشریف لے گئے آگر نہ جاتے تو حضرت ورقہ بن نوفل کو آپ کی زیارت ہے آپ کی نبوت و رسالت کو تسلیم کرنے کا موقعہ بی نہ ملٹا اور وہ اس تعمیت عظمی سے محروم رہتے۔ چنانچہ حکیم الامت مولانا مفتی احمہ بیار خان مجراتی ابنی تغییر نورالعرفان میں فرماتے ہیں کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پہلے ہے ہی جرئیل امین کو جانے پہلے نتے کہ اس وقت حضور علیہ السلام نہ ان سے ڈرے نہ بوچھا کہ تم کون ہو؟ اگر آپ بہلے انتہ کہ کہ اس وقت حضور علیہ السلام نہ ان سے ڈرے نہ بوچھا کہ تم کون ہو؟ اگر آپ جرئیل کو نہ بہائے نتے کہ اس وقت حضور علیہ السلام نہ ان سے ڈرے نہ بوچھا کہ تم کون ہو؟ اگر آپ جبرئیل کو نہ بہائے نے آپ کو ان آبات کا کلام الہی ہونا مفکوک ہوتا اور یہ شانِ نبوت تو کیا جبرئیل کو نہ بہائے خصور علیہ اسلام نہ ان کہ بھی خلاف ہے۔ انتہی)

چندنکات کابیان

اس واقعہ میں چند نکات معلوم ہونے چاہئیں۔ پہلا کہ یہ کہ بی آ دم میں تربیت کی عادت درجہ بدرجہ ہونے کا تقاضا کرتی ہے۔ پس آگر پہلی وفعہ بی حضور صلی الشعلیہ وآلہ وسلم کو قرآن پاک کی وتی سے مشرف فر مایا جاتا تو ہر واشت نہ ہوتی۔ اس لیے پہلیے خواب میں جو کہ اس جہان سے بہتو جمی کی حالت ہے بروی علوم کا القاء شروع فر مایا گیا تاکہ اس طرح جہان غیب سے علوم حاصل کرنے کی عادت پیدا ہو جائے اور آپ آ ہت آ ہت اس اس کے تعلیم کے خوگر ہوجا کیں۔ اس کے بعد چاہا کہ بیداری اور ہوشیاری کی حالت میں آپ اہل و معلیم کے خوگر ہوجا کیں۔ اس کے بعد چاہا کہ بیداری اور ہوشیاری کی حالت میں آپ اہل و معلیل اور گھر سے منقطع ہوجا کیں تاکہ پورے جہان غیب کی طرف متوجہ ہوں۔ اس وقت آپ کو تہائی اور آپ کوایک الی جگہ کا پید دیا گیا آپ کو تہائی اور تاپ کوایک الی جگہ کا پید دیا گیا جہاں جن بشریس سے کوئی بھی نہ ہو۔ تاکہ فردول وتی کے وقت آپ کے دل میں شدید صدمہ ارزہ اور تعلیم کا گمان تک نہ گزرے ول وتی کے وقت آپ کے دل میں شدید صدمہ ارزہ اور خوف ڈال دیا گیا تاکہ کی کوجعل سازی اور بناوٹ کا وہم بھی پیدا نہ ہو۔

دوسرا نکتہ یہ ہے کہ جرئیل علیہ السلام کے دبانے اور بغل میں لینے کے ذریعے خدائی تا ٹیمرکو آپ کی روح میں کمل طور پرمضبوط اور رائخ کر دیا تمیا۔

<u>توجه دینے کی اقسام کا بیان</u>

اس کے کہ اللِ طریقت کے عرف میں اپنے غیر میں کاملین کی تا ٹیر جسے توجہ کہتے ہیں' martat.com

کی چارتشیں ہیں۔ پہلی تا ثیرانعکای جیسے کوئی فخص اچھا ساعطرانگا کرمحفل میں آئے اورعطر
کی مہک محفل میں بیٹھنے والوں کے مشام میں اثر کرے اور وہ اس سے لذت حاصل کریں۔
اوریہ تا ثیر کی اقسام میں سے سب سے زیادہ ضعیف قتم ہے اس لیے کہ اس کا اثر صرف پاس
بیٹھنے کی مدت تک باقی ہے' از ال بعد پھونیس رہتا۔

دوسری تا ثیر القائی جیسے کوئی شخص پیالی میں بتی اور تیل کُوال کر لائے اور دوسراشخص جس کے پاس آگ ہے اس بتی کو روشن کر دے۔ پس چراغ درست ہو جائے۔ اس تا ثیر میں قدر نے قوت ہے کہ صحبت کے بعد بھی افادہ واستفادہ کی صورت میں اس کا اثر باتی رہتا ہے لیکن اگر کوئی مضبوط رکاوٹ آڑے آ جائے جیسے تیز ہوا اور بارش وغیرہ تو اس کا اثر زائل ہو جائے۔ نیز اس قتم کی تا ثیر میں تہذیب نفس اور اس کے لطا کف اثر قبول نہیں کرتے جس مرح کہ تیل ، بتی اور بیالی کے ناکارہ ہونے کی صرف آگ کی اشعلہ اصلاح نہیں کرسکا۔

تیسری تا شیراصلای جیسے پانی کو دریا یا کوئیں سے لے کر ٹیکی میں جن کریں اور حوض کے فوارے تک اس ٹیکی کا راستہ خس و خاشاک سے پاک کردیں اور پانی کو پوری قوت کے ساتھ اس راستے میں جاری کر دیں تا کہ فوارہ جوش مارے۔ اور اس کا اثر دوگر شتہ تا شیروں کے اثر سے زیادہ قوی ہے کہ اس میں نفس کی اصلاح اور لطائف کی آ رائش بھی ہوتی ہے لیکن سے فیضان ٹیکی کی استعداد اور راستے کے فاصلے کے انداز سے پر ہوتا ہے نہ کہ کنوئیں اور دریا کے مطابق اور اس کے باوجود اگر ٹیکی میں کوئی آ دنت اثر کر بے قواس سے نقصان ہوتا ہے۔ چوشی تا ثیرا تھادی کہ شخ اپنی روح کو جو کہ کمالات کی حال ہے استفادہ کرنے والے ک روح میں چوشی تا ثیرا تھادی کہ شخ اپنی روح کو جو کہ کمالات کی حال ہے استفادہ کرنے والے ک روح میں دوح کے ساتھ پوری قوت کے ساتھ متحد کر دے تا کہ روح شخ کا کمال مستفید کی روح میں دونوں روحوں کے اتحاد کے تھا تھی انواع میں سے سب سے زیادہ قوی مرتبہ ہے کیونکہ ظاہر ہے کہ دونوں روحوں کے اتحاد کے تھم کے مطابق جو کچھروح میں ہے مستفید میں بہنی جا تا ہے اور بار دونوں روحوں کے اتحاد کے تھم کے مطابق جو کچھروح میں ہے مستفید میں بہنی جا تا ہے اور بار استفادہ کی ضرور سنہیں رہتی اور اولیاء اللہ میں اس تم کی تا شیرنا در اوقع ہوتی ہے۔ بار استفادہ کی ضرور سنہیں رہتی اور اولیاء اللہ میں اس تم کی تا شیرنا در اوقع ہوتی ہے۔

حضرت خواجه باقي بالثدر حمته الثدعليه كاواقعه

حضرت خواجہ باتی باللہ رحمتہ اللہ علیہ ہے منقول ہے کہ ایک ون آپ کے ہاں چند marfat.com

مہمان آمے ان کی توامع کے لیے مجمد موجود نہ تھا۔ حضرت خواجہ کومہمانوں کی ضیافت کے سلسلے میں تشویش ہوئی۔ اتفاقا آپ کے در دولت کے ساتھ ہی ایک نانبائی کی وُ کان تھی اس نے آپ کی تشویش پرمطلع ہوکر ایک روٹی اور پُرتکلف اور مرخن کوشت کا سالن آپ کی خدمت میں ما مرکیا۔ آپ اس کے اس سلوک سے بہت خوش ہوئے۔ فرمایا ما تو کیا ما تکتے ہو؟اس نے عرض کی مجھے اپنی سرح کا بناویں۔فرمایا تو اس حالت کو برداشت نہیں کر سکے کا مجمدادر ما تک لے۔وہ ای سوال پر امرار کرتار ہا۔حضرت خواجہ توجہ بیں فرماتے ہے جی کہ اس کا مطالبہ بڑھ کیا۔ ناجارات حجرے میں لے محتے اس پر تا ثیرا تعادی فرمائی جب حجرے سے باہرتشریف لائے تو خواجہ اور نانبائی کی صورت اورشکل میں کوئی فرق نہیں رہاتھا او کوں کو التمياز كرنامشكل هوكميا-مرف اس قدرتها كه حضرت خواجه بهثيار يتصاوروه نانبائي مد بهوش اور بے خود تھا۔ آخر تمن دن کے بعد ای سکر اور بیبوشی کی حالت میں واصل بحق ہو کیا۔ رحمتہ اللہ تعالى عليه وخلاصة الكلام بياس وبائے ميں حضرت جرئيل عليه السلام كى تا تيرا تعادى تا تيرتى كرانبول في الله والليف كومسامول كى راه سيسيد عالم ملى الله عليه وآله وسلم كي جم اقدى میں داخل كر كے روح مبارك كے ساتھ متحد كر ديا اور دونوں شير وشكر موكئيں اور بشريت اور ملكيت كے درميان ايك عجيب حالت پيدا موحى جوكه بيان مين بيس آستى۔

ورقد بن نوفل کو جنہوں نے حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو سلی وی تھی وی کے نزول کی کو اور جر بُل علیہ السلام کو پہچان کر حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت اور مدد پر کمر ہمت با ندھی تھی اس جہان سے اُٹھا لیا گیا تاکہ کسی کو گمان نہ ہوکہ بیتمام گزشتہ واقعات اور دوسرے امور شرائع حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو اس نے سکھائے یا عطا کیے ہوں۔ اور اس واقعہ کے بعد اس کے ساتھ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی صحبت جاری ندر بی۔ اور اس احتیال واقعہ کے بعد اس کے ساتھ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی اس دین کے بارے میں امداد کی مخب اور گزشتہ اویان سے نین پانے والوں پر موقوف ندر ہے۔ جو پہھے ہو انہیں سے اللہ کتاب اور گزشتہ اویان سے نین پانے والوں پر موقوف ندر ہے۔ جو پہھے ہو انہیں سے ظاہر ہو۔

بسيم الله الرّحمن الرّحيم

اِقُدَءُ بِاللّهِ دَبِّكَ اپْ پروردگارك نام سے مدد كراپ پروردگاركا كلام برهيس اس كيے كدالله تعالى كے قديم كلام كوآ دمى خود بخو دنہيں پر هسكتا اور لفظ رب كو خاص كرنے ميں اس بات كا اشارہ ہے كدالله تعالى كا آپ كى پرورش كرنا ظاہر اور روش ہے۔اور تربيت ميں آپ سارى مخلوقات سے متاز اور متنى ہيں۔اور آپ كلام قديم كى تلاوت ميں الله تعالى كے انہيں ناموں سے مدد حاصل كريں جوآپ كى تربيت ميں معروف ہيں۔اوراگر آپ كے انہيں ناموں سے مدد حاصل كريں جوآپ كى تربيت ميں معروف ہيں۔اوراگر آپ كے دل ميں بيد خيال گزرے كه كلام قديم كوكيے پر ها جاسكتا ہے اس ليے كہ ہمارا پر هنا حادث اور نو پيد ہے جبكہ وہ قديم اور ازلى ہے تو اپنے بروردگاركى ايك اور صفت كو ملاحظمرين كه

الگذِی خَکَقَ بِینی پروردگاروہ ذات ہے جس نے اشیاء کواور اپنے اساءی صورتوں کو پیدا کیا ہے۔ تو اس سے کیا بعید ہے کہ کلام قدیم کوحروف کی شکلوں میں ڈھال کر پہلے آپ کے خیال میں ڈالے پھر آپ کی زبان مبارک پر جاری فرمائے۔ اس لیے کہ سب اشیاء کی خیال میں ڈالے پھر آپ کی زبان مبارک پر جاری فرمائے۔ اس لیے کہ سب اشیاء کی خلیق اسی دستور کے ساتھ ہے کہ اسائے قدیمہ کو حادث شکلوں میں جلوہ گرکیا گیا ہے۔ اور اگر پھر خیال گزرے کہ کلام الہی بے انتہاء عزیز ہے جبکہ آ دمی انتہائی عاجز ہے اس طرح کی عزیز شے کومقام بجز میں اتار نا بعید معلوم ہوتا ہے تو اپنے پروردگار کی صفات میں سے ایک اورصف طاحظ کریں۔

خَلَقَ الْإِنْسَانَ اس نے انسان کو پیدا فرمایا ہے۔ اور اسے اسرارِ الہیدی حامل وی کے ساتھ کمال عزت عطا فرمائی ہے۔ اور اسے مختلف اعضاء کے ساتھ نواز ا ہے۔ جن سے افعالِ اللی کا ظہور ہوتا ہے اور اس کی روح لطیف کو اس کے جسم کثیف کے ساتھ اس طرح وابستہ فرمایا ہے کہ لطائف روح اپنے مقام پر جیں اور جسم کی کثافت اپنی جگہ پر۔ جسم کی کثافت سے روح متغیر ہوتی ہے نہ لطافت روح کی وجہ سے جسم پاش پاش ہوتا ہے اور یہ سب مجھ ایک مادے سے جو کہ نہیں اور از کا روفتہ ہے۔ چنانچے فرمایا ہے:

تغیر غزیزی مسید میسید میران کاره

میں القاء فرمادیں اور وہ کلام قدی بغیر کسی تغیر کے اپنے اصل تقتیں پر قائم رہے۔

یہال جانا چاہیے کہ آ دمی کا جے ہوئے خون سے پیدا ہونا ولاوت کی صورت بی فلاہر ہے کہ جب نطفہ مال کے شکم ہیں قرار پکڑتا ہے تو اس میں رکھی گئی کشش کی قوت سے مال کے بدن سے بہت سا خون اپنی طرف تھنے لیتا ہے اور جوڑنے والی قوت پنیر کی طرح اس خون کو مجمد کر دیتی ہے۔ یہاں تک کہ وقت گزرنے کے ساتھ ہڈیوں اور گوشت کی صورت بن جاتی ہے لیکن معزت آ دم علیہ السلام کے پیدا ہونے کی صورت میں جے ہوئے خون سے پیدا ہونا اس طرح ہے کہ انسان کے تمام اعضاء تحلیل شدہ مادے کے بدلے غذا سے لیوں اور غذا نظام ہضم کے سارے مرتبول سے گزر کر جما ہوا خون ہو کراعضاء سے لیے جاتے ہیں اور غذا نظام ہضم کے سارے مرتبول سے گزر کر جما ہوا خون ہو کراعضاء میں بدل جاتی ہے۔ بلکہ ولا دت کی صورت میں بھی ہے کے مال کے پیٹ سے جدا ہونے میں بدل جاتی ہے۔ بلکہ ولا دت کی صورت میں بھی ہے کے مال کے پیٹ سے جدا ہونے کے بعد خلقت انسانی ای طرح واقع ہوتی ہے۔ ای لیے انسانی تخلیق کے مواد میں سے یہال علق کا ذکر فر مایا گیا ہے کیونکہ سے مادہ ہر وقت ای صورت میں درکار ہے بخلاف مٹی اور یہاں علق کا ذکر فر مایا گیا ہے کیونکہ سے مادہ ہر وقت ای صورت میں درکار ہے بخلاف مٹی اور نظفہ وغیرہ کے کہ ابتدا میں درکار ہیں اور بقاء میں ان کی ضرورت نمیں ہے۔

کی وجہ یہ ہوئی ہے کہ اقراء اور اس طرح لفظ قل چونکہ کلام الہی میں داخل ہے جس کے ساتھ پنج برعلیہ السلام کو خطاب فر مایا گیا ہے اور دوسرے اوا مر ونواہی کی طرح وارد ہوا ہے یہ قرآن میں کیوں واخل نہ ہوگا۔ پس اس لفظ کو اس قبیلے سے مجھیں جو کہ خطوط کی ابتدا میں لکھتے ہیں " جانتا جا ہے" اور فر مان شاہی میں" جانیں اور پہچانیں" بھی اسی طرح ہے اور اگر کوئی چاہے کہ پورائکم دوسرے کو سنائے اور پہنچائے یا کسی کو پورے خط کا نشان وے اسے ان الفاظ کے پڑھنے سے چارہ ہیں۔

ایک خد<u>شے کا جواب</u>

ہم یہاں پنچے کہ جب حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم أی نظے آپ کو تھم دینا کہ پڑھو تکلیف مالایطاق ہے یعنی ایسی چیز کی تکلیف دینا ہے جو ہو نہیں سکتی اور تکلیف مالایطاق واقع نہیں ہوتی۔اللہ تعالی نے فرمایا: لَایُکلِفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا۔

Marfat.com

ہیں کہ پہلے سے مرادیہ ہے کہ قاری بن جا کیں بغیراس کے کہ کسی چیز کومعین کیا جائے اور marfat.com دوسراباسیر ریک کے ساتھ متعلق ہے جو کہ اس سے پہلے گزر چکا ہے یعنی اپنے پروردگار کا نام برمیں۔

اب أى ہونے كى ركاوت دُوركرنے كے ليے جوكة حضور صلى الله عليه وآله وسلم كے دل مبارك ميں بار بار كھنگئ تقى اور آپ خيال فرماتے تيئے أى كے ليے علم حاصل كرنے كاطريقہ خصوصاً وہ علم جوكہ صفات اللى اس كا مقدس كلام اور اس كے ہرروز كے احكام كے ساتھ متعلق ہؤكس طرح حاصل ہوسكتا ہے۔ ايك اور مقدمہ ارشاد فرما يا جارہا ہے جس سے علم غيب حاصل ہوسكتا ہے۔ ايك اور مقدمہ ارشاد فرما يا جارہا ہے جس سے علم غيب حاصل ہونے كا طريقہ لوگوں يرواضح ہوجاتا ہے۔

دَدَبُكَ الْأَكْدَ مُرُ اور آپ كا پروردگار بہت كريم ہے اى كوعلم عطا كرناس كنزديك ايك آسان كام ہے۔ اس ليے كه اگر أمى كے ليے كوئى مانع ہے تو ہے كہ علم عاصل كرنے كام اسب نبيس ركھتا اور اس فتم كا مانع تمام افراد انسانى كے بارے ميں بعض علوم كى نبیت موجود ہے اور اس كے باوجود اللہ تعالی بعض محلوقات كے واسطے سے وہ علوم ان تك پہنچا دیتا ہے۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے۔

الّذِف عَلَم بِالْقَلَمِ وہ پروردگارجی نے آدمیوں کوالم کے واسطے ان چیزوں کی تعلیم دی ہے۔ دی ہے جنہیں حواس، عقل اور خبر کے ساتھ معلوم نہیں کیا جاسکا 'زمانہ طویل ہونے کی وجہ سے جیسے سابقہ اُمتوں ،گزشتہ صدیوں ،گزرے ہوئے بادشاہوں اور پرانے زمانے کے انبیاء علیم السلام اور ادلیاء کے حالات یا مقامات کی دُوری کی وجہ سے جیسے انتہائی دُوروا تع مما لک میاستوں اور شہروں کے حالات بلکہ بادشاہوں کی عادت ای طرح جاری ہے کہ اپنے نوکروں اور رعایا کوالم کے ذریعے اپنے مائی الفیم کی اطلاع دیتے ہیں اور آسے سامنے کی نوکروں اور رعایا کوالم کے ذریعے اپنے مائی الفیم کی اطلاع دیتے ہیں اور آسے سامنے کی کارخانہ الوہیت کا قال ہے ای کارخانہ الوہیت کا قال ہے ای

قلم کی اہمیت کا بیان

مثلاً محل کے اندر کی اسامیوں کی تعداد خواجہ سرائے قلم سے معلوم کی جاسکتی ہے۔ مکانات، عمارات، باغات اور قلعوں کی تعداد ہوم ڈیپارٹمنٹ کے قلم سے معلوم ہوسکتی ہے۔ سرکانات، عمارات، باغات اور قلعوں کی تعداد ہوم ڈیپارٹمنٹ کے قلم سے معلوم ہوسکتی ہے۔ marfat.com

نوکروں اور ملازموں ان کے عہدول سمیت سے سالار کے قلم سے جاتا جاسکتا ہے۔ متحقوں، خیرات کے طریقوں اور ان ارادوں کو جو ان کے بارے میں کیے گئے ہیں' کا پینة صدارت کی قلم سے لگ سکتا ہے۔ زیر تکین ممالک کا طول وعرض، جریبوں، آباد اور غیر آباد دیہات، دریاؤں اور تالا بوں کی تعداد جو ان ممالک میں واقع ہیں' دفتر تقسیم کی قلم سے معلوم ہوسکتی ہے۔ جا گیروں اور بادشاہی زمینوں کی تعداد کو دفتر وزارت سے حاصل کیا جاسکتا ہے۔ قید یوں اور واجب القتل والتوزیر مجرموں کی تعدادان کی سز اسمیت قید یوں کو چھوڑنے والے قید یوں اور واجب القتل والتوزیر مجرموں کی تعدادان کی سز اسمیت قید یوں کو چھوڑنے والے دفتر سے جو کہ جبل اور کو تو الی کے ساتھ متعلق ہے' معلوم کیا جاسکتا ہے اور خز انوں اور کارفانوں کی تعدادمیر سامانی کے دفتر سے معلوم کیا جاسکتا ہے اور خز انوں اور کارفانوں کی تعداد میر سامانی کے دفتر سے معلوم کیا جاسکتا ہے اور خز انوں اور کارفانوں کی تعداد میر سامانی کے دفتر سے معلوم کیا جاسکتی ہے۔ علیٰ ہذا القیاس

اور چونکہ لوگوں کو ان کی استعداد کے مطابق کارخانہ الوہیت برمطلع کرنا منظور تھا' انہیں قلم کے ساتھ لکھنا سکھایا گیا۔اوران میں سے ہرفرقے کواینے لامتناہی کارخانوں میں سے ایک کارخانے پرمطلع ہونے کا شوق ول میں ڈال دیا گیا تا کہ وہ قلم کے ساتھ اس کام کو محفوظ کریں تا کہ دوسرے فرقے ان سے اخذ کریں۔اورای طرح دوسرے فرقے کوکسی اور كارخان يرمطكع مون كاخيال پيداكرديا ممياحتى كدانبون نے اس كام كوقلم كے ساتھ صبط كرليا۔ اور دوسرول كوان كے قلم كے ذريع اس كارخانے پراطلاع حاصل ہو كئى۔ اور اس عجیب تدبیر کے ساتھ افراد انسانی کواس اطلاع سے بہرہ در فرمایا میا۔ اور جس طرح روزی كے سلسلے ميں أيك دوسرے كے ساتھ تعاون اور الدادكرنا انسان كا خاصہ بے جانے اور پیچائے کے معاملے میں بھی باہمی تعاون اور امداد اس کا خاصہ ہے۔ اور بیر باہمی تعاون اور امدادقكم كی وساطت كے بغیر ممكن نہیں اس ليے كہ بعض افراد ایک زمانے میں واقع ہوئے ہیں جبكه بعض دوسمرے افراد اس زمانے سے صدیوں بعد پیدا ہوئے۔ بعد والوں کے لیے پہلو ں کے علوم کی اطلاع قلم کے واسطے سے ہے اور بس۔ای طرح بعض لوگ ایک جگہ اور ایک ملک میں سکونت پذیر ہوئے جبکہ دوسرے لوگ دوسری اطراف اور ممالک میں جاگزیں ہوئے اب ان دُور رہنے والوں کے لیے ان کے علوم اور تحقیقات پر اطلاع قلم کی وساطت کے بغیر ممکن نتھی۔

ای لیے حفرت سلیمان علیہ السلام نے جب جنات سے بات کی فضیلت کے متعلق سوال فر مایا تو انہوں نے عرض کہ یا حضرت! بات ایک ہوا ہے جو منہ نے نکلی اور فنا ہوگئ پھر حضرت سلیمان علیہ السلام نے پوچھا کہ کلام کو باقی رکھنے کی تدبیر کیا ہے؟ انہوں نے عرض کی اس کی تدبیر لکھنا ہے۔ پس قلم ہے کہ علوم کا شکاری اور بوئی اور بچی گئی چیز کو لکھنے والا ہے۔ اس کی تدبیر لکھنا ہے۔ پس قلم ہے کہ علوم کا شکاری اور بوئی اور بچی گئی چیز کو لکھنے والا ہے۔ ایک نعمت ہے جو کہ نہایت عظیم اور بے پناہ بزرگ ہے۔ چنا نچی قادہ فرماتے ہیں کہ لولاالقلم لہاقام الدین ولاصلح العیش یعنی اگر قلم نہ ہوتا تو دین قائم رہتا نہ زندگی درست ہوتی۔ دین کی کتابیں قلم کے ساتھ لکھتے ہیں جبکہ قرضوں کی دستاویزات، حقوق کی اساداورعلوم اوراموال کی حفاظت قلم کے ساتھ وابستہ ہے۔

اورا گرنظرکو کچھ وسیج کریں قو معلوم کر سکتے ہیں کہ حضرت حق سبحانہ وتعالیٰ کی بادشاہی کے بے شار مما لک ہیں اور ان میں سے ایک ملک جونبہ تا مچھوٹا اور مختصر ہے عالم شہادت ہے اور اور اس ملک کے بے شار کا خانے ہیں۔ ان میں سے ممارات اور باغات کا کارخانہ ہے اور اس ملک کے بہ شار کا خانے ہیں۔ ان میں سے ممارات اور باغات کا کارخانہ ہے اور اس جند کلموں سے بہچانا جاسکتا ہے۔ پہلا علم ہیں ہے جس میں افلاک کی گفتی ان کی ہیت اور ان کی ترتیب بیان کی جاتی ہے۔ دوسراعلم جغرافیہ ہے جس میں زمین کی ہیت مکول کی صورتیں اور اس میں پائے جانے والے دریاؤں اور پہاڑوں کا ذکر ہوتا ہے۔ تیسرا مسالک اور مما لک کا علم ہے جس میں سرکوں، شہروں، دیہات کیاڑوں اور نہروں کی تفصیلات بیان کی جاتی ہیں۔ چوتھ البحا داور اجرام کا علم جس میں آسانی اور زمینی مما لک کا علول وعرض ولیل کی جاتی ہیں۔ چوتھ البحا داور اجرام کا علم جس میں آسانی اور زمینی مما لک کا علول وعرض ولیل کے ساتھ ثابت کیا ہے۔

ادران میں مشعل خاند کی روشی کا کارخانہ ہے اور اسے ستاروں کی صورتوں کے علم سے دریافت کیا جاتا ہے اور شعاعوں کاعلم بھی اس میں داخل ہے۔

اور ان مین توشہ خانہ، اصطبل، کبوتر خانہ اور باز دار خانہ ہے جس کی تغییلات علوم حیوانات سے دریافت کی تغییلات علوم حیوانات سے دریافت کی جاسکتی ہیں جن میں کتاب حیوہ الحجوان جمع کی من ہے۔

اور ان میں دوائی خانہ ہے جس کی تفصیلات مغروات ابن بیطار، جامع بغدادی اور بڑی بڑی تراباد بینات ہے معلوم ہوسکتی ہیں۔ اور ان میں سے جواہر خانہ ہے اور اس کی سے معلوم محلوم محلوم

تفصیلات معد نیات اور پیخروں کے علم سے معلوم کی جاسکتی ہیں جس میں بے شار کتا ہیں لکھی سمجی ہیں۔

اور ان میں سے نکسال اور خزانۂ عامرہ ہے اور اسے علم الا جساد اور علم صنعت سے حاصل کیا جاسکتا ہے۔

اور ان میں سے روزینہ داروں، جا گیرداروں اور ممالک والوں کا کارخانہ ہے اور اسے سات ریاستوں کے بادشاہوں کے مجموعی دفاتر سے معلوم کیا جاسکتا ہے۔ بہر حال جو کچھ ذکر کیا گیا ہے 'یقلم کے علم کی وسعت کے لیے ایک جھوٹا سانمونہ ہے یہاں سے قلم کی وساطت سے حاصل ہونے والے علوم کے کمال کا سراغ لگایا جاسکتا ہے۔

راویوں اورمفتیوں کا قلم معاملات اور عبادات میں اللہ تعالیٰ کے احکام کی دریافت کا

اللِ فرائض کا قلم ہرمیت کے ورثاء میں سے ہرایک وارث کے حصے معلوم کرنے کا ذریعہ ہے۔اور مؤرخین کا قلم کو یا تمام گزشتہ زبانوں کے حالات کو پیش کرنا ہے۔ اور اس دربادِ عالی کے ریکارڈ کے طور پر ہے۔

اورا گرقلم تقدیر کوبھی دیکھیں اور ان علوم کا فیض دینے کوبھی نظر میں لا ئیں جو کہ اس کی وجہ ہے آسان والوں اور زمین والوں کو ملاہے توعقل خیرہ اور وہم حیران رہ جاتا ہے۔

نہایت مناسب ہوا جس طرح قلم کے ذریعے ان چیزوں کو حاصل کرتے ہیں' قوتِ بشری بالکل حاصل نہیں کرسکتی ای طرح وتی کے ذریعے وہ معلومات حاصل ہوتی ہیں جنہیں حاصل کرنا ناممکن ہے۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے:

عَلَمَ الْإِنْسَانَ مَالَمُ يَعْلَمُ انسان كوه تعليم دى ہے جسے وہ نہيں جانتا تھا۔

تنين اسباب علم كابيان

اس کیے کہ آ دمی میں علم کے اسباب تین چیزیں ہیں۔ پہلی چیز ظاہری اور باطنی حواس سلیمہ جن کی وجہ سے اپنے اندر مسلسل گردش کرنے والی چیز وں کا ادراک کرتا ہے جیسے بھوک پیاس، رضا، نارافسکی ،خوف،امن ، رنگ، بو، مزہ، آ واز، گرمی اور سردی وغیرہ۔

دوسری چیز عقل: جسکی دجہ سے حواس ظاہری اور باطنی سے عائب اشیاء کا اوراک کرتا
ہے۔ اورادراک عقلی تین قیموں سے باہر نہیں ہے اس لیے کہ جس کا اوراک منظور ہے یا تو
اس کے سبب کوحواس کے ساتھ دریافت کیا ہے۔ پس بر ہان لمی کی ترکیب رونما ہوگی۔ مثلاً
چاہتا ہے کہ گھر میں وُحوال ہونے کومعلوم کرے اور اس نے اس گھر میں آگ جلنے کومعلوم
کرلیا ہو وہاں سراغ لگا لے گا کہ گھر میں وُحوال ہوگا اس لیے کہ آگ وحوثیں کا سبب ہے
اورسبب مسبب کے بغیر نہیں رہتا۔

یااس کے سبب کو دریافت کر کے اس کے پائے جانے کا تھم دیتا ہے۔ اور دلیل انی کی ترکیب کرتا ہے۔ اور دلیل انی کی ترکیب کرتا ہے مثلاً وُور ہے وُھواں معلوم کیا سراغ لگا لیا کہ وہاں آگے۔ کو اس لیے کہ وُھو کی کا دجود آگ کے بغیر محال ہے۔

یا ایک مسبب سے دوسرے مسبب کی طرف نتقل ہوگا اور اس ولیل کولم اور ان کا مرکب درست کردے گا اس لیے کہ مسبب کا وجود سبب کے بغیر محال ہے اور سبب کا وجود دوسرے مسبب کے وجود کی علت ہے۔ مثلاً کسی جگہ دُھواں دریافت کیا اور آگ کی گرمی سے جو کہ وہاں موجود ہے سراغ لگا کریفین کرلیا کہ وہ مکان گرم ہوگا اس لیے کہ دُھواں بغیر آگ کے نہیں ہوتا اور جب وہاں آگ موجود ہوگی کیکن ان دواسباب آگ موجود ہوگی کیکن ان دواسباب میں ایک کی ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہر فخص کے حواس ہر چیز تک نہیں چینچے اور عقل ہمی مخلف میں ایک کی ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہر فخص کے حواس ہر چیز تک نہیں چینچے اور عقل ہمی مخلف میں ایک کی ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہر فخص کے حواس ہر چیز تک نہیں چینچے اور عقل ہمی مخلف میں ایک کی ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہر فخص کے حواس ہر چیز تک نہیں چینچے اور عقل ہمی مخلف میں ایک کی ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہر فخص کے حواس ہر چیز تک نہیں چینچے اور عقل ہمی مخلف میں ایک کی ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہر فخص کے حواس ہر چیز تک نہیں چینچے اور عقل ہمی مخلف

اور جدا جدا ہے اور اس کے باوجود اسباب اور مسببات میں سے جو چیز عقل کی نظر سے پوشیدہ ہواس کے ساتھ دلیل کیڑنے کا طریقہ ممکن نہیں ہے اس لیے علم حاصل کرنے کے لیے ایک اور سبب عطافر مایا گیا ہے۔

اوروہ تیسراسب کی خررہے جس کا اپنے ہم جنسوں سے ان کی محسوس کی ہوئی اور تجی ہوئی چیز وں کوئس کر یقین کرے اور مقاهد حاصل کرنے میں کام میں لائے اور چونکہ خبر دینے والا انسان بھی اس محض کی طرح حواس اور عقل کے دام میں گرفتار ہے وہ چیزیں جوانسانی حواس اور عقل کے دام میں گرفتار ہے وہ چیزیں جوانسانی حواس اور عقل کی حدے بالاتر ہیں انسانی احاطے سے باہر رہ گئیں ان کی تعلیم وحی نازل کر کے دی گئی کہ علم اللی کی وحی عظیم فرشتوں کے واسطے سے انسان تک پنچے اور کام آئے اور کام آئے اور کشف، الہام، ہاتف نیبی اور امور غیبی کا سامنے آنا جو کہ اللی معرفت اور اولیاء اللہ کو انہا علیم مالسلام کی ارواح کے وسلے سے اور ان کی چیروی کے قیل حاصل ہوتا ہے سب بچھ وحی کے تابع ہے۔

اور چونکہ مالکہ یعکہ کامعیٰ ہے ہے کہ قوت بشری بی اس کے الم کو حاصل کرنامکن نہ ہوتو مالکہ یعکہ کہ خاتہ کہ کہ اس کے اللہ ہوگیا ورنہ بظاہر شکل معلوم ہوتا ہے کہ اس لیے کہ تعلیم ہوتی ہی اس چیز کی ہے جو کہ معلوم نہ ہو ہی مالکہ یعکہ کا ذکر کی کیا ضرورت ہے۔
کا جانا چاہے کہ حرف کلا ڈانٹ ڈبٹ کرنے کے لیے افت عرب میں استعال کیا جاتا ہے ہی اس سے پہلے ایسا کلام چاہا کلام چاہا کلام چورداور باطل کرنے کے لائق ہو بظاہر نہ کورنہیں ہے اس لیے بعض علاء نے کہا کوئی ایسا کلام جورداور باطل کرنے کے لائق ہو بظاہر نہ کورنہیں ہے اس لیے بعض علاء نے کہا اور چینی کے کہاں گے کہ اس کے طلاف کوتا کیدگ اور چینی کے ساتھ اس کے ساتھ اس کے کہ ڈانٹے کی صورت میں بھی اس کے خلاف کوتا کیدگ اور چینی کے ساتھ اس کے اس تعال کریں گا بہت کرنے ہے مرکب ہا اور جم و ہونے کی بناء پر اگر صرف تحقیق کے لیے استعال کریں باتر ہے لیک کلام پوشیدہ ہے جس کی طرف ہوخص کا ذہن جاتا ہے اور یہاں لفظ کلالانے ہے اس کا کارداور باطل کرنا مقصود ہے۔

اس ابہام کی وضاحت یہ ہے کہ جدبہ بندوں کی نسبت سے حق تعالیٰ کی اکرمیت کو marfat.com

بیان فر مایا گیا اور ارشاد فر مایا گیا کہ اس کا بے بناہ کرم ہرطرت سے پرورش اور بھیل کی طرف متوجہ ہے تی کہ جو چیز ان کی وسعت سے باہر تی انہیں اس کی تعلیم قلم کے واسطے دی گئی اور انہیں اس تد بیر کے ساتھ کارخانہ ہائے الوہیت سے آگاہ کیا گیا تا کہ وہ خلافت برئی کے تھم کے ساتھ افعالی ربوبیت کی بیروی کریں اور مخلوقات میں تصرف کریں اور ان میں ظل الہی اور تصرف ثابت ہو جائے۔ یہال مخبائش تھی کہ اس کلام کے سننے والے کے دل میں شبہ کر رہے اور وہ کیے کہ جب انسان در بایہ خداوندی میں اس قدر معزز اور کرم ہے تو اسے ضرورت اور محال کے کہ جب انسان در بایہ خداوندی میں اس قدر معزز اور کرم ہے تو اسے ضرورت اور محال کے کہ جب انسان در بایہ خداوندی میں اس قدر معزز اور کرم ہے تو اسے ضرورت اور محال کے دل میں گئی ہیں اور دوسرے حیوانات اور محلوقات کو والا بنایا گیا اور اسے مرورت کی وجوہ اس قدر دی گئی ہیں اور دوسرے حیوانات اور محلوقات کو اللا بنایا گیا اور اسے مرورت کی وجوہ اس قدر دی گئی ہیں اور دوسرے حیوانات اور محلوقات کو اللا بنایا گیا اور اسے مرورت کی وجوہ اس قدر دی گئی ہیں اور دوسرے حیوانات اور محلوقات کی اس کا سوال حصہ بھی نہیں دیا گیا۔

چنانچہوہ کھانے میں آگ، چکی اور دوسرے آلات کامخان ہے۔ اپنی مرض میں دوا،
طبیب، پنساری، جراح، فصد کھولنے والے اور ماہر امراض چیٹم کامخان ہے۔ علی ہذاالقیاس
پہننے، رہنے اور راہ میں اسے جو ضرورت ہے بالکل ظاہر ہے۔ جبکہ دوسرے حیوانات کواس فتم
کی ضروریات بالکل نہیں ہیں اور اکر میت اس معاطے کا تقاضا ہر گرنہیں کرتی اگر اس مخلوق پ
انتہائی کرم پیش نظر تھا تو پہلے تو چاہیے تھا کہ اسے مقرب فرشتوں کی طرح تھا جی ہے وور رکھا
جاتا اور اگر اسباب خلافت کے حصول اور مخلوقات میں تعرف کی بناء پر اسے تھا تہ کیا گیا تھا
تو چاہیے تھا کہ اسے وافر مال اور بے انتہا خزانے دیئے جاتے تا کہ تھا جند رہتا اور ذکیل نہ
ہوتا اس شہر اور اس اعتراض کے رد کے لیے لفظ کلالایا گیا ہے۔

قرآن مجید میں لفظ کلا والی ہرآ بہت کی اور بیلفظ نصف اوّل میں ہیں ہے

اوراس لفظ کی قرآن مجید میں دو خاصیتیں ہیں: ایک یہ کہ جہاں بھی یہ لفظ وارد ہوائی یفتن کے ساتھ جان لیما چاہیے کہ وہ آیت کی ہے اور یہ لفظ مدینہ منورہ میں بالکل نازل نہیں ہوا ہے۔ اوراس میں رازیہ ہے کہ یہ لفظ انتہائی مختی اور غضب پر دلالت کرتا ہے جبکہ مدینہ منورہ میں خاطبین ایمان والے سے الاعتقاد لوگ سے اگر بھی ان سے کوئی فروگز اشت ہو جاتی منورہ میں خاطبین ایمان والے سے الاعتقاد لوگ سے اگر بھی ان سے کوئی فروگز اشت ہو جاتی تو ارشاد ونصیحت کے مقام میں پوری رحمت اور مہر بانی کے ساتھ اس خطاکا تد ارک فرمایا جاتا مسلم المسلم میں المسلم میں المسلم کے ساتھ اس خطاکا تد ارک فرمایا جاتا مسلم میں المسلم کے ساتھ اس خطاکا تد ارک فرمایا جاتا مسلم میں المسلم کے ساتھ اس خطاکا تد ارک فرمایا جاتا کا تد ارک فرمایا جاتا کی ساتھ اس خطاکا تک اس کے ساتھ کی ساتھ کے ساتھ کا تعالیٰ کے ساتھ کی ساتھ کی ساتھ کے ساتھ کی س

تختی اورغضب کا کوئی تصور نہ تھا۔ بخلاف مکہ شریف کے مخاطبین کے جو کہ عنادی کا فر اور سرکش مخالف تنظ انہیں خطاب کرنے میں مختی اورغضب در کارتھا۔

ووسری خاصیت یہ کہ قرآن پاک کے نصف اوّل میں اس کیلے کا کوئی وجود نہیں جبکہ نصف آ خرخصوصاً آخری پاروں میں یہ لفظ بہت زیادہ واقع ہوا ہے اور اس میں رازیہ ہے کہ ابتدا میں سمجھانا اور ہدایت دینا مراد ہے جس کا دارومدار نرمی پر ہے۔ اور جب ایک خف نصف قرآن پاک تک پڑھتا چلا گیا اور ارشادہ فہمائش سے بالکل درست نہ ہوا تو تحق کے لائق ہوگیا خصوصاً جب قرآن پاک کے آخر تک پہنچ گیا اور اس کے مواعظ اور نصحتوں سے بالکل بہرہ ورنہ ہوا تو مزید زجروتو بخ کا مستحق ہوگیا۔ تو کلام پاک کے آخر میں بیلفظ ضروری ہوگیا ای لیے جب بے ادبی کا مرتکب کوئی شخص بند وقصیحت کے ساتھ راستے پرنہیں آتا تو تو ہریا ور رسوائی کا مستحق قرار پاتا ہے اور ان دوخصوصیتوں کو بیان کرنے کے لیے اہلی تغییر نے ایک بیت کہا ہے جو یہ ہے۔

ومانزلت کلا بیٹرب فاعلین، ولاجاء فی نصفه الاعلٰی

ایسی مدینه عالیہ میں کلا کا لفظ ٹازل نہیں ہوا تو اسے یادر کھواور نہ بی قرآن پاک کے

میلے نصف میں آیا ہے۔

میلے نصف میں آیا ہے۔

اور جب بیتمبید معلوم ہوگئ اب آیات کی تغییر شروع کی جاتی ہے فر مایا جارہا ہے: کلّا مقدمہ یوں نہیں ہے کہ آ دمی کی غربت اور احتیاج اللہ تعالیٰ کے کرم کی کمی کی وجہ سے ہیکہ اس کا ایک اور سبب ہے اس لیے کہ

اِنَّا الْاِنْسَانَ لَيَظِفَى تَحْقِقَ آدى فدا اور بندول پرسرشى كرتا ہے آن دَّالهُ اسْتَغَنَى جَبدا ہے آپ كو مال، مرتب، محت، قوت اور لا پروابى كے دوسرے اسباب كے ساتھ غن و كيمنا ہے ۔ پس اگر اسے بہت ى وجوہ كے ساتھ مختاجى نہ ہوتو اس كى سرشى اور زيادہ بڑھ جائے اور اس كى اصلاح كى كوئى صورت باقى ندر ہے ۔ پس بيرم كے كمال كا نقاضا ہے كہ اسے كى طرفوں كى احتیاج كے ساتھ سرشى نے بازر كھا گیا ہے ۔ جيسا كه دوسرى جگدفر مايا كيا ہے وكؤ بسط اللّهُ الدِّذْقَ لِعِبَادِم لَبَعَوْا فِي الْدُنْ سِيعِن اگر الله تعالى اپنے بندول كے ماتل و الله الدِّذْقَ لِعِبَادِم لَبَعَوْا فِي الْدُنْ سِيعِن اگر الله تعالى اپنے بندول كے ماتل و الله مالے الله الله مالے الله الله مالے اللہ مالے الله مالے الله مالے اللہ مالے اللہ مالے الله مالے اللہ مالے اللہ مالے الله مالے اللہ مالے الل

لیے رزق کے اسباب کشادہ کردے تو حدسے گزر جائیں اور زمین میں مرکثی کریں حالانکہ آ دمی کا میہ عقیدہ بالکل غلط اور بیہودہ ہے اسے کسی صورت میں بھی اپنے پروردگار سے لایرواہی کا تصور نہیں ہوسکتا بلکہ

اِنَّ اِلَى دَبِّكَ الدُّجعٰی تحقیق تمام حالات میں تیرے پروردگار کی طرف ہی لوٹا ہے۔ اورہم اے آیک مثال دے کرواضح کرتے ہیں۔ مثلاً ایک شخص کواگر اچھا کھانا میسر آیا اور اس نے معلوم کیا کہ آج مجھے بحوک کی حاجت سے بے پروائی حاصل ہوگی۔ اس سے پوچھنا چاہیے کہ بختے کھانے اور چبانے کی قوت کون دے گا؟ اس کے بعد کون ہے جو تخفے تے وغیرہ سے محفوظ رکھے گا؟ اس کے بعد ہاضے کی قوت، غذا دینا، روکنا، اس غذا کے فغلوں کے بول و براز کی راہ سے و ورکرنا، غذا کوز ہر بننے سے روکنایا ہمینہ کا موجب ہونے سے روکنا کو بول و براز کی راہ سے و ورکرنا، غذا کوز ہر بننے سے روکنایا ہمینہ کا موجب ہونے سے روکنا کی حوجہ ہیں جو کہ فعت ملئے اور غنا حاصل ہونے کی حاجہ میں جو کہ فعت ملئے اور غنا حاصل ہونے کی حالت میں ہیں۔ اور اس کے بعد جب جم کی بنیاد کرور پر جانے اور جم سے روح جدا کی حالت میں ہیں۔ اور اس کے بعد جب جم کی بنیاد کرور پر جانے اور جم سے روح جدا انتقام لیں اس وقت جواحتیاج ہے اس کی انتہا نہیں ہے۔

بلکہ اگر عقل مند انصاف کرے اور اپنے دل میں سوپے تو غنا کی حالت میں اپنے آپ کو خدا تغالی کا زیادہ مختاج سمجھے اس لیے کہ فقیر کوتو بھی آرزو ہے کہ اس کی جان سلامت اور جسم درست رہاور اسے ایک دن کی روزی ال جائے جبکہ دولت مند کو جان، مال، مرتبہ اور ابل وعیال سب کی سلامتی درکار ہے اور اس کی ضرورت کی وجوہ ضرورت سے درال وعیال سب کی سلامتی درکار ہے اور اس کی ضرورت کی وجوہ ضرورت سے درادہ ہیں۔

یبال اکثر لوگوں کے دل میں خیال گزرتا ہے کہ مال سرکتی کا سبب ہوتا ہے۔ برے
برے محابہ کرام رضوان اللہ علیم اجمعین جو کہ کیر المال سے جیسے حضرت عبدالرحمٰن بن عوف نہ ہوئے
حضرت امیر المونین عثان النورین رضی اللہ عنہا اس وجہ سے سرکشی میں کیوں ملوث نہ ہوئے
بلکہ حضرت سلیمان علی نبینا وعلیہ الصلوة والسلام کو د نبوی مال میں اس قدر وسعت اور تو جمری
کیوں عطاک گئی کہ آپ نے بیت المقدس کے درو دیوار کوسونے اور جواہرات کے ساتھ
کیوں عطاک گئی کہ آپ نے بیت المقدس کے درو دیوار کوسونے اور جواہرات کے ساتھ

سے مساتھ کے ساتھ میں میں میں میں اس می

جراؤ كيااورزينت دى اورانبيل بے شاراسباب اور آلات سے بھى نوازا گيا۔

اس شبر کا جواب ہے ہے کہ اس آیت میں مال کو مطلقاً سرکٹی کا سب قرار نہیں دیا گیا بلکہ خود کو مال کے ساتھ غنی ہجھنا اور در بارِ خداوندی میں بند ہے کو جو بحق جی ہرآن اور ہر حال لاحق ہے اس سے غافل ہونا، مال کے حصول کو اپنی کوشش و کاوش کی طرف منسوب کرنا اور اللہ تعالی کے فضل و عنایت سے نہ ہجھنا سرکشی کا سب ہے۔ جبکہ حضرت سلیمان علیہ السلام اور صحابہ کبار علیہ ہم رضوان کے پاس اگر چہ مال کی کشرت تو تھی گر ایسا عقیدہ نہیں تھا بلکہ جو محض ان بررگوں کی سیرت کا مطالعہ کرئے بیش نے مان کی کشرت تو تھی گر ایسا عقیدہ نہیں تھا بلکہ جو محض ان بررگوں کی سیرت کا مطالعہ کرئے بیش نے عاقب کو بات کے ساتھ مان دوسروں سے نہیں ہوتا تھا۔ گویا ان کے ساتھ ایگر اس موا ملے کو مال کی زہر کا تریاق قرار دے کر زیادہ اپنایا ہے۔ اس لیے حدیث باک میں وارد ہے کہ نعم الدان الصالح لیجھا مال اجھے آ دمی کے پاس کیا تی بہتر ہے۔

اور جب ثابت ہوگیا کہ آ دمی کی مختاجی زیادہ ہونے کی وجہ بھی ہے کہ باحتیاجی کی صورت میں سرکٹی کرتا ہے اپنے منعم حقیق سے غافل ہو کرنھتیں و کیھنے میں غرق ہوجاتا ہے اس گمان کی مخبائش پیدا ہوگئی کہ کوئی لا پروائی کرنے والوں میں سے کسی کا ایک حال بطور مثال ہو جھے کہ اس کی استغناء کس طرح سرکٹی کا موجب ہوئی ہے؟ مثال بیان کرنے کے لیے فرمایا جارہا ہے کہ:

آدَءَ يُتَ اللَّذِي يَنُهِى كَيا تون الشخص كوديكا بجوكمنع كرتا اور دوكتا بعبدًا افدا صَلَّى بندے كو جب نماز اوا كرتا چاہے حالانكہ بندہ وہ ب جو كه دل وزبان ہاتھ اور پاؤں كے ساتھ اپنے پروردگار كی عبادت كرے اور اس تنم كی جامع عبادت نماز كے سوا اور كوئى نہيں اور خدا تعالى كاحق يہ ہے كہ ہر عبادت كے ساتھ اس كی عبادت كی جائے ۔ پس اس محف نے بندے كاحق بھی ضائع كرديا اور خدا تعالى كا بھی ۔ پس اس كی سرشی خدا تعالى پر ثابت ہوگئی۔

یے جہل تعین تھا جو کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو مجد حرام میں نماز سے بار بار

marfat.com

Marfat.com

رو کتا تھااور کہتا کہ اگر میں نے تمہیں زمین پر پیشانی رکھتے و کیے لیا تو معاذ اللہ گردن اُڑا دوں گا۔اور آگر چہ میہ آیت اس لعین کے بارے میں اُٹری ہے لیکن جو شخص اللہ تعالیٰ کی اطاعت سے منع کرتا اور رو کتا ہے اس وعید اور غدمت میں شامل ہے۔

ایک سوال اور اس کا جواب

اور وہ جو نقہاء نے لکھا ہے کہ غصب کی ہوئی جگہ میں نماز پڑھنے سے روکا جائے اور
پانچ کر وہ اوقات میں طلوع آ فآب کے وقت، غروب آ فآب کے وقت، بالکل زوال کے
وقت نماز عمر پڑھنے کے بعد مغرب تک اور طلوع فجر کے بعد طلوع آ فآب تک بھی روکنا
چاہیے اور اگر مالک اپنے غلام اور لونڈی کو نماز تہجہ سے اس لیے روک کہ شب بیداری کی
وجہ سے خدمت میں کوتا تی کریں گے تو اسے حق پہنچتا ہے۔ (اقول وباللہ التو فیق ۔ یا در ہے کہ
بیز رخر ید غلام اور لونڈی کی بات ہے جو کہ آج ہمارے ہاں بالکل نہیں پائے جاتے اس لیے
کوئی زمیندار، سر مایا دار وغیرہ طلاز موں کو نہیں روک سکتا کیونکہ بیلوگ ان کے مالک نہیں
جیم محفوظ الحق غفرلہ) اور اس طرح خدمت کے وقت نقل نماز سے منع کر سکتا ہے اور خاوند
ابی بیوی کو اعتکاف سے روک سکتا ہے اور نقلی روز سے بھی اس لیے روز ہی حالت میں
اس سے مباشرت اور دیگر چیز وں کا استفادہ نہیں ہوسکتا۔

طرح کے مقامات میں کرنا جاہیے کہ جہاں مرتح نہی وارد نہ ہوئی ہو۔ ورنہ الامر فوق الادب

اور جب استغناء حاصل ہونے کی وجہ ہے ہر مض کے سرکش ہونے کی مثال بیان فرما دی گئی تو اس مرض کے علاج کا طریقہ بھی بیان فرمایا جار ہا ہے کہ:

آرَءَ یُتَ اِنْ کَانَ عَلَی الْهُلَای آوُ آمُر بِالتَّقُوای کیا تو نے اس سرکش کودیکھا کہ اگر ہدایت پر ہوتا یا لوگوں کو تقوے کا تھم ویتا لیعنی آئی سرکشی کا علاج کرتا اور روحانی صحت حاصل کرتا یا اس ہے بھی ترقی کر کے بھیل وارشاد کے مرتبے کو پہنچ جاتا اور نماز سے روکنے کے بجائے لوگوں کو تقوی اور درسی کا تھم دیتا۔

آدًاءً یُتَ اِنْ کَذَیب وَتُولِی کیا تونے اسی سرکش کودیکھا کہ اس نے دین پینجبرعلیہ الصلوٰۃ والسلام کی تکذیب کی اور راوحق پر چلنے ہے روگر دانی کی دونوں حالتوں میں جزا بائے گا۔ پہلی حالت میں احجی جزا اور دوسری حالت میں سزا۔ اور جزا کا لحاظ کرنا سرکشی کا علاج ہے اور اگر اسے جزا واقع ہونے کے متعلق کوئی شک ہوتو اسے سمجھانے کے لیے اتنا ہی کافی ہے۔

آلفہ یَعْلَمْ بِآنَ اللّٰهَ یَرِی کیا وہ جا تانہیں کہ فق تعالیٰ اے دیکھ رہا ہے اوراس کا وکھنا جو کہ جزا پر قادر ہواوراس کی حکمت جہان کے ذرات میں سے ہر ذرے میں سورج سے بھی زیادہ ظاہراور واضح ہے ہزا کا عقیدہ رکھنے کے لیے کافی ہے اس لیے کہ قادر ہونا جزا کے جواز کو چاہتا ہے جبکہ حکمت اور عدل اس کے واجب ہونے کا تقاضا کرتے ہیں اور ہر اجھے کہ علی کو دیکھنا نیکوکار اور بدکار کے اخمیاز کے لیے کافی ہے بس جو قادر ہونے کے باوجود دیدہ دانستہ نیک اور بدمی فرق نہ کرے اور ہر کسی کواس کی سزانہ پہنچائے وہ ایک گھر باوجود دیدہ دانستہ نیک اور بدمی فرق نہ کرے اور ہر کسی کواس کی سزانہ پہنچائے وہ ایک گھر باوکل فلامر ہے اور جو پوشیدہ ہے وہ اس کا بنی آ دم کے اجھے کہ کے اعمال پر مطلع ہونا ہے کہ بالکل فلامر ہے اور جو پوشیدہ ہے وہ اس کا بنی آ دم کے اجھے کہ کے اعمال پر مطلع ہونا ہے کہ تو دمی کی بصیرت کی نگاہ پر شہوت اور غضب اور جہل مرکب کی جمیں جماکر اے اس اطلاع سے غافل کر دیا جا تا ہے۔ ناچاراس اطلاع کے ذکر پر کھایت کی گئی۔

سے غافل کر دیا جا تا ہے۔ ناچاراس اطلاع کے ذکر پر کھایت کی گئی۔

سے غافل کر دیا جا تا ہے۔ ناچاراس اطلاع کے ذکر پر کھایت کی گئی۔

سے غافل کر دیا جا تا ہے۔ ناچاراس اطلاع کے ذکر پر کھایت کی گئی۔

سے غافل کر دیا جا تا ہے۔ ناچاراس اطلاع کے ذکر پر کھایت کی گئی۔

سے غافل کر دیا جا تا ہے۔ ناچاراس اطلاع کے ذکر پر کھایت کی گئی۔

سے غافل کر دیا جا تا ہے۔ ناچاراس اطلاع کے ذکر پر کھایت کی گئی۔

کلّا مقدمہ یوں نہیں ہے کہ اسے بے مقصد چھوڑ دیا جائے اور اس کی دنیوی عزت اور مرتبہ کالحاظ کرتے ہوئے درگذر کی جائے۔ لَئِنْ لَمْد یَنْتَهِ اگر اس ڈانٹ ڈپٹ کے ساتھ سرکشی سے بازنہ آئے۔

آنسفگا بالناھیۃ تحقیق ہم اسے اس کی پیٹانی کے بالوں سے ضرور کھنچیں گے جو کہ انہائی ذلیل وخوار کرنا ہے کیونکہ انسانی جم کے اعضاء میں سب سے زیادہ معزز ہے۔ اک لیے تعظیم کے موقع پر بادشاہوں اور دولت مندوں کے سر کی قتم کا رواج اور معمول ہے۔ اور جب اسے اس قدر ذلیل کریں تو انہائی ذلت ہوگی اور پیٹانی کو خاص معمول ہے۔ اور جب اسے اس قدر ذلیل کریں تو انہائی ذلت ہوگی اور پیٹانی کو خاص کرنے میں ایک اور خیل ایک عضو کے حوالے کیا گیا ہے۔ اس لیے کہ ظاہری حواس خمستہ۔ وہم اور خیال جو کہ تکبر اور سرکشی کا سر ماہیہ ہوگی ہیں۔ نیز سرکشی کا لفظ بھی اس عضو کی اس عضو کی شرادت کا پہنہ ویتا ہے۔ پس اسے اس عضو کے میں۔ نیز سرکشی کا لفظ بھی اس عضو کی شرادت کا پہنہ ویتا ہے۔ پس اسے اس عضو کے میں۔ نیز سرکشی کا لفظ بھی اس عضو کی شرادت کا پہنہ ویتا ہے۔ پس اسے اس عضو کے ساتھ سزادی جارہی ہے جیسا کہ چور کے شرادت کا پہنہ ویتا ہے۔ پس اسے اس میلے کہ چوری کا آلہ وہی ہے۔

ناھِية کاذِبة خاطِئة وہ پيٹانی جو کہ جھوٹی اور خطاکار ہے۔ يعنی سرتی کی حالت میں اس پیٹانی میں ابراء اور ان قوتوں کے ساتھ جو کہ اس پیٹانی میں سپر و کی گئی ہیں جھوٹی لافیں مارتا اور بے در اپنج گناہ کرتا تھا۔ بھی مسکینوں اور عاجزوں کو حقارت کی نظر سے دیکھا' بھی اس حرکت پر پیٹانی پر بل ڈال کر بیٹھتا جو اس کی مرضی حقارت کی نظر سے دیکھا' بھی اس حرکت پر پیٹانی پر بل ڈال کر بیٹھتا جو اس کی مرضی کے خلاف ہوتی۔ اور بھی حقیر سجھنے اور غدات کرنے کے موقع پر سر ہلاتا تو یہ پیٹانی اس لائن ہے خلاف ہوتی۔ اور بھیٹانی اجائے اور پیٹانی کے جن بالوں کو بڑی آ ب و تاب کے ساتھ رکھا' کنگھی کرتا اور خوشبودار تیل لگاتا تھا' انہیں پکڑ کر خاک میں ملاکر تھینچا

اورمفسرین نے لکھا ہے کہ خاطی مخطی سے بدتر ہے اس لیے کہ لغتِ عرب میں خاطی است کہتے ہیں جو جان ہو جو کر گناہ کرے جبکہ تخطی وہ ہے جوعمدا نافر مانی نہ کرے اس لیے خاطی است کہتے ہیں جو جان ہو جو کر گناہ کرے جبکہ تخطی وہ ہے جوعمدا نافر مانی نہ کرے اس لیے خاطی کے لیے قرآن مجید میں انتہائی شدید عذاب کا وعدہ کیا گیا ہے۔

اوروہ غسلین کھانا ہے غسلین جہنیوں کی پیپ ہے جوکہ گرمی کی وجہ ہے ان کا گوشت اور چربی جلنے کی بناء پر نکلے گی۔ اللہ تعالی نے ارشاد فرمایا میں غسلین لایا تُکلُهُ اِللّٰہ الْحَاطِئُونَ جَبَهُ فَلَى كَ لِيَعْدُوهِ ورگزر کا وعدہ ہے دَبّنا لَا تَوَاخِذُنَا إِنْ نَسِيْنَا اَوْ اَخْطَانَا

اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ جب بیآ یات نازل ہوئیں حضور علیہ الصلاۃ والسلام نے لوگوں کے سامنے ان کی جو تے ہوتے ہوتے ہوتے بات ابوجہل تعین تک جا پینی ۔ اس نے غصے میں سرحضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ بختی کرنا شروع کردی وار کہنے لگا کہ کچھ پنہ ہے کس کو ڈرار ہے ہو؟ اگر میں چاہوں تو یہ سارا صحرا سواروں اور پیادوں سے بھر دول ۔ لیکن تمہارے لیے اور تمہاری قوم کے لیے تو وہی لوگ کافی ہیں جو کہر روز صبح و شام میرے دربار میں حاضری دیتے ہیں اگر میں انہیں بالا لوں تو تم پراس کی حقیقت کھل جائے۔ اس ملعون کے جواب میں میں ایک اور آیت آئی کہ

فَلْیَدُوْ فَادِیَهٔ پس جاہے کہ وہ اپنی مخفل والوں کو بُلا لے یعنی جولوگ شام اس کی محفل میں حاضر آتے ہیں' موت کو رو کئے روسیں قبض کرنے والے کا مقابلہ کرنے کے لیے اپنی فوج اور لشکر سے مدد حاصل کرے اس لیے کہ ہم بھی اس کے مقابلے کے لیے اینے حقیر بندوں کو بھیج دیں گے۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے:

سَنَدُءُ الزَّبَانِيَةَ ہم جلد ہی زبانیہ کو کا لیس کے۔ اور اصل لغت عرب میں زبانیہ جیل کے ان سپاہوں کو کہتے جیں جو کہ دوزخ پر مقرر جیں اور وہ لوگوں کے ہاتھ ڈالتے جیں اور یہاں وہ فرشے مراد جیں جو کہ دوزخ پر مقرر جیں اور وہ لوگوں کے ہاتھ پاؤں باندھ کر دوزخ جیں ڈالیں گے۔ اس جیل جی اپوجہل تعین کے لیے اس وعید کے مطابق ہی اتفاق ہوا کہ بدر کے دن مارا گیا اور حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے تھم پر مسلمانوں نے اسے بیشانی کے بالوں سے تھینچ کر تا یاک گڑھے میں ڈال دیا۔ اس کے کان جی سوراخ کر کے اس میں ری ڈال کر اس کی قبل گاہ سے گڑھے تک تھینچ کر لے کان جی سوراخ کر کے اس میں ری ڈال کر اس کی قبل گاہ سے گڑھے تک تھینچ کر جہم رسید کر دیا سے مسلم کر حال کے دوزخ پر مقرر فرشتوں نے تھینچ کر جہم رسید کر دیا سے مسلم کے مسلم کے کان جی مسلم کے مرتے ہی اس کی روح کو دوزخ پر مقرر فرشتوں نے تھینچ کر جہم رسید کر دیا سے مسلم کی مرتے ہی اس کی روح کو دوزخ پر مقرر فرشتوں نے تھینچ کر جہم رسید کر دیا سے مسلم کے مسلم کے مرتے ہی اس کی روح کو دوزخ پر مقرر فرشتوں نے تھینچ کر جہم رسید کر دیا سے مسلم کے مرتے ہی اس کی روح کو دوزخ پر مقرر فرشتوں نے تھینچ کر جہم رسید کر دیا سے مسلم کی مرتے ہی اس کی روح کو دوز خ پر مقرر فرشتوں نے کھینچ کر جہم رسید کر دیا

اس کے ساتھیوں اور ہم مجلسوں میں سے کوئی بھی اس مشکل وقت میں اس کے کام نہ آیا۔
اور زبانیہ کی تعداد کے متعلق قرآن پاک میں دوسرے مقام پرجو پچھ آیا ہے یہ
ہے کہ کفار میں سے ہرایک کے لیے انہیں (۱۹) افراد مقرر ہیں جو کہ اسے پکڑ کر دوز خ
میں ڈالتے ہیں۔ انہیں (۱۹) کی تخصیص کی وجہسورہ مدڑ کی تغییر میں فدکور ہے۔

جہنم کے موکلوں کے اوصاف کا بیان

اور بعض روایات میں وارد ہوا کہ ان کا جسم اس قدر کھلا اور وسیع ہے کہ ان کے پاؤل زمین میں اور سرآ سان تک پہنچتے ہیں' ان کے سردار کا نام مالک ہے' افعارا (۱۸) اور ہیں جن کی آئیس بیلی کی طرح چیکتی ہیں' ان کے دانت بارہ سنگے کے سینگوں کی طرح پیج ہیں جن کی آئیس بیلی کی طرح ہیں' ان کے دانت بارہ سنگے کے سینگوں کی طرح پیج در بیج ' ان کے جسم کے بال اس حد تک لیے ہیں کہ زمین پر تھنچتے چلے جاتے ہیں' ان کے دونوں کندھوں کے درمیان ایک سال کا فاصلہ منہ سے آگ کے شعلے نگلتے ہیں' ان کے دونوں کندھوں کے درمیان ایک سال کا فاصلہ ہے' ان میں ہرایک کے ہاتھ کی ہفتیلی میں ستر (۵۰) ہزار افراد کی مخوائش ہے۔

اورلفظ زبانیہ کی تحقیق میں اختلاف ہے۔ بعض کہتے ہیں کہ یہ جمع کا صیغہ ہے جس کا مفرد زبیت ہے جسیا کہ عفریت بیز بن سے جس کا مفرد زبیت ہے جسیا کہ عفریت بیز بن سے مشتق ہے جس کا معنی دفع کرنا ہے اور زبینت ہر سرکش کو کہتے ہیں 'انسانوں سے ہویا حنات ہے۔

اور جب اس سرکش کے حال اور انجام کے بیان سے فراغت ہوئی تو حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کواس لعین کی مخالفت کا حوصلہ ولا یا گیا اور فرمایا گیا کہ تکلّا اس سے مت ڈریں اور اس کے ڈرانے کوکسی گنتی میں نہلا کیں۔

لاُتُطِعْهُ اس کی اطاعت نہ کریں۔ واسٹجند و افتیر ب اللہ تعالی کے حضور سجدہ کریں اور سجدے کی عبادت ہے اس کے دربار میں قرب حاصل کریں۔ اوراگر چہوہ لعین ساری نماز ہے ہی روکتا تھالیکن وہ سجدہ کرنے پرزیادہ مختی کرتا تھا اس لیے کہ ارکان نماز میں سے سجدہ تکبراور سرکشی کے بہت زیادہ منافی ہے۔ اس کے مزاج پراس خلق بدکا نماز میں سے سجدہ تکبراور سرکشی کے بہت زیادہ منافی ہے۔ اس کے مزاج پراس خلق بدکا بہت غلبہ تھا اس لیے بیچرکت اس کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کرنے کا سکت غلبہ تھا اس لیے بیچرکت اس کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کرے کا سکت علبہ تھا اس لیے بیچرکت اس کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کرے کا سکت علیہ تھی۔ خود سجدہ کرے کا سکت علیہ تھی۔ خود سجدہ کرے کا سکت علیہ تھی۔ اس کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کرے کا سکت علیہ تھی۔ اس کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کرے کا سکت علیہ تھی ۔ خود سجدہ کرے کا سکت علیہ تھی۔ اس کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کی طبیعت کے بالمقابل مطابق نہ تھی۔ خود سجدہ کی سکت خود سجدہ کی سکت علیہ تھی ۔ خود سجدہ کی سکت خود سجدہ کی سکت علیہ کی سکت کی سکت کی سکت علیہ کی سکت کی

کیا امکان دوسرل ہے د کمچے تبیں سکنا تھا۔ اس بناء پر اس کی مخالفت کے مقام میں سجد ہے کا تھم دیا گیا تا کہ اس کی ٹاک خاک آلود ہو۔

نیز جب اس ملعون کو تکبراور سرکشی کی جزامیں پیشانی کے بالوں سے تھینچنے سے ڈرایا گیا مضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کوشکر میہ کے طور پراس بات کی دلالت کی گئی کہ آپ عاجزی کے ساتھ اپنی پیشانی کو ہمارے حضور خاک پر رکھیں کہ ہم نے آپ کے دشمن کی پیشانی کو ہمارے حضور خاک پر رکھیں کہ ہم نے آپ کے دشمن کی پیشانی کو آپ کے دشمن کی بیشانی کو آپ کے دشمن کی بیشانی کو آپ کے انتقام کے لیے مٹی میں ملادیا۔

نیز جب بجدہ قربِ خداوندی کے حصول کا باعث ہے تصورعلیہ الصلوۃ والسلام کواس کا تھم دیا گیا اور ارشاد ہوا کہ آپ بجدہ میں مشغول ہوں تا کہ بارگاہِ خداوندی میں آپ کو پورا قرب حاصل ہواور آپ کا کمال سر بلند ہواور آپ کا دشمن خود بخو دمغلوب اور ذلیل ہواس لیے کہ بارگاہِ خداوندی میں آپ کا قرب جس قدر برد ھے گا' آپ کے دشمن ای قدر مغلوب ہوں گے۔

حالت سجدہ میں قرب کی زیادتی کی وجہ

اور سجدہ کی حالت میں قرب کی زیادتی کی وجہ یہ ہے کہ اس حالت میں آدی اپنی اصل کی طرف متوجہ ہوتا ہے جو کہ خاک ہے۔ اپنی اصل کی طرف توجہ جتنی زیادہ ہوگ قرب خداو شدی اتنائی زیادہ حاصل ہوتا ہے۔ اس لیے کہ اس دربار سے وجود کا فیض اس راہ سے پہنچا ہے۔ خود کو پھر اسی دروازے پر جہاں سے آیا تھا' پہنچا تا ہے اور رجوع الی اللہ کا دروازہ کھنگھٹاتا ہے اس لیے حدیث شریف میں وارد ہے کہ اقد ب مایکون العبد من دبعہ وهو ساجد فاکٹروا فید من الدعآء لیمن سجدے کی حالت میں العبد من دبعہ وهو ساجد فاکٹروا فید من الدعآء لیمن سجدے کی حالت میں بندے کو اپنے پروردگار کے حضور انتہائی نزد کی اور قرب حاصل ہوتا ہے کہ پس اس حالت میں دعا بہت زیادہ دعا کرتا جا ہے تا کہ قبول ہو۔

اور بدآیت سجدہ تلاوت کی آیات میں سے ہے اسے پڑھنے سے پڑھنے والے اور سننے والے پر سجدہ واجب ہوجاتا ہے اور سیح حدیث پاک میں وارد ہے کہ ابوجہل نے لوگوں سے کہدرکھا تھا کہ جب بھی مجر (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کعبہ کے اس سے کہدرکھا تھا کہ جب بھی مجر (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کعبہ کے ابوجہل نے لوگوں سے کہدرکھا تھا کہ جب بھی مجر (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کعبہ کے اس سے کہدرکھا تھا کہ جب بھی مجر (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کعبہ کے ابوجہل نے لوگوں سے کہدرکھا تھا کہ جب بھی مجر (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کعبہ کے ابوجہل نے لوگوں سے کہدرکھا تھا کہ جب بھی مجر (صلی اللہ علیہ واللہ وسلم)

سائے آئیں اور بحدہ کریں بھے خبر دینا تا کہ (معاذاللہ) ہیں گردن پر پاؤں رکھوں اور اسے قل کر دوں۔ایک دن حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم خانہ کعبہ کے سامنے نماز ہیں کھڑے تھے کہ اس بد بخت کو کس نے خبر دے دی وہ وعدے کے مطابق آیا جب حضور علیہ الصلاۃ و السلام کے قریب پہنچا تو بچھلے پاؤں لوٹا اور اپنے دونوں ہاتھوں کو ڈھال بنا کر گویا کسی چیز اسلام کے قریب پہنچا تو بچھلے پاؤں لوٹا اور اپنے دونوں ہاتھوں کو ڈھال بنا کر گویا کسی چیز سے نی رہا ہے۔ یہاں تک کہ دو تین بار ایسا ہی واقعہ پیش آیا اور وہ واپس چلاگیا۔ جولوگ یہ واقعہ دیکھنے کے لیے جمع ہوئے تئے انہوں نے اس سے پوچھا کہ تھے کیا ہوگیا کہ تو واپس لوٹ آیا؟ اس نے کہا کہ میرے اور محمصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے در میان ایک واپس نوٹ آیا؟ اس نے کہا کہ میرے اور محمصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے در میان ایک میرے آثون نے برا اور دہا میری طرف قصد کر رہا تھا اگر میں شدید خوف محسوں ہو رہا تھا اور ایک بہت بڑا اور دہا میری طرف قصد کر رہا تھا اگر میں واپس نہ ہوتا تو جل جاتا اور اور دہا مجھے ہلاک کر دیتا' تا چار مجھے لوٹنا پڑا۔ لوگوں نے پوچھا کہ بیکھی ایک زبر دست جادوگر ہے میں اس پر غالب نہیں واپس نہ ہوتا تو جل جاتا اور اور دہا میکھی ایک زبر دست جادوگر ہے میں اس پر غالب نہیں کہ بیکیا حالت تھی؟ بولا کہ میر میں ایک زبر دست جادوگر ہے میں اس پر غالب نہیں کہ بیکیا حالت تھی؟ بولا کہ میر میں ایک زبر دست جادوگر ہے میں اس پر غالب نہیں تہ بیکا

نیز حدیث شریف میں دارد ہے کہ اس داقعہ کے بعد حضور سلی اللہ علیہ دآلہ وسلم نے فرمایا کہ اگر بیعین میرے نزدیک آتا تو فرشتے اس کے پرنچے اُڑا دیتے اور وہ باقی ندر ہتا۔

سورة اقرء كے فوائد و نكات كابيان

ادراس سورۃ سے متعلق فوا کداور نکات میں سے ایک یہ ہے کہ اس سورۃ کی پانچ آیات نزول قرآن کی ابتدا میں اُتریں جبکہ باقی آیات کافی عرصے کے بعد ابوجہل کے بارے میں نازل ہو کی لیکن رب العزت کے تھم سے ان آیات کو گزشتہ آیات کے ساتھ ایک جگہ کردیا گیا اور مناسبت کی وجہ دوران تغییر بیان کی جا چکی ہے۔

نیز اس سورۃ میں اُن سَمعیٰ عُلُوم کو ثابت کرنے کی طرف اشارہ ہے جو کہ نقل اور کتابت پرموقوف ہیں۔

نیزاں مورۃ میں ایک بجیب نکتہ ہے اس لیے کہاں سورۃ کا پہلا حصہ نعنیلت marfat.com Marfat.com علم پر دلالت کرتا ہے جبکہ باقی حصہ مال کی ندمت پر مبنی ہے تو یہاں سے اس بات کا سراغ لگانا چاہیے کہ علم ایک چیز ہے جو کہ مرغوب ہے جبکہ دنیا کا مال نفرت اور بے رغبتی کے قابل ہے۔

نیزاس سورة میں جہال علم اور لکھنے کی تعلیم کی نعمت کا ذکر کیا گیا ہے وہاں ذات حق کوصفتِ اکرم کے ساتھ موصوف کیا گیا ہے کہ دربك الاکو مرجبکہ سورة الانفطار میں جہاں تخلیق اور ظاہری باطنی اعضاء کو معتدل کرنے کا ذکر فرمایا گیا ہے کریم کی صفت لائی گئی ہے کہ مماغز کئے بربیف المگریم یا آلین خلقک فسو الگی خدورة مان کی ہوری می کو کہتے ہیں جبکہ کریم صرف کرم پر ممافاء کرتا ہے۔ یہاں سے معلوم ہوا کہ نعمت علم صحت وسن اور جمال کی نعمت سے بہت زیادہ ہی حت مسن اور جمال کی نعمت سے بہت زیادہ ہے۔

نیز اس سورۃ میں اس اُمت کے فرعون ابوجہل کے بارے میں لیکھنی فرمایا گیا جو کہ لام تاکید ہے موکد ہے اس کا صیغہ استمرار تجددی کا صیغہ ہے جبکہ حضرت موک علیہ السلام کے فرعون کے بارے میں اس کی سلطنت عزت اور مرتبہ کے کمال کے باوجود دوسرے مقام پر تاکید استمرار کے بغیر لفظ طنی فرمایا گیا ہے جو کہ اس بات کا اشارہ ہے کہ فرعون اس قدر کمال اقتدار کے باوجود حضرت موئی علیہ السلام کو صرف باتوں اور ظاہری کلام کے ساتھ ہی ستاتا تھا جبکہ اس لعین نے اپنے مرتبے کی کمی کے باوجود بار ہا حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے آل کا قصد کر کے معاذ اللہ ختم کرنا جا ہا۔

نیز فرعون نے حضرت موی علیہ السلام کے ساتھ ان کی ابتدائی عمر میں اچھا سلوک کیا تھا اور آخر میں اس کی زبان سے بیکلمہ نکلا لاّ اِللّه اِلّه الّذِی المَنتُ به بنواِسْرَ آنِیْلَ اس کے تکبر میں قدرے کی ہوئی۔ بخلاف ابوجہل لعین کے دحضور صلی اللّه علیہ وآلہ وسلم کے بچینے ہے ہی آپ کے ساتھ حسد کرتا تھا آخری کیات میں بھی تکبر کے علیہ وآلہ وسلم جہنم ہوا کہ لوغیر ک قتلنی یعنی میرا مرتبہ بین تھا کہ میں مدینہ کے مزارعین کے ہاتھوں ماراجاؤں۔

نیز جب حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تختاس کا سرکا شخے کے لیے اس کے سینے پر بیٹھے تو اس نے متکبرانہ لہج میں کہا کہ باراعی انعند لقداد تقیت مرتقی صعبا اے بکر یوں کے چروا ہے! تو بہت او نچے مقام پر بیٹھا ہے۔ نیز اس نے کہا کہ هل اعدم من دجل قتلتموہ لینی جے تم نے قتل کیا ہے اس سے کوئی اور او نچا آ دمی جہان میں ہے؟ پس ان وجوہ کی بناء پر اس کی سرکشی اور تکبر فرعون کے تکبر سے زیادہ ہوا اور تاکید کے اس لفظ کا مستحق ہوا۔ واللہ تعالی اعلم

سورهٔ قدر

مشہور ہے کہ کمی ہے کین اس کے نزول کے سبب میں جو واقعات مفسرین بیان کرتے ہیں' وہ دلالت کرتے ہیں کہ مدنی ہوگی اس لیے بنی اسرائیل کے واقعات مدینہ شریف میں ذکر کیے جاتے تھے اور منبر بھی اس شہر کریم میں بنایا گیا۔اس سورۃ میں پانچ (۵) آیات' تمیں (۳۰) کلمات اور ایک سوباراں (۱۱۲) حروف ہیں۔

سبب نزول

اس کے زول کا سبب چند چیزیں ہیں۔ پہلی چیزیہ ہمان فرما رہے تھے۔ ای اللہ علیہ وآلہ وسلم صحابہ کرام کے پاس بنی اسرائیل کے حالات بیان فرما رہے تھے۔ ای دوران آپ نے شمعون یاسمنون نامی ایک زاہد کا ذکر فرمایا جو کہ بنی اسرائیل میں ہوگزرا ہوا درعبادت کی کثرت میں اس کی مثال بیان کی جاتی ہے کہ وہ ہزار ماہ تک عہادت میں مصروف رہا ہم روز روز ہ رکھتا اور کفار کے ساتھ جہاد کرتا اور رات کو نماز ادا کرتا۔ صحابہ کرام رضی الند عہمانے عرض کی کہ یارسول اللہ ہم اس تم کے آدی کے واب تک کیے پہنے کے جات کی کہ اس کے عربی ساٹھ (۲۰) سے ستر (۲۰) سال تک ہوتی ہیں۔ اس عمر کا ایک حصہ جو اس کا ایک تہائی ہوگا ہم سو کر گزار تے ہیں۔ ایک حصہ اپنی روزی کے اسباب کھانے پینے اور دوسری ضرورتوں میں صرف کرتے ہیں ایک حصہ بیار یوں سستی اسباب کھانے پینے اور دوسری ضرورتوں میں صرف کرتے ہیں ایک حصہ بیار یوں سستی اور کا بلی میں ضائع ہو جاتا ہے عبادت اور طاعت کے لیے کیا بچھ پچتا ہے۔ سرکارعلیہ اور کا بلی میں ضائع ہو جاتا ہے عبادت اور طاعت کے لیے کیا بچھ پچتا ہے۔ سرکارعلیہ

السلوٰۃ والسلام بھی باتیں سُن کرایک گونہ متفکر ہوئے۔ حق تعالی نے بیسورت بھیجی یعنی گریڈ ہماری عمریں جھوٹی ہیں لیکن ہم نے تہ ہیں ایک ایسی رات عطا فرمائی ہے جس کی عبادت ہزارمہینوں کی عبادت سے بہتر ہے۔

دوسری چیز میہ ہے کہ ایک دن حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو آپ کی اُمت کی عمریں وِکھائی گئیں جو کہ زیادہ تر ساٹھ (۹۰) اور ستر (۵۰) کے درمیان تھیں 'حضور علیہ السلام نے نم ناک ہو کر فر مایا کہ اتن عمر میں میری اُمت کیا کر سکے گئ کہیں ایسانہ ہو کہ قیامت کے دن پہلی اُمتیں طویل عمروں کی عبادتوں کا ثواب یا کیں اور میری اُمت اپنی قلیل عبادات کی وجہ سے شرمندہ ہو۔ اللہ تعالیٰ نے آپ کے قلب مقدس کی تسلی کے لیے میسورت بھیجی۔

تیری چیزیہ ہے کہ حضرت امام حسن علیہ السلام نے فرمایا کہ حضور صلی اللہ علیہ والہ وسلم کوخواب میں دکھایا گیا کہ بنی اُمیہ کے ظالم لوگ آپ کے منبر پر کیے بعد دیگر ب بندروں کی طرح کود کر بیٹے جائیں گے اور رعایا پرظلم وستم کریں گئے آپ پر بیدا مربہت شاق ہوا۔ آپ کی تسلی کے لیے بیسورۃ نازل ہوئی۔ ہزار ماہ سے مراد بنی اُمیہ کی سلطنت کی محت ہے کہ ان کی بادشاہی کا زمانہ ای قدر تھا۔ (۴۰ ھے سے ۱۳۲ ھے تک بنو اُمیہ کی محت بنو اُمیہ کی حصت میں اختلاف ہے۔ فقد بر)۔ مراک بین اس موالی ہے۔ فقد بر)۔ وحد تسمیہ وحد تسمیہ وحد تسمیہ

اورلیلتہ القدر کواس نام سے منسوب کرنے کی دو دہمیں ہیں: پہلی وجہ یہ ہے کہ قدر بمعنی مقدار اور رُتبہ کے ہے۔ اس رات میں بی آ دم کے صلحاء اور عبادت گزاروں میں سے ہرا کیک کا رُتبہ ظاہر ہوتا ہے۔ اللہ تعالی کے حضور ان کے کمائے ہوئے درجات قرب ثابت ہوجاتے ہیں۔ کو یا پورے سال کی عبادت کا نتیجے ظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح شاہر موتا ہے۔ فرشتے اور ارواح شاہر کو یا پورے سال کی عبادت کا نتیجے ظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح شاہر کو یا پورے سال کی عبادت کا نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے مسلم کی میاد کے ملائے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کا نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کا نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کا نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کا نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کا نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کا نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کہ نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں۔ کو یا پورے سال کی عباد سے کہ نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں کے کہ نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں کے کہ نتیجے نظاہر ہوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں کر بھوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں کے کہ نتیجے نظاہر کی میں کی کر بھوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے میں کر بھوتا ہے۔ فرشتے اور ارواح سے کر بھوتا ہے۔ فرشتے کر بھوتا ہے کر بھوتا ہے۔ فرشتے کر بھوتا ہے کر بھوتا ہے۔ فرشتے کر بھوتا ہے۔ فرشتے کر بھوتا ہے۔ فرشتے کر ب

ہر کسی کے مقام اور منصب کومعلوم کر لیتے ہیں اور اطلاع پاتے ہیں۔

دوسری وجہ ریہ ہے کہ قدر جمعنی بزرگی ہے جیسا کہ کہتے ہیں کہ فلاں قدر والہ یعنی

بزرگی والا ہے۔

شب قدر کی بزرگی کی چندوجوه

اور بیرات چند وجوہ کی بناء پر دوسری راتوں پرشرف اور مرتبہ رکھتی ہے۔ پہلی وجہ بیہ کا اور مرتبہ رکھتی ہے۔ پہلی وجہ بیہ کہا ہے کہ اس رات میں شام سے سبح تک مجلی الہی کی توجہ بندوں کی طرف ہوتی ہے انہیں در بارِ خداوندی میں قرب معنوی حاصل ہوتا ہے۔

دوسری وجہ یہ ہے کہ فرشتے اور ارواح نیکوں اور عبادت گزاروں کی ملاقات کے لیے آسان سے زمین پر آتے ہیں' ان کی حاضری اور اجتماع کی وجہ سے عبادات کی کیفیت اور نیکیوں کی لذت دوسری راتوں کی عبادات کی کیفیت سے ہزاروں مرتبہ زیادہ ہوجاتی ہے۔

تیسری وجہ بیہ ہے کہ قرآن پاک کا نزول ای رات میں واقع ہوا اور بیرالیا شرف ہے جس کی انتہانہیں ہے۔

چوتی وجہ یہ ہے کہ فرشنوں کی تخلیق بھی ای رات میں ہے۔ پانچویں وجہ بیہ ہے کہ بہشت کے باغ میں بود ہے ای رات میں لگائے جاتے ہیں۔ چھٹی وجہ بیہ ہے کہ حضرت آ دم علیدالسلام کی پیدائش کا مادہ جمع فرمانا بھی اس رات میں ہے۔

اور سی روایت میں آیا ہے کہ حضرت عثان بن العاص رضی اللہ عند کا ایک غلام تفاجس نے کئی سال جہازوں کی ملاحی میں گزارے تھے۔ایک ون آپ سے کہنے لگا کہ میں سمندر کے بجائبات میں ایک چیز کا تجربدر کھتا ہوں جس میں میری عقل جیران ہے۔ سال کی ایک رات سمندر کا پائی میٹھا ہو جاتا ہے۔حضرت عثمان بن العاص رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ جب وہ رات آئے تو جھے مطلع کرنا تا کہ میں دیکھوں کہ وہ کون کی رات ہے ہا اس میں کیا بزرگی ہے۔ اس غلام نے رمضان پاک کی ستا کیسویں رات کو آپ سے کہا

کریرون کے marfat.com Marfat.com حاصلِ کلام یہ کہ اس سورۃ کے مضمون سے معلوم ہوتا ہے کہ نیک اوقات متبرک مقامات اور نیکوں کی حاضری اور اجتماع کی وجہ سے عبادات اور طاعات کے لیے اجرو تو اب اور برکات وانوار عطاکر نے میں عظیم برتری حاصل ہوتی ہے۔ نیز معلوم ہوتا ہے کہ ہماری عبادات اور نیکیوں کا اجر مشقت اور تکلیف کے انداز ب پر مکھنا اس صورت میں ہے جب اس فضیلت کے اعتبار سے برابر ہوں۔ چنانچہ فر مایا گیا ہے کہ اجد ك علی قدر نصبك بعنی تیرا اجر تیری تکلیف کے مطابق ہے لیکن چونکہ ال فضیلتوں کے ماتھ درجات میں فرق پڑ جاتا ہے لیس نیکیوں کا تو اب رنج ومشقت کے انداز ب پرنہیں ماتھ درجات میں فرق پڑ جاتا ہے لیس نیکیوں کا تو اب رنج ومشقت کے انداز بے پرنہیں نیکیوں کا تو اب رنج ومشقت کے انداز بے پرنہیں نیکیوں سے بہتر اور زیادہ روثن ہوجاتا ہے۔

ليلة القدركوفي ركضے كى حكمت

نیز جاننا چاہیے کہ اس عظمت اور بزرگ کے باوجود لیلتہ القدر کولوگول کی دانست سے مخفی رکھا گیا ہے جیسا کہ جمعہ کے دن میں دعا کی قبولیت کی گھڑی 'پانچ نماروں کے درمیان نماز وسطی اسائے الہی کے درمیان اسم اعظم' نیکیوں کے درمیان مقبول نیکیال اور لوگوں کے درمیان ولی اللہ کو مخفی رکھا گیا تا کہ جبتو میں رہیں اور ساری راتوں' ساری نمازوں' تمام اسائے حسنی اور تمام نیکوں کی قدر کریں۔

نیز اس متبرک رات کو چمپانے کی تحکمت موت کا دفت اور قیامت کا دن مخفی رکھنے کی حکمت کی مانند ہے تا کہ مسلمان کدو کاوش میں کوتا ہی نہ کریں' اعتاد نہ کریں اور غفلت اور مستی کو جائز قرار نہ دیں۔

نیزمفسرین نے فرمایا ہے کہ اگر شپ قدر عام لوگوں پر ظاہر ہوتی تو اس رات کا پچھ حصہ طاعت میں گزارتے اور ہزار مہینوں کا تو اب حاصل کرتے اور پچھ وقت شہوت کی وجہ سے نافر مانی میں بسر کرتے اور ہزار مہینوں کا عذاب حاصل کرتے ۔ اللہ تعالیٰ کی رحمت نے تقاضا فرمایا کہ لوگ معین طور پر اس رات کو نہ جانیں تا کہ اس نافر مانی کی وجہ سے جو کہ اس رات میں دیدہ و دانستہ کریں اس کئی گنا عذاب سے بیچے رہیں اور اگر چہ سے جو کہ اس رات میں دیدہ و دانستہ کریں اس کئی گنا عذاب سے بیچے رہیں اور اگر چہ سے محال کے اس مات میں دیدہ و دانستہ کریں اس کئی گنا عذاب سے بیچے رہیں اور اگر چہ سے محال کے اس رات میں دیدہ و دانستہ کریں اس کئی گنا عذاب سے بیچے رہیں اور اگر چہ سے محال کی اس کا کہ اس داخل کے دائیں دیدہ و دانستہ کریں اس کئی گنا عذاب سے بیچے رہیں اور اگر چہ

اس رات میں بعض لوگوں کو نواب عظیم نصیب ہوتا لیکن نقصان وُ ورکرنا نفع حاصل کرنے سے زیادہ بہتر ہے۔ (اقول وہاللہ التوقیق- یہاں سے معلوم ہوا کہ خواص اس رات کو جانة اور ببجانة بين تو يحراخص الخواص كاكياكهنا يحرسيد المحلق على الاطلاق صلی الله علیه وآلم وسلم کاعلم شریف تو بہت وسعتیں رکھتا ہے۔ چنانچہ شخ عبدالرحمن الصفورى فرماتے ہیں كہ میں نے اسپے والدمحترم رحمتہ اللہ كے قلم ہے يہنے ابوالحن رحمته الله كا قول لكها و يكها أب فرمات بي منذبلغت مافاتتني دؤية ليلة القدر جب سے میں بالغ ہوا ہوں ، محص سے لیلت القدر کا مشاہدہ فوت تہیں ہوا)

شب قدراورشب برأت كافرق

نیز جاننا جا ہے کہ بعض مفسرین نے قدر کو تقدیر کے معنوں میں لیا ہے انہوں نے کہا ہے کہ اس رات میں رزق عمروں مصیبتوں بیار یوں اعمال اور عالم کون وفساد کے دوسرے حادثوں کومقدر فرمایا جاتا ہے۔ لوح محفوظ سے فرشتوں کوان سے متعلقہ امور کے شخال کر کے حوالے کیے جاتے ہیں تا کہ اس کے مطابق پوراسال عمل کریں۔لیکن زیادہ سیجے میہ ہے تفذیر شعبان کی پندر ہویں رات میں ہے جے شب براُت کہتے ہیں۔ ا آگر چہ بعض تابعین نے یوں فرمایا ہے کہ شخوں کی نقل اس رات میں شروع ہوتی ہے اور اس رات میں اہل کاروں کے سپر دکرتے ہیں تو تقذیر کی ابتدا ہب براً میں ہے اور اس کی انتہااس رات یعنی شب قدر میں شخفیق وہی ہے جو کہ ذکر کی گئی۔

شب قدر کے تعین میں اختلاف اور ستائیسویں (۲۷)شب کی ترجیح

اور شب قدر کے تعین میں بہت سا اختلاف ہے جو پچھ قرآن مجیدے معلوم ہوتا ہے ای قدر ہے کہ وہ بابر کت رات رمضان شریف میں ہے اس لیے کہ یہاں قرآن پاک کا نزول اس رات میں فرمایا حمیا ہے اس رات میں عبادات طاعات کی قدر اور اللہ تعالی کے حضور ہر قرب حاصل کرنے والے کا منصب اور مرتبہ عالم ملائکہ اور ارواح پر ظاہر ہوتا ہے۔ ای لیے اے لیلتہ القدر کہتے ہیں۔ جبکہ سور ہُ بقرہ 'ووسرے پارے میں ارشاد فرمایا گیاہے کہ قرآن ماک کا نزمل او بھٹان میں جواتو ان دونوں ارشادات کے Madia Tat. COm

مجموعے سے جو ثابت ہوتا ہے ای قدر ہے۔

اور بیاحتمال کہ شب قدر سارے سال میں گردش کرتی ہے اور نزولِ قرآن کے سال انفاقاً ماہور مضان میں واقع ہوئی ہو عقیقت سے بہت دُور ہے۔

لکن احادیث صحیحت شہورہ کے رو سے ثابت ہوتا ہے کہ وہ رات ماہِ رمضان کے آخری عشرہ کی طاق راتوں میں ہے۔ پس پورے سال پانچ راتیں اس کا احمال رکھتی ہیں کہ شب قدر ہوں۔ اکیسویں (۲۱) تیکویں (۲۳) ' مجبویں (۲۵)' ستا کیسویں (۲۷) اور انتیادیں (۲۹) شب اور زیادہ صحیح ہے ہے کہ کی تعین کے بغیران راتوں میں سے ایک رات شب قدر ہوتی ہے۔ پس کسی سال میں اکیسویں (۲۱) دوسرے میں تیکویں سے الی فراالقیاس قدر ہوتی ہے۔ پس کسی سال میں اکیسویں (۲۱) دوسرے میں تیکویں سے الی فراالقیاس

اور وہ جومشہور ہے کہ ستائیسویں (۲۷) شب ہے تو اس بناء پر ہے کہ اس کا اکثر وقوع ستائیسویں (۲۷) رات کو ہوتا ہے۔ اس لیے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے فر مایا ہے کہ لیلتہ القدر کے نو (۹) حروف ہیں اور پہ لفظ اس سورۃ میں تین بار ذکر کیا گیا ہے اور جب تین کو نو میں ضرب دیں تو ستائیس (۲۷) ہوتے ہیں۔ نیز بعض علماء نے فر مایا ہے کہ اس سورۃ کے میں (۳۰) کلمات ہیں اور ان میں سے ستائیسوال کلمہ لفظ ہی ہے جو کہ شب قدر کی طرف لوٹا ہے یہ ستائیس (۲۷) کے عدد کی طرف اشارہ ہے۔

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا اَنْزَلْنَا اُفِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ تَحْقیق ہم نے قرآن پاک لوحِ محفوظ ہے آسان دنیا پر شب قدر میں نازل فرمایا لیعنی وہ رات جس میں عبادت کرنے والوں کی قدر اور مرتبے کاظہور ہوتا ہے ان کی ولا نیوں کے درجات عالم ملکوت اور عالم ارواح کے نزدیک واضح ہوتے ہیں اس رات میں قطبیت 'غومیت' ابدالیت اور امامت کے عہدے ان کے متحقوں کے لیے مقرر کیے جاتے ہیں۔

(اقول و بالله التوفیق-اس سے نجدی عبرت حاصل کریں جو کہ قطبیت وغو میت کا نام بھی معاذ الله ناجائز قرار دیتے ہیں۔ حضرت شاہ صاحب قدس سرہ کی مندرجہ وضاحت کے مطابق شب قدر میں رہے ہندوں میں تقسیم ہوتے ہیں بلکہ رہے فان سے مطابق شب قدر میں رہے ہندوں میں تقسیم ہوتے ہیں بلکہ رہے فان است کے مطابق شب قدر میں رہے ہدے بندوں میں تقسیم ہوتے ہیں بلکہ رہے فان

خداوندی کا تقاضا ہے۔ دیکھئے حضرت مفسر علام قدس سرہ کی بھی تغییر زیر آیت اِیّاكَ نَسْتَعِیْنُ. محمر محفوظ الحق غفرلہ)

اوراس واقعہ کو رات کے ساتھ اس لیے مخصوص فرمایا گیا کہ دن ظہور کا وقت ہے ہیں وہ عالم شہادت کے مشابہ ہے جبکہ رات پوشیدہ ہونے اور چھنے کا وقت ہے ہیں جہان غیب کے ساتھ بوری مشابہت رکھتا ہے۔ جیسا کہ بعض عارفین سے معلوم ہوا ہوا اس کے مطابق اس رات کا راز ہے کہ بیرات وصل کی رات ہے اس رات میں وصل کی صورت میں اس رنگ میں جلوہ گر ہوتی ہے کہ جمال اللی کی جمل اپنی مشاق بندوں کی صورت میں اس رنگ میں جلوہ گر ہوتی ہے کہ جمال اللی کی جمل اپنی میں بیدا ہو جاتی ہے حال پر متوجہ ہوتی ہے اور ان کے احساسات اور ذہنوں میں ایک فراخی پیدا ہو جاتی ہے اور قوت خیالیہ ادراک کی قوت کی خدمت کرتی ہے وہ جمل طائلہ اور ارواح کے ایک جہان کو جو کہ مقام قدس میں جاگزیں ہیں اپنے ہمراہ لاتی ہے۔ عالم غیب کی عالم شہادت ہیں اور تی کی طائلت میں آمیزش دونوں ہیں سے ملاقات میں آمیزش دونوں جہانوں میں سے ہرایک کا دوسر سے کی شعاعوں فریقوں کے انوار کا جموم اور ان دونوں جہانوں میں سے ہرایک کا دوسر سے کی شعاعوں اور جو تو ہوتی سے ماس کرنا رونما ہوتا ہے اور عالم روحانیت میں ایک ایک کیفیت پیدا اور جوتی ہے دشوں سے جس کی وضاحت بہت دشوار ہے۔

مرایک ناقص ی مثال دیتے ہوئے اتنا کہا جاسکتا ہے کہ بیموسم بہار آنے کی مانند ہے کہ آسان سے بارش برسنے اور قرب آفاب کی زمین کی نشو ونما کی قوتوں اور صور نوعیہ کے ہے جان آثار میں اثر کرنے کی وجہ سے جو کہ ہر نیج اور ہر دانہ میں مخفی ہیں افریک کی وجہ سے جو کہ ہر نیج اور ہر دانہ میں مخفی ہیں دنگارنگ چول اور خوشنما سبزے ظاہر ہوتے ہیں اور دنیا میں ایک رونق حسن اور کمال فراخی رونما ہوتی ہے۔

ایک شبه اور اس کا جواب

قرآن کی تاریخ میں تبین اوقات بیان کیے مسے ہیں۔ ماہِ رمضان طب قدر شب مبارک جو کہ اس کی تاریخ میں تبین اوقات بیان کیے مسے جو کہ اکثر علماء کے نزد کی شب براً ت سے عبارت ہے اور وہ شعبان المعظم کی پندرہویں رات ہے۔ بیس اس امر واقعی میں اور مختلف تعبیروں میں مطابقت کیونکر درست ہوگی۔

اور چھان پینک کے بعد جو پھھ پنۃ چلا ہے ہیہ ہے کہ قرآن پاک کا نزول اور محفوظ سے بیت العزت کے مقام میں جو کہ آسان دنیا کا ایک مکان ہے جے ذی قدر فرشتے گھیرے میں لیے ہوئے ہیں شب قدر میں ہے جو کہ رمضان المبارک میں واقع ہے اور اس کے نزول کا فیصلہ کرنا اور لورِ محفوظ کے محافظوں کو حکم فرمانا کہ اس کے نئے کو منظل کر سے آسان دنیا میں پہنچا کیں اسی سال کی شب برأت میں تھا۔ پس بینوں تعبیر یں درست ہو گئیں کہ نزول حقیق رمضان یاک کی شب قدر میں واقع ہوا اور نزول تقدیری اس سے پہلے شب برأت میں جبہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی زبان پرنزول قرآن کا آغاز عالیہ ویں سال کے شروع میں ماور رہے الاقل میں ہے باقی ماندہ عمر میں قرآن پاک کا خرول پوراکیا گیا۔ پس آپس میں کوئی اختلاف شدر ہا۔

وَمَا اَدُرَاكَ مَا لَيْكَةُ الْقَدْرِ اورتو كياجانے كرشب قدركى بزرگى كيا ہے۔ يعن اگر چه عارف كى معرفت وسيح اور مرتبہ بلند ہوليكن اس بخلى اللى كى حقيقت جس كے ہمراہ كئ فتم كے علوم بيں اور اثر قبول كرنے كى صلاحيتوں كے مطابق رنگ برگئ تا ثيرين ظاہر ہوتی بين كماحقہ نہيں جان سكتا اس ليے كہ اسے جانے كی شرط ان تمام جہانوں اور ان تمام صلاحيتوں كا احاط كرنا ہے بي مسئلة نصيلى طور پر آ دى كى وسعت سے باہر ہے تو اس رات كى عظمت كا اظہار جس قدر ممكن ہے بيان فر ما يا جارہا ہے كہ

لَیَلَهُ الْقَدْرِ خَیْرُمِیْ الَّفِ شَهْدٍ شب قدران برارمهینول سے بہتر ہے جن میں شب قدرند ہو۔ مقصد یہ ہم مہیند دنوں اور دانوں پر شمل ہے اور بردن اور بر رات ان للّه فی ایام دھر کھ نفحات الافتعد ضوالها کہ مم کے مطابق تجلیاتِ غیبیاور شہودیہ کو ممن میں لیے ہوئے ہے کین وہ بخلی جو کہ اس رات میں واقع ہوتی ہے عام اور وسیع ہونے کی وجہ سے اور اساء الہیدی بلندی کی وجہ سے جو کہ اس ججلی کا مادہ ہیں۔

تغیر عزیزی هست میست (۵۰۲) میست تیموال یاره

ان تجلیات کے ساتھ وہی نسبت رکھتی ہے جو کہ دریا کو قطرے کے ساتھ ہے۔ ہزار کے عدد کی شخصیص کی وجہ

اور ہزار کے عدد کو اس جہت سے خاص کیا گیا ہے کہ لغتِ عرب میں اسائے عدد کسی مرتبے تک چہنچتے ہیں' ہزار کے بعدان کی لغت میں کوئی نام ہیں ہے۔ پس عدد کے ختم ہونے کے مقام کا پیتہ دیا گیا ہے۔

اور مہینے کواس لیے خاص فرمایا گیا ہے کہ اگر چہ سال زیادہ دنوں اور راتوں پر مشتل ہے لیکن عربی سال جو کہ چاند کی گروش سے بنتا ہے مہینوں کا بحرار ہے جبکہ شمی سال ایک پوشیدہ اور دن کے ساتھ موص امر ہے بخلاف چاند کے جو کہ رات کے ساتھ مخصوص ہے اس کے ساتھ ساتھ جاند کو اس مقام کے ساتھ ایک زائد مناسبت مخقق ہے اس کے ساتھ ساتھ جاند کو اس مقام کے ساتھ ایک زائد مناسبت مخقق ہے اس کے موت واقع اس لیے کہ چاند کا طلوع ہلال کے مرتبے سے لے کر بدر ہونے تک رات کے وقت واقع ہے۔ پس یے طلمت کدہ دنیا میں نور جنی کے طاہر ہونے کی طرح ہے۔

اوراس وجہ سے کہ رات میں جمل الہی اس عظمت اور بزرگی کے ساتھ واقع ہوتی ہے۔ اس رات کی عبارتھ واقع ہوتی ہے۔ اس رات کی عبادت کی عبادت کی عبادت کی عبادت کی عبادت کی عبادت کے تواب سے بہتر ہوگا۔ نیز اس کی عظمت کے متعلق بیان فرمایا جارہا ہے کہ

جیہا کہ مختلف کیفیات والے اجزاء سے ترکیب یا فتہ مجون کا مزاح کہ ہر ہر فرد کی تا ثیر کے علاوہ ایک اور تا ثیر بیدا کرتا ہے۔

نماز بإجماعت كى فضيلت كى تحكمت

اور بیاللہ تعالیٰ کی عجیب وغریب حکمتوں میں سے ایک عجیب حکمت ہے کہ اس طریقے سے ناقص کو کامل کی گفتی میں لایا جاتا ہے اور اس حکمت کی بناء پرنماز باجماعت کو تنہا نماز پڑھنے سے بہتر قرار دیا گیا ہے اور جماعت میں جس قدر حاضری کثرت سے ہوگی اسی قدر دل روشن کرنے اور عنداللہ مقبول ہونے میں زیادہ اثر کرے گی۔

اور چونکہ فرشتوں اور ارواح کا نزول بھی فرشتوں سے وابستہ امور جاری رکھنے اور بعض کاملین کو عالم بالا کی ارواح کے ساتھ ایک مناسبت حاصل ہونے کی وجہ سے بھی ہوتا ہے۔لہٰذا ایک اورکلمہ ارشاد فر مایا گیا ہے۔ بینز ول ایسانہیں ہے بلکہ بیاُتر نا

بافن رتبھہ ان کے پروردگار کے تم ہے ہے۔مقصد سے کہ ایک بخل تمام فرشتوں اور ارواح کو این بیجھے لے کر مختلف مقدار کے کمالات کی ایک ہی صورت حصول کے لیے انہیں نیچے لے آئی تو بلاشبہ اس وقت فرشتوں اور ارواح کا نزول اس کی مانند ہے کہ بادشاہ کے دفتری اور رئیس اپنے تعارف کی بناء پرسی کے گھر کسی تقریب کے سلسلے میں آئیں اور ملائکہ اور ارواح کا اس وقت نزول بلاتشبیہ بمنزلہ اس کے ہمراہ اس کے گھر میں جمع ہوں۔ ظاہر ہے کہ ان دونوں حالتوں کا فرق بالکل روثن ہے۔

مِنْ مُحِلِّ اَمْدِیدِ ملائکہ اور ارواح کا بیان ہے بعنی ہرامر کے فرشتے ہرامر کی اور ارواح جوکہ قرب و کمال کے ساتھ تعلق رکھتا ہے نازل ہوتے ہیں۔ اگر چہ جن اشخاص پر ان کا نزول ہوتا ہے وہ سب کے سب اس قرب و کمال استعداد نہ رکھتے ہوں اس لیے کہ مقصد مختلف کمالات کی ایک صورت بنانا اور ناتصوں کے نقصان کو پورا کرنا ہے اور جب اس مبارک رات کی عظمت کے بیان سے فراغت ہوئی اس رات کے خواص میں سے ایک اور خاصہ بیان فرمایا جارہا ہے کہ

marfat.com

سکام ہی حتی مطلع الفجر اس رات میں نفس و شیطان کے شر سے سلامتی ہے۔ کیونکہ ان کے شرور کا نیکیوں میں مل جانا زیادہ تر نیکیوں کے رد ہونے کا موجب ہوجاتا ہے تو اس رات میں نور جی کے چینے اور ملا نکہ وارواح کے حاضر ہونے کی وجہ سے نفسانی حوادث اور شیطانی خطرات کا اثر بالکل زائل ہو جاتا ہے اور سورج کے غروب ہونے کے وقت سے لے رجیح صادق کے طلوع ہونے تک برابران آفات سے امن اور اطمینان رہتا ہے۔ بخلاف دوسری راتوں کے کہ ان کی پہلی تہائی میں شیطانوں کا انتشار اور ان کے وقت نے دوسری راتوں کے کہ ان کی پہلی تہائی میں شیطانوں کا انتشار اور ان کے وسوسوں کا ہجوم عبادت گر اروں اور نیکوکاروں کے دل مکدر کہ دیتا ہے انتشار اور ان کے وسوسوں کا ہجوم عبادت گر ارون اور نیکوکاروں ہے دل مکدر کہ دیتا ہے انتشار اور ان میں نماز فرض مقرر کی گئی ہے دوسری تہائی میں نیند کی غفلت کہ کے دان خوامیں اور نفسانی وسوسے اچا کہ آ و مسکتے ہیں اور خیالات عادت سے زیادہ پریشان کن خوامیں اور نفسانی وسوسے اچا کہ آ و مسکتے ہیں اور حاضری اور مناجات کی لذت پانے سے عافل کر دیتے ہیں۔ جبکہ تیسری تہائی جو کہ ان دونوں علتوں سے محفوظ ہے تبید دعا در بار خداوندی میں التجاء اور اللہ تعالی کے حضور مناجات کی طاوت یانے کے لیے مقرر ہے۔

یہاں جانا چاہیے کہ ای امرین علاء کا اختلاف ہے کہ طاکلہ اور ارواح سے تمام طاکلہ اور ارواح مراد بیں جیسا کہ قرآن پاک کے ظاہری الفاظ ای پر دلالت کرتے بیں یا وہ طاکلہ اور ارواح مراد بیں جن کا مقام اور مسکن سدرہ النتہی ہے۔ جیسا کہ بعض احاد بث بیں فرکور ہے۔ بہر حال معزرت جرئیل علیہ السلام کے نزول پر جن کا مقام سدرہ النتہیٰ کا وسط ہے سب کا اتفاق ہے اور جرئیل علیہ السلام کے ہمراہ تمام طاکلہ اور ارواح کا نزول ہوتا ہے اور جرئیل علیہ السلام کے ساتھ حضرت جرئیل علیہ السلام مصافحہ نزول ہوتا ہے اور جرئیل علیہ السلام کے معافحہ کی علامت یہ ہے کہ عبادت بیں معروفیت کی کرتے ہیں اور جرئیل علیہ السلام کے معافحہ کی علامت یہ ہے کہ عبادت بیں معروفیت کی حالت بیں روئی کھوں سے آ نسوگریں حالت بیں روئی کھرے ہو جا کیں ول بیں ایک رفت پیدا ہو آ تھوں سے آ نسوگریں اور اس عبادت بیں انتہائی لذت حاصل ہو۔

شب قدر کے خواص

اس رات کے خواص میں ہے ہے ہے کہ اس میں دعا تولِ ہوتی ہے۔ پس marfat.com

چاہیے کہ اس وقت جامع دعا اختیار کی جائے اور سیح صدیث میں آیا کہ حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہانے رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے بوچھا کہ اگر میں شب قدر پالوں تو کیا دعا کروں؟ فرمایا یہ دعا کرواَللّٰهُمّ اِنّائ عَفُو تُوحِبُ الْعَفُو فَاعْفُ عَنّی نیز صدیث شریف میں وارد ہے کہ من اقام لیلة القدر ایمانا واحتسابا غفرله ماتقدم لین جوش ایمان اور طلب اجر کے لیے حب قدر کونماز اور عبادت کے ساتھ دندور کھاس کے گزشتہ گناہ معاف کرد ہے جاتے ہیں۔

اوربعض علماء نے فرمایا ہے کہ سکلام فی حقی مطلع الفّہ و کامعنی ہے کہ اس رات میں طلائکہ اور ارواح تمام ایمان والوں کوسلام کہتے ہیں اور کاملین کے ساتھ مصافحہ کرتے ہیں۔ پس یہ آیت ان کے نزول کے بعدان کی ملاقات کی کیفیت کا بیان ہے۔

سورة البينه

کی ہے اس کی آٹھ (۸) آیات چورانوے (۹۳) کلمات اور تین سو چھیانوے(۳۹۲)حروف ہیں اورلغت ہیں بیندروشن اور ظاہر چیز کو کہتے ہیں جسے دیکھنے کے بعد کام کی حقیقت واضح ہو جائے اور اس میں کوئی فٹک وشید ندرہے جیسے کسی دعویٰ میں دومعتبر کواہ۔

وجدتشميه

اور اس سورة کو بینداس لیے کہتے ہیں کہ بیاس بات پر دلالت کرتی ہے کہ ہمارے رسول پاک علیہ الصلوة والسلام کا وجود اپنی ذات میں اپنی نبوت پر اس حد تک روشن نشانی ہے کہ کسی دوسری دلیل کی ضرورت بی نبیس اور جوہی آپ کی ذات مقد سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے اطوار احوال افعال اقوال اور اخلاق سے باخبر ہو یقین کے ساتھ جان لیتا ہے کہ اس منم کی ذات پاک بلاشہ تیفیمری کی مسلاحیت رکھتی ہے وہاں جھوٹ اور بہتان کی کوئی مخواکش نہیں۔

marfat.com Marfat.com

تغیر عزیزی مستنب میست (۵۰۲) میست تیسوال ماره

اجمال كي تفصيل

اس اجمال کی تفصیل ہے ہے کہ بیمی کے باوجود کہ آپ کے والداور دادا آپ کی جھوٹی عمر میں گزر گئے۔ اور بھائی بندسب کے سب جہل مرکب میں گرفتار۔ اور انچی عادات اور پسند یدہ اطوار ہے بہت دُور تھے۔ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم حسنِ اخلاق کے کال اور انتہائی اچھی عادات میں پیدا ہوئے۔ اور اُمی ہونے اور کسی کمتب میں نہ بیضے کے باوجود باریک علوم کو واضح طور پر بیان فرماتے۔ اور پوری وضاحت کے ساتھ مجزانہ گفتگو فرماتے تھے۔ اور آپ سے عقل اور مروت کے خلاف بھی بھی کوئی چیز رونما نہ ہوئی۔ مکلی تدبیرات اور جنگ وصلح کی مہمات میں آپ کے نمام امور حکمت کے قواعد کے مطابق جاری رہے تو پڑھانے سے بالکل مبرا ہونے کے باوجود کمالات کے اس مطابق جاری رہے تو پڑھانے سے بالکل مبرا ہونے کے باوجود کمالات کے اس مطابق جاری رہے تو پڑھانے سے بالکل مبرا ہونے کے باوجود کمالات کے اس مرتبے تک پنچنا غیبی المداداور تعلیم اللی الرّ خمانی الرّ جنیم

اس آیت کا خلاصہ یہ ہے کہ ہمارے رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بعثت سے پہلے بلاد عرب میں دوشم کے لوگ ہتے: پہلی شم مشرکین جن میں سے بعض ستاروں کی روحانیات اور آگ کی پوجا کرتے تھے جیسے صالی اور مجوی اور بعض اپنے بروں کی مور تیاں پوجتے تھے۔ قریش اور دوسرے جاہل عرب انہیں بارگاہ خداوندی میں انہائی مقرب بجھتے ہوئے دنیاو آخرت میں وسیلہ گمان کرتے تھے۔

دوسری شم اہل کتاب جو کہ خود کو کتاب البی کا پیروکار جانے تھے' بعض تورات اور زبور کو اپنا پیشوا قرار دیتے تھے اور بعض انجیل کو قصد آمانے تھے اور بیسب فرقے فتیج بدعات' کری رسموں اور غلط عقا کد میں اس قدر منہمک ہو بچکے تھے کہ وعظ ونصیحت اور عقلی دلائل قائم کرنے اور مناسبتیں اور نشانیاں سمجمانے سے بھی اصلاح قبول نہیں کرتے تھے دلائل قائم کرنے اور مناسبتیں اور نشانیاں سمجمانے سے بھی اصلاح قبول نہیں کرتے تھے دلائل قائم کرنے اور مناسبتیں میں ہو جہ ہے ہے ہوں ہوں کہ ہے ہیں اصلاح قبول نہیں کرتے تھے دلائل قائم کرنے اور مناسبتیں اور نشانیاں سمجمانے سے بھی اصلاح قبول نہیں کرتے تھے دلائل قائم کرنے در مدمد

marfat.com Marfat.com

اورسب کہتے تھے کہ ہم اپنے قدیم عادات واطوار اور بموروثی دینوں کوہیں جھوڑیں گے۔ جب تک کہ کوئی واضح دلیل اور غالب معجزہ نہ دیکھ لیں اور آخرالزمان رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جن کی نعمت آسانی کتابوں سے ہم نے تواتر کے ساتھ معلوم کی ہے اور سابقہ انبیاء کیہم السلام سے شنی ہے مبعوث نہ ہو جا کیں۔اور ہمیں ہمارے کام کی حقیقت سے آگاہی نہ بخشیں ہم اپنی روش اور آسکین سے نہیں ہٹیں گے۔

اوران کی بیرحالت ہمارے رسول کریم علیہ السلام کی اُمت کے مختلف فرقوں کی مالت جیسی ہے۔ ایک گروہ خود کوصوفی قرار دے کر بدعات میں معروف ہوگیا ہے۔ ملحدوں اور رندوں نے خود کو تارک و دنیا قرار دے کر حدودِ انسانیت کو خیر باد کہ دیا ہے۔ ایک جماعت خود عبیدان اہل بیت کہہ کرعقا کہ باطلہ میں گرفتار ہے اور بعض خود کو علاء کے ایک جماعت خود عبیدان اہل بیت کہہ کرعقا کہ باطلہ میں گرفتار ہے اور بعض خود کو علاء کے زمرے میں سمجھتے ہوئے مگرو فریب کے ساتھ شری حیلے نکالتے ہیں اور طبع و نیا کے لیے اصول کے خلاف نادر اور عجیب روایات لوگوں کے سامنے بیان کرتے ہیں اور ان تمام گروہوں کو عقل اور نوتی دلائل کے ساتھ جتنا ہمی سمجھایا جائے کہ حضور صلی الشعلیہ وآلہ وسلم کی سیدھی راہ پر قائم ہوں اور اپنی موروثی بدعات چھوڑ دیں بالکل ممکن نہیں ہے۔ تمام وعظ وقعیحت کے مقابلے میں ان گمراہ فرقوں کا جواب بھی ایک حرف ہے کہ ہم اپنی اس برانی روش اور آئین کوروش دلیل دیکھے اور مہدی علیہ السلام کے ظہور اور ان کے تسلی بخش بیان کے بغیر نہیں چھوڑ میں گے۔

پی حضور سلی الله علیه وآله وسلم کی بعثت شریفه سے پہلے جہان میں ای قسم کی حالت تھی۔ عکمت الله علیہ وقائد وسلم کی بعثت شریفه سے پہلے جہان میں ای قسم کی حالت تھی۔ حکمت الله نے تقاضا فرمایا کہ ایک رسول علیه السلام آئیں جو کہ خود بھی روش ولیل ہوں اور ان کا تسلی بخش بیان جہالت کی بیماری سے سب کو نجات بخشے۔ چنانچہ ان کے متعلق بیان فرمایا جارہا ہے:

دَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَّهَدَةً فِيْهَا كُتُبُ قَيِّمَةٌ لِعِنْ وه رسول تَشْرِيف لِيَّهَا كُتُبُ قَيِمَةٌ لِعِنْ وه رسول تشريف لائة جو بإك صحائف كى تلاوت فر مائة جن مِن مضبوط كمّا بين درج ہوں۔ اجمال كى تفصيل

اوراس اجمال کی تفصیل ہیہے کہ ارشاد ونصیحت میں تین چیزوں کا مرتبہ نہایت marfat.com

اونچا ہے۔ پہلی چیز الی شخصیت جے خدا تعالی نے بھیجا ہواور مجزات اور کمالات کے اجتماع کی روسے اس کی رسالت اللہ تعالی کی طرف سے یقینی ہو۔ اور بیمعنی حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں بوجہ اتم پایا جاتا تھا اس لیے کہ آپ میں رسالت کی شرائط اور اُمی ہونے علیہ وآلہ وسلم میں بوجہ اتم پایا جاتا تھا اس لیے کہ آپ میں رسالت کی شرائط اور اُمی ہونے کے باوجود انسانی کمالات کے انتہائی درجات تک پہنچنا محسوس کیا اور دیکھا جاتا تھا۔

دوسری چیز غیب سے اُتاری گئی کتاب جس پراعجاز کے انوار چیکتے ہوں طاف ذہن رکھنے والوں کواس کی تلاوت میں برکات اور انوار محسوس ہوں اور بے ہودگی جموث اور تناقض سے جو کہ کلام میں عیب ہیں پاک اور مبرا ہو۔ اور یہ معنی قرآن ہید کے دربار میں جس کی اُمی ہونے کے باوجود ہمارے رسول کریم علیہ السلام تلاوت فرماتے تھے ظاہر اور روثن تھا۔

تیری چزوہ کتاب جس جی کہلی کتابیں درج ہوں اور مضابین کو جن کا سچا ہوتا کتاب کی مختر عبارات جی لیٹے ہوئے ہوں اور اس معنی اور مضابین کو جن کا سچا ہوتا معلوم ہے واضح بیانات کے ساتھ ذہن نشین عبارت جی ادا کیا جائے اور یہ بات بھی قرآن پاک جی پورے طور پرموجود ہے بلکہ اس جی اگلوں پچھلوں کے تمام علوم کا نچو مراحنا یا اشار تا موجود ہے۔ ای لیے اس کلام پاک کے زول کے آغاز سے لے کراس وقت تک باراں سو (۱۲۰۰) سال سے زیادہ کا عرصہ گزر چکا ہے (جب کہ اس وقت بندرہویں صدی شروع ہے) مختف فنون کے ماہر علائے کرام اس کی عبارات کے معنوں بندرہویں صدی شروع ہے) مختف فنون کے ماہر علائے کرام اس کی عبارات کے معنوں بندرہویں ورک کوشش سے گلے ہوئے ہیں اور اسٹے حوصلہ اور استعداد کے مطابق اس جی سے پوشیدہ اسرار نکال رہے ہیں اور کیا ہی خوب کہا گیا ہے کہ و کل العلم فی القو آن پوشیدہ اسرار نکال رہے ہیں اور کیا ہی خوب کہا گیا ہے کہ و کل العلم فی القو آن کے اور اک شکون کے فیم قاصر ہیں۔

اور جب بیر تینوں چیزیں ایک جگہ جمع ہوجا کیں تو ارشاد و ہدایت کا اعلیٰ مرتبہ حاصل ہوجاتا ہے۔ اور چاہیے تھا کہ تمام مختلف گروہ ایسے رسول علیہ السلام کی بعثت اور ایسی بارکت کلام کے نزول کے بعدا پی روش اور آ کین چھوڑ کر پوری کی جہتی کے ساتھ ایسی بابرکت کلام کے نزول کے بعدا پی روش اور آ کین چھوڑ کر پوری کی جہتی کے ساتھ Marfat.com

اس دین کی پیروی اختیار کرتے اور کسی وجہ سے بھی اختلاف اور جدا جدا ہونے کے روا دار نہ ہوتے لیکن نفس اور شیطان کے غلبے کی وجہ سے پھر فرقہ بندی اور اختلاف کے اس مرض میں گرفتار ہو گئے ہیں۔ چنانچہ فر مایا جار ہاہے:

اوراس آیت کا مقصد یہ ہے پیغیرعلیہ السلام کی تشریف آوری اور کتاب الہی کا نزول اللہ تعالی کے اراد نے اور ہوایت کے اسباب کی تو فیق کے بغیر اصلاح وارشاد میں کافی نہیں۔ چاہیے یہ تھا کہ اس راستے کو ہدایت کے مستقل اسباب سے گمان نہ کرتے۔ اس لیے محققین نے فرمایا ہے کہ قرآن پاک اور رسول علیہ السلام ایک اچھی غذا کی طرح ہیں جو کہ صحت مند بدن میں قوت کے کمال اور طبعی جیوانی اور نفسانی افعال کے عمرہ ہونے کا موجب ہوتی ہے جبکہ بیارجہم میں وہی غذا بالکل ای طرح مرض کے سبب اور عوارض کی شدت کے زیادہ ہونے کا باعث ہوتی ہے۔ پس پہلے روح کے مزاح کو درست کرنے کی شدت کے زیادہ ہونے کا باعث ہوتی ہے۔ پس پہلے روح کے مزاح کو درست کرنے کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی مسلم کا مقت کے تابعت کی مسلم کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی مسلم کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی کوشش کرنا چاہیے اور تعصب کی اظل خاسرہ 'جہالت کی رسموں اور خیالات کی کوشش کرنا چاہیا ہوں کی کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہیا ہوں کی کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہید کو کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہیں کی کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہید کوشش کرنا چاہید کی دو کوشش کرنا چاہید کی کوشش کی کوشش کرنا چاہید کو کسٹ کرنا چاہید کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہید کی دو کرنا ہونے کی کوشش کرنا چاہید کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا ہونے کی کوشش کرنا ہونے کی کوشش کرنا ہونے کی کوشش کرنا چاہید کی کوشش کرنا ہونے کی کوشش

پابند یوں سے بحقیہ کرنا چاہیے اس کے بعد اس اچھی غذا کے ساتھ قوت دینا چاہیے۔ (
اقول وہاللہ التوفیق۔ تعیر مقصد میں ابہام ہے اس لیے کہ ان الفاظ سے تو یوں معلوم ہوتا
ہے کہ کفار پہلے اپنی روح کے مزاح کو درست کرنے کی کوشش کریں۔ اخلاط فاسدہ بہالت کی رسمول اور اس کے خیالات کی پابند یوں سے بحقیہ کریں پھررسول علیہ السلام اور کتاب سے آئیس ہدایت ملے گی۔ سوال یہ ہے کہ جب کفار خود بخو داپنی شخیص اور اصلاح کرلیں تو پھر کسی علاج کی ضرورت ہی کیارہ گئے۔ اصل بات یہ ہے کہ رسول کریم علیہ السلام اور کتاب الہی کی بدولت ہی ان کی اصلاح اور شقیہ ہوگا اور اللہ تعالیٰ کی توفیق ہے بھی بہی اور کتاب الہی کی بدولت ہی ان کی اصلاح اور شقیہ ہوگا اور اللہ تعالیٰ کی توفیق ہوگا ہوات ہی بالہ کی بدولت ہی المباب ہدایت ہیں۔ یودؤوں تعییں صرف غذائے صالح ہی ٹیس ہیں بلکہ ان کی بدولت ہی کفر کی بیاری کی جزئیش ہے پھر ان کی تعلیمات پڑئی پیرا ہونے سے روح کو تقویت اور بالیدگی نصیب ہوتی ہے قال اللہ تعالیٰ قد آفلت من ترکی نی بروا کامیاب ہوا اور پاک وہی ہوگا جے رسول علیہ السلام پاک فرما کی آگر بیاری لینی کفر کی ہوئی خفر المی نفید وگا۔ یو بالماح نہیں کریں گوتو ترکیہ کیے منعقد ہوگا۔ یا نفید و تد ہد و محوظ الحق نفیل کو تد ہوں میں محتوظ المی غفرلہ)

اوراس احمال کی مجمی مخبائش ہے کہ اس آیت میں اس فرقہ اور اختلاف کو بیان کرنامقصود ہوجو ہمارے رسول کریم علیہ السلام کی بعثت کے بعدرونما ہوا۔ یہود ونصاری ایک گروہ حضورعلیہ الصلوۃ والسلام کے انکار اور آپ کی پیروی کرنے والوں کے ساتھ لڑنے اور جنگ کرنے کے انکار اور آپ کی پیروی کرنے والوں کے ساتھ لڑنے اور جنگ کرنے کے انکھ کھڑ اہوا جبکہ دوسرے گروہ نے پیروی کی راہ اختیار کی اور حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے دین کی اعداد اپنا اخیازی نشان قرار دیا۔

اوراس سورة میں اہل کتاب کے تفرقہ پر اکتفاء کرنا اورمشرکین کے اختلاف سے سکوت اختیا اور مشرکین کے اختلاف سے سکوت اختیار کرنا اس بناء پر ہے کہ بید کام اہل کتاب سے بہت بعید اور بجیب معلوم ہوتا ہے جو کہ خود کو عالم اور دانا کہتے تھے اور انبیاء کیم السلام کی عادات واطوار اور کتب الہی کی شان سے خوب واقف اور آشنا تھے۔ بخلاف مشرکین کے وہ ان چیزوں سے آگاہ ہیں

شخاختلان کریں تو دُورنہیں۔ marfat.com

اور جب یہ ماجرا تفصیل کے ساتھ بیان ہو چکا یہاں ایک شبہ کے گمان کی سخوائش تھی اسے بھی دُور فرما دیا گیا۔ اس شبہ کا بیان یہ ہے کہ اگر چہ واضح معجزات اور روشن علامت کی شخصیت کی حقانیت پر گواہی دیں لیکن جب وہ گزشتہ شریعتوں کے خلاف امرو نہی کرے جن پر انبیاء کیہم السلام کا اجماع ہو چکا ہے اور ان شریعتوں کو دگرگوں کر دیتو اس کا قول قبول کرنا جائز نہ ہوگا' ان تمام مجزات اور علامات کو دنیوی خوش نصیبی یا ایک انفاق یا ایک خلاف عادت چیز پر معمول کرنا جا ہے اور اس کواس آیت میں دُور فرمایا گیا ہے کہ

وَمَا أُمِرُوْا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُعْلِمِيْنَ لَهُ الدِّيْنُ حُنَفَآءَ وَيُوقِيْهُوا الضَّلُوةَ وَيُؤْتُواالذَّكُوةَ وَذَٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةُ اوراس رسول عليه السلام كى شريعت مِس البيس حَمْنِيس ديا كيا ہے كر الله تعالى كے ليے دين كو خالص كرتے ہوئ اس كى عبادت كرنے كا تو وہ مرخصوصیت اور كيفيت جو كه رسول عليه السلام عبادات ميں بيان فرمات ميں اگر چه سابقه شريعتوں ميں وه خصوصيت اور كيفيت نه ہو سب الله سبحانه و تعالى تك بين اگر چه سابقه شريعتوں ميں وه خصوصيت اور كيفيت نه ہو سب الله سبحانه و تعالى تك بيني كي مقصد كى تمبيد ہے اور اخلاص كى تاكيد اور ذات مِن ہے بردہ أنها نا ہے۔ نيز تاكه عناء مول خليف وہ خص ہے تو غير خداكى طرف سے توجه بالكر اور ہر چيز سے كث كر خدا تعالى كى طرف مائل ہو۔ نيز وہ نماز قائم كريں اور ذكوة ديں اگر چه نماز اور ذكوة كى كيفيت تعالى كى طرف مائل ہو۔ نيز وہ نماز قائم كريں اور ذكوة ديں اگر چه نماز اور ذكوة كى كيفيت مختف ہوئي، دين قيم ہے جس كى شرح اور وضاحت كرتے ہوئے حضرت آدم عليه السلام ورتب كے وقت سے لے كر آج تك سابقه انبياء عليم السلام اور بہلے حكماء اور علماء تشريف لے كے وقت سے لے كر آج تك سابقه انبياء عليم السلام اور بہلے حكماء اور علماء تشريف لے

اور اس شبہ کے رد کا خلاصہ یہ ہے کہ اس شریعت کے بنیادی مقاصد پہلی شریعت کے بنیادی مقاصد پہلی شریعت کے ساتھ پوری مطابقت رکھتے ہیں۔ اگر چہ وقت اور حال کے تقاضے کی وجہ سے خصوصیات اور کیفیات میں پھوفرق ہوگیا ہو۔اور بنیادی مقاصد کا ایک دوسرے، کے مطابق ہونا کا فی ہے۔ چنا نچہ برفن اور ہرصنعت میں ای طرح واقع ہے۔ مثلا طب یونانی بقراط اور جالینوس کے زمانے سے لے کر بوعلی بینا اور محمد بن ذکریا اور سے کے دور تک ایک سے مطابق میں ای مطابق کے دور تک ایک سے مطابق میں ای مطابق کے دور تک ایک سے مطابق میں ای مطابق کے دور تک ایک سے مطابق کی سے دور تک ایک سے مطابق کی دور تک ایک سے دور تک ایک سے دور تک ایک سے مطابق کی دور تک ایک سے دور تک ایک سے دور تک سے دور تک سے دور تک ایک سے دور تک سے

نج پر ہاں طرح کہ یونانی طبیبوں کے اصول مقصودہ ہر زمانے میں محفوظ ہیں اور ان میں کوئی تید یلی نہیں ہے۔ چنا نچہ سب کہتے ہیں کہ خلط کے پکنے کے بعد مسہل دینا چاہیے بران کے دن تحریک نہیں کرنا چاہیے۔ بیاری کواس کی ضد کے ساتھ وُور کرنا چاہیوں بران کے دن تحریک ہیں کہ شاہد کے ساتھ دھا تھے۔ وغیرہ ذالك تو جو تحض پچھلے طبیبوں کی کتابیں ملاحظہ کر سے اور ان کے اصول مقاصد کو متقد مین کے اصول کے مطابق جانے تو یقین کے ساتھ ان کی طبابت کا سراغ لگا لے کہ وہ زائد خصوصیات اور کیفیات جو کہ متقد مین کے ساتھ ان کی طبابت کا سراغ لگا لے کہ وہ زائد خصوصیات اور کیفیات جو کہ متقد مین سے کی قدر مختلف ہیں ان کی کتابوں میں معلوم کر لے بلکہ صحیح خور و فکر سے کام خفرین کی رعایت جو ان خصوصیتوں میں واقع ہوئی ملاحظہ کر بے تو متا خرین کی نصیلت کا قائل ہو جائے اور اس حقیقت کا یقین کر لے کہ الصناعات خرین کی فضیلت کا قائل ہو جائے اور اس حقیقت کا یقین کر لے کہ الصناعات تنکامل بتلاحق الانکار یعنی غور و فکر کے ساتھ ہنرکائل ہوتے ہیں۔

اور جب اللي كتاب كے اختلاف كرنے والوں كا حال بيان كيا جا چكا اب الله تعالىٰ بيان كيا جا چكا اب الله تعالىٰ كے دربار ميں مرتبے كے اعتبار سے جوكہ تواب اور عذاب كامستحق ہے دونوں مروبوں كى تفصيل بيان فرمائى جارہى ہے۔

اِنَّ اللَّهُ إِنَّ كَفَرُوا مِنْ أَهُلُ الْبِكِتَٰبِ وَالْمُشْرِ كِنْنَ تَحْقِقَ وَوَلُوكَ جَوَكُوالْلِ كَتَابِ مِن سَهِ كَافْرِ مِو كُمُنَا وَرَمْشُركِينَ أَخْرَت كَيْمَ مِن شُريك بِن اور اللِ كَتَاب كَى نَصْيلت بُرْرگی اور ان كی دانائی بہال كمی كام نہیں آتی اس لیے كہ سب كے سب

فی نار جَهَنَّمَ خَالِدِیْنَ فِیْهَا جُہُم کی آگ میں ہیں دراں حال کہ اس میں ہیں مراں حال کہ اس میں ہیں دران حال کہ اس میں ہیں۔ اگر بیلوگ کہیں کہ آخر ہم انسانوں کے گروہ میں سے ہیں اور انسان بہترین مخلوق ہے۔ دوسری مخلوقات کو دنیا و آخرت میں دائی عذاب نہیں ہے تو ہمیں کیوں ہوگا؟ جواب میں فرمایا جارہا ہے:

اُوْلِیَّكَ هُدُ شَرُ الْبَرِیَّهُ وہ لوگ بدترین مخلوق ہیں۔ اس لیے کہ جب انہوں نے تھم الٰبی کا انکار کیا اور اس کے انبیاء لیہم السلام کے مشر ہو گئے تو انہوں نے اپنی نفس کی خواہش کو تھم الٰبی پرترجے دی اوریہ قباحت دوسری مخلوقات میں نہیں ہے اس لیے سورہ کی خواہش کو تھم الٰبی پرترجے دی اوریہ قباحت دوسری مخلوقات میں نہیں ہے اس لیے سورہ کی خواہش کو تھم الٰبی پرترجے دی اوریہ قباحت دوسری مخلوقات میں نہیں ہے اس لیے سورہ کے سورہ کی خواہش کو تھم الٰبی پرترجے دی اوریہ قباحت دوسری مخلوقات میں نہیں ہے اس کے سورہ کی خواہش کو تھم الٰبی پرترجے دی اوریہ قباحت دوسری مخلوقات میں نہیں ہے اس کے سورہ کی خواہش کو تھم الٰبی پرترجے دی اوریہ قباحت دوسری مخلوقات میں نہیں ہے اس کے سورہ کی خواہش کو تھم الٰبی پرترجے دی اوریہ قباحت دوسری مخلوقات میں نہیں ہے اس کے سورہ کی خواہش کی خواہش کو تھی الٰبی کی خواہش کی کی خواہش کی خ

فرقان مِن فرمايا كياب كم أوليَّك كَالْأَنْعَام بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا

إِنَّ الَّذِيْنَ الْمَنُوا وَعَمِلُواالصَّالِحَاتِ تَحْقِيلَ وه لُوك جوتمام انبياء سميت اسے وقت کے نی پرایمان لائے۔ اور انہوں نے اجھے اعمال کیے۔ اولینک کھٹر خیر البَريَّةُ وه لوگ بہترين مخلوق بين اس ليے كه انہوں نے فرشتوں سے بھى ترقى كرلى اور ہر دور میں خدائی حکمتوں کو سمجھا' خواہش تفس کی تھینچا تانی کے باوجود حکم الہی کواس پر ترجیح دی اور وہم کی مخالفت کے باوجور اس پر عقل کو غالب کیا۔ تا کہ درمیان میں شکوک و شبہات حاکل نہ ہوں اور رمعنی فرشتوں میں نہیں ہے۔ وہ جزوی احکام کومعلوم کرتے ہیں ' وہم اور تفس نہیں رکھتے تا کہان کے عقائد اور اعمال میں مزاحمت واقع ہولیکن بیمسئلہ عام فرشتوں کی نسبت سے ہے۔ رہے خواص ملائکہ جے حضرت جبرئیل اور حضرت میکائیل علیم السلام تو ان کا مرتبہ انتہائی بلند ہے انہیں حکمتِ اللی کے اسرار کے ساتھ لامتناہی عوالم میں کمال اختیار کرنا حاصل ہے۔ کامل عرفان رکھتے ہیں اوران میں وہم اور نفس کا نہ ہونا اگر چہ بظاہران کے ثواب میں کمی کا باعث معلوم ہوتا ہے لیکن چونکہ کم کرنے والے بی آ دم کا نواب ان کے فیوض کا ایک شعبہ ہے اس مرتبے کے برابرنہیں ہوسکتا۔مولانا حافظ عمادالدين تنعى رحمته الله عليه كے عقائد ميں واقع ہے كه بني آدم كے خواص جو كه انبياء علیم السلام بین تمام فرشتول سے افضل ہے اور بنی آ دم کے عوام جو کہ اولیاء اور زام لوگ بین عوام ملائکہ سے افضل بیں خواص ملائکہ بنی آ دم کےعوام سے افضل ہیں۔وہ جو حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عندے منقول ہے کہ الہؤمن اکومر علی الله من بعض الملائكه الذين عنده ليخي مومن الله تعالى كے دربار ميں اس كے حضور موجود بعض فرشتوں سے زیادہ معزز ہےتو خواص ملائکہ کے علاوہ برمحول ہے۔

جَزَآءُ هُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدُنِ ان کی جزا ان کے بروردگار کے خدور کے باغات بیں۔اس لیے انہوں نے مختف اطوار اور مختلف شریعتوں میں جن سجانہ و تعالیٰ کے تھم اوراس کی حکمت کالحاظ کرنے پر ہمیشہ قائم رہنا اختیار کیا۔
میں جن سجانہ و تعالیٰ کے تھم اوراس کی حکمت کالحاظ کرنے پر ہمیشہ قائم رہنا اختیار کیا۔
میں جن میں تن تنحیقا الْاَنْقارُ ان باغات کے نیچے سے نہریں جاری ہوں گی میں میں جاری ہوں گی میں میں جاری ہوں گی میں میں جاری ہوں گ

اس کیے کہ انہوں نے آپ معارف اور حقائق سے اپنے اعضاء میں اعمال کی نہریں جاری کی نہریں جاری کی نہریں جاری کی نہری جاری کی اور دوں اور پیروی کرنے جاری کیں اور ان اعمال کے انوار ان کے سلسلوں اور ان کی اولا دوں اور پیروی کرنے والوں میں جاری رہے۔

خَالِدِیْنَ فِیْهَا اَبَدُّ ان پیشتوں میں ابدالاً بادتک ہمیشہ رہیں گے۔ اس لیے کہ حق پر ابدالاً بادتک ہمیشہ رہیں گے۔ اس لیے کہ حق پر ابدالاً بادتک قائم رہنے کی نیت ان کے دِلوں میں گھر کیے ہوئے تھی کو انہوں نے تھوڑی سی عمریائی۔

دَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُوْ ان سے اللّٰه تعالیٰ راضی ہو گیا اس لیے کہ انہوں نے کی طور اور کسی شان میں بھی اس کا انکار نہ کیا۔ وَدَضُوْ اعَنْهُ اور وہ بھی اس سے رامنی ہو گئے اس لیے کہ انہوں نے مختلف شریعتوں پر ایمان لانے کی وجہ سے ان سب کا ثواب پایا اور انہیں وہ لذت نعیب ہوئی جو کہ ہر شریعت کے انوار میں تھی اور ان کی طبیعت کا پیانہ کہ ہو کہ ہر شریعت کے انوار میں تھی اور ان کی طبیعت کا پیانہ کہ ہو کہ ہر شریعت کے انوار میں تھی اور ان کی طبیعت کا پیانہ کہ ہو کہ ہر شریعت کے انوار میں تھی اور ان کی طبیعت کا پیانہ کہ ہو کہ ہر شریعت کے انوار میں تھی اور ان کی طبیعت کا پیانہ کی میں اور طلب کی مخوائش ندر ہیں۔

ذَالِكَ لِمَنْ خَوْمَى رَبَّهُ به واضح بیان اس كے لیے ہے جو كه اپنے پروردگار سے ڈرے اوركى طور بس بھى اس كى حكمت اور شان كا انكار نه كرے اور اللہ تعالى كے حكم كوخوف كى وجہ سے نفس كى خوا بش اور رسم كى يابندى پراة ليت دے۔

اور اس می کفار کا حال بیان کرتے وقت ان کی جزا کو پہلے بیان فرمایا۔
بعدازال فرمایا اُولِیْكَ هُو هُو البَرِیّه بہال ایمان والوں کو جزا پراکتفاو فرمایا گیا۔اور
کفار کی جزا کواس وجہ سے بیان نہیں فرمایا کہ عقل مند کے لیے شرالبریہ کے لفظ سے ان
کے حال کا انجام واضح ہو جاتا ہے۔ نیز ضد ہونے کی وجہ سے ایمان والوں کی جزا کے
بیان سے ان کی جزا کی تفصیل کا سراغ ملتا ہے۔ اور عقل مند کے لیے اشارہ کافی ہے
اوراس کے بعد فرمایا گیا اُولِیْكَ هُو هُو البَرِیّه اور ایمان والوں کا حال بیان کرنے میں
اوراس کے بعد فرمایا گیا اُولِیْكَ هُو هُو البَرِیّه اور ایمان والوں کا حال بیان کرنے میں
بہا اُولِیْکَ هُو هُو البَریّة فرمایا گیا ہے اس کے بعد جزا کا ذکر کیا گیا اور اس انداز کو
بہا اُولِیْکَ هُو هُو البَریّة فرمایا گیا ہے اس کے بعد شرالبریکا منصب حاصل ہوا
بہانے میں نکت یہ ہے کہ کفارکوان کی جزائے بد لیے کے بعد شرالبریکا منصب حاصل ہوا
ور نہ وہ دنیا میں انہوں نے بیشتر مخلوقات سے زیادہ خوش گوار زندگی بسر کی ہے جبکہ ایمان

marfat.com
Marfat.com

والوں نے معرفت کا درواز ہ کھلنے اور ایٹھے اعمال کے ساتھ نفس آ راستہ کرنے کے ساتھ ہی خیریت کا مرتبہ حاصل کیا ہے اور انہیں نہ کورہ جزا کا ملنا خیریت کے شعبوں میں سے ایک شعبہ ہے۔

نیزیہاں شہوارد ہوتا ہے کہ اس تفضیل کی اضافت تقاضا کرتی ہے کہ مضاف الیہ میں اصل صفت کا کوئی حصہ ہوتا ہے۔ گواس تفضیل کے ساتھ موصوف اس سے زائد ہوتا ہے یہاں ایمان والوں کو مخلوقات سے بہتر فرمایا گیا ہے۔ چاہیے کہ تمام مخلوقات میں کچھ نہ کچھ بہتری ہو۔ حالانکہ کفار اور شیاطین نے بہتری کا منہ بالکل نہیں دیکھا ہے۔ اس شبر کا جواب ہیہ کہ یہ تقاضا اس وقت ہوتا ہے جب اسم تفضیل کی اضافت مضاف الیہ پر زیادتی کے لیے ہو جبکہ یہاں مطلق زیادتی مراد ہے اضافت مرف وضاحت کرنے کے لیے ہو جبکہ یہاں مطلق زیادتی مراد ہے اضافت مرف وضاحت کرنے کے لیے ہو جبکہ یہاں مطلق زیادتی مراد ہے اضافت مرف وضاحت کرنے کے لیے ہو جبکہ یہاں مطلق زیادتی مراد ہے اضافت مرف وضاحت کرنے الیہ میں اصل صفت کا پایا جانا درکار نہیں ہے۔ واللہ علی اصل صفت کا پایا جانا درکار نہیں ہے۔ واللہ علی اصل صفت کا پایا جانا درکار نہیں ہے۔ واللہ علی اصل صفت کا پایا جانا درکار نہیں ہے۔ واللہ علی

سوره زلزلت

کی ہے اس کی آٹھ (۸) آیات تربین (۵۳) کلمات اور ایک سو انجاس (۱۲۹) حروف ہیں اس سورة کا نزول منکرین قیامت کے جواب میں ہے جو کہ پوچستے کے قیامت کر چی تھی کہ یہ سورة کے کہ چیر رات گزر چی تھی کہ یہ سورة اگری حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے منح نہ ہونے دی اس وقت باہر تشریف لائے اور لوگوں کو تبلیخ فرمائی۔

اوراس سورة میں ایک آبت ہے گویا تمام قرآن پاک کا خلاصہ اور تمام احکام شریعت کی جامع ہے وہ اس سورة کی آخری آبت ہے جو کہ ہرا چھے کرے مل کی جزا پر دلالت کرتی ہے۔ حدیث میح میں ہے کہ بیسورة قرآن پاک کی چوتھائی کے برابر ہے۔ وجہ تسمیہ اور قیامت کے زلزلہ کے اسباب

اوراس مورة كومورؤ زلزلت اس ليے كہتے ہیں كہ تیامت كے دن ایک بہت

marfat.com

Marfat.com

بڑے ذائر لے کے رونما ہونے پر دلالت کرتی ہے۔ اس زائر لے کا سبب تین چیزیں ہیں۔
پہلی چیز بخل اللی کی عظمت جو کہ زمین پر واقع ہوگی اور اس پر اللہ تعالی کے نور کا چیکنا ہے۔
اور اس بخلی کی وجہ سے زمین کے اجزاء دگر گوں ہوجا کیں گے۔ جس طرح کہ اس کا نمونہ
کو وطور پر واقع ہوا۔ قال اللّٰهُ تَعَالَی دَاَشْرَقَتِ الْاَدْضُ بِنُوْرِ دَبِّهَا نیز فرمایا فَلَمَا
تَجَلّٰی دَبُنُهُ لِلْبَحِبَل جَعَلَهُ دَکُما

دوسری چیز مردول کو اُٹھانے کی صورت میں نافر مانوں پر غضب الہی کا جوش مارنا اور شان انقام کا ظہور فر مانا 'میہ مقصد زمین کو جنبش دینے اور اسے اُلٹ ملیٹ کرنے کے بغیر پورانہیں ہوتا تا کہ ہرمر ذے کے اجزاء جدا جدا معلوم ہوں۔

تیسری چیز دوسری مرتبہ صور پھونکنے کی سخت آ واز جو کہ ہوا ہیں شدید اہریں پیدا ہونے اس ہوائے پوری شدت کے ساتھ زمین کے مسام اور سوراخوں میں داخل ہونے ادراس کی وجہ سے زلزلہ پیدا ہونے کا موجب ہو۔ چونکہ بیزلزلہ حشر کے دن کے واقعات میں سے ایک عظیم واقعہ ہے۔ جزا کے کاروبار کا ابتدائیہ ہے۔ اس لیے اس سورۃ کوای نام سے یاد کیا گیا ہے۔

بسم اللدالرحن الرحيم

اِذَا ذُلْذِلَتِ الْاَدُضُ ذِلْزَ الْهَا جَبَدَدِ مِن كُو بِلا يا جائے ايما بلانا جوكما كر فين كے ليے مكن ہے يعنى زمين كوجنبش وين ميں پورا مبالغہ ہو۔ زمين كى طاقت جتنا برواشت كرے ليے مكن ہے بلايا جائے اور زمين بركوئى عمارت اوركوئى بہاڑ باقی شرہ بے بلندياں اور بستياں برابر ہو جا كيں زمين كى شكل بدل جائے۔ يه واقعہ ووسرى وفعه صور بھو تكنے كے وقت ہوگا۔

وَآخُدَ جَتِ الْأَدْضُ آثُقَالَهَا اور زمین این بھاری ہو جھ نکال دے۔ لیمی زمین کے اندرمردے خزائے غلے نئے اور کا نمیں جو پچھے ہے سب باہر پھینک دے مردوں کے باہر آنے کی وجہ سے ارواح کو زمین کے باطن کے ساتھ جوتعلق تھا جو کہ ان ارواح کے جسموں کی قرارگاہ تھا منقطع ہو جائے۔

marfat.com Marfat.com

وَقَالَ الْإِنْسَانُ اور آوی کے بینی آدمیوں کی رومیں کہیں یا اس زلزلے کے نشانات دیکھ کرآدی کیے مالکھا اس زمین کو کیا ہو حمیا ہے۔

یو میند تعمیر کے اور بے میں اپنی خبار کھا اس دن زلالے کی شدت کمال بیتا ہی اور بے قراری کے باوجود زمین اپنی خبریں بتائے۔ بینی بنی آ دم کے اعمال کوظا ہر کرے اور کیے کہ فلاس نے جمعے پرنماز گزاری روز ورکھا نیک کام کیے اور فلاس نے ناحق قبل کیا بدکاری کی اور چوری کی اور زمین کا با تیس کرنا دو حکمتوں کے لیے ہے۔ ب

ی بہی حکمت ہے کہ لوگوں پر گواہ ہوتا کہ انہیں انکار کی گنجائش نہ رہے اس لیے اس دن آسان دن رات ستار نے اور لوگوں کے ہاتھ پاؤں گوائی دیں سے اجھے کرے کاموں کو ظاہر کریں ہے۔

دوسری حکمت میر که بدکارلوگ زمین کے بولنے کی وجہ سے ذلیل ورسوا ہوں اور نیک لوگوں کی مفت وتعریف ٹابت ہو۔

جمادات کی کوائی کے متعلق شبداوراس کا جواب

اور یہال بعض اوگوں کے ول میں شہر گزرتا ہے کہ زمین بے جان غیر ذی عقل ہے گوائی کیے دے گی اور باتیں کیے کرے گی؟ اس شہد کا تحقیقی جواب ہے ہے کہ علوقات میں ہے ہر چیز ایک روح رکھتی ہے لیکن حیوانات کی ارواح اپنے جسموں میں قدیر اور تصرف کرنے کا تعلق بھی رکھتی ہیں۔ اور خوراک دیے نشونما کرنے اور احساس اور حرکت دیے میں ہمیشہ مشغول این۔ جبکہ دوسری مخلوقات کی روعیں تد ہر اور تصرف کا تعلق نہیں رکھتیں اور ان میں احساس اور حرکت اختیاری دائی نہیں ہے۔ اس وجہ اس وجہ ال وجہ سے ان ارواح کا تعلق عوام کی نظروں سے اوجھل رہتا ہے۔ اس کے باوجود خرق عادات کے طور کر ہمی بھی اس کا ظہور ہوتا ہے۔ چنانچ احاد یک سے میں یہ معنی تو انر کے ساتھ تا بت ہے۔ پہر موں اور درخوں کا باتیں کرنا ستون حنانہ کا نفر و مارنا اور ایک پہاڑ کا دوسرے کوآ دان دیا کہ ھل مربك احد بذکر اللہ یعنی کیا آج تھے پر اللہ تعالی کا ذکر کرنے والا کوئی

تررا؟ای مے ہے۔ marfat.com Marfat.com ہستی کوہ است مخفی از خرد ہستی بیوں خرد کے بے برد

لینی پہاڑ کا وجودعقل سے پوشیدہ ہےتو بے کیف ذات حق کا سراغ عقل کیے

لگاسکتی ہے۔

. بادرابے چیم اگر بنیش نه داد فرق چول می کرد اندر قوم عاد اگرآ نکھ کے بغیر ہواکو بینائی نه دی می ہوتی تو قوم عاد کے درمیان فرق کیے کرتی؟ آتش نمرود راگر چیم نیست باخلیلش چول ترجم کردایست اگر نمرود کی آگ میں نہیں بیں تو اس کے خلیل علیہ السلام پر اس نے ا

كيے دخم كيا۔

محرنبودے نیل را آل نورید ازچہ کافررازمومن برگزید اگر دریائے نیل کو بینائی کا نور حاصل نہتھا تو اس نے کافر کومومن سے کیسے جدا

كرليار

نه کوه وسک بادیدارشد پی جرا داؤد را ادیارشد marfat.com تغیر عزیزی ______ (۱۹۵) ______ تیسوال پاره

اگر پہاڑ اور پھروں میں و بکھنے کی طاقت نہتی تو وہ حضرت داؤد علیہ السلام کے دوست کیسے بن مجئے۔

ایں زمیں راگر نبود ہے چشم جال
ازچہ قاروں رافرہ خورد آنچناں
اگرزمین کی باطنی نگاہ نہ ہوتی تو قارون کواس طرح کیے نگل جاتی۔
اگرزمین کی باطنی نگاہ نہ ہوتی تو تارون کواس طرح کیے نگل جاتی۔
مرنبود ہے چشم دل حنانہ را
چوں بدیدی ہجرآ ں فرزانہ را
اگرستونِ حنانہ کی قابی نگاہ نہ ہوتی تو حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی جدائی کا پہتے

کیے چاتا۔

در قیامت این زمین در نیک و بد که زمال دیده محوای بادید

قیامت کے دن بیز مین اچھے کرے اعمال دیکھنے کے اوقات کی گواہی دے گی۔ اور جب بیربیان فر مایا گیا کہ اس دن زمین لوگوں کے اعمال ظاہر کرے گی اور ان کے اچھے کر رے کر دار پر گوائی دے گی ہراظہار اور گوائی میں جموٹ کا اختال بھی ہوتا ہے اس اختال کی نئی کے لیے ایک اور بات بیان کی جارتی ہے۔

اور جب اس قدرواضح ہو چکا کہ قیامت کے دن بی آ دم کے اعمال جنہیں انہوں فی اور جب اس قدرواضح ہو چکا کہ قیامت کے دان بی آ دم کے اعمال جنہیں انہوں نے ایک دوسرے سے چمپائے رکھا اور زمین کے ظاہر کرنے سے سب پر ظاہر ہوجائیں بے ایک دوسرے سے چمپائے رکھا اور زمین کے ظاہر کرنے سے سب پر ظاہر ہوجائیں بے ایک دوسرے سے چمپائے رکھا اور زمین کے ظاہر کرنے سے سب پر ظاہر ہوجائیں ب

کے تو نیک لوگ سرخ رواور بد کاررسوا ہوں سے اب بیان فرمایا جار ہاہے کہ اتی بات پر ہی اکتفاء نہ ہوگا بلکہ

یَوْمَنِدْ بِیَّصُدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا اس روزلوگ اپی قبروں ہے میدانِ حشر میں گروہ درگروہ متفرق ہوکرنگلیں کے۔شرابیوں زانیوں طالموں اور چوروں کے گروہ وغیرہ۔

لیکرڈ ا اَعْمَالُهُ مُ تا کہ اُنیں ان کے اعمال دِکھائے جا کیں لیمی محشر میں بدکاروں کو ایک اور سوائی اور نیکوں کو ایک اور سرخ روئی حاصل ہو یہاں تک کہ ان کے اعمال نا ہے کھولے جا کیں 'تر از ونصب کریں اور ان کے ہم ایجھے کرے ممل کو کھلے عام پڑھیں اور تو لیس ۔ پس ان کے اعمال ہم طرح ظاہر ہو کر سامنے آجا کیں ۔ چنانچہ اس کی تفصیل ان دو آیات میں ہے:

فکن یعنمل مفقال فرق مقدا یک اوجوزد مرابر بھی نیکی کرے اے دیجے۔ مین اعمال نامداور ترازو میں دیکھے۔ ورق کے دومعن ہیں: چھوٹی سی چیونی عبار کا دانہ جو کہ سورج کی شعاع میں تاریک مکان میں ظاہر ہوتا ہے۔

وَمَن يَعْمَلَ مِثْقَالَ ذَرَّةِ شَرًّا يَرَهُ اورجوذروبرابر يُرالى كرے اے ويھے۔

ایک شبداوراس کا جواب

اور یہاں شہرگزرتا ہے کہ کافر کی نیکی جزا کا سبب نہ ہوگی تو اسے دیکھنے کا کیا فاکدہ جبکہ موئن کی ٹرائی بھی معافی کے قابل ہے تو اسے دیکھنا بھی معافی کے فلاف ہے۔

اس کا جواب یہ ہے کہ کافر کی نیکی اگر چہ ابدی عذاب سے فلاصی کا موجب نہیں ہے کین اس کا اثر عذاب کی تخفیف ہے۔ تو اس کے دیکھنے کا فاکدہ ہے۔ اس طرح موئن کی ٹرائی سے گرچہ معافی مل گئی ہوایک تا ثیر سے فالی نہیں ہے اگر چہ رُ ہے کی کی ہو ہاں کی ٹرائی جس سے اس نے تی تو بداور ندامت کی ہے اس کے اعمال نامہ سے وُ ور ہوتی وہ اُدر کھنے والوں اور گواہوں کو فراموش ہو جاتی ہے۔ پس مین یکفی کی کا فقط اس کے علاوہ کے ساتھ محضوص ہو یا یوں کہیں کہ جب اس ٹرائی پر تو بداور ندامت واقع ہوئی اور عبداور ندامت عدہ نیکیوں میں سے ایک نیکی ہے پس اس ٹرائی کو دیکھنایا اس ٹرائی سے سے اور ندامت عدہ نیکیوں میں سے ایک نیکی ہے پس اس ٹرائی کو دیکھنایا اس ٹرائی سے اس مدائی کو دیکھنایا اس ٹرائی سے اس مدائی کو دیکھنایا اس ٹرائی سے اس مدائی کو دیکھنایا اس ٹرائی کو دیکھنایا اس ٹرائی سے اس مدائی کو دیکھنایا اس ٹرائی کو دیکھنایا اس ٹرائی سے اس مدائی کو دیکھنایا اس ٹرائی کو دیکھنایا سے ایک میں سے ایک نیکھنایا سے ایک کے کاملی مدت کو میں اس ٹرائی کو دیکھنایا اس ٹرائی کو دیکھنایا سے ایک کے کاملی کو دیکھنایا کی کو دیکھنایا سے دیکھنایا سے دیکھنایا کو دیکھنایا کی کو دیکھنایا کی کاملی کو دیکھنایا کو دیکھنایا کو دیکھنایا کو دیکھنایا کو دیکھنایا کی کو دیکھنایا کی کو دیکھنایا کی دیکھنایا کو دیکھنایا کو دیکھنایا کو دیکھنایا کو دیکھنایا کی کو دیکھنایا ک

توبہ وندامت کود کھنا کسی قتم کے نقصان کا باعث نہ ہوگا۔ اس کیے توبہ کرنے والوں کے بارے میں فرمایا گیا ہے فاولوئے کی بیدی اللّلٰهُ سَیّفَا یَھے حَسَنَاتِ یعنی توبہ کرنے والول کی بُرائیاں ان کی توبہ کے ضمن میں آئیس وکھائی جاتی ہیں۔ پس وہ بُرائیاں نیکیوں کی شکل اختیار کرلیتی ہیں۔ واللّٰداعلم

اور حدیث شریف میں آیا ہے کہ ایک آدی نے حضور سلی الله علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوکر عرض کی یارسول الله! (صلی الله علیہ وسلم) مجھے قرآن پاک سکھا ہیں۔ آپ نے امیرالمونین علی الرتفنی کرم الله وجہہ کو تھم دیا کہ اسے قرآن پاک پڑھا ہیں۔ حضرت امیرالمونین نے اسے سورہ اذا زلزلت پڑھائی جب وہ اس آیت پر پہنچا تو کہنے لگا حسبی حسبی لاابالی ان لااسمع غیر ھا یعنی مجھے ہی آیت کافی ہے مجھے اس کی پرواہ نہیں کہ کچھ اور سیکھوں۔ حضرت امیرالمونین کرم الله وجہہ نے یہ واقعہ حضورعلیہ السلام کی خدمت میں عرض کیا۔ آپ نے فرمایا دعم فقد فقد الدجل لیمی اسے چھوڑ دواس لیے کہ وہ فقیہ اور دانا آدی ہے۔

نیز حدیث شریف میں آیا ہے کہ اس آیت سے اہلی مدید میں سے دوآ دمیوں نے عبرت پکڑی۔ ان میں سے ایک وہ فض تھا جو صدقہ نددیتا اور کہتا کہ میں زیادہ کی طاقت نہیں رکھتا اور اللہ تعالیٰ کے لیے تعور ٹی کی چیز دیتا ہے ادبی مجمتا ہوں اور دوسرا وہ فض تھا جو کہ اپنے گنا ہوں کو خاطر میں نہ لاتا جیسے بے مقصد گفتگو اور بے کل دیکھنا گمان کرتا کہ اتنی پیزوں پر کیا گرفت ہوگی ان دونوں کے گمان کے ردکے لیے بیآ یت کانی ہوئی۔

سورهٔ عادیات

کی ہے اس کی گیارہ (۱۱) آیات جالیس (۴۰)کلمات اور ایک سوریسٹھ (۱۲۳)حروف ہیں اور عادیات لغت عرب میں دوڑنے والے کھوڑوں کو کہتے ہیں عدو سے مشتق ہے جس کامعنی دوڑنا ہے۔

وجبر تشميه

اور اس سورۃ کا نام سورۂ عادیات اس لیے رکھا گیا ہے کہ غازیوں کے کھوڑے
marfat.com

تاشکر کفار پرغضب اللی کی تیزی کی شکل ہیں۔ اور دنیا ہیں تا فرمانوں پر اللہ تعالیٰ کے انقام کا ظہور دوڑنے والے گھوڑوں کی صورت ہیں ہوتا ہے۔ بس بی گویا حشر ونشر کا نمونہ ہاس لیے خالف فوج کے آنے اور موافق گروہ کے شکست کھانے کی وجہ سے شہراور ملک میں ایک انقلاب واقع ہوتا ہے عزت والے ذکیل ہوجاتے ہیں پر دہ نشین بے پر دہ ہوجاتے ہیں اور جو مال ومتاع مرتوں میں جمع ہوتے ہیں سب کے سب ایک لمح میں ہوجاتے ہیں اور جو مال ومتاع مرتوں میں جمع ہوتے ہیں سب کے سب ایک لمح میں برباد ہوجاتے ہیں اور قیامت کی یاد ولانے برباد ہوجاتے ہیں اور قیامت کی اور سورة کا تام بھی یہی رکھ دیا گیا۔

سبب نزول

اورمفسرین کے ارشاد کے مطابق اس سورۃ کے زول کا سبب یہ ہے کہ حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے حضرت منذر بن عمر انصاری رضی اللہ عنہ کو گھوڑ سواروں کی ایک جماعت کے ہمراہ بنوکنانہ کے ایک قبیلہ پر جو کہ تفریش بہت شدید تھا' مقرر فر مایا اور تھم دیا کہ چاہیے کہ تم فلال دن صبح کے وقت ان کے پاس پہنچو اور تملہ کرو اور فلال دن واپس آ جاؤ۔ آئیس راستے میں ایک سیلاب کا سامنا ہوا جس سے گزرنا مشکل تھا۔ ایک دن وہاں تخریر نے کا اتفاق ہوا یہاں تک کہ اس سیلاب کا پانی کم ہوا اور وہاں سے گذر کے اور حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے فرمان عالی کے مطابق عمل کیا۔ جب واپس کے وعدے کا دن پہنچا اور یہ حضرات اس رکاوٹ کی وجہ سے جو کہ راستے میں چیش آئی تھی واپس نہ لوٹے۔ منافقوں نے یُری افوا ہیں پھیلا تا شروع کر دیں اور کہنے گئے کہ وہ فشکر سارے کے سارا ضائع ہوگیا اس جموثی خبر سے مسلمانوں کو بہت صدمہ ہوا۔ حق تعالی نے یہ سورۃ کے سارا ضائع ہوگیا اس جموثی خبر سے مسلمانوں کو بہت صدمہ ہوا۔ حق تعالی نے یہ سورۃ تعیمی اور اس میں ان کے کھوڑ دن کا ذکر اور ان کا دشنوں کی جماعت میں آتا بیان فر مایا تاکہ مسلمانوں کو تھا میں ہوں۔

میں اس رسم کا اشارہ کرنا منظور ہوا تا کہ ایمان والوں کو اس امر کی بشارت ہو کہ اللہ تعالیٰ انہیں جہاد کی طاقت محوڑ ہے فوج اور سپانی عطا فرمائے گا تا کہ وہ اللہ تعالیٰ کے دشمنوں ہے معقول بدلہ نیس اوران کا شیراز ومنتشر کر دیں اوران کے ملک اور مال کو اپنے تصرف میں لائیں۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْعَادِیَاتِ ضَبْعًا اَن دُورُ نے والے محور لی فقم جوکہ بھا محتے وقت شکم سے آواز نکا لیتے ہیں۔ اور جانوروں کا قاعدہ یہ ہے کہ نہا بت تیز دوڑ نے کے وقت ان کے شکم سے آواز نکا لیتے ہیں۔ اور جانوروں کا قاعدہ یہ ہے کہ نہا بت تیز دوڑ نے کے وقت ان کے شکم سے آوازنگلتی ہے جسے ہندی زبان میں ہانپ کہتے ہیں۔

فَالْمُوْرِیَاتِ قَدُمُ اِللَّهُ وَرِیَاتِ قَدُمُ اِللَّهُ وَرُول کی تم ہے جو کہ چھاق مارکرآ ک نکالے ہیں۔ یعنی پہاڑوں اور پھر بلی زمینوں بیں کھوڑے کے آپنی سم پھر پر پڑتے ہیں جن سے شعلے نکلتے ہیں۔ جس طرح کہ چھان مارنے سے رات کے وقت آگ فلا ہر ہوتی ہے۔ اور دن بیں اس کی روشنی محسوس نہیں ہوتی اس تم میں اس بات کا اشارہ ہے کہ غازیوں کے کھوڑے رات کے وقت دوڑتے ہوئے جائیں گے۔

فَالْمُوْمُولُولُ التِ صُبْعًا لَهِ ال مُحورُول كُوسُم ہے جوكہ مج كے وقت دھاوا بولئے ميں۔ بعن مجھلى دات سنركر كے مج كوفت جوكہ ففلت كا وقت ہے وشن تك بنتى جاتے ميں اور مال اور ملك أوث لينے ہيں۔

فَاکُونَ بِهِ نَقَعًا بِی ان محود ول نے معج کے وقت خبار اُڑا دیا ہے اس فعل پر معطوف ہے جو کہ مغیرات سے سمجا جاتا ہے بین اغدن صبحا بعنی انہوں نے بوقت میں اُوٹ مارکی اور اس اسم سے فعل کی طرف مڑنے کی وجہ یہ ہے کہ خبار اُڑانا وشمنوں کے مقام کے قریب وہ بینے کے وقت ہے ہیں وہ ایک ساعت رہا اور گزر گیا۔ بخلاف اغارہ اور ایراء اور عدو کے جو کہ جاری ہے۔

رطوب کی وجہ سے زمین موٹی اور بخت ہو جاتی ہے تو اس دفت غبار اُڑانا سخت تو ی ترکت
کو چاہتا ہے۔ بخلاف دن کے پچھلے پہر کے کہ سورج کی حرارت اور اس کی شعاعوں کے
پیوست ہونے کی وجہ سے زمین کے اجزاء کھو کھلے ہو جاتے ہیں اور معمولی می حرکت کی وجہ
فری دیا ہے۔ اس میں میں میں میں میں اور معمولی می حرکت کی وجہ

سے غبار اُنھ جاتا ہے ای لیے آندھیاں آنے کا وقت دن کا پچیلا پہرہے۔

فَوَسَطَنَ بِهِ جَمُعًا ہیں وہ محوز ہاں وقت دیمن کی صفول یم محس سے اور انہیں منتشر کردیا۔ یہاں جانا چاہیے کہ گنا ہول کے مقابلے یمی اللہ تعالی کے قہری صورت ان محوز وں کی حرکت کے ساتھ پوری مشابہت رکھتی ہے۔ اس لیے کہ اس کا مبدا فضب کا متوجہ ہونا ہے۔ کہ جس کا فمونہ یہاں محوز وں کا شدید ہا بچے ہوئے دوڑ تا ہے جو کہ فضب کے دقت ہوتا ہے اور جس کا فمونہ یہاں محوز وں کا شدید ہا بچے ہوئے دوڑ تا ہے جو کہ فضب کے دقت ہوتا ہوا ہوں کے جمول کے دقت ہوتا ہوا ور جہوؤ کی ان اللہ جم کے فرشتوں کی ضرب مانچوں اور جہوؤ سے اور جہوئ کے اس کا اللہ تعالی جا ور جہوؤ کی وجہ سے اللہ تعالی کی رحمت جہد جاتی ہوا ور جہوز کی وجہ سے اللہ تعالی کی رحمت جہد جاتی ہوا ور شموں کی مفول پر جاب ذائے کا فمونہ ہے اور خمار اُڑا تا تا اللہ تعالی کی وجہ سے اللہ تعالی کی رحمت جہد جاتی ہوا ہوا نے کا مونہ ہوا کی دوست جہد جاتی ہوا ہوا نے کا مونہ ہوا کی دوست جہد جاتی ہوا ہوا ہوا ہوا ہے کہ موں کی مفول میں میں جاتا اللہ تعالی کے فضب کی آگ کی اور جس میں سرایت کر جانے اور جسم کے نظام کو دگر گوں کرنے کا فمونہ ہے۔ بس اللہ تعالی کے قبر کے اس فرونے کی شم

وَإِنَّهُ عَلَى ذَالِكَ لَشَهِيْدٌ اور بِيكُ آوى ابْي ناشكرى پر كواه ب يعنى خود اقراركرتا ب كه من ناشكر مول اور دنيا من به اقرار اس طرح واقع موتا ب كه ايك فخص دوسر ب استخصار من تاشكر مول اور دنيا من به اقرار اس طرح واقع موتا ب كه ايك فخص دوسر ب استخدار من تاشكر مول اور دنيا من به اقرار اس طرح واقع موتا ب كه ايك فخص دوسر ب

ہے کہتا ہے کہ فلاں آ دمی اس نعمت کاشکر اوانہیں کرتا حالانکہ خود بھی اس نعمت کاشکر ادا نہیں کرتا تو دوسرں پرطعن کرتا کو یا اس امر کا اقرار ہے کہ میں بھی مطعون ہوں۔

وَإِنَّهُ لِحُبِ الْعَهْ لِلَهُ الْمَالِينَ اور بينك وه مال كى محبت بن بهت بخت اور مضبوط على الله المعتبول المعتبول المعتبول المعتبر المعتبول المعتبر المعتبر

آفلاً يَعْلَمُ إِذَا بُعْنِدَ مَا فِي الْقُبُور كياده جاناً نبيل كه جب قبرول من جو يَحْمَ بُ أَعْمَا يَا الْفُهُور كياده جاناً نبيل كه جب قبرول من جو يَحْمَ بُ أَعْمَا يَا جَائِدَ مِن كَا الْمُدَ بِالْ كَاوِرَ آجَائِدَ اور الْمُن كَا فَا مِن كَا الله عَلَى مرد ف متوجه مون كا آغاز موجائ يهال تك كه اخلاق نيات اور خفى باحث عقائد كرفا برمون تك بات جائيج - چنانچ قرما يا جار ہا ہے:

وَحُصِلَ مَا فِي الصَّدُورِ اورجو بحصينوں من ہے ظاہر کردیا جائے۔ پس اخلاق اوراعمال کوصورت میں ڈھال کر ظاہر کردیا جائے اوراسے سامنے چیش کیا جائے تا کہ تمام مخلوقات کوایک دوسرے کے دل میں جمیں باتوں کاعلم حاصل ہوجائے اوراس وقت ہر کسی کو پہنہ چل جائے کہ:

اِنْ دَبَهُ مِهِ بِهِ مَوْمَنِ لَكَ بِيلُ النَّالِ وردگاراس روزان كے متعلق ضرور خروار ہے۔ اوراس كے دربار على انكار نيس چلن اورعلم اللى اگر چه ہروقت بندے كے فاہر و باطن كو محيط ہے ليكن اس روزاس كاعلم ہركى پر ظاہر ہوجائے گا اورا نكار كى تخباتش نہ دہے گی اور یہ جملہ یعن إِنَّ دَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَوْنِ لَنَّ عَبِيْرٌ آيته اَفلاً يَعْلَمُ اللهٰ كَ مَفعول رہے گی اور یہ جملہ یعن إِنَّ دَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَوْنِ لَنَّ عَبِيْرٌ آيته اَفلاً يَعْلَمُ اللهٰ كَ مَفعول كے مقام على واقع ہواليكن لام كے واسطے سے جو كہ نير على اور ايكن الم كتب على اور یہ علی من الله الله الله الله كله على الله كام كتب على اور یہ اور یہ افوال قلوب كے خصائص على سے ہواور حدیث پاک عن آیا ہے كہ لوگوں نے حضور صلى الله عليہ وآلہ وسلم سے لگاؤ د كے متعلق ہو جھا۔ فرایا كود وہ ہے جو تنها كھائے اورغلام كو الله عليہ وآلہ وسلم سے لگاؤ د كے متعلق ہو جھا۔ فرایا كود وہ ہے جو تنها كھائے اورغلام كو الله عليہ وآلہ وسلم سے لگاؤ د كے متعلق ہو جھا۔ فرایا كود وہ ہے جو تنها كھائے اورغلام كو الله عليہ وآلہ وسلم سے لگاؤ د كے متعلق ہو جھا۔ فرایا كود وہ ہے جو تنها كھائے اورغلام كو الله عليہ وآلہ وسلم سے لگاؤ د كے متعلق ہو جھا۔ فرایا كود وہ ہے جو تنها كھائے اورغلام كو الله عليہ واللہ كائے كوروں اور ضرورتوں كی دربان كام ہوں اور فروں کی وہ كھون د دے اور قبیلے کی رسموں اور ضرورتوں کی مارے اپنے كئے كو موكا ر كھے اور كسى كو جھون نہ دے اور قبیلے کی رسموں اور مضرورتوں کی

marfat.com Marfat.com

تغیر مزیزی رعانیت نه کریے۔

سورة القارعه

کی ہے۔ اس کی آٹھ (۸) آیات مچھتیں (۳۷) کلمات اور ایک سوپھاس (۱۵۰)حروف ہیں۔

وجدتشمييه

اوراے سورہ قارعدال لیے کہتے ہیں کہ بدایک خت ماد ثے پر دلالت کرتی ہے جو
کہ قیامت کے دن ہوگا۔اور دِلول کوخت کوفت پہنچاہے گا۔اوراس ماد ثے کی تا ہیر ہے
لیل اجسام ملکے ہوجا کیں گے اور بخت اجسام ریزہ ریزہ ہوجا کیں گے۔اوران کے اجزاء
کے درمیان با ہمی رابط اور سنجالا دینا دُور ہوجائے گا۔ پس کی چیز میں قتل باتی نہیں رہے گا
جو کہ کی چیز کی اپنی جگہ پر تھا طب کا سب ہوتا ہے اور نہ بی مضبوطی رہے گی جو کہ اجزاء کے
جو ہونے کا موجب ہے۔ اور جب بوجمل ہونا اور ہلکا ہونا غیز جمع ہونا اور جدا جدا ہونا جو کہ
دنیا کے دستور کے مطابق تھا دگر کوں ہوگیا تو اس جہان میں ایک اور بوجم اور خفت نیز ایک
اور جمع ہونا اور جدا جدا ہونا ظہور کرے گا۔ پس بوجم جنت کے درجات میں بلند ہونے کا
اور جمع ہونا اور جدا جدا ہونا ظہور کرے گا۔ پس بوجم جنت کے درجات میں بلند ہونے کا
موجب ہوگا جبکہ خفت جہنم کی گھرائی میں گرنے کا باحث ہوگی۔ بخلاف اس دستور کے جو
کہ دنیا ہے کہ قتل پستی کا موجب اور مخت بلندی کا باحث ہوتی ہوتی ہو اوراس تم کے طلم
انقلاب سے ڈرانا قرآن مجید کے مقاصد میں سے ایک ایم مقصد ہے۔
انقلاب سے ڈرانا قرآن مجید کے مقاصد میں سے ایک ایم مقصد ہے۔

الفّارعَةُ مَا الفّارِعَةُ صدمه المنجان والا حادثه كيا ب وو صدمه المنجان والا حادثه كيا ب وو صدمه المنجان والا حادث المنعن قيامت جوكردلول كو سخت كوفت المنجائ او في كو نجا اور في كواونها كردال من بيانقلاب كن وجهت موكال

اور قیامت قائم ہونے کے اسباب جن میں سے ایک بڑا سبب سارے جہان پر قبر اللی کی ججا ہے۔ جہان پر قبر اللی کی ججا ہے کہ معلوم نہیں لہذا اسے بیان کرنے کے مقام میں صرف اس کی بعض تا خیرات براکتفاء فرمایا گیا ہے۔

یوم یکون النّاس کالفکراش الْمَبْنُون وہ حادثه ال روز ہوگا جس دن لوگ بکھرے ہوئے پروانوں کی طرح ہوں گے۔ ہرایک ایک سمت کو جارہا ہے۔ بہتشبہ چار وجوہ سے مرکب ہے۔ ذات حرکت کی کمزوری حرکت کی بے انتظامی کہ بھی جلد اور بھی میجہ دیر سے ہواور حرکت کی سمت کا متعین نہ ہونا کہ بھی آ کے بھی ویچے بھی دائیں اور بھی یا کیس ہو۔

یا کیں ہو۔

یہاں جانا چاہیے کہ جم میں ہو جھ کی دو تسمیں ہیں: پہلی تئم جو کہ اعلی اور بہتر ہے وہ بوجھ ہے جو کہ دقار مرتبے ادر استواری کی وجہ سے ہوتا ہے۔ اور بیمعنی ان جسموں کے ساتھ خصوص ہے جن کے ساتھ روح کامل کاتعلق ہوا ہے۔ اس لیے جنات اور انسانوں کو شقلین کہتے ہیں اور وہ حادثہ جو کہ روح میں بہت زیادہ اثر کرے اور اسے توجیرت کردے اس تقلین کہتے ہیں اور وہ حادثہ جو کہ روح میں بہت زیادہ اثر کرے اور اسے توجیرت کردے اس تقلی کو زائل کر دیتا ہے اس لیے دقار اور مرتبے والے سے بے چینی اور گھبراہٹ کے وقت بے اختیار خلاف وقار حرکتیں سرز د ہوتی ہیں۔ اس لیے کہ اس کی روح حادث کی دہشت کی وجہ سے جسم کی حفاظت سے عاجز آ جاتی ہے اور کسی تم کے حرکات اور ارادے اس کی حرکتوں کے بردیا ہونے کا موجب ہوتے ہیں اور یہاں اس تقل کے انقلاب کا بیان ہے۔

اور دوسری سم جو کہ عوام کے نزدیک زیادہ واضح ہے طبعی قل ہے جو کہ بخت جسموں میں ان کے اجزاء کے اجتماع اور کٹافت کی وجہ سے حاصل ہوتا ہے اس سم کے بوجہ میں پہاڑوں کی مثال دی جاتی ہے اس سم کے انقلاب کو دوسری آیت میں بیان فرمایا سمیا

خلاصہ یہ کہ اس حادثے کی تا ثیرجسوں میں سب سے زیادہ بخت جم میں جو کہ پہاڑ ہے یہاں تک پہنچ گئی ہے کہ اس کے تمام اجزاء منتشر ہو گئے ہیں۔ اور اپنی جگہ سے حرکت کر کے ہوا میں بکھر گئے اور تگین اون کا اعتبار اس لیے فرقایا گیا ہے کہ رتگین اون بے رنگ اون سے زیادہ ڈھیلی اور کمزور ہوتی ہے اور رگوں کا اختلاف تشبیہ میں اس لیے ذکر فرمایا گیا کہ پہاڑوں کے رنگ مختلف ہوتے ہیں۔ بعض سنگ مرمر کے طرح سفیہ بعض سرخ اور وہ بھی سرخی کے مرتبوں میں مختلف ہیں جسے سنگ مرخ اور سنگ بانی۔ بعض سیاہ اور وہ بھی سرخی کے مرتبول میں مختلف ہیں جسے سنگ موئی اور سنگ فارا۔ بعض سبزی مائل جب سب پھر کے اجزاء مختلف ہیں جسے سنگ موئی اور سنگ فارا۔ بعض سبزی مائل جب سب پھر کے اجزاء مختلف ہو جا کیں۔ ایک کا رنگ دوسرے میں ال کر ہوا میں ایک جب چیز نمودار ہو چونکہ اس حادثے کی تا ثیر کو اجمالی طور پر بیان فرمایا گیا اب میں ایک بجیب چیز نمودار ہو چونکہ اس حادثے کی تا ثیر کو اجمالی طور پر بیان فرمایا گیا اب اس اجمال کی تفسیل بیان فرمائی جاری ہے۔

فَاهَامَن تَقُلَتُ هَوَازِیْنَهُ تو جس کے اعمال کا وزن بھاری ہوگیا اور بیگرانی
پیشدہ بوجھ کی دجہ سے ہے جو کہ ان اعمال میں پیشیدہ تھا اور دنیا میں ظاہر نہ تھا اس دن
ظاہر ہوگا مقیقت میں وہ بوجھ اللہ تعالی کے حضوران اعمال کی فضیلت ہے۔ اور اس بوجھ
کی دجہ سے بندے کی اعمال تامہ میں ان اعمال کو محفوظ کرنے کی صورت بنتی ہے۔ نیز ہر
اچھاعمل دنیا میں آ دی کے فنس پر دشوار اور بوجھل ہوتا ہے اور آ دی حکم الی میں اس کی
مشقت اور بوجھ برداشت کرتا ہے اور یہ بوجھ بھی اس روز ظاہر ہوگا اور اس کی دجہ سے
آ دمی کو تر تی حاصل ہوگی۔ چنانے بیان فر مایا جارہا ہے:

نَهُوَ فِيْ عِيْشَةِ رَّاضِيَةٍ لَى وَ وَخَصَ آيك لِيندَيده اورلذت والى زندگى مين بوگاوَآمَامَنْ خَفَّتُ مَوَازِيْنُهُ اورجس كاعمال كاوزن بلكا بوگيائيه بلكا بوناس وجه
سے ہے كه اس كے اعمال كى خداتعالى كے حضور كوئى وقعت نہيں۔ نيز چونكه خواہش نفس
کے مطابق تنے اس ليے نفس پر دشوار اور گراں نہ ہوئے۔ اس قیامت كے دن بيہ بلكا پن
اس بات كا موجب ہوا كہ وہ اعمال محفوظ نہ رہے اور بكمر محے اس محفق كے ليے انتہائى
سے معالیہ معالى موجب ہوا كہ وہ اعمال محفوظ نہ رہے اور بكمر محے اس محفق كے ليے انتہائى
سے معالیہ معالى موجب ہوا كہ وہ اعمال محفوظ نہ رہے اور بكمر محے اس محفق كے ليے انتہائى محت ما موجب ہوا كہ وہ اعمال محفوظ نہ رہے اور بكمر محے اس محفق كے ليے انتہائى

تنزلی اور تاریکیوں میں گرائے جانے کا باعث ہو مجئے۔ چنانچے فرمایا جارہا ہے کہ:

نَامُنَهُ هَا وِ يَةٌ تو اس شخص كى مال جہنم كا نجلا طبقہ ہے۔ مال اس كيے فرمايا كه بچكو بيت كافنى كى حالت اورامرطبعى كى ضرورت كے وقت مال كى طرف لوٹنا ہوتا ہے۔ چونكه اس دن وہ تكلف كى حالت اور بناوٹ جو كه لا پرواہ لوگ دنيا ميں كرتے تھے بالكل ختم ہوجائے گى تو بے اختيار جہنم كے اى طبقہ كى طرف رجوع كريں گے گويا اس كى طرف طبعًا ماكل ہيں اوروہ طبقہ جنبم انہيں مال كى طرح اپنى طرف كھينچتا اور جگہ دیتا ہے۔

وَمَا اَذْرَاكَ مَاهِيَه اورتو كياجانتا ہے كہ وہ ہاوية كيا ہے؟ لينى جوعذاب اس طبقہ جہنم میں ہے كئى انسان كومعلوم نہیں ہوسكتا۔ هاهيه میں سكته كی ہاتو قف كے ليے ہے اورلغت عرب میں اسے ہائے سكته كہتے ہیں ورنہ اصل كلمہ ہا كے بغير هاهى ہے۔

نَادٌ حَاهِيَةُ ايك نهائت كرم آگ ہے۔ يعنى جہنم كے جس طبقے كا نام ہاويہ ہے اس حد اس حد بيان كرنے ميں اس قدر سے زيادہ ممكن نہيں ہے كہ بہت كرم آگ ہے۔ اس حد تك كداس كے مقابلے ميں اور آگ كوگرم نہيں كہنا جاسكتا اور جہنم كے دوسر لے طبقوں كو اس كے سامنے كرم شارنہيں كيا جاسكتا۔ اللہ تعالى جميں اس سے اور ہرفتم كے عذاب سے يناه دے۔

سورهٔ تکاثر

کمی ہے اس کی آٹھ (۸) آیات اٹھائیس (۲۸) کلمات اور ایک سوہیں (۱۲۰) دف ہیں۔

سبب نزو<u>ل</u>

کا اظہار رفتہ رفتہ افراد کی کثرت تک جا پہنچا۔ جب بنوعبد مناف نے اپی مردم شاری کی تو زیادہ نظے۔ بنوسہم نے کہا کہ ہمارے افراد لڑائیوں میں بہت مارے گئے ہیں۔ چاہیے کہ زیادہ نظے۔ بنوسہم نے کہا کہ ہمارے افراد لڑائیوں میں بہت مارے گئے ہیں۔ چاہیے کہ زیادہ ہو گئے اس دوران زندوں اور مردوں کو ملا کر گفتی کریں جب ایسا کیا گیا تو بنوسہم زیادہ ہو گئے اس دوران مردول کی تحقیق کے لیے قبرستانوں میں گئے اور گورستانوں میں گھوے۔ اللہ تعالیٰ نے ان کی جہالت اور جو بچھانہیں ضروری تھا اس سے ان کی پوری غفلت کے بیان میں بیسورۃ نازل فر مائی۔

وجدتشمييه

ادراس سورۃ کوسورۂ تکاڑاس لیے کہتے ہیں کہ اس میں تکاڑلینی کٹرت مال پرفخر
کرنے کی ندمت بیان کی گئی ہے اوراس کا بیان یہ ہے کہ تکاٹر سے اس طرح ڈرنا جا ہیے
جس طرح کہ قیامت ہے اس لیے کہ تکاٹر بندے اور اس کے مطلوب کے درمیان ایک
شخت تجاب ہے اور ہر تجاب اپنے چیجے عذاب کو جا ہتا ہے۔

بسسم الله الرَّحْمَنِ الرَّحِيْمِ

آلفائحہ التّکائر مہیں تکاڑنے عافل کردیا تکاڑکامعی زیادتی طلب کرنا ہے اور آدی آخری عربی احوال اولا دیروکاروں اور اقارب کی کثرت کا خواہاں ہوتا ہے تاکہ ان کی مدد کی وجہ ہے اس کا مرتبہ اور شہرت خم نہ ہو۔ اور سے بات آئیس معرف الی تاکہ ان کی مدد کی وجہ ہے اس کا مرتبہ اور فکر حقوق اللہ اور حقوق العباد کے واجبات اور آخرت میں اپنے نفس کے حقوق سے عافل کر دیتی ہے۔ اور وہ اس غفلت کی وجہ سے نعتوں کو اس چیز کے لیے خرج کرنے ہے محروم رہتا ہے جس کے لیے وہ نعتیں مقرر بیں۔ تو تکا ڑا دی کو گویا آ دمیت سے نکال دیتا ہے اور حیوانات کے درج میں داخل کر ویتا ہے۔ اور اگر رہ غفلت کی مرشد کی ہدایت اور کسی بزرگ کی تنبیہ سے جلد زائل ہو جائے تو پھر آ دمیت کی صرف کی ہدایت اور کسی بزرگ کی تنبیہ سے جلد زائل ہو جائے تو پھر آ دمیت کی صد تک پہنچ میں اور راوح تر کے سلوک کی صلاحیت صاصل کر لی۔ اور جائے اور کسی خلات میں مراکبا تو انتہائی خسارے میں اگر ای خفلت میں رہا اور ہوش میں نہ آیا اور راوح تر کے بازار بھیجا گیا کہ تجارت کرے اور نفع رہا اور اس خفل کے مشابہ ہوگیا جے سر مایود سے کر بازار بھیجا گیا کہ تجارت کرے اور نفع سے مشابہ ہوگیا جے سر مایود سے کر بازار بھیجا گیا کہ تجارت کرے اور نفع سے مشابہ ہوگیا جے سر مایود سے کر بازار بھیجا گیا کہ تجارت کرے اور نفع سے مشابہ ہوگیا جے سر مایود سے کر بازار بھیجا گیا کہ تجارت کرے اور نفع سے مشابہ ہوگیا جے سر مایود سے کر بازار بھیجا گیا کہ تجارت کرے اور نفع

حاصل کرے اور بیخص بازار میں چلاگیا'شراب بی اور بیہوش ہوکر سارا سرمایہ داؤ پرلگا دیا حتیٰ کہ شام کے وقت اے اُٹھا کراس کے گھر پہنچایا گیا۔ سرمایہ رہانہ نفع پایا۔ ایسی صورت حتیٰ کہ شام کے وقت اے اُٹھا کراس کے گھر پہنچایا گیا۔ سرمایہ رہانہ نفع پایا۔ ایسی صورت حال ہے اللہ تعالیٰ کی پناہ اور اس کلمہ میں اس حالت کی طرف اشارہ ہے۔

حَتْی ذُرْتُهُ الْمَقَابِرَ حَیْ کُرَمَ نِے قبروں کی زیارت کی یعنی تم اس شغل میں تھے اور بالکل ہوش نہ کی یہاں تک کہ کورستان میں پہنچ مجھے۔

کلّا مقدمہ یوں نہیں ہے جیسا کہتم نے سمجھا ہے بیعیٰ تم گمان کرتے ہو کہ موت کے بعد جو کمال ہے بس یہ ہے کہ بے پناہ دولت صاحبِ اقبال اولا دُ اور جان نثار رشتے دار بعد میں تہیں قائم رکھیں حالانکہ موت کے بعد ایک اور چیز پیش آئے گی جس کے مقابلے میں یہ چیزیں بالکل بیج ہوں گی۔

بیب حاصل دنیا کهن تابنو چو گذرنده است نیرزدبخو

لیعنیٰ نی اور برانی دنیا جب گزرنے والی ہے تو اس کا فائدہ جو کے برابر بھی نہیں۔ اور اگر کسی مجری سوچ کے بغیر ہی ہر عقل مند کومعلوم ہے کہ مال اولا دُمر ہے اور رشتے داریاں سب فانی ہیں جو چیز فانی ہے باہم فخر کرنے کے لائق نہیں ہے۔

سَوُفَ تَعُلَمُوْنَ آخر تهمیں معلوم ہو جائے گا یعنی موت کے بعد تمہیں پتہ چل جائے گا کہتم نے جس معروفیت جی اپنی عمر گزاری تمہارے لیے سب نقصان دہ اور باعث خرابی تقی ۔ کیونکہ ابدی نعمین ضائع ہونے اور قبر الہی کی طرف قریب ہونے کا باعث ہوئی۔

ا کُنگ کُلًا ہم پھر کہتے ہیں کہ معاملہ اس طرح نہیں ہے جس طرح کہتمہارا عقیدہ ہے۔ سوف تغلیق آخر تمہیں قبروں سے المصنے حشر ونشر جہنم اور اس کی شدید ہولنا کیوں کود کھنے کے بعد پتہ چل جائے گا کہتم نے جو پچھ کیا سب نقصان اور خرابی پر مبنی تھا۔ پس پہلا جا ننا برزخ میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم جا کھی تھا۔ پس پہلا جا ننا برزخ میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم اللہ میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم اللہ میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم اللہ میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دن ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دنا ہے۔ مسلم میں ہے جبکہ دوسرا جا ننا قیامت کے دنا ہے۔ مسلم میں ہے دوسرا جا ننا ہے دنا ہے دوسرا جا ننا ہے دوسرا جا ننا ہے دوسرا جا ننا ہے دیا ہے دوسرا جا ننا ہے دوسرا جا نا ہے دوسرا ہے دوسرا جا نا ہے دوسرا ہے دوسر

کلّا کو تَغُلَمُونَ عِلْمَ الْیَقِیْنِ باہم فخرمت کرؤ معاملہ یوں نہیں ہے اگرتم اس طرح جاننے کہ جس میں کوئی شک وشبہ نہ ہواورتم سے ظلمتوں کے بعض حجاب کھل جا ئیں اور لاز ما جان لوکہ

لَتَدَدُونَ الْبَحَوِحِیْمَ موت کے بعد برزخ میں گرم ہوا چلئے عذاب کی صورت و کھنے اور آتشیں گرزوں کے ساتھ مارنے کے ساتھ تم جہنم ضرور دیھو گے۔ ٹیڈ اَنْدَ وُلَیّا عَیْنَ الْیَقِیْنِ پھرتم اس جہنم کویقین معائے کے ساتھ ضرور دیھو گے جس میں شہر خیال کے غلبے الیقین پھرتم اس جہنم کویقین معائے کے ساتھ ضرور دیھو گے جس میں شہر خیال کے غلبے اور جس کی غلطی کا احتمال نہیں ہوگا اور یہ دیکھنا قیامت کے دن ہوگا جبکہ جہنیوں کو اس کے کنارے کھڑا کریں اور اس کی ہولنا کیوں اور شدتوں کو ان برنمایاں کریں۔

ٹُم کَتُسُنَکُنَ یَوُمَیْدِ عَنِ النَّعِیْمِ پُرتم سے اس دن ان نعتوں کے متعلق ضرور پوچھا جائے گا جو کہ تہمیں دنیا میں عطا کی تکمین تھیں اوران سب نعتوں نے تہمیں کسب خیر سے غفلت میں ڈال دیا۔

اور نعمتوں کے متعلق تین وجوہ سے سوال ہوگا۔ پہلی وجہ بدکہ تم نے اس نعمت کوکس طرح حاصل کیا؟ حلال طریقے سے یا حرام طریقے سے؟ دوسری وجہ بدکہ اس نعمت کوئم نے کہاں خرج کیا؟ اللہ تعالیٰ کی رضا کے مطابق یا خلاف رضائے خداوندی؟ تیسری وجہ بدکہ اس نعمت کے شکریہ میں تم نے کیا گیا؟

یہاں جانا چاہیے کہ اللہ تعالی نے بندے کو جو کھھاس کی ضرورت سے زیادہ عطا فرمایا ہے جس پراس کی روزی اور زندگی موقوف نہیں ہے اور سب کا سب اس قبیلے سے ہے۔ جس کے متعلق سوال ہوگا۔ بندوں میں سے کوئی بھی اس سے خالی نہیں ہوگا۔ گوفقیر اور گدا ہوای لیے کہتے ہیں کہ شنڈا پانی 'گرم روٹی 'شنڈا سائی نیندگی لذت خلقت انسانی کا اعتدال اسلام' قرآن پاک 'ہمارے رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا وجود مسعود اور اس شریعت کا آسان ہونا الی نعمین ہیں جن میں امیر غریب سب مسلمان شریک ہیں اور ان کی قدر نہیں بھانے۔

اوربعض نے کہاہے کہ جن نعمتوں کے متعلق پوچھا جائے گا' تین چیزیں ہیں:صحت' marfat.com

جوانی اور امن اورکوئی شخص بھی اپنی عمر میں ان تمن چیزوں سے خالی نہیں رہتا اگر چہ ان سے ہمیشہ فائدہ حاصل نہ کرے اور حدیث شریف میں وارد ہے کہ ایک فقیر بارگاہ سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم میں حاضر ہوا اورعرض کرنے لگا کہ یا رسول اللہ! (صلی اللہ علیہ وسلم) مجھے دنیا میں کیا نعمت حاصل ہے جس کے متعلق مجھ سے سوال کیا جائے گا؟ آپ نے فر مایا شھنڈا پانی اور سایہ۔ نیز صحیح حدیث شریف میں وارد ہے حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم امیر المومنین حضرت ابو بکر صدیق مضرت عمر بن الخطاب اور چند اور صحابہ کرام رضی اللہ عنہم حضرت ابوالہ پشم کے گھر مہمان ہوئے اورگرم روثی تھجور کے ساتھ کھائی اور شھنڈ اپنی پیا۔ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فر مایا کہ یہ وہ نعمتیں ہیں جن کے متعلق تم سے سوال بافی پیا۔ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فر مایا کہ یہ وہ نعمتیں ہیں جن کے متعلق تم سے سوال

سورة والعصر

کمی ہے اس کی تنین (۳) آیات چودہ (۱۳) کلمات اوراڑسٹھ (۲۸) حرّوف ہیں۔ سبب نزول

ال سورۃ کے زول کا سبب یہ ہے کہ کلدہ بین اسید جے ابوالا سد بھی کہتے ہیں ایک کافر تھا جو کہ جا بلیت کے دور میں امیر المونین حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کا ساتھی تھا۔ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کا ساتھی تھا۔ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے اسلام لانے کے بعد ایک دن آپ سے ملا اور کہنے لگا کہ اے ابو بکر تو تجارت اور سوداگری میں عقل مندی اور ہوشیاری کی وجہ ہے بمیشہ نفع حاصل کرتا تھا اب تھے کیا ہوگیا کہ ایک دَم تو نے اتنا نقصان اُٹھایا کہ اپ باپ کا دین چھوڑ دیا اور الات وعزی کی پوجا سے محروم ہوگیا اور ان کی شفاعت سے ناامید ہوگیا۔ حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ نے اس بے وقو ف کے جواب میں فرمایا کہ جو تی کو قبول کرے اور اچھے کام کرئے نقصان نہیں اٹھا تا۔ اللہ تعالیٰ نے اس ندا کرہ کے بیان اور حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کی گفتگو کو درست قرار دینے کے لیے یہ سور د ناز ل اور حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کی گفتگو کو درست قرار دینے کے لیے یہ سور د ناز ل فرمائی۔

marfat.com Marfat.com

وجدتشميه

اوراس سورة کوسورة عصراس وجہ سے کہتے ہیں کہ اس کی ابتداء میں عصر کی قتم فر مائی کئی ہے۔ عصر کے دو معنے ہیں: ایک معنی زمانہ ہے کہ اس میں سے انبان کی عمر ہی ہے اورانسان کی عمر ایک انتہائی نفیس چیز اور ایک قیمی دولت ہے جس کی وجہ سے انبان سے دین اور دنیوی کمالات کا کسب ممکن ہوا۔ یہ اس کے سرمایہ اور راس المال کے قائم مقام ہے۔ لیکن اس میں عیب یہ ہے کہ خود بخودگم ہوکر چلی جاتی ہے اوراگر یہ صحیح عقائد اچھے اعمال اور روشن احوال حاصل کرنے میں صرف نہ ہوتو زرا نقصان اور خیارہ حاصل ہوتا ہے۔ اگر ان چیز ول میں صرف ہوئی تو اس کی وجہ سے ایک طویل ابدی عمر اور ایک لذیذ رائی زندگی کسب کی جاتی ہے۔ پس انبان کو اس جہان میں بھیجا گیا ہے اور سرمائے اور راس المال کے بجائے اسے ایک عمر دی گئی ہے۔ اس کی مثال برف فروش کی ہے کہ اس کی تجارت کا سرمایہ خود بخو دنقصان اور پھیلنے کے در پے ہے۔ اگر اس کے بدلے اس نے کہ اس کی تجارت کا سرمایہ خود بخو دنقصان اور پھیلنے کے در پے ہے۔ اگر اس کے بدلے اس نے کوئی قیتی چیز حاصل کر لی تو درست ہو۔ اور دنہ خمارہ اور نقصان موجود ہے اور یہ تجارت کوئی قیتی چیز حاصل کر لی تو درست ہو۔ اور دنہ خمارہ اور نقصان موجود ہے اور یہ تجارت کوئی قیتی چیز حاصل کر لی تو درست ہو۔ اور دنہ خمارہ اور نقصان موجود ہے اور یہ تجارت کی مثال کر بی تو درست ہو۔ اور دنہ خمارہ اور نقصان موجود ہے اور یہ تجارت کی مثال کر بی تو درست ہو۔ اور دنہ خمارہ اور نقصان موجود ہے اور یہ تجارت کی درسے ہے۔ اگر اس کے بدلے اس کی وربی ہے۔ اور دیہ تجارت کی دربی ہے۔ اور دربیل کی تھیں کوئی تو میں کوئی میں کہتھ کی قبل کی تو درست ہو۔ اور دربیل کی مثال میں تو دربیل کے دربیل کی مثال کر کی تو دربیل کی مثال کی مثال کر کی تو دربیل کی مثال کی تو دربیل کی مثال کر کی تو دربیل کی مثال کر کی تو دربیل کی مثال کر کی تو دربیل کی مثال کی تو دربیل کی مثال کر کی تو دربیل کی مثال کی تو دربیل کی دربیل کی تو دربیل کی تو

کہاس کی شم اُٹھائی جائے۔

اور شیخے حدیث میں آیا ہے کہ جس کی نمازِ عصرفوت ہوگئ وہ ایسا ہے کویا اس کا گھر یار بریاد ہوگیا۔

اور بعض نے کہا ہے کہ عصر ہے مراد حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا عہد مبارک ہے کہ آپ کی بعثت کی وجہ سے نفع ونقصان کا بازارگرم ہوا جس نے آپ کی غلامی کی ایسا نفع بایا کہ ابدالآ باد تک باقی ہے۔ اور جس نے نافر مانی کی اسے ایسا نقصان ہوا جس کی حد ہی نہیں۔ پس وہ زمانہ انوار اللہی کی کشرت کا متمانی علوم کے فیضان وُور پڑے ہوؤں کو قریب کرنے اور گناہ گاروں کو بخشنے کی وجہ سے ایسی عظمت رکھتا ہے کہ حضرت آدم علیہ السلام کی ابتداء ہے لے کراس وقت تک کسی زمانے میں اس کا سوال حصہ بھی وقوع یڈیر ہوانہ ہوگا اور کیا ہی اچھا کہا گیا:

خوشاعہدے کہ مردم آدم بے ساب راویدند غریب است ایں زمال گرسائی آدم شود پیدا بیسم الله الرّحمٰن الرّحیٰم

والعضر زمانے کی سم کہ جس میں سے انسان کی عمر ہے جو کہ سی عقائد اعمال صالحہ اور پاکیزہ حالات حاصل کرنے میں اس کے سرمائے کے قائم مقام ہے یا نمازِ عصر کے وقت کی سم ہے جو کہ دن اور رات کے اعمال میں نفع اور نقصان کے ظہور کا وقت ہے یا ہمارے رسول کر بم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے زمانے کی سم ہے جو کہ نورِ نبوت کے ظہور کا زمانہ اور ولایات کے تصلیح کا وقت ہے اس وقت جو بھی اس نور سے منور ہوا اس نے دائی نفع حاصل کرلیا جو اس نور سے محروم رہا اسے کلی خسار ااور ہمیشہ کا نقصان نصیب ہوا۔

marfat.com

وُورى اوراس كے غضب اور عذاب كاباعث بين تو خسارے يرخساره بره كيا۔

اِلَّا الَّذِيْنَ الْمَنُوُ الْمُرْجُولُوكَ ايمان لائے لِين انہوں نے اپنی عمرے فائدہ اُٹھايا اس ليے كہ ايمان معرفت كى ايك شم ہے اور وہ ابدى سعادت كا ذريعہ اور قرب البى اور فرشتوں كى درتى كاموجب ہے۔

دَعَهِلُو الصَّالِحَاتِ اور انہوں نے ایکھے اعمال کیے۔ اس لیے کہ نیک اعمال کی وجہ سے انہیں پندیدہ اخلاق حاصل ہوئے اور دنیا میں بابرکت حالات اور او نچ مرتبے اور آخرت میں بلند درجات نصیب ہوئے۔ پس انہیں نفع حاصل ہوا اور یہ سب کامل ہونے کرتے ہیں انہیں نفع حاصل ہوا اور یہ سب کامل ہونے کے مرتبے ہیں اگر انہوں نے ان کے ساتھ ساتھ کامل کرنے کا رُتبہ اور ہوایت و تعلیم دینے کا مقام بھی حاصل کرلیا تو دوگنا نفع کمایا۔ چنانچہ اس آیت میں کامل کرنے کے مرتبے کی طرف اشارہ فر مایا جارہا ہے۔

وَتَوَاصَوْابِالْحَقِّ اورانہوں نے ایک دوسرے کوشیح عقائد نیک اعمال اور ایٹھے اخلاق کی وصیت گی۔

دَتَوَاصَوْ ابِالصَّبْرِ اور ایک دوسرے کومبر کی تلقین کی۔ بینی نفس کوخواہشات سے روکئے نفس کو نیکیوں کی مشقت پر پابند کرنے اور مصائب اور بختیوں کے جوم کے وقت نفس کو رضا و تنلیم پر کاربند کرنے کی نفیحت کی تمام نیکیاں مبرکی ان تینوں قسموں کے تفس کو رضا و تنلیم پر کاربند کرنے کی نفیحت کی تمام نیکیاں مبرکی ان تینوں قسموں کے تفسیرے میں ہیں اور بیتمام گناہوں اور خواہشوں سے دُورر کھنے والی ہیں۔

حق اورصبر کی وصیت کی حکمت

اوران دونوں الفاظ لیمی حق اور صبر کو یہاں لانے میں اس بات کا اشارہ ہے کہ ارشاد کیل کا مرتبہ بمزلہ طب روحانی کے ہاور طب میں دو چیز دل کے سوا چارہ نہیں:
ایک تو دوا تجویز کرنا و در اپر بیز کا تھم دینا۔ پس و تق اصو ابالْ تحقی بمز لہ دوا کے ہاور تو اصو ابالْتھ بنے پر روحانی صحت کا تقواصو ابالَق بنو پر بیز بیان کرنے کا کنایہ ہے۔ ان دو تظیم امور کے بغیر روحانی صحت کا تصول محال ہے جب یہ دونوں کا مرانجام پائے تو روحانی طب کا کام درست ہو گیا دورار شاد و جیل کا پروگرام منظم ہوا اور اس پروگرام میں جونفع اور فائدہ حاصل ہوتا ہے اس مدا معال کا پروگرام منظم ہوا اور اس پروگرام میں جونفع اور فائدہ حاصل ہوتا ہے۔ اس کا کا مدا منظم ہوا اور اس پروگرام میں جونفع اور فائدہ حاصل ہوتا ہے۔ اس کا کا مدا منظم ہوا اور اس پروگرام میں جونفع اور فائدہ حاصل ہوتا ہے۔

حساب کی حدیے زیادہ اور قیاس کے گھیرے سے ہاہر ہے۔ صحابہ کیار'ائمہ مجہزرین اور مشاکنے طریقت کی عظمت

ای لیے صحابہ کبار علیہم الرضوان جن کے ارشاد و تھیل کی بدولت تمام اُمت صراطِ مستقیم پرگامزن ہے۔ اسی طرح ائمہ مجتبدین جن کے ندا ہب کی روزِ قیامت تک پیردی ہورہی ہے۔ اور طریقت کے خاندانوں کے مشائخ جن کی وصیتوں کے مطابق طالبین اور مریدین انتہائے دنیا تک عمل کرتے چلے جا رہے ہیں اور درجات قرب تک رسائی حاصل کر رہے ہیں' کے تواب کے برابر کوئی تواب نہیں اور یہ نفع کا مرتبہ کمال ہے کہ تھوڑی سی عربیں طویل صدیوں اور زمانوں کا ثواب سب کرلیا گیا۔

اور وصیت کا لفظ اگر چروف میں ایسی چیز کے ساتھ مخصوص ہے جس کا موت کے بعد تھم دیا جاتا ہے لیکن قرآن پاک کے عرف میں تاکیدی امر کو جگہ وصیت کا نام دیا گیا ہے۔ قال اللّٰهُ تعالیٰ وَوَصَّیْنَا الْإِنْسَانَ بِوَ الِدَیْدِ اِحْسَانًا اس لفظ کواس مقام میں وارد کرنے میں ایک باریک نکتہ ہاوروہ ہے کہ ارشاد و تحمیل کے مرتبے کا حصول لطیفہ نفس اور دوسرے لطائف کی فنا کے بعد ہے اور فانی میت کے تھم میں ہے۔ پس وہ جو تھم دے ویا وصیت ہے جو کہ اس نے مرنے کے بعد فرمائی ہے۔

سورهٔ همزه

سورہ ہمزہ کی ہے اس کی نو (۹) آیات سیس (۲۳) کلمات اور چھیانوے (۹۲)حروف ہیں۔

سبب نزول

اوراس سورۃ کے نزول کا سبب میہ ہے کہ کفار میں سے تین بد بخت یعنی عاص بن دائل سہی ولید بن مغیرہ اور اخنس بن شریق تعفی ہم مجلس میں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور اللہ ایمان کی بدگوئی کرتے اوران کے بارے میں زبان طعن دراز کرتے اوران میں سے الل ایمان کی بدگوئی کرتے اوران میں سے اخنس بن شریق تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے روبرہ بکواس کرتا آور بے حیائی کا مرتکب

marfat.com Marfat.com

ہوتا۔ان کے متعلق بیسورۃ تازل ہوئی۔

وجدتشميه

اورا سے سورہ ہمزہ اس لیے کہتے ہیں کہ بیاس امر پر دلالت کرتی ہے کہ جوشخص کمی آ بروریزی کرے اورلوگوں کے عیب تلاش کرئے ہلا کت اور عذاب کا مستحق ہے تو جو اللہ تعالی اور اللہ تعالی کے رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی عظمت کے خلاف کے قرآن مجید کی تکذیب اور اس کے احکام کے ساتھ عنادر کھے اس کا حال کیا ہوگا۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

وَیْلٌ اِنْکُلْ هُمَزَةِ بِاللّٰهَ وَاللّٰهِ وَاللّٰهُ وَاللّٰمُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰمُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰمُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰهُ وَاللّٰمُ وَاللّٰمُ

دوسری دجہ رہے کہ ہمزہ اسے کہتے ہیں جورو پر کوئی کرے جبکہ لمز ہ اسے کہتے ہیں جو پس پشت کے۔

تیسری وجہ بیہ ہے کہ ہمزہ وہ ہے جوآ تھے کے ساتھ اور سر ہاتھ اور ابرو کے اشارے سے لوگوں کی حقارت کرے۔ جبکہ لمزہ وہ ہے جو زبان کے ساتھ اس فعل منبع کا مرتکب ہو۔

بہرحال دونوں الفاظ معنوں میں ایک دوسرے کے قریب ہیں۔ اور کرار کا قصد لوگوں کی ہتک عزت سے بیخے کی تاکید ہے اوغالب طور پر بیفل شنیع نسب میں یا افعال میں طعن کرنے کی صورت میں ظاہر ہوتا ہے۔ چونکہ اس متم کے افراد مخلوق خداکی نظر میں لوگوں کو کر اقرار دینے اور انہیں ستانے میں مبالغہ کرتے ہیں۔اللہ تعالیٰ نے بھی ان کی جزا میں بیشنی کو لازم کرتے ہوئے ایک عذاب کا وعدہ فر مایا ہے جس کا پید ویل سے چاتا ہے اس نے کہ لغت عرب میں ویل کا معنی شدید اور جدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور جدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور جدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور جدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور جدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور جدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس میں ویلی کا معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔ اس معنی شدید اور حدانہ ہونے والی مصیبت ہے۔

اور جانا چاہے کہ اس کری عادت کی بنیا دلوگوں پر فخر چاہا ہے۔ اور غالب طور پر اس کا منشا مال کی کثرت ہے۔ اس لیے کہ اکثر لوگوں کا مال ان کی لیافت کے بغیر بی ان کے ہاتھ آتا ہے۔ اور وہ چاہتے ہیں کہ اس مال کے ساتھ دوسرں پر بڑائی اور برتری کا اظہار کریں۔ اور چونکہ بڑائی اور برتری جتلانا مال ہی میں شخصر نہیں ہے بلکہ عمدہ نسب طبعی حسن اعمال صالحہ اور اچھے اخلاق بھی اس کے اسباب میں سے ہیں۔ ناچار ان وجوہ میں سے مال داروں کی ان کے برابر والوں کے مقابلہ میں فرمت شروع کی جاتی ہے تاکہ وہ اپنے فخر جتلانے کی وجہ درست کریں اس مقصد کے لیے ہمزہ اور لمزہ کو اس صفت کے ساتھ فرمایا گیا ہے کہ:

آلَذِی جَمَعَ مَالَا وَعَدَّدَهُ وہ جس نے بنا مال جمع کرلیا ہے اورائے گن گن کر رکھا ہے گئے کا ذکر کرنے میں اس امر کا اشارہ ہے کہ وہ تقسیم کرنے اور خرچ کرنے کے لیے مال جمع نہیں کرتا بلکہ بخل کرتا ہے۔ اور اسے بار بارشار کرتا ہے۔ تاکہ اس میں سے کچھ کم نہ ہوجائے۔ تو اس میں حرص اور بخل دونوں چزیں اکشی ہوگئیں اس قتم کے لوگوں سے اگر بخل کی وجہ بوچی جائے تو کہتے ہیں کہ ہم زمانے کے حادثوں اور دن رات کی گردشوں کے لیے اموال سنجال کررکھتے ہیں اس لیے اس کے بارے میں بیارشاد ہور ہا ہے کہ:

یخسب آن مالک آخلک وه گمان کرتا ہے کہ اس کا مال اسے دنیا میں ہمیشہ رکھے گالین اس سے موت کے اسباب دُور کر دے گا۔ گلا ایسانہیں جیسا کہ وہ عقیدہ رکھا آ ہے اس لیے کہ دنیا کے پیدا ہونے کے آغاز سے ہی ہمیشہ مال دار ہوئے ہیں اور کوئی شخص بھی اپنی ذات سے موت کے اسباب کو دُور نہیں کر سکا۔ بلکہ بخل کے ہوتے ہوئے مال ک کشرت قیامت کے عذاب کی شدت کا باعث ہے۔ چنانچہ فرمایا جارہا ہے تین نبک تن یہ شخص ضرور بھینکا جائے گا جس میں برطلتی 'برزبانی 'حرص اور بخل جمع ہیں۔

نی الْحُطکیّة تو ژبنے والی آگ میں۔اس کی عادت تو ژنا ہے جبکہ ہے آگ اس شخص کے شیرازہ کوتو ژبنے اور بکھیرینے والی ہے۔اس لیے کہ آگ کا پہلا قبضہ صورت پر marfat.com

ہے جو کہ جلنے کے بعد انہائی فتیج ہوجاتی ہے۔ اس کے بعد گوشت اور کھال تک نوبت

ہمینی ہے اس کے بعد ہڈیاں توڑنے تک معالمہ پنچتا ہے۔ پس اس کی ذیب قائم رہ گ

نہ اس کا حسن و جمال جس مال کا نتیجہ یہ ہوا ہے ہمیشہ رہنے کے اسباب میں سے خیال

کرنا انہائی جماقت ہے چونک آ گ کا اس قدراٹر جو کہ لفظ حلمہ میں ذکر کیا گیا عناصر ک

آ گ ستاروں کی آ گ اور مزاج کی آ گ میں جو کہ تپ محرقہ میں ہوتا ہے مشترک ہوتا

ہے جبکہ حلمہ کی آ گ ان سب سے بڑی ہے اس لیے اس آ گ کی حالت کی صورت

بیان کرنے اور اس کے مل کا پچھ جلوہ ذکر کرنے کے لیے سوال و جواب کے طریقے سے

بیان کرنے اور اس کے مل کا پچھ جلوہ ذکر کرنے کے لیے سوال و جواب کے طریقے سے

ایک اور ارشاد ہور ہا ہے۔

وَمَا اَذُرَ اكَ مَا الْمُعطَبَةَ اور تو كيا جانتا ہے كہ وہ تو رُنے والى كيا ہے۔ يعنی وہ آگے عقل والوں اور حكمت والوں كى پہچان سے بالاتر ، ہاں ليے كہ ان كرو يك حرارت تين قسموں سے باہر نہيں ہے۔ يا عضرى ہے جيے آگ كى گرى۔ ما مروں كى ہے جيے سورج كى گرى يا مزاج كى ہے جيے بخار اور حركت كى مرؤ ۔ جمہ بيآ ك اسبب كى وجہ ہے نہيں تا كہ كى كے قياس ميں آئے۔

نَادُ اللّٰهِ مِي خدالَى آگــ بينى اس كفسب اور قبركى آگ ب الْمُوقَدَّةُ جوكه بندول ك كنابول باعتداليول اور باد بيول كساته جلائى من ب-

تک پہنچی ہے۔ وہاں سے باقی اعضاء تک جاتی ہے۔

اس لیے حدیث شریف میں وارد ہے کہ الحبی من فیح جھند یعنی بخارجہنم کی سانس سے ہے۔ نیز وارد ہوا ہے کہ الحبی حظ المومن من الناریعنی بخار آخرت کی آگ ہے مومن کا حصہ ہے۔ لیکن اس وعدہ شدہ آگ سے دو وجہ سے ہلکا ہے: ایک وجہ یہ کہ اس آگ سے دو وجہ سے ہلکا ہے: ایک وجہ یہ کہ اس آگ گ میں ناطقہ مجردات میں سے ہے اتنا متاثر نہیں ہوتا۔ دوسری وجہ یہ کہ اس آگ گ کے بخارات اور اس گرمی کا دھوال جسم کے مساموں سے باہر آجاتا ہے اور پیند آتا ہے کہ اس کا حال یہ ہے کہ:

اِنَّهَا عَلَيْهِ مُ مُوْصَدَةً تَحْقِق وه آگان پرسر پوش کی گئی ہے لیمنی ان کے اعضاء کے اندر بند کر دی گئی۔ کہ گرم سانس اندر سے باہر نہیں آتا اور محند اسانس باہر سے اندر نہیں آتا تا کہ کسی قدر تخفیف حاصل ہو۔ چونکہ بعض اوقات ہاتھ پاؤں مارنے اور جسم کو دیوار اور زمین پر پینجنے سے کسی قدر مسام کھل جاتے ہیں اور تخفیف حاصل ہوتی ہے'ان سے اتی طاقت بھی سلب کرلی گئی ہے اور فرمایا جارہا ہے:

فی عَبَدٍ مُنَدَدَةٍ بیسب کے سب لمے ستونوں میں لٹکائے ہوئے ہول گے اور انہیں رسیوں میں باندھ کرمضبوطی کے ساتھ جکڑا جائے گا تاکہ ہاتھ پاؤں نہ ماریں اور ان کی اندرونی گرمی کسی طرح بھی کم نہ ہو۔بعض مفسرین نے یول نقل کیا ہے کہ جہنم کی آگر کو اوپر سے ڈھا تک کراس سر پوش کے اوپر لمیے ستون ڈال دیں گے تاکہ کسی طرح بھی اس میں ہوا کا آتا ممکن نہ ہو۔والٹداعلم

سورهٔ فیل

کی ہے اس کی پانچ (۵) آیات شکس (۲۳) کلمات اور ننانوے (۹۹)حروف

. پرجه تسمیر

اور اسے سور و فیل اس لیے کہتے ہیں کہ اس میں اصحاب فیل کا واقعہ مذکور ہے وہ واقعہ م marfat.com

اللہ تعالیٰ کی قدرت کا لمدی علامات میں سے ایک ہے۔ اس بات پر دلالت کرتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کے قہر کے سب سے ادنیٰ سب کو حیوانات میں سے سب سے بروا جانور ہاتھی بھی برداشت نہیں کرسکا ہے۔ تو اس کے قہر کے اعلیٰ اسباب کو کب برداشت کیا جا سکتا ہے۔ نیز یہ واقعہ اس امر پر بھی دلالت کرتا ہے کہ جب اللہ تعالیٰ کے گھر کی بے حرمتی اس قدر قہر کا موجب ہوئی تو اس کے دین اور اس کے رسول پاک علیہ السلام کی بااد بی کا نتیجہ کیا ہوگا؟ اور یہ واقعہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی فولادت باسعادت کے نزدیک واقع ہوا تو گویا یہ واقعہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی نبوت کی علامات سے تعالیا سورة میں یہ واقعہ یا د دِلا یا گیا ہے تا کہ لوگ اس سے عبرت پر یں اور اس رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بہت سے اللہ تعالیٰ کا بینی المداوان تک پینی کے اور اس میں کی برکت سے اللہ تعالیٰ کی بینی المداوان تک پینی کے۔

(اقول و بالله النونیق - معلوم ہوا کے حضور سلی الله علیہ وآلہ وسلم کی برکات آپ کی ولادت باسعادت سے پہلے بھی جاری تھیں۔ بہی نہیں بلکہ حضرت آ وم علیہ السلام سے کر تاایں وَم بلکہ قیام قیامت اور بعد قیامت آپ کی برکات کا فیضان جاری و ساری ہے۔ چنا نچہ قاضی مظہری رحمتہ الله علیہ زیر آ یت یعنی قبل الحمد الله وسلام علی عبادہ الذین اصطفی رقم طراز ہیں لان ماوصل بالانبیاء والامد من الکر امات و دفع البلیات کان ببر کہ نورہ صلی الله علیه و آله وسلم یعنی انبیاء علیه و آله وسلم یعنی انبیاء علیه و آله وسلم یعنی حضور صلی الله علیه و آله وسلم یعنی مضور سلی الله علیه و آله وسلم یعنی دخور اوران کی جومشکلات و ورہوئی سب انبیاء علیه و آله وسلم کے نور کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلی حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ وسلم کے نور کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلی حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ وسلم کے نور کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلی حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ وسلم کے نور کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلی حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ وسلم کے نور کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلی حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ وسلم کے نور کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلی حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ و سام کی دورہ کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلی حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ و سام کی دورہ کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلیٰ حضرت امام احمد رضایر یلوی رحمت الله علیہ و آلہ و کا مورہ کی الله علیہ و آلہ و کا مورہ کی الله علیہ و کی مورہ کی برکت ہے۔ کیا خوب فرمایا اعلیٰ حضرت الله و کی مورہ کی دورہ کی مورہ کی دورہ کی دورہ

بنی ہے کونین میں نعمت میں رسول اللہ کی ہے خلیل اللہ کو حاجت رسول اللہ کی

لاورب العرش جس كوملا ان سے ملا وہ جہنم میں عمیا جو ان سے مستعنی ہوا سبحان اللہ-محمد محفوظ الحق غفرلہ)

واقعداصحاب قبل كاسب

اوراس واقعہ کا سبب بیتھا کہ بادشاہ نجاشی کی ملرف سے ابر ہدنام کا ایک عبثی بمن کا marfat.com

والی بن کرآیا۔اوراس نے یمن کے لوگوں کودیکھا کہ میسم نج میں اطراف واکناف سے نذرانے اور ہریے لے کرشہر کمہ کی طرف متوجہ ہوتے ہیں۔اس نے پوچھا کہ یہ کیا قصد رکھتے ہیں اور کہاں جاتے ہیں؟ جب لوگوں نے بیان کیا تو اس میں کفر کا غرور حرکت میں آیا اس نے تھم ویا کہ اس خانہ کعبہ کے مقابلے میں اس ملک میں ایک گھر بنا کیں۔ پس ملک میں ایک گھر بنا کیں۔ پس ملک میں کیا ہور ملک میں ایک گھر بنا کیں۔ پس ملک میں کے پایے تخت صنعاء کے شہر میں رنگین سنگ مرمرے ایک گرجا تھیر کیا گیا اور اسے قلیس کا نام دیا گیا۔ اوراس کے درو دیوار کوسونے اور جواہرات کے ساتھ مرصع اور مزین کیا گیا۔ اس گھر کے گوشوں میں بنوں کولباس فاخرہ اور فیمتی جواہرات کے ساتھ مرصع اور آراستہ کر کے نصب کر دیا گیا ، خوشبودار لکڑی کی انگیٹھیاں سلگنے لگیں اس کی دیواروں پر عطر وگا ب چھڑکا گیا اوراس سے اردگر دبھی انتہائی خوبصورت مکانات بنائے گئے اورا پی عطر وگا ب چھڑکا گیا اوراس سے اردگر دبھی انتہائی خوبصورت مکانات بنائے گئے اورا پی

اور بیصورتِ حال قریش اور مکه معظمہ کے باسیوں کو بہت نا گوارگزری۔ ای اثنا میں بنوکنانہ کے ایک آ دی نے بمن جا کر بادشاہ کے بال ملازمت اختیار کی۔ اوراس گھر میں جو گئا۔ جب اے اس گھر میں بے تکلف میں جھاڑو دینے اور فرش بچھانے پر متعین ہو گیا۔ جب اے اس گھر میں بے تکلف آ مدورفت کی اجازت کل کئی تو ایک رات وہاں قعنائے حاجت کر کے بھاگ گیا' صح کے وقت جبکہ لوگ اس نجاست آ لود گھر کے طواف کے لیے آتے ہیں اور اے نجاست سے ملوث و کھے کر متنفر ہو کر بھاگ جاتے ہیں اور چلتے چلتے بینجبر بادشاہ تک پہنچ گئی اس نے یہ کام کرنے والے کی تغییش اور تحقیق کی۔ آخر ثابت ہو گیا مکہ معظمہ کے رہنے والوں میں کام کرنے والے کی تغییش اور تحقیق کی۔ آخر ثابت ہو گیا مکہ معظمہ کے رہنے والوں میں سے ایک تخص بیکام کر کے بھاگ گیا ہے اس کے دل میں انتہائی غصہ آیا اور اس نے چا با کہ اس حرکت کے بدلے (معاذ اللہ) خانہ کعبر کی بے حرمتی کرے۔

اور وہ ای فکر میں تھا کہ ایک اور گل کھلا اور ساکنانِ حرم کے ایک قافلے نے. رات بسر کرنے کے لیے اس گھر کے قریب ہی پڑاؤ ڈالا۔ مبح کے وقت جب وہ کوچ کرنے کا ارادہ کر رہے تھے انہوں نے آگ جلا رکھی تھی۔ تیز ہوا چلی جس نے آگ اس گھر تک پہنچا دی جس سے اس گھر کے لباس اور زیورات جل مجئے اور دھو کمیں سے اس کے رنگین

marfat.com

نقش و نگار سیاہ ہو گئے قافلے والے اس حادثے سے ڈربتے ہوئے فرار ہو گئے۔ بادشاہ فی میں میں دیا کہ اس واقعہ کی تحقیق کے بعد بیتہ چلا کہ سے سرز د ہوا ہے۔ تحقیق کے بعد بیتہ چلا کہ سے حرکت بھی مکہ معظمہ کے رہنے والوں ہی سے وقوع پذیر ہوئی ہے۔ بادشاہ انتہائی غضب ناک ہوکر بے شارفوج اور بارہ (۱۲) ہاتھیوں کے ساتھ جن میں ایک کانام محود تھا جو کہ ہاتھیوں سے طاقتور اور بڑا تھا انسیب جو کہ ہاتھیوں سے طاقتور اور بڑا تھا انسیب دشمناں) خانہ کعبہ کو مسمار کرنے کی طرف متوجہ ہوا اور راستے میں جس شہراور جس قبیلہ پر اس کا گزر ہوتا اس شہراور اس قبیلے کے لوگ عاجزی اور زاری کرتے کہ اس کھر کے در پے نہ ہونا۔ اس جرم کے عوض تو جو چا ہے جم سے لے لے۔ وہ بالکل نہ مانا یہاں تک مکہ معظمہ کے تریب بنتی گیا۔

کد معظمہ کے رہنے والے اس ظالم کے ڈر سے فرار ہو گئے اور اپنے اموال اور عزت کے ساتھ بہاڑوں میں جھپ گئے گر حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے داوا عبدالمطلب مکہ شریف میں تبا تھے۔ جب آپ نے ایسے حالات دیکھے تو آپ بھی جران اور خوف زدہ ہو کر غیبی ایداد کا انظار کرنے گئے۔ کہ اچا تک جدہ کی طرف سے جو کہ سمندر کی بندرگاہ اور مکہ معظمہ سے مغرب کی طرف واقع ہے سبزرنگ کے جانور غول کے غول جوم کر کے آگئے اور ابر ہہ کے لئکر کی طرف متوجہ ہوئے۔ ان پرندوں میں سے ہر پرندے کے ہمراہ مسور سے ہوی اور چنے سے چھوٹے تین تین کئریاں تھیں۔ ایک کئری پرندے کے ہمراہ مسور سے ہوی اور چنے سے چھوٹے تین تین کئریاں تھیں۔ ایک کئری چوٹی میں اور دو کئریاں تھیں۔ ایک کئری کے اور دارہ کیاں تھیں۔ ایک کئری کے اور دارہ کیاں تھی کہ جس کے سر پر لگے اس کے پنچ سے نگل دیں اور ان سنگ ریزوں کی خاصیت یہ تھی کہ جس کے سر پر لگے اس کے پنچ سے نگل دیں اور درمیان میں سب بچھ جلا دیا اور یہ حادثہ وادی محسر میں چین آیا جو کہ مکہ معظمہ سے چھر (۲) کوں کے فاصلے پر ہے۔

اس حالت میں وہ انتظر اس وادی میں تھا اوران کامحمود نامی بڑا ہاتھی اس وادی میں زانو کے بل میشا رُکا ہوا تھا' آ مے قدم بالکل نہیں بڑھا تا تھا اور دوسرے ہاتھی بھی زکے ہوئے نے جب بھی ان ہاتھیوں کو یمن کی طرف متوجہ کرتے تو پوری کے ساتھ دوڑ نے ہوئے تھے جب بھی ان ہاتھیوں کو یمن کی طرف متوجہ کرتے تو پوری کے ساتھ دوڑ نے مساتھ دوڑ نے مساتھ دوڑ ہے۔

ساتھ جب بھی ان ہاتھیوں کو یمن کی طرف متوجہ کرتے تو پوری کے ساتھ دوڑ نے مساتھ دوڑ ہے۔

مساتھ دوڑ نے بیاری کے ساتھ دوڑ ہے۔

لکتے اور جب خانہ کعبہ کی طرف لاتے تو رُک جاتے اور زانو کے بل بیٹھ جاتے۔ بادشاہ فیل بانوں کو ڈانٹ ڈپٹ کر رہا تھا کہ بیسب تمہاری شرارت ہے تا کہتم جھے اس گھر کی عظمت کا معتقد بناؤ میں ان چیروں سے دھوکا نہیں کھا تا۔ اسی شور وغو غامیں تھے کہ جانور پہنچ مجھے اور انہوں نے ہاتھیوں اور رئیسوں سمیت پورے کشکر کو غضب الہی سے تہس نہس کر دیا جو مال ومتاع ہمراہ لائے تھے سب کا سب اس جنگل میں پڑارہ گیا۔

کہ معظمہ کے لوگوں نے جو کہ پہاڑوں پر کھڑے اس کشکر کا بھا گنا اوراس کی تابی
کا منظر دیکے رہے تنے ایک ذم بنچے اُر کر لوٹنا شروع کردیا۔ اور کانی مال اکٹھا کر لیا۔
قریشیوں کو جو دولت بلی تھی ای وجہ سے تھی۔ اور فہ کورہ سنگ ریز ہے حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بعثت شریفہ کے وقت تک بلکہ اس کے بعد بھی لوگوں کے گھروں میں تعجب اور عبرت کے لیے موجود تھے۔ چنا نچے محابہ کرام علیم الرضوان میں سے کثیر تعداد نے وہ سنگ ریز ہے دیکھے تھے اس واقعہ کے ایک ماہ بچیس (۲۵) دن بعد حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی ولادت باسعادت ہوئی اس سورة میں بیرواقعہ بیان فرمایا جارہ ہے اور قریشیوں کو مسلم کی ولادت باسعادت ہوئی اس سورة میں بیرواقعہ بیان فرمایا جارہ ہے اور قریشیوں کو مسلم کی جارہی ہے۔

بسم الله الرّحمن الرّحيم

آلڈ ترکیف فعل رہائے باضحاب الفیل کیا آپ نے نہیں دیکھا یارسول اللہ ملی اللہ علیہ وآلہ وہ کم کرآپ کی وردگار نے ہاتھی والوں کے ساتھ کیا سلوک کیا۔ یعنی اس فشکر کے ساتھ جوکہ ہاتھی کوآ سے کر کے خانہ کعبہ کومسار کرنے کے لیے آئے تھے۔ اور دیکھنے کے لفظ میں اس بات کا اشارہ ہے کہ جو چیز تو اتر کے ساتھ ٹابت ہو وہ و کیھنے کے لفظ میں اس بات کا اشارہ ہوتا اور دبل کے لفظ میں اس امر کا اشارہ ہے کہ بیٹھیم واقعہ آپ کی نبوت کی بنیاد ہا در اسے طاہر کرنے کا مقصد آپ کی رسالت کی پائیداری ہے۔ کویا ربوبیت الی نے جو کہ آپ کی طرف متوجہ ہے آسان کی طرف متوجہ ہے آسان کی طرف میں ہوا تو غیب سے کوئی ممانعت اور رکاوٹ چیش نہ آئی۔

آلفہ یکجعل گیدگھٹہ فئی تضلیل کیا اس نے ان کی بداند کئی کو گراہی اور بے حاصلی میں نہ لوٹا دیا یعنی خانہ کعبہ کے مقابلے میں دوسرا گھر بنانا اور رعایا کو اس کے طواف کا حکم دینا اس خانہ کعبہ کی عزت وحرمت کو ضائع کرنے کی ایک انتہائی قوی سازش تھی لیکن سب رائیگال گئی بلکہ انہیں سبکی پر سبکی ہوئی۔ اگر چہ عقل مندوں کو طویل کوشش کے ساتھ اس سلوک پر ضائع ہونے سے کافی عبرت حاصل ہوتی ہے لیکن ان لوگوں کے ساتھ اس سلوک پر اکتفاء نہ کیا گیا بلکہ انہیں آسان کی طرف سے سخت عذاب نصیب ہوا۔ چنانچہ فرمایا جارہا

دَادُسَلَ عَلَيْهِدُ اوران پر بیج طَهْرُ اابَابِیْلَ اُڑنے والے جانور جو کہ غول کے غول آرہے تھے اوراص لغت میں لفظ ابا بیل غول کے غول کے معنوں میں ہے اوراس کا واحد ابیل یا ابول یا ابالہ ہے واحد ستعمل نہیں ہے۔ قیاس کے ساتھ پہ چاتا ہے کہ اس کا واحد ابیل یا ابول یا ابالہ ہے اور عرف میں بیلفظ اس جانور پر بولتے ہیں جس کی صورت میں غیبی جانور سنگ ریز ہے اور جونکہ اصحاب فیل نے خانہ کعبہ کو مسمار کرنے کے لیے سب لیے ہوئے آئے تھے۔ اور چونکہ اصحاب فیل نے خانہ کعبہ کو مسمار کرنے کے لیے سب سے قوی جانور ہاتھی کو مقرر کیا تھا' ان کے جواب میں چھوٹے نا تو اس جانوروں کو کمزور ترین اسلے بعنی جھوٹے تا کہ اوگوں کو ترین اسلے بعنی جھوٹے چھوٹے سنگ ریز ول کے ساتھ ان پر مسلط فرما دیا تا کہ اوگوں کو بہتہ چل جائے کہ کمز ور ترین محلوث تا تی اللی کے ساتھ تو می ترین محلوق کو زیر کر لیتی ہے اس کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی ترین محلوق کی ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تو تائید اللی کے ساتھ تو می ترین محلوق کو زیر کر لیتی ہوئی کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی ترین محلوق کی ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی ترین محلوق کی ترین محلوق کی تو تائی محلوق کی تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تو تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تو تائید کے بغیر تو می ترین محلوق کی تو تائید کے بغیر تو تائید کی تو تائید کے بغیر تو تائید کی تائید کے بغیر تو تائید کی تائید کے بغیر تو تائید کی تائید کی

تَدْهِيهِهُ بِحِجَارَةً مِنْ سِجِيلٍ وہ جانور الشكريوں پرجمل كى جنس كے سك ريزے پينك رہے تھے اور جمل سكوگل كا معرب ہے يعنی وہ حملی منی جو كہ تخت ہوكر پھر جيئى ہوكئ ہو۔ اور اسے لغب ہندى ميں ككر كہتے ہيں اور ان پر عموں كغول ورغول آنے ميں حكمت تقى اس ليے كہ سنگ ريزے بھينكنے كے بعد الشكرى متفرق ہوكر دائي انئيں بھاگ جا ئيں ہے كہ سنگ ريزے بھينكنے كے بعد الشكرى متفرق ہوكر دائيں باكہ ہر بائيں بھاگ جا ئيں ہے كہ س ناچار جانوروں كو بھى متفرق اور منتشركر كے لائيں تاكہ ہر طرف بوراكام كريں اور سنگ ريزوں نے ان كے جسموں ميں اس صد تك اثر بيداكيا كہ طرف بوراكام كريں اور سنگ ريزوں نے ان كے جسموں ميں اس صد تك اثر بيداكيا كہ فرف بوراكام كريں اور سنگولي بس ان الشكريوں كو كھائى ہوئى گھاس كی طرح كرويا فقع حَدَ عَدَ فَدَ عَدَ اللّٰ ہوئى گھاس كی طرح كرويا

لینی وہ گھاس جسے چار پائے کھاتے ہیں اور پچھ باتی رہ جاتی ہے اور بیہ ہم کے اجزاء کا یہاں تک دگرگوں ہونے کا اشارہ ہے کہ شکل و ہیئت اور بنیاد قائم ندرہ اور بیتا ثیر بھی خلاف عادت ہے۔ گویا ان سنگ ریزوں میں زہر یلا پن پیدا ہو چکا تھا جو کہ جسم کے ساتھ لگتے ہی جسم کے اعضاء کو جدا جدا کر دیتا تھا اوراس کی خشکی سرایت کر جاتی تھی اور باہم تعلق اورات می ایک فرائل ہوجاتا تھا۔

اوریدواقعہ عذاب اللی کا ایک نمونہ تھا۔ اور چند خلاف عادت امور پرمشمل تھا۔
ہاتھیوں کا رُک جانا 'سمندر کی طرف ہے اس کثرت اور ججوم کے ساتھ پرندوں کا آنا جو
کہ ظاہری طور پر پرندوں کے رہنے کی جگہ نہیں ہے۔ اور اس واقعہ کے بعد بھی ان
پرندوں کو کسی نے نہ دیکھا۔ یہ سنگ ریز ہے کہ ان کی کان کا بھی پرتنہیں۔ تو ی تا ٹیر جو کہ
ان انتہائی مچھوٹے مجھوٹے سنگ ریزوں میں رکھی گئ تھی۔

سورهٔ قریش

کی ہے'اس کی چار (۲) آیات سرہ (۱۷) کلمات اور تہتر (۲۷) حروف ہیں اور قریش حفرت اساعیل علیہ السلام کی اولا دسے ایک قبیلے کا نام ہے جس قبیلے ہیں سے ہمارے رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تھے اور اکثر صحابہ کبار رضوان اللہ علیہ بھی ای قبیلے سے ہیں۔ اور بی قبیلہ معظمہ ہیں سکونت پذیر ہے۔ اور خانہ کعبداور چشمہ ذمریم کی فدمت پرانے زمانے سے آئیس کے بیرد ہے۔ ای لیے یمن شام اور عرب کے دیگر شہروں کے رئیس اور وہاں رہنے والے خانہ کعبہ کی عزت کی وجہ سے اس قبیلے کی تعظیم و شہروں کے رئیس اور وہاں رہنے والے خانہ کعبہ کی عزت کی وجہ سے اس قبیلے کی تعظیم و کھریم کرتے تھے۔ اور یہ جہال بھی جاتے' آئیس نذر و نیاز' مہمانی اور قربانی کے طریقے مصول نہ لیتا۔ چوراور ڈاکو بھی خانہ کعبہ کے ادب کا پاس کرتے ہوئے ان کے در پ نہ ہوتے۔ اس قبیلے کی ہمیشہ کی عادت تھی کہ یہ لوگ سردیوں ہیں یمن کی طرف سے چلے جاتے جو کہ اس فیلے کی ہمیشہ کی عادت تھی کہ یہ لوگ سردیوں ہیں یمن کی طرف سے چلے جاتے جو کہ اگر ما طاقہ ہے اور تجارت کے فوائد اور نذر و نیاز قبول کرتے اور گرمیوں ہیں جاتے جو کہ کہ مرام کی طرف کے اور بڑی بڑی تھیں کما کر لاتے۔ اس لیے کم معظمہ میں اس منام کی طرف کرتے اور بڑی بڑی تھیں کما کر لاتے۔ اس لیے کم معظمہ میں اس منام کی طرف کرتے اور بڑی بڑی تھیں کما کر لاتے۔ اس لیے کم معظمہ میں اس منام کی طرف کرتے اور بڑی بڑی تھیں کما کر لاتے۔ اس لیے کم معظمہ میں اس منام کی طرف کرتے اور بڑی بڑی تھیں کما کر لاتے۔ اس لیے کم معظمہ میں اس منام کی طرف کرتے اور بڑی بڑی تھیں کما کر لاتے۔ اس لیے کم معظمہ میں اس منام کی طرف کرتے اور بڑی بڑی تھیں کما کر لاتے۔ اس لیے کم معظمہ میں

ان کی گرربسر پوری فراخی سے ہوتی۔ باوجود یکہ مکہ معظمہ کا شہر پہاڑوں اور ریکتانوں کے درمیان واقع ہے۔ وہاں کی سرز مین بالکل خشک ہے وہاں کیجی باڑی اور درخت سرسبر نہیں ہوتے۔ اللہ تعالی نے اس سورۃ میں قریش کو یہ تعتیں یاد دِلائی ہیں۔ اور فر مایا ہے کہ اگرتم کوتاہ نظری کرو اور باری تعالیٰ کی ذات پاک کے عمدہ کمالات اور اس کی ہے ائبتا نعمور ہے۔ نعمتوں کو نہ بہچانو جن سے بام ثریا سے لے کرتحت الحری تک ساری کا نئات معمور ہے۔ اب اس عظیم نعت کو ضرور بہچانو جو کہ اس نے خانہ کھیہ کی برکت سے جہیں عطا فرمائی ہے اور اس کا شکریداداکرنے میں عادت کے مطابق استقامت افتیار کرو۔

وجدتتميه

اوراس کے اس سورہ کوسورہ قریش کہتے ہیں کہ اس سورہ میں خاص کر قریش پر احسان کا ذکر ہے۔ اور قریش پر احسان حقیقت میں یوری دنیا پر احسان ہے۔ اور ان ہے عبادت طلب كرنا كوياتمام بن آوم مدعادت طلب كرنا برمقبوليت من ان كامقام دوسری کتابوں کے مقابلے میں بمزلد قرآن کے ہے۔ اس اجمال کی تفصیل بدہے کہ جب ارادهٔ اللی کا ئنات کی اصلاح اور ظلم مخراور مناه دُور کرنے کے ساتھ متعلق ہوا تواس كام ك لي بهار مدرسول كريم ملى الله عليه وآله وسلم كوچنا ميا اورآب ك قلب مقدس ر بہلے اس خواہش اس خواہش کے لواز مات اور اس عظیم کام سے وابست علوم ومعارف القاء فرمائ محدلازم موا كه حضور ملى الله عليه وآله وسلم اس مهم كوجارى كرنے ميں اين قبیلے سے مددحاصل کریں۔اس لیے کہ سی مخصیت کے قبیلے واسلے اوساف اوراخلاق كى معرفت مى دوسرول سے آ كے ہوتے ہيں۔ اوراس شخصيت كے حالات يرجواطلاع البیس ہوتی ہے دوسروں کونبیس ہوتی۔ نیز اجنبیوں کی بدنسبت رہتے واروں میں فکری تو تیل ذہن کی مفائی ملاحیت کی نزد کی اور اسباب کا اجماع زیادہ ہوتا ہے تو کویا حضور صلی الله علیه وآله وسلم کا قبیله مشرف باسلام موسف کے بعد ساری اُمت کی بانست وبى تمم ركمتا ب جوكداً مت كى بنسب يغبرعليدالسلام كالحم موتاب-

ای کیے صدیت شریف میں فرمایا گیا ہے کہ تعلیو امن قریش ولاتعلیو ہائینی marfat.com

قرایش سے علم حاصل کرو اور انہیں نہ پڑھاؤ۔ نیز فرمایا گیا ہے کہ الناس تبع فی ھذاالشان بقریش لوگ اس شان میں قریش کے تابع ہیں۔ ای لیے قرآن مجیدان کی لغت میں نازل ہوا تا کہ جبلی سلقہ کے مطابق اس کی باریکیوں کو بجھ کر دوسر نے لوگوں کے سامنے بیان کریں۔ پس نبوت کا معنی تمام قریش میں بھرا ہوا اور پھیلا ہوا ہے۔ نیز عالم ازل سے بی مقدر تھا کہ ملت کی سرداری اور مملکت کی تھرانی ہجرت کی ابتداء سے لے کر ۲۵۲ سال تک جو کہ چنگیزی ترکوں قریش کی حکومت ختم ہونے کی تاریخ ہوئے انہیں کے ساتھ متعلق ہواور بنی آ دم کی جبلت ہے کہ دین و فد بہب میں رئیس کے تابع ہوتے ہیں تو حکمت کا تقاضا بھی یہی تھا کہ ان کی اصلاح کی کوشش کی جائے تا کہ دوسر نے لوگ چیارونا چاران کی اصلاح کے ساتھ موات کے ساتھ اصلاح کی کوشش کی جائے تا کہ دوسر نے لوگ جارونا چاران کی اصلاح کے ساتھ اصلاح کی کوشش کی جائے تا کہ دوسر نے لوگ کا سبب واضح ہوجاتا ہے۔

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ حضورعليه السلام كانسب اور قريش كامعنى

لایلاف گریش یہاں لام قمیہ ہے جیسا کہ للله لایو خرالاجل میں ہے۔
لیمی قریش کو اُلفت دینے کی قتم ہے۔ اور قریش نظر بن کنانہ کی اولاد کو کہتے ہیں جو کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے تیرہویں وادا ہیں۔ اس لیے کہ مرکارعلیہ السلام کا نشب مبارک یوں ہے کہ حضرت محمد رسول صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بن عبداللہ بن عبدالمطلب بن باشم بن عبدمناف بن قصی بن کلاب بن مرة بن کعب بن لوئی بن غالب بن فہر بن مالک بن نظر بن کنانہ اور جو مجمی نظر بن کنانہ کی اولاد سے ہے قریش میں وافل ہے اور اسے قریش کہتے ہیں۔ اور لغت میں قریش دریائی جانوروں میں سے ایک جانور کا نام ہے جو قریش کہتے ہیں۔ اور لغت میں قریش دریائی جانوروں میں سے ایک جانور کا نام ہے جو کہ مسب جانوروں کو کی کرکر کھالیتا ہے اور سب یر غالب ہے۔

قبائل پر زبان کی فصاحت شجاعت سخاوت بلندی ہمت اورنسب کی صحت کی وجہ ہے۔ عالب تھااس جانور کے نام پرقریش کہتے ہیں۔

إِيْلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ان كامردبول اوركرميول ميس مفركا خوكر مونا جس كاانبيس تيمن اورشام كى طرف اتفاق ہوتا تھا اوراس امر كی قتم أٹھانا اس بات كا اشار ہ ہے کہ اس حمن میں ان کی روزی کی فراخی کے لیے ایک عجیب تدبیر الہی جلوہ گر ہوئی ہے۔ اور بیاللہ تعالیٰ کی حکمت کے کمال پر ولات کرتا ہے۔ اس لیے کہ جب سمی شہر کے باس اس شہرکے گردونواح سے زمین کی قط سالی پہاڑ کی سنگلاخی اور ہوا کی خشکی کی وجہ ہے این روزی نه کماسکیس تو ویران مونا شروع موجاتا ہے۔ اور وہاں کےلوگ روزی کی تلاش میں ہرطرف نکل جاتے ہیں۔ پس اس شہر کی آبادی کواس عجیب تدبیر کے ساتھ محفوظ رکھا گیا ہے کہ وہاں اینے نام پر گھر نقیر فرمایا گیا اور لوگوں کے دِلوں میں اس گھر کی عظمت ڈ ال دی گئی۔ اور اس کھر کے مجاوروں کو سردیوں اور گرمیوں کے سفری طرف ماکل کر دیا گیا تا کہ ہرست اور ہر علاقے ' ہرموسم میں مناسب چیزیں کما کر اس شہر میں لائیں اس بابرکت مقام میں ان کی اصلی رہائش ختم نہ ہواوراس وجہ سے کہ ہمیشہ سفر میں ہوتا و لی طور پر پریشان ہونے کا باعث ہے خصوصاً شدید سردیوں اور موسم گرما کی گرمی کے وقت اس قبیلے کواس مشقت سے بالکل ملال نہیں ہوتا تھا'بدایک خلاف عادت معمول ہوگیا اوراس لائق ہوا کہ اس کی قتم اُٹھائی جائے۔

نیز سردیوں اور گرمیوں میں ان کا سفر کا عادی ہونا حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بعث شریفہ کے بعد دین کی سربلندی کا موجب ہوگیا۔ کہ پہلے انہیں ہجرت میں وطن چھوڑ نا نا گوار نہ ہوا اس کے بعد انہیں وُور دوارز علاقوں کی طرف جہاو کے لیے ذکھنا بھی آسان ہوگیا۔ اس لیے انہوں نے مدینہ عالیہ سے کا بل تک قسطنطنیہ تک اور اندلس تک تسان ہوگیا۔ اس لیے انہوں نے مدینہ عالیہ سے کا بل تک قسطنطنیہ تک اور اندلس تک پھیل کر دین کی تروت کی ۔ نیز ان دائی سفروں میں آنہیں لوگوں کے اخلاق کا تجربہ اور عاصل عادات کا امتحان پورے طور پر حاصل ہوا۔ جب آنہیں وین اور دینوی سرداری حاصل ہوئی تو یہ بات آئیں نہایت مفید اور کارگر ثابت ہوئی۔ لہذا تھوڑ سے عرصے میں ان سے کورے میں ان محل ہوگی تو یہ بات آئیں نہایت مفید اور کارگر ثابت ہوئی۔ لہذا تھوڑ سے سے عرصے میں ان محل ہوگی تو یہ بات آئیں نہایت مفید اور کارگر ثابت ہوئی۔ لہذا تھوڑ سے سے عرصے میں ان محل کے اس کا محتوں کی سے میں ان محتوں کی سات مفید اور کارگر ثابت ہوئی۔ لہذا تھوڑ سے سے عرصے میں ان محتوں کی محتوں کی محتوں کی محتوں کی محتوں کو محتوں کی محتوں ک

فَلْیَعْبُدُواْرَبَ هٰذَا الْبَیْتِ تو جاہیے کہ قریش اس کے گھروالے کی عبادت کریں۔
اس لیے کہ لوگوں کے ولوں میں ان کی ہے سب عظمت۔ بزرگ ۔ ان کی روزی کی فراخی ۔ اور
ان کا دشمنوں سے بے خوف ہونا سب کچھاس گھر کی مجاوری اور اس آستانے کی در بانی کی
سرکت سے ہے۔ اور جب دوسرے لوگ اس سعادت آب آستانے پر رہنے والوں کے
ساتھ اس طرح تعظیم کے ساتھ چیش آ کیں تو ان کے لیے لازم ہے کہ اس گھر کے مالک کو
تعظیم کے انتہائی درجات کے ساتھ خصوص کریں ای لیے یہاں دَبّ هٰذَا الْبَیْتِ لایا گیا۔
گویا اشارہ فرمایا جارہا ہے کہ کوتاہ نظری کے طور پر اگر چہ اللہ تعالیٰ کی رہو بیت تمہاری نظر سے
اوجسل ہے لیکن اس گھر کی عظمت اور بزرگی تو بالکل ظاہر اور روشن ہے۔ اگر اللہ تعالیٰ کو اس
گھر کا مالک جانے ہوئے اس کی عبادت کروتو بھی حق بنتا ہے۔

الَّذِي اَطْعَمَهُمْ هِنْ جُوْعٍ جَس نے انہیں بھوک میں کھانا دیا ہے لیعنی ان کا وطن جو کہ نا قابل کا شخصہ ہے اس قابل تھا کہ وہاں رہنے دنا قابل کا شت زمین اور کسی بھی سبزے سے خالی صحرا ہے اس قابل تھا کہ وہاں رہنے والے بھوکوں مرتے اگر خانہ کعبہ کی تقمیر کی خدائی تدبیر جلوہ گرنہ ہوتی تو وہاں کے لوگ روٹی کا منہ ندد کیھتے۔

ميسوال ياره

، دریے نہ ہوتے۔اور بعض نے کہا ہے کہ مکہ معظمہ میں امن کی قسموں میں سے ایک امن کوڑھ کی بیاری سے ہے کہ مکم معظمہ کے رہنے والوں کوکوڑھ بالکل نہیں ہوتا جیسا کہ عرصہ ہائے دراز سے تجربہ ہوا ہے۔ واللہ اعلم

سورهٔ ماعون

کی ہے اس کی جد (۲) آیات مجیس (۲۵) کلمات اور ایک سوپیس (۱۲۵) حروف

اوراے سورۃ الماعون اس کیے کہتے ہیں کہ ماعون نہ دینا جو کہ احسان کا ادنیٰ مرتبہ ہے جب حجاب كاموجب اورسزا كاباعث ہے تو واجب حقوق كوترك كرنے سے خواہ خدا تعالى سے متعلق ہوں یا مخلوق سے بہت ڈرنا جا ہے۔ اوران امور سے ڈرنا قرآئی مقامد میں سے ہاس سورة كانصف كفاركے بارے ميں ہاور دوسرانصف منافقوں كے بارے ميں

اوراس کے نزول کا سبب رہے کہ ابوجہل ملعون کی عادت ریمنی کہ جب کوئی مال دار بارہوتا تو اس کے سر ہانے آ کر بیٹ جاتا اور کہتا کداسیے بیموں کومیرے سپروکر دے اور اسين مال سے ان كا حصد مير سے حوالے كروسے تاكد بي ان كى يورى خبر كيرى كروں اوران كا ہرتتم کا خیال رکھوں اور دوسرے ورثاوان کے بارے میں ظلم اور زیادتی ندکر عیس اور جب ان کے مال پر قابض ہو جاتا تو تیموں کواہیے دروازے سے بمکا دیتا۔اوروہ بھو کے اور نکھے تکلی کوچوں میں گربیزاری کرتے پھرتے۔ای فتم کا ایک پنیم نظے سر ذکیل ورسواحنور ملی النّدعليه وآله وسلم كي حضوراس ملعون كى فرياد لايارة ب اس ينتيم كى ول جوئى كرت موسة اس معون کے پاس آئے اور اسے قیامت کی ہوجہ مجھ سے ڈرایا۔اس معون نے اس وعظ و تقیحت کے مقالبے میں روز جزا کی تکذیب شروع کر دی۔حضورعلیہ السلام رنجیدہ خا لمر ہوکر وولت خاند پروالی تشریف سلے آئے اور سے مورة نازل مولی۔

تغیر مزیزی مست میست میست (۵۵۳) میست تیسوال پاره

بسيم الله الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

اَرَءَ نِتَ الَّذِی اِیکَیْنِ بِالدِیْنِ یا رسول الله صلی الله علیه وآلہ وسلم کیا آپ نے اسے معلوم کیا ہے جو کہ دین کی تلذیب کرتا ہے اور جھوٹ بجھتا ہے۔ یعنی ملت اسلام کی یا جزا کی۔ اور دین دونوں معنوں میں آیا ہے اور یہاں دونوں معنوں کی مخبائش ہے اس لیے کہ بیموں اور تا تو انوں برظلم کرنا اور فقیروں اور منگوں پر رخم نہ کرنا تکذیب ملت کی بھی علامت ہے کہ ملت اسلام میں جگہ جگہ اس مقصد کی تاکید کی گئی ہے اور جزا کا یقین نہ کرنے کی بھی نثانی ہے اس لیے کہ جو جزا کا عقیدہ رکھتا ہے خدا ہے ڈرتا ہے اور جوخدا سے ڈرتا ہے ایس کا منہیں کرتا۔ اور اس انداز سے خطاب کرنے میں اس بات کا اشارہ ہے کہ اگر کوئی جا ہے کہ دین کے جھٹلانے والوں کو علامت سے بہچان لے اسے چا ہے کہ ان علامات کا مشاہدہ

فَذَالِكَ الَّذِي يَدُعُ الْيَتِيْمَ لِى وه وين كوجمالا نے والا وہ ہے جو كہ يتيم كوزور سے وُ مُتكارتا ہے۔ لین سینہ زوری كے ساتھ يتيم كاحق كھاتا ہے۔ اور يتيم سب سے زيادہ كمزور ہے۔ اور جو جزا كا اعتقاد ركھتا ہؤ اپنے خاص مال سے لوگوں پر احسان كرتا ہے خصوصاً كمزوروں پر پھر بالخصوص يتيموں پر كہان ميں كمزورى كے اسباب پورے طور پر ثابت ہيں اس ليے كہ وہ كم عربى ہوتے ہيں اور كسب اور روزى كی تلاش كی قوت نہيں رکھتے اور حیلہ اور قبیر نہيں جانے اوركوئى والى وارث بھى نہيں رکھتے جوان كے كام سرانجام دے۔

اوراگراحیان کرنے ہے گیا گزراہوتو کم از کم کسی کی جن تلفی تو بالکل جائز قرار نہیں دیتا بالفرض اگر کسی کا حق لے تو اس کا حق لے گا جو کہ دشمنی اور مقابلے کی طاقت رکھتا ہو۔ نہ کہ کمزور خصوصاً نا تو ال بیتیم کا جو کہ بارگاہ خداوندی کے بغیر کوئی فریا درس نہیں رکھتا تو جب کوئی فخص اس قسم کے مسکین اور کمزور پر بے تحاشہ ظلم کرنے کا عادی ہوئی بینا خداتعالی سے نہیں ڈرتا اور اعمال کی جز اکا عقیدہ نہیں رکھتا۔ اس علامت کے بعدار شاوفر مایا کہ بیتیم کو دُھتکارنے کی علمت اس ملعون میں بخل اور حب مال کا اس حد تک بایا جانا ہے کہ

وَلَا يَهُ مَن عَلَى طَعَامِ الْمِسْرِكُيْنَ اور وه سي كُوسَى فَقَيْرِ كُو كَمَانَا وين كَا كَيْرَ فَهِي

کرتا۔ بیاس بات کا اشارہ ہے کہ منگوں کو اپنے مال سے دینا تو اس سے کیا ممکن؟ دوسروں سے منگوں کو کھانا دینا روانہیں رکھتا۔ تو اس مخص کا بخل بہت او نچے درج تک پہنچا ہوا ہے۔ اور پتہ جلا کہ بیٹیم کو دُھتکارنا بخل اور حب مال کی وجہ ہے ہے نہ کہ بیٹیم کی مصلحت اور اس بیٹیم کے مال کی ذمہ داری کے طریقے ہے۔

اور جب معلوم ہوگیا کہ پتیم کو دُھتکارنا اور منگوں کو کھانا نہ دینا باوجود اس کے کہ یہ دونوں عمل دین کے اوپر کے درجے کے نہیں ہیں اور دین کی تکذیب کی علامت ہوئے تو جو لوگ دین کے اعلی درجات جیسے نماز اور زکو ہ میں بخل کرتے ہیں اور بخل ڈالتے ہیں تو ان کی حالت زیادہ واضح ہوگی۔ اس لیے فرمایا گیا حالت زیادہ فراب اور دین کے متعلق ان کی تکذیب زیادہ واضح ہوگی۔ اس لیے فرمایا گیا فو کئی آئی تو نماز کے مکلف ہیں فو کی آئی اور کھر کے درمیان فرق کرنے والوں پرافسوس ہے بیعنی جونماز کے مکلف ہیں اور نماز اسلام اور کفر کے درمیان فرق کرنے والا ہے۔

اللّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلُوتِهِمْ سَاهُوْنَ وہ نماز ادا کرنے والے جوکہ اپنی نمازی حقیقت سے غافل ہیں نہیں جائے کہ نمازکس کی مناجات ہے اور نمازکا مقصد کیا ہے؟ ورنہ لوگوں کے سامنے نماز پڑھنا اور جب موجود نہ ہوں تو ترک کر دینا اور ای طرح ضروری مصروفیت سے فراغت کے وقت مصروفیات سے فراغت کے وقت نمازیاد رکھنا اور دنیوی مہمات ہیں مصروفیت کے وقت فراموش کر دینا یا بعض ارکان میں حضور قلب کے ساتھ اداکرنا اور بعض ارکان میں وساوی و خطرات کے چیچے پڑ جانا ان سے سرز دنہ ہوتا۔ اس لیے کہ نماز کی حقیقت ولی تعظیم کے ساتھ وخطرات کے چیچے پڑ جانا ان سے سرز دنہ ہوتا۔ اس لیے کہ نماز کی حقیقت ولی تعظیم کے ساتھ وخطرات کے کہ خواس قواس قوتوں اور اعضاء کو کام میں لگا دینا ہے اور اس معنی میں ان فراصلوں کی کوئی مخوائش نہیں۔

دَ اللَّهِ يَنَ هُدُ يُرَآءُ وْنَ وه لوگ جو كه تمام عبادتوں اور نيكيوں ميں اپنا و كھاوا كرتے ہيں - يعنی انہوں نے صرف اپنی نماز كوئى برباد نہيں كيا ہے بلكہ وہ رياء اور سمعه كی وجہ ہے اپنے تمام اعمال ضائع كرتے ہيں۔ اور رياء شرك كا ايك مخفی شعبه ہے وو وجہ سے قوى ہے:
ايك بيرياء كرنے والالوگوں كو خدا تعالی سے زيادہ عزيز اور بزرگ قرار ديتا ہے۔ دوسرى بيا كي بيرياء كرنے والالوگوں كو خدا تعالی سے زيادہ عزيز اور بزرگ قرار ديتا ہے۔ دوسرى بيا كرنے بيرى نيكى ميں شرك كرتا ہے جو كہ تو حيد واخلاص كا مقام ہے۔ نه كه استعانت واستمد او

میں جو کہ دنیوی امور کے ساتھ متعلق ہے۔ پس وہ حقیقت کفر کی سب سے زیادہ سخت سے اللّٰہ تعالیٰ ہمیں اس پناہ بخشے۔

وَیَهُنَعُونَ الْمَاعُونَ اور وہ ماعون نہیں دیتے اور ماعون کی تغییر میں اختلاف ہے۔
اکثر صحابہ کرام علیہم رضوان اور تابعین سے مروی ہے کہ ماعون زکو ہ ہے اور ریا کار کے لیے
لازم ہے کہ مانع زکو ہ بھی ہوتا ہے اس لیے کہ دوسرے واجب اخراجات جیسے بیوی اولا د '
بھائی ' قریبیوں ' مہمان اور منگوں کے حقوق سب کے سب بندوں کے ساتھ متعلق ہیں کہ
لوگوں کے سامنے کچہریوں میں ان کا مطالبہ کرتے ہیں 'رسوائی کے ڈرسے چارونا چاران کی
اوائیگی کرتے ہیں جبکہ زکو ہ خالص حق خداوندی ہے اور جب وہ خداتعالی کو کسی شار میں نہیں
لاتا تو اسے کیا اواکرے گا۔

اور بعض نے کہا ہے کہ ماعون سے مرادگھر کا سامان مانگنے پر دینا ہے جو کہ پڑوسیوں اور ضرورت مندوں کو دینے کا رواج ہے جیسے پتیلا 'پیالہ سوئی ' دھا کہ ڈول ' کدال ' کلہاڑی۔ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے پوچھا گیا کہ ماعون کیا ہے؟ فرمایا پانی ' نمک اور آ گ ۔ نیز حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ہے کہ جو کسی کوآ گ دے گویا اس نے اس آ گ سے چھنے والی ہر چیز اے دے دی اور نمک بھی ای طرح ہاور جو کسی کوالی جگہ پانی دے جہال پانی قیمتی اور پانی کا قط نہ ہوگویا اس نے غلام آزاد کیا ہواور اگر ایسی جگہ پانی دے جہال پانی قیمتی اور پانی کا قط نہ ہوگویا اس نے غلام آزاد کیا ہواور اگر ایسی جگہ پانی دے جہال پانی قیمتی اور پانی کا قط نہ ہوگویا اس نے مردے کوزندہ کردیا ہو۔

سورهٔ کوثر

کی ہے اس کی تین (۳) آیات ٔ ہاراں (۱۲) کلمات اور بیالیس (۴۲) حروف ہیں۔ سبب نزول

اوراس کا سبب نزول بی تھا کہ اُم المومنین حضرت خدیجہ رضی الله عنہا سے حضور صلی الله علیہ وآلہ وسلم کے دوشا ہزاد ہے حضرت قاسم اور حضرت عبدالله تھے جن کے لقب طیب اور طاہر جیں اور ان دونوں صاحبزادوں کا حجوثی ہی عمر میں بے در بے انقال ہو گیا۔ (اقول Marfat.com

وبالله التوفیق-ابن سعد کے مطابق حضرت فدیجہ سے حضور علیہ السلام کے دو صاحبزاد ہے
ہیں قاسم عبدالله اور جبکہ طیب و طاہر دونوں القاب حضرت عبدالله کے ہیں اور نورالاصار کے
مطابق طیب و طاہر ایک اور صاحبزاد ہے کا نام ہے جبکہ صاحبزاد یوں کے نام یہ ہیں: حضرت
سیدہ زینب رقیہ اُم کلاؤم اور خاتون جنت فاطمہ الزہراء رضی الله عنہم ۔ نیز آ ب کے ایک
صاحبزاد ہے کا نام ابراہیم ہے جن کی والدہ ماریة بطیہ رضی الله عنہا ہیں)

کفار نے طبعنے کے طور پر حضور علیہ السلام کی شان میں ابتر کا لفظ بولا یعنی ان کی نسل ختم ہوگئی اور ان کے بعد کوئی ایسانہیں ہے جو کہ ان کے دین کو قائم رکھے اور قریب ہے کہ ان کا دین ختم ہو جائے۔اللہ تعالیٰ نے آپ کے قلب مبارک کی تسلی کے لیے بیسورۃ اُتاری۔ وجہ تسمیمہہ

اورا سے سورہ کوڑاس لیے کہتے ہیں کہ اس میں کوڑ کا ذکر ہے اور وہ ذکر قیامت کے دن حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی انتہائی عظمت پر ولالت کرتا ہے۔ کہ تمام اولین و آخرین اور انبیاء ومرسلین علیم السلام پیاس کی حالت میں آپ کے حوض کے تاج ہوں مے۔ کوڑ کا معنی کوڑ کا معنی

اور لغت میں کور بہت ی چیز کو کہتے ہیں ہے کھرت سے مشتق ہے۔ ایس بے تار بیٹوں کو شال ہے۔ جو کہ حضور علیہ العسلوۃ والسلام کو عطافر مائے محے۔ اور وہ بیٹے دوقعموں پر ہیں۔ صوری بیٹے اور دونوں کی کھرت اس حد تک ہے کہ انبیاء علیم السلام میں سے صوری بیٹے اور دونوں کی کھرت اس حد تک ہے کہ انبیاء علیم السلام میں سے کسی کواس کا سوال حصہ بھی ندملا۔ نیز بے بناہ علم کوشامل ہے اور اس اُمت میں علم کی کھرت بہت نظر آر بی ہے اور کسوس ہورہی ہے۔

ان علوم کابیان جن کی اس أمت سے پہلے کسی کوخرن تھی

اس کے پہلوں کے علوم یعنی ہونانیوں فارسیوں اور ہندیوں کے علوم سب کے سب ان تک پہنچ۔ اور انہوں نے ان علوم کی اس طرح تحقیق و تنقیح کی ہے کہ ان علوم کے وابستگان کو بھی میسر نہ ہو کی تھی اور دیگر تازہ اور نے علوم جیسے نوئ صرف معانی بیان تغییر مسلم معانی بیان تغییر مسلم کے استقال کو بھی میسر نہ ہو کی تھی اور دیگر تازہ اور نے علوم جیسے نوئ صرف معانی بیان تغییر مسلم کے استقال کو بھی میسر نہ ہو کی تھی اور دیگر تازہ اور منظم مسلم کے اس معانی بیان تغییر مسلم کے اس معانی بیان تغییر مسلم کے اس معانی بیان تغییر کے اس معانی بیان کے اس معانی بیان تغییر کے اس معانی بیان تغییر کے اس معانی بیان کے اس معانی کے اس معانی بیان کے اس معانی بیان کے اس معانی کے اس

حدیث اصول ُ فقداور حقائق ومعارف کے علوم جوانبیں عطا ہوئے 'پہلوں کوان کی خبر تک نہ تھی۔

نیز بے شارا کال بے شارخزانوں اور بے شار بادشاہیوں کوشائل ہے جواس اُمت کو عطا ہو کیں۔لین عرف میں کوثر کا لفظ اس حوض کے ساتھ خاص ہو گیا ہے جو کہ قیامت کے دن محشر میں حضور علیہ السلام کوعطا فر مایا جائے گا۔اور در حقیقت وہ حوض خیر کیٹر اور اس با کمال وسعت کا نمونہ ہے جو کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ مخصوص ہے۔ای وجہ سے کہتے ہیں کہ قرآن کا کوثر قرآن کا سمجھنا ہے۔ نیز کہا گیا ہے پانچ (۵) وقت کی نماز ہے۔ یہ کی میں کہتے ہیں کہ قرآن کا کوثر قرآن کا سمجھنا ہے۔ نیز کہا گیا ہے پانچ (۵) وقت کی نماز ہے۔ یہ کی ہوگی۔

اور جو پھوا حادہ صححہ میں آیا ہے اس کے مطابق حوض فدکوراس نہر سے پانی لیتا ہے جوکہ جنت میں ہے اور وہ نہر بھی حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے ساتھ حوض ہے اس کا نام بھی کوڑ ہے اور معراج کی رات وہ نہر حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو دِکھائی گئی جس کی فراخی ایک مہینے کی راہ کے برابر ہے۔ اس کے کناروں پر کھو کھلے مروارید کے فیے کھڑے کیے گئے ہیں۔ اور اس نہر کے کنارے آسان کے ستاروں کی تعداد کے مطابق سونے اور چا ندی کے برتن چنے گئے ہیں اور اس نہر کے اردگر دور خت اُ کے ہوئے ہیں جن کے شنے زریں ہیں اور شافیس زمرد کی ہیں۔ اور اس نہر کی گزرگاہ مروارید اور یا قوت ہیں اس کی مٹی کستوری سے شافیس زمرد کی ہیں۔ اور اس نہر کی گزرگاہ مروارید اور یا قوت ہیں اس کی مٹی کستوری سے زیادہ خوشبودار اس کا پانی شہد سے زیادہ بیٹھا وودھ سے زیادہ سفید اور برف سے زیادہ خوشار الآباد تک نہ بھو لے اور ہیاس میں سے جوا یک گھونٹ پی لے اس کی لذت اور صلاوت کو اہدا لآباد تک نہ بھو لے اور ہیاس نہ گئے۔

بِسُمِ اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

پیش نظر نبیں۔ ای لیے تاکیدا لفظ اَعْطینا میں پھر منعم کا ذکر دوبارہ فرمایا گیا۔ کویا اس بات کا اشارہ ہے کہ آپ کی نگاہ بلند ہے اوران چیزوں پر نبیس پڑتی لیکن چونکہ یہ چیزیں ہماری عطا کی گئی ہیں اس لئے واجب التعظیم ہیں۔

فَصَلِّ لِدَبِّكَ تُو آپ اس نعمتِ عظمیٰ كے شكريہ كے طور پراپنے پروردگار كے ليے نماز اداكر يں اور اگر چے شكر كے مقام میں جوعبادت بھی ہو مقبول ہے ليكن نماز ايك اليي عبادت ہے كہدنيا میں کوژ كانمونہ ہے۔

نماز کوثر کانمونہ ہے

اس میں پروردگار کی مناجات شہد سے زیادہ شیریں ہے۔ اس میں جونیبی انوار جیکتے
ہیں دودھ سے زیادہ سفید۔ اس میں جو یقین مانا ہے ہرف سے زیادہ شندا۔ اور نماز پڑھنے
والے پر جولطف اور اُنس نازل ہوتا ہے مکھن سے زیادہ نرم ہے۔ اور اس میں جوسنتیں اور
مستخبات محیط ہیں ' زمرد کے درختوں کی طرح معنوی زیدگی کے سرسنر ہونے کے آثار ہیں۔
اور ہرزکن میں جواذ کاراور تبیجات مقرر کی گئی ہیں سونے چاندی کے برتنوں کی طرح ہیں کہ
محبب اللی کی شراب ان کے ذریعے ایک ایک گھونٹ باطن میں جاتی ہے اورشوق کی پیاس کو
سکون بخشتی ہے۔

اور یہاں لربك فرمایا گیا ہے۔ لنانہیں فرمایا گیا تا كداس بات كا اشارہ ہوكہ عظمت ذات كے مقام كے شایال كى سے شكر ہوئى نہیں سكتا۔ اور ہرانسان كے شكر كی انہا ہے كہ اس شخص كی نسبت سے اللہ تعالی كی ربوبیت كے مقام كے مقابل ہے اور چونكہ كور حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم كے شاہراوے كے بدلے عطافر مایا گیا الازم ہوا كہ بیٹا وہے كے شكر كی جنس سے آب سے ایک اور شكر طلب كیا جائے۔ لہذا فرمایا گیا:

وَانْحَوُ اور قربانی وی۔ جس طرح کہ دوسرے لوگ بیٹا دینے کے بعد عقیقہ قربان کرتے ہیں۔ اور نح اور ذن کی حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی کے شکر کے مقام میں مال مرتبہ اور دیکر پہندیدہ چیزیں صرف کرنا لوگوں کا معمول ہے لیکن جان دینا معمول نہیں ہے اس لیے اس شریعت میں جان دینے کے لیے ذن کرنا قرار پایا تا کہ ظاہری صورت مال دینے کی مسال دینا مسال دینے کی مسال دینے کیا دینے کی مسال دینے کی دینے کے دینے کی دینے کے دینے کی دینے کے دینے کی دینے کے دینے کی دینے کرنے کی دینے کی دی

صورت ہواور حقیقت میں جان دینا ہو۔

نیز جانا چاہیے کہ خود کو یا اپنے بیٹے یا غلام کو ذرج کرنا شریعت میں جا کرنیں ہے اس لیے کہ انسانی جا نیں خدا تعالی کے سواکسی کی مملوک نہیں ہیں۔ اس لیے غلام اور لونڈی کوئل کرنا جا کر قرار نہیں دیا گیا۔ ایک آ دی دوسرے آ دی کی صرف منفعتوں اور کمائی ہوئی چیزوں کا مالک ہوسکتا ہے۔ تو جب آ دی سے اس کے غلام کی جان طلب کریں تو اس کی تعمیل میں ایک جانور کی جان دیسے کے سوا چارہ نہیں ہے جے اس نے یا دوسرے لوگوں نے پالا ہواور اس کی ملک ہو۔ اور بہی راز ہے اس مسئلہ میں کہ قربانی چارجنسوں میں مخصر ہے: اونٹ گائے 'جھیڑ اور بکری کیونکہ حقیقت میں آ دی انہی چارجنسوں سے دو دوھ گئی اور دہی حاصل کرنے سوار ہونے' بوجھ لادنے' کاشت کاری کرنے اورنسل پالنے کے ساتھ نفع لیتا ہے۔ کرنے سوار ہونے ' بوجھ لادنے' کاشت کاری کرنے اورنسل پالنے کے ساتھ نفع لیتا ہے۔ بخلاف دوسرے وحثی حیوانات اور در ندول کے کہ ان میں سے بات مختقق نہیں ہے۔

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْآبُتَرُ بِيَّكَ آپ كا دَثْمَن وہى وُم بريدہ ہے۔لغتِ عرب ميں وُم بريده كالفظ اصطلاحاً اس كے ليے بولتے ہيں جس كی نسل باتی ندرہے اور اس كا ذكر جارى نہ

_5%

حضورعلیہ السلام کا ذکرتا قیامت جاری ہے

تغیر عزیزی مسلم میست (۵۲۰) مسلم میست تیسوال ماره

خدائی انظام ہے بلکہ دشمنان رسول کریم علیدالسلام کی ابتری کا باعث ہے۔)

سورهٔ کافرون

کی ہے اس کی چیر(۲) آیات مجبیس(۲۲) کلمات اور ننانوے (۹۹) حروف ہیں۔ سبب نزول

اس سورة كاسب نزول يہ ہے كہ كفار قريش كے ايك كروہ ابوجهل عاص بن واكل وليد بن مغيرة اسود بن عبد يغوث اسود بن عبد المطلب نے حضرت عباس كى بمعر فت حضور صلى الله عليہ وآلہ وسلم كے پاس پيغام بهيجا كه آپ ہمار ہمجودوں كى چيروى كريں أنہيں بُرانہ كہيں اور الله تعالىٰ كے دربار ميں ان كی سفارش كے قائل ہو جا كيں تو ہم بھى آپ كے معبود كى عبادت كريں كے اور اس كى بزرگى كے قائل ہو جا كيں ہے۔ الله تعالىٰ نے ان كى اس طنزيہ تفتلو كے جواب ميں بيسورة أتارى۔ اور اسے سورة كافرون اس ليے كہتے ہيں كہ اس سورة كامضون ايمان والوں اور كافروں كے ورميان عبادت كے مسئلے ميں ممل جدائى بيان سورة كامضون ايمان والوں اور كافروں كے ورميان عبادت كے مسئلے ميں ممل جدائى بيان

بسبم الله الرّحمن الرّحيم

قُلْ یَاآیُهَا الْکَافِرُونَ آپ کہد یں اے کافرو! اور کفارے مرادوہ لوگ ہیں جن کی موت کفر کی اللہ کا فرہیں ہیں آگر چہ موت کفر کی حالت ہیں ہوئی اس لیے کہ آخر میں جو ایمان لیے آئے کافرہیں ہیں آگر چہ فلا ہر کے مطابق عوام کی نظر میں کافر معلوم ہوں۔

لَا آغَبُدُ مَا تَعْبُدُونَ مِن اس چیزی پوجائیس کرتا جے تم پوجتے ہو۔اس لیے کہتمارا معبود پھر ہے یا ورخت یا پانی یا آگ یا ستارہ یا شیطان یا فرشتہ یا کوئی روح اور میں ان تمام جیز ول کوعبادت کے لائق نیس جانتا۔اورا گرتم انہیں اس اعتقاد کے ساتھ معبود بناتے ہوکہ وہ چیز یں معبود حقیق کے مشابہ ہیں یا معبود حقیق نے ان چیز ول میں آ کر طول کیا یا ستحد ہوگیا تو در حقیقت تمہاری عبادت الی چیزی طرف واقع ہوئی جو کہ معبود نیس ہے۔

وَلَا آنْتُهُ عَابِمُونَ مَا آعُبُدُ اورنه ی تم اس کی پرستش کرتے ہوجس کی پرستش میں marfat.com

کرتا ہوں۔ یعنی اگر چہتم اپ معبودوں کو صفات البی کے مظاہر جان کر پوجتے ہولیکن مخلوقات میں صفات البی کا ظہوران کی صلاحیت کی وسعت کے مطابق ہے۔ اور کوئی مخلوق اس قابل نہیں کہ اس میں صفات البی کما حقہ ظہور فرما نمیں ورنہ وہ مخلوق مخلوق نہ ہوگی اورا گرتم ان مظاہر میں کمال ظہور کا عقیدہ رکھتے ہوتو یہ دراصل صفات البی میں نقصان کا عقیدہ رکھنا ہے۔ پس ذات البی کسی طرح ہے بھی تمہارا معبود نہیں ۔ ہے۔

وَلَا أَنَاعَابِدٌ مَّاعَبَدُتُهُ اورنه مِي اس چيزكو يو بخه والا بول جس كى يوجاتم فى كى يوجاتم فى كى بين مِين مين اسائے البيدى عبادت كرتا بول جبكة م اساء كى صورتوں كى عبادت كرتا بول جبكة م اساء كى صورتوں كى عبادت كرتے بواور اعلى عبادت اورادنى كى عبادت كولازم بيس كرتى ۔

وَلَا آنَتُهُ عَابِدُونَ مَاآغُبُدُ اور ندتم اس کی پرستش کرنے والے ہوجس کی پرستش میں کرتا ہوں اس لیے کہتمہاری عبادت صوراساء پر بندہے جبکہ میری عبادت حقیقت اساء کی طرف لوٹتی ہے۔

لگٹھ دِیْنگھ تمہارے لیے تمہارا دین ہے۔جوکہ مظہر کے ساتھ ظاہر کے دھوکے اور صورت پر حقیقت کا شک ہونے پر جن ہے۔

دَلِیَ دِیْنَ اور میرے لیے میرا دین۔ کہ جس میں کسی وجہ سے بھی دھوکا اور شبہ ہیں ہے۔ پس یہ دونوں دین نہ اصول میں نہ فروغ میں ایک دوسرے کے شریک ہیں نہ ہی صورت میں ایک دوسرے کی مثل ہیں۔

اوراس مضمون کو دو جگہ لا ناصرف ای لیے ہے کہ مشرکین کی دوشمیں ہیں: پہلی شم وہ لوگ ہیں۔ جوابی معبودوں کے متعلق صفات الہی کے کمال کے مظاہر ہونے کاعقیدہ رکھتے ہیں اور ان کی عبادت کوعبادت فعداوندی جانتے ہیں۔ دوسری شم وہ لوگ ہیں جن کا مقصد اسائے الہی کی عبادت ہے لیکن صورت کے پردے میں۔ اور دونوں قشمیں الل حق کے نزدیک مردود ومسترد ہیں۔ دونوں فرقوں کی نفی کے لیے اس عبادت کو تکرار کے ساتھ لایا میں۔

اوربعض نے حال اورمستقبل کی فئی پرمحول کیا ہے جو کہ لا آغبُدُ اور وَلَا آنَاعَابِدْ کے marfat.com

Marfat.com

لفظوں سے بھی جاتی ہے اور ایک گروہ نے کفار کی طرف سے حال اور ماضی کی نعی پر محمول کیا ہے جوکہ مائع بھر محمول کیا ہے جوکہ مائع بدور ماع بھر تھے۔ ہے جوکہ مائع بدور ماع بھر تھے۔ ہے جوکہ مائع بدائن ہے۔

اور حدیث شریف میں آیا ہے کہ جو محض اس سورۃ کو پڑھے کو یااس نے قرآن پاک کا چوتھائی حصہ پڑھ لیا ہے۔

اور تغییر کوائی میں لا یا گیا ہے کہ اس سورۃ کواور سورہ اظام کو مشقشتین کہتے ہیں۔ اور جو یہ سورۃ اور سورۃ اور سورۃ اور سورۃ اور سورۃ اور سورۃ اور سورۃ افلاص پڑھئے کفراور نفاق سے بری ہوجاتا ہے اور مسنون ہے کہ من نماز کی سنتوں کی پہلی رکعت میں بیسورۃ پڑھے اور دوسری رکعت میں قبل ھو اللّٰہ احد۔ اور مشہور بیہ ہے کہ بیسورۃ آیت قال یعنی جہاد کی آیت کے ساتھ منسوخ ہے لیکن تحقیق بیہ ہے کہ منسوخ نہیں ہے اس لیے کہ اس سورۃ کا مضمون مسلمانوں کے دین اور کافروں کے دین اور کافروں کے دین اور کافروں کے دین کورمیان باہم انتہائی دُوری ہے نہ کہ در پے نہ ہونا۔ بلکہ مسلمانوں کے دین میں جہاد اور قبال بھی داخل ہے تو تیت قبال کے ساتھ منسوخ ہونے کی کوئی وجہ نہیں دین میں جہاد اور قبال بھی داخل ہے تو تیت قبال کے ساتھ منسوخ ہونے کی کوئی وجہ نہیں

سورهٔ نصر

مدنی ہے اسے سورہ فتح بھی کہتے ہیں اس کی تمین (۳) آیات انیس (۱۹) کلمات اور اناس (۷۹) حروف ہیں اور اس سورۃ کوسورہ تو دیع بھی کہتے ہیں اس لیے کہ اس سورۃ کے مضمون میں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے وصال شریف کے قریب آنے کی خبر دی گئ ہے اور اس بات کا تھم ہے کہ اُمت کو وداع فرمائیں۔

اوراس سورة كامضمون يه به كه جب انبياء عليم السلام سه وه كام مرانجام بوكيا جوكه ونيا ميس ان كوجود سه وابسة تها تو ان كه ليه الله تعالى كى طرف لوشا اور عالم ارواح مل والحل بونا ضرورى بوكيا - اس ليه كه يه دارفانى جوكه تكاليف اورعيوب كه ساته مقرر به اس من مرورى امورك المورك ارواح مقدمه كريخ كي جكنيس بي انبيس تو اس ناتس كمر ميس ضرورى امورك تدبير كه ليه أتارا جاتا به ليس انبيس يهال ضرورت كي مطابق ركها جاتا ب-

اس دنیا میں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے وجود کی اہمیت

اب معلوم کرنا چاہیے کہ اس و نیا میں ہمارے آقا و مولی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا وجود مسعود کس کام کے لیے ضروری تھا؟ اور وہ ضروری کام کس وقت کھل ہوا؟ اس اجمال کی تفصیل ہے ہے کہ دین حق اور صراط متنقیم میں خلل ڈالنے والی چار چیزیں ہیں: نفس' شیطان' کفار جو کہ اقتدار و غلبے میں ہوں اور منافق اور دوغلی پالیسی کے لوگ جو کہ فتنہ انگیزی کے طور پر شہات ڈالتے ہیں اور گزشتہ انبیاء میہم السلام نفس اور شیطان کا شرؤ ور کرنے کے لیے بیسج جاتے تھے اس لیے کہ ان دونوں کا شرتمام شرور کی جڑ ہے اور کفار اور منافق بھی ان دونوں کے تابع جس۔

اور حضور صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم کی بعثت شریفہ میں بیطریقہ منظور ہوا کہ ستقل طور پر چاروں چیزوں کو دُور کیا جائے۔ ای لیے آپ نے دین کی جبلت میں لشکر کشی جہاد ملک کیری تحفظ مکی فسادیوں باغیوں ڈاکووں کو سزا دینے کا طریقہ اور جرائم کا ارتکاب کرنے والوں پر حدود اور تعزیرات قائم کرنا داخل ہوا۔ اور اس شریعت کی صورت بادشاہت کی شکل اختیار کر کئی ۔ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے بعثت کی ابتدا سے درجہ بدرجہ نبوت کو تی دے کر خلافت کی سرحد تک پہنچا دیا۔ جب آپ اس کام سے فارغ ہو گئے تو آپ کو در بار پاک میں کا لیا گیا۔ اور تمیں (۳۰) سال کی مدت تک جو کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خلافت کا زمانہ تھا ، چاری کر کے بچھلوں خلافت کا زمانہ تھا ، چاری کر کے بچھلوں کے لیے ایک دستور العمل جھوڑ دیا۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا جَآءً نَصْرُ اللّٰهِ جَبِ خَداتَعالَىٰ كَى مَدُوآ ئِي كَفَارِ بِرَتَكُوارِ اور نِيزِهِ استَعالَ كرنْ منافقول اور بدعتوں پردلائل و براہین قائم كرنے نفس پرفكر كے غلبے اور شیطان پر ملازمت تقویٰ كے ساتھ۔

ہے ہر مرتبہ کی فتح ' نفرت کی فرع اور اس کے تابع ہے۔ پس شہروں اور بت خانوں کی فتو مات کفار پر مد دِ الٰہی کے تابع ہیں۔ شبہات وُ ورکر نے کے ساتھ علوم کی کشائش منافقوں اور بد فدہبوں پر مدد کے تابع ہیں اور وشن احوال اور بلند در جات کا انکشاف نفس و شیطان پر مدد کے تابع ہے اور روشن احوال اور بلند در جات کا انکشاف نفس و شیطان پر مدد کے تابع ہے۔ پس نفرت ابتدا اور در میان کا اشارہ ہے جبکہ فتح انتہا اور کمال کے مرتبے کا اشارہ ہے۔ گویا جو حرکت کہ نقصان سے کمال کی طرف شروع ہوئی انتہا کو پہنچ می ۔ ای لیے فرمانا محما

وَدَءَ يُتَ النّاسَ اور آپ لوگوں کو دیکھیں بینی عربوں کو کہ حضووعلیہ السلام کی بعثت پہلے انہیں کی طرف تھی اور جب وہ وین میں واقل ہو محصے تو ووسر نے لوگ جہاڈ دائل کی قوت اور نفس وشیطان کے مر دُور کرنے کے ساتھ اس دین میں واقل ہوں محے ورنہ ان کا واقل ہونا ناتھی رہوگا۔

یَدُخُدُوْنَ فِی دِیْنِ اللّٰهِ کرالله تعالی کے دین میں داخل ہورہے ہیں یعنی اس دین میں جس میں شرک بدعت منافقت ہے حیائی اور حق چیوڑ کر باطل کی طرف ماکل ہونے کا شائبہ تک بالکل نہیں ہے۔

آفواجًا گروہ گروہ فبیلہ قبیلہ اگر چہ بعثت کی ابتدا سے لوگ اس دین میں اِکا وُکا ہی داخل ہوتے ہتے۔

نصرت فتح اور گروہ کروہ اسلام میں داخل ہونے کی تفصیل

اور ان تینوں امور کی تفصیل اس طرح ظہور پذیر ہوئی کہ بھرت کے ایک سال بعد جنگ اور ان تینوں امور کی تفصیل اس طرح ظہور پذیر ہوئی کہ اور بیز مان ظہور تفرت کا زمانہ تھا۔ اور فتح کا زمانہ تھا۔ اور فتح کا زمانہ تھا۔ اور فتح کا روزی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئی ہوئے ہوئے گئے۔ اور نویں اور دسویں سال میں مخلوق کا رجوع اور وفدوں کا بے در بے آتا ظاہر ہوا۔ چنا نچہ بنی اسد بنی فزارہ 'بنی مرہ بنی کنانہ بنی ہلال بنوجمیم' قبائل عبدالقیس' بنوطی اور بین' شام اور عربوں کے فزارہ 'بنی مرہ بنی کنانہ بنی ہلال بنوجمیم' قبائل عبدالقیس' بنوطی اور بین' شام اور عربوں کے لوگ اطراف سے حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں پہنچ مجے اور ان میں ہے بعض نفس و شیطان کے جہاد اور بعض دوسرے کفار اور منافقوں کے لیے جضور صلی اللہ علیہ وآلہ سے اس میں اللہ علیہ وآلہ اس میں اللہ علیہ وآلہ اللہ علیہ وآلہ اس میں اللہ علیہ وآلہ علیہ وآلہ اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ہوئی کا میں میں میں اللہ علیہ وآلہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ہوئی کے اللہ وسلم کی خدمت علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ہوئی کے دور سے کا دور ہوئی کا کی خدمت میں ہوئی کے دور سے کا دور ہوئی کی دور سے کو دور سے کا دور ہوئی کی دور سے کو دور ہے کی دور سے کی دور سے کا دور ہوئی کی دور سے کی دور سے کی دور سے کی دور ہوئی کی دور سے کی دور سے

وسلم کے فیض صحبت کی برکت سے تیار ہو مکتے۔

اور چاریار کبارعلیم الرضون نے جوکہ بعثت کی ابتدا سے کے کراب تک ہم نشینی کے پابند' خدا کی راہ کے ساتھی اور ہرمسکے میں مشیر اور معاون تھے۔حضورعلیہ الصلوٰۃ والسلام کی بعثت کی ابتدا سے لے کرخلافت کی انتہا تک حضورصلی اللہ علیہ وسلم مختلف احوال اور شم شم کے طریقے باحسن وجوہ معلوم کر لئے۔ پس اب حضورصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم رفیق اعلیٰ کی طرف متوجہ ہوئے اور وصال مبارک کا وفت قریب آ بہنچا اور آپ کوایک اور چیز کا تھم دیا گیا۔

فَسَیّخ بِحَدْدِ رَبِّكَ پِی اپنے بروردگار کی تعریف کے ساتھ اس کی باکیزگی بیان کریں۔اور بیاس بات کا اشارہ ہے کہ سیروسلوک کی انتہا کے بعد عارف کے لیے تنزیبہ و تخمید کی ایک اور راہ کشاوہ کی جاتی ہے اور اس کی حقیقت اس کمال کے ساتھ منفر دہونا ہے جو کہا ہے نصیب ہوا اور اس کمال کا کوئی بھی شریک نہیں۔

وَاسْتَغُفِرُهُ اوراس سے بخشق طلب کریں۔ اور بیاس بات کا اشارہ ہے کہ جب عارف بخیل کے مرتبے کو بینے گیا اور ہرتنم کے لوگ اس کے تابع ہو گئے اور ناقص و کامل ہونے میں ان کی صلاحیتیں بہت زیاوہ فرق رکھتی ہیں۔ تو اسے لاز ماچاہیے کہ تاقصوں کی سخیل کے لیے معانی مائے تا کہ صلاحیت کے وہ تمام بنیادی نقصانات اس کی پیروی کی وجہ سے بروز حشراس کے کمال استقلال تک جا پہنچیں اور شفاعت کی حقیقت بھی ہی ہے۔

اِنّهٔ گانَ تُوَّابًا بِ شک الله تعالی ناتسوں کے بارے میں فیض کی طرف رجوع اور رحمت کی بحیل فرماتا ہے تو اس سے بعید نہیں کہ آپ کے بیروکاروں کو آپ کے طفیل کامل سے کامل فرمادے (اقول و باللہ التو فیق - معلوم ہوا کہ بیکہنا درست اور سے ہے کہ یا اللہ ہمیں اپنے حبیب پاک علیہ السلام کے طفیل معاف فرما' بخش دے رحم فرمایا ۔ یہ کہنا کہ ہمیں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے طفیل تمام فعتیں نصیب ہوتی ہیں)

اور بیسورة سب سے آخری ہاس کے بعد کوئی سورة نازل نہیں ہوئی اس کے نزول سے بعد کوئی سورة نازل نہیں ہوئی اس کے نزول سے بعد حضور صلی الله علیہ وآلہ وسلم کی زبان مبارک پر بید دعا ہیشہ رہتی۔ سبحانك الله مد بعد داخلہ الدمنةول ہے کہ حضرت عباس رضی الله عند نے جب رسول پاک بحد دالله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله عند نے جب رسول پاک سحد دالله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله عند نے جب رسول پاک معدد دالله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله عند نے جب رسول پاک سحدد دالله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله عند نے جب رسول پاک سحدد دالله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله عند نے جب رسول پاک سے دول ہے کہ حضرت عباس رضی الله عند نے جب رسول پاک سحدد دالله مد الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله من الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد اغفرلی اور منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد الله مد الله مد الله مد الله مد الله مد الله منقول ہے کہ حضرت عباس رضی الله مد الل

علیہ الصلوٰۃ والسلام سے بیسورۃ سُنی تو آپ پر کربیہ طاری ہو کیا۔لوگوں نے بوچھا کہ آپ پر گربیہ کیوں طاری ہو گیا؟ فرمایا میں اس سورۃ سے حضور ملی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے وصال شریف کی خبرسُن رہا ہوں۔

سورهٔ تبت

کی ہے'اس کی پانچ (۵) آیات' ہیں (۲۰) کلمات اورا کای (۸۱) حروف ہیں۔ سبب نزول

اور اس سورۃ کے نزول کا سبب یہ تھا کہ جب آیت و آنیار عَشِیر تَک الاَقْدَ بِینَ نازل ہوئی کہ اپنے رشتہ داروں کو عذاب خداوندی ہے ڈراکی ۔ حضور صلی الله علیہ وآلہ و کم دولت کدہ سے باہر تشریف لائے اور کو و صفا پر جلوہ افر وز ہوئے اور اپنے رشتے داروں میں سے ہرایک کو آ داز دی سب جمع ہو گئے۔ ازاں بعد آپ نے فر مایا کہ اگر میں تم ہے ایک بات کہوں جو تہماری عقل سے دور ہوتو میری بات کا یقین کرتے ہو؟ مثلاً میں کہوں کہ ایک لئے جو اس بہاڑ کے پیچے پہنے چکا ہے تو اس کا یقین کرتے ہو؟ مثلاً میں کہوں کہ ایک لئے کر جرارتم پر حملہ کرنے اور تمہیں کو شے بیں۔ فرمایا میں تمہیں عذاب خداد عدی سے دراتا ہوں کہ اگر تم میری اطاعت نہیں کرتے ہیں۔ فرمایا میں تمہیں عذاب خداد عدی سے دراتا ہوں کہ اگر تم میری اطاعت نہیں کرتے اور قر آن پاک پر ایمان نہیں لاتے تو تھہیں دراتا ہوں کہ اگر تم میری اطاعت نہیں کرتے اور قر آن پاک پر ایمان نہیں لاتے تو تھہیں

ابولہب نے جس کا نام عبدالعزیٰ تھا اور حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا چھا گانا تھا'
حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے بارے میں بخت الفاظ کیے کہ کیا تو نے جمیں ای لیے کا یا اور
جمع کیا تھا۔ (معاذ اللہ) تو ہلاک ہوجائے۔ یہ سورۃ اس خبیث کے جواب میں اُتری۔ اور
اس سورۃ میں اس خبیث کو دوجہ سے کئیت کے ساتھ یاد کیا گیا ہے حالا تکہ عربوں کے زویک
کنیت تعظیم کا صیفہ ہے۔ پہلی وجہ یہ ہے کہ اس کا نام عبدالعزی تھا اور یہ نام شرک پر مشمل ہے
اور اہلی تو حید کے زدیک بہت مروہ ہے۔ دوسری وجہ یہ ہے کہ وہ اس کے جہنی ہوئے پ
اور اہلی تو حید کے زدیک بہت مروہ ہے۔ دوسری وجہ یہ ہے کہ وہ اس کے جہنی ہوئے پ
دلالمت کرتا ہے اس لیے کہ لہب آگ کے شعلے کو کہتے ہیں اگر چہ اس کے باپ نے اسے یہ

کنیت اس لیے دی تھی کہ اس کا چہرہ روش ہونے کی وجہ سے آگ کی طرح چمکتا تھا لیکن حقیقت میں بیاس کے جہنمی ہونے کاعنوان بن گیا۔

اوراس کی بیوی اُم جیلہ ابوسفیان کی بہن بھی حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی عداوت میں انتہائی کوشش کرتی تھی یہاں تک کہ جھاڑیوں اور کیکر کے درخت کے کانٹوں کا گھا اُٹھا اُلی اور رات کے وقت حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی گزرگاہ میں بچھا دیتی تا کہ جب آپ صبح کے وقت این مجدحرام میں تشریف لائیں تو وہ کا نٹے آپ کے پاؤں مبارک میں بیوست ہوں اور آخراس نے ای کام میں جان دے دی۔

کہتے ہیں کہ ایک دن کانٹوں کا گھاس پر کھے اور گھے کی رسی کو اپ گلے میں مضبوطی سے باند ھے ہوئے تھی کہ اچا تک گھا اس کے سرے ڈھلک گیا اور رسی اس کے گلے کا پھندا بن گئی اور وہ اس حالت میں جہنم میں پہنچ گئی۔علیٰ ہذا القیاس ابولہب بھی ساری عمر حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کوستانے پر مصرر ہا یہاں تک کہ اس نے بار ہا آپ کو پیٹنے اور شہید کرنے کا ارادہ کیالیکن خدائی حفاظت مانع رہی جیسا کہ سرت اور تاریخ کی کتابوں میں فدکور ہے۔

اور حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی دوشا ہزادیاں حضرت رقیہ اور حضرت اُم کلوم رضی اللہ عنہا اس کے دو بیوں عتبہ اور عتیبہ کے ساتھ نامزد ہو چکی تھیں۔ ابولہب نے اپ ان دونوں بیوں سے کہا کہ اگرتم میری رضا مندی چاہیے ہوتو اس تعلق سے دست بردار ہوجا و درنہ مرتے دَم تک میں تمہارا چرہ نہ دیکھوں گا۔ بڑے جئے عتبہ نے خاموثی اختیار کی جبکہ دوسرے بیٹے عتیبہ نے فاموثی اختیار کی جبکہ دوسرے بیٹے عتیبہ نے وہاں سے اُٹھ کر انتہائی بے حیائی کے ساتھ حضور علیہ السلاق والسلام کے پاس آکر بے دریغ ہوکر کہا کہ میں نے آپ کی دختر کوچھوڑ دیا اور پھاور غیر مناسب الفاظ کی بیس آگر بے دریغ ہوکر کہا کہ میں نے آپ کی دختر کوچھوڑ دیا اور پھاور غیر مناسب الفاظ کے بیس آگر کے حضور علیہ الصلاق والسلام نے عرض کی بارخدایا! اس پر اپ کتوں میں سے ایک الفاظ کے جضور علیہ الصلاق والسلام نے عرض کی بارخدایا! اس پر اپ کتوں میں سے ایک کتا مسلط فرمایا۔ آخرشام کے سفر میں اسے شیر نے بھاڑ دیا۔

اور اس سورۃ کامضمون ہے ہے کہ ابولہب کو جو کہ نسب وولت مرتبہ اور سرداری کے اعتبار سے شرفاء میں سے تھا' حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی عداوت اور دین حق کے انکار کی وجہ سے کلی طور پر خسارہ اور جمیشہ کی ہلاکت نصیب ہوئی۔ پس جرخص کو جا ہے کہ ان چیزوں وجہ سے کلی طور پر خسارہ اور جمیشہ کی ہلاکت نصیب ہوئی۔ پس جرخص کو جا ہے کہ ان چیزوں

برغرورند کرے اور مقرین بارگاو خداوندی کے داہ ورسم درست کرے اس لیے حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اپنی پھوپھی حضرت مغید اور شابرادی سیدہ قاطمہ رضی اللہ علیہ اللہ کے نزول کے بعد فر مایا کا آخیہ مین اللہ شیقا بینی (اتول و باللہ التو فتی – رب العزت کی اجازت اور نفع بہنچانے کی قدرت دیے بغیر میں تمہارے لیے کی چیز کا مالک العزت کی اجازت اور نفع بہنچانے کی قدرت دیے بغیر میں تمہارے لیے کی چیز کا مالک نبیل ہوں اور پھر خود ارشاو فر مایا کل سبب و نسب ینقطع یوم القیامة ماخلا سبی ونسبی لین میرارشته اور نبیت قیامت کے دن بھی منقطع نہیں ہوگا کیونکہ رب تعالی نے خود آپ کو بینمت اور خصوصیت عطافر مائی ہے۔ چنانچ محب طبری اور دیگر اکا بر علاء اُمت نے فرمایا انه صلی الله علیه و آله وسلم لایملك لاحد شیئا نفعا ولاضر الکن الله علیه و آله وسلم لایملك لاحد شیئا نفعا ولاضر الکن الله عذو حمل یملکه نفع اقار به بل و جمیع امته بالشفاعته العامته والعاصه فهو عزوجل یملک الامایملک له مولاد ترجمہ وہی جواویر بیان ہے۔ چرمخوظ الحق غفرلہ)

یسیم اللّه الوّخین الوّجیم الله کو وقوں ہاتھ ہلاک ہوگے۔ جانا چاہے کہ نفسِ اللّه الوّخین الوّجیم الله کے دونوں ہاتھ ہلاک ہوگے۔ جانا چاہے کہ نفسِ انسانی کی دوقو تیں ہیں: قوت علی اور قوت علی وہ ہے جس کے ساتھ جانا اور پہنچانا ہے۔ اور قوت علی وہ ہے جس کے ساتھ اس سے اجھے اور یُرے کام صادر ہوتے ہیں۔ اور دونوں ہاتھ ان دوقو توں کی طرف انثارہ ہے لیتی اس کاعقیدہ اور عمل دونوں ہلاک ہوگئے۔ اور احمال ہے کہ دو ہاتھوں سے مراّد خیر اور شر پر بنی اعمال ہیں۔ شر پر بنی اعمال کی بربادی فلا برے کہ دو ہاتھوں سے مراّد خیر اور شر پر بنی اعمال ہیں۔ شر پر بنی اعمال کی بربادی فلا برے کہ اور اعمال پر بربادی فلا برے کہ اور اور وہ ضائع ہو شے۔ اور افعال کی بربادی سے کہ کفری دید سے محمول کیا اختیاء اور اعمال پر محمول کیا اور سب کی مخوائش ہے۔ اور اعمال کی محمول کیا اور سب کی مخوائش ہے۔ وکئی سے مراور کم دورائی کی سے مراس کی دارت کی بربادی اور اعمال کی بربادی خود بھی ہلاک ہو گیا۔ لیتی اس خبیث کے اعتمادات اور اعمال کی کہ کہی طریقے سے بھی اس کی اصلاح ممکن نہ دری۔

مَا أَغُنَى عَنْهُ مَا لُهُ وَمَا كَتَبَ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ عِلَيْهِ عِلَيْهِ عِلَيْهِ عِل marfat.com Marfat.com شہرت مرتبہ اولا دئیروکار اور یار دوست کسی کام ندآ یا اور بعض نے مال سے موروثی مال ارر کسب سے کمایا ہوا مال مرادلیا ہے۔ اور اس کا بھی احتمال ہے۔ اور بعض نے بیٹے مراد لیے ہیں۔

اب اس کے مال اور کمائی ہوئی چیزوں کے نفع بخش نہ ہونے کو بیان فر مایا جارہا ہے کہ اگر یہ چیزیں اسے دنیا میں کچھنفع ویں آخرت میں جہاں ضرورت زیادہ ہوگی اور ہمیشہ رہنا ہے بالکل نفع نہ دیں گی اس لیے کہ:

وَاهْرَءَ ثُنَهُ اور جس طرح اس عورت کی عداوت دیکی کراس کی عداوت زیادہ ہوگئ تعی اس طرح اس کاعذاب اس عورت کاعذاب دیکھنے کے ساتھ زیادہ کیا جائے گا۔

حَمَّالَةَ الْتَحَطَّبِ مِن وه عورت مراد لَيْمًا مول جو كدايندهن أثفاتي بي يعن جهم مِن اس بِمَلَى كَ مَعْالُهُ الْمُعَالُ اللهُ عَلَى اور اس بِمَلَى كَ مَعْالِ لَلْهُ مِن مِن مِن مِن مَن اللهُ مِن مِن مَن اللهُ مِن اللهُ مِن

فی جیدها اس کی گرون میں جو کہ موتوں کا ہار اور سونے کا زیور باند سے کی جکہ

حَبْلُ ایک ری ہوگئین مَسَند کمجور کی تخت جمال سے جے مضبوطی سے بنایا کمیا ہو اور کلا اور اس ری کی خاصیت یہ ہے کہ جب لیننے سے تر ہو جائے تو زیادہ سمجھ سکتی ہے اور کلا کمونٹنے کا باعث ہوتی ہے اور وہ ان حروف کے مطابق جو کہ اس کے بارے میں آئے اور سسے اور دہ ان حروف کے مطابق جو کہ اس کے بارے میں آئے اور سسے اور دہ ان حروف کے مطابق جو کہ اس کے بارے میں آئے اور سسے اور دہ ان حروف کے مطابق جو کہ اس کے بارے میں آئے اور سسے اور دہ ان حروف کے مطابق جو کہ اس کے بارے میں آئے اور سسے اور دہ ان حروف کے مطابق جو کہ اس کے بارے میں آئے اور سسے میں آئے ہوئے اور دہ ان حروف کے مطابق جو کہ اس کے بارے میں آئے اور سسے میں

تغير عزيزي ------ تيموال ياره

اس طریقے سے دنیا میں مرارواللہ اعلم

اوراس سورۃ میں اس بات کا اشارہ ہے کہ مال جمع کرنا اور کمائی کرنا مردوں کی ذمہ داری ہے اور گھر کی خدمت حتیٰ کہ کھانا پکانے کے اسباب جیسے ایندھن مہیا کرناعورتوں کا کام ہے۔

سورة اخلاص

کمی ہے'اس کی چار (۳) آیات' پندرہ (۱۵) کلمات اور سنتالیس (۲۷) حروف ہیں۔ سبب نزول

اور اس سورة کے نزول کا سبب یہ تھا کہ کافروں کے سرداروں کے ایک گروہ نے حضور سلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت عالیہ میں حاضر ہوکر پوچھا کہ آپ ہمارے خداؤں کی خدمت کیا جن ٹاتو انی اور دوسرے عیب ثابت کرتے ہیں آپ بیتو خدمت کیا ہے؟ کس چیز سے پیدا ہوا ہے اور اس سے کیا چیز پیدا ہوئی ہے؟ (معاذ اللہ) اس کی اصل اور فرع کیا ہے؟ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم ان کی غیر شاموش سے کہ جریل علیہ السلام میں مورة لائے۔

اور بعض روایات میں یوں آیا ہے کہ کافروں کے سوال میں یہ بات بھی تھی کہ وہ کیا ہے کہ کافروں کے سوال میں یہ بات بھی تھی کہ وہ کیا ہے کہ کافروں کے سوال میں سے لی ہے اور اس سے کہا تھا تا ہے کیا پیتا ہے اور اس نے خدائی کی وراشت کس سے لی ہے اور اس سے وراشت کون ہے؟

وجدتشميه

اوراس سورۃ کوسورۃ اخلاص اس لیے بہتے ہیں کہ یہتی کی معرفت اوراس کی ذات و صفات کی دریافت کے لیے مسلمانوں کے دلوں کو کھر اکرتی ہے۔ اور یہاں جانتا چاہیے کہ حقیقت اللی میں آ دی کا انتہائی مقام یہ ہے کہ اس ذات کے خواص لازمہ کا اوراک کرلے اور بس ۔ اس لیے کہ اللہ تعالی کی ذات بسیلا ہے کہ می طرح بھی اجزا واور بعضینت کو قبول نہیں کرتی اور وہ کسی علت ہے معلول نہیں ہے۔

معرفت اشياء كي حيار وجوه

اور دنیا میں چیزوں کی معرفت کا طریقہ چار وجوہ میں مخصر ہے: پہلی وجہ اس کا مادہ پہچانا' دوسری وجہ اس کی صورت پہچانا' تیسری وجہ اس کی علت پہچانا اور چوتھی وجہ اس کی غرض کواور اس کام کو پہچانا جو کہ اس سے سرانجام ہوسکتا ہے۔ یہاں پہلی تین وجوہ موجو ذبیس جیں۔ اس کا بیان یہ ہے کہ اگر کوئی شخص مثلاً بیٹھنے کی چوکی کی معرفت کے متعلق پوچھے تو اس کا جواب چار طریقوں سے دیا جا سکتا ہے: پہلی یہ کہ کہیں کہ ایک ایس چیز ہے جو کہ کلائی اور ہو اس کی ہے دوسرا طریقہ صورت کی معرفت کا مثلاً یوں کہیں کہ یہ ایک ایس چیز ہے جو کہ کلائی اور ہو تھا طریقہ معرفت کی مثلاً یوں کہیں کہ یہ ایک ایس چیز ہے جو کہ مربع یا مستطیل شکل کی بنی ہوئی ہے' تیسرا طریقہ معرفتِ علت کا مثلاً یہ کہیں کہ بیا کی بین کہ بیٹ کہ بیٹ کہ بیا کہیں کہ بیا ایک چیز ہے بیک بین کہ بیٹ کہیں کہ بیا کی جی ہوئی ہے' تیسرا طریقہ معرفتِ علت کا مثلاً یوں کہیں کہ بیا ایک چیز ہے بیک بیاری تعالیٰ کے تی میں جب وہ تین طریقے ممکن نہیں جو کہ بیٹھنے کے لیے بنائی گئی ہے۔ یس باری تعالیٰ کے تی میں جب وہ تین طریقے ممکن نہیں بین ناچار چو تے طریقے پر اکتفاء کیا گیا۔

لیکن یہ بات ضروری تھی کہ اللہ تعالیٰ کی تنزیبات ذکر کی جا کیں تا کہ پوراا متیاز حاصل ہو۔ پس لفظ اللہ ان تمام اغراض پر شمل ہے جو کہ اللہ تعالیٰ ہے دنیا کے متعلق تصور کی جاسکی بیں جیسے خالقیت 'راز قیت ' بخشش اور وجو د' معبود ہونا وغیرہ اسی لیے لفظ اللہ کو اس سورہ کا عنوان بنایا گیا ہے۔ پس کو یا یوں کہا گیا ہے کہ اس کی صفات یہ بیں کہ معبود' خالق' صافع' رازق' زندہ کرنے والا اور موت دینے والا ہے' کا کنات کی تمام ضرور یات نے اس ہے وجود حاصل کیا ہے۔ اور چونکہ یہ معنی عوام کے حاصل کیا ہے۔ یہاں تک کہ آخر بھی اس کے ساتھ وابستہ ہے۔ اور چونکہ یہ معنی عوام کے ادبام میں علیحہ وعلی دیا گیا تا کہ اشتر اک وہمی بھی دُور ہوجائے اور تو حید خالص ہو۔

بِسُمِ اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ آپ کہد تبیعے یا رسول اللہ ہو الله جس کے متعلق تم سوال کرتے ہو اللہ ہے۔
ایس ذات جو کہ صفات کمال کی جامع ہے کہ دنیا میں حیات علم ارادہ قدرت کلام سمع 'بھر اور دومرے جواہر واعراض میں سے جو کچھ دیکھا اور سنا جاتا ہے سب اس کے آثار ہیں۔

Imartat.com

Imartat.com

احداور واحد مين فرق

آئے ڈیگانہ ہے شریک رکھتا ہے نہ جزؤ خواہ وہ جزوعظی ہویا خارجی خواہ بالغعل ہوخواہ تخلیل اوراس کی ذات کے کامل بسیط ہونے کا اشارہ کرنے کے لیے لفظ احد لایا حمیاس لیے کہ لفظ واحدا کشرشریک عددی کی نفی میں استعال کیا جاتا ہے نہ کرنفی اجزاء میں جیسا کہ کہتے ہیں کہ زیدا لیک واحدانسان ہے حالا نکہ وہ ہاتھ یاؤں آ کھی کان اور دیگر بہت سے اجزاء رکھتا ہے۔ اس لیے اسے احدنہیں کہتے۔ پس احدوہ ہے جس میں تغییم بالکل نہیں ہو سکتی اور بیہ عنی حضرت حق سجانہ و تعالی کے ساتھ خاص ہے۔

الله الصّد لفظ الله كو پھر دوبارہ لایا میا تاكہ اس بات كا اشارہ ہوكہ اس برى بات كا اشارہ ہوكہ اس برى بساطت اور احدیت مجروہ كے باوجود میں اس کے لیے مفات كمال ثابت كرتا ہوں اس لیے كماس كی مدیت ان صفات كا تقاضا كرتی ہے۔

صمركامعني

حفرت امام جعفر صادق رضی الله عند نے فرمایا ہے کہ معرکامعنی ہے کہ کی کامخان نہ موادر سب اس کے تاج ہوں۔ اور وجود کے سلسلے میں اس ذات کے سوا چارہ نہیں جو کہ معر کے ساتھ موصوف ہے۔ اس لیے کا نکات میں سراسر ضرورت کا مشاہرہ ہورہا ہے۔ اور جب ہر شیختاج ہو گی تو ایسی ذات لاز ما ہونی چاہیے جس پر ضرورت فتم ہوجائے اور وہ کی اور کی اور کی مجاب نہ ہو۔ ورندا حتیاج کا سلسلہ ختم نہ ہو۔ ہیں حقیقت میں الله تعالی کی ذات کے خواص میں سے یہاں دو چیزیں فرکور ہیں۔ احدیت اور معربت اور باقی صفات انہیں کی فرع ہیں۔ میں سے یہاں دو چیزیں فرکور ہیں۔ احدیت اور معربت اور باقی صفات انہیں کی فرع ہیں۔ لکھ یکلڈ دہ نہیں جنا اس لیے کہ کسی چیز کوجنم دے تو وہ چیز اس کی حقیقت میں شریک ہوگی تو وہ اس سے مستغنی ہوگی۔ ہیں وہ میزئیس ہوتا۔

وکھ یولڈ اور وہ کی سے جنائیں کیا اس کے کہ اگر وہ کی سے جنا جائے تو اس کا مختاج ہوگا اور چوکلہ وہ احد ہے۔

وَلَدُ يَكُنْ لَهُ كُفُوا اَحَدُ مِي اس كَ معنت موكى يعن اس كاكونى بمسرئيس موا به اس كاكونى بمسرئيس موا به اس ك اس كيه كداكراس كاكونى بمسرمونة دونون ايك چزيمي شريك موجائيس اورووسرى چزيك اس كيه كداكراس كاكونى بمسرى چزيك است

ساتھ مختص ہوتو اس کی ذات بگانہ نہ ہو۔

بعض علماء نے فرمایا ہے کہ شرکت بھی عدد میں ہوتی ہے اس کی نفی لفظ احد کے ساتھ فرمائی گئی۔ اور بھی مرتبہ اور منصب میں ہوتی ہے اس کی نفی لفظ صد کے ساتھ فرمائی گئی اور بھی نسب میں ہوتی ہے اور اسے آئے یلڈ و آئے گئو آڈ کے ساتھ منفی قرار دیا محیا۔ اور بھی کام اور تاثیر میں ہوتی ہے اس کی نفی و آئے گئو آڈ کھو آ آئے ڈ سے فرمائی گئی اور اس وجہ سے اسے سور ہُ اظلام کہتے ہیں۔

نداهب بإطله والول كارد

نیز علاء نے فرمایا ہے کہ فراہ ب باطلہ والوں کے دنیا میں پانچ (۵) فرقے ہیں: ایک فرقہ دہریہ کا ہے۔ جو کہتے ہیں کہ جہال کو بنانے والا کوئی نہیں جیسے بھی اتفاق ہوا مواد جمع ہو گیا اورصور تیں بن گئیں جب مسلمان نے اپی زبان سے حوکا لفظ بولا دہر یوں کے عقید سے سے جدا ہوگیا۔

دوسرا فرقہ فلاسفہ ہے جن کا عقیدہ ہے کہ کا نتات کا ایک بنانے والا ہے گراس کی کوئی صفت نہیں یعنی کا نتات میں جوتا ہیریں ہیں صرف واسطوں سے ہیں نہ کہ اس ذات سے اور حقیقت میں ہندوؤں کا فد ہب بھی یہی ہے۔ اور جب مردِمومن نے لفظ اللہ کا ذکر کیا جو کہ تمام صفات کا جامع ہونے پر دلالت کرتا ہے تو ان فرقوں کی گفتگو سے چھٹکارا یا یا۔

تیرافرقد موریا ہے جو کہتے ہیں کہ ایک مانع ساری کا کنات کے لیے کافی نہیں ہے تو ناچار چند صانع چاہئیں۔ اور جب مادی ایمان نے اللہ تعالی کی مفات میں لفظ احد کا ذکر کیا تو اس شرکت سے نجات یائی۔

میں کھڑی ہیں اور وہ اللہ تعالی کو مخلوقات کی طرح کئی چیزوں کا مختاج مانتے ہیں۔ تمام تشبیبات کے ردکے لیے احتیاج کی فعی کافی ہے جو کہ ممرے معلوم ہوتی ہے۔

پانچوال فرقد مجوسیوں کا ہے جو کہ کہتے ہیں کہ تا ٹیر اور ایجاد کی طاقت میں اہر من کرداں کا ہمسر ہے اور ظلمتوں کی چیزیں ایذاء پہنچانے والی اشیاء اور دیگر شروراور قبار کا اس کی کھوت ہیں اور بین اور بیزواں کے لفکر اور اہر من کے لفکر میں جھڑا اور کمینچا تانی ہمیشہ سے جاری ہے۔ اور بعض اوقات بیزداں کا تھم ہوتا ہے اور کا نتات میں خیر اور نیکی آ جاتی ہے۔ اور بھی اہر من کا لفکر ذور کر جاتا ہے اور دنیا میں ٹرائی اور ٹری چیزیں پھیل جاتی جیں اور اس عقیدے اہر من کا لفکر ذور کر جاتا ہے اور دنیا میں ٹرائی اور ٹری پیزیں پھیل جاتی جیں اور اس عقیدے کے دد میں وکٹ یکٹ ڈیکٹ ڈیکٹ وا آئے ڈیسور ہے آخر میں لایا گیا۔

نیز علا فرماتے ہیں کہ آ دی لطائف نفی عقلی قلی روتی اور سری کامر کب ہاورنس کی معرفت کی انتہاء یہ ہے کہ لکھ یکلڈ وکھ یُولڈ وکھ یکٹن لکھ کھوا آحکہ کو دریافت کر لے۔ اس لیے کہ ہر وہ چیز جس کی طرف نفس شہوت یا غضب کی قوت کے ساتھ ماکل ہوتا ہے ان حالات سے فالی نہیں ہے کہ یا وہ کی چیز سے پیدا ہوتی ہے یا اس ہے کوئی چیز پیدا ہوتی ہے یا اس ہے کوئی چیز پیدا ہوتی ہے یا اس کے برابر دنیا ہیں کوئی اور چیز موجود ہے۔ چونکہ وہ پروردگار کو تمام موجودات ہوتی ہے یا اس کے برابر دنیا ہیں کوئی اور چیز موجود ہے۔ چونکہ وہ پروردگار کو تمام موجودات سے بالاتر بحت ہے اور سے علی کہ اللہ مرتبہ ہاور اس کی معرفت کا آخری مقام العمد ہے یعنی اللہ تعالی وہ ذات ہے جہاں احتیان کا سلسلہ تم ہوجا تا ہے۔ وہ کی دوسر ہے گاتیان نہیں۔ اس لیے کہ عمل کو اسباب اور مسجمات کا علم ویا جملے ہے۔ پس وہ ہر چیز کوکس سبب کا تحتاج تھی ہے۔ اور اس سبب کو دیگر سبب کا تحتاج ماتی قابست ہے۔ اور اس سبب کو دیگر سبب کا تحتاج ماتی وابست ہے۔ اور اس سبب کو دیگر سبب کا تحتاج میں اس کی دریافت کی انتہا ای قدر ہے کہ دنیا و آخرت کی تدبیر جو کہ عمل کا کام ہے اسباب کے ساتھ وابست ہے۔ پس ذاتے باری تعالی کی حقیقت میں اس کی دریافت کی انتہا اس قدر ہے کہ عالم اسباب اور سببات سے ورا ہے۔

ا پی اصل کی طرف تھینچنا۔ اور اس کے اسم ذات اللہ کے ذکر سے راحت اور اُنس حاصل کرنا ہے۔ اور سر جو کہ روح سے بالاتر ہے ہو یت مستقلہ کے سوا پچھنبیں جانتا اور اس کا علم وجود کی خصوصیت کے ادراک میں منحصر ہے اور بس۔

پس اس سورۃ میں وہ معرفت ارشاد فرمائی گئی ہے جو کہ تمام لطائفِ انسانی کے ساتھ متعلق ہے تا کہ ہرلطیفہ اس معرفت سے حصہ حاصل کرے۔

نیز علاء کرام کہتے ہیں کہ ھُو وادی عشق ذات کے جیران پھرنے والوں کے لیے ہے جن کا ملاحظہ ذات میں پورے استغراق کی وجہ سے اس قدر سے زیادہ نصب العین رہا ہی نہیں۔ اور کلمہ اللہ عارفوں کا حصہ ہے جو کہ اسے تمام اساء وصفات میں پہچا نے ہیں اور ہر مرتبے کے احکام کو جدا جدا جانے ہیں۔ اور لفظ احد عام اولیاء اللہ کا حصہ ہے جن کے پیش نظر ہر کثرت میں وصف وحدت سے موصوف وہی ذات واحد ہے اور لَمَّ يَلِدُ وَلَمْ يُولَدُ وَلَمْ يَكُنْ لَمُ كُفُوا اَحَدٌ کامعنی عام ایمان والوں کا حصہ ہے جو کہ عظی اور نعتی دلائل کی قوت سے بہاں تک کینچے ہیں اور جب ان تمام معنوں کوایک شخص جن کو کہ موحد خالص ہوجائے۔

یہاں جانا چاہیے کہ اس سورۃ کو صدیث شریف میں قرآن پاک کا ایک تہائی فر مایا گیا اور یوں قرار دیا گیا ہے کہ اس سورۃ کا پڑھنا قرآن کے تہائی حصہ کی تلاوت کے برابر ہے۔ وجہ فضیلت سور ہُ اخلاص

اوراس فضیلت کی وجہ یہ ہے کہ قرآن پاک کا مقعمد تین چیزوں سے باہر نہیں ہے یا ذات اللی کی معرفت ہے یا کتابوں کے نزول اور انبیاء علیم السلام کے بھیجنے ۔ سے واصل ہونے کے داستے کی معرفت یا ہماری شریعت کا بیان یا اس حالت کا بیان جو کہ جنت اور جہنم میں داخل ہونے کے بعد ہوگی اور بیسورۃ ایک چیز کے بیان کے لیے کافی ہے جو کہ سب میں داخل ہونے کے بعد ہوگی اور بیسورۃ ایک چیز کے بیان کے لیے کافی ہے جو کہ سب اضل اور بہلی ہے جیسا کہ واضح ہو چکا۔ واللہ اعلم

سورهٔ فلق

لغت میں فلق منے کی سفیدی کو کہتے ہیں۔ جو کہ رات کی تاریکی کو بھاڑ کر نمودار ہوتی ہے اور رات کی تاریکی میں منے کا نمودار ہوتا عدم کے پردے سے وجود کے فاہر ہونے کا نمونہ ہے۔ اس لیے کہ عدم کی حالت میں کوئی تمیز اور شخیص نہیں ہے اور وہ پوشیدہ جہان ہے جب وجود کے نور نے ظہور کیا' ہر چیز معین اور مقرر ہوگی اور اس پر ہر چیز کے اثر ات اور احکام مرتب ہونے گئے اور یہ حالت بعینہ منے کے نور کے فاہر ہونے کی حالت کی مثل ہے جس کی وجہ سے چیز یں متاز ہو جاتی ہیں اور و نیا میں حس و حرکت پیدا ہو جاتی ہے۔ جبکہ رات کی تاریکی عدم کے پردے کی طرح ہے اور حقیقت میں دنیا میں جو بھی شراور کر ائی موجود کی تاریکی عدم کے وجود کے ساتھ ملنے کی وجہ سے ہے۔ اس تمام شرور عدم کے حوالے سے ہوتی ہے عدم کے وجود کے ساتھ ملنے کی وجہ سے ہے۔ اس تمام شرور عدم کے حوالے سے ہیں اور وجود کا نور آئیں واضح کرنے والا ہے اور چونکہ یہ سورة شروں سے پناہ طلب کے لیے ہیں اور وجود کا نور آئیں واضح کرنے والا ہے اور چونکہ یہ سورة شروں سے پناہ طلب کے لیے بیں اور وجود کی ایتدا میں نور کے فلا ہم ہونے کا اشارہ واقع ہوا اور اس سورة کا نام اس نور کی طرف منسوب کر کے سورہ فلاق رکھا گیا۔

ايك لطيف نكته

اور یہاں ایک لطیف کئت ہے اور وہ یہ ہے کہ اس سورۃ میں ایک صفت الی جو کہ رب الفاق ہے کے ساتھ نین (۳) چیز وں تار کی جادو اور حسد ہے تعوذ واقع ہوا جبکہ سورہ ناس میں ایک چیز کے شر ہے جو کہ شیطان کا وسوسہ ہے تین (۳) صفات الی جو کہ رب الناس ملک الناس اور الہ الناس جین کے ساتھ تعوذ واقع ہوا۔ تا کہ اس بات کا پت چلے کہ وین کی حفاظت جان اور جسم کی حفاظت سے مقدم اور زیادہ ضروری ہے کیونکہ شیطان کا وسوسہ دین کو بر بادکر نے والا ہے اور وہ چیزیں جان اور جسم کو تکلیف دینے والی جیں۔

اور بیسورۃ مدنی ہے اس کی پانچ (۵) آیات شیس (۲۳) کلمات اور تہتر (۷۳) حروف ہیں۔

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ آعُوذُ بِرَبِ الْفَلَقِ آپ کہدوی یارسول اللہ! کہ میں فلق کے پروردگار کی پناہ اللہ ایوں۔ اور لغت میں فلق سے معنوں میں ہے اور حقیقت میں الی چیز سے عبارت ہے جے پھاڑا جائے اور اس سے کوئی اور چیز برآ مد ہوتا کہ اس چیز سے عجیب وغریب اثر ات فلام بوں جیسے بھتی کا وانہ مجور کی تعلی اور ہر درخت کا نیج اور جیسے پھر اور زمین جن سے پائی نکتا ہے۔ اور جیسے باپ کی پشت اور مال کا شکم۔ اور ان تمام چیز ول کوفلق کا لفظ شامل ہے اور یہال فلق کی تخلوق ت کا شرزیادہ تر ان کی اصل کی خباخت سے ہوتا اور یہال فلق کی تخلوق ت ہے کہ چلوق ت کا شرزیادہ تر ان کی اصل کی خباخت سے ہوتا ہوں چونکہ اللہ تعالیٰ کی ربو بیت اصل اور فرع کو محیط ہے۔ پس فرع کے شرکوؤوور کرنے میں اصل کی پناہ لین ضروری ہوا۔ جس طرح کہ اگر کوئی مخص کسی کے نو کر سے کسی تم کا خوف رکھتا ہے تو لاز ما اس کے مالک کی طرف رجوع کرتا ہے۔ اور اگر اس سے بھی پُر ائی کی تو قع ہوا ور مالک کی طرف رجوع کرتا ہے۔ اور اگر اس سے بھی پُر ائی کی تو قع ہوا ور مالک کی طرف رجوع کرتا ہے۔ اور اگر اس سے بھی پُر ائی کی تو قع ہوا ور مالک کے مالک کی طرف رجوع کرتا ہے یہاں تک کہ مالک ہونے کا سلسلہ ختم ہو جائے اور یہ سلسلہ ختم نہیں ہوتا مگر پروردگار تک۔ پس التجا کا آغاز رب کریم سے کرنے کی تعلیم فر مائی تا کہ ہات مختصر ہو۔

مِن شَرِمَا خَلَقَ اس کی رائی ہے جے پیدا کیا گیا ہے۔ مخلوقات کی تین اقسام

جانا چاہیے کہ اللہ تعالی کی مخلوقات کی تمن قسمیں ہیں: ایک وہ مخلوق جس میں خیر فالب ہے اور شرم خلوب بلکہ معدوم جیسے ملائکہ مقربین۔ انبیا علیہم السلام اور اولیاء الله دوسری وہ مخلوق جس میں شرغالب اور خیر مغلوب یا معدوم ہے جیسے شیطان اور ایذاء دینے والی دیگر چیزیں جیسے انسان جن درند نے چار پائے کیڑے مکوڑ نے سانپ بچھواور چیونی وغیرہ - اور تیم کی وہ مخلوق جس میں خیر اور شردونوں موجود ہوں اور بعض اوقات بعض لوگوں کے اعتبار سے شرہو جاتا ہے اور بعض اوقات بعض لوگوں کے اعتبار دین ہو جاتا ہے جیسے مال دیا ہون کے اور دوسر سے ساز و سامان بلکے اخلاق علوم حسب ونسب اور دیکر صفات اور دنیا ہی جاتے ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں کے اعتبار دیا ہوں کے اعتبار دیا ہوں کے ہوں ہوں ہوں ہوں ہو جاتا ہے جیسے مال

marfat.com - marfat.com

پس آخری دو تسمول میں شرِ ماخکق سے مراد وہ کرائی ہے جو کہ ان میں موجود ہے جبکہ پہلی فتم کی نبیت ہے جس میں مطلقا کرائی ہے جی نہیں بعض دوسری چزوں کے ساتھ لگنے کے اعتبار سے ہے۔ چنا نچے عبادت کا شرریاء اور سمعہ ہے ایمان کا شرنفاق اور ارتداو ہے۔ انبیاء کیم السلام کی نبیت ہے شران کو جھٹلا نا اور ان کی فرمال برواری میں کوتا ہی کرنا ہے جبکہ اولیاء اللہ کی نبیت سے شران کی صحبت کے انوار سے محروی اور انہیں حاصل نہ کرنا ہے۔ علی ہذا القیاس ای لیے کہتے ہیں کہ شر المحید تا حیوہ وشر العمل الصالح ہے۔ علی ہذا القیاس ای لیے کہتے ہیں کہ شر المحید تا حیوہ وشر العمل الصالح کو نیک کے ساتھ منسوب کرنا جائز ہے جیسا کہ عرف میں مشہور ہے کہ چھول کا شرکا نائا خزانے کا شرسانب اور اجھے چہرے کا شرکری عاوت ہے اور مفسرین نے کہا ہے کہ خزانے کا شرسانب اور اجھے چہرے کا شرکری عاوت ہے اور مفسرین نے کہا ہے کہ شرِ ماخب اور چونکہ تمام شرور کا مثال فی ہوا۔

دَمِنُ شَرِّغَاسِقِ إِذَاوَقَبَ اور تاريك چيز كے شرے جب اس كى تاريكى جوم كرے ـ جانتا جائے كہ تاريكى بمى حسى ہوتى ہے اور بمى معنوى حسى تاريكى رات كى تاريكى ہے جس میں بہت سے شرظا ہر ہوتے ہیں۔

تاریمی شب کے شر

ایک شرجن شیطانوں کا پھیلنا جو کہ تار کی کی مناسبت کی وجہ سے حرکت اور خوشی میں آتے ہیں اور چیگادڑ کی طرح اپنے گھروں سے نکل کر مخلوق خدا کو ستاتے ہیں ای لیے حدیث شریف میں آیا ہے کہ جب رات ہوجائے اپنے بچوں کو باہر ند آنے ویں کیونکہ اس وقت شیاطین منتشر ہوتے ہیں۔ دوسرا شر در ندوں اور موذ کی کیڑوں مکوڑوں کا نکلنا جیسے سائپ اور بچھو۔ تیسرا شرلوگوں کے گھروں کو کو شنے کے لیے چوروں کا ادھراُ دھر پھیل جانا پوتھا شرجادواورطلسمات والوں کی توانائی کیونکہ سورج کے غالب و قاہر نور کی وجہ سے ان کے اعمال دن کے دفت اثر کم کرتے ہیں اور پانچواں شرفتی و فجور والوں کا گنا :وں میں

سمرون ہونا۔ marfat.com

معنوی تاریکی کی چنداقسام

اورمعنوی تاریکی کی بھی چنداقسام بین ان میں سے بڑی تاریکی وہم کی ہے جو کہ عقل کے نور پر غالب آ جاتی ہے۔ اوراشیاء کی حقیقتوں کو نگاہ سے او جھل کر دیتی ہے۔ اوراس کی شاخوں میں سے کفر کی تاریکی ہے اور گناہوں' ہُر سے اخلاق اور بُری صحبتوں کی تاریکیاں بین اس آیت میں ان تمام تاریکیوں سے تعوذ واقع ہوا۔

وَمِنْ شَرِّ النَّفَاتَاتِ فِی الْعُقَدِ اور گربول میں پھونک مارنے والیوں کے شرسے لین النظیر است النظیر است کے اساء اور ان کے کلمات پڑھنے کے ساتھ توسل کرکے نفوس اور اجسام میں تا ثیر کرتے ہیں اور جادو کامعنی یہی ہے۔

وَمِن شَرِحَاسِهِ إِذَاحَسَهِ اور حاسد كرشر سے جب حسد كا اظہار كر سے اور اس كے تقاضے كے مطابق عمل كر سے اور يہ قيداس ليے ہے كہ حاسد جس وقت تك اپنے حسد كو چھپائے ركھتا ہے اس چيز كا اثر اس تك نہيں لوشا۔ اور يہاں سے معلوم ہوا كہ بدترين شرحسد ہوا د في الواقع جوشر بهى پورى كا مُنات ميں پيدا ہوتا ہے يا ارادہ واختيار والے نفوس سے صادر ہوتا ہے جيئے آل كرنا أوشا ظلم كرنا تاوان لينا اور جادو وغيره ليا ارادہ واختيار سے خال طبائع سے صادر ہوجیتے پانی میں غرق ہونا اور آگ میں جانا وغيرہ اور بدترين شرارادہ واختيار والوں كا شر ہے اور ان تمام شرول كے نكلنے كی جگہ حسد كی وصف ہے۔ اس ليے كہتے ہيں كہ والوں كا شر ہے اور ان تمام شرول كے نكلنے كی جگہ حسد كی وصف ہے۔ اس ليے كہتے ہيں كہ يہا گناہ جو آسان میں واقع ہوا الميس كا حضرت آ دم عليہ السلام پر حسد كرنا تھا اور پہلا گناہ جو زمين پر صادر ہوا قابيل كیا ہيں پر حسد كرنا تھا اور پہلا گناہ جو زمين پر صادر ہوا قابيل كیا ہيں پر حسد كرنا تھا۔

(یادر ہے کہ یہاں گنڈے بنا تااور ان پر گرہ لگانا آیات قرآن یا اسائے الہد دَم کرنا جائز ہے۔ جمہور سحابہ کرام رضوان اور تابعین ای پر جیں اور حدیث عائشہ رضی الند عہما جی ہے کہ جب حضور علیہ السلام کے اہل جی سے کوئی بیار ہوتا تو حضور (صلی الند علیہ وآلہ وسلم) معو ذات پڑھ کراس پر دَم فرماتے۔ نیز تعویذ اور عمل جس جیل کوئی کلہ کفر و شرک کا ندہ و جائز ہے۔ فاص کر وہ عمل جوآیات قرآنید سے کیے جائیں یا احادیث جی وارد ہوئے ہول۔ حدیث شریف جی ہے کہ اساء بنت عمیس رضی الند عنم الند علیہ وآلہ وسلم الند علیہ وآلہ وسلم الند عنہ کے بچوں شریف جیل کروں؟ حضور علیہ السلام نے اجازت دے دی۔ کوجند جلد نظر ہوجاتی ہے کہ اور ای میں مولا تاہ ہے کہ ان کے لیے عمل کروں؟ حضور علیہ السلام نے اجازت دے دی۔ (تر فدی) خزائن العرفان انجم دالا فاضل مولا تاہ ہے کہ ان کے لیے عمل کروں؟ حضور علیہ السلام نے اجازت دے دی۔ (تر فدی) خزائن العرفان انجم دالا فاضل مولا تاہ ہے کہ ان کے لیے اللہ کو میں الناقل محم محفوظ الحق غفرلہ)

دوسوالات اوران کے جوابات

دوسوال ہاتی رہ میے: پہلاسوال ہے ہے کہ جب پہلے مخلوقات کے تمام شرور سے پناہ لے لئی تو جادوگرول واسدول اور تاریکیول کے ذکر کی حاجت ندرہی پھران چیزوں کو کیول ذکر فرمایا گیا؟ اس کا جواب ہے ہے کہ دیگر مخلوقات کا شر بالکل ظاہراور واضح ہے جبکہ ان تین گروہوں کا شر پوشیدہ اور غیر واضح ہے۔ اور پوشیدہ شر ظاہری شرسے زیادہ سخت ہوتا ہے۔ نا چارخصوصیت کے ساتھ اس سے پناہ طلب کرنا ضروری ہوا۔

دوسراسوال بیہ ہے کہ غاسق اور حاسد کوئکرہ لایا عمیا جبکہ نفا ٹات کولام تعریف کے ساتھ معرفہ لایا عمیا' ایسا کیوں ہے؟

اس کا جواب میہ ہے کہ لام تعریف استغراق کے لیے ہے اور جادوگرسب کے سبشر ہیں۔
ہیں۔ اس لیے کہ نی نفسہ جادو کمیرو عمناہ ہے کو اس کے ساتھ وقع شریا کسب خیر کریں۔
اس لیے حربی کا فروں کو جادو کے ساتھ آل کرنا اور شوہر کا دل ہوی کی طرف ماکل کرنا درست نہیں ہے جبکہ ہر غاسق اور حاسد شرنیں 'بہت می را تیں خیر میں گزرتی ہیں اور ظالموں اور کا فروں کے ساتھ حدد کرنا کہ الی نہیں رکھتا۔ پس بیاستغراق کا مقام نہ تھا 'محرہ لانا مناسب بوا

سورة الناس

مدنی ہے اس کی چو(۲) آیات ہیں (۲۰) کلمات اورای (۸۰) حروف ہیں اوراس سورۂ الناس کا نام اس خطاب کے لیے ویا کمیا ہے کہ لوگوں کے ساتھ جوحفائق الہے اور کونیہ تعلق رکھتے ہیں اس میں فدکور ہیں۔

بسبم الله الرّحمن الرّحيم

اسم جلالت القد كا ذكراس في ب كاللد تعالى كاساء مفات اورافعال لوكول مين جلوه كريس اور حمن كالفظ اس ليه لا ياميا كه نور وجود كا فيض ببنجان كے بعد لوكول كى تحيل كا مثاره موجبكه لفظ رحيم اس چيز كے شرسے جو كه لوكول ميں ہواور لوكول سے تكتی ہے كا مثاره موجبكه لفظ رحيم اس چيز كے شرسے جو كه لوكول ميں ہواور لوكول سے تكتی ہے اس مادر لوكول سے تكتی ہے اور لوكول ہے تكتی ہے تو كہ لوكول ميں ہے اور لوكول ہے تكتی ہے تو كہ لوكول ہيں ہے تو كہ لوكوں ہيں ہے لوكوں ہے تو كہ لوكوں ہيں ہے تو كہ لوكوں ہيں ہوجبكہ لفظ رحيم اس چيز ہے شرسے ہو كہ تو كہ لوكوں ہيں ہوجبكہ لفظ رحيم اس چيز ہے شرسے ہو كہ تو كہ لوكوں ہيں ہو جبكہ لفظ رحيم اس چيز ہے شرسے ہو كہ تو كہ ت

حفاظت کا اشارہ کرنے کے لیے ہے۔

سبب نزول اورلبيد بن عاصم كا جاد وكرنا

ان دونوں سورتوں کے نزول کا سبب ریہ ہے کہ لبید بن عاصم نے حضور صلی اللّٰہ علیہ وآلہ وسلم پر جادو کیا۔اور آپ اس جادو کی وجہ سے علیل ہو سکتے اور بعض اوقات یوں خیال فرماتے كه ميں نے ايك كام كرليا ہے حالا نكه كيانبيں ہوتا تھا۔ جب بيرعارضه جھ (٢) ماہ تكه، دراز ہو كيا توحضور صلى الله عليه وآله وسلم كوخواب مين وكهايا كيا كه دوفر شيع حاضرآ ئے۔ ايك فرشته حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے سر ہانے اور دوسرا قد مین شریفین کی طرف جیھے گیا۔ ایک ووسرے سے سوال کرنے لگے۔ ایک نے کہا کہ اس رسول کریم علیہ الصلوٰۃ و السلام کو کیا تکلیف ہے؟ دوسرے نے کہا کہ انہیں جادو کیا گیا ہے۔ پھر پہلے فرشتے نے پوچھا کہ آ پ کو كس نے جادوكيا ہے؟ دوسرے نے كہا كەلبىد بن عاصم يہودي نے آپ كے بالوں ميں جو كاس نة آپ كى تنكى سے ليے بي اور آپ كى تنكى كے دندانوں بيل كياره (١١) كر بي لگائی ہیں اور انہیں تھجور کی جھال کے غلاف میں رکھ کر ذروان نامی کنوئیں میں پھر کے نیچے ون كيا ہے۔حضور ملى الله عليه وآله وسلم جب منج كے وقت أعظم اس كنوئيں كى طرف كئے۔ صحابہ کرام رضی الله عنهم میں سے دوآ دمی کنوئیں میں اُترے اور اس پھر کے بینے سے وہ چیزیں باہر نکال لائے۔حضرت جبرئیل علیہ السلام بیدوونوں سورتنیں لائے جو کہ گیارہ (۱۱) آیات ہیں اور میر گیارہ (۱۱) آیات ان گیارہ (۱۱) گرہوں پر پڑھ کر ذم فرمایا 'وہ گر ہیں کھل معنين اور حضور ملى الله عليه وآله وسلم ممل صحت ما ب هو مسئه . (اقول و بالله التوفيق - حضرت تحكيم الامت مولا نامفتي احمه بإرخان تحراتي حاشيه القرآن مسمى بنورلعرفان مين فرمات بين كه نبى پاك عليه الصلوٰة والسلام كےجسم ير جادوكا اثر ہوسكتا ہے جيسے تلوار' تيراور نيزے كابيہ اثر نبوت کے خلاف نبیں۔ جادو کا اثر وُور کرنے کے لیے دعا تمیں تعویذ وغیرہ جائز ہیں۔اللہ تعالی نبی علیه السلام کی عقل اور اعتقاد کو جادو ہے محفوظ رکھتا ہے تا کہ بلیغ وین میں رکاوٹ نہ ہو۔الناقل محمد محفوظ الحق غفرلہ)

اورمعوذ تین پرقرآن پاک کے اختام میں نکتہ یہ ہے کہ جب نعمت پوری ہوجائے اور marfat.com

کال کو پنچ دیمن کے حسد اور کمر کے خوف کے سوا کی خیمیں رہتا۔ پس یہ فاطلب کرنے کا موقع ہے اور یہاں شیطان کے شر سے استعاذہ تین اسائے حنی کے ساتھ خاص فر مایا گیا۔ رب کمک اللہ ۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ آ دی کے دل میں شیطان کے دافلے کی جگہ تین جہت سے ہے: شہوت نفسب اور غلط عقیدہ ۔ جے ہوا بھی کہتے ہیں۔ ہم رب شرشہوت کو اسم ملک فضب کو اور اسم اللہ شر ہوا کو دُور کرنے کے لیے ہے۔ کو یا یوں ارشاد فر مایا کہ اگر شیطان کھے فضب کو اور اسم اللہ شر ہوا کو دُور کرنے کے لیے ہے۔ کو یا یوں ارشاد فر مایا کہ اگر شیطان کھے شہوت کی راہ سے وسوسہ ڈالے تو اللہ تعالی کی ربوبیت کو تگاہ میں رکھ اگر غضب کی راہ سے سامنے آئے تو اللہ تعالی کی بادشاہی عدل اور انتقام کو یاد کر اور ہوا کی راہ سے آئے تو مرتبہ سامنے آئے تو اللہ تعالی کی بادشاہی عدل اور انتقام کو یاد کر اور ہوا کی راہ سے آئے تو مرتبہ الوہیت سے التحاکر۔

بسسم الله الرّحمن الرّحيم

قُلْ اے کہ والے جو کہ شیطان کے شر سے پناہ ڈھویڈتا ہے بول کہہ آغوہ برت باہ النّاس میں لوگوں کے پرورگار کی پناہ لیتا ہوں۔اللّہ تعالیٰ کی پرورش آگر چہ تمام مخلوقات کو عام ہے لیکن جو تر بیت لوگوں کے لیے ہے اس کی صورت کسی مخلوق میں نہیں ہے اس لیے کہ وجود انسانی پوری کا تنات کا نمونہ ہے تو گویا بارگاہ الوہیت میں ایک جامع مختمر اور کا تنات کا خلاصہ ہے۔

انسان کا ئنات کا خلاصہ ہے

اس کی تفصیل ہے ہے کہ وجود کیات علم اراوہ قدرت سنا کہ کھنا اور بولنا سب شان
الوہیت کی صفات کا پرتو ہیں ۔ جبکہ گری سردی تر کی اور ختکی اس کے وجوو ہیں عناصرار بعد کی جبہ بر ہے۔ وہ ترکیب کی وجہ سے معدن سے مشابہت رکھتا ہے غذا اور پیدا کرنے کی وجہ سے معدن سے مشابہت رکھتا ہے غذا اور پیدا کرنے کی وجہ سے نباتات کے مشابہ ہے۔ اور حس قوت و تخیل نیز لذت اور تکلیف محسوس کرنے ہیں حیوانات کی طرح ہے۔ اور اسے حیوانات کی ہر شم کے ساتھ مشابہت حاصل ہے۔ پس غفسب اور جراکت کے وقت در ندے کی طرح ہے شہوت اور لا بی کے وقت جرنے والے جانور کی طرح ہے شہوت اور لا بی کے وقت جرنے والے جانور کی طرح ہے۔ کر حید افوا ، کرنے اور نیکوں کے نظام کو در ہم برہم کرنے میں شیطان جانور کی طرح ہے۔ اس میں حکمتیں جمع ہونے کی اس مقر میں میں ایک مقرب فرشتہ ہے۔ اس میں حکمتیں جمع ہونے کی اس مقد میں ایک مقرب فرشتہ ہے۔ اس میں حکمتیں جمع ہونے کی سے معرفت طاقت اور عصمت میں ایک مقرب فرشتہ ہے۔ اس میں حکمتیں جمع ہونے کی اس مقد میں مقد میں ایک مقرب فرشتہ ہے۔ اس میں حکمتیں جمع ہونے کی اس مقد میں مقد میں مقد کی مقد میں مقد میں مقد کی مقد کے اس میں حکمتیں جمع ہونے کی مقد میں مقد کی مقد کر میں مقد کی مقد کر کی مقد کی مقد

وجہ سے لوحِ محفوظ کی مانند ہے۔ اور اہل وجہ سے کہ اس کی تا ثیر سے شاگر دوں اور ہدایت کے متلاشیوں کے دِلوں میں اشیاء کی صورتیں راسخ اور مضبوط ہوتی ہیں۔ قلم اعلیٰ کی طرح ہے۔ بہر حال وہ نقصان جو کہ آ دمی نطفہ ہونے کی صورت میں رکھتا ہے اور پھر وہ کمال جو کہ مقام خاتمیت سیّد عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم تک جینچنے کے بعد رونما ہوا' دونوں کو قیاس کہا جا سکتا ہے اور اس کی رہو بیت کا نظارہ کرنا چا ہیں۔

مَلِكِ النَّاسِ لُوگُوں كا بادشاہ۔ بيصفت اس بات كا اشارہ ہے كه آ دميوں كوروح مربرہ دى گئى ہے اور اسے ادراك اور حركت دينے والى قو توں پر تصرف عطا فر مايا گيا ہے۔ پس جسم كى كا ئنات ميں روح بادشاہ مطلق ہے اوراس كا پورابدن بمزله آ باد ملك كے ہے جبكه ادراك اور تحريك كى قو تيں سب اس بادشاہ كا لاؤلشكر ہيں اور بيسب پچھ حضرت حق جل شانہ كى بادشاہ ت كے جائبات ميں ہے ايك مجوبہ ہے۔

الله النّاس لوگوں کا معبود۔ بیصفت اس بات کا اشارہ ہے کہ عبادات سے اللہ تعالیٰ کی معرفت کا شوق اور اس کے حضور قرب طلب کرنا لوگوں کی اصل جبلت میں سپر دکیا گیا ہے۔ اسی جبلی شوق کی بناء پرلوگوں کے گروہوں میں سے جرگروہ والے اس مقصد کی جبتو میں اور اس خیال کی گرفت میں جیں اور یہ عام شوق اور پوری مخلوق کی گرفتاری اس کی معبودیت کے کرشموں میں سے ایک کرشمہ ہے۔

لفظ رب ملك اور الله كى ترتيب ميں تفسيرى تظمت

میں سے بات بیٹھ جاتی ہے کہ جو پچھ ہے 'یادشاہ اور سردار ہے اس کا قرب حاصل کر نا کارخانۂ کا نئات کے منظم ہونے کا موجب ہے۔ پس اس حالت میں اس کا سارا اعتماد بادشاہ اور سردار پر ہے۔

اوراس حالت ہے بھی جب اس نے ترتی کی اور مشاہدہ کیا کہ بعض اوقات بادش:
اور سردار بھی عاجز اور ہے بس ہوجاتے ہیں۔ اور جہان غیب کی طرف التجا کرتے ہیں۔
اور وہاں سے مقاصد میں اور حاجات کے حصول میں مدوطلب کرتے ہیں۔ تو معلوم کر لیتا
ہے کہ بادشاہ اور سردار بھی میری طرح عاجز اور مختاج ہیں۔ پس کا نئات کا کارخان ایک اور ذات کے ساتھ وابستہ ہے جے اللہ کہتے ہیں۔ پس اس صفت کو لانے میں اس بات کا اشارہ ہے کہ اگر آ دمی مزاج بطفی رکھتا ہے اور پرورش کے بغیر پر چھنیں جانتا تو میں میصفت کو گفتا ہوں۔ چاہے کہ میری بارگاہ میں التجا کرے کہ میں رب الناس ہوں اور میری ربوبیت تمام لوگوں کو عام ہے۔ بخلاف ماں باپ کے جن کی ربوبیت اپنی اولاد کے ساتھ خاص ہے۔

اوراگراس کی عقل بلوغ کی حد تک پہنچ می ہے بادشاہ اور سردار کو مالک امر سمجھتا ہے تو بیصفت بھی مجھ میں وجہ کمال کے ساتھ موجود ہے کہ میں تمام کا خات کا بادشاہ ہوں نہ کہ ایک یا دوریاستوں تک محدود ہوں۔ اگر اس نے تجربہ کے ساتھ معلوم کر لیا ہے کہ بادشاہ اور سردار نیز مال باپ سب کے سب ایک اور ذات کے محتاج ہیں جے اللہ کہتے ہیں۔ اور ضبح وشام اس کا نام ور دِ زبال رکھتے ہیں تو میں اس صفت کے ساتھ موصوف ہوں۔ مقصد یہ کہ ہر حال میں اس کے حضور التجا کرنا چا ہے اور اسباب اور واسطول کونظر انداز کردینا جا ہے۔

مِنْ شَرِّ الْوَسُوَاسِ يُرے خيال كارْ ہے اور يہ اَعُودُ كے ساتھ متعلق ہے يعنى من يُرے خيالات كى يُرائى ہے بناہ ليتا ہوں اور يُرا خيال چند طريقوں سے نقصان ويتا ہے۔ ايك تو مزاح خراب كرنے مِن دوسرا تدبير لفس مِن تيسرا معرفت مِن چوتھا عبادت مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے لے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے لے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے لے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے لے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے لے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے لے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے لے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے كے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے كے كر است مِن پانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے كے كر است ميں بانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے مِن اورة دى كى عمركى ابتداہے كے كر است ميں بانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے ميں اورة دى كى عمركى ابتداہے كے كر است ميں بانچواں قرب خداوندى عاصل كرنے ميں اورة دى كى عمركى ابتداہے كے كر است ميں بانچواں قرب خوات ميں ہوئوں تو ميں ہوئوں تو است ميں بانچواں قرب خداوندى عاصل كى عمركى ابتداہے كے كر است ميں ہوئوں تو ميں ہوئوں كے كر است ميں ہوئوں كے كی ميں ہوئوں كے كر است كے كر است ميں ہوئوں كے كر است ميں ہوئوں كے كر است كے

ا نہناء تک اسے یہی کام در پیش آتے ہیں اور جب بیام خلل میں پڑ گئے تو اس کی عمر بر باد ہوگئی۔

آلی بختاب وہ جو بھا گتا ہے۔ یہ وسوسے کی صفت ہے صاحب وسوسہ کے اعتبار سے
اس لیے کہ شیطان ذکر البی کا طور پر البی کا اور فرشتوں کی حاضری سے طبعی طور پر
بھا گتا ہے اور یہ صفت لا نااس لیے ہے کہ شیطان کا کام بہت مشکل ہے اور اس کے شر سے
محفوظ رہنا رب الناس کے حضور النجا کیے بغیر ہرگز ممکن نہیں ہے۔ اس لیے کہ جب کوئی دشمن
مقالج میں کھڑا ہو اسے دفع کرنا آسان ہوتا ہے۔ اور جب وہ کھڑا ندر ہے بار بار عداوت
کرے تو ہر وقت حفاظت اور احتیاط سے گزارنا چاہیے۔ اور بیکام بہت دشوار ہے ای لیے
ار باب حکومت وسلطنت کے لیے ان وشمنوں کو دفع کرنا جو کہ ایک ذم جوم کر کے جنگ
شروع کر دیں ان ڈاکودک اور چوروں کو دفع کرنا جو کہ ایک ذم جو کہ قابو پانے
کے وقت اپنا کام کر کے غائب ہو جا کیں اور ان کا تدارک ہرغیب و فنی کاعلم رکھنے والی ذات
کے وقت اپنا کام کر کے غائب ہو جا کیں اور ان کا تدارک ہرغیب و فنی کاعلم رکھنے والی ذات

الکینی یُوسُوس یہ وسوس کی دوسری صفت ہے لیمی وہ کرے خیالات لانے والا جو کہ ردی وسوے ڈالٹا ہے نئی صُدُور النّاس لوگوں کے سینوں میں۔ اور سینوں کو خاص کرنے کی وجہ یہ ہے کہ دہال نفسِ ناطقہ کے اثر ات حیوانیت کے ساتھ تلا والم ہو کرفساد کا رنگ جلد قبول کرتے ہیں۔ بخلاف دوسرے اعضاء کے۔ اس لیے کہ جگر میں ردی وسوے نہیں ہیں۔ نفسِ ناطقہ اپنے نفس نباتی کے ساتھ کام کرتا ہے اور دماغ میں اگر چہ فساد کی توقع ہے کیونکہ قوت و ہمیہ عقلی قوت کو پریشان کرتی ہے لیکن اس کا زیادہ تر فساد فساد کی توقع ہے کیونکہ قوت و ہمیہ عقلی قوت کو پریشان کرتی ہے لیکن اس کا زیادہ تر فساد فساد کی توقع ہے اثر ات بلند ہونے کی وجہ سے ہوتا ہے جیسا کہ حکمت والوں پر پوشیدہ نہیں ہے۔

مِنَ الْجِنَّةِ وسواس كابيان ب_ يعنى يُر ب خيالات والاخواه جنول كى جنس به من الْجِنَّةِ وسواس كابيان ب يعنى يُر ب خيالات والاخواه جنول كى جنس به وسي من الله عنه عنه الله وسي من الله وسي الله والله والله

اورلطیف ہونے کے باہم امتزاج کی وجہ سے ان اجسام کا انسانی ارواح کے مساموں میں سزایت کرنا جلدی اور آسان ہوتا ہے۔ اور جب وہ اجسام جو کہ ان فاسد تد ابیر اور باطل آراء کے حامل ہوتے ہیں تو ان کا اثر ارواح کو پہنچتا ہے اور ارواح ان کا اثر ارواح کو پہنچتا ہے اور ارواح ان تد ابیر اور آراء کی حامل ہو جاتی ہیں اور اس کے مطابق بدن میں حرکت اور سکون پیدا کرتی ہیں اور آری فی صاور ہوتے ہیں۔

ای کے فرمایا گیا ہے کہ ان الشیطن یجری من الانسان مجری الدم یعنی شیطان آ دمی کے زگ و بے میں خون کی جگہ دوڑتا ہے اللہ تعالی ہمیں اس سے پناہ وے۔ (آمین)

اور شیطانی وسوسوں کی کوئی حدنہیں ہے زیادہ تر برائی نسق اور فجور کی طرف بُلاتا ہے۔ اگر بھی نادرطور پر طاعت اور نیکی کی طرف دعوت دیتا ہے تو دوحال سے خالی نہیں یا تو چاہتا ہے کہ آسان نیکی میں مصروف کر کے عظیم نیکی ضائع کر دے جیسا کہ نماز کا وقت کسی یار کی مزاج پُری میں بلاوجہ گزار دیں یا جاہتا ہے کہ آسان نیکی کو بہت بڑی بُرائی کا سب بنا دے جیسے کسی منگتے کوروٹی و بنااور پھراس پراحسان رکھنا اور بنسی نداق کرنا۔

شیطان کے وساوس کی تفصیل

اب وساوس کی اقسام کا پچھ حصہ شار کیا جاتا ہے جن میں سے زیادہ تر ولوں کو خراب کرتے ہیں۔ ان میں سے یہ ہے کہ عام لوگوں کے ولوں میں ذات وصفات البی اسرارِ نبوت اور امور اخروی کی تحقیق اجر واختیار کے مسئلہ اور قضا وقدر کے راز کی تحقیق اور صحابہ کرام رضوان اللہ علیم اجمعین کی لڑائیوں کے اختلافات میں حق کی تفیش کا وسوسہ ڈالتا ہے تاکہ آ ہتہ آ ہت تحقیق کے دوران وہ ان حقائق کا انکار کر دیں اس لیے وہ ان کی سمجھ کے مرتبے سے بالاتر ہیں۔

وسوسہ ڈالتا ہے اور بت پرستوں کو قربِ خدا وندی حاصل کرنے کا فریب دیتا ہے اور دیووں' پر بوں اور جنوں کی بوجا مچھوڑنے میں دنیوی تقصان پہنچنے سے ڈراتا ہے جیسے بچوں کا فوت ہونا اور مال میں نقصان ہونا۔

اور نماز پڑھے والوں کے لیے پہلے ان کی نیت میں ریاء شامل کر دیتا ہے۔ پھر رکعات
کی گنتی اور ارکان کی اوا کیگی میں مہواور بھول جانے کو داخل کر دیتا ہے۔ اور بعض کو نیت اور نفر آئت درست کرنے اور حروف کے مخارج کو چھ کرنے میں گرفتار کرتا ہے۔ اور زکوۃ دی ہوتو ریاء سمعہ 'خود بنی اور منگوں پر دینے میں فقر سے ڈراتا ہے۔ اور اگر بھی زکوۃ دی ہوتو ریاء سمعہ 'خود بنی اور منگوں پر احسان چڑھا کر اسے ضائع کرتا ہے۔ حرام طریقے میں خرج کرنے کو نیک اور اچھا کر دیکھا تا ہے۔ اور غطر سے اور خیال میں یوں بات ڈالتا ہے کہ لذت تو صرف شہوت اور مرتبے میں ہے۔ اور غصر کے وقت دل میں یوں خیال گرارتا ہے کہ اگر تو غصے کے نقاضے کو پورانہیں کرتا تو تھے پر ہمیشہ مخراور ذلت کا داخ رہے گا۔ اور اللہ تعالیٰ کی عبادت میں جہاں بھی کوئی مشکل وار دہوا اسے مخراور ذلت کا داخ رہے گا۔ اور اللہ تعالیٰ کی عبادت میں جہاں بھی کوئی مشکل وار دہوا سے کئی گنا بڑھا کر دکھا تا ہے۔ جبکہ کفار کے لیے بتوں کی پوجا میں خت مشکلات کو بر داشت کرنا انہیں بالکل آسان اور بہل دکھا تا ہے اور اللہ تعالیٰ کی راہ میں مارے جانے کونا جائز اور ممنوع فل ہر کرتا ہے اور جان کی حفاظت کا حکم دیتا ہے۔

اور کفار کو بتوں کی راہ میں اپنے آپ کوئل کرنے اور بیٹے اور شوہر کی محبت میں جل جانے پر اُبھارتا ہے۔ اور جن کے ہاں حلال طور پر خوبصورت آراستہ اور معطر عورتیں موجود ہوں اُنہیں چکلہ میں بدذات بختل نجس اور ناپاک عورتوں کے ساتھ بدکاری کی دعوت دیتا ہے۔ اور سرداروں کو وافر دولت پاس ہونے کے باوجود لوگوں کے اموال میں گرفتار کرتا ہے۔ اور سرداروں کو وافر دولت پاس ہونے کے باوجود لوگوں کے اموال میں گرفتار کرتا ہے۔ اور اس کے دِلوں میں معمولی خیال کے ساتھ جان کوضائع کرنا آسان کر دیتا ہے۔ اور اس قدر جو بیان ہوااس کے وسوسوں کے طلسمات کا ایک حصہ ہے اور اگر اس کی خرابیوں کی شرح کی جائے تو ایک طویل دفتر جا ہے۔

شيطاني طلسمات كاعلاج

اوران تمام طلسموں کاعلاج تین (۳) چزین میں: پہلی چزاس کے پُرفریب حیلوں کو Thatfat.com

سمجھنا ہے کہ مرف اس امر کو دریافت کر لینے سے کہ بیٹل شیطانی ہے اس کا شرکم اور زور
ست پڑجاتا ہے۔ جس طرح کہ چور کو جب صاحب خانہ کا ہے دار ہونا معلوم ہوتا ہے بھاگ
جاتا ہے۔ نیز اس جالاک آ دمی کی طرح کہ جب وہ کسی شخص کے متعلق معلوم کر لے کہ اس
کے فریوں پروا تف ہوگیا ہے تو ناامید ہوجاتا ہے۔

دوسری چیز میہ ہے کہ اس کے دسوسے کو معمولی سمجھے اور توجہ نہ کرے کہ اس صورت میں بھی اس کا شرکم ہوجاتا ہے۔ بعو نکنے والے کتے کی طرح کہ اس کی طرف جس قدر توجہ کریں ا زیادہ بعو نکتا ہے۔ ورنہ خود بخو د خاموثی اختیار کر آیتا ہے۔

تیسری چیز ہے ہے کہ قلبی اور زبانی ذکر پر بینظی کریں اور دل کوردی صفات شہوت اور فضب سے پاک کریں اس لیے کہ شہوت اور فضب کے غلبے کی حالت میں ذکر کا اثر قلب کے ضب سے پاک کریں اس لیے کہ شہوت اور فضب کے غلبے کی حالت میں ذکر کا اثر قلب کے کناروں کی طرف بھاگ جاتا ہے نا جار شیطان کا وسوسہ قلب کے وسط میں جاگزیں ہو جاتا ہے اور اپنا کا م کرتا ہے۔

وَالنَّاسِ اورخواہ وہ وسوسہ ڈالنے والالوگوں کی قوت مخیلہ ہوجو کہ غلط اعتقاد اورشہوت و خضب کے غلبے کی وجہ ہے جن ہے دُور خیالات کوتمام قو توں اور ارواح میں پھیلا کرمزائ یا تہ بیزنفس کو دگر گوں کرنے کا یا عهادت اور قرب خداوندی حاصل کرنے کے اسباب میں ستی یا معرونت میں غلطی کا موجب ہوتی ہے۔

وسوے ڈالٹا ہے اور پانچویں مقام میں فسادی اور انسانی شیاطین مراد ہیں جن کا کام گراہ کرنا اور وسوے ڈالٹا ہے۔

نیز بعض مفسرین نے کہا ہے کہ اس سورۃ میں لفظ ناس پانچ (۵) باراس لیے لایا گیا ہے کہ پانچ (۵) کا عدد طبیعت عددی کی رو سے بھی شرافت رکھتا ہے۔ اور جے اس عدد سے گنا جائے اس کی شرافت اس لیے ہے کہ وہ عدد دائر ہے اور دائر کامعنی ہے کہ جب اسے ای میں ضرب دیں اور اس کے حاصل کو کھر اس میں ضرب دیں اور اس کے حاصل کو کھر اس میں ضرب دیں جہاں تک چلتے جائیں ہرصورت میں اس کے اصلی پانچ موجود رہتے ہیں اور انہیں عدد کے آخر میں اپنے آپ کو ظاہر کرتا ہے جیسا کہ پہیں ایک سو پہیں ایک سو پہیں کے بیا کہ پہیں کی بھیل کے بھیں کہ پہیں کی بھیل کے بھیل کے بھیل کے بھیل کے بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل کے بھیل کے بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل کے بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل کی بھیل کے بھیل

اور معدود کی رو نے اس لیے ہے کہ مراتب کلیہ میں جنہیں حضرات خمس کہتے ہیں اخترات حق کا ظہور پانچ میں مخصر ہے۔ اور کا تنات کا خلاصہ جو کہ انسان ہے اس کی بھی اختیا فی اعضاء کے ساتھ ہے: سر دوہا تھ اور دو پاؤں اور ہر ہاتھ اور ہر پاؤں پانچ انگلیوں پرختم ہوتا ہے اور سر جو کہ بلندی کی طرف تعلق زیادہ رکھتا ہے اس کا ظاہر طاہری حواسِ خمسہ اور اس کا باطن یا نچ دوسری حسول برجی ہوتا ہے۔

نیز بعض محققین نے لکھا ہے کہ قرآن پاک کی ابتدالفظ ہا کے ساتھ ہے جبداس کی انتبا لفظ سین کے ساتھ ہے۔ بیسب اس طرف اشارہ ہے کہ و نین میں قرآن مجید کا فی ہے چنا نچہ علیم سائی نے فرمایا ہے اول و آخر قد آن ذہبہ با آمدو سین بعنی اندررہ دین رہبرتو قرآ ل بس۔ بعنی قرآن پاک کے آغاز میں ہااور آخر میں سین کس لیے آیا بعنی اس لیے کہ دین کی داہ میں تیرے لیے قرآن یاک کی رہبری کافی ہے۔

(عاشرذى العقد ووام إه)

بِسْمِ اللهِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْمِ اللهِ مِسْمِ اللهِ الرَّحِمْنِ الرَّحِمْمِ اللهِ عليه وآلهِ السحمد لله الذي جعل سيدنا و مولانا محمدًا صلى الله عليه وآلهِ وسلم مسجلاه الاعز الإكمل و محل تظره من العالم ومظهر ذاته وسلم مسجلاه الاعز الإكمل و محل تظره من العالم ومظهر ذاته المسلم مسجلاه الاعز الإكمل و محل تظره من العالم ومظهر ذاته المسلم مسجلاه الاعز الإكمل و محل تظره من العالم ومظهر ذاته

من بنى آدم صلوات الله وسلامه عليه وعلى اله واصحابه هداة البخلق الى الحق الى الخلق البخلق الى الحق الى الخلق فيجزاهم الله تعالى احسن ماجازى به عباده الكاملين الواصلين والعاملين العارفين. امابعد

ماضی کی ایک یادگارمخفل میں علی ہے اہل سنت کی معیت میں حاضری کا شرف حاصل ہوا۔ تو بعض دوستوں نے ایک خاص اور مؤثر انداز میں جھے فرمایا کرتغیر عزیز کی کا ترجمہ کرنا ہوا ضروری ہے کیونکہ کتاب اور صاحب کتاب حضرت عمدة المفسرین زبدة المحدثین حضرت شاہ عبدالعزیز محدث وہلوی رحمت اللہ علیہ کی برصغیر میں مرکزیت اور ابمیت کے پیش نظریہ کام بہت اہم ہے تمام مسالک ہے وابسته المل علم کی سند حدیث تقریباً حضرت تک بی نظریہ کام بہت اہم ہے تمام مسالک ہے وابسته المل علم کی سند حدیث تقریباً حضرت تک بی بہنچی ہے۔ آج تک اہل سنت و جماعت کی طرف ہے اس کا ترجمہ نہیں ہوا۔ از اں بعد ایک اور موقع پر یہی تقاضا ہوا اور ساتھ بی محت محترم مولانا الحافظ القاری شوکت علی صاحب رحمت اللہ علیہ خطیب حضوری جامع مسجد کی تا ئید و تا کید نے شوق ولایا لیکن جران تھا کہ اتنا ہوا کام ایک عف میں ایک نے بھاعت محتم ہے کو گرممکن ہوگا جوسمج معتوں میں طلباعلم کی صف میں ایک بناء بھی قابل نہیں اس لیے بچھ وقت لیت وقعل میں گزر گیا۔ ایک تو استعداد کا فقد ان دوسرے تبلیقی مصروفیات کی بناء پرمکن نہ ہوسکا۔

ہرکام کا ایک وقت ہوتا ہے مفرت مفسر علام قدی سرو سے قبی عقیدت کے پیش نظر خیال ہوا کہ تو کلاعلی اللّٰہ ترجمہ شروع کر دیا جائے۔ دیگر برکات کے علاوہ اس نسبت ہے کہ از کم بالاستیعاب تغییر عزیزی کی زیارت کا شرف حاصل ہوگا اور استفاوہ کی بہترین صورت نکل آئے گی۔ چنا نچہ مفسر علام رحمتہ اللّٰہ علیہ کے حضور فاتحہ خوانی اور آپ سے استمداد کے بعد کام شروع کر دیا کیونکہ والقعد اذا اتستی کی تغییر میں حضرت نے اس استمداد اور ایداد کے جواز بی نہیں بلکہ وقوع کا ذکر فر مایا ہے اور اس مسئلہ کی صحت اور پچتلی کی بین رہیل پیش نظر ترجمہ ہے جو کہ صرف اور صرف استمداد وا مداد بی کا رہن منت ہے ورنہ بین رہیل پیش نظر ترجمہ ہے جو کہ صرف اور صرف استمداد وا مداد بی کا رہن منت ہے ورنہ

marfat.com من آند که مستاند که من آند که می آند که

مختف فنون کی بحث میں حضرت نے جواصطلاحات ذکر فرمائی ہیں 'بہت کوشش کی گئی ہے۔ کہ دورانِ ترجمہ سلاست اور ترجمانی کے ساتھ ساتھ ان کا اصطلاحی تشخیص مجروح نہ ہونے پائے لیکن اس کے باوجود بعض مقامات پرتر جے کی انتہائی کوشش کے باوجود مسئلہ کی صورت قائم نہیں رہی تھی اس لیے اصطلاحی لفظ کو ہی قائم رکھا ہے لیکن امید ہے کہ اس کے باوصف اس مسئلہ کے سجھنے میں چنداں وقت نہیں ہوگی۔

علاوہ ازیں طباعت کی اغلاط نے سخت پریشان کیا' الفاظ کی صوری مناسبت اور کا تبین کی اصل علم سے ناوا تفیت نے خاصی اُ مجھنیں بیدا کیس مثلاً بحثے کی بجائے بخشے' نیز ظن طعن' در بیان درمیان' نیت نیست' مکانات مکافات' خلاحت بلاغت اور الش آتش کے مابین صوری مناسبت اور معنوی بعد کی بناء پر جو پریشانی ہوسکتی ہے اس کا آپ بخو بی انداز ہ لگا کتے ہوری مناسبت اور معنوی بعد کی بناء پر جو پریشانی ہوسکتی ہے اس کا آپ بخو بی انداز ہ لگا کتے ہوری۔

تغیر عزیزی کی افادیت اوراہمیت سے واقف حضرات بجاطور پر جانے ہیں کہ فاری زبان میں منقولات اور معقولات کا کتنا ہیں بہا خزانہ ہے لیکن صدافسوں کہ سورۃ البقر ہ تقریر کے سوا پارہ یا پھر انتیبویں اور تیبویں پارے کی تغییر ملتی ہے اس کے علاوہ اس عظیم تغییر کے باقیات کے متعلق پچھ معلوم نہیں ۔ بعض ارباب علم کی تحقیق کے مطابق آپ نے قرآن پاک کی تغییر فرمائی گر حوادث کی وجہ سے ضائع ہوگئی۔ اگر یوں ہے تو یہ بہت بڑا المیہ ہے۔ دوران تغییر کئی مقامات پر اشارے تو ملتے ہیں کہ حضرت مفسر علام قدس سرہ کا ارادہ تو تحمیل کا دوران تغییر کئی مقامات پر اشارے تو ملتے ہیں کہ حضرت مفسر علام قدس سرہ کا ارادہ تو تحمیل کا موقع ہی نہیں ملا۔ اے کاش کہیں سے ساری تغییر عزیزی دستیاب ہو جائے تو اللہ شکیل کا موقع ہی نہیں ملا۔ اے کاش کہیں سے ساری تغییر عزیزی دستیاب ہو جائے تو اللہ تعالیٰ کی تو نیق سے اس کے ترجے کی بھی سعادت حاصل کی جائے۔

مدیتے سے معانب فرمائے۔

آخر میں ان تمام اہل علم و دانش اور اربابِ اُلفت و محبت سے درخواست ہے کہ اس سے استفادہ کریں تو بھے بند و ناچیز محر محفوظ الحق کے لیے ایمان کی سلامتی خاتمہ علی الایمان اور میری اولاد کے روش مستقبل اور میرے والدین اہل خانہ اور اعزہ و اقرباء کے لیے دعائے بخشش فرما کمیں انتہائی کرم ہوگا۔

برکر بمال کار بادشوار نیست
کیے از خدام جماعت الل السنت
محمد حقوظ الحق غفرله
خطیب جامع مسجد غله مندی
بورے واله ضلع و بازی
افزوالقعد و اله ضلع بروز پیر

marfat.com Marfat.com

